श्री० चन्द्रराज भण्डारी "विशारद" (बैठे हुए), श्री० भ्रमरलाल सोनी (बाईं ओर)
श्री० कृष्णलाल गुप्त (दाहिनी ओर)

EDITED & PUBLISHED

by

C. R. Bhandari

B. L. Soni

K. L. Gupta

Proprietors.

Commercial Book Publishing House

BHANPURA (INDORE.)

सम्पादक और प्रकाशक—

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० भ्रमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

संचालक—

कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

भानपुरा

श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या

History of Indian Trade

Written by

M. L. Barjatya

भारतका व्यापारिक इतिहास

लेखक—

श्रीयुत मोहनलाल बड़जातिया

श्रीयुत मोहनलाल पडुलाल्या

History of Indian Trade

Written by

M. L. Barjatya

भारतका व्यापारिक इतिहास

लेखक—

श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या

PATRONISED BY

Babu Ghanshyamdasji Birla M. L. A. Pilani,
Rai Bahadur Sir Seth Hukamchandji K. T. Indore,
Rai Bahadur Sir Besheswardasji Daga Bikaner,
Raja Bahadur Seth Banshilalji Pitti Bombay,
Diwan Bahadur Seth Keshari Singhji Kotah,
Hon. Seth Govinddasji M. L. A. Jabbalpore.
Kunwar Hiralalji Kashaliwal Indore,
Babu Beniprasadji Dalmia Bombay,
Seth Bherondanji Sethia Bikaner,
Seth Kasturchandji Kothari Bikaner,
Babu Bhanwarlalji Rampuria Bikaner,
Rai Bahadur Seth Poonamchand Karmchand Kotawala,
Seth Ramnarainji Ruiya Bombay,
Seth Shiochand Raiji Jhunjhunuwala Bombay,
Kunwar Laxminarainji Tikamani Bombay,
Seth Foolchandji Tikamani Calcutta,
Messrs. Pohumull Brothers Bombay,
Banijyabhushan Seth Lalchandji Sethi Jhalrapatan,
Kunwar Bhagchandji Soni Ajmer,
Kunwar Shoobhakaranji Surana Churu,
Kunwar Roopchandji Nahata Chhapar,
Seth Chhaganlalji Godhawat Chhotisadri,
Seth Bherondanji Chopra Gangashahar,
Seth Rameshwardasji Sodani Bombay,
Seth Hazarimal Sardarmal Churu.

हमारे माननीय सहायक।

श्रीमान् बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०, पिलानी

„ राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी०, इन्दौर

„ राय बहादुर सर विश्वेश्वरदासजी डागा, के० टी० बीकानेर

„ राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी पित्ती, बम्बई

„ दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, कोटा

„ ऑनरेबल सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी एम० एल० ए०

„ कुंवर हीरालालजी काशलीवाल, इन्दौर

„ बाबू बेणीप्रसादजी डालमियां, बम्बई

„ वाणिज्य भूषण सेठ लालचन्दजी सेठी, झालरापाटन,

„ कुंवर भागचन्दजी सोनी, अजमेर

„ सेठ भैंरुदानजी सेठिया, बीकानेर

„ सेठ कस्तूरचन्दजी, कोठारी, (सद्सुत गंभीरचन्द) बीकानेर

„ बाबू भंवरलालजी रामपुरिया, बीकानेर

„ सेठ रामनारायणजी रुइया, बम्बई

„ राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटा वाला

„ सेठ शिवचन्द्रायजी झुंझनूवाला, बम्बई

„ कुंवर लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी, बम्बई

„ सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी, कलकत्ता

„ मेसर्स पोद्दार ब्रदर्स, बम्बई

„ कुंवर शुभकरणजी सुराना, चूरू

„ कुंवर रूपचन्दजी [illegible], [illegible]

„ सेठ [illegible]

„ सेठ [illegible]

„ सेठ [illegible]

„ सेठ [illegible], चूरू

मूल्य ३०) रुपया.

PRICE Rs. 30/-

उपहार

सेवामें....

श्रीयुत

Presented to

प्रकाशकोंका निवेदन

आज हम बड़ी प्रसन्नताके साथ इस वृहद् और भव्य ग्रन्थको लेकर पाठकोंकी सेवामें उपस्थित होते हैं। और इस शुभ कार्य्यके सफलता पूर्वक सम्पादन होनेके उपलक्षमें हार्दिक बधाई देते हैं।

आजसे ठीक नौमास पूर्व—जिस समय हम लोगोंके हृदयमें इस महत् कल्पनाका जन्म हुआ था, हमारे पास इस कार्य्यकी पूर्तिके कोई साधन न थे। न पैसा था, न मेटर था और न कोई दूसरे साधन। हमने अपनी इस कल्पनाको सुव्यवस्थित रूपसे एक कागजपर छपाकर करीब १२०० बड़े २ व्यापारियोंकी सेवामें इस बातका अनुमान करनेके लिए भेजा कि इसमें व्यापारी—समुदाय कितना उत्साह प्रदर्शित करता है। मगर इन बारह सौ पत्रोंमेंसे हमारे पास पूरे बारह पत्रोंका उत्तर भी नहीं आया। यही एक बात हमलोगोंको निराश करनेके लिए पर्याप्त थी। मगर फिर भी हमलोगोंने अपने प्रयत्न को नहीं छोड़ा, और निश्चित किया कि तमाम प्रतिष्ठित व्यापारियोंके घर २ घूमकर उनका परिचय और फोटो इकट्ठे किये जाय, और किसी प्रकार इस वृहद् ग्रन्थको अवश्य निकाला जाय। उससमय हमलोगोंने हिसाब लगाकर देख लिया कि इस महत् कार्य्यको सम्पन्न करनेके लिये सफर-खर्च समेत कमसे कम बीस हजार और अधिकसे अधिक पचीस हजार रुपयेकी आवश्यकता है। मगर उस समय तो हमारे पास पूरे पचीस रुपये भी न थे। था केवल, अपना साहस, आत्म विश्वास, और व्यापारियों द्वारा उत्साह प्रदान की आशाका सहारा !

हमारा भ्रमण

इसी महत् आशाके सहारे केवल (३) [illegible] पूर्तिके लिए हमलोगोंने अपनी [illegible] यात्रा प्रारम्भ की। [illegible] [illegible]

प्रारम्भमें लेना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं—से हमारी भेंट हुई, हमने उन्हें अपनी कल्पना
बतलाई, उन्होंने हमें उत्साहित किया, अपने फोटो भी दिये, कुछ आर्डर भी दिये, तथा
परिचित व्यापारियोंके नामपर कुछ परिचय-पत्र भी देनेकी कृपा की।

हमारी मुरझाई आशा खिल उठी, हमारा उत्साह प्रफुल्लित हो गया। हमारा साहस
गया। हमने एक बार फिर जोरोंसे कार्य्य आरम्भ कर दिया। इस बार इन्दौर
व्यापारियोंने हमें उत्साहित किया—जिनमें श्रीयुत भँवरलालजी सेठीका नाम
है—और तीन ही दिनके अन्दर हमें अपनी स्थिति जमती हुई दिखलाई देने

इन्दौरका कार्य्य समाप्त करते ही हमलोगोंने अपने भ्रमणकी गतिको
सर्दी पड़ती थी, मगर हमें उसकी कोई चिन्ता न थी। रोज हमारे
बदलते थे। इसी प्रकार खण्डवेसे लेकर अजमेरतक की लाईनको
किया। इस एक महीनेमें हमें अधिकतर धर्मशालाओंमें ठहरना पड़ा
सब जगह धर्मशालाएं नहीं हैं इस लिये कभी २ हमलोगोंको कड़ाके
ठहरना पड़ता था। कहीं खानेको पूरी मिल जाती थी और कहीं
निकालना पड़ता था। मगर इन सब कष्टोंकी ओर हमें ध्यान
अवरिहत गतिसे खींचे लिये जा रहा था। व्यापारी आलम हमारे
पर उस उत्साहके वेगको बढ़ा रहा था।

धीरे २ सेण्ट्रल इण्डियासे निकलकर हमलोगोंने ....
हमें दूसरी ही प्रकारके हुए। यहांकी ऊंची २ भव्य इमारतों
हमलोग चकित हो गये। मगर फिर भी हमारी
अजमेरमें तो कोई कठिनाई नहीं हुई। मगर आगे जब हम
हमें अपनी कठिनाइयोंका अन्दाज हुआ। यहांपर
और दानी सज्जनोंकी कृपासे यहां प्रायः सभी स्थानोंपर
हैं—मगर खाने पीनेकी यहां हमें बहुत तकलीफ उठानी
तक हमें केवल पन्द्रह २ दिनके बासी पेठों और सेवपर
खाकर हमें लम्बे २ बालूके मैदान (स्टेशनसे गांवतक
कि हमारे स्वास्थ्य पर धक्का पहुँचने लगा और
कष्ट थे—कठिनाइयां थीं, मगर सफलता
पति धन कुबेरोंने हमारे उत्साहको खूब बढ़ाया
बीकानेर, चूरू, रामगढ़, पिलानी इत्यादि
हमें निश्चय हो गया कि अब हमारा ग्रन्थ

राजपूतानेसे निकलकर हमलोगोंने परम रमणीक बम्बई शहरमें प्रवेश किया। इस शहरकी रमणीकता, इसके समुद्रतटकी सुन्दरता और तरह २ के मनोमुग्धकारी दृश्य देखकर हमलोगोंकी तबियत खुश हो गई। यहांपर हमें खाने, पीने और ठहरनेकी कठिनाइयां नहीं उठानी पड़ीं फिर भी हमारी कठिनाइयाँ यहां कम न थीं। प्रतिदिन हमें करीब १०० मंजिल चढ़ना और उतरना पड़ता था। यहांके मारवाड़ी व्यापारियोंने हमें सबसे अधिक उत्साहित किया, मुलतानियोंने तथा गुजरातियोंने भी अच्छा उत्साह दिखलाया। पारसी, खोजा और बोहरा व्यापारियोंसे हमें उत्साह नहीं मिला, और यही कारण है कि अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम उनके परिचय जैसे चाहिये वैसे इकट्ठे न कर सके।

यह हमारे भ्रमण का संक्षिप्त वृत्तान्त है। इस भ्रमणमें हमें और कौन २ से विशेष अनुभव हुए ? प्रत्येक स्थानके सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवनमें, तथा रीति रिवाजों-में क्या २ विशेषताएं हमने देखीं, इनसब बातोंका वर्णन विस्तारके भयसे हमने यहां देना उचित न समझा। हो सका तो सामयिक पत्रोंके द्वारा इन सब बातोंका वर्णन हम पाठकोंके पास पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।

ग्रन्थकी अपूर्णता

यद्यपि इस ग्रन्थको सुन्दर और सर्वांगपूर्ण बनानेमें हमने अपनी चेष्टामें कोई कसर बाकी नहीं रक्खी है। फिर भी हमें भली प्रकार अनुभव हो रहा है कि यह ग्रन्थ जैसी हमारी कल्पना थी वैसा सुन्दर नहीं हो सका है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमने हमारे ग्राहकोंसे १५ जूनको ग्रन्थ प्रकाशित करनेका वादा कर लिया था। इतना बड़ा कार्य, करने वाले केवल तीन मनुष्य और समय केवल छः मास ! ऐसी स्थितिमें इसका सवांग पूर्ण होना कैसे सम्भव हो सकता था ? १५ जून तो हमें बम्बईमें ही समाप्त हो गई। तबतक न तो पुस्तकका एक फार्म ही छप सका था और न चित्रोंका एक ब्लाक ही बन सका था। इधर ग्राहकोंके हमारे पास तड़ातड उपालम्भके पत्र आने लगे। फल यह हुआ कि हमें बहुतसा कार्य अधूरा छोड़कर छपाईका काम शुरू करना पड़ा. सेन्ट्रल इण्डियामें, भोपाल, सिहोर, प्रतापगढ़ इत्यादि कुछ महत्वके स्थान छूटगये। इसी प्रकार बम्बईमें भी पारसी,खोजा,बोहरा भाटिया इत्यादि व्यापारियोंका परिचय जल्दीके मारे हम जैसा चाहिये वैसा एकत्रित न कर सके। हमारा यह भी विचार था कि प्रत्येक व्यापारका वर्णन करते समय उसके सम्बन्धके कुछ फोटो भी दिये जांय। इसके अनुसार हमने कॉटन मिलोंके भीतर और बाहरी दृश्य, मोती निकालनेवाले गोताखोरोंके कुछ चित्र तथा इसी प्रकारके रेशम वगैरहके दूसरे फोटोभी एकत्रित किये थे कुछ करना बाकी थे मगर समयाभावसे वे सब पड़े रह गये। इस प्रकार हमारी कल्पनाके अनुसार यह ग्रंथ कई दृष्टियोंसे अपूर्ण रह गया। जिसके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं। यदि कभी इसके दूसरे संस्करणका अवसर आया तो ये सब अपूर्णताएं पूरी कर दीजांयगी।

प्रारम्भमें लेना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं—से हमारी भेंट हुई, हमने उन्हें अपनी कल्पना बतलाई, उन्होंने हमें उत्साहित किया, अपने फोटो भी दिये, कुछ आर्डर भी दिये, तथा अपने परिचित व्यापारियोंके नामपर कुछ परिचय-पत्र भी देनेकी कृपा की।

हमारी मुरझाई आशा खिल उठी, हमारा उत्साह प्रफुल्लित हो गया। हमारा साहस चमक गया। हमने एक बार फिर जोरोंसे कार्य्य आरम्भ कर दिया। इस बार इन्दौर के प्रायः सभी व्यापारियोंने हमें उत्साहित किया—जिनमें श्रीयुत भँवरलालजी सेठीका नाम विशेष उल्लेखनीय है—और तीन ही दिनके अन्दर हमें अपनी स्थिति जमती हुई दिखलाई देने लगी।

इन्दौरका कार्य्य समाप्त करते ही हमलोगोंने अपने भ्रमणकी गतिको बढ़ाया। कड़ाकेकी सर्दी पड़ती थी, मगर हमें उसकी कोई चिन्ता न थी। रोज हमारे बिस्तर खुलते थे और रोज बन्धते थे। इसी प्रकार खण्डवेसे लेकर अजमेरतक की लाईनको हमने करीब एक महीनेमें पार किया। इस एक महीनेमें हमें अधिकतर धर्मशालाओंमें ठहरना पड़ा। मगर सेण्ट्रल इण्डियामें सब जगह धर्मशालाएं नहीं हैं इस लिये कभी २ हमलोगोंको कड़ाकेकी सर्दीमें भी खुली जगहोंमें ठहरना पड़ता था। कहीं खानेको पूरी मिल जाती थी और कहीं केवल चना-चबेना खाकर दिन निकालना पड़ता था। मगर इन सब कष्टोंकी ओर हमें ध्यान न था। हमारा उत्साह हमें एक अविहित गतिसे खींचे लिये जा रहा था। व्यापारी आलम हमारे कार्य्यसे पूर्ण सहानुभूति बतला-कर उस उत्साहके वेगको बढ़ा रहा था।

धीरे २ सेण्ट्रल इण्डियासे निकलकर हमलोगोंने राजपूतानेमें प्रवेश किया। यहांके अनुभव हमें दूसरी ही प्रकारके हुए। यहांकी ऊंची २ भव्य इमारतों और लक्ष्मीके अतुल प्रतापको देखकर हमलोग चकित हो गये। मगर फिर भी हमारी कठिनाइयोंका अन्त नहीं हुआ। जयपुर और अजमेरमें तो कोई कठिनाई नहीं हुई। मगर आगे जब हम जोधपुर और बीकानेर स्टेटमें घुसे तब हमें अपनी कठिनाइयोंका अन्दाज हुआ। यहांपर धर्मशालाओंकी कमी न थी—मारवाड़के उदार और दानी सज्जनोंकी कृपासे यहां प्रायः सभी स्थानोंपर आवश्यकतासे अधिक धर्मशालाएं बनी हुई हैं—मगर खाने पीनेकी यहां हमें बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। कभी २ चार २ पांच २ दिनों-तक हमें केवल पन्द्रह २ दिनके बासी पेड़ों और सेवपर निर्वाह करना पड़ा। इन रद्दी वस्तुओंको खाकर हमें लम्बे २ बालूके मैदान (स्टेशनसे गांवतक) पैदल पार करना पड़े। फल यह हुआ कि हमारे स्वास्थ्य पर धक्का पहुंचने लगा और हमारे एक साथी बीमार होकर घर चले गये। कष्ट थे—कठिनाइयां थीं, मगर सफलता भी हमें वैसी ही मिल रही थी। राजपूतानेके लक्ष्मी-पति धन कुबेरोंने हमारे उत्साहको खूब बढ़ाया। जयपुर, साम्भर, लाडनूं, सुजानगढ़, रतनगढ़, बीकानेर, चूरू, राजगढ़, पिलानी इत्यादि स्थानोंमें हमें आशातीत सफलता हुई। इस सफलतासे हमें निश्चय हो गया कि अब हमारा ग्रन्थ कुशलपूर्वक निकल जायगा।

राजपूतानेसे निकलकर हमलोगोंने परम रमणीक बम्बई शहरमें प्रवेश किया। इस शहरकी रमणीकता, इसके समुद्रतटकी सुन्दरता और तरह २ के मनोमुग्धकारी दृश्य देखकर हमलोगोंकी तबियत मुग्ध हो गई। यहांपर हमें खाने, पीने और ठहरनेकी कठिनाइयां नहीं उठानी पड़ीं फिर भी हमारी कठिनाइयां यहां कम न थीं। प्रतिदिन हमें करीब १०० मंजिल चढ़ना और उतरना पड़ता था। यहांके मारवाड़ी व्यापारियोंने हमें सबसे अधिक उत्साहित किया, मुलतानियोंने तथा गुजरातियोंने भी अच्छा उत्साह दिखलाया। पारसी, खोजा और बोहरा व्यापारियोंसे हमें उत्साह नहीं मिला, और यही कारण है कि अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम उनके परिचय जैसे चाहिये वैसे इकट्ठे न कर सके।

यह हमारे भ्रमण का संक्षिप्त वृत्तान्त है। इस भ्रमणमें हमें और कौन २ से विशेष अनुभव हुए? प्रत्येक स्थानके सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवनमें, तथा रीति रिवाजों-में क्या २ विशेषताएं हमने देखीं, इनसब बातोंका वर्णन विस्तारके भयसे हमने यहां देना उचित न समझा। हो सका तो सामयिक पत्रोंके द्वारा इन सब बातोंका वर्णन हम पाठकोंके पास पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।

ग्रन्थकी अपूर्णता

यद्यपि इस ग्रन्थको सुन्दर और सर्वांगपूर्ण बनानेमें हमने अपनी चेष्टामें कोई कसर बाकी नहीं रक्खी है। फिर भी हमें भली प्रकार अनुभव हो रहा है कि यह ग्रन्थ जैसी हमारी कल्पना थी वैसा सुन्दर नहीं हो सका है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमने हमारे ग्राहकोंसे १५ जूनको ग्रन्थ प्रकाशित करनेका वादा कर लिया था। इतना बड़ा कार्य, करने वाले केवल तीन मनुष्य और समय केवल छः मास! ऐसी स्थितिमें इसका सर्वांग पूर्ण होना कैसे सम्भव हो सकता था? १५ जून तो हमें बम्बईमें ही समाप्त हो गई। तबतक न तो पुस्तकका एक फार्म ही छप सका था और न चित्रोंका एक ब्लाक ही बन सका था। इधर ग्राहकोंके हमारे पास तड़ातड़ उपालम्भके पत्र आने लगे। फल यह हुआ कि हमें बहुतसा कार्य अधूरा छोड़कर छपाईका काम शुरू करना पड़ा. सेण्ट्रल इण्डियामें, भोपाल, सिहोर, प्रतापगढ़ इत्यादि कुछ महत्वके स्थान छूटगये। इसी प्रकार बम्बईमें भी पारसी, खोजा, बोहरा भाटिया इत्यादि व्यापारियोंका परिचय जल्दीके मारे हम जैसा चाहिये वैसा एकत्रित न कर सके। हमारा यह भी विचार था कि प्रत्येक व्यापारका वर्णन करते समय उसके सम्बन्धके कुछ फोटो भी दिये जांय। इसके अनुसार हमने कॉटन मिलोंके भीतर और बाहरी दृश्य, मोती निकालनेवाले गोताखोरोंके कुछ चित्र तथा इसी प्रकारके रेशम वगैरहके दूसरे फोटोभी एकत्रित किये थे कुछ करना बाकी थे मगर समयाभावसे ये सब पड़े रह गये। इस प्रकार हमारी कल्पनाके अनुसार यह ग्रंथ कई दृष्टियोंसे अपूर्ण रह गया। जिसके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं। यदि कभी इसके दूसरे संस्करणका अवसर आया तो ये सब अपूर्णताएं पूरी कर दी जायंगी।

प्रेस सम्बन्धी भूलें

मनुष्यकी इसी भयंकर कमीके कारण हम इस ग्रन्थकी फेयर कापी भी नहीं करा सके थे। फल यह हुआ कि हमें रोज रात २ भर जगकर कापी तैय्यार करना पड़ती थी और दिन २ भर प्रूफ देखना पड़ता था। दिन भरमें चार घण्टे भी पूरे हमें आरामके लिए नहीं मिलते थे। परिणाम यह हुआ कि इसकी कापीमें तथा प्रूफमें अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम भूलोंसे इसकी रक्षा न कर सके। जिससे कहीं २ पर इस ग्रन्थमें बड़ी भद्दी भूलें रह गई हैं जिनके लिये हम पाठकोंसे अत्यन्त विनय पूर्वक क्षमा चाहते हैं और आशा करते हैं कि वे उन्हें सुधारकर पढ़ेंगे। यदि किसी माननीय व्यापारी सज्जनको अपने परिचयमें कोई भूल दिखलाई दे तो वे हमारी असमर्थता को पहचानकर उदारता पूर्वक क्षमा प्रदान करनेकी कृपा करें। और हमें सूचित कर दें ताकि अगले संस्करणमें उसे ठीक कर दी जाय।

इस वृहत् कार्यको सर्वाङ्ग पूर्ण सम्पन्न करनेकी हम लोगोंमें शक्ति न थी हम तो केवल इसके निमित्त मात्र थे। इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेका तमाम श्रेय उन व्यापारी महानुभावोंको है जिन्होंने हमें [illegible] सहयोग देकर इसको यह ग्रंथ प्रकाशित करनेके योग्य बना दिया। हम उन सब महानुभावोंके प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं। ऊपर कुंवर हीरालाल जी और श्रीयुत भंवरलाल [illegible] का नाम ले हम लिख ही चुके हैं, इनके अतिरिक्त उज्जैनके श्रीयुत तनसुखलालजी पाण्ड्या, [illegible] श्रीयुत [illegible] जी सेठा, नीमचके श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया, बीकानेरके श्रीयुत — [illegible] और चूरूके श्रीयुत शुभकरण जी सुराणा इत्यादि सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने हमें कई परिचय पत्र देकर हमारे मार्गको सुगम कर दिया। श्रीयुत मोहनलालजी [illegible] ने इस ग्रन्थके प्रारम्भमें भारतका व्यापारिक इतिहास नामक निबन्ध लिख देनेकी कृपा की है इसके लिए हम [illegible] आभारी हैं। बम्बईके श्रीयुत कृष्णकुमारजी मिश्रने भी इस ग्रन्थके [illegible] हमें बहुत सहायता प्रदान की है जिसके लिए उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना भी हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसके अतिरिक्त "मुम्बईनो व्यापारिक अनुभव" "मुम्बईनी गाईड बुक" "[illegible]" "मारवाड़ी समाजिक अवस्था" "मद्रास स्टेट डायरेक्टरी" [illegible] आदि ग्रन्थोंसे भी इस ग्रन्थमें सहायता मिली है अतः इनके [illegible] प्रति भी हम हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं।

इस ग्रन्थके दूसरे भागमें बरार, और बंगालके व्यापारियोंका परिचय रहेगा। हमें आशा है कि उसे हम इससे भी अधिक सुन्दर और सर्वाङ्गपूर्ण बनानेकी चेष्टा करेंगे।

विनीत

संचालक—

कमर्शियल बुक, पब्लिशिंग हाउस

[illegible]
[illegible]
[illegible]

विषय-सूची

बम्बई—विभाग

मध्यभारत-विभाग

राजपूताना—विभाग

भारतके व्यापारका इतिहास

HISTORY OF INDIAN TRADE

भारतका व्यापारिक इतिहास

'भारतवर्षके व्यापारियोंका परिचय' नामक इस विशाल ग्रंथके आदिमें भारतके व्यापारका परिचय देना आवश्यक है। जहां व्यापारियोंका परिचय है, वहां व्यापारका परिचय पहले आना चाहिए। इतिहासका लिखना एक साधारण बात नहीं और सो भी मुझ जैसे लेखकके लिए यह काम और भी कठिन है। जिस पर भी और सब बातोंका यथा—प्राचीन वा अर्वाचीन शासकोंका परिचय, युद्ध लड़ाई विद्रोहका वर्णन, सामायिक, धार्मिक या राजनैतिक परस्थिति--का इतिहास लिखना और बात है। यह सब आज कल हमारी स्कूलोंमें छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक पढ़ाया भी जाता है इसके अतिरिक्त प्राचीन अर्वाचीन शासकों, विजेताओं, राजाओं, बादशाहों आदिके चित्र और चरित्र भी मिल जाते हैं पर हमारा व्यापारिक इतिहास और व्यापारियोंका परिचय मिलना कठिन है। इस लिए इस विषयको सुसम्बद्ध रूपमें जुटा देना इस ग्रंथके प्रकाशकोंका एक महत्वपूर्ण कार्य है। देशके व्यापारियोंका यह परिचय आज ही नहीं पर जब तक व्यापार रहेगा--चाहे वह आजसे अच्छा हो या बुरा, उन्नत हो या अवनत, उसका अस्तित्व रहना अनिवार्य है—तब तक यह ग्रन्थ भी व्यापारियोंके गौरव और महत्वकी सामग्रीके रूपमें रहेगा।

व्यापार क्या है—यह बताना कठिन है, क्योंकि आज इसके महत्वको हम भारतवासी भूल गये हैं हमारा व्यापारिक ज्ञान विदेशियों द्वारा हरण कर लिया गया। यह बात नहीं है कि भारतवासी इसका महत्व जानते ही नहीं थ—नहीं, भारत व्यापारके महत्वसे भलीभांति परिचित था और उसके इस महत्वने ही विदेशियोंकी आंखें--उनका ध्यान-इसकी ओर खींची। इसी व्यापारने उन्हें सात समुद्र पारसे यहां बुलाया। वे भारतकी उन्नतावस्था-समृद्धावस्था-देखकर इसके महत्वको समझ गये-समझे ही नहीं पर इस महत्वपूर्ण कार्यको करनेमें लग भी गये और आज उसीके बल या यों कहा जाय कि उसकी रक्षा या उसे अपने अधिकारमें बनाये रखनेके लिए ही भारतपर राज्याधिकार कर रहे हैं।

जिससे जो लाभ होता है वह भारतवासियोंको नहीं पर पूंजी लगानेवाले उन विदेशी पूंजी पतियोंको मिलता है इस लाइसे यहांके उद्योग धन्धे या कल कारखानोंमें जो मुनाफा रहता है वह भी मुनाफा उन विदेशियोंकी ही जेबोंमें जाता है और इस भांति विदेशी माल या विदेशी पूंजी भारतीय कला और उद्योगके मुख्य नाशकारी साधन हो रहे हैं !

आज भारत चाहे जितना दीन दरिद्री हो,पर प्राचीन कालमें वह इतना धनी था कि उसके जोड़का संसारमें शायद ही कोई दूसरा देश हो। अनेकों डाकू लेकर कितने विदेशी न जाने कितना धन लूट पाटकर यहांसे ले गये। जब महम्मद गोरी यहांसे लूटकर लौटा तो उन लूटे हुए धनका कुछ परिमाण नहीं बंध सका। अकेले नगरकोटकी लूटसे उसे ७ लाख स्वर्ण दीनार, ७००मन सोने चांदीके पत्र,२०० मन खालिस सोनेकी ईंटें,२००० मन बिना ढली हुई चांदी और २० मन जवाहिरात जिनमें मोती, मूंगा, हीरा पन्ना आदि कई प्रकारके रत्न थे, हाथ लगे। इसी प्रकार न जाने कितने हमले हुए और विदेशी यहांसे कितना द्रव्य भरकर ले गये। नादिरशाहकी लूटका अनुमान ९ अरब रुपयेसे अधिकका किया जाता है। इसी भांति मुहम्मद बिनकासिमने मुल्तान विजय किया तो उसे केवल एक मन्दिरसे १३२०० मन सोनेके बराबर धन मिला। सुल्तान महमूदने भीमनगरके एक मंदिरको लूटा तो उस धन दौलत और रत्न भण्डारका लादकर ले जाना ही उसके लिये कठिन हो गया। जितने ऊंट मिले उन सब पर लादकर वह ले गया। चांदी और सोनेका वजन ७००,४०० मन हुआ और जब गज़नीमें पहुंचकर उसने उस लूटे हुए द्रव्यको खोला तो उसे देखकर उसके दरबारी दंग रह गए, वह लाल माल इतना था कि उन बिचारोंने देखा तो क्या कभी सुना तक भी नहीं था। कन्नौजमें यहांके वैभवको देखकर महमूदके मुंहसे निकल गया कि ओहो ! यह तो स्वर्ग ही है। उस स्वर्ग भूमि भारतका आज यह क्या हुआ ! जिसकी सभ्यता, उच्चता संस्कृति आदिका ढिंढोरा चारों ओर था वही ऐसा गिरा, ऐसा निसत्व हुआ कि आज उसके जोड़का गया बीता अन्य कोई नहीं है। अफीमची चीनके साथ भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह सब क्या हुआ ? यह लक्ष्मी कहां चली गई ? कहना होगा कि जहां व्यापार गया वहींपर गई और इसीके कारण भारतकी आज यह दशा है। कहा भी है:—

> दारिद्र्यात् ह्रियमेति ह्री परिगतः सत्वात् परिभ्रश्यते,
> निःसत्व परिभूयते परिभवान्निर्वेद मा पद्यते।
> निर्विण्णः शुचिमेति शोक निहितो बुद्ध्या परित्यज्यते,
> निर्बुद्धयाः क्षय मेत्य हो निधनता सर्वापदा मास्पदम् ॥

कवि दुःखके साथ कहता है कि दारिद्र्य सब आपदाओंका घर है। इस बातका प्रमाण भारतकी वर्त्तमान दशा है। सब बातोंको दारिद्रने ढंक दिया। ऐसी हालतमें अन्य सब गुण कर भी क्या सकते थे, उन्हें भी भारतसे विदा लेनी पड़ी। आज शक्ति, बल, सत्ता, साहस, आत्माभिमान, आत्म गौरव

आदि सब गुण न जाने कहां चले गये। कहां है वह बल और आदर? आज विदेशोंमें आदरकी बात तो दूर रही पर घरकी घरमें बुरी दशा है। बाहर जो अपमान निरादर होता है उसकी बात छोड़ देने-पर भी अपने यहांकी दशाका मिलान एक साहब और भारतीयके मान, इज्जत, आदरके भेदसे भली-भांति हो जाता है। यहां यह शंका हो सकती है कि एक दारिद्र्य अवगुणके होनेसे ऐसी दशा क्यों हुई या एक अवगुणके होनेसे अन्य सब गुणोंका क्या हुआ? एक अवगुण होनेसे अन्य गुणोंको भागनेकी क्या आवश्यकता आपड़ी और इस तरह एक अवगुणका इतना प्रभाव भी कैसे पड़ सका? महाकवि कालिदासने कहा है:—

"एकोहि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः" कि अनेक गुणोंमें दोष इस तरह छिप जाता है जैसे चन्द्रमाकी मनोहर उज्वल कान्तिमें उसका कलङ्क। हो सकता है, अन्य किसी अवगुणके लिये यह मान हो सके कि वह अन्य गुणोंमें अपना प्रभाव न चला सके और स्वयं ही उन गुणोंके बीच छिप जाय, पर दारिद्र्यका दोष ऐसा वैसा साधारण अवगुण नहीं कि वह छिप जाय या अपना प्रबल प्रभाव दिखाये बिना रह जाय। इसलिए एक अन्य कविने क्या ही अच्छा कहा है:—

"एकोहि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः इतियोवभाषे।
नूनं न दृष्टः कविनापि तेन दारिद्र्य दोषो गुणराशि नाशीः॥

वह कहता है कि गुणोंके समुदायमें एक दोष छिप जाता है ऐसा जिस कविने कहा उसने यह बात नहीं देखी या विचारी कि दारिद्र्य सब गुणोंका-गुणोंके ढेर पुंजका-नाश कर देता है। सत्य है प्रत्यक्ष प्रमाणित बात है। तभी तो दारिद्र्यके प्रति पक्षी—धनमें यह गुण है कि सब गुण उसमें आ जाते हैं, जहां वह है वहां सब गुणोंका निवास है। जिस भांति दारिद्र्यमें सब दोष आ जाते हैं उसी भांति धनमें सब गुण आजाते हैं। आ किस तरह जाते, धन उन्हें बुलाने नहीं जाता है। वे सब स्वयं चले आते हैं आते ही नहीं पर आश्रय ले लेते हैं। तभी कहा है "सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति" इसलिए, यदि भारतको अपने दुर्दिन भगाने हैं पहली सी बात बनानी है तो लक्ष्मीका आह्वान एवं उसके भंडार व्यापारका आश्रय लेना चाहिए। यही एक ऐसा साधन है जो गई हुई लक्ष्मीको फिरसे ला सकता है। मनु महाराजने लिखा है:—

व्यापार राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, इससे राज्यका सम्मान बढ़ता है, देशके व्यापारी वर्गको उद्यमकी प्राप्ति होती है और कला-कौशलकी उन्नति होती है। यह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति और काम धन्धेकी जुगाड़का साधन है, इससे शत्रु भयभीत रहते हैं और राज्यके लिए यह परकोटेका काम देता है। इससे नाविकोंका पालन होता है युद्धकालमें बड़ी भारी सहायता मिलती है और संक्षेपमें बात यह है कि यह लक्ष्मीका निवास है।

मनु महाराजने व्यापारकी महिमाका वर्णन करते हुए उसके सब अङ्गोंका वर्णन कर दिया है।

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

जबतक ये बातें उसमें नहीं होती तबतक हम उसे हमारा व्यापार कैसे कहें एवं वह लक्ष्मीका निवास कैसे हो सकता है। आज भारतका व्यापार हमारा व्यापार नहीं है वह विदेशी राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, विदेशी व्यापारीवर्गके लिए उद्यमकी प्राप्ति और कला कौशलकी उन्नतिका साधन है। व्यापारके साथ देशके उद्योग धंधेकी, कला कौशलकी, सामुद्रिक बेड़ेकी और उसके धन वैभवकी बढ़वारी होनी चाहिए। जबतक ये बातें नहीं तबतक हमारा व्यापार नहीं है, यही कहना उपयुक्त होगा एवं कहना पड़ेगा कि आज भारत व्यापारहीन, कला कौशल और उद्यमहीन हो रहा है, यह सब विदेशी शासकों की कृपाका फल है। इनके गत एक शताब्दिके शासनने भारतको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और व्यापारिक सब परिस्थितियोंमें गिरा दिया। इन सब बातोंमें सिरमौर रहनेवाले भारतकी प्राचीन कालमें व्यापारिक दशा कैसी थी यह सबसे पहले विचारणीय है।

भारतका पूर्वकालीन व्यापार

भारतमें धनकी नदी बहती थी, माल खजानेका यहां ढेर था, इस धनके भंडार-सागरमेंसे न जाने कितने विदेशी कितना माल भर भरकर लेगए। भारतकी ऐसी समृद्धि निश्चय ही व्यापारके कारण थी। व्यापारके बिना लक्ष्मी कहांसे आती और लक्ष्मी थी यही बात भारतमें व्यापारकी उन्नतावस्थाका पक्का प्रमाण है। जिस भांति भारत लक्ष्मीका निवासस्थान था उसी भांति वह व्यापारका भी केन्द्र था। ई० सनसे ६-७ सौ वर्ष पहले भारतका व्यापार इटली, यूनान, मिश्र, फोनीसिया, अरब, सीरिया फारस, चीन और मलाया आदि देशोंके साथ होता था। बहुत प्राचीन काल अर्थात् मनुमहाराजके समयमें यहां जहाज बनाये जाते थे और उनसे समुद्रयात्रा की जाती थी इस बातका वर्णन मिलता है। भारत मिश्रोंके हाथमें व्यापारकी डोर थी इसका मिश्रके ग्रन्थोंमें विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है; जिनमें यह भी लिखा है कि भारतीय पोत समुद्रोंमें विचरते थे। जो कुछ प्राचीन प्रमाण मिलते हैं उनसे यह भली भांति सिद्ध होजाता है कि भारतका भीतरी एवं विदेशी व्यापार निश्चयही २६०० वर्ष से लेकर सम्भवतया ४००० वर्ष पूर्वतक अच्छी तरह चलता था। यद्यपि अंगरेज सरकारके शासनमें आजकल जिस भांति व्यापारिक आंकड़े मिल जाते हैं, वैसे प्राचीन कालमें नहीं मिलते तथापि प्राचीन ग्रन्थोंसे आजकलके और पहलेके व्यापारिक ढंगका पता भलीभांति चल जाता है। मिस्टर डेनियल (Mr. Daniell) ने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारत उन्हीं पदार्थोंको बाहर भेजता था जो उसके यहां अधिक होते थे और वे पाश्चात्य एशिया, इजिप्ट और योरपमें भारी दामोंमें बिकते थे वे पदार्थ भारतके सिवा और कहींसे उत्पन्न न हो सकते थे। यह थी भारतीय पदार्थोंकी महत्ता। इसी भांति बुद्ध-कालीन भारतके विषयमें राइसडेविडने (Rhys David) लिखा है कि रेशम, मलमल, बढ़िया कपड़े, अस्त्र शस्त्र, जरी बूंटोंकी कामदानियां और कमखें, सुगंधित पदार्थ,

लोहेके बाद लकड़ीका शिल्प आता है। पूर्व कालमें भारतमें जहाज बनते थे, इससे लकड़ीका शिल्प यहां विद्यमान था—यह बात सिद्ध हो जाती है। मूकर्जीने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारतमें दो हजार वर्ष पूर्व एक हजार या पन्द्रह सौ टन तककी भरतीके जहाज बनाये जाते थे। क्योंकि जहाजोंकी निर्माण कला एक राष्ट्रीय आवश्यकता समझी जाती थी इसलिए उस जमानेमें जहाजोंके बनानेके कारबारपर राजाका अधिकार रहता था। मेगास्थनीजने लिखा है कि "अस्त्र शस्त्र और जहाजोंके बनानेवाले शिल्पी लोग राज्यसे वेतन पाते हैं और वे लोग केवल राज्यका काम करते हैं"। चन्दन और सागवानकी लकड़ी भी यहांसे बाहर भेजी जाती थी।

अन्य धातुएं यथा पीतल, टीन और शीशा यहां बाहरसे आता था। सोना प्राचीन कालमें यहांसे निर्यात होता था। इस विषयमें मि० केनेडी (Mr. Konnedy.) ने लिखा है कि सोना इंडु नदीसे दूर पर्वतोंमें मिलता था और यह धूलिके रूपमें बाहर भेजा जाता था। कुछ मत यह भी है कि सोना और चांदीका यहां आयात होता था। भारतके निर्यात किये हुए पदार्थोंके मूल्य स्वरूप रोम और उसके प्रान्तोंसे स्वर्णका आयात इतना भारी होता था कि जिसे देखते हुए स्वर्णको भारतीय ऊपज न मानना भी कठिन हो जाता है। लेकिन साथ ही. यह बात है कि महमूद गजनी आदि लुटेरे भारतसे जो अमित धनराशि, स्वर्णके आभूषण और सिक्कियां आदि लूटकर ले गये, वह सब क्या केवल भेजे हुए मालके मूल्यमें बाहरसे मिले हुए स्वर्णसे संग्रहित हो जाना सम्भव था। इसलिए भारतमें सोनेकी स्थानीय प्राप्ति मान लेना भी असंगत नहीं जान पड़ता। इसके अतिरिक्त माइसोरकी सोनेकी खानोंकी वर्तमान खुदाईमें इस बातके चिह्न मिले हैं कि यहां पहले खुदाई हुई थी और सोना निकाला गया था।

भारत अन्य देशोंके साथ जवाहरातका कारबार प्राचीन कालसे करता रहा है। इसमें मोती मुख्य थे। रत्नोंका व्यवहार यहां बहुत भारी था। यहां मोती, मूंगा, गोमेद, फिरोजा आदि रत्नोंका आधिक्य था एवं अन्य मूल्यवान रत्न भी आवश्यकताकी पूर्तिके बाद यहांसे बाहर भेजे जाते थे।

कच्चे मालमें मुख्य व्यापारिक पदार्थ मसाले, जड़ी बूटियां, मिर्च, दालचीनी, इलायची, लौंग, जायफल, सुपारी, कपूर, अफीम, कस्तूरी और पुष्पसार तेल आदि थे। पुष्पसार और तेल बने हुए पदार्थोंकी गणनामें भी आ सकते हैं जिनकी रोममें बड़ी मांग रहती थी। मसाले आदि पदार्थ सम्भव है पूर्णतया यहांकी ऊपज न भी रहे हों। और यहां जिस समयका वर्णन है उसके बादसे जावा और सुमात्रासे ये पदार्थ योरपको भारी परिमाणमें जा रहे हैं। इसलिए सम्भव है कि मसालेकी चीजोंका भारतमें आयात और यहांसे निर्यात दोनों ही होते रहे हों। निश्चय ही इन चीजोंका निर्यात अधिक था क्योंकि सम्भवतया जावा और सुमात्रासे जो यहां आयात होता था उसका भी यहांसे पाश्चात्य पड़ोसी देशोंको निर्यात कर दिया जाता था।

इस भांति ई० १००० वर्षतक भारतके प्राचीन व्यापारपर दृष्टि डालनेसे यह निष्कर्ष निकलता है कि उसके निर्यातका अधिकांश भाग बना हुआ या पक्का माल होता था। कच्चा माल भी जाता था मगर बहुत कम खाद्य पदार्थोंमें मुख्यतया मसाले आदिका निर्यात होता था। मालके मूल्य पर भी विचार करनेसे यही मानना पड़ेगा कि आयातसे निर्यात अधिक होता था। जिसमें मुख्य भाग सब तरहके कपड़ेका था। प्राचीनकालमें भारत पश्चिमसे जो स्वर्णमुद्रा और धन खींचता था वह मूल्यवान निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप नहीं तो और क्या था। प्लनी (pliny) ने प्राकृतिक इतिहास (Natural History) में लिखा है कि "ऐसा कोई वर्ष नहीं था जब भारत रोम साम्राज्यसे १ करोड़ सेसटर्स नहीं खींच लेता था। यह द्रव्य आजकी विनिमय की दरसे १० लाख पौंड या १½ करोड़ रुपयेके बराबर होगा। यद्यपि आज शताब्दियों के बीतजाने पर भी यहांके आयातसे निर्यातकी तादाद अधिक होती है पर आजमें और उस दिनमें बड़ा अन्तर है। जो भारत अपने खानेके लिए खाद्य पदार्थोंका और उद्योगके लिए कच्चे पदार्थोंका अपने यहीं उपयोगकर न केवल अपनी आवश्यकताकी ही पूर्ति करता था बल्कि अपना बना हुआ पक्का माल विदेशोंको भी भेजता था वही भारत आज अपनी आवश्यकताओंके लिए विदेशों पर आश्रित है। प्राचीन कालमें भारत अपने यहां आयात किये हुए पदार्थोंका मूल्य यहांके बने हुए पदार्थोंको निर्यात कर चुका देता था एवं अपने निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप बाहरसे धन खींचता था, वहीं आज उसके निर्यातकी अधिकताका बाकी मूल्य उसके विदेशी शासकोंके पास पर्दे ही पर्देमें चला जाता है जिसकी कुछ खबर नहीं पड़ती। आज उसके निर्यातका आधिक्य इस बातसे और भी बुरा है कि वह मुख्यतया कच्चे माल और खाद्य पदार्थोंका समुदाय है। यदि ये पदार्थ यदि देशमें रहें और उनसे माल तयार किया जाय तो वह यहीं खप जाय और उसे विदेशी माल खरीदना न पड़े।

आजकी व्यापारिक वस्तुओंका २००० वर्ष पूर्वके पदार्थोंके साथ मिलान करनेपर और भी कई बातोंका अन्तर मालूम पड़ेगा। वर्तमानमें निर्यात किये जानेवाले पदार्थोंका यथा, चाय, पाट और गेहूंका उस समयके निर्यातमें कहीं भी वर्णन नहीं मिलता। उस समय चाय भारतमें न तो पैदा ही होती थी और न जिन देशोंके साथ भारतका व्यापार था वहां इसकी आवश्यकता ही थी। इसी भांति पाटसे यद्यपि यहांवाले उस समय अभिज्ञ थे और इसकी खेती भी होती थी पर उस समय इसका आजके सदृश व्यापारिक महत्व नहीं था। उस समय यहांसे रंग और रंगके पदार्थोंका जो निर्यात होता था वे भी आजके निर्यातमेंसे बिलकुल अदृश्य हो गये हैं। आज हमारे आयातमें मुख्य भाग कपड़ा, लोह लकड़की चीजें और तमाखू आदि का होता है. इन सब पदार्थोंकी पहले हमें बाहरसे मंगानेकी कोई आवश्यकता ही नहीं होती थी।

हमारे उस प्राचीन व्यापारकी एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस समय यहां बाहरसे आयात किये हुए पदार्थोंको फिरसे निर्यात कर देनेका भी बहुत बड़ा व्यापार चलता था। उदाहरणार्थ; सीलोनसे मोती, तिब्बत और बर्मासे सोना, भारतीय टापुओंसे मसाले, ईइूके आगेके देशोंसे घोड़े, चीनसे रेशम और चीनी मिट्टीके पदार्थ यहां मंगाये जाकर पश्चिमी देशोंको फिर निर्यात किये जाते थे और इससे बीचका मुनाफा अच्छा मिल जाता था। यह काम भारतको या तो इन दोनों तरहके (वस्तुओंको बनानेवाले और खपाने वाले) देशोंके बीच होनेके कारण मिलता था या यहांके व्यापारियों और समुद्रवाहकोंके उद्यम और युक्तिके बल पर। कुछ भी हो, यह काम चन्द्रगुप्त और अशोक एवं अकबर और शाहजहांके समयमें चलता था तो विक्टोरिया, एडवर्ड या आज सम्राट जार्जके समयमें भी भारतके लिए मौजूद है और जबतक भारत इसे अपनी गफलत और बेपरवाहीसे न खोदे कौन इसे नष्ट कर सकता है ?

इस तरहका व्यापार बिना अपने जहाजी बेड़ेके कैसे सम्भव हो सकता था। इसलिए यह निश्चय है कि प्राचीन आर्यकालमें एक हजार वर्ष पूर्व या उससे पहलेसे लेकर आजके दो सौ वर्ष पहले तक भारत दुनियाके व्यापारके वहन वाहनमें अच्छा भाग रखता था और उसके जहाजों में माल भरकर लाया और ले जाया जाता था। उन जहाजोंको भारतीय कारीगर यहीं की लकड़ी से बनाते थे और भारतीय केवट उन्हें दूर देशोंमें खेकर ले जाते थे। प्राचीन जहाजी कलाका वर्णन डा० मुकरजीकी पुस्तकमें बहुत अच्छा मिलता है जिसमें प्राचीन कालीन भारतीय नौ शिल्पका वर्णन बड़े विस्तारपूर्वक किया गया है।

व्यापार कुशल हुए बिना यह सब व्यापार किस तरह चलना सम्भव है और इस लिए यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उस समय यहांके व्यापारी लोग व्यापारिक रीति नीति और परिचर्यासे भली भांति भिज्ञ थे। व्यापारकी मंडी स्वरूप यहां बड़े बड़े नगर भी थे जहांके बजारोंमें व्यापारिक पदार्थ मुख्यतया मिला करते थे। इसी भाँति कई हिस्सेदारोंसे (Partners) मिल कर व्यापार करनेकी रीतिसे भी यहांके व्यापारी परिचित थे। एक व्यापारी जत्थेमें चाहे वह स्थल मार्गसे भ्रमण करे या जलमार्गसे, कई व्यापारी एक साथ मिल कर निकल पड़ते थे और सबके ऊपर बेड़ेका स्वामी नियत रहता था।

जब भारतमें व्यापार इतना बढ़ा चढ़ा था तो मुद्रा प्रणालीका होना भी आवश्यक था। बौद्ध ग्रन्थोंमें मुद्रा और उसके विभागका समुचित वर्णन मिलता है। कार्षापण, निष्क और सुवर्ण ये सब सोनेके सिक्कोंके नाम थे और कांसा और तांबेके छोटे सिक्के कांस, पाद और कनिष्कके नामसे चलते थे तथा बहुत सूक्ष्म लेन देनके लिए कौड़ियोंका व्यवहार प्रचलित था। बौद्ध ग्रन्थोंमें वर्णित 'सेठी' लोग निश्चय ही रुपये पैसेका लेन देन करते थे और वे

अपने व्यापारमें रुपया लगानेके अतिरिक्त उधार भी देते थे। व्याज सम्बन्धी नियमोंका वर्णन बौद्ध शास्त्रों, मनुस्मृति एवं चाणक्य नीतिमें भलीभांति मिलता है। इन नियमोंसे प्रमाणित होता है कि उस समय उधार देना एक जाना हुआ काम था।

इस तरहकी व्यापारिक उन्नतिके जमानेमें व्यापारके प्रति राजाका भी सद्सम्बन्ध होना आवश्यक था। राजा व्यापारिक वस्तुओंपर कर एकत्र करता था और नाप एवं तौलपर जांच पड़ताल रखता था। चाणक्यके अर्थशास्त्रमें जो—मौर्य साम्राज्यके संस्थापकके समयमें रचा गया था—इस तरहके करों और लगानोंका वर्णन भलीभांति मिलता है। आयात और निर्यात पर लगनेवाले व्यापारिक करका भी इस ग्रन्थमें उल्लेख आया है। मनु महाराजने भी लिखा है:—

"खरीद और बिक्रीके भावोंका अच्छी तरह विचार कर एवं लाने और ले जानेके खर्चको ध्यानमें रखकर राजाको व्यापारिक कर वसूल करना चाहिये।"

"भलीभांति सोच समझकर राजाको अपने राज्यमें कर और लगान लगाना चाहिए जिससे राज्यको और पैदा करनेवालेको अपना उचित और न्यायपूर्ण भाग्य मिल सके।"

"जिस भांति गायका बच्चा और मधुमक्खी थोड़ा थोड़ा भोजन संग्रह करते हैं उसी भांति राजाको भी अपने प्रजाजनोंसे स्वल्प कर लेना चाहिए।"

इस भांति भारतकी प्राचीन व्यापारिक उन्नतिके प्रमाण समुचित रूपमें मिलते हैं।

मुसलमानी कालमें भारतीय व्यापार

(सन ई० ११०० से १७०० तक)

इस समयके व्यापारका वर्णन करनेके पूर्व यह कहना आवश्यक है,कि देशमें राजनैतिक अशांति रहनेके कारण इस समयमें व्यापारने कोई ऐसी उन्नति नहीं की, जो शांतिके समय हो सकती थी। मुगल सम्राटोंके पूर्व दिल्लीके सम्राटोंका शासन कभी भी सुव्यवस्थित नहीं था। दक्षिण प्रान्तकी स्थिति उत्तर जैसी बुरी न थी। तथापि विन्ध्याचलके दक्षिण प्रान्तोंमें हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा कोई अनजानी बात न थी अर्थात् वहां भी यह पारस्परिक कलह किसी न किसी रूपमें अवश्य विद्यमान था। मुसलमानी काल एवं प्राचीन समयमें जो व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, उनमें मालाबारका व्यापार चीन और पश्चिम देशोंके साथ अच्छा चलता था। मसालेके पदार्थ यथा मिर्च, लौंग, जायफल, इलायची, जवाहिरात, मोती, हीरा, माणक, फिरोजा आदि; रूईके सब तरहके कपड़े, ऊनी शाल, दुशाले, गलीचे; चीनीमिट्टी और कांचके पदार्थ; भारतीय शिल्प द्रव्य और पशु—मुख्यतया घोड़े—भारतके आयात और निर्यात व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, जो भारतके दक्षिणी बंदरोंसे होता था। आगरासे लाहौर होते हुए काबुल और वहांसे मध्य तथा पूर्वी एशिया; मुल्तानसे कंधार और वहांसे पारस और पश्चिमी एशिया तथा योरपके साथ होनेवाले व्यापारके भी ये मुख्य पदार्थ

थे। तत्कालीन राजकीय परिस्थितिके कारण व्यापारका उन्नतावस्थापर पहुंचना कठिन था, तब भी भारतीय व्यापारका परिमाण और मूल्य काफी बड़ा होता था।

इस समयके व्यापारका क्रमबद्ध इतिहास मिलना कठिन है, तब भी "अकबरकी मृत्यु समय भारत" (India at the death of Akbar) नामक पुस्तकमें मि०मोरलेंड (Mr. Moreland) ने बहुत कुछ वर्णन किया है यथा "देशमें आवश्यकीय खाद्य पदार्थ होते थे सिर्फ फल, मसाले और [illegible] पदार्थोंका बाहरसे आयात होता था। कपड़ा भी सब यहीं होता था। सिर्फ रेशम और [illegible] बाहरसे आता था"।

[illegible] छोड़कर अन्य खनिज पदार्थोंमें नमक और हीरा ये दो मुख्य पदार्थ थे। नमकके उत्पत्ति स्थान [illegible] थे, जो आज हैं। यथा, सांभरकी झील, पंजाबकी खानें और समुद्री किनारे। [illegible] नामक विख्यात हीरेके उद्गम स्थान गोलकुण्डाकी खानोंमें हीरा निकालनेका उद्योग मुसलमानी कालमें भी उसी भांति जारी था जैसा पूर्ववर्णित हिन्दू कालमें था। फ्रेंच यात्री टेवरनियरने (Tavernier)—जो भारतमें १८ वीं शताब्दीमें आया था—अनुमान लगाया है कि [illegible] खानोंमें ६०००० और छोटा नागपुरकी खानोंमें ८००० मनुष्य काम करते थे। [illegible] बाजारमें [illegible] भी उल्लेख करना उचित है। शाहजहांके मयूर सिंहासनमें [illegible] जड़ी थी, उसे जाने दीजिये। १५ वीं शताब्दिमें अब्दुलरज्जाक नामक यात्रीने [illegible] राजाकी पोशाकके विषयमें लिखा है कि "राजाकी पोशाक जैतून साटनकी [illegible] मोतियों का एक ऐसा हार पहने था कि जिसके मूल्यको कूंतना एक [illegible] भी कठिन था"। इसी भांति इसी नरेशके सिंहासनके विषयमें यह यात्री लिखता है कि "[illegible] बड़ा हुआ सोनेका सिंहासन विशाल आकारका था और ऐसी [illegible] बना हुआ था, जैसा दुनियाके किसी अन्य राज्यमें नहीं देखा। सिंहासनपर [illegible] एक मसनद रखी हुई थी जिसके चारों ओर बहुत कीमती मोतियोंकी तीन [illegible] हुई थीं।

[illegible] रत्नोंकी [illegible], व्यवहार और मूल्यके विषयमें भी उस समय यहां [illegible] जानकारी थी। [illegible] लिखा है कि "[illegible] मूल्य [illegible] है [illegible] बादशाहके अधिकारमें जो रत्न आये हैं वे [illegible] है :—

[illegible]	११	टंक	२०	रत्ती	मूल्य	रु०	१००,०००
हीरा	५॥	"	४	"	"	"	१००,०००
[illegible]	१७॥	"	३	"	"	"	५२,०००
[illegible]	४	"	७॥	"	"	"	५०,०००
[illegible]	५	"	"	"	"	"	५०,०००

इससे यह भली भांति सिद्ध है कि यहां इन पदार्थोंका व्यापार चलता था। जो रत्न यहां न होते थे उनका भी बाहरसे आयात होकर बहुत भारी व्यापार होता था।

खनिज पदार्थोंके बाद लकड़ीके सब तरहके पदार्थोंका व्यापार उल्लेखनीय था यहांके बनाये हुए जहाज काफी बड़े होते थे जबतक अंग्रेजी राज्यने British Navigation Law द्वारा जहाज बनानेका भारतीय उद्योग नष्ट नहीं किया तबतक जहाज बनानेका काम भी यहांपर मुख्य था। मि० मोरलैंडने लिखा है कि पुर्तगाल वालोंके व्यापारको छोड़कर भारतीय समुद्रोंमें व्यापारिक आवागमन भारतीय जहाजोंमें होता था, जो भिन्न भिन्न बंदरोंमें बनाये जाते थे। यह कहना नहीं पड़ेगा कि जिन छोटी नावोंमें बंगालसे लेकर सिंधतकका सरहदी व्यापार होता था, वे भी भारतमें ही बनती थीं। "पन्द्रहवीं शताब्दिमें भारत" India in the XV Century नामक पुस्तकमें योरूपीय यात्री निकोला कोन्टी (Nicola conti) ने उस समयके व्यापारियोंका वर्णन करते हुए लिखा है कि "वे बहुत धनी हैं इतने बड़े धनी कि उनमेंसे कईके पास ४० तक जहाज हैं, उन सबमें व्यापार होता है इनमेंसे प्रत्येक जहाजका मूल्य करीब १५००० स्वर्ण मुद्रा होगा"। इस भांति उस समयके इतने मूल्यवान जहाजोंके आकारका अनुमान भली भांति लगाया जा सकता है। इन सब बातोंसे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय व्यापारी जहाजोंमें केवल व्यापार ही नहीं करते थे, पर उनके वे जहाज बनते भी यहीं थे।

खाद्य पदार्थोंका वर्णन करते समय कहना पड़ेगा कि मुसलमानी कालमें खाद्य पदार्थोंका कोई व्यापार नहीं था। जहाजके यात्रियोंके लिये थोड़ा अन्न भले ही व्यापारका विषय रहा हो, पर इसका अधिक महत्व नहीं था।

पशुओंमें घोड़ोंका व्यापार उल्लेख योग्य है। यद्यपि घोड़े इराक, रूम तुर्किस्तान, तिब्बत और अरबसे आते थे तथापि यह बात नहीं है कि भारतमें अच्छे घोड़ोंकी पैदावारीका बिलकुल अभाव था। अबुलफजलने कई स्थानोंके घोड़ोंका उल्लेख किया है जिनमें कच्छ प्रान्तका उल्लेख करते हुए लिखा है कि यहां अरबी घोड़ोंके सदृश बढ़ियां घोड़े होते है। उसने लिखा है कि पंजाबमें इराकी घोड़ोंके सदृश; घोड़े होते हैं और पट्टी हिबतपुर, बेजवाड़ा, आगरा, मेवाड़ और अजमेरके सूबेमें भी अच्छे घोड़े होते हैं। अलबेरूनी नामक प्राचीन लेखकने लिखा है कि "जमालुद्दीन इब्राहीमके साथ यह सौदा हो चुका था कि १४०० बढ़ियां अरबी घोड़े और १०००० कातिफ, लहासा, बहराइन आदि स्थानोंके घोड़े प्रति वर्ष भेजे जायँ"। इसमें एक घोड़ेका मूल्य २२० दीनार लिखा है। अकबरके समय एक दीनारका मूल्य ३० रुपयेका था और इस हिसाबसे यह सौदा ७, ५२, ४०००० रुपयाका होता है। इसी बातका ३०० वर्ष बाद उल्लेख करते हुए वासफ Wassaf ने लिखा है कि इन बाहरसे मंगाये हुए घोड़ोका मूल्य कर की बचतमें से चुकाया जाता था न कि राज्यके कोषसे। १० से १५ वीं शताब्दि-

तक यह व्यापार बड़े जोरोंपर था। राजाके अतिरिक्त सर्वसाधारणकी लेन देनको छोड़कर इस व्यापारके परिमाण और मूल्यका अनुमान लगाना कठिन ही है। उल्लिखित ७ करोड़का अङ्क केवल एक राज्यसे संबंध रखता है। इस भांति उत्तर और दक्षिण सब मिलाकर औसत १ लाख घोड़ोंका आयात प्रति वर्ष माना जाय और एक घोड़ेका औसत मूल्य १००० रुपया रखा जाय तो कमसे कम १० करोड़ रुपयेका यह व्यापार हो जाता है। घोड़ोंके आयात की ही तरह सम्भव है हाथियोंका निर्यात भी होता रहा हो पर इसका विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। यह बात हो सकती है कि हाथी खुश्की रास्तेसे भेजे जाते हों और घोड़ोंके आयातके सामने उनके निर्यातका अधिक महत्व न रहा हो। भार ढोनेमें ऊँटोंका व्यवहार आज तक हो रहा है पर उस समयके विदेशी व्यापारमें ऊँटोंका भाग कितना था यह निश्चयरूपसे नहीं कहा जा सकता। कृषि-सम्बन्धी अन्य पशु यद्यपि भारतमें भारवहनके काममें आते थे पर उनका विशेष उपयोग कृषिके काममें ही होता था। स्थानीय आवश्यकता एवं भारतीय जनताके धार्मिक प्रतिबंधने इनके निर्यातमें बिलकुल रोक डाल रखी थी। इन पशुओंको बाहरसे मंगानेकी यहां आवश्यकता भी न थी और न पड़ोसी देशोंमें ये अधिक होते ही थे इसलिये इनका आयात भी नहीं होता था।

भारतके बने हुए मुख्य पदार्थ कपड़ेका वर्णन करनेके पूर्व चीनीके लिये यह कह देना आवश्यक है कि मुसलमानी कालमें इसका भी थोड़ा बहुत व्यापार चलता था और इसी भांति तेल लेप और सुगन्धित द्रव्य भी विदेशी व्यापारके पदार्थ थे। ये सब पदार्थ यहांकी उपजसे (कच्चे माल) तैयार होते थे। चीनीका व्यापार मुख्यतया स्थानीय था और बंगाल, लाहौर तथा अहमदाबाद इसके केन्द्र थे। तेलका व्यापार विदेशोंसे भी चलता था यद्यपि यह कहना कठिन है कि यहांके बने हुए पदार्थका कितना भाग बाहर भेज दिया जाता था। नील और नीलसे बने अन्य रंग भारतके मुख्य पदार्थ थे और यहांसे इनका बहुत भारी निर्यात होता था। कागजके लिये मि० मोरलैंड कहते हैं कि "यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तरी भारतमें कई स्थानोंमें कागज़ हाथ से बनाया जाता था और जिसका बनाना अभीतक बंद नहीं हुआ है"।

भारतीय व्यापारमें मुख्य उल्लेखनीय पदार्थ यहांका बना कपड़ा है, जिसमें सब तरहका कपड़ा समझना चाहिये। योरपीय लेखक बारबोसा और वारथीमा (Barbosa & varthoma) मेंसे बारबोसाने लिखा है कि रेशमी कपड़ा गुजरातसे अफ्रीका और बरमाको जाता था इसी भांति वारथीमाने लिखा है कि गुजरातसे पारस, टारटरी, टरकी, सिरिया, बारबरी, अरब, और इथियोपियाको रेशमी और सूती माल भेजा जाता था। अबुलफजलने लिखा है कि अकबर भोजनकी अपेक्षा कपड़ेका अधिक प्रेमी था। उसका वस्त्र-भण्डार बहुत विशाल था और उसके निजके व्यवहारके लिये प्रति वर्ष १००० पोशाकें बनाई जाती थीं। इसके अतिरिक्त इनाममें देनेकी और

दरबारमें आनेवाले मनुष्योंको पदके अनुसार बांटी जानेवाली पोशाकें अलग हैं। इससे यह सिद्ध है कि उस समय कपड़ेका खर्च काफी था एवं बादशाह और अमीर उमरावों द्वारा इस उद्योगमें समुचित सहायता मिलती थी।

तत्कालीन व्यापारी और यात्रियोंके लिखे हुए वर्णनसे यह सिद्ध होता है कि उस समय भारतमें रेशमका उद्योग अच्छा चलता था और उससे स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति एवं निर्यात दोनों काम होते थे। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि रेशमी मालका कुछ भी आयात नहीं होता था। कचा रेशम बाहरसे आता था और सम्भव है कि थोड़ा बहुत रेशमी कपड़ा भी आता रहा हो। टेवरनियरके आधारपर मि० मोर बंगालमें २५ लाख रतल रेशमकी पैदावार लिखते हैं और यह भी कहते हैं कि यह पदार्थ ५ लाख रतलसे अधिक बाहरसे नहीं आता था। इसलिये आयात एवं यहांकी उपज दोनों मिलाकर ३० लाख रतल कच्चे रेशमकी यहां खपत होती थी। कुछ भी हो भारतसे रेशमी मालका निर्यात होना एक ऐतिहासिक बात है।

ऊनी कपड़ा यहां अधिक बनता था या नहीं, यह सन्देहजनक है। उस समय ऊनी कपड़ेका व्यवहार यहां अधिक नहीं था। शाल-दुशाले (ख़ालिस ऊनी एवं रेशमी मिले हुए) अकबरके समयमें बहुत बढ़िया बनते थे। दरियां और गलीचे आगरा और लाहोरमें बनते थे एवं पारससे भी आते थे। शाल-दुशालोंके विषयमें अबुलफ़ज़लने लिखा है कि "बादशाहकी देखरेखके कारण काश्मीरमें शाल-दुशालेका काम उन्नतावस्थामें है और लाहोरमें इसके १०० से ऊपर कारखाने होंगे।"

सूती कपड़ा भी जो भारतका प्रधान उद्योग था—व्यापारका एक मुख्य पदार्थ था। पायरर्ड (Pyrard)ने लिखा है कि "गुडहोप अन्तरीप (Cape of good Hope) से लेकर चीनतकके नर-नारी सिरसे पैरतक भारतीय कपड़ा पहने हैं"। मि० मोरलेंडने भी लिखा है कि "यहांका कपड़ा स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति कर देनेके बाद अरब और उससे आगे तथा पूर्वी टापुओंको एवं एशियाके कई भाग और अफ्रीकाके पूर्वी भागको भी भेजा जाता था।"

इस भांति मुसलमानी कालमें भारतीय उद्योगका वर्णन मिलता है पर तत्कालीन भारतके आयात निर्यात व्यापारके अङ्क बताना किसी प्रकार सम्भव नहीं। योरोपीय यात्री और व्यापारियोंने यहां आना आरम्भ किया उस समयके बादसे वर्णन फिर भी विशदरूपसे मिलता है तथापि ७०० वर्षके इस कालका जो दिग्दर्शन यहां किया गया है उस समयके व्यापारिक अङ्क जाननेका कोई साधन नहीं है। कुछ भी हो, पर यह भलीभांति सिद्ध है कि उस समय भी भारतीय व्यापार बढ़ा-चढ़ा था। इस बातके प्रमाणके लिये कोंटी (Conti) का यह लिखना—कि भारतीय व्यापारी अपने जहाजोंमें व्यापार करते थे। इसमेंसे एक जहाजका मूल्य करीब (१५००) मोहरें तक होता था और एक-एक व्यापारीके ऐसे ४० तक जहाज होते थे—काफ़ी प्रमाण है; एवं विजयनगरके धनवैभवपर भी यह कहा

जा सकता है कि वह बिना व्यापारके कहांसे आ सकता था। यह सब होनेपर भी १७ वीं शताब्दिमें सूरतके बंदरोंमें लगे हुए जहाजोंको देखकर अंग्रेज लेखक टेरी और प्रायरकी लिखी हुई बातोंका उल्लेख करना यहां अनुचित नहीं होगा। जैसा इन लेखकोंने लिखा है उसके अनुसार यदि अकेले सूरतमें एक सौ जहाज नदीमें पड़े पाये जाते थे जो सब भारतीय थे (इस संख्यामें बाहर अर्थात् अरब, तुर्की और योरपके कोई जहाज गर्भित नहीं थे) तो इस हालतमें मध्य-कालीन भारतके लाहोरी बंदर, कैंबे, भडूंच, चौल, गोआ, मंगलोर, सटकल, कालीकट, नागा-पट्टम, मसुली पटम, मदरास, हुगली, सतगांव आदि बंदरोंका यदि विचार किया जाय तो यह कहना कुछ अत्युक्ति नहीं होगी कि उस समय समुद्री यात्रा करनेके योग्य १००० हजारसे अधिक जहाज यहां रहे होंगे। यदि भार वहनकी शक्तिप्रति जहाज ५०० टनकी मानी जाय और प्रत्येक जहाज वर्षमें एक यात्रा भी करता हो तो प्रति वर्ष ५ लाख टनसे कमका व्यापार नहीं होना चाहिए विदेशी जहाजोंको भी—जिनमें अरबी जहाज मुख्य थे -यदि इस गणनामें शामिल किया जाय तो निश्चय ही इससे दुगुना व्यापार मानना पड़ेगा।

प्राचीन कालमें भारतमें सोना चांदी निकलता भी था पर जिस समयका यहां वर्णन हो रहा है उस समय वे पदार्थ यहां नहीं होते थे, बाहरसे आते थे। ये, भारतमें उसके व्यापारके मूल्य स्वरूप आते थे और इसके द्वारा चांदी सोनेकी अमित राशिजो यहां संग्रहीत थी उससे अनुमान लग जाता है कि यहांका व्यापार कितना बड़ा रहा होगा। महमूद गजनवीकी बात जाने दीजिए जो भारतसे हजारों मन सोना लूट कर ले गया। यहां अकबरके समयके इतिहास लेखक फरिश्ताकी लिखी हुई बातका उल्लेख किया जाता है, उसने लिखा है कि दक्षिणको जीत कर जब मलिक कफूर अलाउद्दीन खिलजीके पास लौटा तो उसने अपने स्वामीको ३१२ हाथी २०००० घोड़े और ५०००० मन सोना, रत्न और मोतियों आदिसे भरी हुई संदूकें भेट कीं। इसमेंसे केवल सोनेके मूल्यका अनुमान मि० सिवेल (Mr. sowell) ने अपनी पुस्तक (A forgotten empire) में लगाते हुए लिखा है कि "१, ५६, ७२,००० रतल सोना ८५ शिलिंग प्रति औंसके हिसाबसे १०६, २६,९६,००० पौंडके मूल्यका रहा होगा" यह एक विजयके बाद एक सेनापति द्वारा दी हुई भेट की बात है। इसी भांति दक्षिणके वैभवकी बातका पक्का प्रमाण काफूरके हमलेके १०० वर्ष पीछे अबदुरराजाक नामक अरबी यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनमें मिलता है। उसने लिखा है कि "एक दिन संध्या समय राजाने तुच्छ व्यक्ति (अब्दुर रजाक) को बुलाया, वहां मैंने देखा कि महलकी छत और दीवालें सोनेके पत्तरसे मढी हुई हैं और उनमें रत्न जड़े हुए हैं। इन पत्तरोंकी मोटाई तलवारकी पीठकी मोटाई जैसी थी और इनमें सोनेकी कीलें जड़ी हुई थीं। राजाका विशाल सिंहासन भी सोने का बना था"। इसी भांति पोज़ (Poes) नामक पुर्तगीज् यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनको उद्धृत

करते हुए सीवेल [Sewell] ने एक सौ वर्ष बादके विजय नगर दरबारकी एक और वैसी ही आश्चर्य जनक बात लिखी है। "दक्षिणके मुसलमानों द्वारा तालीकोटके युद्धमें हार जाने पर विजय नगरके शासकोंने कुछ ही घंटोंमें महल खाली कर दिये और जो कुछ धन सम्पत्ति वे ले सके उन्होंने भर ली। यह सब माल करीब १० करोड़ स्टेरलिंगके मूल्यका होगा, इसमें स्वर्ण पदार्थ और रत्नादिक थे, यह माल उन्होंने ५५० हाथियों पर लाद लिया और साथमें रत्न सिंहासन और राज्यके निशान आदि भी ले गये और नगर छोड़ कर चले गये।"

नादिरशाह या अहमद दुर्रानी आदिके हमलोंकी बात तो अभी अलग है लेकिन ऊपर जो कुछ वर्णन किया गया है उससे यह भली भाँति सिद्ध होता है कि भारतमें जो हजारों मन सोना चाँदी था वह बिना व्यापारके नहीं आ सकता था। व्यापार भी ऐसा नहीं कि जिसमें किसीको सताया जाय अथवा अनुचित या अन्यायपूर्ण लगान आदि लगाकर किया जाय। उस समयका जो व्यापार था वह केवल भारतीय उद्योगके बल पर था। उस समयकी सरकार आयात और निर्यात पर पक्षपात रहित कर लेती थी और जो कर किसी तरह भारी जान पड़ता वह छोड़ भी दिया जाता था। अबुल फज़लने अकबरके विषयमें लिखा है :—

"बादशाहने बंदरों पर लगने वाली चुंगीको जो एक साधारण राज्यकी सफरी आयके बराबर बैठती थी मुआफ कर दी है। अब आयात और निर्यात पर बहुत सूक्ष्म कर लिया जाता है जो २॥ प्रतिशतसे अधिक नहीं होता है। यह व्यापारियोंको इतना हलका जान पड़ता है मानों उन्हें कुछ लगता ही नहीं।" यह बात नहीं कि केवल अकबरने ही इस तरहकी उदारताका व्यवहार किया हो, १०० वर्ष या उससे अधिक पहले विजयनगर राज्यके द्वारा भी कालीकटके विदेशी आयात पर इसी तरहका सूक्ष्म कर लिया जाता था। अब्दुलरजाकने लिखा है कि "कालीकट एक बिलकुल निरापद और सुरक्षित बन्दर है जहां कई नगर और देशोंके व्यापारी आकर जुटते हैं। राज्यका इतना अच्छा प्रबन्ध और सुव्यवस्था है कि बड़े बड़े व्यापारी अपने जहाजोंमें जो माल भर कर लाते हैं उसे यहां खाली करके बज़ारोंमें लाकर निर्भयता पूर्वक संचय कर देते हैं और चाहे जितने समय तक बिना किसी प्रकारकी देख रेख या चौकीदारीमें सौंपे पड़ा रहने देते हैं। चुंगीघरके अधिकारी लोग इसकी रक्षा और चौकीदारी करते हैं। यदि माल वहां बिक जाता है तो २॥ प्रतिशत कर ले लिया जाता है और यदि नहीं बिके तो कुछ नहीं लिया जाता है।"

यहां एक बात और लिख देनेकी है कि सरकारी कर और चुंगी वसूल करते समय इस बातका पूर्ण ध्यान रखा जाता था कि किस भांति व्यापारको सहायता पहुंच सके और किसी तरहकी उसकी क्षति न हो। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकारके सुधार हो चुके थे। मुद्रा प्रणालीमें उचित उन्नति हो चुकी थी और इस विषयमें कोई असुविधा न थी। लाने और ले जानेके साधन यद्यपि

वर्तमान रेलके जमानेके सदृश न थे फिर भी उस समय सड़कोंके होनेका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। ईरान और पंजाब तथा उसी भांति गंगा और बंगालके जलमार्ग द्वारा आवागमन पर विचार करने पर सड़कों या रेलकी कमी अखरने जैसी बात नहीं रहती। मुसलमानी कालमें डाक प्रणालीका चालू हो जाना भी व्यापारके लिए एक अच्छी बात थी और मुगलकालमें यह काम बहुत उन्नति को पहुंच चुका था। हरकारे लोग पत्रोंको घुड़सवारोंसे भी अधिक तेजीके साथ पहुंचाते थे। इसका प्रबन्ध इस भांति था कि प्रति छ मीलकी दूरी पर चौकियां बनी हुई थीं जिनमें हरकारे तयार बैठे रहते थे। जब एक हरकारा चौकी पर पहुंचता तो वह अपने डाकके थैलेको जमीन पर रख देता (क्योंकि हरकारेके हाथमें थैला देना अशुभ समझा जाता था) वहां दूसरा हरकारा नियत रहता था वह डाकके थैलेको उठा लेता और आगे जाकर दे देता। इसी भांति मुगल राज्यके अधिकांश भागमें पत्र भेजे जाते थे। सड़क रास्तोंकी पहचान दोनों ओर लगे हुए वृक्षोंसे होती थी और जहां वृक्ष नहीं होते वहां प्रति ५०० कदम पर एक पत्थरकी टेकरी रहती थी, जिसे समीपस्थ गांव वाले चूनेसे पोतकर सफेद कर रखते थे ताकि अँधेरीरातमें भी वह दिखाई दे और राहगीर राह न भटक जाय।

इस भांति मुसलमानी कालकी ६-७ शताब्दियोंमें भारतकी व्यापारिक स्थिति संतोष जनक और लाभदायक थी।

अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतीय व्यापार

(योरोपीय व्यापारी दलोंका आगमन)

इस कालका वर्णन भारतकी व्यापारिक या औद्योगिक परस्थितिके विचारसे काले अक्षरोंमें लिखने लायक है। इस कालमें प्राचीन कालकी सुख, समृद्धि, धन वैभव, उद्योग कला, शिल्प चातुरीने [illegible] छिन्न भिन्न की [illegible] विदेशियों द्वारा ये सब बातें नष्ट कर दी गईं। जो भारत उद्योग और कला कौशलके लिए संसारका सिरमौर था, उसी भारतकी कारीगरीका अंत इस कालमें किया गया। केवल अंत ही नहीं वरन विदेशोंके बने माल पर आश्रित बना दिया गया। यह इतिहास बड़ा रौद्र और हृदय द्रावक है। भारतके पूर्व इतिहासमें विदेशियोंने कई हमले किए, बहुत लूट मार मचाई और वे लोग यहांसे अपार धन राशि लूट कर ले गये पर यहां जिस समयका दिग्दर्शन किया जायगा उसमें तो यह काम—भारतका व्यवसाय-धंधे चौपट करना और कौशल हीन बना कर किया गया [illegible] भयंकर हमला करनेवाले भारतके किसी शत्रुने भी नहीं किया।

भारतीय उद्योग कमीशन Indian Industril Commission ने अपनी रिपोर्ट इन

शब्दोंसे प्रारंभकी है "जब वर्तमान उद्योग प्रणाली और यंत्र कलाके उद्गम स्थान पाश्चात्य योरपमें जंगली लोग बसते थे, भारत अपने धन, शिल्प चातुरी और कारीगरीके लिए जगत् विख्यात था। थोड़े दिनोंकी बात है कि उसके इन गुणोंके कारण पाश्चात्य देशोंके यात्री और व्यापारियोंने यहाँ पहले पहल पदार्पण किया उस समयकी भारतीय कला भी योरपकी किसी उन्नततम जातिके लोगों से कम न थी"। भारतमें रुईसे सूत कातने और उस सूतसे कपड़ा बुननेका उद्योग कितना प्राचीन एवं घर गृहस्थीका एक साधारण काम था इस बातका प्रमाण वेदोंमें आये हुए इन वाक्योंसे भली भांति मिल जाता है "चिंता मुझे सूतके तागेकी तरह खा रही है, रात और दिन ये दो जुलाहे हैं जो वेजा बुन रहे हैं"। इन दृष्टान्तोंसे यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि उस समय भारतमें कपड़ा बुना जाता था। मिश्र वाली मृतदेहोंको भारतकी मलमलोंमें लपेटते थे एवं अपनी पेटियों-को भारतसे मिले हुए हाथी दांत, स्वर्ण और चन्दनसे सजाते थे। यूनानमें ढाकेकी मलमलें गांगे-तिक कहलाती थी।

लोहेके उद्योगकी भी यही बात है। इसकी चीजें केवल यहांकी आवश्यकताकी पूर्ति ही नहीं करती थीं, पर बाहर विदेशोंको भी भेजी जाती थीं। दिल्लीके समीपस्थ लोहेका स्तम्भ जो कमसे कम १५०० वर्ष पुराना है पूर्व कालीन लोहेकी गढ़ाईके उद्यमका पूर्ण परिचायक है। इसी भांति रेशमी सूती कपड़ा, शाल दुशाले, हाथी दांतके पदार्थ और अस्त्र शस्त्रके बनानेमें प्राचीन भारत बहुत निपुण था। उसके यहांकी पैदावार और तैयारकी हुई चीजें केवल भारतवासियोंकी आवश्यकता और ऐश आरामकी ही पूर्ति नहीं करती थीं प्रत्युत विदेशोंके बाजार भी इनसे पटे रहते थे। अकबरके समयमें भारतीय कला और शिल्प सुरक्षित थे। एक अंग्रेज अफसर मि० डबल्यू० एच० मोरलैंडने इस बातको माना है कि उन दिनों भारतमें रेशमका उद्योग बहुत बढ़ा चढ़ा था और करीब ३० लाख रतल रेशम कपड़ा बनानेमें लगजाता था। वे यह भी लिखते हैं कि भारतका रेशमी सूती कपड़ा पारस, टर्की, सीरिया बारबरी और अरबको भेजा जाता था। भारतकी बढ़िया मलमलों, छीटों, एवं कामदानीके थानोंके व्यापार होने १८ वीं शताब्दिमें ईस्ट इंडिया कम्पनीको ११७ प्रति शत मुनाफा बांटनेमें समर्थ किया और उसके १०० पौंडके शेअर ५०० पौंडतक बिक सके। उस समय योरपीय व्यापारियोंमें भारतके कच्चे मालके लिये नहीं पर उसके पक्के बने माल और कारीगरीकी चीजोंके लिए प्रतिद्वंद्विता मची थी। विदेशी व्यापारियोंके कारण भारतीय पदार्थ एमस्टरडम लंदन, पेरिस आदि नगरोंके बाजारोंमें भी चलने लगे और इन्हीं पदार्थोंके लिए जो वहां सभी मुनाफा देते थे विदेशियोंने भारतका पता लगाया। इस तरह योरपके व्यापारियोंके कारण यहांके व्यापार और कारीगरीमें कुछ समय तक लाभ पहुंचा। सन १८१७ में सर हेनरी काटन ने लिखा कि १०० वर्ष पहले ढाकाका व्यापार अनुमान १ करोड़ रुपयाका था और वहांकी आबदी २

लाखकी थी, लेकिन यह बात अधिक काल तक नहीं रही। इसके ५० वर्षके भीतर ही एक बड़ा उलट फेर होगया। सन १८१७ में ढाकासे यहांके बने पदार्थोंका निर्यात एक दम बन्द हो गया। कातने और बुननेका काम जो भारतका प्रधान शिल्प और उद्योग था और जिससे हजारों व्यक्ति पलते थे वह सब नष्ट होगया। जिसके व्यापारका आवागमन समतोल था और यहांकी जनता कृषि और उद्योगके कामोंमें हिसाबसे विभाजित थी वहां अब भारतको अकेले कृषिकी शरण लेकर कृषि प्रधान देश बनना पड़ा। १८ वीं शताब्दिके अन्त और १९ वीं की आदिमें ब्रिटेन आदि विदेशोंमें यंत्र कलाके आविष्कारने पदार्थोंके बनाये जानेमें एक भारी उलटफेर पैदाकर दिया। वहां पर यंत्रोंसे काम होने लगा जिसने पहले पहल भारतके कपड़ेके उद्योगको ही नष्ट किया। केवल यंत्र कलाके बलपर भी ग्रेट ब्रिटेन कुछ नहीं कर सकता था; इससे भी भारतके उद्योगको कुछ धक्का नहीं पहुंच सकता था और न इससे यहांका काम ही नष्ट हो सकता था, पर इसके उद्योग को नष्ट करनेके लिये और भी कई उपाय काममें लाये गये जिनका थोड़ासा वर्णन यहां किया जायगा जो बड़ा हृदय द्रावक है।

भारतमें व्यापार करनेके लिए पुर्त्तगीज, फ्रेंच, डच, और अँग्रेज आदि कई जातियां आई पर अँग्रेजोंको छोड़कर यहां औरकिसीको सफलता नहीं मिली। अँग्रेज भारतके व्यापारके बलपर केवल लक्ष्मीके ही नहीं पर राज लक्ष्मीके भी स्वामी बन गये। यहां भारतमें इन विदेशी जातियोंके आने पर उनके आपसी झगड़े टंटे और लड़ाईके वर्णनसे यहां कुछ सम्बन्ध नहीं है,केवल ईस्ट इंडिया कम्पनीने यहांके व्यापारको हथियाकर अन्तमें उसको किस तरह नष्ट किया यह ध्यान देने योग्य बात है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतीय पदार्थोंका मोह ही भारतमें लाया। पहले पहल उसने किस प्रकार ये पदार्थ सबसे अधिक परिमाणमें उसे उपलब्ध हो सकें, इसके लिए सब तरहके उपाय काममें लिये और फिर अन्तमें इनके यहां बनने किम्वा बाहर जानेकी ही इति श्री करके चैन लिया।

सूती कपड़ेके साथ साथ बङ्गालमें रेशमका उद्योग भी उन्नतावस्थामें था। १८वीं शताब्दीके आरंभमें बंगालमें रेशमका उद्योग चमक उठा। रेशमी माल का बाहर भेजना इतना लाभदायक था कि ईष्ट इण्डिया कंपनीने इस कामपर अपना एकाधिपत्य स्थिर करनेके लिए प्रबल प्रयत्न किया। उस समय योरोपियन कंपनियों—यथा डच, अंग्रेज फरांसिसी और कुछ कुछ पुर्त्तगीज—के बीच इस व्यापारके लिए बड़ी स्पर्द्धा चलती थी। चीनका रेशम न तो बङ्गालके सदृश बढ़िया होता था और न वहां यह इतने परिमाणमें मिल ही सकता था। चीनकी अपेक्षा भारतसे इसका निर्यात बहुत अधिक होता था और इंग्लैंड एवं अन्य योरपीय देशोंमें वह बिकता भी ऊंचे दामोंमें था। सन्—

१७११से १७६०तकके इंग्लैण्डको भारत और चीनके निर्यात अंक इस बातके साक्षी हैं कि उस समय ईष्ट इण्डिया कम्पनीका भारतीय व्यापार कितना बढ़ गया था।

सन्	कच्चा रेशम बङ्गाल रतल	कच्चा रेशम चीन रतल	रेशमी कपड़ा बङ्गाल थान
१७११-२०	५,५३,४६७	५१,३२१	२,४६,३७५
१७२१—३०	८,०५,०३०	५८,४०६	५,११,१३६
१७३१-४०	१३,६५,११७	७३,७६३	६,६८,०१०
१७४१-५०	८,४१ ८३४	७५,३०१	३,२२,६१७
१७५१-६०	४,३७,७२७	९०,२८५	३,९११,१०५

सन् १७१० तक इंग्लैण्डमें चीनसे बिलकुल रेशम नहीं जाता था। उसके पश्चात् यद्यपि यह पदार्थ चीनसे भी जाने लगा पर उसकी तादाद बहुत कम थी। सन् १७५० तक चीनके निर्यातकी अपेक्षा भारतका निर्यात ९ गुनेसे १६ गुना अधिक था। इसके पश्चात् एंग्लोफ्रेञ्च युद्ध और बंगालके नवाबोंके साथके युद्धने इस व्यापारमें बड़ा उलट फेर कर दिया। इन घटनाओंसे १७५१ और१७६०के बीच भारतका निर्यात ८,४२०००से घटकर ४,३८००० रतल रह गया और चीनका निर्यात ७५,३०२ रतलसे घट्कर ६०२८५ रतल हो गया। इस प्रकार इन दस वर्षोंमें शासन सम्बन्धी गड़बड़, भीतरी जुल्म, और लड़ाई झगड़ोंके कारण बंगालके रेशमके व्यापारको बड़ी क्षति उठानी पड़ी। इन कारणोंसे रेशमी कपड़ोंके निर्यातमें भी बहुत घट बढ़ हुई। फिर भी सन् १७११से २० तक जहाँ २,४६,३७५ थानका निर्यात हुआ था वहाँ सन् १७३१से ४०तक ६९८०१० थानका निर्यात हुआ। सन् १७४०के पश्चात् मराठोंकी लूटमार, तथा नवाबोंके साथ अंग्रेजोंके युद्धके कारण यद्यपि इस संख्यामें क्षति हुई फिर भी सन् १७४०से ५० तक ३२२,६१७ और सन् १७५०से ६० तक ३६११०५ थान यहांसे निर्यात हुए। अर्थात् सन् १७११-२०तकके अङ्कोंसे यह संख्या डेढीसे अधिक बनी रही।

टेवरनियर यात्रीके वर्णनमें इस कालके रेशमके उद्योगका बड़ा मजेदार वर्णन मिलता है। उसने लिखा है कि "बंगालके अकेले कासिमबाजारमें प्रतिवर्ष २२००० गाँठें रेशमकी तैय्यार होती हैं। इनमेंसे ६,७ हजार गांठें जापान या हालैण्डके लिए ले ली जाती हैं और इससे भी अधिक लेनेकी कोशिश होती है पर मुगलराज्यके व्यापारी इन्हें लेने नहीं देते हैं। क्योंकि ये लोग भी डच लोगोंके बराबर गांठें खरीद लेते हैं और शेष जो गांठें बचती हैं वे यहींपर माल तैयार करनेके लिए रख ली जाती हैं। यह सब माल गुजरातमें लाया जाता है जिसमेंसे अधिकांश अहमदाबाद और सूरतमें आता है और वहां उसके तरह २के कपड़े बनाए जाते हैं। जैसे —

सोनेके कामका रेशमी कपड़ा
सोने और चांदीके कामका रेशमी कपड़ा } सूरत
खालिस रेशमके गलीचे

सकती थी, लेकिन यह बात अधिक काल तक नहीं रही। इसके ५० वर्षके भीतर ही एक बड़ा उलट फेर होगया। सन १८१७ में ढाकासे वहांके बने पदार्थोंका निर्यात एक दम बन्द हो गया। कातने और बुननेका काम जो भारतका प्रधान शिल्प और उद्योग था और जिससे हजारों व्यक्ति पलते थे वह सब नष्ट होगया। जिसके व्यापारका आवागमन समतोल था और यहांकी जनता कृषि और उद्योगके कामोंमें हिसाबसे विभाजित थी वहां अब भारतको अकेले कृषिकी शरण लेकर कृषि प्रधान देश बनना पड़ा। १८ वीं शताब्दिके अन्त और १९ वीं की आदिमें ब्रिटेन आदि विदेशोंमें यंत्र कलाके आविष्कारने पदार्थोंके बनाये जानेमें एक भारी उलटफेर पैदाकर दिया। वहां पर यंत्रोंसे काम होने लगा जिसने पहले पहल भारतके कपड़ेके उद्योगको ही नष्ट किया। केवल यंत्र कलाके बलपर भी ग्रेट ब्रिटेन कुछ नहीं कर सकता था; इससे भी भारतके उद्योगको कुछ धक्का नहीं पहुंच सकता था और न इससे यहांका काम ही नष्ट हो सकता था, पर इसके उद्योग को नष्ट करनेके लिये और भी कई उपाय काममें लाये गये जिनका थोड़ासा वर्णन यहां किया जायगा जो बड़ा हृदय द्रावक है।

भारतमें व्यापार करनेके लिए पुर्त्तगीज, फ्रेंच, डच, और अँग्रेज आदि कई जातियां आईं पर अंग्रेजोंको छोड़कर यहां औरकिसीको सफलता नहीं मिली। अँग्रेज भारतके व्यापारके बलपर केवल लक्ष्मीके ही नहीं पर राज लक्ष्मीके भी स्वामी बन गये। यहां भारतमें इन विदेशी जातियोंके आने पर उनके आपसी झगड़े टंटे और लड़ाईके वर्णनसे यहां कुछ सम्बन्ध नहीं है,केवल ईस्ट इंडिया कम्पनीने यहांके व्यापारको हथियाकर अन्तमें उसको किस तरह नष्ट किया यह ध्यान देने योग्य बात है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतीय पदार्थोंका मोह ही भारतमें लाया। पहले पहल उसने किस प्रकार ये पदार्थ सबसे अधिक परिमाणमें उसे उपलब्ध हो सकें, इसके लिए सब तरहके उपाय काममें लिये और फिर अन्तमें इनके यहां बनने किम्वा बाहर जानेकी ही इति श्री करके चैन लिया।

सूती कपड़ेके साथ साथ बङ्गालमें रेशमका उद्योग भी उन्नतावस्थामें था। १८वीं शताब्दीके आरंभमें बंगालमें रेशमका उद्योग चमक उठा। रेशमी मालका बाहर भेजना इतना लाभदायक था कि ईस्ट इण्डिया कंपनीने इस कामपर अपना एकाधिपत्य स्थिर करनेके लिए प्रबल प्रयत्न किया। उस समय योरोपियन कंपनियों—यथा डच, अंग्रेज फरांसिसी और कुछ कुछ पुर्तगीज—के बीच इस व्यापारके लिए बड़ी स्पर्द्धा चलती थी। चीनका रेशम न तो बङ्गालके सदृश बढ़िया होता था और न वहां वह इतने परिमाणमें मिल ही सकता था। चीनकी अपेक्षा भारतसे इसका निर्यात बहुत अधिक होता था और इंग्लैंड एवं अन्य योरपीय देशोंमें वह बिकता भी ऊंचे दामोंमें था। सन्—

१७११से १७६०तकके इंग्लैण्डको भारत और चीनके निर्यात अंक इस बातके साक्षी हैं कि उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनीका भारतीय व्यापार कितना बढ़ गया था।

	कच्चा रेशम		रेशमी कपड़ा
सन्	बङ्गाल रतल	चीन रतल	बङ्गाल थान
१७११-२०	५,५३,४६७	५६,३२१	२,४६,३७५
१७२१-३०	८,०५,०३०	५८,४०६	५,१६,६३६
१७३१-४०	१३,६५,११७	७३,७६३	६,९८,०१०
१७४१-५०	८,४१ ८३४	७५,३०१	३,२२,६१७
१७५१-६०	४,३७,७२७	९०,२८५	३,९१,१०५

सन् १७१० तक इंग्लैण्डमें चीनसे बिलकुल रेशम नहीं जाता था। उसके पश्चात् यद्यपि यह पदार्थ चीनसे भी जाने लगा पर उसकी तादाद बहुत कम थी। सन् १७५० तक चीनके निर्यातकी अपेक्षा भारतका निर्यात ९ गुनेसे १६ गुना अधिक था। इसके पश्चात् एंग्लोफ्रेंच युद्ध और बंगालके नवाबोंके साथके युद्धने इस व्यापारमें बड़ा उलट फेर कर दिया। इन घटनाओंसे १७५१ और१७६०के बीच भारतका निर्यात ८,४२०००से घटकर ४,३८००० रतल रह गया और चीनका निर्यात ७५,३०२ रतलसे बढ़कर ९०२८५ रतल हो गया। इस प्रकार इन दस वर्षोंमें शासन सम्बन्धी गड़बड़, भीतरी जुल्म, और लड़ाई झगड़ोंके कारण बंगालके रेशमके व्यापारको बड़ी क्षति उठानी पड़ी। इन कारणोंसे रेशमी कपड़ोंके निर्यातमें भी बहुत घट बढ़ हुई। फिर भी सन् १७११से २० तक जहाँ २,४६,३७,५ थानका निर्यात हुआ था वहाँ सन् १७३१से ४०तक ६९८०१० थानका निर्यात हुआ। सन् १७४०के पश्चात् मराठोंकी लूटमार, तथा नवाबोंके साथ अंग्रेजोंके युद्धके कारण यद्यपि इस संख्यामें क्षति हुई फिर भी सन् १७४०से ५० तक ३२२,६१७ और सन् १७५०से ६० तक ३९११०५ थान यहाँसे निर्यात हुए। अर्थात् सन् १७११-२०तकके अङ्कोंसे यह संख्या डेढ़ीसे अधिक बनी रही।

टेवरनियर यात्रीके वर्णनमें इस कालके रेशमके उद्योगका बड़ा मजेदार वर्णन मिलता है। उसने लिखा है कि "बंगालके अकेले कासिमबाजारमें प्रतिवर्ष २२००० गाँठें रेशमकी तैय्यार होती हैं। इनमेंसे ६,७ हजार गाँठें जापान या हालैण्डके लिए ले ली जाती हैं और इससे भी अधिक लेनेकी कोशिश होती है पर मुगलराज्यके व्यापारी इन्हें लेने नहीं देते हैं। क्योंकि वे लोग भी डच लोगोंके बराबर गाँठें खरीद लेते हैं और शेष जो गाँठें बचती हैं वे वहींपर माल तैयार करनेके लिए रख ली जाती हैं। यह सब माल गुजरातमें लाया जाता है जिसमेंसे अधिकांश अहमदाबाद और सूरतमें आता है और वहां उसके तरह तरहके कपड़े बनाए जाते हैं। जैसे—

सोनेके कामका रेशमी कपड़ा सोने और चाँदीके कामका रेशमी कपड़ा खालिस रेशमके गलीचे	} सूरत

सुनहरी और रुपहरी धारियोंकी साटन बिना धारियोंका साफ़ ताफ़्ता कई रंगोंका फूलदार पटड़ा जो कि बहुत मुलायम रेशमका होता है।	अहमदाबाद

इन कपड़ोंका दाम दससे चालीस रुपया प्रति थान तक होता है। इस काममें कुछ कम्पनियां रुपया लगाती हैं और बहुत लाभ उठाती हैं। वे अपने किसी आदमीको निजी ढङ्गसे यह व्यापार नहीं करने देतीं। ये सब चीज़ें यहांसे तैयार करवाके फ़िलिपाईन, जावा, सुमात्रा इत्यादि देशोंको भेज दी जाती हैं।

कच्चे रेशमके सम्बन्धमें यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि पैलेस्टाइनके रेशमको छोड़कर—जिसे एलेपो (Aleppo) और त्रिपाली (Triptli) के व्यापारी भी कठिनाईसे थोड़ासा प्राप्त कर सकते हैं—दूसरा रेशम सफ़ेद नहीं होता है। कासिमबाजारका रेशम भी पारस और सिसलीके कच्चे रेशमकी तरह पीला होता है मगर कासिमबाजारके कारीगर इसे सफ़ेद करनेकी कला जानते हैं। इस कलाके द्वारा वे लोग इस रेशमको पैलेस्टाइनके रेशमके सदृश सफ़ेद बना देते हैं।

डच लोग बङ्गालमें खरीदे हुए रेशम और इसके पदार्थोंको नहर द्वारा—जो कासिमबाजारसे गङ्गा तक पहुंची हुई है—भेजते हैं और वहांसे फिर हुगली ले जाकर अपने जहाजोंमें भर लेते हैं।

सन १७७१ में ईस्ट इंडिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने बंगालमें कच्चे रेशमकी पैदावारको बढ़ाना और बने हुएके कामको नष्ट कर देना चाहा। उन्होंने आज्ञा निकाली कि रेशमी सूत बनानेवाले [illegible] कम्पनीके कारखानों ही में काम करें। वे बाहरका कोई काम न कर सकेंगे। यदि [illegible] इस आज्ञाके विरुद्ध वे दूसरी जगह कार्य करेंगे तो उन्हें कड़ा दण्ड दिया जायगा (१०-३-१७७१)। इस प्रकारकी आज्ञा द्वारा पूर्व [illegible] रेशमी और सूती कपड़े बुननेका काम [illegible]। जिसका परिणाम यह हुआ कि यहांसे जो पदार्थ दुनियाके भिन्न २ बाजारोंको भेजे जाते थे [illegible] भिन्न २ मंगाये जाने लगे। इस प्रकार भारतीय वस्तुओं और [illegible] गया।

ऊपर दिये हुए अङ्कोंसे पता चल जाता है कि सन १८६३ के कानूनके पश्चात् भारतमें [illegible] को हुए [illegible] किस प्रकार बढ़ा।

सन्	मालकी कीमत (पौंडोंमें)	सन्	मालकी कीमत (पौण्डोंमें)
१७९४	२५६	१८०४	२५४३६
१७९५	७१७	१८०५	३१६४३
१७९६	११२	१८०६	४८५२५
१७९७	२५०१	१८०७	४६५४६
१७९८	४४३६	१८०८	६६८४१
१७९९	७३१७	१८०९	११८४०८
१८००	११५७१	१८१०	७४६६५
१८०१	२१२००	१८११	११४६४६
१८०२	१६१६१	१८१२	१०७३०६
१८०३	२७८७३	१८१३	१०८८२४

कम्पनीने मुख्य २ स्थानोंमें अपने एजंट नियत कर रक्खे थे। जिनका काम रेशम एकत्र करना था। जो एजंट जितना ही अधिक रेशम जुटाता था वह उतनाही अधिक कारगुजार समझा जाता था। ये एजंट, लोगोंको पेशगी रुपया दे देते थे और रुपया लेनेवालेको पक्के इकरारमें बांध लेते थे। कम्पनीका उद्देश्य बंगालके भीतरी व्यापारको हथिया लेनेका था। और इसके लिए बेचारे गरीब कारीगरोंपर सब तरहके जोर जुल्म किये जाते थे। कम्पनीके इस प्रकार एकाधिपत्य धारण कर लेनेपर डच और फ्रेञ्च कम्पनियां शिकायत करने लगीं और इनके आपसमें झगड़ा होने लगा, इसपर इनके बीच यह तय हुआ कि जुलाहे आपसमें बांट लिये जांय। इससे यह बात प्रकट होती है कि ये लोग जुलाहोंको अपनी अधिकृत सम्पत्तिकी तरह समझते थे।

सन १७५७ में सिराजुद्दौलाकी हार होनेके पश्चात् तो अंग्रेज एक प्रकारसे बङ्गालके स्वामी बन गये। जो जोर जुल्म इनके द्वारा पहले किये जाते थे अब उससे भी अधिक किये जाने लगे। इससे बेचारे कारीगर और जुलाहे बहुत तंग आ गये। ये जो कुछ भी पदार्थ बनाते थे उनपर कंपनीका अधिकार रहता था। कम्पनीके कर्मचारी ही इस बातका निर्णय करते थे कि प्रत्येक कारीगरको कितना माल तैयार करना पड़ेगा और उसे कितना मूल्य दिया जायगा। मुगल शासनके समयमें एवं नवाब अलीवर्दी खांके समयमें जुलाहे लोग अपना काम अपनी इच्छापूर्वक करते थे, उनपर किसी प्रकारका जोर जुल्म न था। मि० बोल्टने लिखा है कि नवाबके जमानेमें एक सज्जनने एक दिन अपने घरपर ८०० थान जुलाहोंसे बुने हुए खरीदे। सिराजुद्दौलाके समय से कंपनीका जोर-जुल्म अधिक होने लगा और इसी सज्जनके आंखों देखी बात है कि जङ्गलबरी जिलेके ७०० घरके जुलाहे अपने २ घरोंको छोड़कर भाग गये। क्योंकि इसके बाद कम्पनीके नौकरोंके सिवा—जिनसे न्यायकी आशा करना व्यर्थ था—कोई ऐसा नवाब ही नहीं रहा, जिसके पास फरयाद की जाती।

कम्पनीके इस एकाधिपत्यके कारण कारीगरों पर दिन प्रति दिन जोर जुल्म बढ़ने लगे। यहां तक कि यदि कोई जुलाहा अपने मालको किसी दूसरेके हाथ बेचता हुआ देखा जाता, या कोई दलाल ऐसे मामलोंमें बीच बिचाव करता हुआ पाया जाता तो कम्पनीके नौकर उसे पकड़ कर कैद कर लेते थे और उसपर जुर्माना किया जाता था। कभी २ ऐसे लोग कोड़ोंसे पीटे जाते थे। जो जुलाहे कम्पनीके साथ किये हुए इकरारनामोंको पूरा करनेमें असमर्थ रह जाते, उनके घरोंमें से माल निकाल कर नीलाम कर दिया जाता और उस रकमसे कम्पनी अपने घाटेको पूरा करती थी। रेशम बटनेवालों—जो नगद्दा कहलाते थे—के प्रति भी ऐसा ही कठोर व्यवहार किया जाता था। ऐसे भी कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें इन रेशम बटनेवालोंने केवल इसी लिये, कि हमें रेशम बटनेके लिये बाध्य न किया जायगा, अपने हाथोंके अंगूठे काट डाले थे।

इन जुलाहोंको जबर्दस्ती पेशगी रुपये दे दिया जाता था। एकबार पेशगी रुपया ले लेनेपर जुलाहा फिर किसी प्रकार छुटकारा नहीं पा सकता था। यदि माल देनेमें देरी होती तो या तो उसके घरपर चपड़ासी बैठा दिया जाता—जिसकी ⅃ रोजके हिसाबसे तलब लगा दी जाती थी-या उसे अदालतमें बुलाया जाता था। इस प्रकार गांवके तमाम जुलाहों पर कम्पनीका एकाधिपत्य था। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कि जुलाहोंपर कम्पनीकी यह सत्ता कानूनसे भी अनुमोदनीय करार दी गई थीं। उस कानूनका भाव यह था कि “ जिस जुलाहेने कम्पनीसे पेशगी रुपया लिया है वह किसी भी दशामें कम्पनीके सिवा किसी दूसरे यूरोपियन या भारतीय व्यापारीको अपना बनाया हुआ माल न बेच सकेगा और न किसी दूसरेके लिये बना ही सकेगा। यदि निश्चित अवधिके अन्दर वह माल न दे सकेगा तो कम्पनीके अधिकारी उसके मकान पर चपरासी बैठा सकेंगे और यदि वह दूसरोंके हाथ माल बेचेगा तो उसपर अदालतमें मामला चलाया जावेगा। इसके अतिरिक्त यदि कोई जुलाहा एकसे अधिक तांत (Loom) रक्खेगा, तो उसके ऊपर कपड़ेके मूल्यका ३५ प्रतिशत दण्ड किया जायगा।

इस तरहके व्यवहारका वर्णन हैनरी गौंगर (Henry gauger) ने अपने जेल जीवनके वर्णनमें किया है। उसने लिखा है कि एक मासके सूत कातनेवालेने मुझसे पेशगी रुपया लिया। मेरे और उस जुलाहेके बीच कन्ट्राक्ट हो जानेके पश्चात् कम्पनीके दो नौकर उस गांवमें आये। एक अपने हाथमें रुपयोंकी थैली लिये हुए था और दूसरा एक ऐसी किताब लिये हुए था जिसमें रुपये पानेवालोंके नाम लिखे जाते थे। उन जुलाहोंका यह कहना—कि हमने दूसरेसे रुपये ले लिये हैं—बिलकुल व्यर्थ हुआ। जिन किसीने रुपया लेनेसे इन्कार किया उनके घरोंमें जबर्दस्ती रुपया फेंक दिया गया और उसका नाम लिख लिया गया। इस प्रकार की सत्ताके बलपर कम्पनीका एजेंटमें मेरे ही घरपर मेरे कारीगरों और मेरे माल असबाबको बलात्कार छीन लेता है। इतना ही नहीं यदि मेरा

रुपया वापिस मिलनेके लिए मैं अदालतमें नालिश करूं, तो न्यायाधीश मुझे डिग्री देनेके पूर्व इस बातकी जांच करेगा कि उस जुलाहेमें कम्पनीका रुपया तो पावना नहीं है। यदि ऐसा है तो पहले डिग्री उस एजण्टको मिलती है और मेरे लिये इसके सिवा कोई चारा नहीं रह जाता कि अपने रुपयोंके लिये रो बैठूं।

इस प्रकारके कानून बन जानेपर उनका दुरुपयोग होना भी स्वाभाविक ही है। इन कानूनोंके बलपर कम्पनीके नौकर मनमाना अत्याचार करते थे। इस प्रकारके अत्याचारोंका वर्णन सरजेंट ब्रेगो (Sergent Brego) के २६ मई सन् १७६२ के पत्रमें मिलता है। उसमें लिखा है कि कम्पनीका गुमास्ता चाहे जिसे अपना माल खरीदने और उसका माल उसके हाथ बेचनेके लिये दबा सकता था, और किसी प्रकारकी आनाकानी करनेपर उसे कैद कर लेना या उसे कोड़ोंसे पिटवाना उसके हाथमें था। इसी प्रकारके अत्याचारोंके कारण यह स्थान (बाकरगंज) जो एक बहुत सम्पत्तिशाली स्थान था, आज उजाड़ हो रहा है और प्रतिदिन वहांके रहनेवाले भगकर कहीं और आरामकी जगह खोजनेको चले जा रहे हैं। जहांके बाजारोंमें धूम मच रही थी वहां आज कुछ नहीं है। कम्पनीके चपरासी गरीब जनताको सता रहे हैं। यदि वहांका जमींदार इस अत्याचारके प्रति कुछ मनाई करता है तो उसके प्रति भी दुर्व्यवहार किया जाता है।

जब उद्योगपर किसी प्रकारका अनुचित दबाव या बन्धन डाला जाता है तो उसका उन्नत होना तो दूर, वह नष्ट हुए बिना नहीं रहता। इन कानून कायदोंका एक परिणाम यह हुआ कि कम्पनीने या कम्पनीके नौकरोंने भारतीय कारीगरोंपर जितने अत्याचार किये, उतने ही या उससे भी अधिक अन्य यूरोपीय व्यापारियोंने उन्हें तंग किया।

मुताखरीन नामक प्रसिद्ध पुस्तकका लेखक उस समयके न्यायका बड़ा ही हृदय द्रावक वर्णन करते हुए लिखता है कि इस दुर्व्यवहारकी वजहसे जनता तंग आ गई है और भूखों मर रही है एवं ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर! तू तेरे दुःखी भक्तोंकी सहायता कर और उन्हें इन अत्याचारोंसे किसी भांति छुड़ा।

एडमण्ड बर्क नामक प्रसिद्ध न्यायकर्त्ता भी कम्पनीके नौकरोंके द्वारा भारतीय कारीगरोंपर किये गये अत्याचारोंकी बातें सुनकर कांप उठा और १५ फरवरी सन् १७८८ को हाउस आफ लार्डसके सामने वारेनहेस्टिंग्सको दोषी ठहराते हुए, उसने कम्पनीके नौकरोंके अत्याचारका ऐसा मर्मभेदी वर्णन किया कि जिसे सुनकर वहांके सब सदस्य कांप उठे। उसने कहा कि कम्पनीके नौकर उन कारीगरोंकी उंगलियोंको रस्सीसे खूब खींचकर बांधते हैं, यहांतक कि उनके दोनों हाथोंका मांस निकल पड़ता है, फिर उन उंगलियोंके बीच लकड़ीकी या लोहेकी कीलें इस तरह ठोकते हैं कि वे कलदार, नरम और ईमानदार हाथ एकदम नष्ट और बेकार हो जाते हैं।

इधर तो भारतमें यह भयङ्कर दृश्य अभिनीत हो रहा था। उधर इंगलैंडमें भारतके बने हुए मालको रोकने के लिए जबर्दस्त प्रयत्न किया जा रहा था। यद्यपि सन् १६६० से ही भारतके एक थान-'केलिको' पर ६ पेनीसे लेकर ३ शिलिंग तक चुंगी लगने लग गई थी तथापि वहांके बाजारोंमें भारतीय मालकी इतनी अधिक खपत थी कि इतनी चुंगीके रहते हुए भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीका व्यापार चमक उठा, जिससे भारतमें माल इकट्ठा करनेके लिये कम्पनीको उपरोक्त उपाय काममें लाना पड़ते थे। मगर भारतीय मालकी इस गहरी खपतके कारण यहांके सूती रेशमी तथा ऊनी कपड़ोंका उद्योग पनपने नहीं पाता था। इसलिये भारतके मालसे यहांके उद्योगकी रक्षा करनेके लिये बड़े-बड़े प्रयत्न किये गये। ड्यूटी भी बहुत बढ़ा दी गई पर इतनी असुविधाओंके होनेपर भी भारतीय मालकी खपत न रुकी और पहननेवाले एक गज मलमलका दाम ३० शि० देकर भी उसे पहनने लगे। यह देखकर इंगलैंडके कारीगरोंने बड़ा शोर मचाया और हाउस आफ कामन्समें यह प्रश्न लाया गया। वहांपर भारतीय मालके व्यापारियोंकी यह प्रार्थना, जो भारतीय मालकी आमद न रोकनेके पक्षमें थी खारिज कर दी गई। लेकिन हाउस आफ लार्ड्समें भारतीय रेशम और छपे हुए केलिकोको पहननेकी मनाईका कानून दो बार गिरा दिया गया। क्योंकि बड़े बड़े २ आदमियों और स्त्रियोंने हाउस आफ कामन्सके द्वारा किये गये इस प्रस्तावके विरुद्ध बहुत बड़ा भाग लिया था।

सन् १७०१ में ८२६, १०१ थान मलमलके और १,१६,६०४ थान रेशमके भारतसे इंगलैंडमें आयात हुए। इस भारी आयातके कारण लन्डनके कारीगरोंने बहुत उग्र रूप धारण किया। यहां तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीके गोदामपर उन्होंने हमला कर दिया और इस काममें वे सफल भी हुए, पर अन्तमें सरकार द्वारा दवा दिये गये और यह कानून बना दिया गया कि जो यहां बंगालका सूती रेशमी कपड़ा हो वह जब तक वापिस निर्यात न हो तबतक चुंगी घाके नियत किये हुए गोदाममें वह रखा जाय, ताकि उसे न कोई पहने न कोई व्यवहारमें लावे और यदि किसीके पास इनमेंसे कोई पदार्थ मिले तो उसपर २०० पौण्ड जुर्माना किया जाय।

इन सब घटनाओंसे कम्पनी बड़े विचारमें पड़ गई। वह लोगोंको यह जानने देना नहीं चाहती थी कि वह भारतीय व्यापारको छोड़ना चाहती है। इसके लिये भी उसे दिखावटी रूप रखना पड़ता था। इन सब कारणोंसे कम्पनीको बड़ी हानि उठानी पड़ रही थी। क्योंकि उसके पास जहाजोंपर भरकर ले आनेके लिये बहुत कम सामान था। इसलिये या तो उन जहाजोंको खाली लौटकर जाना पड़ता था या चीनीके बर्त्तन तथा ऐसे ही दूसरे पदार्थोंको भरकर ले जाना पड़ता था, जिनसे कोई लाभ न था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रेशम और छपी हुई केलिकोके पूर्ण प्रतिबन्ध, और मलमल तथा सफेद केलिकोपर लगायी हुई भारी चुंगीने इंगलैंडके कपड़ा बुनने और रंगनेके कारबारको बहुत उत्तेजन दिया। भारतकी बनी हुई सफेद मलमलको रंगनेका एवं केलिकोपर छपाई

करनेका कारबार वहांपर इतना बढ़ गया कि पारलियामेंटको सन् १७१२ में तीन आने प्रति गज और सन् १७२४ में छः आने प्रतिगज चुंगी लगानी पड़ी।

यह सब होनेपर भी—संरक्षण नीतिको इसप्रकार काममें लानेपर भी—भारतकी छपी केलिको का व्यवहार कम नहीं पड़ा, और इंगलैंडके रेशम तथा उसके व्यापारको हानि पहुंचना बन्द न हुई। यह देखकर सन् १७१९ में पारलियामेंटमें फिरसे यह प्रश्न उठाया गया। कम्पनीने इस कानूनका बहुत विरोध किया। उसने कहा कि "कम्पनीके व्यापारसे इंगलैंडको बहुत लाभ पहुंचा है, एवं उससे ऊनी कपड़ा बनानेके उद्योगको बहुत सहायता मिली है, इस कानूनसे व्यापारको बहुत हानि पहुंचेगी। जहाजी शक्तिको इससे बड़ा धक्का पहुंचेगा और भारतमें उसकी स्थिति कमजोर हो जायगी। भारतीय नरेशोंकी दृष्टिसे अंगरेज गिर जायंगे और दूसरी यूरोपीय जातियोंको भारतका सर्व व्यापार एवं शक्ति अपने हाथमें करनेका मौका मिल जायगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण हानि इस कानूनसे यह होगी कि भारतीय नरेश अपने राज्योंमें इंगलैंडके बने हुए मालका आना बन्द कर देंगे।" कम्पनीके द्वारा इतना जबर्दस्त विरोध होनेपर भी सन् १७२० में इंगलैंडके रेशमी और ऊनी व्यापारकी रक्षा करनेके लिये एक कानून पास हो ही गया। इस कानूनके द्वारा भारतके छपे हुए और रंगे हुए रेशम और केलिकोका व्यवहार पूर्णतया मना किया गया और उसके पहननेवाले पर ५ पौण्ड और बेचनेवाले पर २५ पौण्ड जुर्माना रक्खा गया। इस कानूनसे भारतके रंगे हुए तथा छपे हुए मालका आयात बहुत कुछ घट गया, फिर भी इसके व्यवहारकी शिकायतें बहुत समय तक होती रहीं।

इन सब उपायोंने अन्तमें इंगलैंडके बाजारसे भारतीय कपड़ेका नाम उठा दिया। और बीस ही वर्षमें अर्थात् सन् १७४० में इंगलैंड इतना कपड़ा बनाने लग गया जो वहांकी आवश्यकताकी पूर्ति करके बाहर भी जाने लगा।

नीचे दिये हुए अंकोंसे इंगलैंडके इस कपड़ेके उद्योगका पता भली भांति चल जाता है।

सन्	रूईका आयात	कपड़ेका निर्यात
१६९७	११७६३५९ रतल	५,९१५ पौंड
१७०१	१९८५८६८ „	२३२५३ „
१७१०	७,१५००८ „	५३६९८ „
१७२०	१९,७२,६०५ „	१६२०० „
१७३०	१५,४५,४७२ „	१३,५२४ „
१७४१	१६,७६,०३१ „	२०,७०९ „
१७५१	२९,७६,६१० „	४५१८६ „

इस भांति सन् १६६० से लेकर १७५७ तक ब्रिटेनकी व्यापारिक नीति बाहरी मालकी आमदको बन्द करनेकी रही और किसी मालकी आमदपर पूर्ण मनाई एवं किसीकी आमदपर भारी कर लगाकर अपने यहांके उद्योगकी बढ़वारीके मार्गपर वह कटिबद्ध रहा। ये सब बातें

मशीनरीके आविष्कार और उसके प्रारम्भके पहलेकी है। इसके पश्चात् पाश्चात्य देशोंमें मशीनरी का आविष्कार हो जानेपर तो भारतका व्यापार और भी आपद्ग्रस्त हो गया और कुछ ही वर्षोंमें भारतके उद्योग धन्धोंका प्राचीन आधिपत्य इस प्रकार नष्ट हो गया कि जहां पर दूसरे देशोंके बाजारोंको अपने मालसे पटा हुआ रखता था, वहां अब इसके बाजार दूसरे देशोंके मालसे पटे रहने लगे।

इंगलैंडको भारतके व्यापारसे बहुत अधिक लाभ था। वहांके सरकारी खजानेमें चुंगीके द्वारा जो रकम आती थी वह सोने और चांदीके रूपमें बाहर जानेवाली रकमसे अधिक ही बैठती थी। यहांकी सरकारको कम्पनीके व्यापारपर लगाये हुए करसे जो आमदनी बैठती थी वह कम्पनी द्वारा बाहर भेजी जानेवाली रकमके बराबर और कभी कभी उससे अधिक बैठती थी। इसके प्रमाणके लिये सन् १७५० से १७६० तकके चुंगीके अङ्कोंका मिलान निर्यात किये हुए सोने चांदीके अङ्कोंके साथ करना चाहिये।

सन्	कम्पनी द्वारा लीगई चुंगीकी रकम पौण्ड	निर्यात सोनेचांदीकी रकम पौण्ड
१७५१	८,८७,८५६	८,०१,२५२
१७५२	६,२७,२१५	६,३६,१८५
१७५३	८,६८,२०२	८,३३,१६४
१७५४	६,०४,७११	६,४४,२५६
१७५५	६,२८,५४३	६,६८,८१३
१७५६	८,९०,१३२	६,२०३७८
१७५७	६,५०,६६०	७,६५००८
१७५८	७,७०,०२२	४,५६,२५२
१७५९	१०,२८,६२२	१,०२,६०४

इससे प्रकट है कि इन दस वर्षोंमें इंगलैंडने जहां ६३ लाख पौण्ड बाहर भेजे वहां उसे चालीस लाखसे अधिक पौण्ड तो चुंगीके रूपमें प्राप्त हो गया। पूर्वीय देशोंके साथ होनेवाले व्यापारसे इंगलैंडको कितना लाभ था यह ऊपरके अङ्कोंसे स्पष्ट है। १८ वीं शताब्दीके मध्यमें इंगलैंडका पूर्वीय व्यापार इतना लाभप्रद था कि एक प्रकारसे यह माल उसे मुफ्तमें ही मिल जाता था। क्योंकि जितनी रकम कम्पनी वहांसे बाहर भेजती थी उतनीके करीब वह उसे चुंगीके रूपमें वापस भी दे देती थी। इस मालको फिर दूसरे देशोंमें निर्यात कर देनेसे लाखों पौण्ड और मिल जाते थे। इसके अतिरिक्त जहाजी व्यवसायसे भी बहुत अधिक द्रव्य मिलता था। इसी भांति जो अंगरेज कम्पनीकी नौकरीमें थे वे भी अपने देशमें भारतसे बहुतसा द्रव्य ले जाते थे। इस भांति इंगलैण्डके जहाजवाले, बैंकोंवाले, कारीगर, पूंजीपति इत्यादि सब लोग इस लाभदायक व्यापारसे मालामाल हो रहे थे।

भारतीय कपड़ेका प्रतिबन्ध होते ही इंग्लैण्डका यह उद्योग स्थिर, परिष्कृत और उन्नत होने लगा। विलियम उडने लिखा है कि ज्यों ही भारतीय रेशम आदिकी मनाईका कानून पास हुआ त्योंही इंग्लैण्डके कपड़ा बुननेवालोंमें—जो उदास चित्त बैठे हुए थे—नवीन जीवन और नवीन उत्साहका संचार हो गया और केवल बुननेवालोंही को नहीं पर व्यापारियोंको भी उससे लाभ हुआ।

इंग्लैण्डके बढ़ते हुए कपड़ेके उद्योगका विषमय प्रभाव भारतमें सन् १७६० तक मालूम नहीं हुआ। उस समयतक भारत कपड़ा बुनने और छाने हेङ्गानेके उद्योगका केन्द्र था। उस समय भी यहां सैकड़ों प्रकारका कपड़ा बनता था। मगर मशीनोंके आविष्कार और प्रचारके कारण, एवं भारतवर्षमें फ्रान्सीसी तथा डच लोगोंके राजकीय और व्यापारिक क्षेत्रमें पिछड़ जानेसे यूरोपमें भारतीय पदार्थोंका आयात एकदम घट गया, यहांतक कि थोड़े ही दिनोंमें वह बिलकुल बन्द हो गया। जिससे भारतका कातने, बुनने और रंगनेका उद्योग नष्ट हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतके विदेशी व्यापारने दूसरा ही रूप धारण कर लिया। नीचे सन् १८३४ से १८५८ तकके आयात और निर्यातके अङ्क दिये जाते हैं, जिनसे व्यापारके इस बदले हुए रूपका भलीभांति पता लग जायगा :—

सन्	कुल आयात (पौण्ड)	कुल निर्यात (पौण्ड)
१८३४-३५	६१,५४,१२९	८१,८८,२६१
१८३६	६२,२८,३१२	१,१२,१४,६०४
१८३७	७५,७३,१५७	१३५,०४,११७
१८३८	७६ ७२,५७२	१,१५,८३,४३६
१८३९	८२,५१,५९६	१,२१,२२,६७५
१८४०	९७,७६,५०१	१,१३,३३,२६८
१८४१	१,०२,०२,१९३	१,३८,२२,०३०
१८४२	९६,२९,९००	१,४३,४०,२९३
१८४३	१,१०,४६,८९४	१,३७,६७,६२१
१८४४	१,३६,१२,४०५	१,७६,९९,५५३
१८४५	१,४५,०६,५३७	१,७६,९७,०५२
१८४६	१,१८,३६,५८६	१,७८,४५,७०२
१८४७	१,०५,७१,००८	१,६०,९६,२०७
१८४८	१,२५,४९,३०७	१,५७,३८,४३५
१८५७	२,८६,०८,२८४	२६,५११८७७
१८५८	३,१०,१३,०६५	२,८२७८,४७४

व्यापारके इन बढ़ते हुए अङ्कोंसे भारतके धनवैभवकी बढ़ती मान लेना, बड़ी भ्रम मूलक कल्पना होगी। गदरके दो तीन वर्षोंको छोड़कर बाकी सब सालोंमें आयातकी अपेक्षा निर्यात अधिक रहा है। पर इससे यह समझ लेना कि निर्यात आयातसे जितना अधिक हुआ उतना ही रुपया भारतको मिल गया गलत फहमी होगी। ऊपर हम लिख आये हैं कि इंग्लैण्डके प्रति-बन्धक कानूनसे, तथा मशीनरीके आविष्कारसे भारतीय बने हुए पदार्थोंका निर्यात एकदम घट गया था, फिर निर्यातके अङ्कोंमें यह वृद्धि कैसे हो गई? यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है। बात यह है कि भारतसे पक्के मालकी रफ्तनीके बन्द होनेके साथ ही—यहांके उद्योग धंधोंके नष्ट हो जानेसे—कच्चे मालकी रफ्तनी प्रारम्भ हो गई। जिससे रफ्तनीके अङ्कोंकी यह संख्या घटनेके बदले बढ़ती ही गई। इसी प्रकार विलायतके बने हुए मालकी आमद बढ़नेसे यहांके आयातके अङ्कोंमें भी वृद्धि हो गई। यह वृद्धि यहीं खतम नहीं हुई, आगेके वर्षोंमें दिन २ बढ़ती ही गई, और अबतक बढ़ती जा रही है। पर इस वृद्धिसे भारतके वैभव और समृद्धिकी वृद्धिसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इस बातकी आलोचना हम आगे—वर्तमान व्यापार विभागमें—करनेका प्रयत्न करते हैं।

वर्तमान व्यापार

ऊपर लिखे हुए इतिहाससे इस बातका सहज ही पता लग जाता है कि यद्यपि करीब हजार डेढ़ हजार वर्षोंसे भारतकी शस्य श्यामला भूमि विदेशी आक्रमणकारियोंकी क्रीड़ा भूमि बन रही थी और महमूद गजनवी, चंगेज, तैमूर, तथा नादिरशाहके समान कई विदेशी लुटेरोंने यहांकी सम्पत्तिको दोनों हाथोंसे लूटा, लोगोंको कत्ल किया, राजनैतिक और सामाजिक अशांति मचानेमें कोई कोर कसर न रक्खी, फिर भी इन लोगोंके द्वारा केवल देशकी ऊपरी सम्पत्तिका ही नाश हुआ। देशके आन्तरिक जीवनमें, व्यावहारिक जीवनको सुरक्षित रखनेवाले औद्योगिक साधनोंमें, उनसे कुछ भी नुकसान न पहुंचा और यही कारण है कि जीवनके मूल तत्वोंके नष्ट न होनेकी वजहसे देशने इन लुटेरोंके द्वारा पैदा किये हुए घावोंको थोड़े ही समयमें भर लिया। मगर यूरोपीय व्यापारियोंने—उसमें भी खासकर ईस्ट इण्डिया कम्पनीने—इस नीतिसे काम न लिया। उसने केवल भारतकी सम्पत्तिको लूटके देशको ही कंगाल कर ही न दिया, प्रत्युत अपने देशके औद्योगिक जीवनकी वृद्धिके लिये, उसने इस देशके औद्योगिक जीवनके मूल तत्वोंको ही नष्ट कर दिया। यह हानि इतनी जबर्दस्त हुई जिसकी मिसाल इतिहासके पृष्ठोंमें शायद ही कहीं मिलती हो। इसकी वजहसे देशके व्यापारमें एक बहुत ही विचित्र परिवर्तन पैदा हुआ। जहां इस देशके द्वारा विदेशोंको करोड़ों रुपयोंका माल जाता था, वहां पक्के हुए चौगुना माल विदेशोंसे यहां आने लगा। दुनियाके उद्योग धन्धोंके इतिहासमें ऐसी परिवर्तनकारी अद्भुत उदाहरण ढूंढनेपर भी कहीं न मिलेगा।

यहां यह लिख देना आवश्यक होगा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीने व्यापारलक्ष्मीके साथ धीरे २ यहांकी राज्य-लक्ष्मीको भी हथियाना प्रारम्भ किया और जब राज्यलक्ष्मी उसके हाथमें चली गई तब उसने व्यापारपर एकाधिपत्य रखना उचित न समझा। उसने यहांके व्यापारके द्वारको सबके लिए खोल दिया। परिणाम यह हुआ कि भिन्न २ देशोंके विदेशी व्यापारियोंने यहां आकर व्यापारमें अत्यन्त ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया। तबसे इस देशका विदेशी व्यापार आयात और निर्यात दोनों बराबर बढ़ता ही चला जा रहा है। इस बातके स्पष्टी करणके लिये नीचे सन् १८६४ से लेकर अभी तकके व्यापारिक अङ्क दिये जाते हैं।

सन्	आयात	निर्यात
१८६४ से ६९ तक	३१,७० लाख	५१,८६ लाख
१८६९ से ७४ तक	३३,०४ लाख	५६,२५ लाख
१८७४ से ७९ तक	३८,३६ लाख	६०,३२ लाख
१८७९ से ८४ तक	५०,१६ लाख	७९,०८ लाख
१८८४ से ८९ तक	६१,५१ लाख	८८,६४ लाख
१८८९ से ९४ तक	७०,९८ लाख	१०,४९९ लाख
१८९४ से ९९ तक	७३,६७ लाख	१०,७५३ लाख
१८९९ से १९०४ तक	८४,६८ लाख	१,५४,९२ लाख
१९०४-५ में	१०,५४१ लाख	१,५७,७२ लाख
१९१०–११ में	१३,२७० लाख	२०९,६६ लाख
१९१५-१६ में	१,२८,१६ लाख	१,९९,५६ लाख
१९२०-२१ में	३,४७,५७ लाख	२,६७,७६ लाख
१९२५-२६ में	२३,६०० लाख	३८,६,८२ लाख
१९२६-२७ में	२५,०९१ लाख	३११०४ लाख

इन अङ्कोंसे पता चलता है कि इन वर्षोंमें भारतका आयात और निर्यातका व्यापार करोड़ोंसे अरबोंपर हो गया। अनुमानसे २ अरबका आयात और इसी भांति करीब ३ अरबका निर्यात भारत-से प्रति वर्ष विदेशोंसे हो रहा है। इस विदेशी व्यापारपर पहले पहल विदेशियोंका पूरा अधिकार था और यद्यपि अब कुछ भारतीय व्यापारियोंने यहांके एक्सपोर्ट इम्पोर्टमें अच्छा हाथ बढ़ाया है फिर भी अभी तक इसका अधिकांश भाग विदेशी व्यापारियोंहीके हाथमें है।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इन पचास साठ वर्षोंमें हमारे यहांके विदेशी व्यापारके अङ्क बहुत बढ़ गये हैं। मगर इस व्यापारमें कई बुराइयां ऐसी हैं जिनकी वजहसे हमें इस व्यापारसे लाभ के बदले हानि उठानी पड़ती है। इनमेंसे एक प्रधान बुराई यह है कि यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाले मालमें अधिकतर कच्चा माल और खाद्य पदार्थ रहता है।

भारतके इम्पोर्टसे एक्सपोर्टकी संख्या अधिक है सो भी दो चार करोड़ नहीं पूरा एक अरब रुपया। इसमेंसे बहुत सी रकम तो ब्रिटिश सरकारके होम चार्जमें चली जाती है। बहुत सी विदेशी कम्पनियोंकी यहांपर लगाई हुई पूंजीपर मुनाफा, जहाज किराया, बीमा खर्च आदि कई तरहसे विदेशमें चली जाती है। मतलब यह कि भारतको यह बची हुई रकम भी सुरक्षित रूपमें वापस नहीं मिलती।

भारतका विदेशी व्यापार एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मिलाकर करीब ५-६ अरब रुपयेका होता है। यह व्यापार किस प्रकारका है और उससे देशका कितना हिताहित सम्पन्न हो सकता है इस बातका विवेचन करनेके पूर्व यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ५-६ अरब रुपयेका यह बड़ा हुआ व्यापार भी इस देशकी लम्बाई चौड़ाई और आबादीकी दृष्टिसे दूसरे देशोंकी अपेक्षा बहुत कम है। इसके लिये दुनियाके प्रधान २ व्यापारिक देशोंके व्यापारसे इसके व्यापारका मिलान करना अनुचित न होगा।

सन् १९२१-२२

देश	आबादी	कुल व्यापार पौण्ड	जन संख्याके प्रति मनुष्यके पीछे पड़नेवाले अंक
ग्रेटब्रिटेन	४,७३,०७६०१	१,७२,८० लाख	८६ पौण्ड
अमेरिका	१०,५७,१०,६२०	२००,८० लाख	११ "
जर्मनी	६,५९,२५,९९३	१०,७०० लाख	१६ "
जापान	५,११,६१,१४०	२२,५० "	३ "
फ्रांस	३,९२,०९,७१६	४५,०० "	१४ "
भारत	३१,९०,७५,१३२	३४६० "	१-१-८ पेंस

इस प्रकार जहां ब्रिटेनका व्यापार ८६ पौण्ड, अमेरिकाका ११ पौण्ड, जर्मनीका १६ पौण्ड, फ्रांसका १४ पौण्ड प्रति मनुष्य पड़ता है वहां भारतका व्यापार प्रति मनुष्य केवल एक पौण्ड एक शिलिंग तीन पेन्स पड़ता है। इस लेखमें ब्रिटेन सबसे ऊंचा है और उसके पश्चात् अमेरिकाका और जर्मनीका नम्बर है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि ब्रिटेन अमेरिका या जर्मनीसे धनमें ऊंचा है। व्यापारिक अङ्क देशकी भीतरी आर्थिक स्थितिके पूर्ण परिचायक नहीं माने जा सकते। इसके लिये उपजाऊ शक्ति, आयात निर्यात व्यापारके ढङ्ग और प्रति मनुष्यकी औसत आमदनी आदि कई बातोंकी जांचकी आवश्यकता होती है और इन सबपर विचार करनेसे आज दुनियामें सबसे अधिक धनिक अमेरिका है और सबसे अधिक निर्धन भारतवर्ष। इस समय यह देश किसी भी बातमें अन्य देशोंसे मिलान करने लायक नहीं है।

अब भारतके लाखों रुपयोंके एक्सपोर्ट व्यापारपर ध्यान देना आवश्यक है। देखना होगा कि वह बाहरी देशोंसे किन २ वस्तुओंका इम्पोर्ट करता है और इनके बदलेमें अपने यहांकी किन २ वस्तुओंको एक्सपोर्ट करता है। साधारण दृष्टिसे देखनेपर उसके इम्पोर्टमें, कपड़ा, मशीनरी, लोह लक्कड़की चीजें आदि वस्तुएं ही प्रधान हैं और उसके यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली चीजोंमें रुई, गल्ला, तिलहन, चाय, पाट, चमड़ा आदि कच्चा सामान ही अधिक रहता है।

भारतका आयात व्यापार

सन् १९२६-२७ में भारतमें २, ४०, ९१०००००) रुपयेका आयात हुआ। यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९१५-१६ में यह संख्या केवल १,३८,१९००,००० की थी। आयातके इन अङ्कोंके बढ़नेसे भारतका कोई हित नहीं है। इसमें उन्हीं देशोंका विशेष हित है जो भारतके बाजारोंको अपने मालसे अधिकाधिक पाटते जाते हैं और यहांकी सम्पत्तिको खींचकर ले जा रहे हैं। आयातके इन अङ्कोंमें भिन्न २ देशोंका साझा इस प्रकार है :—

१९२६-२७

ग्रेटब्रिटेन	१,१०,५३,८५०००
जापान	१६,४७,२४०००
जर्मनी	१६,६०,७२०००
जावा	१४,२२,२८०००
अमेरिका	१८,२३,८१०००
बेलजियम	६,८००,८०००

इस अङ्कोंसे प्रकट है कि भारतके आयात व्यापारमें प्रधान हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। कुल आयातमें अनुमानतः ५० प्रतिशत ग्रेटब्रिटेनसे आता है।

भारतके आयातमें मुख्य २ पदार्थोंका विवरण इस भांति है।

सन् १९२६-२७

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
रुई और रुईके बने पदार्थ	६५,०४,७४,०००	धातु (टीन, पीतल, तांबा, शीशा एल्युमिनियम आदि)	७०,६३,५०००
कपड़ा	१९,१६,५००००		
चीनी	१६,७२,८९०००	खाद्य पदार्थ (यथा बिस्कुट, बार्ली जमा हुआ दूध आदि)	५,५०,४१०००
लोहा और फौलाद	१४,२१,५००००		
खनिज तेल	८०६,११०००	विविध धातुओंकी बनी चीजें	५,०६,६२०००
सवारियां (गाड़ी साइकिल मोटर, लोरी, बस, ट्राम आदि)	६,२९,६३०००	रेशम (कोरा और कपड़ा)	४,५९,७१०००
		ऊन (कोरा और कपड़ा)	४,४६,२६०००

भारतके इम्पोर्टसे एक्सपोर्टकी संख्या अधिक है सो भी दो चार करोड़ नहीं पूरा एक अरब रुपया। इसमेंसे बहुत सी रकम तो ब्रिटिश सरकारके होम चार्जमें चली जाती है। बहुत सी विदेशी कम्पनियोंकी यहाँपर लगाई हुई पूंजीपर मुनाफा, जहाज किराया, बीमा खर्च आदि कई तरहसे विदेशमें चली जाती है। मतलब यह कि भारतको यह बची हुई रकम भी सुरक्षित रूपमें वापस नहीं मिलती।

भारतका विदेशी व्यापार एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मिलाकर करीब ५-६ अरब रुपयेका होता है। यह व्यापार किस प्रकारका है और उससे देशका कितना हिताहित सम्पन्न हो सकता है इस बातका विवेचन करनेके पूर्व यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ५-६ अरब रुपयेका यह बढ़ा हुआ व्यापार भी इस देशकी लम्बाई चौड़ाई और आबादीकी दृष्टिसे दूसरे देशोंकी अपेक्षा बहुत कम है। इसके लिये दुनियाके प्रधान २ व्यापारिक देशोंके व्यापारसे इसके व्यापारका मिलान करना अनुचित न होगा।

सन् १९२१–२२

देश	आबादी	कुल व्यापार पोण्ड	जन संख्याके प्रति मनुष्यके पीछे पड़नेवाले अंक
ग्रेटब्रिटेन	४,७३,०७६०१	१,५२,८० लाख	८६ पौण्ड
अमेरिका	१०,५७,१०,६२०	२००,८० लाख	११ "
जर्मनी	६,५९,२५,९९३	१०,७०० लाख	१६ "
जापान	५,११,६१,१४०	२२,५० "	३ "
फ्रांस	३,९२,०९,७१६	४५,०० "	१४ "
भारत	३१,९०,७५,१३२	३४६० "	१-१-८ पेंस

इस प्रकार जहां ब्रिटेनका व्यापार ८६ पौण्ड, अमेरिकाका ११ पौण्ड, जर्मनीका १६ पौण्ड, फ्रांसका १४ पौण्ड प्रति मनुष्य पड़ता है वहां भारतका व्यापार प्रति मनुष्य केवल एक पौण्ड एक शिलिंग तीन पेन्स पड़ता है। इस लेखेमें ब्रिटेन सबसे ऊंचा है और उसके पश्चात् अमेरिकाका और जर्मनीका नम्बर है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि ब्रिटेन अमेरिका या जर्मनीसे धनमें ऊंचा है। व्यापारिक अङ्क देशकी मौजूदा आर्थिक स्थितिके पूर्ण परिचायक नहीं माने जा सकते। इसके लिये क्षेत्रफल दृष्टि, आयात निर्यात व्यापारके ढङ्ग और प्रति मनुष्यकी औसत आमदनी आदि कई बातोंके जानकी आवश्यकता होती है और उन सबपर विचार करनेसे आज दुनियामें सबसे अधिक धनिक अमेरिका है और सबसे अधिक निर्धन भारतवर्ष। इस समय यह देश किसी भी रूपमें अन्य देशोंसे मिलान करने लायक नहीं है।

अब भारतके अरबों रुपयोंके एक्सपोर्ट व्यापारपर ध्यान देना आवश्यक है। देखना होगा कि यह बाहरी देशोंसे किन २ वस्तुओंका इम्पोर्ट करता है और उनके बदलेमें अपने यहांकी किन २ वस्तुओंको एक्सपोर्ट करता है। साधारण दृष्टिसे देखनेपर उसके इम्पोर्टमें, कपड़ा, मशीनरी, लोह लक्कड़की चीजें आदि वस्तुएं ही प्रधान हैं और उसके यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली चीजोंमें रुई, गल्ला, तिलहन, चाय, पाट, चमड़ा आदि कच्चा सामान ही अधिक रहता है।

भारतका आयात व्यापार

सन् १९२६-२७ में भारतमें २, ४०, ९१०००००) रुपयेका आयात हुआ। यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९१५-१६ में यह संख्या केवल १,३८,१६००,००० की थी। आयातके इन अङ्कोंके बढ़नेसे भारतका कोई हित नहीं है। इसमें उन्हीं देशोंका विशेष हित है जो भारतके बाजारोंको अपने मालसे अधिकाधिक पाटते जाते हैं और यहांकी सम्पत्तिको खींचकर ले जा रहे हैं। आयातके इन अङ्कोंमें भिन्न २ देशोंका साझा इस प्रकार है :—

१९२६-२७

ग्रेटब्रिटेन	१,१०,५३,८५०००
जापान	१६,४७,२४०००
जर्मनी	१६,६०,७२०००
जावा	१४,२२,२८०००
अमेरिका	१८,२३,८१०००
बेलजियम	६,८००,८०००

इस अङ्कोंसे प्रकट है कि भारतके आयात व्यापारमें प्रधान हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। कुल आयातमें अनुमानतः ५० प्रतिशत ग्रेटब्रिटेनसे आता है।

भारतके आयातमें मुख्य २ पदार्थोंका विवरण इस भांति है।

सन् १९२६-२७

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
रुई और रुईके बने पदार्थ	६५,०४,७४,०००	धातु (टीन, पीतल, तांबा, शीशा	
कपड़ा	१९,१६,५००००	एल्युमिनियम आदि)	७०,६३,५०००
चीनी	१६,७२,८६०००	खाद्य पदार्थ (यथा बिस्कुट, बाली	
लोहा और फौलाद	१४,५१,४००००	जमा हुआ दूध आदि)	५,५०,५१०००
खनिज तेल	८०६,११०००	विविध धातुओंकी बनी चीजें	५,०६,६२०००
सवारियां (गाड़ी साइकिल		रेशम (कोरा और कपड़ा)	४,५९,७१०००
मोटर, लोरी, बस, ट्राम आदि)	६,३९,८३०००	ऊन (कोरा और कपड़ा)	४,५६,३६०००

ढकनेके लिये दूसरे देशोंका मुहताज रहे, यह उसके लिये कितनी लज्जाजनक परिस्थिति है। यदि यह देश अपने व्यापारको सम्हाल ले—सुधार ले—अपने आवश्यकीय पदार्थोंको यहां बनाना प्रारम्भ करके बाहरसे पक्का माल मंगानेकी प्रणालीको बन्द करदे, तो उन देशोंके कल कारखानोंको चलना कठिन हो जाय जो आज इसकी सम्पत्तिपर मौज उड़ा रहे हैं।

सच पूछा जाय तो कल कारखाने प्रधान इन देशोंकी स्थिति इस समय बड़ी ही नाज़ुक हो रही है। यन्त्र कलाके प्रचारसे वहां माल तो बेशुमार तैयार होता है, मगर उस मालका खरीददार ढूंढनेकी चिन्ता उन्हें बेतरह व्यग्र कर रही है। बात यह है कि संसारमें पदार्थोंकी आवश्यकता की वृद्धि उस परिमाणसे नहीं हो रही, जिस परिमाणमें यन्त्रकलाके बलसे उनके निर्माणमें हो रही है। निर्माण और खपतकी इस असमानतासे निर्माण करनेवाले देशोंमें बड़ी गहरी व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता मच रही है। गत महायुद्धका भी मूल कारण प्रायः यही प्रतिद्वन्दिता थी और भविष्यमें भी जब तक इङ्गलैंड, फ्रांस जर्मनी या अन्य पाश्चात्य देश अपने यहां ऐसे पदार्थ तैयार करते रहेंगे जिनको वे अपने यहां न खपा सकें और जिनकी खपतके लिये भारतके समान असहाय देशोंकी-जो कि उन पदार्थोंको लेनेसे अपनी असमर्थता, कमजोरी, या शताब्दियोंकी गुलामीमें पड़े रहनेकी आदतसे इन्कार नहीं कर सकता है। आवश्यकता बनी रहेगी तब तक अन्तर्राष्ट्रीय कलहके मिट-नेकी या भविष्यमें भारी युद्ध होनेकी आशंका नहीं मिट सकती। भविष्यमें जो युद्ध होगा वह इसी बातपर—इसी झगड़ेकी जड़पर होगा। उसके तात्कालिक कारण चाहें जो हों, पर उसका वास्त-विक कारण वर्तमान समयकी व्यापारिक बुराई ही होगी। आज जो देश बड़े उन्नत, समृद्धिशाली और व्यापारिक उन्नतिके केन्द्र बने हुए हैं वे वास्तवमें—यदि सच्ची निगाहसे देखा जाय—तो इस समय बड़ी आपत्तिके बीचमें गतिविधि कर रहे हैं। किस दिन उनकी व्यापारिक गतिविधि नष्ट हो जायगी, इस बातका भय उन्हें प्रतिक्षण लगा रहता है।

भारतको इस बातकी आवश्यकता नहीं है कि वह दूसरे देशोंकी तरह अपने यहांके बने हुए मालको अन्य देशोंके बाजारोंमें पटक दे। उसके लिये केवल इसी बातकी आवश्यकता है कि वह अपने यहां उत्पन्न हुए कच्चे मालको अपने यहां ही पदार्थ निर्माणमें लगा ले—उससे अपनी आवश्यकता-के पदार्थ यहीं तैयार कर ले। जिस दिन भारत अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये विदेशोंका आश्रित नहीं रहेगा—जिस दिन वह व्यापारिक जगतमें दूसरोंका मुहताज न रहेगा—उसी दिन उसका सौभाग्य सूर्य उदय हो जायगा और उसकी गुलामीकी बेड़ियोंके कटनेके दिन नज़दीक आ जायंगे। भारतको अपने बनाये हुए पदार्थोंके लिये किसी भी विदेशी खरीददार या विदेशी बाजारको खोजनेकी आवश्यकता नहीं है। उसे अन्तर्राष्ट्रीय जीवनमें उन उन्नत देशोंसे प्रति-द्वन्द्विता करनेकी भी कोई आवश्यकता नहीं है। उसे केवल अपने पर, अपने पदार्थोंपर अपने निजके

बाजारोंपर अपना सत्व स्थापित करनेकी आवश्यकता है। मगर इस साधारण कामको करनेमें भी वह बेपरवाही, उदासीनता और कमजोरी बतला रहा है, यही सबसे बड़े खेदकी बात है। केवल इसी एक बातमें यदि भारत सम्हल जाय तो उसकी मुंह मांगी मुराद पूरी होनेमें विलम्ब न लगे।

कपड़े के आयातमें ग्रेटब्रिटेनसे दूसरा नम्बर जापानका है। जिसने दस करोड़ रुपयेका कपड़ा सन् २६-२७ में भेजा। रुई कुल ५,०३,३३००० की आई, इसमें मुख्य भाग अमेरिकाका रहा, जिसने २,११ लाखकी रुई भेजी। बाकी रुईके पदार्थ जो ६५ करोड़के आये उनमें ६,६२ लाख रुपयेका सूत आया। इस पदार्थमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ४१ प्रति शत और जापानका ५४ प्रति शत रहा,सन १९१४-१५में इस मालमें ग्रेटब्रिटेनका भाग ९१प्रतिशत और जापानका२ प्रतिशत था। इस संख्यासे पता चले २ जापानने कितना भाग बढ़ा लिया, यह ध्यान देनेकी बात है। कुल सूत ४९० लाख रतल आया और प्रति पौण्डका औसत मूल्य १।-)॥ रहा। यही सन् १९२५-२६ में ७,९७ लाख रुपयेका ५२० लाख रतल आया था जिससे प्रति पौण्डका औसत मूल्य १॥) पड़ा था। भारतीय मिलोंने ८०,७१ लाख रतल सूत काता और यह सन्तोषकी बात है कि वे दिन प्रति दिन इस कार्यमें उन्नति करती जा रही हैं। इन दिनोंमें जो आयात घटा, वह अधिकतर एक नम्बरसे लेकर २० नम्बर तकके सूतमें था। इस क्वालिटीके सूतको भारतीय मिलोंने ७१० लाख रतल अधिक काता। नम्बर ३१ से लेकर ४० तकके कोरे, धुले और रंगीन सूतके बनानेमें भी भारतीय मिलोंने उन्नति की। ४० नम्बरसे ऊपरका सूत आयात भी अधिक हुआ और यहां बना भी अधिक।

सूत जो मोटे महीनके नामसे कम और अधिक नम्बरोंसे बोधित होता है, उसकी जातियां इस भांति हैं :—

(१) कोरा (२) धुलाई, (३) रंगीन और (४) रेशमी चमकवाला (Mercerised) इनमेंसे कोरे और रंगीन सूतके आयातमें कमी हुई,पर धुलाई और मर्सराइजके आयातमें ८और ४६ सैकड़ाकी वृद्धि हुई। इसीप्रकार कपड़े में,कोरा कपड़ा (बिना धुला हुआ)—जिसमें लट्ठा, मलमल नैनसुख, धोती आदि पदार्थ सम्मिलित हैं—१९,९२ लाखका आयात हुआ, धुलाहुआ कपड़ा जिसमें धोई हुई मलमल, नैनसुख, लंकलाट इत्यादि सम्मिलित हैं—१७१२ लाख रुपयेका आया। रङ्गीन कपड़ा भी १७२२ लाख रुपयेका आयात हुआ। धुले हुए कपड़ेमें ग्रेटब्रिटेनका भाग ९६ प्रतिशत रहा। कोरे और रङ्गीन कपड़ेमें उसका भाग सन् १९२५-२६में ७६ और ७३ प्रति शत था। मगर १९२६-२७में घटकर यह ७८ और ७१ प्रतिशत रहगया। इस मालमें इन दिनों जापानने अधिक उन्नति की। गंजी मौजा आदि भी इस कपड़ेमें सम्मिलित है। यह माल कुल १४७ लाख रुपयेका आया जिसमें १,१७ लाख रुपयेका आयात जापानसे हुआ।

भारतवर्षमें विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट करनेमें कलकत्ता सबसे अग्रगण्य है और उसके पश्चात् इस मालके आयातमें बम्बईका नम्बर है।

पश्चात्य देशोंके व्यापारकी इस सफलताके तथा भारतके व्यापारके इसप्रकार नष्ट होजानेके अन्तर्गतमें तीन कारण मूलभूत तत्व हैं। इनमेंसे पहला और प्रधान कारण अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इङ्गलेण्डके अन्दर यंत्रकलाका आविष्कार होना है। दूसरा कारण ब्रिटेनकी वह व्यापार-संरक्षण नीति हैं जिसके द्वारा उसने अपने बाजारोंमें पटे रहनेवाले भारतीय मालका कानूनन बहिष्कार कर दिया और तीसरा कारण मालको इधर उधर लाने लेजानेके सुविधा पूर्ण साधनोंका उत्पन्न होजाना है। इन तीनों बातोंने भारतके उद्योगको गिरानेमें और इङ्गलैण्डके उद्योगको बढ़ानेमें बहुत अधिक सहायताकी। खासकर यंत्रकलाके आविष्कारने जिसमें कातनेकी, बुननेकी और जहाजी सभी कलाएं सम्मिलित हैं। यहांके व्यापारको बहुतही धक्का पहुंचाया। इसप्रकार इन सब बातोंने भारतके शताब्दियों पुराने उद्योग धन्धोंको मटियामेट कर दिया और इन्हीं बातोंके बलपर इंगलैंड, अमेरिका आदि देश इसी एक शताब्दीमें उन्नतिके शिखरपर पहुंच गये। जो बात एक स्थानपर महा भयङ्कर और जीवन नाशकारी साबित हुई,उसीने दूसरी जगह मृतसंजीवनीका काम किया। इसीके बलपर जो इंगलैण्ड मुश्किलसे दस लाख पौण्ड रूई अपने यहां खपा सकता था सन् १८५०में ६६४० लाख रतल रूई खपानेमें समर्थ हुआ। इधर इन्हीं कारणोंसे जो भारत अपने कपड़ोंसे विदेशोंके बाजारोंको पटा हुआ रखता था उन्नीसवीं शताब्दीमें इङ्गलैण्डका बहुत बड़ा खरीददार बनगया।

चीन और जापान भी कुछ समयतक इङ्गलैण्डके कपड़ेको खरीददार रहे। मगर उन्होंने बहुत शीघ्र अपने व्यापारको सम्हाल लिया और वहांसे कपड़ा मंगाना कम करदिया। नीचेके अङ्कोंसे पता चलेगा कि सन् १८७७से १९२७ तक इङ्गलैण्डसे भारत, चीन और जापानको किस भांति कपड़ेका निर्यात हुआ?

	कपड़ा हजारगज			सूत हजार रतल		
सन्	भारत	चीन	जापान	भारत	चीन	जापान
१८७७	१,३०,९९,३५	३६,९१,३०,	२७१५०	३६०३०,	१७९६२	१५१०५
१८८७	१८,११,१६४	५,५२,७४२,	६५४०३	४,८८५२	११८८२,	२३४७२
१८९७	१७,५४,८३०	४,४५,१८२,	१४०१६	४७३६६	११२४६,	२३१४२
१९०७	२४,५४,२२२	५,५३,२७३,	१२१२४०	३१०११	४२०९८	२११२

को भी प्रगति मिलती जायगी। और वह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररुप धारण कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाईशही न रहे।

(जापान)

सन्	रूई खपी (गांठे)	सूत बना (गांठे)	कपड़ा बना (गज)
१९०२	६,७५,६०८	८०,१७,३६७	७,६७०२२१३
१९२०	२१,३०,५९०	१८,१६,६७६	७६,२०,२७,२६०

कहनेका मतलब यह कि जापानके मुकाबिलेमें चाहे भारतकी गति विधि कम हो, फिर भी भारतमें सूत और कपड़ेका उद्योग बढ़ रहा है। यद्यपि चारों ओरकी प्रतिद्वन्दताके कारण यहांके मिलोंकी दशा जैसी चाहिये वैसी सन्तोष जनक नहीं है तथापि भारतीय जनताकी रुचिमें ज्यों २ सुधार होता जायगा त्यों २ इस उद्योगको भी सफलता मिलती जायगी और यह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररूप धारन कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाइशही न रहे।

यह बात कुछ अंशोंमें सत्य है कि भारतीय मिलें अधिकतर मोटा कपड़ा बनाती हैं और विदेशसे माल की सी तड़क भड़क यहांके मालमें नहीं आती। इस कमजोरीकी वजहसे यहांके बने हुए कपड़ेका प्रचार जितना होना चाहिये उस तादादमें नहीं होरहा है। फिर भी यदि जनता अपने वास्तविक हिताहितको पहचानले, वह यदि इस बातको अनुभव करने लगजाय कि तड़क भड़क कुछ न होनेपर भी इस देशका बना कपड़ा खरीदनेसे हमारा पैसा हमारेही पास रहेगा और उससे देशके उद्योग और व्यापारमें तथा मजदूरोंकी स्थितिमें सुधार होगा, तो फिर यह प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं रह सकता। फिर यह बात भी नहीं है कि हमारी मिलें बारीक और बढ़िया वस्त्र तैय्यारही नहीं कर सकतीं। यदि जनता उन्हें अपनी आवश्यकता बतलावे और उनके उद्योगको प्रोत्साहन दे तो यहां भी बढ़िया कपड़ा तैयार होसकता है। गत पांच सात वर्षोंके अन्दरही भारतकी मिलोंने बहुतसे अच्छे २ डिजाइन तैयार करके बतलाये हैं। यही मिलें उत्साह पानेपर और भी बढ़िया माल तैयार कर सकती हैं। जब संसारमें मशीनरीका नाम भी नहीं सुना गया था, उस समय भी जो देश केवल हाथोंकी कारीगरीसे, मशीनरीसे भी बढ़िया माल तैयार करता था वह देश मशीनरीके युगमें विदेशोंके सदृश पदार्थ तैय्यार करले, यह क्या असम्भव है?

भारतमें सूत तथा कपड़ेकी मिलोंका उदय गत शताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुआ। सबसे पहले सन् १८५४में बम्बईके अन्दर बाम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी खुली। दूसरी मिल मानेकजी नसरवानजी पेटिटने और तीसरी उनके पुत्र सर दिनशा पेटिटने सन् १८६०में खोली। अमेरिकाके युद्ध और चीनको होनेवाले सूतके निर्यातने इस कार्य्यमें बड़ी सहायता पहुंचाई। जिससे लोग

भारतवर्षमें जितनी रुई पैदा होती है उसमेंसे दो तिहाई विदेशोंको भेज दी जाती है और शेष यहांकी मिलोंमें खप जाती है। इस देशमें रुई, सूत एवं कपड़ेकी मिलोंके व्यापारका मुख्य स्थान बम्बई है। इस प्रान्तमें दो सौसे अधिक मिलें हैं। इन मिलोंमेंसे अधिकांश बम्बई शहर और अहमदाबादमें हैं। यहांकी मिलें भारतमें तैय्यार होनेवाले सम्पूर्ण सूतका ७८ प्रति सैकड़ा और कपड़ेका ७१ प्रति सैकड़ा भाग तैयार करती हैं। १९२१ की मर्दुम शुमारीसे यह भी पता चलता है कि भारतमें करीब २० लाख करघे भी चलते हैं जो मुख्यतया मिलके बने हुए सूतका कपड़ा बनाते हैं। यद्यपि हाथकी कताईका काम भी यहाँ बहुत होता है।

भारतमें मिलों, तकुओं और करघोंकी संख्या चाहे अधिक हो पर उनमेंसे पैदा होनेवाले सूतकी औसत जापानमें पैदा होनेवाले सूतकी औसतसे बहुत कम होती है। इस बातके वास्तविक जाननेके लिए दोनों देशोंकी पैदावार पर ध्यान देना उचित है। सन् १९२४ में जापानमें २३२ मिलें चलतीं थीं इनमें ५० लाख तकुए और ६५००० करघे थे इन मिलोंके द्वारा जापानने सूतकी २० लाख गांठें तैयारकी थीं। जो भारतके ८८ लाख तकुओंसे बनाई हुई सूतकी गांठोंसे करीब पांच लाख अधिक हैं। इसी भांति ६४००० करघोंसे जापान प्रतिवर्ष एक अरब गजसे भी अधिक कपड़ा तैयार करता है जब कि भारत उससे ढाई गुने करघोंके होते हुए भी केवल दो अरब गज कपड़ा तैयार करता है। बाहरी मांगके कारण जापान की मिलें रात दिन २० घंटे प्रतिदिनके हिसाबसे चलती हैं। चीन और भारतका पारस्परिक व्यापार टूट जानेसे चीनके बाजारोंपर जापानका अधिकार सा हो गया है और चीनको उसका निर्यात ४०,५०, गुना अधिक बढ़ गया है। चीनकी तो बात दूर, स्वयं भारतमें जापानी सूतका आयात सन् १९१४-१५ के अङ्कसे बत्तीस गुना अधिक हो गया है, तथा कपड़ेका आयात १ करोड़ ६० लाख गजसे बढ़कर २२ करोड़ गजतक पहुंच गया है। भारतकी देशी मिलें कपड़ेकी मांगका आधा भाग पूरा करती हैं उनसे जो कुछ कपड़ा निकलता है वह यहीं खप जाता है। कुछ थोड़ासा भाग बाहर निर्यात होता है। मतलब यह कि अभी इस देशमें कपड़ेके उद्योगके लिए बहुत कुछ स्थान है।

भारतमें प्रति वर्ष पचास, साठ लाख गांठें रुईकी तैय्यार होती हैं उनमेंसे पचीस, तीस लाख गांठें निर्यात होती हैं। यदि यहांकी पैदा हुई सब रुई यहीं रहे, तो कितना लाभ हो सकता है। यहां इस बातका विचार अवश्य उत्पन्न होता है कि यदि रुईका एक्सपोर्ट होना यहांसे बन्द हो जाय तो क्या भारतकी मिलें उस सब रुई को उपयोगमें ले सकती हैं? मिलोंकी कमजोर पैदावारका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। उसके आधारपर यह मान लेना अनुचित न होगा कि जो मिलें अभी विद्यमान हैं उन्होंने पैदावार बढ़ा दी जाय तो, इस समयकी अपेक्षा

बहुत अधिक रुई खपने लग सकती है। यदि यहांकी मिलोंके तकुए और सांचे पूर्ण शक्तिके साथ चलाये जांय तो उनसे सांचोंकी वृद्धि कियेके बिनाही कमसे कम आजकी पैदावारसे एक तिहाई पैदावार और बढ़ाई जा सकती है। इसके पश्चात् यदि इन मिलोंकी पूंजीमें भी कुछ वृद्धि की जाय, तो इस हालतमें यह मानना अनुचित न होगा कि यहांकी पैदा हुई रुई यहीं खपने लग जायगी। दूसरे शब्दों यों कह सकते हैं, कि यहांके कपड़ेकी आवश्यकता यहीं पूरी होनेका शुभ अवसर आ जायगा। इस काममें पूंजीकी वृद्धि अनुमानतः १५ करोड़ रुपया मानी जा सकती है। क्योंकि १९२२ की सरकारी रिपोर्टके अनुसार भारतमें कपड़े की मिलोंमें लगनेवाली पूंजीकी तादाद ३८ करोड़ रुपया है। इसका एक तिहाई या अधिकसे अधिक पन्द्रह करोड़ रुपया इस पूंजीमें और बढ़ा दिया जाय, तो उससे इतना कपड़ा बनना कठिन नहीं है, जिसकी तादाद बाहरके पचास साठ करोड़ रुपयोंके कपड़े के बराबर हो, इस सब रकमकी बचत न भी कहें तो भी बाहर [illegible] परजो जहाज भाड़ा दिया जाता है, कमसे कम उसकी बचत मान लेना तो बिल्कुल अनुचित न होगा। इस प्रकार इस उद्योगकी वृद्धिके साथ ही साथ यहांपर मजदूरीकी आवश्यकता भी बढ़ेगी और जिससे देशकी जनताको काम मिलेगा। यह सब देशकी समृद्धिके लिए [illegible] कमसे कम कपड़े के उद्योग की रक्षा किये तो वाञ्छनीय है। मगर अभी तो [illegible] हो रही है। अभी तो मिलोंकी जो कुछ परिस्थिति है वही आशा जनक नहीं है [illegible] दूर रही।

[illegible], जिनोंमें मोटा सूत तैय्यार होता है और इसका कारण भारतीय रुईके रेशेका [illegible] होना है। इस कारणको दूर करनेके लिए दो पथ हैं। पहला तो यह कि [illegible] रुई मंगाकर उससे बढ़िया और बारीक सूत तैय्यार करें। दूसरा पथ यह हो सकता है कि [illegible] विलायती कपड़ेकी तड़क भड़क पर ध्यान न देकर, देशी उद्योगकी [illegible] सम्मुख रखें। पहले पथका [illegible] इस बातको अवश्य ध्यानमें रखना उचित है कि उस स्थितिमें [illegible] (रुई) के लिए विदेशोंकी आयात पर अवलम्बित रहना पड़ेगा। [illegible] युद्धके छिड़ जानेपर, या कोई दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय संकट पड़ जानेपर इस प्रकारके [illegible] बन्द हो जाना भी सम्भव है। ऐसी स्थितिमें वह इस प्रश्नको कैसे हल करेगा। [illegible] आवश्यकता पूर्तिके लिए यहीं पर कपड़ा तैयार करनेका उद्देश्य पवित्र और [illegible] है। [illegible] परिस्थितिमें परिवर्तनके लिए इसी उद्देश्यसे कहा जाता है कि [illegible] रक्षा हो। इस कामके लिए विदेशी माल की आयात पर [illegible] अनुचित न होगा। इसी भांति देशके उद्योगके लिये

यहांकी पैदा हुई रुईको यहींपर रखनेके लिये यह भी आवश्यक है कि रुइके निर्यात पर भी भारी ड्यूटी लगा दी जाय। लेकिन दुःख है कि भारतमें सरकारी करका नियंत्रण भारतके उद्योगकी अभिवृद्धिकी बातको बहुत कम ध्यानमें रखकर किया जाता है।

एक और दूसरा कारण इस देशके उद्योगकी वृद्धि न होनेका यह है कि इस देशके लोग पुरानी परिपाटीपर चलना ही अधिक पसन्द करते हैं। समय और जरूरतके अनुसार वे अपनी परिपाटीमें फेर नहीं करते। उधर विदेशवाले इस कार्य्यमें बड़े चतुर हैं। वे प्रति वर्ष सैकड़ों प्रकारके रंगबिरंगे नये २ नमूने बनाकर यहां भेजते हैं। इतना ही नहीं वे यहांकी जनताकी अभि-रुचिका सूक्ष्म अध्ययनकर, यहांकी आवश्यकताओंकी जांच भी करते रहते हैं। इसके लिए उन्होंने कई चतुर एजण्ट और दलाल नियत कर रक्खे हैं। किस प्रकारसे उनका माल यहांपर अधिकसे अधिक खपे, इस उद्योगके लिये वे जी तोड़कर परिश्रम करते हैं। अपने मालको भेजने और पैक करनेका ढंग उनका कितना व्यवस्थित और बढ़िया रहता है यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मालका ही नहीं उनका नमूनोंको (Sampling) सजानेका ढंग भी इतना बढ़िया है कि उसे देखकर उनके अध्यवसायकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। भारतवासी अभी इन बातोंमें बहुत पीछे हैं। नमूने सजाकर भेजने की बात पर तो यहांके लोग ध्यान ही नहीं देते। यदि वे भेजेंगे भी तो इतने भद्दे ढङ्गसे कि एक रुपये वाला कपड़ा चार आनेका दिखलाई दे। मालको पैक करने और सजानेके ढङ्गपर भी यहांके लोग उतना ध्यान नहीं देते जितना विदेशी देते हैं। इस बातका पता एक देशी मिलके धोती जोड़ेकी घड़ी, उसपर लगाई छाप और उसके टिकटको देखनेपर भली प्रकार चल जायगा। विदेशोंसे एक पेटी या गांठ मंगानेपर वे लोग कपड़ेके प्रत्येक टिकटपर मंगाने वालेका नाम छाप देंगे, और उस स्थानपर वह कहेगा उस नम्बरका मार्का उसपर लगादेंगे पर भारतके मिलोंवाले ऐसा नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त वे लोग यहांकी जनताकी रुचि परखनेके लिये सात समुद्र पारसे यहां आते हैं, अपने एजण्टोंको भेजते हैं या इस कामके लिए ऊंची तनख्वाहोंपर यहीं एजण्ट नियत करते हैं। इन सब बातोंकी ओर यहांके मिल चलाने वाले, या कपड़ेका प्रचार करने वाले, कभी ध्यान भी देते हैं। मालकी जातिको उन्नत करने या सुधारनेकी बात तो दूर रही पर उसको भेजने या सजानेके परिष्कृत ढङ्गको भी देशी मिलवाले उपयोगमें नहीं लाते। इस प्रकारके कार्य्योंमें द्रव्य खर्च करना वे आवश्यक नहीं समझते जब कि विदेशी लोग नमूनेकी बारियोंको सजाने तथा सुन्दर बनानेमें ही न मालूम कितना द्रव्य खर्च कर डालते हैं। क्या वे लोग यह द्रव्य अपने पाससे खर्च करते हैं? नहीं वह सब उसी व्यापारमें से वापिस दूने चौगुने रूपमें निकल आता है। बम्बई और अहमदाबादके मिल चलानेवाले गुजरात या आसपास की आवश्यकताओंपर ही अधिक ध्यान रखेंगे, वे शायद बंगालकी

जनताको किन वस्तुओंकी आवश्यकता है इस बात पर विचार करनेका कष्ट न उठायेंगे। मगर विलायत की मिल वाले भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्तकी आवश्यकतासे वाकिफ रहनेकी चेष्टा करेंगे और प्रति चालानमें, मालके बेल बूटों, किनारियों, कोरों तथा दूसरी बातोंमें कुछ न कुछ नवीन परिवर्तन अवश्य ही कर देंगे और इसी झूंठी चमक दमकमें भारतवासियोंको डालकर उनकी जेबसे बहुत आसानीसे पैसा निकलवा लेंगे। यदि हम लोग अपने उद्योगमें सरलता और नव जीवनका संचार करना चाहें, तो यह सब रीति, नीति, और प्रणाली सुधरे हुए रूपमें हमें भी स्वीकार करनी पड़ेगी और उसके अनुसार चलना हमारे लिये लाभास्पद ही नहीं पर उद्योगकी उन्नति और सफलताके लिये आवश्यक और अनिवार्य्य होगा।

ऊनी कपड़ा

ऊन और ऊनी कपड़ोंका आयात सन् १९२६-२७ में ४४६ लाख रुपयेका हुआ। कचा ऊन पचीस लाख रुपयेका पचास लाख रतल आया। इसमेंसे १०॥ लाख ग्रेटब्रिटेनसे, बीस लाख बीस हजार रतल पारससे और तीन लाख पैंसठ हजार रतल आस्ट्रेलियासे आयात हुआ।

ऊनी कपड़ा २७७ लाख रुपयेका १५५ लाख गज आयात हुआ। यही सन् १९२५-२६ में २९२ लाख रुपयेका १४५ लाख गज आया था। इससे पता चलता है कि यद्यपि आयात मालमें ६ सैंकड़ा वृद्धि हुई है पर मूल्यमें पांच सैंकड़ा कमी हो गई है। इसकी आयात की वृद्धिका पता इस बातसे लग जाता है कि सन् १९२३-२४ में इसका आयात केवल ७१ लाख गज हुआ था। ग्रेट ब्रिटेनने १४२ लाख रुपयेका ६० लाख गज माल भेजा और वही १९२५-२६ में १५० लाख रुपयेका ६० लाख गज माल भेजा था। इस काममें जर्मनी, फ्रान्स और इटालीका भाग भी अच्छा रहा। इन्होंने क्रमशः दस लाख, बीस लाख, और साढ़े तीस लाख गज माल भेजा। जापानने १९२५-२६ में २० लाख गज माल भेजा था मगर इस वर्ष दस लाख गज भेजा इसी भांति बेलजियमका भाग भी दस लाख गजसे घटकर सात लाख गज रह गया। ऊनी दरी और गलीचोंका आयात सन् १९२५-२६ में १०४०००० रतल हुआ था वही इस साल १०,९०००० रतल हुआ।

रेशम और रेशमी पदार्थ

इस मध्यमें भारतसे ४,६० लाख रुपया निकल गया। कच्चे रेशमकी आयातमें २५ प्रति सैंकड़ा वृद्धि हुई अर्थात् १३२५००० रतलसे बढ़कर इसका आयात १७८३००० रतल होगया और मूल्य भी ८४ लाखसे बढ़कर ११४ लाख रुपया होगया। चीन और हांगकांगने इस काममें करीब २ सब भाग लेलिया। उन्होंने १७२८०००

रतल कच्चा रेशम यहां भेजा। जापानसे इसका आयात १५००० रतलसे बढ़कर २०००० रतल होगया। स्यामसे इसका आयात घट गया। रेशमी सूत—जिसका आयात घटकर सन् १९२५-२६ में ५९१००० रतल रह गया था-का आयात बढ़कर ९२१७००० रतल होगया। इसका मूल्य भी ३५ लाख रुपयेसे बढ़कर ६३ लाख रुपया होगया। इसमें इटालीने २१ लाख रुपये ३६०००० रतल, स्विट्जरलैण्डने पांच लाख रुपयेके ८०००० रतलसे बढ़कर १३ लाख रुपयेका १,८१००० रतल और जापानने ७॥ लाख रुपयेका १,६२,००० रतल माल भेजा।

रेशमी कपड़ा

रेशमी कपड़ेका आयात २१२ लाख रुपयेके १६० लाख गजसे बढ़कर २४३ लाख रुपयेके १९० लाख गजका हुआ। इसमेंसे अनुमानतया ९८ प्रति सैकड़ा रेशमी कपड़ा चीन और जापानसे आया। जापानने ११८ लाख रुपयेका ९५ लाख गज और चीन तथा हांगकांगने ११५॥ लाख रुपयेका ९० लाख गज कपड़ा भेजा। दूसरे पदार्थोंसे मिश्रित रेशमी कपड़ा ३१ लाख रुपयेका २१ लाख गज आया। जिसमेंसे जापानने ८,३७००० गज, जर्मनीने ४०२००० गज और इटलीने २३५००० गज कपड़ा भेजा।

नकली रेशम

भारतमें इसकी मांग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। ऊपरी चमक-दमकसे लुभानेवाला भारत इसमें भी काफ़ी रुपया खर्च करने लग गया है। नकली रेशमके सूतके गत पांच वर्षोंके आयात अङ्कोंसे इस बातका पता चलता है कि भारतमें इसकी खपत किस प्रकार बढ़ती जा रही है।

सन्	रतल	रुपया
१९२२-२३	२,२५०००	१३,४००००
१९२३-२४	४,०६०००	१९,५५०००
१९२४-२५	११,७१०००	४२,४००००
१९२५-२६	२६,७१०००	७४,७२०००
१९२६-२७	५७,७६०००	१,०२,६४०००

ध्यान देने योग्य बात है कि सन् १९२२-२३ में जहां नकली रेशमका सूत १३॥ लाख रुपयेके करीब आया था वहीं सन् १९२६-२७ में एक करोड़ रुपयेके करीब आया। पांच वर्षके भीतर इस पदार्थके आयातमें सात गुना वृद्धि हुई और उसके परिमाणमें २६ गुना। इससे यह भी पता लग जाता है कि यह पदार्थ पांच ही वर्षमें कितना सस्ता होगया। सन् १९२५-२६ की तुलनामें इस पदार्थके आयातमें ११६ प्रति सैकड़ा वृद्धि हुई मगर मूल्यमें केवल ३७ प्रति सैकड़ा। इस

पदार्थके भेजनेवालोंमें इटली ही सबसे प्रधान है। उसने १९२४-२५ में ३,९२,६८८ रतल और १९२६-२७ में ३८,४३१७९ रतल यह पदार्थ भेजा। ग्रेटब्रिटेनका भाग इसमें कुछ गिर गया अर्थात् वहांसे ७,६१००० रतलकी जगह ३,१५००० रतल यह माल आया। नैदरलैण्डका भाग भी इस पदार्थके सम्बन्धमें दूना होगया और जर्मनीने भी १९२५-२६ के १,५७००० रतलसे बढ़कर सन् २६-२७ में २,३२००० रतल माल भेजा। इसके आयातमें इटलीका ६७ सैकड़ा और ग्रेटब्रिटेनका ११ प्रति सैकड़ा भाग रहा। इटलीने इस कारबारके मूल्यमें ९० प्रति सैकड़ाकी वृद्धि की, अर्थात् उसने ३४ लाखकी जगह ६४ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया। इधर ग्रेट ब्रिटेनको इस कारबारमें ४१ सैकड़ा कमी हुई, उसने २४ लाखकी जगह केवल १४ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया।

नकली रेशमका कपड़ा

सूती और नकली रेशमके बने हुए कपड़ेके आयातमें भी खूब वृद्धि हुई। १५० लाख गजसे बढ़कर ४२० लाख गज कपड़ेका आयात हुआ। इस व्यवसायमें ग्रेट ब्रिटेनका नम्बर सबसे पहला रहा। इसने ९५ लाख गजसे बढ़कर १६० लाख गज कपड़ा भेजा। इटलीका नम्बर इस कारबारमें दूसरा रहा। इसने १४० लाख गज कपड़ा भेजा। स्विट्जरलैंडने २३ लाख गजसे बढ़कर ६७ लाख गज और जर्मनी तथा बेलजियमने क्रमशः २५८७०७० गज और ६,८०००० गज कपड़ा भेजा। सूती और नकली रेशमके बने हुए कुल कपड़ेका आयात ३०६ लाख रुपयेका हुआ। जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १,१७ लाख, इटलीने ८१ लाख और स्विट्जरलैंडने अनुमानतः ५६ लाख रुपया पाया।

चीनीका व्यापार

कपड़ेके आयातके पश्चात् भारतमें आयात होनेवाले पदार्थोंमें चीनीका दूसरा नम्बर है। सन् १९२६-२७ में इसका आयात ८,२६,६१० टनका हुआ। सन् १९२५ २६ के आयातकी अपेक्षा यह [illegible] टन अधिक है इसके मूल्य स्वरूप भारतको १६,१६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। इस [illegible] सबसे अधिक है इसने १४ करोड़ रुपयेके मूल्यकी ६ लाख टन चीनी इस देशमें भेजी। इसके अतिरिक्त जर्मनीने ४८,००० टन, हंगरीने २६,००० टन और जेकोस्लोवेकियाने ६१,००० टन चीनीका भारतको निर्यात किया। जिस भांति कपड़ेके आयातमें बंगाल प्रमुख है उसी प्रकार चीनीके आयातमें भी उसका नम्बर पहला है। उपरोक्त संख्यामेंसे बंगालमें तीन [illegible] टन, कराचीमें १,३१,२०० टन, बम्बईमें ८१६०० टन, मद्रासमें ४१,१०० टन, और बरमामें ३६,१०० टन चीनीका आयात हुआ। आयातके सब पदार्थोंकी लिस्टमें चीनीका नम्बर सन् १९२६-२७ में दूसरा [illegible] हो गया। कुछ भी हो, खाद्य पदार्थोंमें तो यही एक ऐसा पदार्थ है जो इतने परिमाणमें आयात होता है।

विदेशी चीनीकी इस प्रतिद्वन्दता और उसके इस भारी आयातकी वजहसे देशी चीनीके व्यवसायको बहुत अधिक धक्का पहुंचता है। विदेशी चीनी किस प्रकारकी अशुद्ध प्रणालियोंसे तैयार होती है, तथा स्वाद और गुणकी दृष्टिसे वह कैसी है इन बातोंपर यहांकी जनता विचार नहीं करती वह केवल उसकी चमक दमक और सस्तेपनको देखकर चाव पूर्वक खरीदती है और इसी भ्रममें वह करोड़ों रुपया विदेशोंको फेंक देती है।

भारतमें चीनीके उद्योगके लिये क्षेत्रकी कमी नहीं है। सन् १९२६-२७ में इस देशमें २६ लाख एकड़ भूमिमें गन्नेकी खेती हुई और उसकी फसलसे ३२ लाख टन कच्ची चीनी (गुड़) तैयार हुई। भारत इस कच्ची चीनीके बनानेमें दुनियामें प्रधान है। गन्नेकी खेती भी यहांसबसे अधिक जमीनमें होती है मगर उसकी उपज दूसरे देशोंकी औसत उपजसे कम होती है। यहांकी उपज क्यूबासे एक तिहाई जापानके मुकाबिलेमें एक चतुर्थांश और हवाईके मुकाबिलेमें एक सप्तमांश होती है। एक दिन था जब भारतका चीनीका उद्योग भी अन्य उद्योगोंकी तरह उन्नतावस्थामें था। लेकिन आज जावा और मारिशसकी प्रतियोगिताके कारण वह पिछड़ गया है। अधिक दूर जानेकी आवश्यकता नहीं सन् १८६० में यहांके आयातमें किसी भी विदेशी चीनीका पता न था। वहीं सन् १९२६-२७ में १९ करोड़की चीनी आई है।

आयातकी तरह यहांसे चीनीका थोड़ा बहुत निर्यात भी होता है। सन १९२५-२६ में यहांसे १६४०० टन चीनी बाहर भेजी गई थी। पर वही सन २६-२७ में केवल १२००० टन भेजी गई। इसमें भारतीय चीनी ६२७ टन थी जिसमें ४२८ टन गुड़ था। यहांसे चीनी खरीदनेवाले देशोंमें अरब, पारस, पूर्वी अफ्रिका आदि देश हैं।

दुनियामें चीनीकी उपज आवश्यकतासे अधिक होती है। यूरोपमें सन् १९२७-२८ में अनुमान किया जाता है कि पूर्व वर्षकी अपेक्षा इसकी कृषिमें १४ सैकड़ा वृद्धि होगी। इसी प्रकार जावामें भी चीनीकी पैदावार पहलेकी अपेक्षा ३ लाख टन अधिक बढ़नेकी आशा है। भारतमें चीनीके आयातके अङ्कोंको देखकर यह बड़ा आश्चर्य होता है कि दुनियाके किसी भी देशसे यहां इसकी कृषि कम न होनेपर भी, यहांपर इसके आयातकी आवश्यकता होती है। यदि गन्नेकी कृषिमें सुधार हो जाय और चीनीके कारखाने आधुनिक उन्नत ढंगपर खोले जांय, तो चीनीकी पैदावार का इतना बढ़ जाना असम्भव नहीं है जिससे यहांकी आवश्यकताकी यहीं पूर्ति हो जाय। चीनीके इतने बड़े आयातका कारण यहांपर गन्नेकी खेतीका वैज्ञानिक ढङ्गसे न होना है। नहीं तो २६ लाख एकड़में कृषि होनेपर भी इस देशको ८ लाख टन चीनी बाहरसे मंगाना पड़े यह सम्भव नहीं हो सकता। यदि इसी जमीनमें वैज्ञानिक ढङ्गसे खेती की जाय तो इस पैदावारका ड्योढ़ी दूनी हो जाना कठिन नहीं है। कोइम्बटूरकी सरकारी प्रयोगशालाके द्वारा खेतीके लिये अच्छी जातिका गन्ना

तैयार किया गया है। इन गन्नोंको बोनेसे कृषक अपनी पैदावारकी औसतको बहुत बढ़ा सकता है। उत्तर बिहार और संयुक्त प्रान्तके पूर्वी भागमें जहां चीनीके कारखाने अधिक हैं इन गन्नोंका प्रचार करनेसे अधिक गन्नेकी प्राप्ति होने लगी है। इसकी वजहसे इन दोनों प्रान्तोंके कारखानोंने गत वर्ष जहां १५२००० मन चीनी बनाई थी वहां इस वर्ष १२५०००० मन चीनी तैयार की है। ब्रिटिश भारतमें सरकारी कृषि विभाग द्वारा दिये हुए गन्नेकी पैदावार १७२००० एकड़में हुई अनुमान की जाती है।

कुछ भी हो, अभी तक तो भारतमें गन्नेकी पैदावार इतनी कम होती है कि चीनीपर भारी आयात कर (४॥ रुपया प्रति हन्ड्रेडवेट और २५ सैंकड़ा भिन्न २ जातियोंपर) होनेपर भी [illegible] इतना भारी आयात होता है। यह भारी आयात तभी बन्द हो सकता है जब यहांकी गन्नेकी पैदावारमें वृद्धि की जाय और चीनी बनानेके अच्छे कारखानें खोले जांय।

लोहा और फौलाद

[illegible] आयात सन १९२६-२७ में १६७२००००० रुपयेका हुआ। पर यदि धातु और उसके बने हुए पदार्थोंका एक ही विभाग मानकर उसमें १४ करोडके मिलके कल पुर्जे, ३ करोडकी रेलवेकी [illegible] ५ करोडकी [illegible] धातुओंकी बनी चीजें, ४ करोडके यन्त्रादिक, ६ करोडकी मोटरें, साई-किल [illegible] और [illegible] करोडकी अन्य धातु भी इसमें सम्मिलित कर दी जाय तो यह सम्पूर्ण आयात [illegible] करोड़का हो जाता है।

जिस प्रकार भारतवर्षमें कपड़ेका शिल्प प्राचीन कालमें बहुत उन्नतिपर था इसी प्रकार [illegible] शिल्पका [illegible] भी यहां [illegible] लगता है। इसका वर्णन पहले भली प्रकार किया जा चुका है और जिस प्रकार [illegible] आविष्कारने पाश्चात्य देशोंमें कपड़ेके उद्योगमें [illegible] कर दिया, उसी प्रकार इन धातुके पदार्थों और यन्त्रों आदिके [illegible] भारी मार दी और आज इन सब पदार्थोंके लिये भारतको [illegible] देना पड़ता है। भारतवर्षमें भी यंत्रोंका उपयोग होता है [illegible] पुर्जे यहां बाहरसे आते हैं। इन यंत्रोंको बनानेके कारखाने [illegible], [illegible] अमेरिका, बेल्जियममें लोयम और घंटमें [illegible] बहुत हैं। [illegible] लोहा आदि धातुओंको गलानेकी बड़ी २ [illegible] होता है। [illegible] बड़े २ यंत्र हथौड़ेसे ठोक पीटकर वहीं [illegible] आश्चर्यजनक कलपुर्जे बनाते हैं। [illegible] पुर्जे बनानेके कारखाने [illegible], अभी तो साधारण सुई [illegible] हैं।

यह बात नहीं है कि भारतमें लोहा न होता हो—या यहां लोहेकी खानें न हों। भारतके कई स्थानोंमें लोहेकी बड़ी २ खानें हैं। मध्यप्रान्त, सिंहभूम, उड़ीसा, मैसूर आदिके समान लोहेकी विशाल खदानें यहांपर मौजूद हैं। खुशीकी बात है कि अब यहांके लोगोंका ध्यान भी इस उद्योगके चलानेकी ओर गया है और देशमें दूसरे कारखानोंकी तरह लोहेके कारखाने भी खुले हैं तथा खुल रहे हैं।

लोहे और फौलादके उद्योगमें नवीन योरोपीय प्रणाली को भारतमें प्रचलित करनेका प्रथम श्रेय मि० जे० एम० होथको है, जिन्होंने दक्षिण आरकट प्रान्तमें सबसे पूर्व इस कार्य्यका श्रीगणेश किया। पर यह प्रयत्न, तथा इसके बादमें किये गये और भी कुछ प्रयत्न असफल रहे। इसके पश्चात् सन् १८८५ में बंगाल आयर्न एण्ड स्टील कम्पनीने उस समयके अनुसार सबसे अधिक सुधरी हुई प्रणालीके आधारपर कार्य्य प्रारम्भ किया और १०, १५ वर्ष तक कुछ मुनाफा न रहनेपर भी कामको प्रारम्भ रक्खा। अभी हालहीमें यह कारखाना बढ़ा दिया गया है और इसमें कई प्रकारके सुधार भी कर दिये गये हैं। इससे न केवल ढलाई और गलाईके कार्य्यमें ही उन्नति हुई है प्रत्युत पदार्थ की जातिमें भी बहुत कुछ उन्नति और सुधार हुआ है। इस कम्पनीका कारखाना आसन सोलसे थोड़ी दूर ईस्ट इण्डियन रेल्वेके स्टेशन बाराकरमें बना हुआ है।

भद्रावती आयर्न वर्क्स - यह कारखाना मैसूर रियासतमें बना हुआ है। इसका उद्देश्य मैसूर राज्यमें निकलनेवाले लोहेको उपयोगमें लेनेका है। यह सन् १९२२ से चलने लगा है। इस कारखानेमें एक भट्टी ऐसी निर्माण की गई है जिसमें ६० टन लोहा प्रतिदिन तैयार हो सकता है। आवश्यकता पड़नेपर थोड़े फेरफारसे यह भट्टी १०० टन लोहा प्रतिदिन तैयार करनेके लायक बनाई जा सकती है। इस कारखानेकी एक विशेषता यह है कि यह लकड़ीसे चलाया जाता है। इस ढङ्गका यह कारखाना सबसे पहला है। लकड़ीसे पहले कोयला बनाया जाता है और फिर लोहा साफ करनेका मसाला, और कच्चा लोहा भट्टीपर लाये जाते हैं। यह बात मानी गई है कि इस ढङ्गसे काम करनेवाला दुनिया भरमें यह सबसे पहला कारखाना है।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—यद्यपि वर्तमान उद्योगके पूर्व कालमें प्रवेश करनेका श्रेय बंगाल आयर्न कम्पनीको है तथापि कहना पड़ेगा कि इस देशके लोहे और फौलादके उद्योगमें विशेष उन्नति करनेका श्रेय टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनीको है जिसने लोहे और फौलादकी सबसे अधिक उन्नत मशीनरी बनाई। इस कम्पनीका मुख्य उद्देश्य जितना सम्भव हो सके उतना बढ़िया जातिका लोहा और फौलाद तैय्यार करनेका है। इसकी स्थापना सन् १९०७ में हुई. और सन १९०८ में साकचीमें—जिसका नाम पीछे जाकर जमशेदपुर पड़ गया—इस कारखानेका बनना

शुरू हो गया। सन १९११ के दिसम्बर मासमें सबसे पहले लोहा तैयार हुआ और सन् १९१३ में फौलादके कामका श्रीगणेश हुआ। पहले पहल पैदावार बहुत कम होती थी लेकिन अगले दस वर्षोंमें अच्छी उन्नति हुई और सन १९२१-२२ में इस कम्पनीने २७०००० टन लोहा और १८२००० टन फौलाद तैयार किया। भारतके लोहे और फौलादके उद्योगके इतिहासमें इस कम्पनीका नाम स्वर्णाक्षरोंमें लिखने काबिल है। जमशेदपुरका उदय एक आश्चर्यजनक बात है। जहां २० वर्षों पहले कुछ भी नहीं था वहां आज हजारोंकी आबादी बस रही है। यह पहल पहल टाटा आयर्न वर्क्सके कारण है,जहांपर कच्ची धातुसे बाजारमें जाने लायक पदार्थ बनाये जाते हैं। पर विदेशी प्रतिद्वन्द्वता के कारण यह उद्योग भी निरापद नहीं रहा, और सन १९२४ में इसके संरक्षणके लिये भारत सरकारने स्टील इण्डस्ट्री ऐक्ट नामक कानून बनाया। इसकी अवधि सन १९२७ तक थी और यह अवधि ३१ मार्च सन १९२७ को शेष होती थी पर पहिलेहीसे उस कानूनमें यह बात आ गई थी कि अवधिके पूर्ण होनेपर फिर जांच करके इस बातका निर्णय किया जायगा कि इस कानूनकी अवधि और भी आगे बढ़ानेकी आवश्यकता है ! या नहीं इसके अनुसार फिर जांच हुई, और इस रिपोर्टके साथ२ यह संरक्षण विधान कमसे कम सात वर्ष और चालू रखनेके लिए सरकारसे सिफारिश की गई। इस सिफारिशमें कहागया कि सरकारी सहायताका नियम तोड़ दिया जाय और कस्टम ड्यूटीके द्वारा इसका रक्षण किया जाय। बोर्डने अपनी रिपोर्ट सहित लगाई जानेवाली कस्टम ड्यूटीका वर्णन पेश कर दिया और यह भी अनुमोदन किया कि यह ड्यूटी सन् १९३३-३४के पहले जबतक फिरसे जांच न होजाय, न घटाई जाय। यह बिल पास हुआ और सन् १९२७की पहली अप्रेलसे जारी हुआ।

यद्यपि यहांपर लोहेके कारखानोंके खुलनेके पश्चात् विलायती लोहेका आयात कुछ कम होगया है—सन् १९२६-२७में उसके आयातका परिमाण पांच प्रति सैकड़ा कम होगया, अर्थात् ८७१००० टनसे घटकर ८३८००० टन रहगया इसीप्रकार उसका मूल्य भी १८०,३ लाखकी जगह १६,७५ लाख रहगया, उसमें भी ७ प्रति सैकड़ा संख्या कम होगई—फिर भी यहांपर अभी इसका बहुत अधिक आयात होता है। इसका अनुमान नीचेके विवरणसे भली प्रकार होजायगा।

सन् १९२६-२७के आयातमें ४३ सैकड़ा भाग गैल्वेनाइज्ड चद्दरोंका रहा। ये कुल मिलाकर ७,१७ लाख रुपयेकी आई' जिनमें ६,४१ लाख रुपयेकी अकेले ग्रेट ब्रिटेनने भेजी। शेष अमेरिका बेल्जियम, जर्मनी इत्यादि देशोंने भेजी। टीनकी चद्दरें गत वर्ष १०५ लाख रुपयेकी आई थीं मगर इस वर्ष केवल ७७ लाख रुपयेकी आई। इस कमीका मुख्य कारण भारतमें इनकी पैदावारका बढ़ जाना है। जहां सन् १९२२ में ८००० टन चद्दरें बनी थीं वहां सन् १९२५ में ३०००० टन और १९२६में ३६००० टन बनीं। उपरोक्त चद्दरोंके आयातमें ४०००००० लाखका आयात ग्रेट-

ब्रिटेनसे और करीब ३७००००० लाखका अमेरिकासे हुआ। अन्य सब तरफकी चद्दरें ८३॥ लाख की आयात हुईं। जिसमें बेलजियमने अड़तीस लाख, ग्रेटब्रिटेनने अट्ठाईस लाख और जर्मनीने ग्यारह लाखकी भेजी। बिना ढले हुए फौलादके पाट १४८१ लाख रुपयेके आये। जिसमें बेलजियम ने ८४लाख रुपयेके और ग्रेटब्रिटेनने १३ लाख रुपयेके भेजे। शेष आयात दूसरे स्थानोंसे हुआ।

लोहेके खम्भे, गार्डर और पुल सम्बन्धी सामानके आयातमें भी कुछ कमी हुई। यह सब सामान गत वर्ष १२२ लाख रुपये के आये थे मगर इस साल इनका आयात ८६लाख रुपयेका हुआ। इन पदार्थोंको भी बेलजियम और इंगलैंडने क्रमसे ४० और ३२ लाख रुपयेकी तादाद में भेजा।

घड़े हुए नल,पाईप आदि सामानके आयातकी तादाद पहलेसे बढ़गई। जहां सन् १९२५-२६में ये पदार्थ ८४ लाखके आये थे वहां इस वर्ष इनका आयात ९१लाख रुपयेका हुआ। इस आयातमें इंगलैण्डका ४० लाखका और जर्मनीका २५। लाखका भाग रहा।

चटखनी, कड़ी, कुन्दे आदि इमारती सामानका आयात करीब ८५१ लाख रुपएका हुआ। इसमें बेलजियमका भाग बहुत बढ़गया तथा ब्रिटेनके आयातकी संख्या बहुत घटगई। इसी प्रकार खूंटियां इत्यादि वस्तुओंका आयात छियालीस लाखसे बढ़कर बावन लाख रुपयेका हुआ। इस कार्य्यमें ग्रेटब्रिटेन और बेलजियम दोनोंने उन्नतिकी। लोहेके तार और जञ्जीरें इत्यादि कुल २५। लाख रुपयेकी आईं इनमें १९। लाखकी अकेले ग्रेटब्रिटेनसे आयात हुईं।

लोहा—खालिस लोहा आजकल बहुत कम आता है। सवा तीन लाख रुपयेके २८९५ टनसे घटकर इसका आयात दो लाख साठ हजार रुपयेके १६, २७ टनका हुआ। खालिस लोहेकी पैदावारमें भारतने अच्छी तरक्की की है। सन् १९२५-२६में यहांपर ८,७५००० टन लोहा हुआ था मगर वही सन् १९२६-२७में ९,५७००० टन हुआ।

लोहे और फौलादके आयातमें जिसमें इनसे बने हुए सब प्रकारके पदार्थ और खालिस लोहे तथा फौलादका आयात गर्भित है मुख्य २ देशोंका आयात भाग इस प्रकार है।

ग्रेटब्रिटेन	४०,६००० टन,	४८·१ प्रति सैकड़ा
जर्मनी	७८००० टन,	९·३ ,,
बेलजियम	२,५७००० टन,	३०·४ ,,
फ्रांस	३३००० टन	३·९ ,,
अमेरिका	२९००० टन	३·४ ,,
अन्यदेश	४१००० टन	४·९ ,,
	८,४५०००	

२२९½ लाखकी आई जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १४६ लाखकी अमेरिकाने २३ लाखकी और जर्मनीने ११ लाखकी भेजी। एञ्जिन १६८ लाख रुपयेके आये जिनमें तैलसे चलनेवाले और उनके पदार्थ ११५ लाखके और भाफसे चलनेवाले ७८ लाखके आए। बायलर ६३ लाखके आये, ये सब करीब २ ग्रेट ब्रिटेनसे आयात हुए। सीनेकी मशीनें सन १९२५-२६ में ७०८०० आई थीं वह १९२६-२७ में ७१,५०० आईं, इनमें ७१ प्रति सैकड़ा भाग अमेरिकाका और २६ सैकड़ा भाग जर्मनीका रहा। टाइप राईटरकी मशीनें भी १६ लाख रुपयेकी १०९४७ से बढ़कर ६२ लाख रुपयेकी १३७६० आई इनमें भी मुख्य भाग अमेरिकाका रहा।

मिलके पदार्थ, मशीनरीके पट्टे और छापेकी मशीनोंके आयातमें मुख्य २ देशोंके आयातका भाग इस प्रकार रहा—

ग्रेट ब्रिटेन	११,३८ लाख रुपया	७७·९ प्रतिशत
अमेरिका	१,५३ " "	१०·५ "
जर्मनी	१,०३ " "	७·१ "
बेलजियम	२५ " "	१·७ "
अन्य देश	४१ " "	२·८ "

रेलवे सामग्री

रेलवे सामग्रीका आयात ३,२६ लाख रुपयेका हुआ, यदि इस संख्यामें सरकार द्वारा आयात किये हुए मालकी २,८३ लाखकी संख्या भी मिलादीजाय तो कुल आयात ६०८ लाख रुपयेका हो जाता है। इसके आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग, जो सन् १९२५-२६ में ७६·१ प्रतिशत था वह घटकर १९२६-२७ में ६१·१ प्रतिशत रह गया। ग्रेट ब्रिटेनके सिवा इस वर्ष बेलजियमसे १७·४ प्रतिशत, जर्मनीसे ६·६ प्रतिशत, आस्ट्रेलियासे ४·८ प्रतिशत और अमेरिकासे ३·६ प्रतिशत मालका आयात हुआ।

मोटर गाड़ियां

भारतवर्षमें मोटर गाड़ियोंका आयात दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इनके दाम यद्यपि पहिलेकी अपेक्षा कम हो गये हैं पर इनका व्यवहार तथा प्रचार पहलेसे बहुत अधिक बढ़ गया है। सरकारने भी १ मार्च सन १९२७ से इन पर कस्टम ड्यूटी ३० सैकड़ासे घटाकर २० सैकड़ा और ट्यूब टायरपर १५ सैकड़ा करदी है। भारतमें अच्छी सड़कोंकी कमी, और पुलोंपर बोझा ले जानेका प्रतिबन्ध ये दोनों कारण अभी मोटर द्वारा आवागमनके प्रचारमें बाधक हो रहे हैं। तब भी इनका आयात बढ़ रहा है। १९२५-२६ में जहां १२८५० गाड़ियां आईं थी वहां १९२६-२७ में १३११७ आईं। इनका मूल्य भी ६८२ लाखकी जगह ७१४ लाख देना पड़ा। इस आयातमें अमेरिका और

धन द्वारा हाथ मजबूत है। अङ्गरेजी गाड़ियां भी अब अधिक व्यवहारमें आने लगी हैं। इस वर्ष अंग्रेजी मोटरका औसत मूल्य ३१,५१ रुपया, अमेरिकनका २२०८ रुपया और कैनाडाकी मोटरका औसत १८६८ रुपया रहा। गत वर्ष यही संख्याएं क्रमसे ३·२१, २२८१ और १५१८ रही थीं। ग्रेट ब्रिटेनमें जहां सन १९२५ में १,३३,००० मोटरें बनी थीं वहां उसने सन १९२६ में १,५८,६६६ मोटरें बनाईं। ग्रेट ब्रिटेनसे ८०॥ लाख रुपयेकी २५४३ मोटरें, कैनाडासे ७० लाखकी ४५७६ मोटरें और अमेरिकासे ९६ लाखकी ४०३१ मोटरें आईं। इटली और फ्रांससे क्रमशः १४१६, और ६०७ मोटरें आयात हुईं। इनके समूचे आयातमें कैनेडाने ३४ प्रति सैकड़ा, अमेरिकाने ३० प्रति सैकड़ा, ग्रेट ब्रिटेनने ११ प्रति सैकड़ा और इटलीने ११ प्रति सैकड़ा मोटरें भेजीं। इन मोटरोंमें बंगालमें ३२ सैकड़ा, बम्बईमें २७ सैकड़ा, सिंध और मद्रासमें १४ सैकड़ा और बर्मामें १३ सैकड़ा मोटरें आईं।

मोटर साईकिल्स

इनका आयात भी ११ प्रति सैकड़ा बढ़ा सन १९२५-२६ में जहां ये १६२९ आई थीं वहां २६-२७ में १८०३ आईं। जिनका मूल्य ९,८३००० की जगह १०,४७००० चुकाना पड़ा। ग्रेट ब्रिटेनमें इनके बनानेवाले दाम घटानेके प्रबल प्रयत्नमें लगे हुए हैं। इसीलिये ग्रेट ब्रिटेनसे इनका आयात बढ़ रहा है। वहांसे इस साल १६६५ मोटर साइकलें आईं। अर्थात इस काममें ग्रेटब्रिटेनका भाग ९२ प्रति सैकड़ा रहा।

मोटर लॉरीज

स्टेशनोंके आस पासके गांवोंमें जहां रेल नहीं है वहां पर यात्राके समय आने जानेके लिये मोटर-बसोंका उपयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। इसके फल स्वरूप मोटरबस, वानें और मोटर लॉरियों-का आयात बढ़ा है। सन १९२४-२५ में जहां ये ३९ लाखकी २१६२ आईं थी वहां सन १९२५-२६ में ८८ लाखकी ४८४० और सन २६-२७ में १२० लाखकी ६३४३ आईं। इनमेंसे खाली एञ्जिन १३ लाख रुपयेके ५३४५ आये। इससे यह प्रकट है कि भारतमें इनपर बॉडियां बनानेका काम बढ़ रहा है। इनमेंसे कई एञ्जिन तो सवारीकी बसोंके लिये आये जिनपर यहीं बाड़ियां बैठाई गईं। इन एञ्जिनोंके आयातमें कैनाडा और अमेरिकाका भाग मुख्य है ग्रेट ब्रिटेनके एञ्जिन महंगे पड़नेकी वजहसे कम आते हैं। इन तीनों देशोंके एञ्जिनोंका औसत मूल्य ध्यान देने योग्य है। सन १९२६-२७में एक अङ्गरेजी एञ्जिनका औसत मूल्य ४६६८ रुपये रहा जब कि अमेरिकन एञ्जिनका २०५० रु० और कैनाडाके एञ्जिनका औसत मूल्य १२५१ रुपया प्रति एंजिन रहा। सन १९२६ में कैनेडाने मोटरबसें, वानें और लॉरियां ४८ लाखके मूल्यकी २३२२ भेजीं, अमेरिकाने ४९ लाख रुपयेकी २३२२ भेजीं जब कि ग्रेट ब्रिटेनने १६ लाख रुपये मूल्यकी केवल ३४१ भेजीं।

रबरके पदार्थ

गत वर्ष कच्चे रबरके दाम बहुत गिर गए इसलिए इसके आयातके मूल्यमें भी बहुत कमी हो गई। लेकिन यह बात प्रकट है कि भारतमें मोटर गाड़ियोंके अधिक व्यवहारके कारण इनके सब तरहके ट्यूब,टायरोंके आयातकी संख्यामें वृद्धि ही रही। मूल्य सस्ता हो जानेके कारण भाड़े दामोंमें घटी रही हो। मोटर टायर ११८ लाख रुपयेके ३,१०,४५१ आये। इनमें ४२ लाख रु० के ग्रेट-ब्रिटेनसे, २३ लाखके अमेरिकासे, २६ लाखके फ्रान्ससे और १७ लाख कैनेडासे आयात हुए। मोटर साइकलके टायरोंमें ६४ प्रति सैकड़ा अर्थात् १० लाख रुपयेके ग्रेट ब्रिटेनसे आए। साइकलके टायरोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ४२ सैकड़ा और फ्रांसका ४६ सैकड़ा रहा। मोटर ट्यूब ग्रेट ब्रिटेनसे ११ लाखके फ्रान्ससे ६ लाखके और अमेरिकासे ३ लाखके आए। रबरके ठोस टायर ग्रेट ब्रिटेनसे ५॥ लाखके आयात हुए।

विविध धातुकी बनी हुई चीजें

इनका आयात ५०७ लाख रुपयेका हुआ, इनमें मुख्यतया नीचे लिखे अनुसार पदार्थ सन् १९२६-२७ में आये।

कृषि सम्बधी पदार्थ	१७ लाख रुपया	कलईदार लोहेके बर्तन ४० लाख रुपया	
मकान सम्बन्धी पदार्थ	३४ लाख रुपया	घरेलू पदार्थ १० लाख	"
अन्य सामान तथा औजार	७१ लाख रुपया	चूल्हे सम्बन्धी पदार्थ ६ लाख	"
धातुके लैम्प	८० लाख रुपया	गैसके मैन्टल ६ लाख	"

धातुके लैम्प मुख्यतया जर्मनीसे आये जिसने ६२ सैकड़ा अर्थात् ३९५१००० लैम्प भेजे, अमेरिकाका भाग इस व्यापारमें २७ सैकड़ा रहा जहांसे १७,४१००० लैम्प आये। कृषि सम्बन्धी पदार्थोंमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा जिसने १४ लाख रुपयेका सामान भेजा। अन्य सामान और औजार ७१ लाखके आये जिनमें ग्रेट ब्रिटेनसे ४३॥ लाख रुपयेके आये। कलईदार लोहेके बर्तनोंमें १६ लाखके जापानसे और १० लाखके जर्मनीसे आये।

इन कुल पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ३६ जर्मनीका ३१ अमेरिकाका १४ और जापान तथा अन्य देशोंका १२ प्रति सैकड़ा रहा।

खनिज तैल

इसमें केरोसिन, पैट्रोल, और लुब्रीकेटिंग तेल मुख्य है। इसके अतिरिक्त व्हाइट आईल भी आता है जिसकी अन्य सब तेलोंमें गणना होती है। इस तैलमें किसी प्रकार रंग या गंध नहीं होती। यह तेल मुख्यतया जर्मनीसे आता है। सन् १९२६-२७ के समूचे आयातमें ३/

सैकड़ा केरोसिन, ४६ सेकड़ा पेट्रोल, और ११ सेकड़ा भाग लुब्रीकेटिंग ऑइलका रहा। इस वर्ष केरोसिन ऑइल कुल मिलाकर ४२६३ लाख रुपयेका ६४० लाख गैलन आया।

इंधनके काममें आनेवाला तेल—रेल, जहाज और कल कारखानोंमें इसका व्यवहार बढ़ जानेसे इसका आयात १,६६ लाख रुपयेका ६०५ लाख गैलन हुआ। पारससे यह सबसे अधिक अर्थात् ६६० लाख गैलन आया। बोरनियों और स्टेटसेटलमेंटसे मिलाकर २४० लाख गैलन आया।

कल पुर्जोंमें लगानेका तेल—जूट मिलोंके लिए बंगालमें यह तेल १४० लाख गैलन ५२ लाख रुपयेका आया। इसमेंसे बोरनियोसे ८० लाख गैलन और अमेरिकासे ६० लाख गैलन आया।

मोटर स्प्रिट—विदेशी मोटर स्प्रिटका आयात बहुत कम अर्थात् कुल ३८०० गैलनका हुआ। भारतमें पेटरोलकी मांग बरमा और भारतके अन्य स्थानोंसे पूरी हो जाती है। पेटरोल और अन्य मोटर स्प्रिटका आयात बरमासे ३६० लाख गैलनका हुआ।

बने हुए खाद्य पदार्थ

इनका आयात ५५० लाख रुपयेका हुआ। भारतमें यद्यपि शुद्ध और पवित्र खाद्य पदार्थोंकी कमी नहीं है पर नवीन सभ्यताके इस जमानेमें डब्बे और बोतलोंमें बन्द किये हुए बिसकुट, केक, चाकलेट, जमे हुए दूध, यहांतक कि घासफूसके बने हुए वनस्पति घी नामक पदार्थमें करोड़ों रुपये बाहर जाते हैं। रोटी, बाटी, मिठाई आदि बनानेमें इस वेजिटेबिल ऑइलका प्रचार भारतमें बहुत बढ़ रहा है। यह देशका दुर्भाग्य है कि इसके पवित्र और बलदायक पदार्थोंका स्थान ये घास फूसकी चीजें ग्रहण कर रही हैं। इस पदार्थका मुख्य आयात नेदरलेण्डसे होता है। जहांसे १,२७ लाखका यह भिजीटेबल प्रोडक्ट आया। इससे भी अधिक आश्चर्यकी बात यह है कि डिब्बोंमें बन्द होकर बिलायती जौ (Harly) का आटा भी यहां लाखों रुपयेका आता है। साबूदाना और उसका आटा ५१ लाख रुपयेका और जमा हुआ दूध ३५ लाख रुपयेका आया। ४९ लाख रुपयेकी बिस्कुट और डबल रोटियां आई। मुरब्बा और अचार भी आश्चर्य है कि तीन लाख रुपयेके आये।

मादक पदार्थ

ये पदार्थ ३५३ लाख रुपयेके आये। सन् १९२५-२६ में जहां ७३ लाख गैलन इनका आयात हुआ था वहां सन् २६-२७ में ६२ लाख गैलन हुआ। सिन्धके सिवाय अन्य सब प्रान्तोंमें इनके आयातकी वृद्धि रही। बंगालका आयात सबसे अधिक अर्थात् १२८६००० गैलन और [illegible] सबसे कम अर्थात् १६,९१००० गैलन रहा। [illegible]

रुपया देना पड़ा और बम्बईको एक करोड़ पांचलाख देना पड़ा। इससे मालूम होता है कि बम्बईमें बढ़िया शराबकी खपत अधिक है। बरमा और मद्रासने क्रमशः ५० लाख और २० लाख का आयात हुआ। इन पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनसे मुख्यतया व्हिस्की और फ्रान्ससे ब्रांडी आती है। शैम्पेन आदि बढ़िया वाईन भी फ्रांससे आती है। उपरोक्त आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका १३६ लाखका और फ्रांसका ५१ लाख रुपयेका भाग रहा।

कागज और पुट्ठा

ये वस्तुऐं ३०८ लाख रुपयेकी आईं, छापने का कागज एक करोड़ रुपये का तीस हजार टन आया। ५९ लाख रुपयोंका समाचार पत्रोंका कागज आया। इस काम में नार्वे और जर्मनीका भाग बढ़ा तथा ग्रेटब्रिटेनका भाग घटा। लिखनेका कागज और लिफाफे ५६ लाख रुपयेके आये जिसमें ३० लाखके अकेले ग्रेटब्रिटेनसे और शेष दूसरे देशोंसे आयत हुए। पेकिंगका कागज ४० लाख रुपयेका आया। स्वीडेन और नैदरलैंडससे इसका आयत बढ़ा और ग्रेटब्रिटेनसे घटा। पुरानी रद्दीका आयात ३८ लाख रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। भाव सस्ता कर देनेके कारण अमेरिकासे भी इस वस्तुका आयात बढ़ा। मोटे कागज और पुट्ठेका आयात ३०॥ लाखका हुआ।

सन् १९२६ में भारतमें ६ कागज मिलें थी। जिन्होंने ३२१४४ टन कागज़ बनाया।

रसायन पदार्थ

इनका आयात २४४ लाख रुपयेका हुआ। इनमें मुख्य भाग सोडाका रहा जो १०५ लाख रुपयेका आया। इसके आयातमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। सोडियम कारबोनेट ५८ लाख रुपयेका आया जिसमेंसे ५३ लाखका ग्रेटब्रिटेनने भेजा। कास्टिक सोडा और सोडियम कारबोनेट क्रमसे १८ लाख और ९ लाख रुपयेके आये। तिजाब ६॥ लाखका, फिटकरी ३ लाख रुपयेकी, अमोनिया और नमक ८ लाख रुपयेका, गन्धक १६ लाख रुपयेका, धोनेके मसाले ८ लाख रुपयेके आयात हुए। ग्लैसरिन, पोटासियम क्लोरेट और जिंकग्रोमाइड आदिके आयातमें भी वृद्धि हुई।

जड़ीबूटियां और औषधियें

इनका आयात २०६॥ लाख रुपयेका हुआ। कपूर २८ लाख रुपयेका आया, जिसमें ८९ सैकड़ा भाग जापानका रहा बाकी चीन हांगकांग और जर्मनीसे आया। कुनैनका आयात १२००० रतल, और सिंकोनाकी छालका २०५००० रतल हुआ। पेटेण्ट औषधियें २७ लाख रुपयेकी आईं, जिनमें ग्रेटब्रिटेनने १५ लाखकी, अमेरिकाने ३ लाखकी और जर्मनीने ५ लाखकी भेजी। कोकेन ५११ औंस, और मारफिया १०९० औंस आया। अफीम और मारफियाकी चीजोंका आयात ६०००० का हुआ।

नमक

यद्यपि विदेशी नमकका आयात सन् १९२५-२६ से परिमाणमें घटगया पर भावकी तेजीके कारण इसके मूल्यमें बढ़ती रही। अर्थात् जहां १९२५-२६ में ५,६०००० टनका मूल्य १०४ लाख रुपया देना पड़ा था वहां २६-२७ में ५,४२,००० टनका मूल्य १२६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। यह पदार्थ मुख्यतया बंगालमें और उससे कम बरमामें आता है जहांके लोग महीन—पिसा हुआ—नमक अधिक पसन्द करते हैं।

जौबारयंत्र आदि

इनका आयात ४०१ लाख रुपयेका हुआ। इसमें बिजलीके पदार्थ टेलिग्राफ़ और टेलीफ़ोन की चीजें भी सम्मिलित हैं। बिजलीके चीजोंमें मुख्य हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। जहांकी चीजें नेदरलैंड और अमेरिकाके साथ प्रतिद्वन्द्वता होते हुए भी अच्छी बिकती हैं। ग्रेटब्रिटेनसे बिजलीकी चीजोंका—जैसे लैम्प बैटरी आदिका—आयात १७० लाखका, अमेरिकासे ३२ लाखका, नेदरलैंडसे १० लाखका, और जर्मनीसे २२ लाखका हुआ।

वाद्यमंत्र

वाद्यमंत्र, सिनेमाकी फ़िल्म और फ़ोटोकी चीजोंका आयात इस वर्ष बढ़ा। इस मदमें ग्रेटब्रिटेनने २५१ लाख रुपयेका, अमेरिकाने ५६ लाख रुपयेका, नेदरलैंडने १० लाख रुपयेका, इटलीने ८ लाख रुपयेका, और जापानने ४ लाखका माल भेजा।

मसाले

ये ३१२ लाख रुपयेके आये। इनमें काली मिर्च १६ लाख रुपयेकी आई। सुपारी मुख्यतया स्ट्रेटसेटलमेंटसे आती है जिसका आयात २५० लाख रुपयोंका हुआ। लौंग ३४ लाख रुपयोंका मुख्यतया केपकालोनी, जंजीबार आदिसे आया।

सिगरेट

भारतमें सिगरेटका आयात २ करोड़ ५६ लाख रुपयेका हुआ। इसमें करीब ४१½ लाख रुपयेकी कच्ची तमाखू आई। जिससे यहां सिगरेट बनाई गई। भारतीय तमाखूके संरक्षणके लिये विदेशी तमाखू पर १) रतलसे बढ़ाकर इम्पोर्ट ड्यूटी १॥) रतल मार्च सन् १९२७से करदी गई।

इस कामनें प्रधान हाथ ग्रेट ब्रिटेनका है। यहांसे १४२ लाखका आयात होता है। इजिप्टसे आयात कुछ कमी हुई, पर अमेरिकाका आयात बढ़ा, सिगार और चुरटका आयात १६ लाख रुपयेका हुआ।

काँच और काँचकी वस्तुएं

इनका आयात २६३ लाख रुपयोंका हुआ। जापान इस काममें उन्नति करता जा रहा है। उसने जेकोस्लोवेकियाको इस काममें पीछे रखदिया है जहांसे ६३ लाख रुपयेका आयात हुआ। जापानसे ६६½ लाख, जर्मनीसे ५२ लाख, और बेलजियमसे २७ लाखका आयात हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे भी २६½ लाख रुपयेका माल आया।

चूड़ियाँ ९५ लाख रुपयेकी आई। जिसमें जेकोस्लोवेकियासे ६१ लाख और जापानसे २१ लाखकी आई। झूठे दाने और मोती ३१ लाखके आये। बोतलें और शीशियाँ ३८ लाखकी आई, जिसमें जर्मनीसे १६ लाखकी, जापानसे १२ लाखकी और ग्रेटब्रिटेनसे ६½ लाखकी आई। लैम्पकी चिमनियाँ और काँचके सामान जो मुख्यतया जर्मनी और अमेरिकासे आते हैं। १४लाख रुपयेके आए। काँचकी टट्टियाँ ३¼ लाख रुपयेकी २५० लाखवर्गफुट आई।

रंग

रंग २१३ लाख रुपयोंका आया। इस काममें मुख्य हाथ जर्मनीका है। जहांसे अलीजरीन रंग १८ लाखका और अनीलीन ८४ लाखका आया। ग्रेटब्रिटेनसे यह माल क्रमशः १ और ७ लाख रुपैयेका आया। शेष मुख्य आयात अमेरिका बेलजियम और स्वीटजरलैंड से हुआ।

जवाहिरात और मोती

इनका आयात १,०७ लाखका हुआ। जिसमें हीरा ५८ लाख रुपयेका आया। जवाहिरातका आयात बेलजियमसे ३७ लाखका हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे १२ लाख तथा नेदरलैंडसे ८लाखका मोतीका आयात ३४½ लाख रुपैयेका हुआ। मोती मुख्यतया बहरीन टापू और मिस्कटसे आते हैं। यहांसे ये ३० लाख रुपयेके आये।

दियासलाई

दियासलाई भारतमें ७५ लाख रुपयेकी आई। विदेशी माचिसका आयात क्रमशः घट रहा है। इसका कारण भारतमें होनेवाले उद्योगका प्रचार है। मुख्य घटी बम्बई और बंगालके आयातमें हुई है। सन् १९२५के अंतमें भारतमें दियासलाईके ३४ कारखाने थे। जिनमेंसे कई मुख्य कारखाने स्वीडिश और जापानी कम्पनियों द्वारा चलाये जाते हैं। सेफ्टी माचिसका आयात ६५ लाख रुपयेका हुआ जिसमें स्वीडनका ६६ सैकड़ा और जापानका २२ सैकड़ा भाग रहा। जापानी दियासलाईका आयात घटा तथा स्वीडनका बढ़ा है। स्वीडनसे ६१ लाख रुपैयेकी और जापानसे सिर्फ १०½ लाख रुपयेकी सबप्रकारकी माचिस यहां आई। जेकोस्लोवेकिया और नारवेसे भी थोड़ीसी माचिस आई।

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

सेठ लुकमान भाई (महम्मदअली ईमाभाई) उज्जैन

नजरअली मिल उज्जैन

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर) के निवासी हैं इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स चेनीराम जेसराजके नामसे बम्बईमें है। इसलिये इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ठ ४५ में दिया गया है। इस फर्मपर बम्बईमें टाटा संसकी मिलोंके कपड़ेकी सोल एजेन्सी है। तथा कपड़ा और बेङ्किंगका व्यापार होता है।

उज्जैनमें इस फर्मकी एक पोद्दार जीनिंग फेक्टरी है। और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स बलदेव मांगीलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाणा (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (बांगड़) सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना ३५ वर्ष पूर्व सेठ बलदेवजीके हाथोंसे हुई थी। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ वैंकटलालजी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स बलदेवजी मांगीलाल सराफा—इस दुकानपर हुण्डी, चिट्ठी लेन-देन तथा रुईका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

(२) सुसनेर—हरनारायण बलदेव—यहां आसामी लेन देन तथा खरीद फरोख्तका काम होता है।

(३) गरोठ—(होल्कर स्टेट) पूर्णानन्द कम्पनी—यहां इस नामकी जीनिंग फेक्टरीमें आपका सामा है।

मेसर्स मन्नालाल भागीरथदास *

इस फर्मके मालिक रतलामके निवासी ओसवाल (चतुरमुथा) सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १२ वर्ष हुए। इसमें सेठ छोटमलजीका सामा है। आप वासनी-मेड़ता (मारवाड़) के रहनेवाले हैं पर आपका कुटुम्ब करीब ६० वर्षोंसे यहीं रहता है।

श्री छोटमलजी उज्जैनकी म्युनिसिपैलेटी मजलिसेआम एवं साहुकारान बोर्डके सदस्य हैं। आपका चित्र रतलाममें दिया गया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स मन्नालाल भागीरथ दास, सराफा—यहां हुण्डी, चिट्ठी, रुई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(२) नागदा—मन्नालाल भागीरथदास—यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है।

---

* इस फर्मका विशेष परिचय और फोटो रतलाममें दिया गया है।

मिल आनर्स

मेसर्स विनोदीराम वालचन्द

इस फर्मका हेड आफिस झालरापाटन है । इसके प्रोप्राइटर सरावगी जातिके
इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहाँपर आपके
गोदाम बने हुए हैं। ग्वालियर स्टेटके मालवाप्रान्तका सदर खजाना भी इसी फर्मके सिपुर्द
फर्म यहाके विनोद मिल्स लि०की सेक्रेटरी, मैनेजिङ्ग एजंट और ट्रेझरर है। यहाँके तार
Manik है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित झालरापाटनमें दिया गया है।

मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास उज्जैन है। सेठ महम्मदअली भाईके हाथोंसे संवत्
के करीब इस फर्मकी स्थापना हुई। सेठ महम्मदअलीभाईके छोटे भ्राता सेठ
पुत्र थे. जिनका नाम सेठ नजरअली भाई सेठ फतहअलीभाई सेठ अब्दुलकरीमभाई और
सेठ तय्यबअलीभाई था।

सेठ नजरअली भाईने संवत् १९४५में उज्जैनमें कॉटन जीनिङ्ग कम्पनी स्थापित
फतहअलीसेठ पुरानी दुकान कोठापर कारोबार करते थे। अब्दुलकरीम भाईने संवत् १९
महम्मदअली ईसाभाईके नामकी दूकान स्थापित की। तथा तय्यबअली सेठ उज्जैनमें
व्यापार करते थे।

वर्तमानमें सेठ नजरअली भाईके ४ पुत्र हैं, इनमेंसे सबसे बड़े सेठ
मिलका कार्यसंचालन करते हैं। फतहअली सेठके ३ पुत्रोंमें सबसे बड़े पुत्र
करते हैं। सेठ अब्दुलकरीम भाईके पुत्र अब्दुल हुसेन सेठ नजरअली मिलमें काम करते हैं। तथा सेठ
तय्यबअली भाईके २ पुत्रोंमें बड़े हसन अलीभाई महत्पुर जीनमें काम करते हैं, और छोटे
भाई सियागंज (इन्दौर) की दूकानका संचालन करते हैं।

उज्जैनके नजरअली मिलकी स्थापना सेठ नजरअली भाईने संवत् १९६८-६९ में की

मिलमें कोई शेअर होल्डर नहीं है। यही खानदान इस मिलका मालिक है। इस फर्मने अपने रुईके व्यवसायको अच्छा बढ़ाया है। मालवाप्रांतमें यह फर्म रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ दान धर्मके कार्योंकी ओर भी इस कुटुम्बका लक्ष रहा है। आपकी ओरसे उज्जैनमें एक सङ्गमरमरका रमणीय रोजा करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बना है। इस रोजेमें बड़े मुल्लाजी साहबकी जियारत है, जिससे दूर दूरके बोहरा समाजके यात्री जियारत करने आते हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक मुसाफिर खाना भी बनवा रक्खा है, तथा साथही उसमें भोजनका भी प्रबन्ध है। मऊमें ६ हजारकी लागतसे बोहरा बीमारोंके ठहरनेके लिये एक सेनेटोरियम भी इस फर्मकी ओरसे बना है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई नयापुरा—इस फर्मपर किराने तथा गल्लेका थोक व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स महम्मदअली ईसा भाई सियागंज—इस फर्मपर किरानेका थोक व्यापार होता है, तथा यहां वेजिटेबल घी और सोडाकी एजंसी है। (T. A. Pulpit)

(३) बम्बई—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई, अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। (T. A. Pulpit)

(४) उज्जैन – नजरअली मिल—इसका विस्तृत परिचय ऊपर दिया गया है। मिलके साथ २ यहां कपास खरीदीका अच्छा व्यापार होता है। अहमदाबादकी कई मिलें यहांसे माल मंगवाती हैं।

इसके अतिरिक्त इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरियां हैं। इनमें कई कारखाने सेठ लुकमानभाईने सेठ नजरअली भाईके गुजर जानेके बाद खोले हैं।

<u>जीनिंग फेक्टरियां</u>—नजरअली जीनिङ्ग फेक्टरीके नामसे

१—उज्जैन २—आगर (मालवा) ३—शाजापुर (ग्वालियर) ४—सोनकच्छ (ग्वालियर) ५—बड़नगर (ग्वालियर) ६—बेरछा स्टेशन (जी० आई० पी०) ७-शुजालपुर ८-पचोर ९—नरसिंहगढ़ १०—ब्यावरा (राजगढ़) ११—खानपुर (नरसिंहगढ़) १२— सुसनेर (नरसिंहगढ़) १३—भोजपुर (ग्वालियर) १४—सुसनेर (ग्वालियर) १५—सोयत (ग्वालियर) १६—बड़ोद (ग्वालियर) १७—कानड़ (ग्वालियर) १८—बागोद (देवास) १९—खाचरोद (ग्वालियर) २०—मंदसौर (ग्वालियर) २१—बड़नगर २२—भिंड २३—राजोद (इसमें आपका साझा है) २४—महम्मदअली ईसाभाई जीन महूगढ़ और २५—सनावद (होल्कर स्टेट)

<u>प्रेसिङ्ग फेक्टरियां</u>—(नजरअली प्रेसिङ्ग फेक्टरीके नामसे)

१—उज्जैन २—भिंड ३—पचोर (यह प्रेसिंग फेक्टरी अभी तैयार होरही है)

कुञ्जकिशोर नारायणदास जौहरी, उज्जैन

फतेचन्दजी पारख (मुनीम सर हुकुमचन्दजी)

मेसर्स रामदान राधाकिशन

इस फर्मके मालिक मेड़ता (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको करीब २० वर्ष पूर्व सेठ रामदानजीने स्थापित किया था। आपका स्वर्गवास सं० १९७९ में हो गया । वर्तमानमें सेठ रामदानजीके पौत्र सेठ रतनलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपका उज्जैनमें एक अन्नक्षेत्र चल रहा है, तथा मेड़तामें आपकी ओरसे राजसभा नामक एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामदान राधाकिशन नमकमंडी—यहां रुई, कपास, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(२) मेड़ता—(मारवाड़) यहां लेन देनका काम होता है।

मेसर्स सरूपचंद हुकुमचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर राज्यभूषण सर हुकुमचंदजी के० टी० हैं। आप मालव प्रांतके नामांकित व्यापारी हैं। आपकी फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। अतः आपका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। उज्जैनमें इस फर्मपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान मुनीम श्री फतहचंदजी पारख हैं। आप बीकानेरके आदि निवासी हैं पर १०० सालसे बजरङ्गगढ़ (ग्वालियर स्टेट) में रहते हैं। आपकी जिमींदारीके २ गांव बजरङ्गगढ़के पास हैं। आपने पहिले मेसर्स रामदेव बलदेवकी दुकानपर, फिर सन् १८७२ से रा० ब० सेठ कल्याणमलजीकी फर्मपर तथा १९७८ से पन्नालाल गनेशदासकी फर्मपर मुनीमात की। एवं वर्तमानमें १९८३ से सर सेठ हुकुमचंदजीकी उज्जैन फर्मका कारबार आप ही सञ्चालन करते हैं। आपको ग्वालियर सरकारसे दो बार खिलअत व सनद भी प्राप्त हुई है। सम्वत् १९७८ में सिंहस्थ के समय आपने अच्छी सेवा की, इससे खुश होकर ग्वालियर सरकार स्वर्गीय माधवरावजी सिंधियाने आपको अपने हाथोंसे तमगा बख्शा। आप मंडी कमेटी, साहुकारी बोर्ड और परगना बोर्डके मेम्बर हैं।

—∞—

मेसर्स करमचंद दीपचंद *

इस फर्मके मालिक सेठ करमचंदजी कोठारीका जन्म बीकानेरमें सम्वत् १९२१ को भाद्रव सुदी ८ को हुआ था। केवल १३ वर्षकी आयुमें ही आप बीकानेरके सेठ धनड़सी जुहारमलजीकी

---

* आपका परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथास्थान नहीं छापा जा सका—प्रकाशक।

मिलमें कोई शेअर होल्डर नहीं है। यही खानदान इस मिलका मालिक है। इस फर्मने अपने रुईके व्यवसायको अच्छा बढ़ाया है। मालवाप्रांतमें यह फर्म रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ दान धर्मके कार्योंकी ओर भी इस कुटुम्बका लक्ष रहा है। आपकी ओरसे उज्जैनमें एक सङ्गमरमरका रमणीय रोजा करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बना है। इस रोजेमें बड़े मुल्लाजी साहबकी जियारत है, जिससे दूर दूरके बोहरा समाजके यात्री जियारत करने आते हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहाँ एक मुसाफिर खाना भी बनवा रक्खा है, तथा साथही उसमें भोजनका भी प्रबन्ध है। मऊमें ६ हजारकी लागतसे बोहरा बीमारोंके ठहरनेके लिये एक सेनेटोरियम भी इस फर्मकी ओरसे बना है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई नयापुरा—इस फर्मपर किराने तथा गल्लेका थोक व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स महम्मदअली ईसा भाई सियागंज—इस फर्मपर किरानेका थोक व्यापार होता है, तथा यहाँ वेजिटेबल घी और सोडाकी एजंसी है। (T. A. Pulpit)

(३) बम्बई—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई, अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहाँ आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। (T. A. Pulpit)

(४) उज्जैन—नजरअली मिल—इसका विस्तृत परिचय ऊपर दिया गया है। मिलके साथ २ यहाँ कपास खरीदीका अच्छा व्यापार होता है। अहमदाबादकी कई मिलें यहांसे माल मंगवाती हैं।

इसके अतिरिक्त इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरियां हैं। इनमेंसे कई कारखाने सेठ लुकमानभाईने सेठ नजरअली भाईके गुजर जानेके बाद खोले हैं।

जीनिंग फेक्टरियां—नजरअली जीनिङ्ग फेक्टरीके नामसे

१—उज्जैन २—आगर (मालवा) ३—शाजापुर (ग्वालियर) ४—सोनकच्छ (ग्वालियर) ५—मंदसौर (ग्वालियर) ६—बेरछा स्टेशन (जी० आई० पी०) ७-सुजालपुर ८-पचोर ९—नरसिंहगढ़ १०—ब्यावरा (राजगढ़) ११—छापेरा (नरसिंहगढ़) १२—खुजनेर (नरसिंहगढ़) १३—ओदिया (ग्वालियर) १४—सुसनेर (ग्वालियर) १५—सोयत (ग्वालियर) १६—बडोद (ग्वालियर) १७—नलखेड़ा (ग्वालियर) १८—आलोट (देवास) १९—खाचरोद (ग्वालियर) २०—बन्हेड़ (ग्वालियर) २१—बड़नगर २२—भिंड २३—राजोद (इसमें आपका साझा है) २४—महम्मदअली ईसाभाई जीन महत्पुर मोर २५—जगोटी (होल्कर स्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरीयां—(नजरअली प्रेसिङ्ग फेक्टरीके नामसे)

१—उज्जैन २—भिंड ३—पचोर (यह प्रेसिंग फेक्टरी अभी तैयार हो रही है)

समाजकी उन्नतिके प्रति आपके हृदयमें बहुत लगन है। आपहीने पोरवाल महासभा स्थापित की थी। इस समय आपके २ पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्रीनारायणदासजी और छोटेका नाम श्रीद्वारिकादासजी है। आप दोनों सज्जन जवाहरातके व्यापारमें अच्छी दक्षता रखते हैं। एवं अब फर्मका काम आप दोनों भाई ही सम्हालते हैं। बम्बई और उज्जैनमें इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जुगुल किशोर नारायणदास जौहरी कालबादेवी—यहां पन्ना तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) उज्जैन—जुगुलकिशोर नारायणदास जौहरी, श्रीकृष्ण भवन—यहां जवाहरातका व्यापार होता है

—:—

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स चिंतामन घासीराम

इस फर्मके मालिक आगर (मालवा) के निवासी हैं। इस फर्मकी स्थापना १० वर्ष पूर्व सेठ पूनमचंदजीके हाथोंसे हुई। तथा वर्तमानमें आपही इस दुकानके मालिक हैं। सेठ पूनमचंदजीके एक पुत्र भी पन्नालालजी हैं। आप सुयोग्य शिक्षित एवं विचारवान नवयुवक हैं।

यह फर्म यहांके नजरअली मिलका कपड़ा बेचनेकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेका अच्छा व्यवसाय होता है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१—उज्जैन—मेसर्स चिंतामन घासीराम सराफा—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

२—आगर (मालवा) चिंतामन घासीराम—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

—:o:—

मेसर्स वृजलाल जमनाधर

इस दुकानके मालिक चिड़ावा (जयपुर) के निवासी हैं। इसके वर्तमान संचालक सेठ जमनाधरजी हैं। आपके बड़े भाई सेठ वृजलालजी ग्वालियर दुकानका संचालन करते हैं और दूसरे सेठ [illegible] ग्वालियरमें रहते हैं।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी कासलीवाल हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस इन्दौर है। अतः इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। इस फर्मका पता—सराफा, उज्जैन है। यहांपर हुंडी, चिट्ठी, सराफा, लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स गोविंदराम बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सरदार नत्थू भैया नेवरी (गवालियर-स्टेट) के निवासी हैं। आपकी गवालियर स्टेटमें कई पीढ़ियोंसे जागीर तथा जमींदारी चली आती है। आप सर्गी श्री आमेसाहब स्टेट गवालियरके खजांची हैं। उक्त सरदार साहबकी ओरसे आपको कई गांव जागीरीमें मिले हैं। आप कई कमेटियोंके मेम्बर हैं। सरदार नत्थू भैयाने नेवरीकी पहाड़ीपर एक रमणीय मंदिर बनवाया है। आप देवास स्टेटके पोतेदार (खजांची) हैं। इस स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान है। देवासमें आपके बाग बगीचे एवं मकानात बने हुए हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—गोविंदराम बालमुकुन्द सराफा—यहां बेङ्किंग तथा रुईका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपका देवास और नेवरीमें जीनिंग फेक्टरीज और भंवरासामें दुकान है।

मेसर्स गोविन्दराम पूरनमल

इस फर्मके मालिक फलोदी मारवाड़)के निवासी माहेश्वरी (बागरा) वैश्य हैं। इस फर्म की स्थापना सर्व प्रथम सेठ हिम्मतरामजीने हैदराबाद (दक्षिण) में की थी। उस समय इस फर्मपर हिम्मतराम अजाराम नाम पड़ता था। सेठ हिम्मतरामजीके बाद उनके पौत्र सेठ गोविंदरामजीने इस फर्मके व्यापारको मालवा और राजपूतानाकी ओर बढ़ाया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन

श्रीयुत नाथभैय्या (मेसर्स गोविन्दराम बालमुकुन्द) उज्जैन

श्रीयुत वेंकटलालजी (मेसर्स बलदेव मांगीलाल) उज्जैन

स्व. श्रीयुत कुन्दनलालजी पांड्या उज्जैन

श्रीयुत मनसुखलालजी पांड्या उज्जैन

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी कासलीवाल हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस इन्दौर है। अतः इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। इस फर्मका पता—सराफा, उज्जैन है। यहांपर हुंडी, चिट्ठी, सराफा, लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स गोविंदराम बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सरदार नत्थू भैया नेवरी (गवालियर-स्टेट) के निवासी हैं। आपको गवालियर स्टेटमें कई पीढ़ियोंसे जागीर तथा जमींदारी चली आती है। आप सर्गी श्री आमेसाहब स्टेट गवालियरके खजांची हैं। उक्त सरदार साहबकी ओरसे आपको कई गांव जागीरीमें मिले हैं। आप कई कमेटियोंके मेम्बर हैं। सरदार नत्थू भैयाने नेवरीकी पहाड़ीपर एक रमणीय मंदिर बनवाया है। आप देवास स्टेटके पोतेदार (खजांची) हैं। इस स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान है। देवासमें आपके बाग बगीचे एवं मकानात बने हुए हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

) उज्जैन—गोविंदराम बालमुकुन्द सराफा—यहां बेङ्किग तथा रुईका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपका देवास और नेवरीमें जीनिंग फ़ेक्टरीज़ और भंवरासामें दुकान है।

मेसर्स गोविन्दराम पूरनमल

इस फर्मके मालिक फलोदी मारवाड़)के निवासी माहेश्वरी (डांगरा) वैश्य हैं। इस फ़र्म की स्थापना सर्व प्रथम सेठ हिम्मतरामजीने हैदराबाद (दक्षिण) में की थी। उस समय इस फर्मपर हिम्मतराम नन्दाराम नाम पड़ता था। सेठ हिम्मतरामजीके बाद उनके पौत्र सेठ गोविंदरामजीने इस फर्मके व्यापारको मालवा और राजपूतानाकी ओर बढ़ाया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स वृजलाल जमनाधर सराफा—(T. A. Kailasha) इस फर्मपर जयाजीराव कॉटन मिल ग्वालियर और बिरला कॉटन मिल दिल्लीकी एजंसी है। इसके अतिरिक्त देशी और विलायती कपड़ेका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है। वमरॅट माचिस फेक्टरीकी सोल एजंसी भी इस फर्मपर है।

(२) ग्वालियर—मेसर्स वृजलाल रामगोपाल· (T. A. Birla) (हेड ऑफिस) यह फर्म यहांके जयाजीराव कॉटन मिलकी सोल एजण्ट हैं।

(३) कलकत्ता—हरदेवदास वृजलाल नं० ११७ केनिंग स्ट्रीट (T. A. Lakhi)यहां केशोराम कॉटन मिलकी बंगालके लिये सोल एजंसी है।

(४) अभोर (पंजाब) हरदेवदास जमनाधर—यहां रुई और कपड़ेका व्यापार होता है इस फर्मका संचालन सेठ श्रीनिवासजी करते हैं।

मेसर्स रामलाल जवाहरलाल

इस फर्मके मालिक लाडनु (जोधपुर) के निवासी सरावगी जातिके हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १९७२ में सेठ जवाहरलालजीने किया। आपके पिताजी सेठ रामलालजीका जीवन बाल्यावस्थासे ही उज्जैनमें व्यतीत हुआ था। सेठ रामलालजीका जन्म संवत १९१८ में लाडनूमें हुआ था। आप आरंभिक जीवनसे अंतिम अवस्थातक मालवेकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स विनोदीराम बालचंदके यहां प्रथम रोकड़पर और पश्चात् प्रधान मुनीमीके स्थानपर कार्य करते रहे। इसी समयमें आपने अफीममें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बदनावरमें दुकान और जीनिङ्ग फेक्टरी स्थापित की। आपका देहावसान संवत १९७५ में हुआ।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामलालजीके ३ पुत्र सेठ जवाहरलालजी, श्रीमोहनलालजी और श्री हुकुमचंदजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामलाल जवाहरलाल सराफ—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) बदनावर (धार स्टेट) मेसर्स जवाहरलाल—यहां रुईका व्यवसाय तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी एक जिनिंग फेक्टरी भी है।

श्रीलक्ष्मीचन्दजी मुणोत

श्रीलक्ष्मीचंदजीके पिता सेठ किशनचंदजी, जबलपुरके राजा गोकुलदासजीकी शिवनी और जबलपुर दुकानपर मुनीमी करते थे। श्रीलक्ष्मीचंदजी, सन् १८९६ से १९१३ तक शिवनीके रजिष्ट्रार आफीसमें एवं राजा गोकुलदासजी की परफेक्टपाटेरी कम्पनी लि० में नौकरी करते रहे। और बादमें उज्जैन आकर १९२६ तक विनोद मिलमें अकाउटेंटकी जगह सर्विस करते रहे। इसी बीचमें आपने कई बीमा कम्पनियोंकी एजसियां लेकर अपना घरू व्यवसाय करना शुरू करदिया। श्रीलक्ष्मीचंदजी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपका खास निवास जोधपुर स्टेटमें रीयां नामक एक गांव है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्रीलक्ष्मीचंद मुणोत सराफा उज्जैन—यहां फायर, लाइफ, मोटर एक्सीडेंट और मेरिन एंश्युरंसका काम होता है।

बैंकर्स तथा काटन मरचेण्टस्

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (उज्जैन ब्रांच)

मेसर्स रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द, सराफा

„ आनंदीलाल सुखानंद सराफा

„ कोआपरेटिव्ह बैंक देवास दरवाजा

„ करमचंद दीपचन्द सराफा

„ गनेशदास किशनाजी सराफा

„ गोविंदराम बालमुकुन्द „

„ गंगाकिशन पुरुषोत्तम „

„ गोविंदराम नाथूराम बुधवारिया

„ गोविंदराम पूनमचन्द सराफा

„ चन्दूजी जुहारमल सराफा

„ धर्मचन्द कल्याणमल सराफा

„ रायबहादुर तिलोकचंद कल्याणमल

„ नन्दूराम गणेशराम

„ नजरअली अल्लाबक्श (नजरी अली मिल)

„ पन्नालाल नंदराम

मेसर्स बलदेवजी मांगीलाल सराफा

„ रामदान राधा किशन

„ विनोदीराम बालचंद

„ बलदेवजी मांगीलाल सराफा

„ रा० ब० सरूपचंद हुकुमचंद

„ सोहराबजी फ्रामजी मांडू होटल

„ हस्तीमल चम्पालाल सराफा

„ श्रीकृष्ण गोपीनाथ सराफा

विदेशी कम्पनियोंकी एजंसियां

मेसर्स रायली ब्रदर्स निजामपुरा

„ वालकट ब्रादर्स निजामपुरा

„ मुसान कम्पनी (जापान) सराफा

„ फारवस फारवस कैम्पिल एण्ड कम्पनी लिमिटेड एजंट—मोहनजी पूनमजी

जौहरी

जुगुल किशोर नारायणराम जौहरी श्रीकृष्ण-भवन

[illegible] काम करने लगे। इन बारह वर्ष बाद आप उस फर्मके मुनीम बनाये गये। उस फर्ममें कार्य करते हुए आपने अफीम आदिके व्यापारमें बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जित की। व्यवसायिक रुचिके साथ साथ धार्मिक कार्योंसे भी आपको विशेष स्नेह था। आपने लूणमंडी जैन मन्दिरमें संगमरमरका फर्श बनवाई, मन्दिरपर शिखर बनाकर कलशारोहण कराया तथा उक्त मन्दिरमें स्वाध्याय आदिकी सुव्यवस्थाके लिये योग्य प्रबन्ध किया। इसी प्रकार गिरनारजीकी तलेटीमें एक जिनमंदिर बनवाकर प्रतिष्ठा की। बड़नगरमें भी आपने एक जिनबिम्बकी प्रतिष्ठा की। इसके अतिरिक्त उज्जैन, तारंगाजी, शत्रुंजय, मक्सी,आदि तीर्थ स्थानोंमें धर्मशालाएं, और कोठरियां बनवाईं। उज्जैनमें आपने एक सार्वजनिक दिगम्बर जैन पवित्र औषधालय, स्थापित किया। जो अभी तक भली प्रकार चल रहा है। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें करीब १ लाख रुपयोंका दान किया था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कल्याणमलजी हैं। आप सेठ घासीलालजीके यहां गोदी आये गये हैं। आपका उज्जैनकी कई सार्वजनिक संस्थाओंमें प्रधान हाथ रहता है। राजदरबार तथा पंच पंचायतोंमें भी आपका अच्छा सन्मान है। सेठ कल्याणमलजी, परगना बोर्ड, म्युनिसिपैलेटी, मजलिसे आम, डिस्ट्रिक्टबोर्ड तथा साहुकारी बोर्डके मेम्बर रह चुके हैं और अब भी हैं। आपको समय समयपर ग्वालियर दरबारकी ओरसे पोशाकें एवं सनदें प्राप्त हुई हैं।

आपकी फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

उज्जैन—मेसर्स घासीलाल कल्याणमल गोधा, सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी सराफी लेन देन तथा रुईका व्यापार होता है। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौरमें है। अतः इसका विशेष परिचय चित्रों सहित उस स्थानपर दिया गया है। इस फर्मके मालिकोंका कुटुम्ब मालव प्रांतमें प्रसिद्ध समृद्धिशाली माना जाता है इस फर्मपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। इसके मालिक स्वर्गीय रायबहादुर सेठ कल्याणमलजी विशाल हृदयके महानुभाव थे। आपका नाम सुनते ही हृदयमें आदरणीय भावोंकी जागृति हो उठती है।

आपकी फर्मका पता—सराफा उज्जैन है। यहां हुण्डी, चिट्ठी, सराफी—लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

चांदी सोनेके व्यापारी

हिरालाल मोतीलाल
लक्ष्मीनारायण दुराड़िया
रामचन्द्र नारायन
रतनचंद मनरूपचंद

कपड़ेके व्यापारी

इब्राहिम इब्तुल्लाजी सब्जीमंडी
इस्माइलजी पाला चौक बाजार
पन्नूलाल जयसिंहभाई सराफा
चिंतामन घासीराम सराफा
जानकीलाल छोगमल गोपाल मंदिरके पास
तय्यब अली मूसभाई सब्जीमंडी
नजर अली मिल क्लोथ शॉप सराफा
विनोद मील क्लाथ शॉप सराफा
ब्रजलाल जगन्नाथर सराफा
मोतीलाल मानकलाल
रसूल भाई सनूसभाई सब्जीमंडी
रामलाल जवाहरलाल जैन सराफा
शंकरलाल सुन्दरलाल सराफा

किरानाके व्यापारी

मेसर्स महम्मद अली ईसाभाई जियाजीगंज
रजबअली इब्राहिमजी (केरोसिन एजंट) दौलतगंज

समूलभाई अब्दुल अली जियाजीगंज
हुकुमचन्द कल्यानमल डाबरीपीठा
हातिमभाई फिदाहुसेन सब्जीमंडी

बर्तनोंके व्यापारी

अमरचंद कस्तूरचंद पटनी बाजार
ओंकारजी मोतीलाल पटनी बाजार
नंदराम शंकरलाल पटनी बाजार
फिदा हुसेन अब्दुल हुसेन पटनी बाजार
महम्मद हुसैन अब्दुल हुसेन पटनी बाजार
मिश्रीलाल शंकरलाल पटनी बाजार

जनरल मरचेंट

अब्दुल हुसेन पीरखांजी सब्जीमंडी
अलीभाई मुल्ला लुकमानजी पटनी बाजार
करीमभाई पीरखां सब्जीमंडी
मूसाखान अलिफअली सब्जीमंडी

इमारती लकड़ीके व्यापारी

अब्दुल अली लुकमानजी नयापुरा
अब्दुल अली अलीमहम्मद जुम्मामस्जिद
कादर भाई रजब अली डाबरीपीठा

कोयला

विदेशी कोयलेका आयात ३१ ला० रुपयेका हुआ। ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़तालके कारण यहांका आयात कम हुआ। सन् १९२५-२६में ३९२००० टन कोयला आया था। इस साल १४२००० टन आया। अर्थात् ६० सैकड़ा कमी हुई और मूल्य ८८ लाखसे घटकर ३१ लाख रह गया। दक्षिणी अफ्रिकाका कोयला जो गत वर्षोंमें बम्बईमें अधिक आता रहा है वह अन्य देशोंने लेलिया। इसलिये नेटालसे यहां आयात घटकर ११४००० टनसे ८६००० टन रह गया। गत वर्ष ग्रेटब्रिटेनसे ६७००० टन आया था उसके स्थानमें इस वर्ष केवल १३००० टन आया। इतना कम आनेका कारण ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़ताल है।

इस प्रकार भारतके आयातका वर्णन हुआ, पर इससे यह नहीं समझना चाहिये कि यह सब पदार्थोंके आयातका वर्णन हो चुका हो। नहीं अभी छोटी बड़ी बीसों वस्तुएं ऐसी हैं जो भारतमें लाखों करोड़ोंके मूल्यकी आती हैं। जैसे मिट्टीके पदार्थ, पहननेके कपड़े, जूते, घड़ी घंटे, छाते और छातेके सामान, स्टेशनरी, साबुन, तेल, लेवेण्डर, वार्निशकी चीजें आदि २, इनका वर्णन कहांतक किया जाय। यहां केवल यही कहना पड़ता है कि यह भारतका दुर्दिन है जो उसके बाजार विदेशी वस्तुओंसे इस तरह पाटे जाते हैं।

आगे अब हम भारतके निर्यात व्यापारका वर्णन करते हैं। इससे पाठकोंको विदित हो जायगा कि किस तरह भारतके मालका निर्यात होता है।

—:-०-:—

निर्यात व्यापार

भारतका एक्सपोर्ट इम्पोर्टकी अपेक्षा अधिक है। देशको इम्पोर्टके लिये मूल्य चुकाना पड़ता है और एक्सपोर्टके लिए उसे मूल्य मिलता है। भारतका एक्सपोर्ट अधिक है इससे यह नहीं समझना चाहिये कि उसे अपने इम्पोर्टका मूल्य चुकाकर एक्सपोर्टकी अधिकताके स्वरूप कुछ मिल जाता है या बच जाता है, नहीं उसके एक्सपोर्टकी अधिकता होम चार्जेस आदिके रूपमें चली जाती है यह पहले लिखा जा चुका है। यह भी पहले लिख दिया है कि उसके एक्सपोर्टका मुख्य भाग कच्चे पदार्थ और खाद्य द्रव्योंका होता है। उसके एक्सपोर्टसे या तो विदेशोंको भोजन अर्थात् खाद्य पदार्थों-की प्राप्ति होती है या उन विदेशोंको अपने उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी प्राप्ति। इस भांति भारतके एक्सपोर्टसे उन विदेशोंके खाद्य और उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी पूर्ति होती है। इसका विस्तार पूर्वक हाल इस प्रकार है। भारतका इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट दोनों व्यापार किस कदर बढ़े हैं पहले यह देखिये—

सन १९२६-२७ में कच्चे पाटकी ३९,६४,००० गाँठे भेजी गईं जिनमेंसे ग्रेट ब्रिटेनने ९,६८००० गाँठें लीं। सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनने ९,५७,००० गाँठें ली थीं अर्थात् १९२५-२७में पूर्व वर्षसे एक सैकड़ेकी घटी रही पर मालके दामोंमें सस्ते भावके कारण बहुत घटी रही, अर्थात् सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनको १०,५७ लाख रुपया देना पड़ा था, वही सन् १९२६-२७ में ६,१४ लाख रुपया ही देना पड़ा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वर्षके पहले ६ महीनोंमें जब ग्रेटब्रिटेन-में कोयलेकी हड़ताल रही तब तक उसने केवल ६५,००० गाँठें लीं और बाकी शेष ६ महिनोंमें। इस काममें जर्मनी सबसे प्रमुख रहा क्योंकि उसने ७,५० लाख रुपयेकी १०,२५००० गाँठें ली। अमेरिकाको ५,९६ ००० फ्रांसको ५०४००० इटलीको २७५००० बेलजियमको २४८००० स्पेनको १८७००० नेदरलैंडको ७२००० और जापानको ५१००० गाँठें भेजी गईं।

नीचे करचे पाटके निर्यात और स्थानीय मिलोंकी खपतका ब्योरा दिया जाता है—

	युद्धके पूर्वका औसत	१९२५-२६ (गाँठें)	१९२६-२७
ग्रेट ब्रिटेन	११,९१,०००	९,७७,०००	९,६८,०००
जर्मनी	९,२०,०००	८,१०,०००	१०,२५,०००
बाकी यूरप	१०,१५,०००	१२,१०,०००	१२,६१,०००
अमेरिका	५,५१,०००	५,११,०००	५,९६,०००
अन्य देश	२१,०००	१,१६,०००	१,१४,०००
कुल निर्यात	४२,८१,०००	३६,२४,०००	३९,६४,०००
भारतकी मिलोंमें खपत	४१,१०,०००	५३,९७,०००	५५,२७,०००

इन अङ्कोंसे पाटके निर्यात और उसकी स्थानीय खपतका पता चल जाता है।

बोरे —

बोरोंका निर्यात सन १९२६-२७ में ४५,९० लाखका हुआ जिसका मूल्य २४३ करोड़ रु० मिला। सबसे अधिक बोरे आस्ट्रेलियाने लिये जो ८,६० लाखका खरीददार रहा। ग्रेट ब्रिटेनने ३९० लाख, अमेरिकाने ३,८० लाख, क्यूबाने २,७० लाख, जापानने २५० लाख और हांगकांगने ११० लाख बोरे लिये।

टाट

सन १९२६-२७ में इसका निर्यात गत वर्षके १४६१० लाख गजसे बढ़कर १५०३० लाख गजका हुआ, पर मूल्य ३२ करोड़की जगह २८ करोड़ रुपया मिला।

तय्यब अली हसन भाई नयापुरा
हाजी करीम भाई हाजी गुलाम हुसेन

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

इनायत हुसेन मुल्ला अब्दुल हुसेन मोदीवाला देवासरोड

महा कालेश्वर आयुर्वेदीय औषधि भांडार देवासरोड

वैद्य और डाक्टर्स

डाक्टर खोचे नई पैठ
नागेश्वरजी मागसीवाला
परशुराम मास्टर खाराकुआ
विश्वनाथजी शास्त्री रामजीगली सराफा

बीमा एजेण्ट

लक्ष्मीचन्दजी मुणोत सराफा

एजंसीज़

इण्डो अमेरिकन आइल कम्पनी-एजेन्सी जैन एण्ड कम्पनी देवास रोड

फोर्ड मोटरकार-एजेन्सी जैन एण्ड कम्पनी देवास रोड

सिंगर मशीन एजेन्सी

होटल और धर्मशालाएं

दी ग्रेण्ड होटल स्टेशनके पास
लक्ष्मी विलास होटल
श्री सख्या राजा धर्मशाला स्टेशनके पास (सरकारी)

खण्डवा

KHANDWA

इसके अतिरिक्त यहांपर मेसर्स जसरूप बैजनाथका एक इलेक्ट्रिक पावर हाउस बना हुआ है। जो सारे शहरको बिजली सप्लाय करता है इस शहरके आसपास सनावद, बड़वाह, नीमाड़खेड़ी हरदा, बीड़, आदि स्थानोंमें रूईकी मंडिया तथा कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इसफर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी जातिके (वाहिती) सज्जन हैं। सर्वप्रथम इस फर्मकी स्थापना सेठ जसरूपजीके हाथोंसे आसेरगढ़में हुई थी। सेठ जसरूपजीके छोटे भाईका नाम सेठ हसरूपजी था। उस समय इस फर्मपर जसरूप हसरूपके नामसे व्यापार होता था। धीरे २ इस फर्मके व्यापारकी तरक्की हुई और आजसे साठवर्ष पूर्व खंडवेमें इसकी एक ब्रँच स्थापित की गई। सेठ जसरूपजीके पुत्र सेठ बैजनाथजीके समयमें आसेरगढ़ और खंडवामें यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेझररका काम करती थी। इसी समय इस फर्मके व्यापारने तेजीसे तरक्की पाई।

संवत् १९५७ तक सेठ जसरूपजी और सेठ हसरूपजीका कुटुम्ब साथही व्यापार करता रहा। उसके बाद दोनों भाइयोंकी फर्में अलग २ हो गई। सेठ जसरूपजीके पुत्र सेठ बैजनाथजी और श्रीनाथजी, जसरूप बैजनाथके नामसे व्यवसाय करने लगे। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बैजनाथजीके पुत्र सेठ काशीनाथजी, सेठ चम्पालालजी एवं सेठ अनन्तलालजी हैं। सेठ चम्पालालजी सेठ श्रीनाथजीके यहां दत्तक गये हैं। इनमेंसे सेठ काशीनाथजी खण्डवा, चम्पालालजी हरदा एवं अनन्तलालजी सनावद दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दानधर्म एवं सार्वजनिक कार्योंकी ओर हमेशासे रुचि रही है। आपकी ओरसे ओंकारेश्वर और खंडवेमें धर्मशाला' बनी हुई हैं।

वर्तमानमें यह फर्म नीमाड़ तथा नीमावर प्रांतमें बहुत बड़ा रूईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

खंडवा—मेसर्स जसरूप बैजनाथ T. A. Jasrup यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा सराफी लेनदेन हुंडी चिट्ठी एवं रूईका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां बनी हुई हैं।। इन सब फर्मोंपर प्रधान व्यापार रूईका होता है।

मेसर्स जसरूप बैजनाथके नामसे—सनावद, बड़वाहा, इन्दौर, धार, धामनोद तथा मंडलेश्वर

मेसर्स जसरूप श्रीनाथके नामसे- हरदा, कन्नौद, खातेगांव तथा टिमरनी

सेठ काशीरामजी थाहिनी (जलरूप पंजनाप) नंडवा

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ मुकुन्दरामजीके पुत्र ताराचन्दजी बड़जाला B. A. करते हैं। आपने नीमाड़ स्टोर्स लिमिटेडको जन्म दिया। तथा अपने नामसे ताराचन्द थियेटर हॉल नामक एक हॉल बनवाया। संवत् १६८०-८१ में श्री ताराचन्दजीको रुईके व्यापारमें बहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ा। इस समय आपने अपनी ईमानदारी एवं सिद्धान्तोंकी रक्षामें किसी प्रकारका अन्तर नहीं आने दिया, एवं अपने लेनेकी ओर दृष्टि न रखकर देनेवालोंको पाई पाईका ऋण अदा किया। वर्तमानमें आप मॉरिस मेमोरियल लायब्रेरी खंडवाके ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। श्रीताराचन्दजी B, A, बड़े ही योग्य एवं सदाचारी नवयुवक हैं।

मेसर्स दीपासा पूनासा

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ रामासा और सेठ रूपाचन्दसा हैं। आप पोरवाल वैश्य (दिगम्बर जैन) जातिके हैं। इस फर्मका मरचेंट जीनिङ्ग फेक्टरीमें हिस्सा है।

आपका व्यावसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—दीपासा पूनासा—इस दुकानपर आसामी लेनदेन, रुईकी आड़तका व्यापार और घरू खेती बारीका काम होता है।

(२) खंडवा - दीपासा पूनासा बम्बई बाजार—यहां किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स नंदराम बख्शीराम

इस दुकानके मालिक ७५ वर्ष पूर्व आकोदा (मारवाड) से यहां आये थे। इस फर्मको इस नामसे खुले ३५ वर्ष हुए हैं। इस दुकानका काम पहिले बहुत बहुत छोटे रूपमें था। इसके व्यापारको सेठ बख्शीरामजीने तरक्की दी। आपका देहावसान संवत् १६८१ में हो गया है। सेठ बख्शीरामजीके भाइयोंमेंसे सेठ कन्हैयालालजीको छोड़कर शेष २ भाई मोतीलालजी और गिरधारी लालजीका देहावसान हो गया है। इस समय इस फर्मके मालिक बख्शीरामजीके पुत्र कालूरामजी नाथूरामजी तथा मुरलीधरजी। तथा कन्हैयालालजीके ४ पुत्र, मोतीलालजीके १ पुत्र और गिरधारी लालजीके १ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—नंदराम बख्शीराम—यहां सराफी लेन देन आड़त तथा रुईका व्यापार होता है।

(२) नीमारखेड़ी (नीमाड़) बख्शीराम गिरधारीलाल—यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुई और आड़तका व्यापार होता है।

(३) थीड (खंडवा) नंदराम बख्शीराम—आड़त व रुईका व्यापार तथा लेनदेनका काम होता है।

सेठ बूचामल रामबख्श

इस दुकानके स्थापक सेठ बूचामलजी ३५ वर्ष पूर्व हाथरस (यू० पी०) से बहुत ही मामूली हालतमें व्यवसायकी तलाशमें यहां आये थे। आरंभमें आपने यहां एक मिठाईकी दुकानमें सामेसे काम किया। कुछ समय बाद खंडवा स्टेशनपर मिठाईके स्टॉलका कंट्राक्ट ले लिया। यहीं आपका कार्य्य जम गया। उस समय आपने अपने दोनों भाई श्रीरामरतनजी एवं ज्योतिप्रसादजीको यहां बुला लिया, और संगठनसे ज्योतिप्रसाद दौलतरामके नामसे काम करना आरंभ कर दिया। कुछ ही समय बाद यह दुकान, जी० आई० पी० रेलवे, बी० एन० आर०, ईस्ट इण्डिया रेलवे, बी० एन० आर और एन० जी० जी० आर० नामक रेलवे कम्पनियोंके मशहूर कंट्राक्टर हो गये। यहांतक कि इस लाइनकी यह फर्म सारे भारतमें पहिली गिनी जाने लगी। इस दुकानका उपरोक्त रेलवे लाइनोंकी सब बड़ी-बड़ी स्टेशनोंपर मिठाई स्टॉलका कंट्राक्ट है।

सन् १९१८ में सेठ बूचामलजी और १९२१ में सेठ ज्योतिप्रसादजीका देहावसान हो गया। वर्तमानमें सेठ बूचामलजीके पुत्र वल्लभदासजी इस दुकानके कारोबारका संचालन करते हैं। आपकी खंडवा दुकानपर कंट्राक्टके अतिरिक्त सराफी लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है। ईश्वरदासजी (ज्योतिप्रसादजीके पुत्र) ने खंडवेके पास पंधाना नामक स्थानपर श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसिंग फेक्टरीके नामसे एक कॉटन प्रेसकी स्थापना की है।

मेसर्स भागचन्द कैलाशचन्द

इस फर्मका हेड ऑफिस अजमेर है। इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचन्दजी एवं कुँवर भागचन्दजी सोनी हैं। आप सरावगी जातिके हैं। आपकी यहांपर जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा बेङ्किंग हुंडी चिट्ठी रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है।

रायसाहब चम्पालाल हीरालालजी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खंडवा ही है। यह फर्म खंडवामें बहुत पुरानी है। पहिले यह बहुत छोटे रूपमें थी। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीसेठ चम्पालालजी एवं उनके छोटे भाता सेठ हीरालालजी हैं। चम्पालालजीके ५ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः हुकुमचन्दजी प्रेमचन्दजी, सुखचन्दजी, फकीरचन्दजी एवं कर्मचन्दजी हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्रोंका नाम मिलापचन्दजी एवं मूलचन्दजी हैं। इस समय सारे परिवारके लोग खण्डवा ही रहते हैं। इस फर्मकी ओरसे रावर्ट सन् गार्डन नामक एक बगीचा धर्मार्थ बना हुआ है। इसके सिवाय टेम्प्रे

रामबगसजी अग्रवाल (बृचामल रामबगस) खण्डवा

मे० कीकाभाई (अब्दुल हुसेन अब्दुल अली) खण्डवा

अग्रवाल (बृचामल रामबगस) खण्डवा

मे० अब्दुल लतीफ (हाजी इब्राहिम अब्दु) खण्डवा

[illegible] — खिड़किया

[illegible] — नीमाड़ खंडवा

इसके अतिरिक्त [illegible] बना हुआ है।

आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियोंका परिचय इस प्रकार है।

जीनिंग फैक्टरी—

(१) खंडवा (२) सनावद (३) बड़वाहा (४) इन्दौर (५) महलुररोड (६) हरदा (७) धार (८) [illegible] (९) [illegible] (१०) [illegible] (११) हरसूद (१२) खिड़किया और (१३) नीमाड़ खंडवा

प्रेसिंग फैक्टरियां—

(१) खंडवा (२) सनावद (३) बड़वाहा (४) इन्दौर (५) महिदपुर (६) खिड़किया और (७) नीमाड़ खंडवा

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन *

इस फर्म के मालिक सेठ जसरूपजीके छोटे भाई सेठ हसरूपजीके वंशज हैं। संवत् १९५७ में सेठ जसरूपजी और हसरूपजीकी संतानें अलग २ हो गईं। और उस समयसे सेठ हसरूपजीके पुत्र सेठ हरकिशनजी एवं राधाकिशनजी,राधाकिशन जयकिशनके नामसे अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। सेठ हरकिशनके पुत्रोंमेंसे श्री जयकिशनजी एवं श्रीगोपीकिशनजीका देहावसान हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरकिशनजीके तीसरे पुत्र सेठ रणछोड़दासजी, एवं सेठ राधाकिशनजीके पुत्र सेठ सुन्दरलालजी तथा स्वर्गीय सेठ गोपीकिशनजीके पुत्र देवकिशनजी साहिबी हैं। यह कुटुम्ब बीकानेरका निवासी है एवं वहां खंडवावाले साहिबीजीके नामसे प्रसिद्ध है। आपकी खंडवा नीमाड़ नीमावर आदि स्थानोंमें कई जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियां हैं। इस फर्मका हेड आफीस खंडवा है।

खंडवा— मेसर्स राधाकिशन, जयकिशन, यहां आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है तथा बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं काटनका बहुत बड़ा व्यापार होता है। नीमाड़ प्रांतमें यह फर्म रुईके व्यापारीयोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है।

---

*आपकी दुकानोंका पूरा २ परिचय कई बार लिखनेपर भी हमें नहीं मिला इसलिये जितना हमें हाल था उतना छापा जा रहा है। प्रकाशक

आपकी दुकानें जयकिशन गोपीकिशन तथा राधाकिशन जयकिशन आदिके नामसे सनावद, हरदा, बड़वाहा, खिड़किया, खरगोन, पन्धाना, बानापुरा आदि स्थानोंपर हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां-

आपकी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियां निम्नाङ्कित हैं—

सेठ राधाकिशन जयकिशन जीनप्रेस फेक्टरी खंडवा
राधाकिशन जयकिशन जीन प्रेस पन्धाना
जयकिशन गोपीकिशन जीनप्रेस नीमाड़खेड़ी
जयकिशन गोपीकिशन कॉटन प्रेस बड़वाहा
गोपीकिशन सुन्दरलाल कॉटन प्रेस खरगोन
जयकिशन गोपीकिशन जीन सनावद
जयकिशन गोपीकिशन प्रेस सनावद
जयकिशन गोपीकिशन जीन बड़वाहा
गोपीकिशन सुन्दरलाल जीन खरगोन
जयकिशन गोपीकिशन जीन कारोकसवा
राधाकिशन जयकिशन जीन एण्ड प्रेस हरदा
राधाकिशन जयकिशन जीन बानापुरा

इत्यादि स्थानोंपर आपकी जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

इस फर्मकी सनावद दुकानपर श्री देवकिशनजी याहिती, खंडवा दुकानपर श्री सुन्दर[illegible] याहिती और हरदा दुकानपर श्री रणछोड़दासजी याहिती काम करते हैं। आप तीनोंही बड़े योग्य एवं उदार पुरुष हैं।

मेसर्स तनसुखदास मुकुन्दराम

इस फर्मके संस्थापक सेठ तनसुखदासजी थड़जाला जिस समय खंडवेमें आये थे, उस [illegible] आपके पास ३ पैसे नगद तथा १ लोटा था। आप मूल निवासी कृष्णगढ़के थे। सेठ तनसुख[illegible] जीने परिश्रम एवं अध्यवसायसे अपने जीवन कालहीमें व्यवसायमें बहुत धन एवं यश [illegible] किया। उस समय आप नीमाड़ प्रांतके प्रसिद्ध व्यापारी गिने जाने लगे थे। आप [illegible] स्नेही एवं दृष्टपोषक थे। आपका देहावसान ६३ वर्षकी आयुमें संवत् १९१३ में हुआ। [illegible] तनसुखदासजीके पश्चात् उनके पुत्र सेठ मुकुन्दरामजीने इस फर्मके व्यापारको सम्हाला। आप [illegible] ही योग्य और विद्वान पुरुष थे।

स्व० रामचरणजी अग्रवाल (चुन्नामल रामचरण) खण्डवा

मे० कीकाभाई (अब्दुल हुसैन अब्दुल अली) खण्डवा

[illegible]रामजी अग्रवाल (चुन्नामल रामचरण) खण्डवा

सेठ अब्दुल लतीफ (हाजी इब्राहिम मन्नु) खण्डवा

स्व० सेठ बैजनाथजी वाहेती (जमनप बैजनाथ) खण्डवा ।

स्व० सेठ जयकिशनजी वाहेती
(जयकिशन गोपीकिशन) खण्डवा

इसके निर्यातमें अमेरिकाका सबसे अधिक भाग रहा जिसने ६५ सैकड़ा अर्थात् ६७,५० लाख गज माल लिया। ग्रेटब्रिटेनने ५ करोड़ गज, आरजेनटाइनने ३१ करोड़, केनाडाने ६ करोड़, चीन और हांगकांगने १॥ करोड़, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडने ३ करोड़, और दक्षिणी अफ्रिकाने ४० लाख गज माल लिया।

पाटका इतिहास

आज जिस पाटके व्यवसायकी भारतमें इतनी धूम है और जो यहांके निर्यातमें सबसे प्रमुख स्थान धारण करता है उसका १६० वर्ष पहले आजकलके सदृश उपयोग करना कोई नहीं जानता था। इसका व्यापारिक महत्व गत शताब्दिके पूर्वार्द्धमें प्रगट हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसका जूट नाम संस्कृत शब्द "जट" अर्थात् तारसे पड़ा। यों तो भारतमें अंग्रेजोंका आगमनके पहलेहीसे कई पदार्थ तार बनानेके काममें आते थे पर अठारहवीं शताब्दिके अंतमें ईस्ट इंडिया कंपनीके अफसरोंको जहाजोंके रस्से बनानेके लिए किसी पदार्थकी आवश्यकता हुई। इसी समय सिवपुर बोटेनिक गारडनके संस्थापक और डायरेक्टरने जूटको इस योग्य समझा और सन् १७९६ में इसकी एक गांठ इंग्लैंड भेजी गई। उसने डायरेक्टरोंकी समितिको जो पत्र लिखा उसमें इस तागेको जूट बोलकर लिखा। सरकारी कागजातमें जूट नाम आनेका यही सबसे पहला अवसर था। इसके बाद कई पारसलें परीक्षार्थ भेजी गईं और सन् १८२० के लगभग एबिंगडनके कारीगर इससे दरी बनानेके लायक तार निकालनेमें समर्थ हुए। सन् १८२२में डंडी (Dundee) में जूटका एक छोटा सा चालान पहुँचा पर वहांके कारीगर इससे तागा नहीं निकाल सके, इसलिए वह ४-५ वर्षतक यों पड़ा रहा और इसके बाद इसकी फर्श अर्थात् दरियां बना ली गईं। उस समय वहां यह निश्चय हुआ कि इस पदार्थके लिए खास तरहके यंत्रोंकी आवश्यकता है। इस बातका प्रयत्न चालू रहा। सन १८२८ में कच्चे जूटका यहांसे कुल १८ टनका चलान हुआ। कलकत्ताके चुंगी विभागमें जूट शब्द भिन्न मदमें आनेका यही सबसे प्रथम अवसर था। सन् १८३२ तक वास्तविक सफलता न हुई पर इस समय व्हेल मछलीके तेलसे इसको नर्म बनाकर काम लिया गया। पहले जूटमें अन्य पदार्थ यथा फ्लैक्स और टो (Flax and tow) मिलाये गये पर सन १८३५में खालिस जूटका सूत कातकर देखा गया। सन् १८३७ में डंडी नगरमें जूटका दाम १८३२ से दुगुना हो गया। सन १८३७ में डच सरकारने कापी भरनेके लिए डंडीमें जूटके बहुतसे बोरे खरीद लिये। इस प्रकार डंडीमें जूटके कारबारकी नींव जमी और यह पदार्थ व्यापारिक दृष्टिसे एक महत्वकी वस्तु गिना जाने लगा।

पाटकी खेती

इसकी खेतीका ठेका मानों बंगाल और आसामने ले रखा है, गंगा और ब्रह्मपुत्रकी तराईमें खासकर इसकी खेती होती है। थोड़ीसी खेती बिहार उड़ीसामें भी होती है। जूटकी फसलका ६० सैकड़ा मध्य बंगाल और आसाममें होता है और इसलिए जूटसे पदार्थ बनानेवाले स्थानोंको कच्चे मालकी प्राप्तिके लिए यहींपर निर्भर रहना पड़ता है। इसकी थोड़ीसी पैदावार मदरास और बम्बईके इलाकोंमें भी होती है जिसे बिमालीपटम जूट कहते हैं। खोज करनेपर इस बातका पता चलता है कि मलाबार जिलेमें और उस तरफकी नदियोंकी तराईमें भी जूटकी खेतीके लायक जमीन है लेकिन अच्छी जाति और गहरी उपजकी बातके अतिरिक्त बंगालके सदृश मजूरी सस्ती न होनेके कारण वहांपर समुचित खेती असम्भव सिद्ध हो चुकी है। अन्य देशोंने भी इसकी खेतीका प्रयत्न किया और वह अभीतक जारी भी है पर किसीको सफलता नहीं मिली। चीन और फारमूसाके प्रान्तोंमें इसकी खेतीमें कुछ सफलता हुई है पर वहांकी पैदावार बंगालसे तभी मुकाबिला कर सकती है जब दाम बहुत तेज हों। इसके अतिरिक्त वहांका जूट बंगालके सदृश बढ़िया भी नहीं होता।

इसके पौधेको चिकनी जमीन बालू मिली हुई चिकनी मट्टी जिसमें जड़ आसानीसे पैठजाय बड़ी उपयोगी रहती है। बंगाल और आसामकी भूमि इसकी खेतीके लिए बड़े मजेकी है क्योंकि नदियोंकी बही हुई रेतकी भूमिके कारण कृषकको बिना अधिक खादके खेती करनेकी सुविधा रहती है। यह ऊँची और सूखी जमीनमें एवं तर और नीची जमीनमें अच्छा बढ़ता है। लेकिन पिछली दशामें जूट अच्छा नहीं होता क्योंकि पौधेका नीचेका हिस्सा बहुत डूब जाता है। इसकी फसलको बढ़नेमें गर्मी बहुत सहायता पहुंचाती है। इसको थोड़े समय पहले और फिर उसके बादमें गहरी वर्षाकी भी आवश्यकता होती है। पौधा एकबार लग जानेपर विशेष लक्ष्य रखनेकी आवश्यकता नहीं रहती और वह १० १२ फुटतक लंबा बढ़ता है। यह मार्चसे लेकर मई महीनेतक बोया जाता है और फसल जुलाईसे अक्टूबरतक उतरती है। सितंबरसे दिसंबरतक इसका बाजार रहता है। कितनी भूमिमें इसकी बोअनी हुई इस बातका सरकारी एस्टीमेट प्रतिवर्ष जुलाई महीनेमें प्रगट हो जाता है और भूमिकी गणना एवं फसलके अनुमानका अंतिम लेखा सितंबर महिनेमें निकल जाता है। इसकी खेती २५३० लाख एकड़ भूमिमें होती है जिसपर २०-३० लाख किसान अपनी जीविकाके लिए निर्भर रहते हैं। वार्षिक पैदावारकी औसत एक एकड़ पीछे अनुमान १५ मन जूट (रेशे) की बैठती है।

इसके लिए बोनेके समय—अप्रैल मई महीनोंमें—थोड़ी थोड़ी वर्षाका होना बड़ा लाभदायक होता है। वास्तवमें इसकी फसलकी पैदावार उचित जल वायुपर बहुत निर्भर करती है। जब इसका

मेसर्स हाजी इब्राहिम अब्बू

इस फर्मकी स्थापना सेठ हाजी इब्राहिम अब्बूने ७० वर्ष पूर्वकी थी। आप कोटड़ा-सांगाणी (काठियावाड़) के निवासी थे। पहिले यह दुकान बहुत छोटे रूपमें काम करती थी। खंडवे में ही इसके व्यापारको तरक्की मिली। हाजी इब्राहिम अब्बूके तीन पुत्रोंमेंसे सेठ महम्मद भाई तथा अहमद भाई अपनी अलग २ तिजारत करते हैं तीसरे युसूफ भाईका देहावसान हो गया है।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ महम्मद भाईके पुत्र (१) सेठ हाजी हबीब, (२) सेठ कासम भाई और (३) सेठ अब्दुल लतीफ हैं। सेठ हाजी हबीबभाई खरगोन दूकानपर रहते हैं।

आपकी नीचे लिखे जगहोंपर दुकानें हैं।

(१) खंडवा—हाजी इब्राहिम अब्बू—T. A. Patel यहां सराफी लेन देन, रूईका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(२) खरगोन—हाजीहबीब महम्मद—यहां आपकी २ काटन जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अलावा लेन देन, रुईका व्यापार, आढत और कुछ घरू कारतका काम होता है।

सेठ यूसुफ अली गनीभाई

यह दुकान खास खंडवेकी ही है, इसके वर्तमान मालिक सेठ कमरुद्दीनजी सेठ महम्मद अली सेठ अकबर अली तथा इनके और भाई हैं। इस दुकानके व्यापारको सेठ यूसुफ अलीजीने विशेष तरक्की दी।

वर्तमानमें इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—मेसर्स यूसुफ अली गनी भाई—यहां इस दुकानकी (१) सेंको जीनिंग फेक्टरी तथा (२) दारू गोदाम जीनिंग फेक्टरी नामक दो जीनिंग और वदूद काटन प्रेस नामक एक काटन प्रेस फेक्टरी है। आपकी यहां खंडवा आइस फेक्टरी भी है। इसके अलावा आपकी दूकानपर रूईका व्यापार आढ़त, हार्डवेअर, आयर्न मरचेंट आदिका भी व्यापार होता है।

(२) इन्दौर—यूसुफ अली गनीभाई एण्डसन्स, सियागंज—यहांपर स्टेंडर्ड आइल कम्पनीके केरोसिन आइलकी एजंसी है।

(३) बड़वाहा (होलकर स्टेट) यूसुफ अली गनी भाई एण्ड सन्स—यहां बर्मा आइल कम्पनी की एजन्सी है।

इंगलिश नाम	देशी नाम	उपयोगी अंग
Acacia arabica	बबूल	छाल और फूल
Acacia catechu	खैर	कत्था या लकड़ीका भीतरी हिस्सा
Anogeissus Latifolia	धोंकड़ो, धू	फूल और पत्ते
Bauhinia variegata	कचनार	छाल और फूल
Butea frondosa.	छोला, पलाश, खाखरा	फूल
Cassia fistula	अमलतास	"
Crateva religiosa	बरना	छाल
Mallotus philippinensis,	रोरी	फूल
Morinda tinctoria	आल	फूल
Nyctanthes arbortristis	स्यारी	फूल
Phyllanthus emblica	आंवला	फल
Vitex negundo	समलू; नेगड़	पत्ते
Wrightia tinctoria	दुधी	लकड़ी
Woodfordia floribunda.	धू	फूल
Zizyphus jujuba.	झारबर	जड़
Garuga pinnata.	गूमा	छाल
Adhatoda Vasica	अडूसा	पत्ते

तेल बनानेके उपयोगमें आनेवाली वस्तुएं

महुआकी गुली, चिरोंजी, कुरंज, कुसुम, आंवला, नीम और बेहरा खासकर तेल बनानेके उपयोगमें आते हैं। ये सब प्रायः गवालियर-स्टेटके जंगलमें पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त सिर्फ नमकप्रान्तमें रोशा पैदा होता है। यह एक प्रकारका घास होता है। पर होता है बड़ा सुगंधित। इस रोशेका तेल इस प्रान्तमें बहुत बनता है तथा बाहर गांव भी जाता है। यह दो तरहका होता है। मोतिया और सोफिया। इस स्टेटमें खस भी पैदा होता है। महाराजा गवालियरकी स्कीम थी कि खस, रोशा, लेमन घास आदि सुगंधित वस्तुओंकी खेतीकी जाय और उनसे बढ़िया तेल इत्र इत्यादि केमिकल इंडस्ट्रीजके द्वारा निकाला जाय। इससे बहुत अधिक लाभ हो सकता है। इस प्रकारके सुगन्धित द्रव्य करीब १५० मन रोजाना मिल सकते हैं। यदि कोई धनिक सज्जन इस ओर ध्यान दे तो बहुत लाभ उठा सकता है।

गवालियर

GWALIOR

रेशा—तार

कई झाड़ ऐसे हैं जिनका रेशा—तार निकलता है। यदि इन झाड़ोंको उपयोगमें लेकर तार निकाला जाय और उसको बाहरी बाजारोंमें बिक्रीके लिये भेजा जाय, तो बहुत लाभ हो सकता है। बाहरी बाजारोंमें इसकी अच्छी प्रतिष्ठा हो सकती है।

यह रेशा खासकर इस स्टेटमें धूपर, मरोड़फली जंगली भिण्डी ,अकावां, छोला अंजन, पूता आदि २ झाड़ोंसे निकलता है।

धूपर, जङ्गली भिण्डी इनका रेशा बहुत अच्छा होता है और इसकी दूसरे देशोंके बाजारोंमें अच्छी कीमत मिल सकती है। मरोड़ फलीके रेशेके लिये इम्पीरियल फारेस्ट इकानमिक्सने शिफारिस की है कि, इण्डस्ट्रीजके लिये इस झाड़का रेशा बहुत सुविधाजनक है। यह यहांके रिक्त और दूसरे सब जङ्गलोंमें पायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यह बहुत आसानीसे दूसरे जंगलोंमें भी लगायी जा सकती है।

कागजके उपयोगमें आनेवाली मुलायम वस्तुएँ

नीचे लिखी हुई घास इस कार्यमें आ सकती है और ये गवालियर स्टेटके जङ्गलोंमें काफी तादादमें मिलती है।

भावर, कांस, सेंठा या मूंज, गन्देर, और परवाई नामक घास इस काममें आती है। इसका अनुभव भी प्राप्त कर लिया गया है। इसके विषयमें एक पेम्फलेट भी छपा है। इसके अतिरिक्त कुछ झाड़ भी जैसी गमहर रेमझा आदि भी कागजके काममें आते हैं। साथही छोलेके जवान झाड़ याने छोटे २ पौधे भी कोशिश करनेपर इस उपयोगमें आ सकते हैं। यदि कोई इसकी इंडस्ट्री गवालियरमें खोलना चाहे, तो खोल सकता है। उसे ये सब वस्तुएं मिल सकती हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि भावरका झाड़ इसके उपयोगमें बहुत आता है। वास्तवमें यह बहुत उपयोगी और इस कामके लिये सबसे अच्छी वस्तु हैं। पर यह यहांके जङ्गलमें कम पायी जाती है। हां, चम्बल और उसकी शाखा कलू नदीके पास यह बहुत पायी जाती है। करीब १०० एकड़ जमीनमें इसीका साम्राज्य स्थापित है। भावरहीकी तरह मोती भी एक प्रकारकी घास होती है। यह भी रानोद ब्लाकमें पायी जाती है। यह भी कागजके उपयोगमें आ सकती है।

दवाईयोंके उपयोगी झाड़

यों तो गवालियर स्टेटके जङ्गलमें कई प्रकारकी दवाइयें पैदा होती है और मिलती भी हैं, पर उनमेंसे खासकर नीचे लिखी हुई दवाइयां बाहर जाती हैं।

अमलतास, दशमूल, शहद, मोम, पित्तपापड़ा, मूसलीसफेद, मूसलीस्याह, गोंद, रतनजोत, ...ड, हारसिंगार, इन्द्रजो, चन्द्रोधारा, गुलमुंडी, गोरखमुंडी, कंकोलमिर्च, तेजपात, ...का बीज आदि २।

गोंद

यहांके जङ्गलोंसे गोंद भी बहुत बड़ी तादादमें पैदा होता है। खासकर खैर और धोकड़ेका गोंद ...ीश और फायदेमन्द होता है। यही गोंद विशेषकर बाहर जाता है। यहांका गोंद बहुत मशहूर ...इसकी खास मण्डी शिवपुरी (ग्वालियर) स्टेट है।

इसके अतिरिक्त और भी वस्तुएं जैसे चिरोंजी, फरेरी, टेन्ट, सांगर, सतावर तेंदू आदि भी बहुत होते हैं। यदि कोई सावधानीसे इन्हें प्राप्त कर भारतीय बाजारमें बेचनेका प्रबन्ध ... हो सकता है।

घासके लिये यहांका जंगल बहुत मशहूर है। यहां कोई विशेष खर्च भी नहीं होता है। यदि कोई यहांसे घासका एक्सपोर्ट शुरू करदे, तो हजारों रुपया कमा सकता है। यहां अभी भी ... तथा दूसरे कामके लिये बहुत बड़े प्रमाणमें ठेकेदारोंके द्वारा घास आता है। जिस किसी भाईको इसमें दिलचस्पी हो। वह यह व्यापार करना चाहे तो उसे बहुत काफी तादादमें घास मिल सकती है। इस स्टेटमें करीब २१ प्रकारकी घास पैदा होती है। जो भिन्न २ कामोंमें आती है।

फेक्ट्रीज एन्ड इण्डस्ट्रीज

सेंट्रल जेल लश्कर—यह ग्वालियर स्टेटका सबसे बड़ा कारागार है। इसकी बहुतसी शाखाएं हैं। इनमें भिन्न २ स्थानोंपर भिन्न २ वस्तुएं बनती हैं, जैसे गलीचे दरियां आदि २। इसके अतिरिक्त फर्नीचर, मोटर और दूसरी गाड़ियोंकी रंगाई, गाड़ियोंकी बनवाई, ... वस्त्र, बैंतका काम आदि २ भी होता है।

...ट फेक्टरी—यह ऊन व सूतके दोनों प्रकारके गलीचे सुन्दर और अद्वितीय बनाती है। यहांसे यूरोप और अमेरिकाको भेजे जाते हैं। नमूना देखकर उनके मुताबिक भी बनाये जा सकते हैं। दरबारहाल, ड्राईंगरूम आदिके लिये बड़े २ गलीचे दरियां और कालीन भी यहां बनाई जाती हैं। इस फेक्टरीमें कम्बल भी बहुत अच्छे बनते हैं।

ग्वालियर

ग्वालियरका ऐतिहासिक परिचय

ग्वालियर भारतके प्राचीन स्थानोंमेंसे एक है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। समयकी गति विधिके अनुसार इसके इतिहासमें भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कई राज्य यहां बने और बिगड़ गये, कई सिंहासन इस भूमिपर जमे और अन्तमें उखड़ गये। प्राचीन शिलालेखों, ताम्रपत्रों एवम् दूसरी ऐतिहासिक सामग्रियोंसे विदित होता है कि यह स्थान पहले चौथी और छठवीं शताब्दी-के बीच गुप्त वंशके अधिकारमें रहा। ग्वालियर राज्यके बहुतसे पुराने मन्दिरोंका अन्वेषण करनेसे पता चलता है कि ये मन्दिर आठवीं और चौदहवीं शताब्दीके बीचके बने हुए हैं। सोलहवीं शताब्दीमें यहांके इतिहाससे मालूम होता है कि यहां मुसलमानोंका अधिकार रहा। सन् १८५७में गदरके समय ग्वालियरके किलेका बहुत महत्व रहा है। यहीं तांतिया टोपी और नानासाहबकी अन्तिम हार हुई थी।

वर्तमानमें यह किला महाराजा सेंधियाके अधिकारमें है। यहीं महाराजा सेंधियाकी राजधानी है। सेंधिया खान्दान भी अपने समयके इतिहासमें बहुत आगेवान रहा है। इसका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

सिन्धिया वंशका संक्षिप्त इतिहास

जिस प्रकार इन्दौरका इतिहास महाराजा मल्हारराव, देवी अहल्याबाई और महाराजा यशवंत रावके कारनामोंसे देदीप्यमान हो रहा है उसी प्रकार इस वंशका इतिहास भी महाराजा महादजी सिंधिया, महाराणी बायजाबाई और महाराज माधवराव सिन्धियाके नामोंसे चमचमा रहा है।

महाराजा महादजी सिन्धियाका नाम इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध है। देवी बायजाबाईका जीवन बड़ा धार्मिक और पवित्र रहा है। आपका नाम ग्वालियरके इतिहासमें अमर रूपसे अङ्कित है।

महाराजा माधवराव सिन्धियाका नाम वर्तमान राजा महाराजाओंमें बहुत अग्रसर है। आपने जबसे राज्य सूत्र अपने हाथमें लिया था, तभीसे आपका ध्यान एक मात्र प्रजाकी उन्नतिकी

इसके अतिरिक्त यहांकी जेलोंमें खादी, खादी, दोसूती, कमीजका कपड़ा, चद्दरें, टर्किश सिल्क भी टाविल्स न्याइन और ब्लाकेट भी कई प्रकारके बनते हैं। रंगीन सूत तथा यहांसे प्राप्त हो सकता है।

स्थानीय कल-कारखाने

(१) श्री जयाजीराव कॉटन मिल्स लिमिटेड ग्वालियर—यह मिल बिड़ला ब्रदर्सका बनाया हुआ है। इसमें धोतीजोड़ा छींट,लट्ठा,साटन रंगीन कपड़े आदि सब चीजें बनती हैं। स्टेटमें इसी मिलका या उज्जैनके मिलोंका कपड़ा बिकता है। इस मिलका कपड़ा सुन्दर और टिकाऊ होता है।

(२) ग्वालियर इंजिनियरिंग वर्क्स कम्पू लश्कर—यह सरकारी कारखाना है। इसमें सब प्रकारकी लपटुइट मशीनरी तैय्यार होती है। यहीं ग्वालियर लाईट रेलवेका कारखाना है। उसके डिब्बे आदि यहीं बनते हैं। मोटर आदिकी मशीनरीकी मरम्मत भी यहींपर होती है।

(३) ग्वालियर लेदर फेक्ट्री मुरार-ग्वालियर—यहां चमड़ेके सब प्रकारके सामान जैसे बेगूज, बूट स्लीपर, टेन्टका काम आदि २ बनते हैं। यहां जितना भी चमड़ा उपयोगमें आता है। करीब २ सब यहां ही तैयार किया जाता है। यहांकी बनी हुई वस्तुएं बाजारमें अपना खास स्थान रखती हैं।

(४) आलिजा दरबार प्रेस लश्कर—यह प्रेस सरकारी है। सेन्ट्रल इन्डियामें यह सबसे बड़ा प्रेस है। यहां प्रिंटिंग, ब्लाक प्रिंटिंग, लिथो प्रिंटिंग बाईडिंग आदिका काम होता है। यहां एक टाईप फाऊंडरी भी है।

(५) ग्वालियर टिन फेक्टरी स्टेशनरोड लश्कर—यहां सब प्रकारकी बढ़िया पटियें बनती हैं।

(६) ग्वालियर सोप फेक्टरी नायगंज लश्कर—इस फेक्टरीमें सब प्रकारके सुगन्धित तथा कपड़े धोनेके साबुन बनाये जाते हैं। यहां बूट पालिश भी तैय्यार होता है।

(७) गोटा फेक्टरी सराफा लश्कर—यहां सब प्रकारका सुनेरी तथा रुपेरी गोटा बनता है। ट्रेस, कलाबत्तू फीते आदि भी यहां बनते हैं। यहांका गोटा बहुत मशहूर है।

(८) मोटर वर्क्स लश्कर—यहां सब प्रकारकी मोटरकी मरम्मतकी जाती है तथा अन्य रंगाई आदिका काम भी होता है।

(९) पत्थर फेक्टरी ग्वालियर—यहां सब प्रकारके पत्थर तैयार मिलते हैं। जैसे खम्भे,दरवाजे चद्दर फर्शी आदि २। यदि कोई आर्डर दें तो जैसा चाहे वैसा माल यहां बन सकता है।

(१०) गलीचा फेक्टरी लश्कर—यहां दरी,गलीचे, पायदान,दुलीचे आदि २ बहुत सुन्दर और मजबूत बनते हैं। यहांका माल यूरोप अमेरिका आदि देशोंमें जाता है। यह माल मजबूत भी होता है।

और रहा था। आपने प्रजाके सुभीते और आरामके लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की। आपने अपने राज्यमें कई कारखाने स्थापित करवाये। कईयोंके आप पेट्रन रहे। पोस्टल डिपार्टमेंटमें बहुत तरक्की की। टेलीफोन, बेतारके तार आदि भी आपने लगवाये।

प्रजाके लिए आपने कई डिस्पेंसरीज़ नई स्थापित कीं। किसानोंके लिए आबपाशीकी बहुत सुन्दर व्यवस्था की। कई तालाब और कुएं इसीलिए बनाए गये। आपने उनके लिए कृषिमें आनेवाले कई यंत्र मंगवाए। इन यन्त्रों द्वारा खेतीके कार्यमें बड़ी सहायता मिलती है। सहायता ही नहीं कार्यमें भी बहुत कम समय लगता है। इन यन्त्रोंको स्टेट किसानोंको बहुत सुभीतेके साथ सप्लाय करती है। इन उपायोंसे ग्वालियर स्टेट की कृषिमें भी बहुत उन्नति हुई है। स्टेटमें कापरेटिव्हबैंक, पंचायत बोर्ड आदिकी भी सुन्दर व्यवस्था है।

ग्वालियरके दर्शनीय स्थान

किला, पुरातत्व सम्बन्धी-म्यूज़ियम (किला), व्यापारिक शोरुम, अजायबघर, सिन्धिया फेमिलीकी छतरियां, जयाजी चौक, जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पूकोठी, किङ्ग जार्जपार्क, थिएटरहाल, सिन्धिया रेस कोर्स, महम्मद गौसकी कबर आदि २ हैं।

व्यापारिक महत्व

यों तो ग्वालियर सेन्ट्रल इंडियाके मुख्य २ शहरोंमें गिने जानेके कारण व्यापारिक दृष्टिसे ठीक ही है, पर इन्दौर, उज्जैन आदि शहरोंके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है। हां, बसावट में यह शहर दूसरे शहरोंकी अपेक्षा थोड़ा सुन्दर और बहुत बड़ा है। यहांका व्यापार विशेषकर सरकारके हाथोंमें है। यहां जितनी भी मशीनरी – कारखाने हैं, उनमें विशेष कारखानोंमें सरकारका प्रत्यक्ष परम् अप्रत्यक्ष हाथ है। तीन शहर मिलकर एक मंडी कहलाती है। याने लश्कर, मुरार और ग्वालियर। इन तीनों शहरोंके बीचमें G. I. P. रेल्वेका स्टेशन है। तथा ग्वालियर लाइट रेल्वे इन तीनों शहरके पाससे होकर निकली है। मुरार-लश्कर और ग्वालियर इन तीनों शहरोंमें आपसमें तीन २ चार २ मीलका फासला है। मिले हुए इन तीनों शहरोंको लश्कर मंडी कहते हैं। यहां गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांसे हजारों मन गल्ला दिसावरोंमें जाता है। थोकी भी यह बहुत बड़ी मंडी है। इसके अलावा इस स्टेटमें और भी कई व्यापारिक मंडियां हैं तथा इस स्टेटके कई स्थानोंमें कई उपयोगी वस्तुएं पैदा होती हैं। उनमेंसे कुछका वर्णन नीचे दिया जाता है।

बैंकर्स

मेसर्स नन्दराम नारायणदास

इस फर्मके मालिक देहलीके निवासी हैं। आपको यहां आए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके स्थापक सेठ नन्दराम जी थे। सेठ नन्दरामजीके पांच पुत्र थे। इनमेंसे सेठ बालकिशनजी और सेठ पन्नालालजी ने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप ठेकेदारीका काम करते थे। स्टेटमें जो बड़े २ मकान और तलाव नदी आदिके बन्धे हैं ये प्रायः आप हीकी ठेकेदारीमें बने हैं। आपका दान धर्मकी ओर भी अच्छा ध्यान था। आपने ग्वालियर स्टेशनपर एक बहुत ही सुन्दर श्रीकृष्ण-धर्मशाला बनवाई है। ग्वालियर दरबार इसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने इसीके नमूनेकी एक धर्मशाला उज्जैनमें बनवाई है जो सरन्याराजा धर्मशालाके नामसे प्रसिद्ध है। उपरोक्त श्रीकृष्ण धर्मशालाके बनवानेसे ग्वालियर दरबारने आपको उपकारकका खिताब प्रदान किया था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामजीदासजी और सेठ काशीनाथजी हैं। रामजीदास जी सेठ पन्नालालजीके पुत्र हैं और काशीनाथ जी सेठ बालकिशनजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। श्रीयुत रामजीदासजी यहां स्टेटमें ऊंचे पदपर हैं। आपको कई उपाधियां हैं। एवम् यहां की कई सार्वजनिक और सरकारी संस्थाओंके आप मेम्बर हैं। श्रीयुत काशीनाथ जी फर्मके कार्यको संचालित करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—नन्दराम नारायणदास—यहां हुंडी चिट्ठी बैंकिङ्ग और ग्वालियर गवर्नमेण्टकी ठेकेदारीका काम होता है। तारका पता Lashakarwala

बम्बई—नन्दराम नारायणदास पायधुनी—यहां अलसी तिलहन, गल्ला आदिकी कमीशन एजंसीका काम होता है। तारका पता Lashakarwala

---

मेसर्स पनराज अनराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी नागोर (मारवाड़) के हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत होगये हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ पनराजजीके पिता सेठ हंसराजजी थे।

लाल-पीली मिट्टी (गेरू)—इस स्टेटके मुरार-सिरिजमें यह मिट्टी होती है। यह मिट्टी बहुत अच्छी होती है। सन् १९२१-२२ में करीब ३०००० मन मिट्टी यहांसे बहुत कम खर्चमें निकली थी।

अभ्रक—व्यापारिक-उपयोगका अभ्रक गंगापुरके पास होता है। यह अभ्रक बहुत अच्छा होता है। लेकिन कम तादाद में। फिर भी यदि इसको ठीक प्रकारसे निकाला जाय तो मुनाफा मिल सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ घटिया क्वालिटीका अभ्रक चिर-खेड़ाके पास बहुत होता है।

एल्युमिनियम—नरवर, ईसागढ़ और भेलसा नामक परगनोंमें एल्युमिनियम धातु विशेष रूपसे पायी जाती है।

हरी मिट्टी—मन्दसोर और भेलसा नामक परगनोंमें यह मिट्टी पायी जाती है। यह दवाइयोंके काममें आती है।

सिमिटके उपयोगकी वस्तु—पोर्टलैंड सिमिटके बनानेकी उपयोगी वस्तुएं विन्ध्याचलकी पर्वतश्रेणीमें जो शिवपुर G. L. R.के पास है, बहुत मिलती हैं। चूनेके पत्थर भी केलारसके पास वाले पर्वतमें पाये जाते हैं। इनका ठेका गवालियर सिमिंट कम्पनीको दिया गया है। इस कम्पनीने बनमोर नामक स्थानमें एक कारखाना बनाया है। इसके अतिरिक्त पोर्टलैंड सिमिटके बनानेका फोराजीन नामक चूनेका पत्थर तथा विन्ध्याचल-चूना-पत्थर ममकरा और सलवास (नीचम) नामक स्थानोंमें मिलता है।

बिल्डिंग मटेरियल्स—इस रियासतमें मकानातके उपयोगमें आनेवाली सुन्दर वस्तुएं भी बहुत हैं। गवालियरके पास, भंडेर, भेलसाके पास, गवालियर और आंतरीके बीचमें पत्थरकी खाने हैं। इसके अतिरिक्त सबलगढ़से १२ मीलपर नागोद (केलारसके पास) और नीमचके पास बिसलवास नामक स्थानोंपर चूनेका पत्थर निकलता है।

इसके अतिरिक्त सोना, पन्ना, मेगनीज, गंधक, लोहा और गंधक मिश्रित धातु, टीनस्टोन आदि कई वस्तुएं पैदा होती हैं। इसका विशेष वर्णन प्राप्त करनेके लिये गवालियर स्टेटके मिनिज़ और जियालोजी डिपार्टमेंटकी ओरसे कुछ ट्रैक्ट छपे हैं—उनसे विदित हो सकता है।

जंगल-विभाग

यहांका जंगल भी बहुत उपयोगी है। इस जंगलमें बहुतसी वस्तुएं पैदा होती हैं, जैसे चिरोंजी, गोंद, नोन, शहद आदि २। इसके अतिरिक्त यहांके कई झाड़ और फूल भी उपयोगी हैं। इनसे कई प्रकारकी वस्तुएं बनती हैं। रंग आदि भी इनसे बनता है। उनमेंसे कुछ झाड़ोंका संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जाता है।

सालर—गवालियर स्टेटमें सालरका जंगल बहुत बड़ा है। सारी स्टेटमें करीब ६१०, ८०१ स्कवेर माईल्स तक इसका जंगल है। सिर्फ शिवपुर जिलेमें २८० मीलका एक जंगल है। इसके सिवाय ईसागढ़ और नरवर जिलेमें भी बहुतसे सालरके झाड़ हैं।

सालरके झाड़से माचीसकी काड़ियां बहुत अच्छी बनती हैं। इसके सिवाय दूसरे झाड़ोंकी लकड़ीसे इसकी लकड़ी जलनेमें अच्छी होती है। इसकी स्टीम भी बहुत तेज होती है।

सालरके झाड़से एक प्रकारका गोंद निकलता है। इस गोंदसे तारपीनका तेल, रोज (Rosin) और गोंद बनता है। इसकी विशेष जांच करनेपर विदित हुआ है कि इसकी औसत नीचे लिखे अनुसार पड़ती है।

तारपीन	७.५७
रोज़ा	५५.५
गोंद	३२.१

खैर—खैरके झाड़ भी गवालियर स्टेटके जंगलोंमें बहुतायतसे पाये जाते हैं। इन झाड़ोंसे कत्था बनाया जाता है। इसके कामका ठेका गायकवाड़ केमिकल कंपनी लि० को दिया गया है। यह कंपनी पोदीनेके फूल, रोशा आदि भी बनाती है। यहांका कत्था बहुत अच्छा और हमेशा बाजारोंमें मिलता है।

करधारी—ये झाड़ भी इस स्टेटके जंगलोंमें बहुत होते हैं। खासकर शिवपुरी और शिवपुर कलांके जंगलोंमें तो ये बहुत ही अधिक हैं। इस झाड़की लकड़ीका कोयला बनाया जाता है। इसका कोयला बबूल आदिकी लकड़ीसे बहुत अच्छा होता है। यहांसे आगरा, देहली आदि स्थानोंपर कोयला जाता है। यहांसे ३, ४ लाख मन कोयला बाहर दिसावरोंमें जाता है।

हमलोग करधारी, खैर आदिकी लकड़ीका उपयोग सिर्फ कोयलेहीके बनानेमें करते हैं। इससे और उपयोगी निकलनेवाली वस्तुओंको खो देते हैं। इससे हमें इन चीजोंसे विशेष लाभ नहीं हो सकता। जर्मन आदि देश इनसे कई प्रकारकी उपयोगी वस्तुएं निकालते हैं। जर्मनी और फ्रान्सोंने इन लकड़ियोंकी वस्तुओंका निम्न लिखित अनुभव प्राप्त हुआ है।

लकड़ीका नाम	जलभाग	कोयला	एसीटेट आफ लाईम	कुड वुड स्पीरिट	तारका तेल	भार
खैर	१२%	८२६	४३	११.६	११.२	७४
सालर	२३%	६३०	३३	१०.०	१०.०	८०
करधारी	१५%	७५८	१०२	१२.५	१४.१	११०

माचिसके कारखानेमें आने योग्य लकड़ी

हम ऊपर लिख चुके हैं कि सालकी लकड़ी इस उपयोगमें बहुत अच्छी आती है। इसके अतिरिक्त और भी लकड़ी इसके काममें आती है। उसका वर्णन नीचे किया जाता है।

सेमल—यह माचिसके कामकी बहुत अच्छी लकड़ी है।

गुरजन—यह हिन्दुस्थानी लकड़ियोंमें माचीसके काममें आनेवाली सबसे अच्छी लकड़ी है।

पापटी—यह लकड़ी काड़ियें एवं बक्सके भीतरी हिस्सेके बनानेके उपयोगमें आती है।

सेनाल— " "

पूला—यह लकड़ी भी काड़ियोंके बनानेमें आती है। पर इसे गहरे पानीमें डुबाकर रखना पड़ता है। फिर कुछ मुलायम होनेपर काममें आती है। तथा यह १० से १६ घंटेतक गरम पानीमें उबालनेपर भी काममें लायी जा सकती है। यह दूसरे नम्बरकी होती है।

घनरोर—काड़ियें तथा माचीसके बक्सका भीतरी हिस्सा इससे बनाया जाता है।

चिरोंजी—इस कार्यमें इसका साधारण उपयोग होता है।

लाख

गवालियर-स्टेटमें लाख पैदा करनेवाले झाड़ोंमेंसे मुख्य छोला, (पलास, खांखरा) बड़ और पीपल हैं। लाख खासकर ईसागढ़, नरवर और मालवा प्रान्तमें होती है। इन झाड़ोंके अतिरिक्त अरहरके झाड़से भी यह पैदा होती है। पर अरहरसे यह तबही तक निकलती है जब कि वह झाड़ काटा ही गया हो। हां किसी बड़े पत्तेवाले झाड़से छोटे पत्तेवालेकी अपेक्षा दूनी लाख भी मिल सकती है। इसकी बाहर देशोंमें बहुत काफी तादादमें खपत होती है।

रंगाईके काममें आनेवाली वस्तुएं

गवालियर स्टेटमें कई झाड़ ऐसे हैं जिनमेंसे किसीके पत्ते किसीके फूल, किसीकी छाल, किसीके फल, किसीकी लकड़ी आदि रंगनेके काममें आते हैं। इन चीजोंको एक दूसरेमें मिलाकर उपयोगमें लेनेसे दूसरे प्रकारका रंग बन जाता है। इसी प्रकार और २ भी मिश्रण करके उपयोगमें लानेसे कई प्रकारका रंग तैयार हो सकता है। उन झाड़ोंके उपयोगी अंगको हम नीचे बतलाते हैं।

आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ पनराजजी, सेठ अनराजजी, और सेठ रंगराजजीने किया। आप तीनोंने इस फर्मको तरक्की भी दी। आपके पश्चात् सेठ रिधराजजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप एक समझदार व्यक्ति हैं। स्थानीय गवर्नमेंट एवम् पब्लिकमें आपका अच्छा सम्मान है। ग्वालियर गवर्नमेंटकी ओरसे आपको कईवार इनाम इकराम भी मिले हैं। आप यहांकी चेम्बर आफ कामर्स व बोर्ड साहुकारानके वॉईस प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ रिधराजजीके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः सिद्धराजजी, सम्पतराजजी, सज्जनराज जी एवम् सूरजराजजी हैं। बड़े पुत्र दुकानके काममें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

लश्कर—मेसर्स पनराज अनराज—यहां वैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सरकारी काम होता है। जमींदारी का काम भी यहां होता है।

शिवपुरी—मेसर्स पनराज अनराज—यहां गल्लेका व्यापार तथा उसकी आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कोलारस, करेरा, पिछोर, सरदारपुर केण्ट मनावर, बामानेर आदि स्थानोंपर भी आपकी फर्म हैं। वहां सरकारी खजानेका काम होता है। आपकी जमींदारीके भी बहुतसे मौजे हैं।

मेसर्स विनोदीराम बालचंद

इस फर्मके मालिक झालरापाटन निवासी जैन जातिके सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है।

इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा वैंकिंग बिजिनेस होता है। यहांपर इस फर्मकी एक सुन्दर कोठी माणिकविलासके नामसे स्टेशनके पास बनी हुई है। यह फर्म कोआपरेटिव्ह सोसाइटीकी ट्रेन्नरर हैं।

मेसर्स मथुरादास जमनादास

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मेड़ताके हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष होगये। इस फर्मको सेठ मथुरादासजीने स्थापित किया था। उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। आपने व्यापारमें अच्छी उन्नति की, और अपनी फर्मको बढ़ाया। आपके पश्चात् सेठ जमनादासजी और सेठ गोकुलदासजी हुए। आपने भी अपनी फर्मका कार्य सुचारु रूपसे चलाया। वर्तमानमें सेठ वल्लभदासजी इस फर्मके मालिक हैं। आप शिक्षित एवं सज्जन पुरुष हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मथुरादास जमनादास सराफ, इस फर्मपर वैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और जवाहिरातका व्यापार होता है। पक्की आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

सालर—ग्वालियर स्टेटमें सालरका जंगल बहुत पड़ा है। सारी स्टेटमें करीब ६००, ८०० स्क्वायर माईल्स तक इसका जंगल है। सिर्फ शिवपुर जिलेमें २८० मीलका एक जंगल है। इसके सिवाय ईसागढ़ और नरवर जिलेमें भी बहुतसे सालरके झाड़ हैं।

सालरके झाड़से माचीसकी काड़ियां बहुत अच्छी बनती हैं। इसके सिवाय दूसरे झाड़ोंकी लकड़ीसे इसकी लकड़ी जलनेमें अच्छी होती है। इसकी स्टीम भी बहुत तेज होती है।

सालरके झाड़से एक प्रकारका गोंद निकलता है। इस गोंदसे तारपीनका तेल, रोजा (Rosin) और गोंद बनता है। इसकी विशेष जांच करनेपर विदित हुआ है कि इसकी औसत नीचे लिखे अनुसार पड़ती है।

तारपीन	७.५७
रोजा	५५.५
गोंद	३२.१

खैर—खैरके झाड़ भी ग्वालियर स्टेटके जंगलोंमें बहुतायतसे पाये जाते हैं। इन झाड़ोंसे कत्था बनाया जाता है। इसके कामका ठेका गायकवाड़ केमिकल कंपनी लि० को दिया गया है। यह कंपनी पोदीनेके फूल, रोशा आदि भी बनाती है। यहांका कत्था बहुत अच्छा और हमेशा बाजारोंमें मिलता है।

करधारी—ये झाड़ भी इस स्टेटके जंगलोंमें बहुत होते हैं। खासकर शिवपुरी और शिवपुर कलांके जंगलोंमें तो ये बहुत ही अधिक हैं। इस झाड़की लकड़ीका कोयला बनाया जाता है इसका कोयला बबूल आदिकी लकड़ीसे बहुत अच्छा होता है। यहांसे आगरा, देहली आदि स्थानोंपर कोयला जाता है। यहांसे ३, ४ लाख मन कोयला बाहर दिसावरोंमें जाता है।

हमलोग करधारी, खैर आदिकी लकड़ीका उपयोग सिर्फ कोयलेहीके बनानेमें करते हैं। बाकी उससे और उपयोगी निकलनेवाली वस्तुओंको खो देते हैं। इससे हमें इन चीजोंसे विशेष लाभ नहीं हो सकता। जर्मन आदि देश इनसे कई प्रकारकी उपयोगी वस्तुएं निकालते हैं। जर्मनी और प्रासगोमें इन लकड़ियोंकी वस्तुओंका निम्न लिखित अनुभव प्राप्त हुआ है।

लकड़ीका नाम	जलभाग	कोयला	एकोटेड आफ लाईम	क्रुड वड स्प्रीटम	तारका तेल	तार
खैर	१३%	८२१	५६	१६.५	११.२	७४.
सालर	२३%	६१०	३३	३०.०	१०.७	८०
करधारी	१४%	७५८	१०१	३२.५	१४.६	१३०

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स गणेशीलाल फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक सेठ फूलचंदजी हैं। आप सरावगी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान तूंगार (जयपुर राज्य) का है। आपके खानदानको यहां बसे करीब ८० वर्ष होगये होंगे। इस फर्मको सेठ गणेशीलालजीने स्थापित की। आपके हाथोंसे इसकी साधारण उन्नति हुई। सेठ गणेशीलालजी सेठ फूलचंदजीके पिता थे। सेठ फूलचन्दजीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई।

सेठ फूलचंदजीका यहांकी सरकारमें अच्छा सम्मान है। दरबारने आपको कई सर्टिफिकेट एवं सोनेके मेडिल्स दिये हैं। आप चेम्बर आफ़ कामर्स आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम कुंवर बुद्धमलजी हैं। आप भी इस समय दुकानके कामका संचालन करते हैं। सेठ फूलचंदजीने अपने हाथोंकी कमाईसे लश्करमें एक बहुत सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। इसमें सब प्रकारका आराम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—गणेशीलाल फूलचंद, नयाबाजार—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। यह दुकान यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें बहुत बड़ी और प्रतिष्ठित समझी जाती है।

लश्कर—मूलचंद बुद्धमल,—इस फर्मपर जयाजीराव काटन मिलकी ग्वालियर प्रांतके लिये सोल एजंसी है।

लश्कर—बुद्धमल केसरीमल—यहां कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

—o—

मेसर्स दाऊलाल मूलचंद

इस फर्मके मालिक डिडवानाके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ रामप्रतापजीने स्थापित की। जिस समय यह फर्म स्थापित हुई थी, उस समय आपकी साधारण थी। धीरे २ व्यापारमें उन्नति होती गई और आज

माचिसके कारखानेमें आने योग्य लकड़ी

हम ऊपर लिख चुके हैं कि सालरकी लकड़ी इस उपयोगमें बहुत अच्छी आती है। इसके अतिरिक्त और भी लकड़ी इसके काममें आती है। उसका वर्णन नीचे किया जाता है।

सेमल—यह माचिसके कामकी बहुत अच्छी लकड़ी है।

गुरमन—यह हिन्दुस्थानी लकड़ियोंमें माचीसके काममें आनेवाली सबसे अच्छी लकड़ी है।

पापड़ी—यह लकड़ी काड़ियें एवं बक्सके भीतरी हिस्सेके बनानेके उपयोगमें आती है।

सेमल— " "

धूरा—यह लकड़ी भी काड़ियोंके बनानेमें आती है। पर इसे गहरे पानीमें डुबाकर रखना पड़ता है। फिर कुछ मुलायम होनेपर काममें आती है। तथा यह १० से १६ घंटेतक गरम पानीमें उबालनेपर भी काममें लायी जा सकती है। यह दूसरे नम्बरकी होती है।

धमरोर—काड़ियें तथा माचीसके बक्सका भीतरी हिस्सा इससे बनाया जाता है।

चिरोंजी—इस कार्यमें इसका साधारण उपयोग होता है।

लाख

ग्वालियर–स्टेटमें लाख पैदा करनेवाले झाड़ोंमेंसे मुख्य छोला, (पलास, खांखरा) बड़ और पीपल हैं। लाख खासकर ईसागढ़, नरवर और मालवा प्रान्तमें होती है। इन झाड़ोंके अतिरिक्त अरहरके झाड़से भी यह पैदा होती है। पर अरहरसे यह तभी तक निकलती है जब कि वह झाड़ काटा ही गया हो। हां किसी बड़े पत्तेवाले झाड़से छोटे पत्तेवालेकी अपेक्षा दूनी लाख भी मिल सकती है। इसकी बाहर देशोंमें बहुत काफी तादादमें खपत होती है।

रंगाईके काममें आनेवाली वस्तुएं

ग्वालियर स्टेटमें कई झाड़ ऐसे हैं जिनमेंसे किसीके पत्ते किसीके फूल, किसीकी छाल, किसीके फल, किसीकी लकड़ी आदि रंगनेके काममें आते हैं। इन चीजोंको एक दूसरेमें मिलाकर उपयोगमें लेनेसे दूसरे प्रकारका रंग बन जाता है। इसी प्रकार और २ भी मिश्रण करके उपयोगमें लानेसे कई प्रकारका रंग तैयार हो सकता है। इन झाड़ोंके उपयोगी अंगको हम नीचे बतलाते हैं।

पौधा १० फुट ऊंचा हो जाता है तब काट लिया जाता है और उसकी गांठे बांध ली जाती हैं। पश्चात् ये गांठें पानीमें समूची डुबो दी जाती हैं और उनपर मिट्टीके ढेले रख दिये जाते हैं जिससे गांठें पानीमें समुचित डूबी रहें। इस प्रकार दोसे तीन सप्ताहतक गांठे पानीमें पड़ी रहती हैं। इससे उसका रेशा नर्म पड़ जाता है और सुविधासे अलग कर लिया जाता है। इस प्रणालीके किये जानेमें गांठोंपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि ये आवश्यकतासे अधिक पानीमें न रहें क्योंकि ऐसा होनेसे रेशा कमज़ोर पड़ जाता है। रेशोंको अलग करनेकी कई विधियां हैं पर अधिकतर कृषक कमरतक पानीमें खड़ा हो जाता है और हाथमें एक गुच्छा पकड़कर जड़के भागको जोरसे हिलाता है जिससे रेशा ढीला पड़ जाता है। रेशा अलग कर लेनेपर वह धोकर धूपमें सुखाया जाता है। तब यह बाजारमें जाने योग्य हो जाता है।

सन् १८७४ में इसकी खेतीका अनुमान पैदावारके हिसाबसे ८½ लाख एकड़ भूमिका था। वही बढ़ते बढ़ते सन १९१२-१३ का पंचवर्षीय औसत ३१½ लाख एकड़ हो गया। युद्धके पूर्व सन् १९१३-१४ में इसकी खेती ३३,५२,२०० एकड़ भूमिमें हुई। इसके बाद इसकी खेतीमें कमी कर दी गई जिसके कई आर्थिक कारण हैं। महायुद्धके समयमें जूटके बने हुए पदार्थोंके दाम कच्चे मालसे बेहिसाब ऊंचे रहे और उस समय चांवलका भाव बहुत तेज रहा। इसलिए जूट बोये जाने वाली उस भूमिमें—जिसमें चांवल बोया जा सकता था—कृषकोंने जूटको बंदकर चांवलकी खेती करना आरम्भ कर दिया।

पाटके दाम

पाटकी बढ़ती हुई मांगका पता इसके बढ़े हुए भावोंसे चल जाता है। सन १८५१ में ४०० रतलकी एक गांठका दाम १४½ रुपया था वही सन १९०६ में ५७½ रुपया हो गया। सन १९०७ में भाव घटकर ५०½ रुपया हो गया था। सन १९०८ तथा १९०९ में ३९ और ३२½ रु० गांठ ही रह गया था। सन १९१२ में थोकमालका दाम औसत ५४½ के और सन १९१३ में ७१ रु० रहा यहांतक कि सन १९१४ के अप्रेल महीनेमें भाव ८६½ अर्थात सन १८८०-८४ के भावोंसे तिगुना हो गया। युद्धकी घोषणा होनेपर भाव केवल ऊंचे रुक ही नहीं गया प्रत्युत वह नीचे गिर गया। सन् १९१३ के महंगे दामों एवं कृषिकी सुविधाजनक स्थितिके कारण दूसरे साल अर्थात सन् १९१४ में बड़ीभारी फसल हुई। उस वर्ष साधारण वर्षकी खपतकी अपेक्षा २० लाख गांठें अधिक हुईं। ऐसी भारी पैदावारके कारण भाव घटे बिना नहीं रहता और फिर उधर इस मालके प्रधान खरीददार जर्मनी और आस्ट्रेलियाके बाजार ही इसके लिए बंद हो गये। अन्य देशोंको मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको भी इसके निर्यातमें बाधा पहुंची और इन सब कारणोंसे सन् १९१४ के दिसंबरमें भाव ३१ रुपया गांठ ही रह गया। मार्च १९१५ में दाम ४१ रुपया हो गया पर इससे कृषकोंको कुछ सहारा नहीं मिला।

पाटकी खेती

इसकी खेतीका ठेका मानों बंगाल और आसामने ले रखा है, गंगा और ब्रह्मपुत्रकी तराईमें ज्यादातर इसकी खेती होती है। थोड़ीसी खेती बिहार उड़ीसामें भी होती है। जूटकी फसलका ९० सैकड़ा भाग बंगाल और आसाममें होता है और इसलिए जूटसे पदार्थ बनानेवाले स्थानोंको कच्चे मालकी प्राप्तिके लिए यहींपर निर्भर रहना पड़ता है। इसकी थोड़ीसी पैदावार मद्रास और बंबईके इलाकेमें भी होती है जिसे विमालीपटम जूट कहते हैं। खोज करनेपर इस बातका पता चलता है कि मलाबार जिलेमें और उस तरफकी नदियोंकी तराईमें भी जूटकी खेतीके लायक जमीन है लेकिन अच्छी जमीन और गहरी बरसातकी बातके अतिरिक्त बंगालके सदृश मजूरी सस्ती न होनेके कारण वहांपर समुचित खेती असम्भव सिद्ध हो चुकी है। अन्य देशोंने भी इसकी खेतीका प्रयत्न किया और वह अभीतक जारी भी है पर किसीको सफलता नहीं मिली। चीन और फारमूसाके प्रान्तोंमें इसकी खेतीमें कुछ सफलता हुई है पर वहांकी पैदावार बंगालसे तभी मुकाबिला कर सकती है जब इन बहुत तेज हों। इसके अतिरिक्त वहांका जूट बंगालके सदृश बढ़िया भी नहीं होता।

इसके पौदेको चिकनी जमीन बालू मिली हुई चिकनी मट्टी जिसमें जड़ आसानीसे पैठ सके बहुत अनुकूल रहती है। बंगाल और आसामकी भूमि इसकी खेतीके लिए बड़े मजेकी है क्योंकि नदियोंकी बही हुई रेतकी भूमिके कारण कृषकको बिना अधिक खादके खेती करनेकी सुविधा रहती है। यह ऊँची और सूखी जमीनमें एवं तर और नीची जमीनमें अच्छा बढ़ता है। लेकिन किसी दशामें जूट अच्छा नहीं होता क्योंकि पौधेका नीचेका हिस्सा बहुत दब जाता है। इसको बढ़नेमें गर्मी बहुत सहायता पहुंचाती है। इसको थोड़े थोड़े और फिर इसके बादमें गहरी वर्षाकी भी आवश्यकता होती है। पौधा एकबार लग जानेपर फिर इसे उतनी आवश्यकता नहीं रहती और यह १० १२ फुटतक लंबा बढ़ता है। यह मार्चसे लेकर मई महीनेतक बोया जाता है और फसल जुलाईसे अक्टूबरतक कटती है। जिससे सितम्बर इसका बाजार रहता है। जितनी भूमिमें इसकी बोअनी हुई इस बातका सरकारी पूर्वानुमान अगस्त महीनेमें प्रगट हो जाता है और भूमिकी गणना एवं फसलके अनुमानका अन्तिम लेखा सितंबर महिनेमें निकल जाता है। इसकी खेती २५-३० लाख एकड़ भूमिमें होती है जिसपर २०-३० लाख किसान अपनी जीविकाके लिए निर्भर रहते हैं। बढ़िया पैदावारमें औसत एक एकड़ पीछे अनुमान १५ मन जूट (रेशे) की बैठती है।

इसके लिए बोनेके समय—अप्रैल मई महीनोंमें—थोड़ी थोड़ी वर्षाका होना बड़ा लाभदायक होता है। क्योंकि इसकी फसलकी पैदावार उचित जल वायुपर बहुत निर्भर करती है। अब इसका

मोरेना—बिहारीलाल जमनादास—यहां गल्ला और घीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

डाबरा—(गवालियर) बिहारीलाल जमनालाल यहां भी गल्ला तथा घीका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक नारनोलके निवासी हैं। आपको यहां आये करीब १२५ वर्ष हुए होंगे। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ चुन्नीलालजीने स्थापित किया। पहले यह फर्म मित्रसेन पोकरमलके नामसे व्यवसाय करती थी। इस फर्मके प्रथम पुरुष सेठ मित्रसेनजी महाराज सिंधियाके साथ लड़ाईमें भरती होकर नारनोलसे यहां आये थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रहलाददासजी हैं। आपके पिता सेठ फूलचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आपने इसकी और भी स्थानोंपर ब्रांचेस खोलीं। सेठ प्रहलाददासजी बड़े मिलनसार सज्जन हैं। आपने गवालियर गवर्नमेन्टके साथ अच्छा ताल्लुक कर रखा है। सरकारने आपको गवालियर गिर्दका खजांची नियुक्त किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर हे० आ०—मे० मित्रसेन रामचन्द्र, दौलतगंज—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

लश्कर—मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र, हुजुरातमंडी—यहां गल्ला और शक्करका घरू तथा आढ़त दोनोंका व्यापार होता है।

शिवपुरकलां (गवालियर) मित्रसेन रामचन्द्र—यहां गल्लेकी आढ़तका कार्य होता है।

भिंड (गवालियर) शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी आढ़तका व्यापार होता है। इसमें आपका साझा है। इस फर्मपर मुनीम ग्यारसीलालजी काम करते हैं।

मेसर्स लेखराज जमनादास

इस फर्मके मालिक गवालियरहीके रहनेवाले हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। लश्करमें आपकी फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ लेखराजजी हैं। आपके पुत्र सेठ जमनादासजीने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। इसकी और स्थानोंमें भी शाखाएं खोलीं। आपके इस समय दो पुत्र हैं। सेठ सांवलदासजी और सेठ छोटेलालजी। आप दोनों ही वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हैं। आप यहांकी म्युनिसिपेल्टी तथा चेम्बर आफ कामर्सके मेम्बर हैं।

(बिरदीचंद रामदत्त) लश्कर

श्री० सेठ प्रह्लाददासजी (निहालचंद रामचंद्र)

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स टेकराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (ग्वालियर)—मेसर्स टेकराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिल्हनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (ग्वालियर)—मेसर्स टेकराज जमनादास, यहां भी तिल्हनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

ग्वालियर—टेकराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें ग्वालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये ग्वालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। उन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको ग्वालियर सरकारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इसफर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी, सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू२ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीहीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार धार्मिकताकी ओर विशेष रूपसे झुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये। इस समय आप सारे भारत वर्षमें भ्रमण कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

श्री गुलाबचन्दजी डागा (रामलाल हजारीमल) मुरार

श्री ओंकारलालजी (मोहनलाल शिवप्रताप) मुरार

श्री (धनरूपाल रामचन्द्र) लश्कर

पं० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई (पंटोसारा) लश्कर

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स टेकराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (गवालियर)—मेसर्स टेकराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिलहनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (गवालियर)—मेसर्स टेकराज जमनादास, यहां भी तिलहनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

गवालियर—टेकराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें गवालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये गवालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। इन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको गवालियर सरकारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इसफर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी,सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू२ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीहीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार धार्मिकताकी ओर विशेष रूपसे झुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये। इस समय आप सारे भारत वर्षमें भ्रमण कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

श्री गुलाबचन्दजी डोसी (गमनलाल हजारीमल) मुगर

श्रीमोंहनलालजी (मोहनलाल शिवरतन) :

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स लेखराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिल्हनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां भी तिल्हनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

गवालियर—लेखराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें गवालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये गवालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। उन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको गवालियर दरबारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इस फर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी, सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र [illegible] देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू२ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीहीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार पारमार्थिक [illegible] [illegible] चुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये [illegible] वर्षमें भजन कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

भिखारीलाल जमनादास
माणिकचन्द तोताराम
मित्रसेन रामचन्द्र
यूसुफ मक्का
लेखराज जमनादास
हरनारायण हरविलास
हाजीकासम रहमतुल्ला

कपड़ेके व्यापारी

खूबचन्द गंगाराम
गणेशीलाल फूलचंद
छिद्दीलाल रघुवरदयाल
देवकरण बलदेव
धन्नामल राजाराम
पन्नालाल जगन्नाथ
बद्रीदास रामप्रसाद
विनोद मिल्स क्लाथ शाप
मोहनलाल नक्सीराम
मक्खनलाल गिरवरलाल
रामगोपाल जानकीदास
रामबक्स रामजीवन
लादूराम गियासीलाल
सिविल एण्ड मिलिटरी स्टोअर

चन्देरी मालके व्यापारी

हीरालाल कन्हैयालाल
दाऊलाल मूलचंद

घीके व्यापारी

जयनारायण इन्द्रजीत
दौलतराम कुन्दनमल

वालचंद प्रभुदयाल
बिहारीलाल जमनादास
भूरामल हरदास
मोतीराम रामचन्द्र

शक्कर व किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम गणेशराम
चेतराम हरकरन
तोलाराम मानिकचंद
द्वारकादास गणेशराम
दीनानाथ ग्यारसीलाल
फकीरचन्द गणेशराम
मुरलीधर बिरदीचंद
रामचन्द्र फून्दीलाल
लादूराम जगन्नाथ
लेखराज जमनादास
विक्रम नानकराम
शिवनारायण शंकरलाल
हरनारायण हरविलास
हरसहायमल बहादुरमल

बर्तनोंके व्यापारी

गुलाबचंद द्वारकादास
दी ग्वालियर मेटल वर्क्स
गोर्धनदास राधाकिशन
चन्दनमल राधाकिशन
दी जार्ज जयाजीराव मेटल वर्क्स
मनीराम बद्रीदास
रामस्वरूप दाऊलाल
हीरालाल कस्तूरचन्द

श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाईके संचालन छोड़नेके पश्चात् ही फोटोग्राफीके साथही साथ सन् १६०८ में ब्लाक बनानेका कारखाना एवम् सन् १७२३ में आर्ट प्रिंटिङ्ग प्रेसके नामसे एक प्रेस खोला गया। ये दोनों विभाग इस समयतक बराबर अपना कार्य कर रहे हैं। फोटोग्राफी और ब्लाकके विभागका संचालन श्री० माधव लक्ष्मण देसाई और प्रेस विभागका संचालन श्री नारायण लक्ष्मण देसाई कर रहे हैं। आप ग्वालियर दरबारके खास फोटोग्राफर हैं।

आपके कारखानेमें छपाई, ब्लाक बनवाई और फोटोग्राफीका काम बहुत सुन्दर होता है। ग्वालियरमें इस व्यवसायमें यह फर्म सबसे बड़ी और सबसे पुरानी है।

बैंकर्स

उदयराम रामलाल
चिरंजीलाल रामरतन
छेदीलाल चतुरभुज
नरसिंहदास हरप्रसाद
नन्दराम नारायणदास
नारायणदास लक्ष्मणदास
पन्नाराज धनराज
छज्जू बनारसीदास
भिखारीराम बलचंद
भूधरराम बाबूराम
मथुरादास मनन्दास
मूलचन्द नेमीचन्द
मनसुख शालिग्राम
मनराज रामदेव
मोतीलाल कुन्दन
धनसुख टेकचन्द
हरदेव चन्दन

चांदी सोनेके व्यापारी

कजोड़ीमल मूलचन्द
भीमराज महादेव
रामप्रसाद लालचन्द
रामचन्द्र फूलचन्द
सुगनचन्द कन्हैयालाल
सीताराम बलदेव
हीरालाल मोतीलाल
हजारीमल हुकुमचन्द
हमीरमल छगनमल

गल्लेके व्यापारी

किशनचन्द रामबक्ष
कन्हैयालाल हजारीलाल
गंगाराम शिवनाथ
गणेशराम हिम्मतराम
गोविन्दराम गणेशराम
गोरीमल रामचन्द्र
देवराम मुन्नालाल

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स लेखराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिलहनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां भी तिलहनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

गवालियर—लेखराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें गवालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये गवालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। उन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको गवालियर सरकारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इसफर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी, सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू२ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार धार्मिकताकी ओर विशेष रहने झुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये। इस समय आप [illegible] वर्षमें भ्रमण कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

मध्यभा

बालचंद प्रभुदयाल
बिहारीलाल जमनादास
भूरामल हरदास
मोतीराम रामचन्द्र

शक्कर व किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम गणेशराम
खेतराम हरकरन
तोलाराम मानिकचंद
द्वारकादास गणेशराम
दीनानाथ ग्यारसीलाल
फकीरचन्द गणेशराम
मुरलीधर बिरदीचंद
रामचन्द्र फून्दीलाल
लादूराम जगन्नाथ
लेखराज जमनादास
विक्रम नानकराम
शिवनारायण शंकरलाल
हरनारायण हरविलास
हरसहायमल बहादुरमल

वर्तनोंके व्यापारी

गुलाबचंद द्वारकादास
दी ग्वालियर मेटल वर्क्स
गोर्धनदास राधाकिशन
चन्दनमल राधाकिशन
दी जार्ज जयाजीराव मेटल वर्क्स
मनीराम बद्रीदास
रामस्वरूप दाऊलाल
हीरालाल कस्तूरचन्द

श्री गुलाबचन्दजी डागा (रामलाल हजारीमल) सुगर

श्रीओंकारमलजी (मोहनलाल

(घनश्याम रामचन्द्र)

पं० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई (

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स लेखराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (ग्वालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिल्हनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (ग्वालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां भी तिल्हनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

ग्वालियर—लेखराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें ग्वालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये ग्वालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। उन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको ग्वालियर सरकारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इसफर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी, सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू २ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीहीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार धार्मिकताकी ओर विशेष रूपसे झुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये। इस समय आप सारे भारत वर्षमें भ्रमण कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

रतलाम

यह स्थान बी० बी० सी० आई० रेलवेकी छोटी और बड़ी लाइनका जंकशन है। यहां रेलवेका बहुत बड़ा लोको स्टाफ है। रेलवे स्टाफके कारण एवं प्रतिदिन हजारों यात्रियोंके आमद रफ्तके कारण यह स्थान हमेशा बस्तीसे परिपूर्ण रहता है।

रतलाम स्टेशनसे करीब १॥ माइलकी दूरीपर रतलाम शहर है। इन्दौर, ग्वालियरकी तरह यह भी एक छोटा देशी राज्य है। इस राज्यकी नींव जोधपुर नरेश राठोड़वंशी राजा उदयसिंहजी (महाराजा) के पौत्र तथा महेश दासजीके पुत्र राजा रतनसिंहजीने डाली। कहते हैं कि इस शहरको राजा रतनसिंहजीने संवत् १७११में बसाया, परन्तु आईने अकबरीमें रतलामका नाम लिखा होनेसे प्रमाणित होता है, कि यह स्थान इसके भी पूर्व था। यह हो सकता है, कि महाराज रतनसिंहजीने इसकी विशेष तरक्की की हो। इस राज्यके वर्तमान अधिपति हिज हाईनेस महाराज सज्जनसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० हैं। आपको पोलो खेलनेका बहुत शौक है। योरोपीय महा-समरके समय आप दल बल सहित फ्रांसके रणक्षेत्रमें पधारे थे। इस राज्यको १५ तोपोंकी सलामी है।

फेक्ट्रीज़ एण्ड इण्डस्ट्रीज़

रतलामकी कारीगरी बहुत प्रसिद्ध है। यहांके तांबे और पीतलके बर्तन, लच्छे, रंगीन कपड़े आदि वस्तुएं विशेष उत्तम होती हैं। आसपासके शहरोंकी अपेक्षा यहां बर्तनोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। चांदी सोनेका व्यापार भी इस स्थानपर अच्छा होता है।
इस शहरमें नीचे लिखी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

रतलाम गुजरात जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
वर्द्धमान केशरीमल जीनिंग फेक्टरी
श्रीसज्जन जीनिंग फेक्टरी
रामदेव बल्देव जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
श्रीव्यापार उत्तेजक जीनिंग फेक्टरी

पौधा १० फुट ऊँचा हो जाता है तब काट लिया जाता है और उसकी गांठे बांध ली जाती हैं। पश्चात् ये गांठें पानीमें समूची डुबो दी जाती हैं और उनपर मिट्टीके ढेले रख दिये जाते हैं जिससे गांठें पानीमें समुचित डूबी रहें। इस प्रकार दोसे तीन सप्ताहतक गांठे पानीमें पड़ी रहती हैं। इससे उसका रेशा नर्म पड़ जाता है और सुविधासे अलग कर लिया जाता है। इस प्रणालीके किये जानेमें गांठोंपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि ये आवश्यकतासे अधिक पानीमें न रहें क्योंकि ऐसा होनेसे रेशा कमज़ोर पड़ जाता है। रेशेको अलग करनेकी कई विधियां हैं पर अधिकतर कृषक कमरतक पानीमें खड़ा हो जाता है और हाथमें एक गुच्छा पकड़कर जड़के भागको जोरसे हिलाता है जिससे रेशा ढीला पड़ जाता है। रेशा अलग कर लेनेपर वह धोकर धूपमें सुखाया जाता है। तब यह बाजारमें जाने योग्य हो जाता है।

सन् १८७४ में इसकी खेतीका अनुमान पैदावारके हिसाबसे ८½ लाख एकड़ भूमिका था। वही बढ़ते बढ़ते सन १९१२-१३ का पंचवर्षीय औसत ३१½ लाख एकड़ हो गया। युद्धके पूर्व सन् १९१३-१४ में इसकी खेती ३३,५२,२०० एकड़ भूमिमें हुई। इसके बाद इसकी खेतीमें कमी कर दी गई जिसके कई आर्थिक कारण हैं। महायुद्धके समयमें जूटके बने हुए पदार्थोंके दाम कच्चे मालसे बेहिसाब ऊँचे रहे और उस समय चांवलका भाव बहुत तेज रहा। इसलिए जूट बोये जाने वाली उस भूमिमें—जिसमें चांवल बोया जा सकता था—कृषकोंने जूटको बंदकर चांवलकी खेती करना आरम्भ कर दिया।

पाटके दाम

पाटकी बढ़ती हुई मांगका पता इसके बढ़े हुए भावोंसे चल जाता है। सन १८५१ में ४०० रतलकी एक गांठका दाम १४½ रुपया था वही सन १९०६ में ५७½ रुपया हो गया। सन १९०७ में भाव घटकर ५०½ रुपया हो गया था। सन १९०८ तथा १९०९ में ३६ और ३२½ रु० गांठ ही रह गया था। सन १९१२ में थोकमालका दाम औसत ५४½ के और सन १९१३ में ७१ रु० रहा यहांतक कि सन १९१४ के अप्रेल महीनेमें भाव ८६½ अर्थात सन १८८०-८४ के भावोंसे तिगुना हो गया। युद्धकी घोषणा होनेपर भाव केवल ऊँचे रुक ही नहीं गया प्रत्युत वह नीचे गिर गया। सन् १९१३ के महंगे दामों एवं कृषिकी सुविधाजनक स्थितिके कारण दूसरे साल अर्थात सन् १९१४ में बड़ीभारी फसल हुई। उस वर्ष साधारण वर्षकी खपतकी अपेक्षा २० लाख गांठें अधिक हुईं। ऐसी भारी पैदावारके कारण भाव घटे बिना नहीं रहता और फिर उधर इस मालके प्रधान खरीददार जर्मनी और आस्ट्रेलियाके बाजार ही इसके लिए बंद हो गये। अन्य देशोंको मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको भी इसके निर्यातमें बाधा पहुँची और इन सब कारणोंसे सन १९१४ के दिसंबरमें भाव ३१ रुपया गांठ ही रह गया। मार्च १९१५ में दाम ४१ रुपया हो गया पर इससे कृषकोंको कुछ सहारा नहीं मिला।

पाटकी खेती

इसकी खेतीका ठेका मानों बंगाल और आसामने ले रखा है, गंगा और ब्रह्मपुत्रकी तराईमें खासकर इसकी खेती होती है। थोड़ीसी खेती बिहार उड़ीसामें भी होती है। जूटकी फसलका ६० सैकड़ा मध्य बंगाल और आसाममें होता है और इसलिए जूटसे पदार्थ बनानेवाले स्थानोंको कच्चे मालकी प्राप्तिके लिए यहींपर निर्भर रहना पड़ता है। इसकी थोड़ीसी पैदावार मद्रास और बंबईके इलाकोंमें भी होती है जिसे बिमालीपटम जूट कहते हैं। खोज करनेपर इस बातका पता चलता है कि मलाबार जिलेमें और उस तरफकी नदियोंकी तराईमें भी जूटकी खेतीके लायक जमीन है लेकिन अच्छी जाति और गहरी उपजकी बातके अतिरिक्त बंगालके सदृश मजूरी सस्ती न होनेके कारण वहांपर समुचित खेती असम्भव सिद्ध हो चुकी है। अन्य देशोंने भी इसकी खेतीका प्रयत्न किया और वह अभीतक जारी भी है पर किसीको सफलता नहीं मिली। चीन और फारमूसाके प्रान्तोंमें इसकी खेतीमें कुछ सफलता हुई है पर वहांकी पैदावार बंगालसे तभी मुकाबिला कर सकती है जब दाम बहुत तेज हों। इसके अतिरिक्त वहांका जूट बंगालके सदृश बढ़िया भी नहीं होता।

इसके पौधेको चिकनी जमीन बालू मिली हुई चिकनी मट्टी जिसमें जड़ आसानीसे पैठजाय बड़ी उपयोगी रहती है। बंगाल और आसामकी भूमि इसकी खेतीके लिए बड़े मजेकी है क्योंकि नदियोंकी बही हुई रेतकी भूमिके कारण कृषकको बिना अधिक खादके खेती करनेकी सुविधा रहती है। यह ऊँची और सूखी जमीनमें एवं तर और नीची जमीनमें अच्छा पड़ता है। लेकिन पिछली दशामें जूट अच्छा नहीं होता क्योंकि पौधेका नीचेका हिस्सा बहुत डूब जाता है। इसकी फसलको बढ़नेमें गर्मी बहुत सहायता पहुंचाती है। इसको थोड़े समय पहले और फिर उसके बादमें गहरी वर्षाकी भी आवश्यकता होती है। पौधा एकबार लग जानेपर विशेष लक्ष्य रखनेकी आवश्यकता नहीं रहती और वह १० १२ फुटतक लंबा बढ़ता है। यह मार्चसे लेकर मई महीनेतक बोया जाता है और फसल जुलाईसे अक्टूबरतक उतरती है। सितंबरसे दिसंबरतक इसका बाजार रहता है। कितनी भूमिमें इसकी बोअनी हुई इस बातका सरकारी एस्टीमेट प्रतिवर्ष जुलाई महीनेमें प्रगट हो जाता है और भूमिकी गणना एवं फसलके अनुमानका अंतिम लेखा सितंबर महिनेमें निकल जाता है। इसकी खेती २५३० लाख एकड़ भूमिमें होती है जिसपर २०-३० लाख किसान अपनी जीविकाके लिए निर्भर रहते हैं। वार्षिक पैदावारकी औसत एक एकड़ पीछे अनुमान १५ मन जूट (रेशे) की बैठती है।

इसके लिए बोनेके समय—अप्रेल मई महीनोंमें—थोड़ी थोड़ी वर्षाका होना बड़ा लाभदायक होता है। वास्तवमें इसकी फसलकी पैदावार उचित जल वायुपर बहुत निर्भर करती है। जब इसका

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स गणेशदास सोभागमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी कोटावाले हैं। आपका पूरा परिचय कोटेमें चित्रों सहित दिया गया है। रतलाम दूकानपर साहुकारी लेनदेन हुंडी चिट्ठी तथा रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स धनराज केशरीमल

इस फर्मके मालिक खास निवासी मालपुरा (जयपुर राज्य) के हैं। इस दूकानको सेठ धनराजजीने स्थापित किया, तथा इसके व्यवसायको आपने, एवं आपके पुत्र सेठ केशरीमलजीने तरक्की दी। सेठ केशरीमलजी और उनके पुत्र श्री आनंदीलालजी अच्छे विचारोंके सज्जन हैं। देशी वस्त्रोंके प्रचारमें आपने बड़ा भाग लिया है। कुछ समय पूर्व आपने रतलाममें सुदर्शन चक्र कार्यालय नामक देशी कपड़ा बनानेका एक कारखाना भी खोला था।

सेठ केशरीमलजीके २ भाई और २ पुत्र हैं। बड़े भाईका नाम श्री पन्नालालजी तथा छोटेका नाम श्री रामनारायणजी हैं। तथा पुत्रोंके नाम श्री आनंदीलालजी एवं श्री रघुनन्दन लालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) रतलाम—धनराज केशरीमल—इस दूकानपर रूई, आढ़त तथा हुंडीचिट्ठी और साहुकारी लेनदेनका काम होता है।

(२) बम्बई—केशरीमल आनंदीलाल कालबादेवी T. A. Ratanpuri इस दुकानपर आढ़त, दलाली, जवाहरात, कॉटन तथा सट्टेका काम होता है।

(३) उज्जैन—आनंदीलाल सुखानंदन—T. A. Anand यहांपर आढ़त तथा रुई. कपासका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी रतलाममें आनंदसागर जीनिंग फेक्टरी, मन्नीमें आनंदीलाल सुखनंदन जीनिंग फेक्टरी और राचपेटमें आनंदीलाल सुखनन्दन जीनिंग फ़ेक्टरी है। उज्जैनमें आपकी आनन्द सिनेमा.कम्पनी है।

मऊ-केम्प

मऊ-केम्प बी० बी० सी० आई० के आर० एम० आर० डिवीजन का बहुत बड़ा स्टेशन है। यह स्थान अंग्रेजों की छावनी है। यहां की बस्ती बहुत साफ सुथरी एवं खुली हुई है। इस छावनीमें फेन्सी कपड़ेके व्यापारी, कंट्राक्टर्स, जनरल मरचेंट्स एवं अंग्रेजोंके उपयोगमें आनेवाले सामान रखनेवाले व्यापारियोंकी दुकानें हैं। यह शहर इन्दौरसे १४ मीलकी दूरी पर है। इन्दौर यहांके लिये स्टेशनसे नियमित ट्रेनोंके अतिरिक्त ६ लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। यहां कई डेरी फार्म हैं। इसलिये आसपासका दूध दही सब यहां खींचकर चला आता है। यह बृटिश छावनी चारों ओर होल्कर स्टेटसे घिरी हुई है। यहांके व्यवसायियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स हरकिशन रामलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाना (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (सज्जन) सज्जन हैं। इस दुकानको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्व प्रथम सेठ हरकिशनजीने इस दुकानके कामको शुरू किया था। आपके बाद क्रमशः सेठ रामलालजी, सेठ [illegible], सेठ [illegible] तथा सेठ नारायणजीने इस दुकानके कामको सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक [illegible] रामजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मऊ—हरकिशन रामलाल—यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, कपड़ेका व्यापार और [illegible] काम होता है।

२ बम्बई—नारायण [illegible] T. A. [illegible] यहां बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

३ इन्दौर—हनुमानदास नारायण, सियागंज T. A. [illegible] यहां [illegible] हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

क्लाथ मरचेण्ट्स

मेसर्स मूलचन्द एण्ड संस

इस फर्मके मालिक सेठ छोटूलालजी १०० वर्ष पूर्व टोंक राज्यसे यहां आये थे। आपके बाद सेठ मूलचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष बढ़ाया। सेठ मूलचन्दजीके कोई संतान न होनेसे उनके यहां जवरचन्दजी, जयपुर स्टेटके जामडोजी नामक गांवसे संवत् १९३५ में गोद लाये गये। आप ही इस फर्मके वर्तमान संचालक हैं। श्रीजवरचंदजीके यहां गोद आनेके बाद इनके २ भाई और हुए थे जिनका देहावसान हो गया है। वर्तमानमें उन दोनों भाइयोंके पुत्र अपना स्वतंत्र व्यवसाय कर रहे हैं।

सेठ जवरचंदजीने कई देशी राज्योंसे अपना व्यवसायिक सम्बन्ध स्थापित किया है। इस समय राजपूताना, सेंट्रल इण्डिया, बुन्देल खण्ड, और बघेल खंडके कई रईसोंको आप बड़ी तादादमें कपड़ा सप्लाई करते हैं। आपकी ओरसे एक जैन चैत्यालय मऊ में बना हुआ है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) महूकेम्प—मूलचन्द एण्ड सन्स, मेनस्ट्रीट—इस फर्मपर फेंसी कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा साथमें टेलेरिंग डिपार्टमेंट भी है।

(२) मऊकेम्प—छोटूलाल मूलचन्द-मेनस्ट्रीट, यहां भी उपरोक्त व्यवसाय होता है।

कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स मदनलाल शिवबख्श

इस फर्मके मालिक करीब १०० वर्ष पूर्व नागौर (मारवाड़) से आये थे। सेठ नारायण-जीने इस दुकानके कारोबारको शुरू किया। आपके बाद क्रमशः लछमनदासजी, शिवबख्शजी और मदनलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ शिवबख्शजीके पुत्र श्री मदन-

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

दि यूनिटी एम्पायर सर्जिकल एण्ड मेडिकल स्टोर्स
विनसेन्ट एण्ड को० फन्टूनमेंट गार्डन
मोहन मेडिकल हॉल

मेन्यू फेक्चरर्स

शुकेजा एण्ड को० इम्पोर्टर्स एण्ड स्पोर्ट्स, मैनुफेक्चरर
वेस्ट एण्ड स्पोर्ट हाउस

मोटरकार डीलर्स

मोरीरवां एण्ड को० फोर्ड मोटर रिपेयर एण्ड सप्लायर
शापूरजी आर०मोटर साइकल एण्ड मोटर पार्ट्स

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर्स

हरजान हाइसिंग एण्ड को०
डल्वी एण्ड को०
मेरा एण्ड को०
भंडारे एण्ड को०

गवालियर-स्टेट

GWALIOR-STATE

श्री० आत्मारामजी लालावत, मरु

मंदसोर

आर० एम० आर० लाइनके खंडवा अजमेर सेक्शनके मध्य नीमचके पास यह शहर बसा हुआ है। यह स्थान रतलामसे ८२ मील, सीतामऊसे २१ मील नीमचसे ३१ मील और प्रतापगढ़से २० मील है। मंदसोर, ग्वालियर स्टेटका एक अच्छा आबाद परगना है। इसके चारों ओर उदयपुर, इंदौर, झालावाड़, सीतामऊ, प्रतापगढ़, जावरा आदि स्टेटोंके आ जानेसे यहांके व्यापारियोंका संबंध इस शहरसे रहता है। मन्दसोर जिलेकी मनुष्य संख्या २०३७३४८ है। इस जिलेमें १८ जीनिंग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जिनमें सन् १९२१-२२में ६१४८११ मन कपास लोढ़ा गया था, जिसके १६६७१ गांठे बंधी थी। मन्दसोर जिलेकी भूमि अफीमकी पैदावारके लिये बहुत अच्छी है।

मन्दसोर शहर—यह बहुत पुरानी बस्ती है। जब बी० बी० सी० आईकी (रतलाम मथुरा ब्रांच नहीं खुली थी उस समय करीब पचास पचास कोस दूरके व्यापारी यहांसे गाड़ियों और ऊंटोंपर माल भरकर ले जाते थे। इस समय भी इस शहरमें किराना, कपड़ा, शक्कर, कैरोसिन तेल, तथा रंगीन मालका अच्छा व्यवसाय होता है। सन् १९२५में मन्दसोर शहरमें आने और जानेवाले मालका विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल		जानेवाला माल	
चावल	६३५४ मन	गेहूं	८१६ मन
गुड़	१२५२२ मन	जुवार	१६८२६ मन
शक्कर	२५१२७ मन	चना	४३१६ मन
तेल घासलेट	३०००० पीपे	अलसी	१३८१ मन
रुई	२०८० मन	कपासिया	२११८४ मन
खोपरा	२२१७ मन	तिल्लीका तेल	६०५ मन
तांबा	५३२७) रु०	मेथीदाना	४३०२ मन
पीतल	१३२३) रु०	[illegible]	२२६१४) रु०
कांसा	१०५१) रु०	पक्की गांठे	३१२५२ मन
एल्यूमीनियम	२०६५) रु०	कच्ची गांठे	५८६ मन
लोहा	८१४३६) रु०		

पौधा १० फुट ऊँचा हो जाता है तब काट लिया जाता है और उसकी गांठे बांध ली जाती हैं। पश्चात् ये गांठें पानीमें समूची डुबो दी जातीं हैं और उनपर मिट्टीके ढेले रख दिये जाते हैं जिससे गांठें पानीमें समुचित डूबी रहें। इस प्रकार दोसे तीन सप्ताहतक गांठे पानीमें पड़ी रहती हैं। इससे उसका रेशा नर्म पड़ जाता है और सुविधासे अलग कर लिया जाता है। इस प्रणालीके किये जानेमें गांठोंपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि ये आवश्यकतासे अधिक पानीमें न रहें क्योंकि ऐसा होनेसे रेशा कमज़ोर पड़ जाता है। रेशेको अलग करनेकी कई विधियां हैं पर अधिकतर कृषक कमरतक पानीमें खड़ा हो जाता है और हाथमें एक गुच्छा पकड़कर जड़के भागको जोरसे हिलाता है जिससे रेशा ढीला पड़ जाता है। रेशा अलग कर लेनेपर वह धोकर धूपमें सुखाया जाता है। तब यह बाजारमें जाने योग्य हो जाता है।

सन् १८७४ में इसकी खेतीका अनुमान पैदावारके हिसाबसे ८½ लाख एकड़ भूमिका था। वही बढ़ते बढ़ते सन १९१२-१३ का पंचवर्षीय औसत ३१½ लाख एकड़ हो गया। युद्धके पूर्व सन् १९१३-१४ में इसकी खेती ३३,५२,२०० एकड़ भूमिमें हुई। इसके बाद इसकी खेतीमें कमी कर दी गई जिसके कई आर्थिक कारण हैं। महायुद्धके समयमें जूटके बने हुए पदार्थोंके दाम कच्चे मालसे बेहिसाब ऊँचे रहे और उस समय चांवलका भाव बहुत तेज रहा। इसलिए जूट बोये जाने वाली उस भूमिमें—जिसमें चांवल बोया जा सकता था—कृषकोंने जूटको बंदकर चांवलकी खेती करना आरम्भ कर दिया।

पाटके दाम

पाटकी घटती हुई मांगका पता इसके बढ़े हुए भावोंसे चल जाता है। सन १८५१ में ४०० रतलकी एक गांठका दाम १४½ रुपया था वही सन १९०६ में ५७½ रुपया हो गया। सन १९०७ में भाव घटकर ५०¾ रुपया हो गया था। सन १९०८ तथा १९०९ में ३६ और ३२½ रु० गांठ ही रह गया था। सन १९१२ में बोफमालका दाम औसत ५४½ के और सन १९१३ में ७१ रु० रहा यहांतक कि सन १९१४ के अप्रेल महीनेमें भाव ८६¾ अर्थात सन १८८०-८४ के भावोंसे तिगुना हो गया। युद्धकी घोषणा होनेपर भाव केवल ऊँचे रुक ही नहीं गया प्रत्युत वह नीचे गिर गया। सन् १९१३ के महंगे दामों एवं कृषिकी सुविधाजनक स्थितिके कारण दूसरे साल अर्थात सन् १९१४ में बड़ीभारी फसल हुई। उस वर्ष साधारण वर्षकी उपजकी अपेक्षा २० लाख गांठें अधिक हुईं। ऐसी भारी पैदावारके कारण भाव घटे बिना नहीं रहता और फिर इधर इस मालके प्रधान खरीददार जर्मनी और आस्ट्रियाके बाजार ही इसके लिए बंद हो गये। अन्य देशोंको मुख्यतया मेडिटरेनियनको भी इसके निर्यातमें बाधा पहुँची और इन सब कारणोंसे सन १९१४ के दिसंबरमें भाव ३१ रुपया गांठ ही रह गया। मार्च १९१५ में दाम ४१ रुपया हो गया पर इससे कृषकोंको कुछ लाभ नहीं मिला।

(१ मन्दसोर (२) जावरा (३) दलावदा (४) ढोढर (५) रिंगनोद (देवास) (६) पिपलोदा (पिपलोदास्टेट) (७) कानून (धारस्टेट) (८) धमनियां (इन्दौर) (९) अमरगढ़ (झाबुआ) (१०) उदयगढ़ (झाबुआ) (११) झाबुआ (१२) भैंसोदा मण्डी (गवालियर) (१३) टोंक (१४) मनासा (१५) पीपल्या (इंदौर) (१६) मल्हारगढ़ (जावरा) (१७) निम्बाहेड़ा (१८) रतनगढ़ (गवालियर) (१९) सिंगोली (गवालियर) (२०) टटनेरी (गवालियर) (२१) छबड़ा (टोंकस्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरियां

१-मन्दसोर २ अमरगढ (झाबुआ) ३ उदयगढ़ (झाबुआ) ४ भैंसोदामण्डी (गवालियर) ५ टोंक ६ निम्बाहेड़ा

मेसर्स भोपजी शम्भूराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ देवीचंदजी बाकलीवाल हैं। आपके पूर्वज १५० वर्ष पूर्व बेगूं (उदयपुर) से मल्हार गढ़ और मल्हारगढ़से यहां आये। इस दूकानकी स्थापना संवत १८६५में सेठ शंभूरामजीने की। सेठ शंभूरामजीके बाद क्रमशः सेठ वर्द्धमानजी, सेठ जोधराजजी और सेठ देवीचंदजीने इस दूकानके कारोबारको सम्भाला। वर्तमानमें सेठ देवीचन्दजीके ३ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीशंकरलालजी श्री फूलचन्दजी एवं श्री हजारीलालजी हैं।

इस दुकानपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। यह फर्म मन्दसोरके प्रतिष्ठित धनिकोंमेंसे है। सेठ देवीचन्दजी सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इन्दौरके सर सेठ हुकुमचन्दजी से आपकी रिश्तेदारी है। ग्वालियरस्टेटमें ३ गांव आपकी जमींदारीके हैं। स्टेटकी ओरसे इस कुटुम्बको हमेशा सम्मान मिलता रहा है। सेठ देवीचन्दजी २ वर्ष पूर्व यहांपर आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। इस पदपर आप करीब १५ वर्षों तक रहे थे। जिस समय आपने आनरेरी मजिस्ट्रेट शिपसे इस्तीफा दिया था, उस समय ग्वालियर स्टेटकी ओरसे आपको पोशाक और सार्टिफिकेट मिला था। संवत् १९८०में दरबारकी सालगिरहके समय भी आपको स्टेटने पोशाक इनायत की थी।

इस दुकानकी ओरसे एक जैन धर्मशाला मन्दसोरमें बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपकी ओरसे श्री मैना बाई जैन कन्यापाठशाला और देवीचन्द दिगम्बर जैन औषधालय भी चल रहा है। औषधालयमें प्रतिवर्ष रोगियोंकी औसत १२ हजारके आती है। आपका एक मन्दिर मल्हारगढ़में भी बना हुआ है। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मंदसोर—भोपजी शंभूराम—इस दुकानपर मारवाड़ी लेन देन हुंडी चिट्ठी तथा ब्याज बट्टाका और मिल शेयर्सका काम होता है। इसके अतिरिक्त श्यामपुर (ग्वालियर स्टेट) में अभी आपने एक जीनिंग फेक्टरी भी खोली है।

बम्बई—मेसर्स मेघजी गिरधरलाल—पारसी गली धनजी स्ट्रीट—T. A. Lantarn—इस फर्मपर बैंकिंग काटन, सराफी तथा आढ़तका काम अच्छे स्केलपर व्यापार होता है।

बघाना

यह नीमच केम्पसे लगा हुआ ग्वालियर स्टेटका एक छोटासा कसबा है। वस्तीके मानसे यहां रुईका अच्छा व्यवसाय होता है। यहां १ जीन और १ प्रेस फेक्टरी पहिलेहीसे है। और १ नया प्रेस और तैयार हो रहा है।

काटन जीनप्रेस बघाना

यह कम्पनी उज्जैनके सेठ किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले, और काइमगंज (फर्रुखाबाद) के मुंशी जीवालालजी इन दोनोंके साझेमें है। यह कम्पनी सन् १९१४ में यहांपर स्थापित हुई। इस फर्मके दोनों पार्टनरोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

—:—

मेसर्स किशनलाल अमृतलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गोकुलदासजी, दाऊलालजी और जमनादासजी हैं। इस दुकानकी स्थापना सेठ नारायणदासजी और रणछोड़दासजीके हाथोंसे हुई और उन्हींके जमानेमें इसकी उन्नति भी हुई। आप नीमा जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत गोकुलदासजी और दाऊलालजी, सेठ नारायणदासजीके तथा जमनादासजी, सेठ रणछोड़दासजीके पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१) उज्जैन—किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले—यहां हुण्डी, चिट्ठी और सराफी लेन देनका काम होता है।

२) बघाना—रणछोड़दास जमनादास T. A. Jahajwala—यहां रुई कपास तथा हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका व्यापार होता है।

—:०:—

मुंशी जीवालालजी

आपका मूल निवास काइमगंज (फर्रुखाबाद) यू० पी०में है। सन् १८६४ में जब कारखाना स्थापित हुआ तब आप यहां आये। आपका देहावसान सन् १९२६ के मार्च मासमें हो गया है। आपके ६ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़ेका नाम मुंशी सुन्दरलालजी है। आप कायस्थ जातिके सज्जन हैं।

...ठ देवीचन्द जी (भोपजी शंभराम) मदनो...

श्रीयुत नथमलजी पोगड़िया...

मेसर्स मनीराम गोवर्द्धनदास

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्री शिवनारायणजी अग्रवाल जातिके (गोयल) सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान नारनौल (पटियाला-स्टेट) में है। पहिले पहिल संवत् १९०२में सेठ मनीरामजीने यहांपर आकर कपड़े की दलालीका काम आरंभ किया। आपका दलालीका काम अच्छा चल निकला। संवत् १९२०में सेठ मनीरामजीका देहावसान हुआ इनके बाद इनके पौत्र सेठ गोवर्द्धनदासजीके समयमें इस दूकानकी विशेष तरक्की हुई। संवत् १९५०से ५४ तक मंदसोरकी कस्टमका ठेका आपके जिम्मे रहा। इसमें आपको खूब लाभ रहा। सेठ गोवर्द्धनदासजीके चार पुत्र थे, उनमें सबसे बड़े श्री शिवनारायणजी हैं। आप इस समय मंदसोरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ शिवनारायणजीके पुत्र श्री जगन्नाथजी व्यापारिक कार्यों में भाग लेते हैं। इस दूकानकी ओरसे मंदसोरमें करीब १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एवं नारनोलमें १० हजार रुपयोंकी लागतसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मैनेजमेण्टमें नीचे स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) मन्दसोर—मनीराम गोवर्द्धनदास—T. A. JAIN—यहां रुई, कपड़ा, अनाज, हुण्डी चिट्ठी सराफी लेनदेन तथा आड़तका काम होता है।

(२) अहमदाबाद—मनीराम गोवर्द्धनदास, नया माधोपुरा—इस दूकानपर कपड़े और गल्लेका थोक व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) सैलाना—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां रुई, गल्ला और कपड़ेका मरू व्यापार तथा आड़तका काम होता है।

(४) बांसवाड़ा—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पिपलियाके गणेशजीन और सैलानाकी ईश्वर कम्पनी नामक जीनिंग फेक्टरियों में आपका भाग है। उपरोक्त दूकानोंमें नं० २, ३, ४ आपके भाइयोंके बंटवारे की हैं। वर्तमानमें इनपर आपकी देखरेख है।

मेसर्स मूलचंद सुगनचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचंदजी सोनी अजमेरवाले हैं। अजमेर भागमें विशेष परिचय चित्रोंसहित यहां दिया गया है। मन्दसोर दूकानपर सराफी लेनदेन हुण्डी चिट्ठी तथा कॉटन व्यवसाय होता है। आपकी यहां एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

श्रीयुत मुन्शी सुन्दरलालजी और श्री जमनादासजी दोनों ही इस फर्मके प्रधान संचालक हैं। आपके पार्टनर शिपमें नीचे लिखी दुकानें हैं ।

बघाना—कॉटन जीनप्रेस कम्पनी—यहां जीन प्रेसके साथमें ऑइल मिल भी है। तथा कॉटन बिजिनेस हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। T. A. Jeweshwar,

(२) नीमच (गवालियर-स्टेट)—कॉटन जीन कम्पनी—जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई कपासका व्यापार होता है।

(३) जावद (गवालियर-स्टेट) कॉटन जीन कम्पनी—उपरोक्त काम होता है।

मेसर्स नवलराम पोकरराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ फतेलालजी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान थोई (जयपुर-राज्य) है। इस दूकानको पहिले सेठ नवलरामजीने स्थापित किया। आपके २ पुत्र थे, पोकररामजी और मोतीरामजी। श्रीमोतीरामजीने बघानामें सेठ उदयराम—धर्मशालाकी नीव डाली थी। इनके बाद सेठ पोकरदासजीके पुत्र उदयरामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ उदयरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी इस फर्मके मालिक हैं।

इस समय आपकी दुकानपर हुण्डी चिट्ठी, रुई कपासका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। मन्दसोरकी नारायणदास फतहलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा बघानाकी शारदा जीनिंग फेक्टरीमें आपका हिस्सा है

कॉटन मर्चेंट एण्ड कमीशनऐजंट

न्यू काटन जीन प्रेस

नवल राम पोकरराम

रणछोड़ दास जमनादास

सदासुख रुगनाथ

जीन प्रेस

कॉटन जीन प्रेस

न्यू कॉटन जीन प्रेस

लक्ष्मीविलास जीन फेक्टरी

—०—

जावद

आर० एम० आर० के केसरपुरा नामक स्टेशनसे ८ मीलकी दूरीपर पत्थरके परकोटेसे घिरा गवालियर स्टेटका यह छोटासा सुन्दर कसबा है। यहां ३ काटन जीनिंग फेक्टरी और १ ल मिल है। यहां देशी मिलोंके बने कपड़ेपर नीलकी रंगाई और छपाईका काम अच्छा होता है। का माल मालवा, बागड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, मेवाड़, बांसवाड़ा एवं गुजरातमें जाता है। तथा के लहंगों और ओढ़नोंके काममें लाया जाता है। यहांसे कुछ ही दूरीपर पत्थरकी खान है। की विपुलताके कारण यहांके सभी कान पत्थरके ही बनते हैं।

यहांके आने जानेवाले मालका सन् १९२५ का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

आनेवाला माल	जानेवाला माल
गुड़—२२४० मन	चना—२२२ मन
शक्कर—११३ मन	घी—४४ मन
३० नं० से नीचेका सूत—७२५ मन	अलसी—२३६ मन
कपड़ा—४६०४२४)	मेथीदाना—१८८३ मन
	अजवाइन—११९६ मन
	पत्थरकी शिलाएं—१६३२६)

यहांकी पैदावारमें कपास, मेथीदाना, अजवाइन, अलसी, जुवार, मकई, तिल, चना, गल्ला ई मुख्य हैं।

सै एण्ड कॉटन मर्चेन्ट्स

मेसर्स श्रीराम बलदेव

इस दुकानके मालिक आदि निवासी डीकेड़के हैं। इस दुकानको ८० वर्ष पूर्व सेठ किशनराम ने स्थापित किया। उस समय इस दुकानपर खास व्यापार अफीम जमींदारी और ब्याजका था। सेठ किशनरामजीके बाद उनके २ पुत्र सेठ नगजी रामजी और बलदेवजीने इस दुकानको सम्हाला। सेठ बलदेवजीके पुत्र रामनारायणजी और नगजीरामजीके रघुनाथजी हुए।

मेसर्स मनीराम गोवर्द्धनदास

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्री शिवनारायणजी अग्रवाल जातिके (गोयल) सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान नारनौल (पटियाला-स्टेट) में है। पहिले पहिल संवत् १९०२में सेठ मनीरामजीने यहांपर आकर कपड़ेकी दलालीका काम आरंभ किया। आपका दलालीका काम अच्छा चल निकला। संवत् १९२०में सेठ मनीरामजीका देहावसान हुआ इनके बाद इनके पौत्र सेठ गोवर्द्धनदासजीके समयमें इस दूकानकी विशेष तरक्की हुई। संवत् १९५०से ५४ तक मंदसोरकी कस्टमका ठेका आपके जिम्मे रहा। इसमें आपको खूब लाभ रहा। सेठ गोवर्द्धनदासजीके चार पुत्र थे, उनमें सबसे बड़े श्री शिवनारायणजी हैं। आप इस समय मंदसोरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ शिवनारायणजीके पुत्र श्री जगन्नाथजी व्यापारिक कार्योंमें भाग लेते हैं। इस दूकानकी ओरसे मंदसोरमें करीब १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एवं नारनोलमें १० हजार रुपयोंकी लागतसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मैनेजमेण्टमें नीचे स्थानोंपर दूकाने हैं।

(१) मन्दसोर—मनीराम गोवर्द्धनदास—T. A. JAIN—यहां रुई, कपड़ा, अनाज, हुण्डी चिट्ठी सराफी लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।

(२) अहमदाबाद—मनीराम गोवर्द्धनदास, नया माधोपुरा—इस दूकानपर कपड़े और गल्लेका थोक व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) सैलाना—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां रुई, गल्ला और कपड़ेका घरू व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(४) बांसवाड़ा—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पिपलियाके गणेशजीन और सैलानाकी ईश्वर कम्पनी नामक जीनिंग फेक्टरियों में आपका भाग है। उपरोक्त दूकानोंमें नं० २, ३, ४ आपके भाइयोंके बटवारे की है। वर्तमानमें इनपर आपकी देखरेख है।

मेसर्स मूलचंद सुगनचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचंदजी सोनी अजमेरवाले हैं। अतएव आपका विशेष परिचय चित्रोंसहित वहां दिया गया है। मन्दसोर दूकानपर सराफी लेनदेन हुण्डी चिट्ठी तथा काटन व्यवसाय होता है। आपकी यहां एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

संवत् १९५३ में सेठ रघुनाथजीका और १९६६ में रामनारायणजीका देहावसान होगया। इनके बाद सेठ रघुनाथजीके पुत्र रामचन्द्रजीने इस दुकानके कारोबारको सम्हाला। आपका भी देहावसान १९८० में होगया है। वर्तमानमें इस दुकानका कारोबार सेठ रामनारायणजीकेपुत्र सेठ कन्हैयालालजी सम्हालते हैं। सेठ रामचन्द्रजीके २ पुत्र सेठ मदनलालजी और वंशीलालजी अभी छोटी वयके हैं।

सेठ कन्हैयालालजी जिलाबोर्ड मंदसोरके मेम्बर हैं। इस दुकानकी ओरसे ढोंकेड़में धर्मशाला रंगनाथजीका मंदिर तथा तालाब बना हुआ है।

आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—श्रीराम बलदेव—यहां आसामी लेनदेन, रुई कपासका व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ मंदसोर—श्रीराम बलदेव—यहां भी आसामी लेनदेन, रुई, कपास, गल्लेका व्यापार तथा आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

३ ढोंकेड़—किशनराम नगजीराम, यह गांव तथा तीन गांव और स्टेट ग्वालियरने आपको जमींदारी हकसे दिये हैं। यहां आपका खास निवास है।

४ रतनगढ़ (ग्वालियर)—श्रीराम नगजीराम—आसामी लेनदेन,कपास तथा गल्लेका काम होता है।

५ सिंगोली श्रीराम नगजीराम—ऊपर लिखे अनुसार काम होता है।

— —

मेसर्स हरकिशन किशनलाल जावद

इस दुकानके मालिकोंको डीडवाना (जोधपुर स्टेट) से नीमचमें आये १०० वर्ष हुए। नीमच से आकर ७० वर्ष पहिले सेठ रामलालजीने जावदमें व्यापार शुरू किया। आपके बाद क्रमशः रामचन्द्रजी तथा शुकदेवजीने इस दुकानका काम सम्हाला। आपके समयमें इस दुकानपर अफीम और तिल्हनका काम होता था। सेठ शुकदेवजीने संवत् १९६७ में कृष्ण कॉटन जीनिंग फेक्टरी स्थापित की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ हरकिशनजी इस समय इस दुकानका संचालन कर रहे हैं। आपकी यह दुकान इस नामसे संवत् १९५३ से जावदमें व्यापार कर रही है। सेठ हरकिशनजी माहेश्वरी सज्जन हैं। आप यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस समय आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—हरकिशन किशनलाल—इस दुकानपर रुई, कपास, हुंडी चिट्ठी, गल्ला और आढ़तका काम होता है। यहां आपकी कृष्ण कॉटन जीन फेक्टरी है।

२ न्यू मालवा कॉटन प्रेस बघाना—इस प्रेसमें आपका साझा है।

३ न्यू कॉटन जीन प्रेस मंदसोर—इस जीन प्रेसके आप भागीदार हैं।

नीमच

नीमच—चारों ओर होल्कर, सिंधिया, उदयपुर ग्वालियर आदि स्टेटोंसे घिरी हुई यह अंग्रेजी छावनी बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० के नीमच स्टेशनपर बसी हुई है। यहांकी बस्ती साफ एवं सुथरी है। इसके आस पास अजवाइन बहुत पैदा होता है तथा अच्छी तादादमें बाहर भेजा जाता है। यहां पासहीमें ग्वार और खोरी नामक स्थानोंपर पत्थरकी खदान है। इन स्थानोंमें ग्वालियर स्टेटकी दूकान है। जिसके द्वारा महसूल लेकर और कीमतन पत्थरकी बड़ी बड़ी पट्टियां और टुकड़े बेचे जाते हैं। व्यापारियोंकी सुविधाके लिये आस पासकी स्टेशन जैसे नीमच, केसरपुरा, निम्बाहेड़ा आदि पर ठीक रेलकी पटरीसे लगी हुई दुकानें हैं। यह स्थान पत्थरकी बड़ी भारी मंडी है। इस छावनीके पास ही निमच गांव है वहांपर आनेवाली तथा जानेवाली वस्तुओंका सन् १९२५ का परिचय इस प्रकार है।

आनेवाली वस्तुएं		जानेवाला माल	
चावल	१५५२ मन	पत्थर	२२४०२) रु०
गुड़	७०५८ मन	रुईकी कच्चीगांठें	१५८६१ मन
शक्कर	१५१७ मन	पक्कीगांठें	५१२६५ मन
तेल	१२३३६ पीपे	चना	४२९ मन
नारियल	९१० मन	उड़द	१६८२ मन
लोहा	७२०१) रु०	जौ	१८५६ मन
कपड़ा	३०५६६) रु०	शक्कर	२१६ मन
परनीचरल था लकड़ी	६६१८४) रु०	मेथी	३१०६ मन

यह छावनी अजमेरसे १५० मील इन्दौरसे १५७ मील और बम्बईसे ४५१ मील है।

मेसर्स दौलतराम गुलजारीलाल

इस फर्मका विशेष परिचय इन्दौरके पृष्ठ ३७ में दिया है। नीमच केम्पकी दूकानपर, अनाज व शीड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। इस फर्मकी इन्दौरमें पत्थर व अलसीकी भी दूकान है। नीमच आदिके पत्थर उस स्थानपर मिलते हैं।

मेसर्स लक्ष्मीचंद शंकरलाल

इस फर्मको सेठ भगवानदासजीने संवत् १९२८ में स्थापित किया। यह दुकान प्रतापगढ़के मेसर्स कुंदनजी कपूरचंद नामक फर्मकी शाखा है। आरम्भमें इस दुकानपर अफीम तथा कपड़ेका व्यापार होता था। इस समय इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीचंदजी, श्री शंकरलालजी, और श्री चन्दनलालजी हैं। वर्तमानमें इस दुकानपर जावदमें तयार होनेवाले साड़ी, नानगा, अंगोछा, पोतिया आदिका अच्छा व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा जावदकी देशी कपड़ेकी छपाई और रंगाईका माल गुजरात, बागड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, मेवाड़ आदि प्रांतोंमें अच्छी मात्रामें जाता है।

—०—

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेंट

मेसर्स जड़ावचंद प्यारेचंद
,, टोडूजी रिखबदास
,, पृथ्वीराज गंगाविशन
,, फूलचंद गोरेलाल
,, रामलाल गुलाबचन्द
,, श्रीराम बख्तेर
,, लक्ष्मीचन्द शंकरलाल
,, गुलाबलाल मेघराज
,, शिवलाल रामलाल
,, हरकिशन किशनलाल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स जड़ावचन्द प्यारचन्द
,, टोडूजी रिखबदास
,, धौंकलजी पन्नालाल
,, हीराचन्द नथमल
,, लक्ष्मीचन्द शंकरलाल

किरानेके व्यापारी

मेसर्स अब्दुल आदम
,, कालूजी राममुख
,, चौथमल नथमल
,, डामरसी रूपचन्द

रंगीन कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स फाजिलजी इब्राहीम
,, लक्ष्मीचन्द शंकरलाल
,, हकीमजी महमूद

जीनिंग फेक्टरीज़

,, छप्पा काटन जीन फेक्टरी
,, काटन जीन कम्पनी
,, लक्ष्मी ब्राइट एण्ड जीनिंग फेक्टरी

स्व॰ सेठ मुरलीधरजी बांसल (नेतराम शंकरदास) नीमच

श्री॰ नाथूरामजी बांसल (नेतराम शंकरदास) नीमच

स्व॰ सेठ हीरालालजी बांसल (नेतराम शंकरदास) नीमच

स्व॰सेठ रामचन्द्रजी गगराणी (श्रीराम बलदेव) जावद

सेठ

सरकारको जो लाभ होता है उसपर विचार करें तो कहना होगा कि जूट और उसके बने मालकी एक्सपोर्ट ड्यूटीका औसत गत तीन वर्षोंमें ३॥ करोड़ रुपया बैठा। अन्य पदार्थोंकी एक्सपोर्ट ड्यूटी २ करोड़ रुपये बैठी, इस हिसाबसे कहना होगा कि गत तीन वर्षोंमें अकेले जूट व्यवसायने समूची एक्सपोर्ट ड्यूटीका ६५ सैकड़ा भाग सरकारको दिया।

जूट मिलें

बहुत पहलेसे बंगालमें जूट काता और बुना जाता था पर गत शताब्दिके आरम्भ तक इसका व्यवहार देशके भीतर ही परिसीमित था। यहांके बने हुए बोरोंके बहुत सस्ते होनेके कारण बाहरी लोगोंका ध्यान इधर आकर्षित होने लगा। हाथके बने हुए बोरोंका कारबार यहांपर कल कारखाने न खुले तबतक चलता रहा। डंडीमें कलसे काता हुआ सूत सन् १८३५ में बिकने लग गया पर भारतमें इससे २० वर्ष बाद सूत कातनेकी मिल बैठाई गई। सन् १८५३ में जार्ज आकलैंड नामक सीलोनका एक काफीका व्यापारी कलकत्ता आया और सन् १८५४ में वह डंडी गया। वहां उसने जूट व्यवसायको देखा और फिर यहां आकर अपने साथ लाई हुई मशीनरीसे उसने सन् १८५५ में सीरामपुरके पास सबसे पहली एक जूट कातनेकी मिल बैठाई। ८ टन प्रति दिन सूत कातने वाली इस मिलसे कलकत्तामें जूट मिलका श्रीगणेश हुआ। इस सूतसे चट्टी बनानेके लिए जार्ज आकलेण्डने हाथ कर्घे बनाये। यन्त्र द्वारा चलनेवाले कर्घों (Looms)की स्थापनाका श्रेय बोर्नियो कंपनी (Bornea Co.) को है जिसकी एजंट जार्ज हेंडरसन कम्पनी थी। इस बोनियो जूट कम्पनी लिमिटेड नामक मिलकी रजिस्ट्री इंग्लैंडमें हुई। १९२ कर्घोंकी इस मिलकी स्थापना सन् १८५९ में हुई। इसमें कातना और बुनना दोनों काम मशीनसे होने लगे। इस मिलको बड़ी सफलता मिली, पांच वर्षमें कारखाना दुगुना हो गया यहांतक कि सन् १८७२ में बुननेके ५१२ सांचे हो गये और तब इसका नाम बारानगर जूट फेक्टरी कम्पनी लिमिटेड रखा गया।

जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना

बोरनियो कम्पनीके बाद सन् १८६२ में गौरीपुर और सिराजगंज मिल्स और सन् १८६६ में इण्डिया मिल्स नामकी मिलें बनीं। सन् १८६९ से १८७३ तक इन मिलोंने अपने कर्घे ९५० से बढ़ाकर १२५० कर लिए। इनकी बढ़तीको देखकर सन् १८७२ में पांच और नई कम्पनियोंकी स्थापना हुई जिनमें दो की रजिस्ट्री स्काटलेंडमें हुई। दो वर्षमें ८ नई मिलें बन गईं। जिनमें ३५०० कर्घे हो गये जो आवश्यकतासे अधिक जान पड़े। इस कारण कमरहट्टी कम्पनीके सिवाय जो सन् १८७७ में बनी थी सन् १८८२ तक और कोई नई मिल नहीं

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ५१५० थी जो अगले तीन वर्षोंमें ६७०० हो गई। इस समय फिर मालकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक जान पड़ी और इसी समस्याको हल करनेके लिए इण्डियन जूट मिल एसोसियेशनकी स्थापना हुई। पहली साधारण सभा १० नवंबर सन् १८८४ को मि० जे० जे० केपरिकके सभापतित्वमें हुई तब तबसे यह एसोसियेशन सामयिक व्यापारिक परिस्थितियोंको हल करनेका बड़ा भारी काम करती रही है। सन् १८८१ से लेकर १८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंमें ही कर्घोंकी संख्या ९७०१ तक पहुंच गई जिनमें ३११७ चट्टी कपड़ेके थे और ६५८४ बोरोंके।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८९५ तक ६७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग गई जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने योग्य है क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गई और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी संख्या १५२१३ पर पहुंच गई। अगले चार वर्षतक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें और बनीं। उनसे कर्घोंकी संख्या ३१७९१ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई मिलें बनीं पर पुरानीमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सन १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३५४ होगई। युद्धके समय ६ नई मिलें बनीं और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गई। इनमेंसे दो मिलें मारवाड़ी व्यापारियोंने बनाई यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२५में दो अमेरिकन मिलें खुली जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगई। इसके बाद कोई नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि पहलेही आवश्यकतासे अधिक मिलें मौजूद हैं और उनसे बना हुआ माल दुनियाकी खपतसे अधिक है। ऐसी स्थितिमें मिलोंने कमती समय काम करना ते किया जिससे सन् १९२१ के अप्रेल माससे मिलें कम समय चलने लगीं और वह नियम अभी तक जारी है। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हिसाबसे चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ६००० कर्घे बढ़ गये यद्यपि मिलें कम समय चलने लगीं पर कर्घेके बढ़तीके कारण परिस्थिति विशेष नहीं सुधरी इसलिए यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा और कर्घे न बढ़ाये जायें।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि आज देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल ९० मिले हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी हुई हैं जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४१,७८०

बैंकर्स

मेसर्स नेमीचन्द मूलचन्द

इस फर्मके मालिक अजमेर निवासी हैं। आपका हेड आफिस भी अजमेरही है। अतएव ।का पूरा परिचय अजमेरके पोर्शनमें दिया गया है।

आपका यहां व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

ना—राय बहादुर नेमीचन्द मूलचन्द—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, गल्ला, घी आदिका काम होता है। आढ़तका भी काम यहां होता है।

मेसर्स सदासुख नारायणदास

इस फर्मके स्थापक सेठ सदासुखजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। रके पश्चात् आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके संचालक हैं। प अग्रवाल जातिके हैं। आपके एक पुत्र तथा ३ पौत्र हैं। आप सब लोग फर्मके कार्यका संचालन ते हैं। आपकी फर्मका कई बड़ी २ व्यापारिक कम्पनियोंसे सम्बन्ध है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

रेना—मेसर्स सदासुख नारायणदास-बैंकिंग हुंडीचिट्ठी गल्ला तथा कमीशन एजंसीका व्यापार होता है। जमीदारीका कार्य भी यह फर्म करती है।

रेना--मेसर्स सदासुख नारायणदास-यहां सराफीका काम होता है।

मेसर्स हरनारायण भवानीप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान प्रोप्राईटर सेठ माधोप्रसादजी,सेठ गोविन्दप्रसादजी और सेठ हरविलासजी । आप ग्वार जातिके वैश्य हैं। आपका मूल निवास स्थान जिंगनी (मुरेना) का है। जबसे मंडी यम हुई है तभीसे आपकी फर्म यहां स्थापित है। इसे सेठ हरनारायणजीने स्थापित किया था। ापके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। वर्तमान संचालक आपके पौत्र हैं। आपकी ओरसे एक र्मशाला तथा मार्कंडेश्वरका एक मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

कानमलजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपके इन्दुमलजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शिवपुरी---भगवानदास शिवदास----सराफी, लेनदेन, कपड़ेका व्यापार और कमीशन एजंसीका काम होता है।

शिवपुरी--नथमल इन्द्रमल –यहां चांदी सोनेका काम होता है। जेवर भी तैय्यार मिलते हैं या आर्डरपर बनाए जाते हैं।

मेसर्स ज्ञानमल केसरीचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ शिवचंदजी एवम् सेठ नेमीचंदजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपका आदि निवास स्थान मेड़तेका है। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब १० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ ज्ञानमलजी हैं। आपके पश्चात इस फर्मकी उन्नति आपके पुत्र सेठ केशरीचन्दजीने की। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ लालचन्दजी हुए। आपके हाथोंसे भी इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके समाजमें अच्छी मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र हैं।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानीय ऑनरेरी मेजिस्ट्रट हैं। तथा बोर्ड साहुकारान और कॉपरेटिव्ह बैंकके मेम्बर हैं। सेठ शिवचंदजी बड़े सरल और मितभाषी हैं। दरबारमें आपका अच्छा सम्मान है। आपको कई बार दरबारसे पोशाकें इनाम मिली हैं। आपका ध्यान दान-धर्मकी ओर भी है। आपने ब्रह्मचर्याश्रम उदयपुर और आगरा अनाथालयमें अच्छी सहायता प्रदान की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिवपुरी – मेसर्स ज्ञानमल केशरीचन्द—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी और कमीशन एजंसीका काम होता है। आपकी बम्बई, कलकत्ता आगरा आदि स्थानोंपर एजंसियां हैं।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द फूलचन्द
„ अगरचन्द गुलाबचन्द
„ चतुरभुज रामचन्द्र
„ दौलतराम फकीरचन्द
„ पनराज अनराज
„ पीरचन्द फूलचन्द
„ रामचन्द फूलचन्द
„ रामलाल जौहरीलाल
„ स्वरूपचन्द मुरलीधर
„ ज्ञानमल केसरीचन्द

मौरेना—हरनारायन भवानीप्रसाद-यहां किराने तथा गल्लेका व्यापार होता है। आढ़तका कामभी यह फर्म करती है।

मौरेना—हरप्रसाद फतेराम-यहां कपड़ा तथा चांदी सोनेका काम होता है।

लश्कर—हरनारायन हरबिलास, इन्द्रगंज—यहां शक्करका काम होता है।

दतिया—हरनारायन भवानीप्रसाद—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद संतोषीलाल

राय बहादुर नेमिचन्द मूलचन्द

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

मेसर्स छितरमल रामदयाल

" बिहारीलाल जमनादास

" सदासुख नारायनदास

" शान्तिलाल सरूपचन्द

" शोभाराम गुलाबचन्द

" शकरचन्द मन्नूलाई

" शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायन

" हरनारायन भवानी प्रसाद

" हिम्मतराय घासीराम

" हरनारायन मूलचन्द

दालके व्यापारी

मेसर्स जुहारमल भवानीराम

" फूलचन्द रामदयाल

" दामोदर भगवानदास

" बिहारीलाल श्यामलाल

गुड़-शक्करके व्यापारी

मेसर्स रामसुन्दर वृन्दलाल	(गुड़)
" छितरमल रामदयाल	(शक्कर)
" चेतराम हरगोविन्द	"
" खंडूराम गुलाबचन्द	गुड़
" परमानन्द छेदालाल	(शक्कर)
" मूलचन्द अयोध्याप्रसाद	"
" मूलचन्द देवीराम	"
" हरनारायन भवानीप्रसाद	"
" हरप्रसाद नेतराम	"
" जगन्नाराम भोगीलाल	"

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गिरधरलाल नरसिंहलाल

" गंगाप्रसाद बिरदीचन्द

" द्वारका केदार

" देवीसहाय लखनलाल

" मूलचन्द शालिग्राम

" हरप्रसाद फतेराम

" हरप्रसाद नेतराम

सूतके व्यापारी

मेसर्स छिद्दीलाल रामलाल

" गंगाराम देवीराम

कमीशन एजंट्स

मेसर्स गणेशराम गोपीलाल
" छितरमल नारायनदास
" जीवनराम जगन्नाथ
" जेतराम चोखाराम
" टिपरचन्द हीरालाल
" ठाकुरदास प्रहलाददास
" मोरचन्द फूलचन्द
" मांगीलाल रामदेव
" रामप्रसाद छोटमल
" हनुमंतराम रामनारायण
" हरदेव शिवसहाय

घी मरचेंट्स

मेसर्स जीवनराम जगन्नाथ
" छीतरमल नारायणदास
" हनुमंतराम रामनारायण
" ज्ञानमल केसरीचंद

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द फूलचन्द
" चतुर्भुज रामचन्द्र
" जमनादास कन्हैयालाल
" दौलतराम फकीरचन्द
" धनराज जनराज
भीमराज रामचन्द्र
बिहारीलाल गोकुलचन्द
मन्नालाल छोटमल
रामचन्द्र फूलचन्द
रामकुँवार जेठामल
शालिगराम लछीराम
हरदेव शिवसहाय

मेसर्स ग
" ग
" च
" सठ

मेसर्स ओंकार
" गोरेला
" जमनादा
" जीवनराम
" बलराम
" वृषभान रा
" भगवानदास
" मोतीलाल ज
" रतनलाल गन
" सुगनमल सु
" हजारीमल सोह

घासलेट-ते

मेसर्स चतुर्भुज रामचन्द्र
" लछमनदास भगवा

ताम्बा पीतल और

मेसर्स गणेशराम शिवनाराय
सेठ श्यामलाल लोहिया
मेसर्स बन्नीराम मानराज

मेसर्स भागीरथ मथुराप्रसाद
,, शिवसहाय विश्वम्भरनाथ

घीके व्यापारी

मेसर्स छितरमल रामदयाल
,, बिरदीचन्द बालमुकुन्द
,, मूलचंद नेमीचन्द
,, शोभाराम गुलाबचन्द
,, सदासुख नारायणदास
,, शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण

मिट्टीके तेल बेचनेवाले

मेसर्स नाथूराम कुंवरपाल
,, फकीरचन्द हरनारायण

मेसर्स बिन्द्राबन शंकरलाल
,, हीरालाल मोतीलाल

लोहेके व्यापारी

मेसर्स जवाहरलाल नाथूराम
,, मोतीराम तेजसिंह
,, हरप्रसाद लादूराम

जनरल मरचेन्ट्स

मेसर्स केसोराम मनीराम
,, चन्दनलाल रामप्रसाद
,, प्यारेलाल रामस्वरूप
,, रामचन्द्र हरप्रसाद
,, शालिग्राम फतेचन्द
,, शालिग्राम दुर्गाप्रसाद

भिण्ड

भिंड गवालियर स्टेटका एक जिला है। यह गवालियरके उत्तर पूर्वमें स्थित है। गवालियर लाईट रेल्वे यहीं तक जाती है। यह गवालियरसे ५३ मीलकी दूरीपर है। यहांसे इटावा २२ मीलके करीब रह जाता है। इसका इटावेके साथ गहरा व्यापारिक सम्बन्ध है। यहांसे इटावा तक मोटर सर्विस रन करती है। गवालियर स्टेटके उत्तरीय हिस्सेकी वस्तुओंका एक्सपोर्ट करनेके लिये एक मात्र यही मंडी है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें कपास बाहर जाता है। बाजरा, चना और दालका भी बम्बईकी ओर बहुत एक्सपोर्ट होता है। यहांका घी अपनी अच्छी क्वालिटी होनेकी वजहसे कलकत्तेके मार्केटमें पाया जाता है। अलसी और अरण्डीका एक्सपोर्ट भी यहांसे बहुत बड़ी तादादमें होता है।

यहां व्यापारियोंके सुभीते, व्यापारियोंके आपसमें होनेवाले व्यापारिक झगड़ोंको निपटाने और व्यापारिक उन्नतिके लिये एक मंडी कमेटी स्थापित है।

यहांसे पास ही मेमपुरा नामक स्थानमें चैत्र मासमें हर साल एक पशुओंका मेला लगता है।

बड़नगर

बी० बी० सी० आई० रेलवेके खण्डवा रतलाम सेक्शनके बीच बड़नगर स्टेशनसे १मीलकी दूरी
: बसा हुआ गवालियर स्टेटका यह एक अच्छा कसवा है। यह स्थान बंबईसे ४३७ और इन्दौरसे
१ मील दूर है। इस स्थानसे उज्जैन तथा बदनावर तक सड़कें गयी हैं। यह स्थान तमाखु और
ुके व्यापारके लिये बहुत मशहूर है। इस कस्बेके आसपास करीब २ लाख रुपये सालानाकी
ड़ी तमाखू होती है, जो निखालिस (कोरी) और गुड़ मिलाकर दोनों प्रकारसे बाहर भेजी
ाती है। तमाखूके अतिरिक्त गेहूं भी यहांसे अच्छी तादादमें बाहर जाता है। यहाके कस्टम
ाफिसको सन् १६२६ में ५६६०८) रु० गेहूंकी निकासीसे आमदनी हुई थी। इस कस्बेमें १९२१
आनेवाले तथा जानेवाले मालके आँकड़े इस प्रकार हैं:—

आनेवाला माल

ासिन तेल	२१४१६ पीपे
तल	८५८३)
्युमीनियम	--- ६६३)
ाहा	३१८५८)
ायती कपड़ा	१४८६७४)
ल्की माल	२७३०)
ोती कपड़ा	१९०८३)
ारती लकड़ी	३०३८०)
िस	४५४३)
मड़ा	१२११०)
ाम्बू	२०२६)

जानेवाला माल

गेहूं	१५०१२०	मन
चना	६६६१	मन
कपासिया	२४११	मन
तिलहन	१००२२	मन
मेथी	६४०	मन
काली तमाखू	६०६५	मन
जुआर	४०६५	मन

इस स्थानपर इम्पीरियल बैंककी सब ब्रांच आफिस भी है। इस कस्बेमें माळवा प्रांतीय
म्बर जैन औषधालय नामक एक बहुत बड़ा औषधालय जैन समाजकी ओरसे धर्मार्थ च

जिनिंग फेक्टरियां

(१) जमनादास शिवप्रताप जिनिंग फेक्टरी
(२) नजरअली मूसाभाई " "
(३) प्यारेलाल अयोध्याप्रसाद " "
(४) श्रीराम सीताराम " "

प्रेसिंग फेक्टरियां

(१) नजरअली मूसाभाई फाटनप्रेस
(२) श्रीराम सीताराम फाटनप्रेस

आइल मिल

जमनादास शिवप्रताप आईल मिल

सन् १९२५ में यहांसे एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट होनेवाले मालकी सूची

आनेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
चावल	१७५६३	...
गुड़	२८४४०	...
पीतल	...	[illegible]
कपड़ा	...	[illegible]
मरचेंडाईस	...	[illegible]

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
मूंग	३७६६०	...
अरहर	१६८८४०	...
चना	१५३२७	...
बाजरा	६६०७	...
तल्ली	११८७१	...
अलसी	१३०५२	...
घी	३१८३	...
रुई	८३५१	...
	१४७	...

मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास स्थान इटावा यू० पी० है। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ गोवर्धनदासजी हैं। आपके पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े पुत्र इटावा रहते हैं। शेष सब यहीं रहते हैं। वर्तमानमें आप सब लोग इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम T. A. Babu यहां गल्ला, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यहां होता है।

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप धूत

इस फर्मके मालिकका निवास स्थान कुचामनरोड है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपकी कई स्थानोंपर फर्मे हैं। जिनका विशेष विवरण कुचामन रोडके पोर्शनमें दिया गया है। यहां मुनीम जगन्नाथजी ब्राह्मण कार्य करते हैं।

यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—जमनादास शिवप्रताप—T. A Dhut—यहां पर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है। गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम भी यह फर्म करती है। यहां इस फर्मकी ओरसे एक जिनिंग फ़ेक्टरी और आईल मिल चल रही है। इस आईल मिलका तेल मरिया लखनऊ आदि स्थानोंपर कुछ विशेष रेटपर बिकता है।

मेसर्स डाह्याभाई चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक वड़नगर (बड़ौदा) के रहनेवाले हैं। आपकी जाति पटेल है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब दश वर्ष हुए होंगे। इसका हेड आफिस सीतापुर है। इसके स्थापक सेठ दामोदर दासजी थे। आपका देहावसान हो चुका है। आपके दो पुत्र हैं। सेठ डाह्यालाल भाई और सेठ चुन्नीलाल भाई। आप दोनों ही इस समय इस फर्ममें संचालक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतापुर—हे० आ० मेसर्स डाह्याभाई चुन्नीलाल T. A Damodardass यहां गुड़, शक्कर और गल्लेका व्यवसाय होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

भिंड—मेसर्स डाह्यभाई चुन्नीलाल—T. A. Damodardass—यहां गल्ले तथा तिजारतकी आढ़त का काम होता है।

सेठ कनकमलजी सुधरे हुए विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपके प्राइवेट वाचनालयमें पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। आप स्थानीय कन्यापाठशाला तथा जैन पाठ्शालाके संचालक हैं। विद्यार्थियोंसे आपको विशेष स्नेह रहता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स श्रीचन्द हजारीमल वड़नगर—इस दुकान पर हुंडी, चिट्ठी, बैंकिंग तथा असामी लेन-देन तथा गल्लेका काम होता है।

काटन मरचेंट्स

मेसर्स खानअली अलावक्स

इस फर्मकी यहां पर एक जीनिंग फेक्टरी है। उज्जैनकी नजर अली मिलके मालिक सेठ लुकमान भाई इस फर्मके मालिक हैं। आपका पूरा परिचय उज्जैनमें ८१ पृष्ठमें दिया गया है।

मेसर्स गोविन्दराम नाथूराम

इस फर्मका हेड आफिस उज्जैनमें है। यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है तथा दुकान पर हुण्डी, चिट्ठी, आढ़त रूई और कमीशनका काम होता है। इस दुकानका पूरा परिचय उज्जैनमें पृष्ट ६४ में दिया गया है।

बैंकर्स

[इम्]पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया (सबब्रांच ऑफिस)
[मे]सर्स गणेशदास किशनाजी
„ श्रीचन्द बाबूलाल
„ श्रीचन्द हजारीमल
„ नारायण बालाराम
„ मगनीराम अत्रजी
„ श्रीराम भेरोंलाल

कपड़ेके व्यापारी

[मेसर्स] केशोराम शंकरलाल
„ गंगाराम वेनाराम
„ गोवाजी रूपचंद
„ बागचंद लालचंद

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अम्बालाल महासुख
„ जयंतीलाल हिम्मतलाल
„ पुरुषोत्तम हरगोविंद
„ बरदीचंद चम्पालाल
„ रतनलाल चम्पालाल
„ हजारीलाल कनकमल

वड़नगर (बड़ौदा) पटेल पुरुषोत्तमदास सांकलचन्द—इस स्थानपर गल्ला तेल और शीडकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स लेखराज जमनादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान ग्वालियर है। अतएव आपका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—मेसर्स लेखराज जमनादास—यहां गल्ला, तिलहन और शक्करका व्यापार होता हैं। आढ़तका काम भी बहुत होता हैं।

मेसर्स हजारीलाल श्रीराम

इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीलालजी हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए २ वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके हैं आपका निवास स्थान लश्कर है। आप करीब २ यहीं रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

भिंड—हजारीलाल श्रीराम T. A. lashakarwaj। यहां गल्ला तथा तिलहनका व्यापार और आढ़तका काम होता है। सरकारी मिल्टिरीका काम भी यहां होता है। यहां आपकी दालकी फेक्टरी हैं।

लश्कर—रामप्रसाद लालचन्द सराफ T. A. Ram यहां चांदी सोनेका काम होता है। जेवर भी तैय्यार मिलते हैं।

लश्कर—गौरीमल रामचन्द्र जनरलगंज—यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका काम होता है।

लश्कर—मुन्शी माधवप्रसाद अग्रवाल यहां गल्लेका व्यापार एवम् घी की खरीदीका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन

इस फर्मके दो साझीदार हैं। आप दोनोंहीका रहना ग्वालियर है। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका विशेष परिचय वहां अलग २ नामोंसे दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भिंड—मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है।

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स ओंकारजी हरीभाई
,, रूपचंद अमरचन्द

किरानेके व्यापारी

मेसर्स ईसा भाई इस्माइलजी
,, गुलामहुसेन दाउदभाई
,, जसराज मूलचन्द
,, थावरजी भोलाराम
,, नजरअली महम्मदअली
,, पूनमचन्द बालमुकुन्द
,, रामदयाल पन्नालाल

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स घूलजी बाबूलाल
,, बदरीचन्द मिश्रीलाल

कमीशन एजंट

मेसर्स कल्यानमल छगनलाल
,, गोकुलचन्द मथुरालाल
,, बदरीचन्द गुलजारीलाल
,, रतनलाल अम्बालाल

काली तमाखूके व्यापारी

मेसर्स बेनीराम कन्हैयालाल
,, बेनीराम रामनारायन

मुरार

मुरार, ग्वालियर और लश्करसे तीन मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। यह एक छोटा सा और व्यापारिक स्थान है। यहांके व्यापारका सम्बन्ध ग्वालियर और लश्करसे इतना अधिक है, कि लश्कर ग्वालियर और मुरार मिलकर एक ही शहर मालूम होता है। सैकड़ों व्यापारी रोजाना व्यापार करनेके उद्देश्यसे ग्वालियर और लश्करसे यहां आते हैं तथा यहांके व्यापारी वहां जाते हैं। यहां आनेके सुभीतेके लिये जी० एल० आर० रेलवेकी एक लाइन लश्करसे मोती महल तक आती है। तथा यहांसे वापस लौट जाती है। दोनों शहरोंमें बहुत कम अन्तर होनेसे यहां बने हुए हैं, यहां कारखाने ग्वालियरके कारखानोंके नामसे मशहूर हैं।

यह मण्डी विशेषकर गल्ले तथा घीके व्यापारके लिये मशहूर है। यहांसे हजारों मन गल्ला तथा घी दिसावरोंमें एक्सपोर्ट होता है। यहांके व्यापारी जी० एल० आर० के मुरार स्टेशनसे कहीं भी माल भेज सकते हैं। पहले इन्हें जी० आई० पी० रेलवेके ग्वालियर जंक्शन स्टेशनसे माल भेजना पड़ता था।

यहां निवास करनेवाले व्यापारियोंका परिचय निम्न प्रकार है:—

बेंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बांकेलाल
,, कुंवरपाल गुलजारीलाल
,, बिन्द्रावन लछमनदास

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड, एजंट

मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम
,, जमनादास शिवप्रताप
,, दयाभाई चुन्नीलाल
,, दुर्लभदास आनन्दजी
,, मनसुखलाल छीतोलाल
,, रामदयाल रघुलाल
,, हेमराज जमनादास
,, शिवप्रसाद रामजीवन
,, हजारीलाल श्रीराम

काटन मरचेन्ट्स

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप
,, [illegible] मूलाभाई
,, [illegible]

शक्करके व्यापारी

मेसर्स [illegible]
,, [illegible]
,, [illegible]
,, [illegible]

वस्त्रोंके मरचेंट्स

मेसर्स गुलजारीलाल लछमीचन्द
,, पूरनमल रामचन्द्र
,, मनीराम रूपनाथ
,, माधोराम रघुनाथप्रसाद
,, रामजीवन ज्वालाप्रसाद
,, रघुनाथ प्रसाद लक्ष्मीचन्द
,, लक्ष्मीचन्द गणेशीलाल
,, सुन्दरलाल बद्रीप्रसाद
,, हुबलाल बिहारीलाल

घासलेट तेलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल
,, दुर्गाप्रसाद गिरधरलाल

लोहा पीतलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल (लोह)
,, गनपतलाल सिद्धगोपाल (पीतल)
,, नाथूराम नीतामल (लोह)
,, मिट्ठूलाल चन्द्रभान (पीतल)
,, रामलाल हीरालाल (पीतल)

सूतके व्यापारी

मेसर्स रामबक्स माधवप्रसाद

शिवपुरी

शिवपुरी, ग्वालियर स्टेट रेलवेके शिवपुरी ग्वालियर ब्रेंचका अन्तिम स्टेशन है। यहांसे शिवपुरी गांव करीब आधा मील है। चारों ओर सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ होनेकी वजहसे यहांकी आबहवा बहुतही स्वास्थ्यप्रद और लाभकारी है। यही कारण है कि स्वर्गीय महाराजा माधवराव का यह स्थान बड़ा प्रियपात्र रहा। वे हमेशा एक सालमें करीब ६ माह यहीं रहते थे। इस शहरकी बनावट इतनी साफ सुथरी और सुन्दर है, कि देखते ही बनती है। महाराजाका प्रिय पात्र स्थान होनेसे उन्होंने यहां और ग्वालियरके बीच बेतारके तार लगवाये, इलेक्ट्रिक लाईटका प्रबंध करवाया तथा कई महल, बाग बगीचे और तालावोंका निर्माण करवाया।

संध्याके समय यदि कोई व्यक्ति घूमनेके लिये तालावकी ओर निकल जाय, तो उसे मालूम होगा कि वह एक इन्द्रपुरीमें प्रवेश कर रहा है। चारों ओर इलेक्ट्रिक लाईटकी रोशनी उसकी आंखोंमें चकाचौंधी पैदा करदेगी। बिजलीके इस प्रकाशमें उसे एक ओर महाराजाके महल, दूसरी ओर तालावोंका सुन्दर दृश्य और उनमें विचरते हुए सुन्दर बजरे और तीसरी ओर ग्वालियरके रईसोंके बंगले बड़े ही भले मालूम होंगे कहनेका मतलब यह है कि यह शहर ग्वालियर स्टेटमें बहुत सुन्दर और नवीन ढंगका एक ही मालूम होता है।

व्यापारिक दृष्टिसे भी इस स्थानका अच्छा महत्व है। इसका कारण यह है कि इसके चारों ओर पहाड़ी स्थान आजानेसे और कोई दूसरा शहर पास न होनेसे आस पासके कई मील तकके देहातोंमें यहींसे माल जाता है और वहांकी पैदाईशका माल भी इसी स्थान द्वारा एक्सपोर्ट होता है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली वस्तुओंमें विशेषकर गोंद, शहद, मोम आदि जंगली पदार्थ हैं।

व्यापारियोंकी सुभीताके लिये यहांसे गुना और झांसी तक मोटरें रन करती हैं।

शिवपुरीके दर्शनीय स्थान—महाराजाकी छत्री, सख्यासागर, महाराजाके महल, माधवलेक भागोरा टैंक तथा जंगलके कई दृश्य आदि २।

शिवपुरी मंडीसे एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले मालका सन् १९२५ का विवरण इस प्रकार है।

नेनराजजीके पुत्र सेठ लखमीचंदजी हैं। आपके पुत्र श्री संतोषचन्द्रजी पढ़ रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरार—नेनराज लखमीचंद—इस फर्मपर ठेकेदारी, तथा लेनदेनका काम होता है। आपका खास काम ठेकेदारी है।

मेसर्स विरदीचंद कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीविरदीचंदजी हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें बड़े [illegible] दुकानीका काम करते हैं। एक पुत्र विलायतमें डाक्टरीकी शिक्षा पा रहे हैं और एक तहसीलदार हैं। आपकी फर्मपर लेनदेन और ठेकेदारी काम होता है।

मेसर्स मथुरादास रघुनाथप्रसाद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी सरहिन्द (पंजाब) के हैं। इनको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए हैं। इस फर्मके पूर्वज इंगलिश लश्करके साथ फौजमें भरती होकर आये थे। कुछ समय बाद लाला मथुरामलजीने लश्करमें ठेकेदारीका काम शुरू किया। आप ग्वालियर गवर्नमेंटके कमसेरियट मुतसद्दी भी रहे थे। आपके ६ पुत्र हैं जिनके नाम शिवस्वरूपजी, गोविन्दरामजी, वेणीप्रसादजी, मथुराप्रसादजी, (ओवरसियर) रघुनाथप्रसादजी तथा विश्वम्भरनाथजी हैं। बाबू गोविन्दरामजी कोटन प्रेस मुरारके मैनेजर थे। बाबू वेणीप्रसादजी, पनवाड़ेमें हिज हाइनेसके प्राइवेट सेक्रेटरी रहे, पश्चात् आपने विश्राम ग्रहण किया। श्रीविश्वम्भरनाथजी भिंडमें तहसीलदार हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीमथुराप्रसादजी और रघुनाथप्रसादजी हैं। श्रीमथुराप्रसादजी मुरार म्युनिसिपैलिटीके सीनियर मेम्बर, और कोन्सोलेशन बोर्ड, मजलिसे आम तथा लश्कर और ग्वालियरकी म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मुरार—मेसर्स मथुराप्रसाद रघुनाथप्रसाद—यहां लेनदेन, हुंडी चिट्ठी कंट्राक्ट और जमींदारीका काम होता है।

आनेवाला माल

नाम	वजन	मूल्य
चांवल	८३२ मन	...
गुड़	१६२०० ,,	...
तेल घासलेट	१०३१० पीपे	...
खोपरा	३०६६ मन	...
कम्बल	...	३५१७ रु०
तांबा पीतल टीन	...	६५५४ रु०
लोहेका सामान	...	२०६०४ रु०
कपड़ा	...	११८१६६ रु०
सिल्की कपड़ा	...	२८१६ रु०
ऊनी कपड़ा	...	२८६६ रु०
सूत	६५६ मन	...
जूटके थेले	१०५५ ,,	...
लकड़ीका सामान	१०११ ,,	...
मरचेंडाईज़	...	२१२३८
माचिस	...	३६४६

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
गेहूं	१२९२४	...
उर्द	२६७५	...
मूंग	१७०१२	...
तुवर	३३२८	...
घी	७२३५	...
सरसों	४८६	..
तिल	६७०	...
अलसी	४२७८	...
ग्राउंड नट	१४२३५	...
तिल्लीका तेल	१५४१	...
अजवान	१२२	...
जीरा सफेद	१३४१	...
गोंद	३१७२	...
कत्था	५११८	...
लाख	१८६	...
मोम	१३६	...
हरद	२१२	...
कोयला	८,२४९	...

मेसर्स मोहनलाल शिवप्रसाद

इस फर्मके मालिक मथुराके निवासी अग्रवाल (गोयल) वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ शिवप्रसादजीने ९० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका ग्वालियर स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप यहांके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप ग्वालियरकी मजलिसे आम मसालतीबोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, साहुकारान बोर्ड, तथा म्युनिसिपल बोर्डके मेम्बर और कोऑपरेटिव्ह बैंकके मैनेजिंग डायरेक्टर थे। आपने स्थानीय कन्याशालाके लिये स्थाई रूपये ५०) स्कालरशिपका भी प्रबंध किया है। आपने मुरारमें एक धर्मशाला बनवाई है। इस समय इस फर्मके संचालक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू उंकारनाथजी हैं। आप भी शिक्षित सज्जन हैं। एवं उपरोक्त संस्थाओंमें काम कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार—मोहनलाल शिवप्रताप—जमींदारी और ठेकेदारीका बहुत बड़ा काम होता है।

(२) मोरेना—शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण—यहां गल्ले और घीका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(३) भिंड—शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला, घी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इस दुकानमें आपका साझा है।

(४) सबलगढ़—शिवप्रसाद ओंकारनाथ—गल्ले तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका व्यापार होता है।

(५) शिवपुरी—मोहनलाल शिवप्रसाद—यहांपर आपकी शिवप्रसाद ऑइल मिल, आयर्न फाउण्डरी तथा फ्लावर मिल है।

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजण्ट

गनेशीलाल देवकरणदास
चिरंजीलाल लक्ष्मीचंद
जौहरीमल कन्हैयालाल
जयसुखराम दुर्गाप्रसाद
नंदराम फूलचंद
पन्नालाल हीरालाल
बलदेवदास मंगलचंद
मंगतूलाल फचालाल
मनसुखलाल छीतरमल
मुरलीधर पूरनमल

कन्ट्राक्टर्स

प्रेमराज लक्ष्मीचन्द
बदीचन्द कन्हैयालाल
मथुराप्रसाद रघुनाथप्रसाद
मोहनलाल शिवप्रसाद

बैङ्कर्स

रामलाल हजारीमल
रामबख्श रामजीवन
हिम्मतराम घासीराम

मेसर्स गणेशराम गोपीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास निवाणा (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब ६० वर्ष हुए होंगे। यह फर्म सेठ गणेश रामजी द्वारा स्थापित हुई थी। इसकी उन्नति भी उन्हींके हाथोंसे हुई। आपने यहां एक शिवजीका मन्दिर कुंआ और बगीचा बनवाया था। सेठ गोपीरामजीके तीन पुत्रोंमेंसे एक श्रीयुत बालकिशनजी आगरा दूकानका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शिवपुरी—गणेशराम गोपीराम—यहां हुंडी, चिट्ठी लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।
आगरा—गोपीलाल बालकिशन, बेलनगंज—यहां हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स पीरचन्द फूलचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ टोडरमलजी एवम् सेठ सुपार्श्वमलजी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष होगये। इसके स्थापक सेठ फूलचन्दजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् क्रमशः, जेठमलजी, सोनमलजी, और भीखमचन्दजी हुए। आप लोगोंने भी इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई। वर्तमान मालिक सेठ टोडरमलजी स्टेटकी मजलिसे आमके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

शिवपुरी—पीरचन्द फूलचन्द—यहां सराफी हुंडी, चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।
शिवपुरी—टोडरमल सुपार्श्वमल—इस नामसे स्टेटको ठेकेदारीका काम होता है॥
लश्कर—पीरचन्द फूलचन्द सराफा—यहां हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।
भिंड—पीरचंद फूलचंद—यहां सराफी तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है यहां यह फर्म स्टेटकी खजांची है।

मेसर्स भगवानदास शिवदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेड़ताका है। आपको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ शिवदासजी थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गुलाबचंदजी हुए। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपने एक धर्मशाला बनवाई तथा एक जैन मन्दिरकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके स्थाई प्रबन्धके हेतु आपने २ मकान भी अलग कर दिये हैं। आपके पुत्र सेठ-

रामजीदास गुलाबचंद
रामबख्श रामजीवन
राजाराम हरविलास
रामबख्श कन्हैयालाल
नुमाराम माबूलाल

घीके व्यापारी

पन्नालाल हीरालाल
विरधीचंद श्यामलाल
रतनलाल अनूपचंद
रामजीदास गुलाबचंद
लखीराम चिरोंजीलाल

कपड़ेके व्यापारी

रूपचन्द गंगाराम
छिदीलाल खुबरदयाल
धन्नालाल राजाराम
पन्नालाल जगन्नाथ
मोहनलाल नकसीराम
रामबख्श रामजीवन
लादूराम गियासीराम

शक्करके व्यापारी

चुन्नीलाल श्रीलाल
प्रह्लाददास मूलचन्द
पन्नालाल मगनलाल
मोतीलाल मुरलीधर
रामबख्श कन्हैयालाल
सीताराम रामचन्द्र

चांदी सोनेके व्यापारी

बिहारीलाल गंगाराम
मथुराप्रसाद गंगाप्रसाद
रामबख्श रामजीवन
श्यामलाल सुखीमल

लोहेके व्यापारी

कुंजीलाल प्यारेलाल
कन्नुमल फुदलमल

जनरल मरचेंट

हाजी वली मोहम्मद

स्टेशनर

रामलाल घासीलाल

अत्तार और दवाईवाले

प्रभूदयाल कालीचरण
भूरामल जगन्नाथ
भूरामल खत्री
रामलाल रामसहाय

है और तकुओंकी १०,१३,८२१। बाकी चार मिलें मद्रासमें हैं जिनमें ५६५ कर्घे हैं और एक मिल संयुक्त प्रान्तमें है। जिस भाँति जूटकी पैदावारका ठेका बङ्गालने ले रखा है उसी भाँति इसके उद्योगमें भी प्रधान हाथ या कहा जाय कि लगभग समचा हाथ बंगालका है। हुगलीके किनारे दूर तक ये मिलें चली गई हैं। और स्वयं मिलोंकी दशा अच्छी होनेके कारण इनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी भी दशा अच्छी है और उन्हें भारतवर्षकी अन्य किसी भी कामकी मिलोंके मजदूरोंसे मजूरी अधिक ही मिलती है। मिलोंका पूर्व इतिहास सन्तोषप्रद ही नहीं पर बहुत समृद्धि पूर्ण रहा है। सन् १९१४ में कच्चे पाटके दाम बहुत चढ़ गये। कलकत्तामें भाव ८२ रुपये गाँठ और लंदनमें ३६ पौंड प्रति टनका दाम होगया। जब युद्ध आरम्भ हुआ कलकत्तामें भाव ५०-५५ रुपया और लन्दनमें २३½ पौंड ही रह गया। इसपर भी जब फसलकी आनुमानिक रिपोर्ट निकली और उसमें बड़ी भारी फसलकी बड़ी बात प्रगट हुई तो दाम बुरी तरह घट गये और उस समय मिलोंने यह समझकर कि युद्धमें उनके बनाये हुए मालकी बड़ी मांग रहेगी कच्चा माल खूब मन्दे दामोंमें भर पेट खरीद किया। इधर कच्चा माल सस्ते दामोंमें मिलना और बनाया हुआ माल हाथों हाथ ऊंचे दामोंमें बिक जाना इससे और अधिक क्या बात हो सकती थी। जूटके बने पदार्थोंका निर्यात सन् १९१४-१५ में १७३ लाख पौंडका हुआ वही सन् १९१६-१७ में २८० लाख पौंड, सन् १७-१८ में २९० लाख पौंड और सन् १९१८-१९ में ३५० लाख पौंडका हुआ। युद्ध काल जूट उद्योगके लिए स्वर्ण युग होगया जिसमें मिलोंने आश्चर्यजनक उन्नति की एवं अपार वैभव और समृद्धि पैदा की।

एक्सपोर्ट ड्यूटी

सरकारको जूट और उसके पदार्थोंके निर्यातसे एक्सपोर्ट ड्यूटी अर्थात प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयासे अधिक ही पैठती है यह पहले लिखा जा चुका है। सन १९१६ की पहली मार्चसे भारत सरकारने कच्चे पाटपर (टुकड़ोंको छोड़कर) ४०० रतलकी प्रति गाँठ पर २½ रु० अर्थात मूल्यके हिसाबसे अनुमान ५ रु० सैकड़ा एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाया। टुकड़ोंपर ड्यूटी दस आना प्रति गाँठ नियत की गई इसी भाँति हैसियनपर १६ रुपया प्रति टन और बोरोंपर १० प्रति टनकी ड्यूटी लगाई गई। सन् १९१७ की पहली मार्चसे यही ड्यूटी दुगुनी कर दी गई और कच्चे पाटकी ४½ रुपया टुकड़ोंकी १¼ रुपया प्रतिगांठ, हैसियनपर ३२ रु० और बोरोंपर २० रुपया प्रति टन हो गया। यह ड्यूटी ब्रिटिश इंडियन जूटपर लागू नहीं पड़ती।

रुई

भारतके निर्यातमें रुईका निर्यात प्रधान स्थान धारण करता है। यद्यपि सन् १९२५-२६ में

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ५५५० थी जो अगले तीन वर्षोंमें ६००० हो
इस समय फिर मालकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक जान पड़ी और इसी समस्याको हल करनेके
लिए इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशनकी स्थापना हुई। इसकी साधारण सभा १० नवंबर
१८८४ को मि० जे० जे० केयरिडके सभापतित्वमें हुई थी तभीसे यह एसोसियेशन नाना
व्यापारिक परिस्थितियोंको हल करनेका बड़ा भारी काम करती रही है। सन् १८८५ से
१८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंमें ही कर्घोंकी संख्या ९७०१ तक पहुंच
जिनमें ३११७ बट्टी कपड़ेके थे और ६५८४ बोरोंके।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८९५ तक ९७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग
जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने यो
क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गईं और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी स
१५२१३ पर पहुंच गई। अगले चार वर्षतक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें
बनीं। उनसे कर्घोंकी संख्या ३१७८५ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई
बनीं पर पुरानीमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सन १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३५४ होगई। इ
समय ६ नई मिलें बनीं और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गईं। इनमेंसे दो मिलें मार
व्यापारियोंने बनाईं यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२५मे
अमेरिकन मिलें खुलीं जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगईं। इसके बाद
नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि पहलेही आवश्य
अधिक मिलें मौजूद हैं और उनसे बना हुआ माल दुनियाकी खपतसे अधिक है। ऐसी स्थि
मिलोंने कमती समय काम करना तै किया जिससे सन् १९२१ के अप्रेल माससे मिलें कम
चलने लगीं और वह नियम अभी तक जारी है। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हि
चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ६००० कर्घे ब
यद्यपि मिलें कम समय चलने लगीं पर कर्घेके बढ़तीके कारण परिस्थिति विशेष नहीं सुधरी इ
यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा
कर्घे न बढ़ाये जायें।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि
देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल
मिलें हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी
जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४१,

गुनामण्डी

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवेके बीना कोटा सेक्शनमें गुना नामक स्टेशनके पास है यह स्थान बीनासे ७४ मील, कोटासे ११४ मील और ग्वालियरसे २३० मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। गुना गेहूंका अच्छा बाजार है। यहांसे गेहूं बम्बई जाते हैं। यहांका घी कलकत्तेके बाजारोंमें भेजा जाता है। अलसी, धनिया तथा कत्था भी बहुत बड़ी तादादमें यहांसे बम्बईकी तरफ एक्सपोर्ट किया जाता है। यहां आनेवाले तथा जानेवाले मालका सन् १९२५ का विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०
चावल ...	८७०१	...
गुड़ ...	२२५५८	...
शक्कर ...	१२२७	...
घासलेट तेलके पीपे	२०३९१	...
विलायत	८८४	...
नारियल ...	३२५४	...
सुपारी	१४४२	...
पीतलका सामान	८१८०	...
कांसीका सामान	६४९१	...
३० नं०से नीचेका सूत	२०५	...
कपड़ा	...	२१२३१४)
मिलकी कपड़ा	...	१८१२६५)
बारदान (जूट)	४१५३	...
तमाखू	२४१३	...
मर्चेंटाइज सामान	...	३४८८१)
माचिस	...	५७२९)
बीड़ी	...	२३५५०)

जानेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०
गेहूं	६०२५२	...
जुवार	७१३९	...
चना	१५१४८	...
सरसों	२८०४	...
अलसी	७२५३	...
रामतिली	३४०८	...
सिसिमम आईल	२३४८	...
		...
		...
घी	६०९०	...
धनिया	३२३४५	

चांदी सोनेके व्यपारी

कनकमल धनरुपमल
छोटेराम सितारराय
धनरुपमल लक्ष्मीचन्द
पन्नालाल खेमचन्द

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट

कन्हैयालाल हजारीमल
कल्लूमल सांवलदास
बिशनप्रसाद देवीप्रसाद
कन्हैयालाल बालमुकुन्द
कन्हैयालाल रामकिशन
गनीमहम्मद कच्छी
जमनादास धन्नामल
जगन्नाथ रामचन्द्र
दौलतराम रघुवरदयाल
पोकरदास माणिकचन्द
प्रेमसुख ज्वालादत्त
बिहारीलाल सुगालचन्द
बिरधीचन्द गंगाधर
भैय्यालाल सादरामल
मालसी कानजी
रामचन्द्र परशुराम
सोमतराय गोपाजी
सोहनलाल मोतीलाल

शक्करके व्यापारी

कन्हैयालाल हजारीमल
गनी महम्मद कच्छी
पोकरदास माणिकचन्द
सोमतराय गोपाजी
सुलेमान हर्द्दीन
हाजी युसुफ हाजी करीम

कपड़े के व्यापारी

ईश्वरदास शङ्करलाल
अयोध्याप्रसाद प्रभुदयाल
कस्तूरचन्द राजमल
गोपालजी मन्नालाल
गनीमहम्मद कच्छी
द्वारकादास मुन्नालाल
नाथूभाई धनजी
रामगोपाल बलराम
लक्ष्मणदास लक्ष्मीचन्द

ताम्बा पीतलके व्यापारी

अमनलाल तुलसीराम
कनछेदी रामलाल
जवाहरलाल हीरालाल
परमानन्द जमनाप्रसाद
मूलचन्द मंगजी

लोहेके व्यापारी

खुरशेदअली महम्मद बोहरा
हैदर अली फिदा हुसेन

घासलेट तेलके व्यापारी

अहमद शरीफ
हाजी युसुफ करीम कच्छी
हाजी हबीब हाजी ईसा

जनरल मरचेंटस

इस्माईलजी हसनजी
छक्कनलाल
पन्नालाल मुन्नालाल
मनीन हुसेन मेहरबान हुसेन

पिछौर मंडी

यह ग्वालियर स्टेटकी मंडी है। जी० आई० पी० रेल्वेके कोटा बीना सेक्शन पर टकनेरी नामक स्टेशनके पास यह बसी हुई है। यह मंडी गुनासे २७ मील, बीनासे २९ मील और ईसागढ़से २२ मीलकी दूरी पर है।

यह स्थान खासकर गेहूं, मूंग, सरसों और दालके एक्सपोर्टके लिये मशहूर है। घी भी यहांसे कलकत्ता, सी० पी० और पंजाब डिस्ट्रिक्टमें बहुत जाता है।

इम्पीरियलबैंकने यहांके व्यापारियोंके सुभीतेके लिये अपनी एक सब ब्रांच खोल रखी है। व्यापारकी तरक्कीके हेतु यहां एक व्यापारिक एसोशिएशन भी स्थापित है।

आनेवाला माल			जानेवाला माल		
नामवस्तु	वजनमन	मूल्य	नामवस्तु	वजन मन	मूल्य
चांवल	१०४०१	...	गेहूं	१००३७१	...
गुड़	१५३७१	...	चना	२०७५३	...
शक्कर	३००	...	जवार	१५१०	...
फल लेट-लेड पीप	१८७१४	...	मूंग	४१२४	...
खोपरा	३८६५	...	अम्बेरी शीड्स	११४०	...
पीतलका सामान	...	२११५)	सरसों	५८२३	...
कांसाका सामान	...	१६००)	अलसी	२७११	...
डोरा	...	११२४१)	गाय भिल्ली	१७५७१	...
घरेर	...	८१३१)	घी	१२१२३	...
कपड़ा	...	३८७२०३)	कपास	४१२८	...
ट्विस्ट एण्ड यार्न	...	३१६४)			
मरचेंडाईजसामान	...	२०५६९)			
इमारती पत्थर	...	६३८३)			
कराना	३३२६	...			
तम्बाकू	४६३	...			
इमारती लकड़ी	२२००	...			
सिमेन्ट	८७२	...			
रुमरेलके दल	१३१	...			

स्टेशन वाले एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मालका आंकड़ा सन् १९२१ का है।

चांदी सोनेके व्यपारी

ऩकमल धनरुपमल
ोटेराम सिताबराय
निरुपमल लक्ष्मीचन्द
ान्नालाल खेमचन्द

—०—

ेन मरचैंट्स एण्ड कमीशन एजेंट

कन्हैयालाल हजारीमल
कल्लूमल सांवलदास
किशनप्रसाद देवीप्रसाद
कन्हैयालाल बालमुकुन्द
कन्हैयालाल रामकिशन
गनीमहम्मद कच्छी
जमनादास धन्नामल
जगन्नाथ रामचन्द्र
दौलतराम रघुवरदयाल
पोखरदास माणिकचन्द
प्रेमसुख ज्वालादत्त
बिहारीलाल खुशालचन्द
बिरधीचन्द गंगाधर
भैय्यालाल सरदारमल
मालसी कानजी
रामचन्द्र परशुराम
सोमतराय गोपाजी
सोहनलाल मोतीलाल

—

शक्करके व्यापारी

कन्हैयालाल हजारीमल
गनी महम्मद कच्छी
पोकरदास मणिकचन्द
सोमतराय गोपाजी
सुलेमान इब्राहिम
हाजी युसुफ हाजी करीम

—

कपड़े के व्यापारी

ईश्वरदास शङ्करलाल
अयोध्याप्रसाद प्रभुदयाल
कस्तूरचन्द राजमल
गोपालजी मन्नालाल
गनीमहम्मद कच्छी
द्वारकादास मुन्नालाल
नाथूभाई धनजी
रामगोपाल बलराम
लक्ष्मणदास लक्ष्मीचन्द

—

ताम्बा पीतलके व्यापा

अमनलाल तुलसीराम
कनछेदी रामलाल
जवाहरलाल हीरालाल
परमानन्द जमनाप्रसाद
मूलचन्द मंगलजी

—०—

लोहेके व्यापारी

खुरशेदअली महम्मद वोहरा
हैदर अली फिदा हुसेन

—

घासलेट तेलके व्याप

अहमद शरीफ
हाजी युसुफ करीम कच्छी
हाजी हबीब हाजी ईसा

—

जनरल मरचेंटस

इस्माईलजी हसनजी
छवनलाल
पन्नालाल मुन्नालाल
जमीन हुसेन मेहरबान हुसेन

—

पिछोर मंडी

यह गवालियर स्टेटकी मंडी है। जी० आई० पी० रेल्वेके कोटा बीना सेक्शन पर टकनेरी नामक स्टेशनके पास यह बसी हुई है। यह मंडी गुनासे २७ मील, बीनासे २९ मील और ईसागढ़से २२ मीलकी दूरी पर है।

यह स्थान खासकर गेहूं, मूंग, सरसों और दालके एक्सपोर्टके लिये मशहूर है। घी भी यहांसे कलकत्ता, सी० पी० और पंजाब डिस्ट्रिक्टमें बहुत जाता है।

इम्पीरियलबैंकने यहांके व्यापारियोंके सुभीतेके लिये अपनी एक सब ब्रांच खोल रखी है। व्यापारकी तरक्कीके हेतु यहां एक व्यापारिक एसोशिएशन भी स्थापित है।

आनेवाला माल

नामवस्तु	वजनमन	मूल्य
चांवल	१०४०१	...
गुड़	१५७७१	...
शक्कर	३००	...
घास लेट-तेल पीपे	१५७१४	...
खोपरा	३८६५	...
पीतलका सामान	...	२६१५)
कांसाका सामान	...	१६००)
लोहा	...	११३४६)
चद्दरे	...	८१३६)
कपड़ा	...	३८७२०३)
ट्वीस्ट एण्ड यार्न	...	३१६४)
मरचेंडाईससामान	...	२०५६९)
इमारती पत्थर	...	६३५३)
बारदान	२३५६	...
तम्बाखू	५६३	...
इमारती लकड़ी	२२०७	...
सिमिट	८७२	...
नागरवेलके पान	१७१	...

जानेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य
गेहूं	१००३७१	...
चना	२०७५६	...
जवार	१५१०	...
मूंग	४१२४	...
अम्बेरी शीड्स	१६४०	...
सरसों	५८२३	...
अलसी	२७११	...
राम तिल्ली	१७४७१	...
घी	१२१२६	...
कपास	४१२५	

उपरोक्त वर्णित एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मालका ब्यौरा सन् १९२५ का है।

खाचरोद

खाचरोद गवालियर स्टेटका एक व्यापारिक स्थान है। यह बी० बी० एण्ड० सी० आ
रेलवेकी बड़ी लाइनपर बसा हुआ है। खाचरोद नामक स्टेशनसे यह गांव करीब आध
की दूरीपर होगा। स्टेशनसे शहरमें जानेके लिये सवारीका काफी इन्तिजाम है। यह
बम्बईसे ४२८ मील एवम् उज्जैनसे ४३ मीलकी दूरीपर है।

यहांसे कपास, गल्ला आदिका एक्सपोर्ट होता है। यहाकी बनी हुई लाखकी तथा नारि
चूड़ियां मशहूर हैं।

यहांसे पास ही कनारखेड़ी नामक स्थानमें हरसाल कार्तिक मासमें एक पशुओंका
लगता है।

खाचरोद मंडी द्वारा सन् १९२५ में जाने तथा आनेवाले मालका ब्यौरा इस प्रकार है-

आनेवाला माल

नाम वस्तु	वजन मन	मूल्य
चांवल	२३५६	...
गुड़	११२१	...
मिट्टीका तेल	६१८०	पीपे
नारियल	८६४	
ताम्बेका सामान	...	१८५६
पीतलका सामान	...	४६७३)
लोहा	...	५०८३३
कपड़ा	...	७१०६७)
सिल्की कपड़ा	...	३८७२)
तमाखू	१२४०)	...
इमारती लकड़ी	५३१२)	...

जानेवाला माल

नाम वस्तु	वजन मन	मू[illegible]
गेहूं	३३९७६४	..
ज्वार	१४०५२	..
चना	४२१०	..
अलसी	८२१	..
बिनोले	१२०३	.
घी	३४१	.
मेथी दाना	२०१८	.
बिलोज	७४२४	.

बैंकर्स

मेसर्स कालूजी भैराजी
,, घासीजी भैरोलाल
,, दौलतराम जोतिचन्द
,, भगवती पन्नालाल
,, लालचन्द सरूपचन्द
,, सेवाराम सांवतराम
,, सूरजमल प्रतापचन्द

गल्लेके व्यापारी और एजंट

मेसर्स ओंकारजी मायाचन्द
खूबचन्द चांदमल
गुलाबचन्द विलासीराम
देवजी जीतमल
चुन्नीलाल हरवल्लभ
जेठीमल हीरालाल
राजावली अली मोहम्मद
हीराजी रूपचन्द

कॉटन मरचेन्ट्स

घासीराम बद्रीलाल
नजरअली अलामस
सेवाराम सांवलराम

शक्करके व्यापारी

अलीभाई महम्मदअली
मायाचन्द चांदमल
लूणजी कादरजी
ीराजी रूपचन्द

कपड़

ओंकारजी रूपचन्द
कमरजी हरकचन्द
कचराजी सरूपचन्द
कुँवरजी हरकचन्द
गुमानजी लक्ष्मीचन्द
चम्पालाल मोतीलाल

लोहा, तांबा, पी

मेसर्स फूलचन्द रूपचन्द
,, महम्मदअली ईसा भ
लछमनजी गनपत

केरोसिन आइल

मेसर्स जोतिचन्द टेकजी
,, नेमजी केसरीमल
,, राजाभाई मुल्ला अब्दुल ;

फरनीचरके व्या

चतुर्भुज पूनाजी
भागीरथ मोती

ड्रगिस्ट

दयाराम सूरजमल
भागनजी चुन्नीलाल
रूपचन्द मन्नी

पिछौर मंडी

यह ग्वालियर स्टेटकी मंडी है। जी० आई० पी० रेल्वेके कोटा बीना सेक्शन पर इस नामके स्टेशनके पास यह बसी हुई है। यह मंडी गुनासे २७ मील, बीनासे २९ मील ईसागढ़से २२ मीलकी दूरी पर है।

यह स्थान खासकर गेहूं, मूंग, सरसों और दालके एक्सपोर्टके लिये मशहूर है। घी भी यहांसे कलकत्ता, सी० पी० और पंजाब डिस्ट्रिक्टमें बहुत जाता है।

इम्पीरियलबैंकने यहांके व्यापारियोंके सुभीतेके लिये अपनी एक सब ब्रांच खोल रखी है। व्यापारकी तरक्कीके हेतु यहां एक व्यापारिक एसोशिएशन भी स्थापित है।

आनेवाला माल			जानेवाला माल		
नामवस्तु	वजनमन	मूल्य	नामवस्तु	वजन मन	मूल्य
चांवल	१०४०१	...	गेहूं	१००३७१	...
गुड़	१५७७१	...	चना	२०७५३	...
शक्कर	३००	...	जवार	१५१०	...
फ्रेश लेड-लेल पीस	१८७१४	...	मूंग	४१२४	...
खोपरा	३८६५	...	अम्बेरी सीड्स	१६४०	...
पीतलका सामान	...	२११५)	सरसों	५८२३	...
कांसाका सामान	...	१३००)	अलसी	२०११	...
लोहा	...	११२४३)	राम तिल्ली	१७३७१	...
चद्दरें	...	८१३१)	घी	१२१२३	...
कपड़ा	...	३८७२०३)	कपास	४१२८	...
ट्विस्ट एण्ड यार्न	...	३१६४)			
मर्चेंडाईससामान	...	२०५६९)			
इमारती पत्थर	...	६३८३)			
किरासिन	२३५६	...			
तम्बाकू	४६२	...			
इमारती लकड़ी	२२०७	...			
सिमेन्ट	८७२	...			
कलकत्तेके पान	१३१	...			

स्टेशन वर्किंग रिपोर्ट और इम्पोर्ट मालका जोग सन् १९२५का है।

बैंकर्स

सदाशिवराम गोविन्दराव
सिरूवराम दौलतराम
सीताराम नन्दलाल
हजारीलाल मन्नालाल
हीरालाल खूबचंद

ग्रेन मरचेण्ट

मेसर्स ओंकारजी फालूराम
फालूराम विरदीचन्द
गनपत बाबूलाल
गेंदालाल रूपजी
चम्पाराम मगनीराम
जानकीलाल चतुरभुज
नाथूराम हीरालाल
पन्नालाल फौजमल
माखन मल्लाजी
सेवाराम सूरजमल
साखीराम भोलाजी

शाजापुर

शाजापुर गवालियर स्टेटका एक जिला और इसी नामकी एक मंडी है। यह जिलेका सदर स्थान है। जी आई० पी० रेल्वेकी भोपाल-उज्जैनवाली ब्रान्च लाईनके बेरछा नामक स्टेशनके पास यह बसा हुआ है। यहांकी पैदावार विशेषकर कपास, गेहूं, चना, ज्वार, अलसी आदि है। यहां कपड़ोंकी रंगाई तथा छपाईका काम बहुत होता है। यही यहांकी इण्डस्ट्री है। पगड़ी और डुपट्टा यहांका अच्छा होता है।

यहां मंडी कमेटीके नामसे एक व्यापारिक संस्था स्थापित है। चैत्र मासमें हरसाल यहां पशुओंका मेला लगता है।

यहां नीचे लिखी जीनिंग फेक्टरियां हैं—

गंगाशंकर शालिगराम जीनिंग फेक्टरी
शोभाराम मूलचन्द ,,
नजरअली ,,

चंदेरी

चन्देरी ग्वालियर स्टेटकी एक बहुत मशहूर मंडी है। इसका नाम बहुत दूर २ तक फैला हुआ है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाले मालमें चन्देरीका बना हुआ देशी कपड़ा प्रधान है। यह स्थान कपड़ेमें की जानेवाली कारीगरीके लिये मशहूर है। यहां सोने और चांदीकी पक्की कलाबत्तूके फेन्सी और चित्त आकर्षित करनेवाले सुन्दर बार्डरोंके सुसज्जित जरीन कपड़े बनते हैं। यहांसे इस प्रकारके सुन्दर कपड़ोंका एक्सपोर्ट सालाना करीब १०००००)के होता है। घी भी अच्छी मात्रामें यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होता है।

चन्देरी जी० आई० पी० रेलवेकी मेन लाईनके ललितपुर नामक स्टेशनसे २० मीलकी दूरीपर स्थित है।

यहांके व्यापारी वर्गकी सूची इस प्रकार है:—

साहुकार

ओंकारलाल काशीप्रसाद
छुकरलाल बालचन्द
पूनमचन्द रतनचन्द
भट्टूलाल आलमचन्द
मंगली चतुर्भुज
लक्ष्मीनारायण गोविन्ददास
शिवप्रसाद घनश्यामदास
सुखसिंह परमानन्द
पन्नालाल सिंगजी

मेन मरचेंट्स

चतुर्भुज शंकरलाल
नाथू गुल्बोली
पन्नालाल सिंगजी
भगवानदास
रूपनारायण मिश्र
रसूलखां

चन्देरी कपड़के व्यापारी

उदयचन्द चम्पालाल
गोपालदास वंशीधर
गोरी एण्ड सन्स
चिमनलाल बिहारीलाल
चुन्नेरलाल बालचन्द
परमानन्द पन्नालाल
मन्नीलाल कन्हैयालाल
रामप्रसाद जगन्नाथ
रामवल्लभ लक्ष्मीनारायण

सोन कच्छ

यह मंडी काली सिंध नदीके तीरपर बसी हुई है। यह इन्दौरसे १४ मील देवाससे १८ मील अस्तासे ३० मील तथा उज्जैनसे ४२ मीलकी दूरीपर है। उज्जैनसे एक मोटर सर्विस व्हाया देवास होकर यहां आती है। यहां हर सप्ताह हाट लगता है।

यहांसे कपास, गल्ला, आदि वस्तुएं बाहर जाती हैं। इस स्थानपर नीचे लिखी जिनिंग फेक्टरियां हैं।

अमरचन्द पन्नालाल जीनिंग फेक्टरी
तिलोकचन्द मोतीलाल ,, ,,

काटन मरचेंन्ट्स

अमरचन्द पन्नालाल
कालूराम हीरालाल
कपूरचन्द गनपतजी
गोवर्धन भागीरथ
जानकीलाल चतुरभुज
पन्नालाल धन्नालाल
लखमीचन्द हुकुमचन्द
सुखराम दौलतराम

क्लॉथ मरचेंट्स

उदयराम मनीराम
चुन्नीलाल छोगालाल
चतुरभुज जानकीलाल
नारायण जयराम
फूलजी राजाराम
भागीरथ गोवर्धन
मनीराम शिवबक्स
सीताराम बागमल

बैंकर्स

मेसर्स कालूराम हीरालाल
,, कस्तूरचंद फूलचंद
,, खूबचंद गनपतजी
,, चुन्नीलाल छोगमल
,, जैराम नारायणजी
,, देवचंद हीरालाल
,, नबीखान वजीरखान
,, नाथूराम हीरालाल
,, मन्नालाल मोतीलाल
,, माधोराम लालजी
,, मथुरालाल गणपत
,, रामगोपाल खूबचंद
,, रामचन्द्र मोतीलाल
,, लखमीचंद हुकुमचंद
,, शिवजीराम खूबचंद

बैंकर्स

(शि)दाशिवराम गोविन्दराव
(च)म्पाराम दौलतराम
(सी)ताराम नन्दलाल
(बि)हारीलाल मन्नालाल
(ही)रालाल खूबचंद

ग्रेन मरचेण्ट

(मे)सर्स ओंकारजी कालूराम
(का)लूराम विरदीचन्द
(ग)णपत बाबूलाल
गेंदालाल रूपजी
चम्पाराम मगनीराम
जानकीलाल चतुरभुज
नाथूराम हीरालाल
पन्नालाल फौजमल
माखन मल्लाजी
सेवाराम सूरजमल
सालीराम भोलाजी

शाजापुर

शाजापुर ग्वालियर स्टेटका एक जिला और इसी नामकी एक मंडी है। यह जिलेका सदर (स्)थान है। जी आई० पी० रेल्वेकी भोपाल-उज्जैनवाली ब्राञ्च लाईनके बेरछा नामक स्टेशनके पास (य)ह बसा हुआ है। यहांकी पैदावार विशेषकर कपास, गेहूं, चना, ज्वार, अलसी आदि है। यहां (क)पड़ोंकी रंगाई तथा छपाईका काम बहुत होता है। यही यहांकी इण्डस्ट्री है। पगड़ी और दुपट्टा (य)हांका अच्छा होता है।

यहां मंडी कमेटीके नामसे एक व्यापारिक संस्था स्थापित है। चैत्र मासमें हरसाल यहां (प)शुओंका मेला लगता है।

यहां नीचे लिखी जीनिंग फेक्टरियां हैं—

गंगाशंकर शालिग्राम जीनिंग फेक्टरी
शोभाराम मूलचन्द ,,
नजरअली ,,

है और तकुओंकी १०,१३,८२१। बाकी चार मिलें मद्रासमें हैं जिनमें ५६५ कर्घे हैं और एक मिल संयुक्त प्रान्तमें है। जिस भाँति जूटकी पैदावारका ठेका बङ्गालने ले रखा है उसी भांति इसके उद्योगमें भी प्रधान हाथ या कहा जाय कि लगभग समचा हाथ बंगालका है। हुगलीके किनारे दूर तक ये मिलें चली गई हैं। और स्वयं मिलोंकी दशा अच्छी होनेके कारण इनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी भी दशा अच्छी है और उन्हें भारतवर्षकी अन्य किसी भी कामकी मिलोंके मजदूरोंसे मजूरी अधिक ही मिलती है। मिलोंका पूर्व इतिहास सन्तोषप्रद ही नहीं पर बहुत समृद्धि पूर्ण रहा है। सन् १९१४ में कच्चे पाटके दाम बहुत चढ़ गये। कलकत्तामें भाव ८२ रुपये गाँठ और लंदनमें ३३ पौंड प्रति टनका दाम होगया। जब युद्ध आरम्भ हुआ कलकत्तामें भाव ५०-५५ रुपया और लन्दनमें २९½ पौंड ही रह गया। इसपर भी जब फसलकी आनुमानिक रिपोर्ट निकली और उसमें बड़ी भारी फसलकी बड़ी बात प्रगट हुई तो दाम बुरी तरह घट गये और उस समय मिलोंने यह समझकर कि युद्धमें उनके बनाये हुए मालकी बड़ी मांग रहेगी कच्चा माल खूब मन्दे दामोंमें भर पेट खरीद किया। इधर कच्चा माल सस्ते दामोंमें मिलना और बनाया हुआ माल हाथों हाथ ऊंचे दामोंमें बिक जाना इससे और अधिक क्या बात हो सकती थी। जूटके बने पदार्थोंका निर्यात सन् १९१४-१५ में १७३ लाख पौंडका हुआ वही सन् १९१६-१७ में २८० लाख पौंड, सन् १७-१८ में २९० लाख पौंड और सन् १८१८-१९ में ३५० लाख पौंडका हुआ। युद्ध काल जूट उद्योगके लिए स्वर्ण युग होगया जिसमें मिलोंने आश्चर्यजनक उन्नति की एवं अपार वैभव और समृद्धि पैदा की।

एक्सपोर्ट ड्यूटी

सरकारको जूट और उसके पदार्थोंके निर्यातसे एक्सपोर्ट ड्यूटी अर्थात प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयासे अधिक ही बैठती है यह पहले लिखा जा चुका है। सन १९१६ की पहली मार्चसे भारत सरकारने कच्चे पाटपर (टुकड़ोंको छोड़कर) ४०० रतलकी प्रति गाँठ पर २¼ रु० अर्थात मूल्यके लिहाजसे अनुमान ५ रु० सैकड़ा एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाया। टुकड़ोंपर ड्यूटी दस आना प्रति गांठ नियत की गई इसी भांति हैसियनपर १६ रुपया प्रति टन और बोरोंपर १० प्रति टनकी ड्यूटी लगाई गई। सन् १९१७ की पहली मार्चसे यही ड्यूटी डबल कर दीगई और कच्चे पाटकी ४½ रुपया टुकड़ोंकी १¼ रुपया प्रतिगांठ, हैसियनपर ३२ रु० और बोरोंपर २० रुपया प्रति टन हो गया। यह ड्यूटी बिमलीपटम जूटपर लागू नहीं पड़ती।

रुई

भारतके निर्यातमें रुईका निर्यात प्रधान स्थान धारण करता है। यद्यपि सन् १९२५-२६ में

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ३११० थी जो आगे चल कर [illegible] ५००० हो गई। इस समय मि० [illegible] ने [illegible] और इसी [illegible] लिए इण्डियन जूट मिल्स एसोसिएशनकी स्थापना हुई। [illegible] १० अगस्त सन् १८८४ को मि० जे० जे० केरिसके सभापतित्वमें हुई थी। यह संस्था [illegible] व्यापारिक परिस्थितियोंको [illegible] बहुत भारी काम करती रही है। सन् १८८१ से लेकर १८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंने ही कर्घों की संख्या ९००१ तक पहुँचा दी जिनमें ३११० पट्टी बनाते थे और ५८८४ बोरे।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८९६ तक ६७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग गई जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने योग्य है क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गईं और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी संख्या १५२१३ पर पहुंच गई। आगे चार वर्षतक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें और बनी। उनसे कर्घोंकी संख्या ३१०५१ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई मिलें बनी पर पुरानीमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सन १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३८४ होगई। युद्धके समय ६ नई मिलें बनी और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गई। इनमेंसे दो मिलें मारवाड़ी व्यापारियोंने बनाई यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२१में दो अमेरिकन मिलें खुली जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगईं। इसके बाद कोई नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि परदेशी आवश्यकतासे अधिक मिलें मौजूद हैं और बना हुआ माल दुनियाकी जरूरतसे अधिक है। ऐसी स्थितिमें मिलोंने कमती समय काम करना ले किया जिससे सन् १९२१ के अप्रेल मासमे मिलें कम समय चलने लगीं और यह नियम अभी तक जारी है। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हिसाबसे चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ५००० कर्घे बढ़ गये यद्यपि मिलें कम समय चलने लगी पर कर्घोंके बढ़तीके कारण परिस्थिति विशेष नहीं सुधरी इसलिए यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा और कर्घे न बढ़ाये जायं।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि आज देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल ९० मिलें हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी हुई हैं जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४९, ७८०

काटन मरचेंट्स

उदयराम रामलाल
गणेशदास सूरजमल
गजाधर रंगलाल
गोविन्दजी कुंवरजी
चतुरभुज केशवजी
चिनोदीराम बालचंद
बद्रीनारायण श्रीनारायण
मगनीराम रामकिशन
शांतिलाल केशवजी
सेवाराम बहादुरसिंह

शक्करके व्यापारी

अब्दुलगनी अब्दुलकरीम
चांदमल कस्तूरचन्द
मगनीराम रामकिशन
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
हीरालाल किशोरदास

क्लाथ मरचेंट्स

केसरीमल कस्तूरचन्द
गंगाधर गोरेलाल
छोगालाल कस्तूरचन्द
चुन्नीलाल भगत
बद्रीनारायण श्रीनारायण
शालिगराम जगन्नाथ
हाजी करमअली जीवाभाई

जनरल मरचेंट्स

अब्दुलहुसेन अब्दुलकरीम
तेजमल छोगमल
महमदहुसेन हसनअली
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद

मिट्टका तेल

हाजी करमअली जीवाभाई
रसूलभाई हसनभाई

नमकके व्यापारी

उदयराम रामलाल
चांदमल कस्तूरचंद
मगनीराम रामकिशन
रावजी देवजी
हीरालाल किशोरदास

तमाखूके व्यापारी

इसुबहसन
चांदमल कस्तूरचन्द
भोलाभाई मनोहरभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद
हीरालाल किशोरदास

मेसर्स रामनारायण भवानीराम बड़वाह

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेसर जयपुर स्टेटमें है। आप खण्डेलवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ९० वर्ष हुए। श्रीयुत सेठ रामनारायणजीने सर्व प्रथम इसकी स्थापना की। आप बड़े ही उद्योगी एवं परिश्रमी व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। संवत् १९३३में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री सेठ भवानीरामजीने इस फर्मके कार्यको और भी तरक्की दी। संवत् १९६६में आपका देहावसान हुआ। उनके पश्चात् उनके पुत्र व दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ नन्दलालजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। और आप ही इस समय इस फर्मके कामका संचालन कर रहे हैं, इस फर्मके मालिकोंका सार्वजनिक कार्योंमें भी विशेष हाथ रहा है, बड़वाहमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला तथा एक मन्दिर बना हुआ है। धर्मशालामें एक सुन्दर बगीचा भी लगा है। विमलेश्वरमें(बड़वाहमें) नर्मदा किनारे आपकी ओरसे एक धर्मशाला बनी हुई है यहांपर एक गौशाला बनी हुई है, उसके लिए आपने सारी जमीन मुफ्त दी है। आपकी ओरसे बड़वाहमें सदाव्रत भी बंटता है। इस समय आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

१—बड़वाह—रामनारायण भवानीराम—इस दूकानपर कॉटन, कमीशन एजंसी, बैङ्किग तथा देनलेनका काम होता है। यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

२—बड़वाह—कन्हैयालाल नन्दलाल—इस दूकानपर गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

३—सनावद—रामनारायण भवानीराम—बैङ्किग कमीशन एजंसी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स लछमनदास केशरीमल

इस फर्मके मालिक मूल निवासी पीपाड़ (मारवाड़) के हैं। आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। श्रीयुत लछमनदासजीने बड़वाहमें अपनी दुकान स्थापित की। और अपनी चतुराई तथा अपने व्यापार कौशलसे लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाई। इस समय बड़वाहकी नामी फर्मोंमें आपकी फर्म भी एक समझी जाती है।

हालहीमें आपने एक सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई है। इस कार्यमें आपने हजारों रुपये खर्च किये हैं।

बड़वाहमें आपकी दुकानपर रुईका अच्छा बिजिनेस है। आपकी यहां एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी बनी हुई है। श्रीयुत लछमनदासजीके पुत्र श्रीयुत केशरीमलजी हैं। आप दुकानका काम सम्हालते हैं।

नगर सेठ नन्दलालजी (रामनारायण भवानीराम) बड़वाहा

सेठ छुज्जूलालजी (रामाला हीरालाल) सनावद

सेठ मांगीलालजी (मांगीलाल गोरीलाल) सनावद

सेठ हीरालालजी नंगराड़े (रामाला हीरालाल) सन

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स छगनलाल नानचन्द
,, मन्नालाल वागचन्द
,, मोहनलाल चुन्नीलाल
,, रामनारायण भवानीराम
,, लखमीचन्द फूलचन्द
मेसर्स महम्मदअली फीका भाई
,, राधाकिशन सुखलाल
,, राधाकिशन वृजलाल
,, रामसिंह जुम्मारसिंह
,, हसन भाई अब्दुलअली

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली जीवा भाई
,, अब्दुलकरीम हाजी मूसाखान

किरानेके व्यापारी

मेसर्स मूसाखान जीवाभाई
,, वलीमहम्मद ऊमर

सनावद

यह स्थान इन्दौर राज्यके प्रधान व्यापारिक केन्द्रोंमेंसे एक है। वैसे तो ७००० की वस्तीका यह एक छोटासा क़स्वा है मगर जब इसके आकारकी दृष्टिसे हम इसके व्यापारको देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य्य होता है। जिस समय यहां कपासका मौसिम चलता है उस समय यहांकी चहल पहल देखने योग्य होती है। अच्छी मौसिम चलनेपर किसी २ दिन यहांपर डेढ़ २ हजार गाड़ियां प्रतिदिन आती हुई देखी जाती हैं। सबेरे आठ बजेसे गाड़ियोंका तांता लगता है सो मुश्किलसे रातको आठ बजे खतम होता है। इस कस्वेकी बसावट बड़ी पिचपिच और अव्यवस्थित है। व्यापार-की दृष्टिसे यह जितना उन्नत है स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उतना ही अवनत है। खासकर मौसिमके दिनोंमें दिनभर उड़नेवाली गर्दसे लोगोंके स्वास्थ्यपर बड़ा खराब धक्का पहुंचता है।

इस छोटेसे कस्बेमें करीब बारह तेरह जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अच्छी मौसिम चलनेपर इन फैक्टरियोंसे करीब चालीस हजार रुईकी पक्की गांठें तैय्यार होती हैं। इन फेक्टरियोंके नाम इस प्रकार हैं (१९२९)

(१) गोरेलाल मंगीलाल जीन सनावद
(२) मर्चेण्ट काटन प्रेस सनावद
(३) जसरूप बैजनाथ प्रेस सनावद
(४) जयकिशन गोपीकिशन जीन सनावद
(५) जयकिशन गोपीकिशन प्रेस सनावद
(६-७) जसरूप बैजनाथ जीन सनावद (२)

काटन मर्चेंट्स

उदयराम रामलाल
गणेशदास सूरजमल
गजाधर रंगलाल
गोविन्दजी कुंवरजी
चतुरभुज केशवजी
विनोदीराम बालचंद
बद्रीनारायण श्रीनारायण
मगनीराम रामकिशन
शांतिलाल केशवजी
सेवाराम बादरसिंह

शक्करके व्यापारी

अब्दुलगनी अब्दुलकरीम
चांदमल कस्तूरचन्द
मगनीराम रामकिशन
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
हीरालाल किशोरदास

कलाथ मरचेंट्स

केसरीमल कस्तुरचन्द
गंगाधर गोरेलाल
छोगालाल कस्तूरचन्द
चुन्नीलाल भगत
बद्रीनारायण श्रीनारायण
शालिगराम जगन्नाथ
हाजी करमअली जीवाभाई

जनरल म

अब्दुलहुसेन अब्दुलकरीम
तेजमल छोगमल
महमदहुसेन हसनअली
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद

मिट्टका ते

हाजी कमरअली जीवाभाई
रसूलभाई हसनभाई

नमकके व्यापा

उदयराम रामलाल
चांदमल कस्तूरचंद
मगनीराम रामकिशन
रावजी देवजी
हीरालाल किशोरदास

तमाखूके व्याप

इसुफहसन
चांदमल कस्तूरचन्द
भोलाभाई मनोहरभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद
हीरालाल किशोरदास

(८) हीरालाल सोहराबजी कॉटन प्रेस सनावद
(९) हीरालाल सोहराबजी कॉटन जीन सनावद
(१०) नर्मदा कॉटन प्रेस सनावद
(११) विनोदीराम बालचंद जीन सनावद
(१२) नाथूलाल मथुरालाल जीन सनावद
(१३) मर्चेण्ट जीनिंग फैक्टरी सनावद
(१४) सरस्वती जीनिंग फैक्टरी सनावद

इस कस्बेमें अगहनके महीनेमें एक बहुत बड़ा मेला भी लगता है।
यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार हैः —

बैंकर्स एण्ड कॉटनमर्चेंट्स

मेसर्स जसरूप वैजनाथ

इस फर्मका हेड आफिस खण्डवामें है। यहांपर इसकी ब्रांच है। इसका संचालन श्री० सेठ अनन्तलालजी करते हैं। आप बड़े सज्जन, व्यापार कुशल और उदार व्यक्ति हैं। हालहीमें आपने महीदपुरमें एक नया बाजार (मण्डी) डालनेका उद्योग प्रारम्भ किया है। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित खण्डवा पोर्शनमें दियागया है। इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक प्रेसिंग और दो जीनिंग फेक्टरियां हैं।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका भी हेड आफिस खण्डवामें है। यहांकी दुकानका सञ्चालन श्रीयुत देवकिशनजी बाहेती करते हैं। आप बड़े विद्याव्यसनी, उदार, देशप्रेमी और शिक्षित सज्जन हैं। इतनी बड़ी सम्पत्तिके स्वामी होतेहुए भी आप बड़े निरभिमानी हैं। आपका परिचय चित्रोंसहित खण्डवेके पोर्शनमें दियागया है। सनावद दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

मे० विनोदीराम बालचन्द

यह फर्म नीमाड़में सबसे बड़ी रुईकी व्यापारी मानी जाती है। इसका हेड आफिस झालरा पाटनमें है। यहांकी दुकानका सञ्चालन श्रीयुत रामगोपालजी मुनीम करते हैं। आप बड़े योग्य शिक्षित एवं वयोवृद्ध सज्जन हैं। इस फर्मपर रुई और बैंकिङ्गका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका पूरा परिचय चित्रों सहित झालरापाटनके पोर्शनमें दिया गया है। इसी फर्मके अण्डरमें [illegible] फ्लोराचंद नामक एक फर्म और यहां पर है।

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल

इस फर्मके मालिक श्रीयुत मांगीलालजी सरावगी जैन जातिके हैं। इस दुकानपर बैंकिङ्ग, रुई और कमीशन एजन्सीका काम होता है। श्री० मांगीलालजीका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा हुआ है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल—इस दुकानपर बैंकिङ्ग और रुईका काम होता है।

इसके अतिरिक्त सनावदकी विनयचन्द कैलाशचंद फर्मके, खरगोनकी [illegible] फर्मके, गोगांवकी विनयचंद कैलाशचंद फर्मके और [illegible] फर्मके भी आपका साझा था।

मेसर्स रामनारायण भगवानीराम

इस फर्मका हेड आफिस बड़नगरमें है। इसके मालिक बड़नगरके [illegible] रामनारायणजी हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित बड़नगरमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैंकिङ्ग, गल्ला और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स रामलाल हीरालाल गंगराड़े

[illegible]

गल्लेके व्यापारी

कुकनचंद गेंदालाल
चुन्नीलाल ब्रजलाल
घुन्नीलाल मथुरालाल
दौलतकुमार नत्थूकिशन
पूरनमल गलूसाजी
पूनमचन्द उम्मेदमल
भवानीराम किशनराम
मुन्नालाल नैनसुख
सुभो रमजानी

तांवा-पीतलके व्यापारी—

चिन्तामल पूनमचन्द
नानजी मुकुंदराम
वंशीराम प्यारेलाल
मूलचन्द परमानन्द

घीके व्यापारी

फालूराम चौधरी
नारायण रामसुख
पूराजी धूरामल

ब्रजलाल कन्हैयालाल
बालकृष्ण हजारी
मगनूराम रामकुमार

कपड़ेके व्यापारी

फालूराम इलाही
चिन्तामण घासीराम
घासीलाल पूरालाल
पद्मसिंह जीतमल
भद्रोदास गोकुलदास
बागमल पूरालाल
बागमल मोतीलाल
रामरतन रामकिशन
रामरतन जवाहरमल
हीरालाल जगन्नाथ
हंसराज घउराज

घासलेट-तेलके व्यापारी

फिदाहुसेन अलीभाई

आपकी निम्नलिखित स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) शाकरगांव—छुन्नुलालसा फत्तूसा—यहां रुई कपासकी आढ़त खरीद फरोख्त तथा लेन-देनका काम होता है।

(२) सनावद—रामासा हीरालाल—यहांपर बैङ्किग और कॉटन कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) खंडवा—छज्जूलालसा फत्तूसा—लेन देन एवं मनोतीका काम होता है।

(४) पंधाना—छज्जूलालसा फत्तूसा—पंधानाके आसपास आपके मालगुजारीके गांव हैं। यहां मनोतीका भी व्यवसाय होता है।

बैंकर्स कॉटन मरचेण्ट्स एण्ड ग्रेन मरचेण्ट्स

मेसर्स अमोलकचंदसा फत्तूसा
,, खेमजी श्यामजी
,, जसरूप बैजनाथ
,, जयकिशन गोपीकिशन
,, धन्नालाल केशवसा
,, पद्मसा हीरालाल
,, विनोदीराम बालचंद
,, मांगीलाल गोरेलाल
,, रामनारायण भवानीराम
,, रामासा हीरासा
,, रामधन ओंकार
,, लखमीचंद केशरीमल
,, विमलचंद कैलासचंद
,, हुकुमचंद दशरथसा

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स घनश्यामसा ज्ञानचंदसा
,, चन्दूलाल हणुतराम
,, गोवर्द्धनदास जगन्नाथ
,, पन्नालाल विट्ठलदास
,, मांगीलाल कन्हैयालाल
,, मायाचन्दसा ज्ञानचन्दसा
,, लक्ष्मीचन्द घासीराम
,, हाजीअब्दुल गुलाम रसूल

चांदी सोनेके व्यापारी

अमोलकचन्दसा केशवसा
जड़ावचंद कुन्दनसा
बालमुकुन्द विट्ठलदास
रूपचंदसा प्यारचंदसा

लोहेके व्यापारी

बाबूलाल बुकनदास
महम्मदहुसेन मल्लाबक्ष

इन्दौर-राज्य

INDORE-STATE

खरगोन*

सनावदसे ४२ मीलकी दूरीपर इन्दौरका यह सबसे बड़ा कसबा बसा हुआ है। इसकी जन संख्या ११००० है जो इन्दौर स्टेटमें इन्दौर शहरको छोड़कर सब स्थानोंसे अधिक है। यह स्थान इन्दौरके नेमाड़ जिलेका एक प्रधानसे केन्द्र है। यहांपर कपासका व्यापार अच्छे परिमाणमें होता है। यहांपर रुईके व्यापारियोंकी अच्छी २ दुकानें हैं। जिनमें मेसर्स विनोदीराम बालचन्द, मेसर्स जवाहर बैजनाथ, मेसर्स रामकिशन गोपीकिशन, मेसर्स कपूरचन्द हीरालाल, मेसर्स हाजी हुसैन महम्मदके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

यहांपर बहुतसी कॉटनकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां बनी हुई हैं जिनका विवरण इस प्रकार है—

(१) गोपीकिशन सुन्दरलाल कॉटन प्रेस खरगोन
(२) विनोदीराम बालचंद कॉटनप्रेस खरगोन
(३) हाजी हुसैन महम्मद कॉटन प्रेस खरगोन
(४) विनोदीराम बालचंद जीन खरगोन
(५) हीरालाल कपूरचंद जीन खरगोन
(६) जसवंतसिंह नरसिंह जीन खरगोन
(७) गोपीलाल सुन्दरलाल जीन खरगोन
(८) हाजी हुसैन जीन खरगोन
(९) बल्लभदास गोकुलदास जीन खरगोन

इसके अतिरिक्त गल्लेका व्यवसाय भी इस स्थानपर अच्छा होता है।

---

* पुस्तक छपनेमें बहुत शीघ्रता होने, और खरगोन महेश्वर आदिके व्यापारियोंके दिये हुए पत्रोंका उत्तर न मिलनेसे हम खरगोनके व्यापारियोंका परिचय प्रकाशित नहीं कर सके। इसका हमें खेद है।

—प्रकाशक

गल्लेके व्यापारी

कुन्दनचंद गेंदालाल
चुन्नीलाल ब्रजलाल
चुन्नीलाल मथुरालाल
दौलतकुमार नत्थूकिशन
पूरनमल गलूसाजी
पूनमचन्द उम्मेदमल
भवानीराम किशनराम
मुन्नालाल नैनसुख
सुभो रमजानी

तांबा-पीतलके व्यापारी—

चिन्तामल पूनमचन्द
नानजी मुकुंदराम
बंशीराम प्यारेलाल
मूलचन्द परमानन्द

घीके व्यापारी

कन्हैराम चौधरी
नारायन रामसुख
पूरजी धूरमल

ब्रजलाल कन्हैयालाल
बालकृष्ण हजारी
मगनूराम रामकुमार

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम इलाही
चिन्तामण घासीराम
धारालाल पूरालाल
पद्मसिंह जीवमल
बद्रीदास गोकुलदास
बागमल पूराखल
बागमल मोतीलाल
रामरतन रामकिशन
रामरतन जवाहरमल
हीरालाल जगन्नाथ
हंसराज बछराज

घासलेट-तेलके व्यापारी

फिदाहुसेन अलीभाई

श्री विश्वनाथजी मंत्री (पृथ्वीराज प्रभुलाल) मनासा

श्री [illegible]लालजी बोरदिया (गुलाबचन्द धनराज) भानपुरा

इन्दौर-राज्य

INDORE-STATE

ती आंखोंको तृप्त कर देती है। श्रावण मासमें तो
स जंगलमें खैर, धावड़ा, ढक, शतावरी, गोंद, सफेद
के पुष्प इत्यादि कई प्रकारकी जड़ी बूटियां तथा कई
दिया गया है। यहां भी प्रचुरतासे पाये जाते हैं।
ला बना है। इस किलेका इतिहास बड़ा पुराना है।
ृति चिन्ह वहां पर पाई जाने वाली तरह तरहकी
बाबाजीका रमणीय कुंड भी इसी जंगलमें है।
।
नेक संस्था स्थापित है, जिसके उत्साही कार्य कर्ता

पान, घी और कपास प्रधान है। आनेवाली
ई वगैरह हैं। इस स्थानसे ८ मीलकी दूरी पर
मीलकी दूरी श्रीछत्रपुर स्टेशन है। इन्हीं स्टेशनों
से यहांतक पक्की सड़क भी है। एक सड़क यहांसे
है। यहांपर नारायण जगन्नाथ नामक एक जीन
: प्रकाशनका श्रेय भी इसी छोटेसे ग्रामको है।
शहोंका निवास भी यहीं है।
रिचय इस प्रकार है।

ंद धनराज

जजी तथा इनके पुत्र मन्नालालजी चोरड़िया हैं।
श्रीयुत मन्नालालजी बड़े उत्साही युवक हैं।
लेते रहते हैं। वर्तमानमें आपकी दूकानपर बैंङ्किंग
माड़वका काम भी आप करते हैं।

द गुलाबचंद

ाजी और सरदारमलजी हूमड़ हैं। आप दिगम्बर
होता है। श्रीयुत सरदारमलजी बहुत उत्साही नव-
का काम होता है।

चन्द्रावती गंज

इस बस्तीको सेठ दीपचन्दजीने बसाया है। जिनका परिचय नीचे दिया जाता है स्थान फतेहाबाद स्टेशनके सामने करीब ४ फर्लांगकी दूरीपर बसा हुआ है।

मेसर्स धन्नालाल दीपचन्द

इस फर्मके मालिक दांता (रामगढ़) के निवासी हैं। इस दूकानको फतेहाबाद ग्वालि स्टेटमें स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस दुकानके कामको सेठ मोहनलालजी और धन्नाला ने जमाया। इनके बाद सेठ दीपचन्दजीने इसके कारोबारको सम्हाला। आपके जीवनमें एक भारी बात यह हुई, कि फतेहाबादके जागीरदारसे आपसमें मनोमालिन्य होजानेके कारण आ फतेहाबादके नजदीक होल्कर स्टेटमें महारानी चन्द्रावती बाईके नामसे, चन्द्रावतीगंज नामक मं अपना निजका एक लाख रुपया खर्च करके बसाई।

होल्कर स्टेटमें बस जानेसे आप की मान वृद्धि खूब हुई। महाराजा होल्करने सन् १९ में आपको 'राय रतन' की उपाधि प्रदान की। सन१९२३ में आपके चिरञ्जीव कुँवर नेमीचन्द जीके विवाहमें श्रीमंत होल्कर नरेश खुद आये थे। सेठ दीपचंदजीकी इन्दौरके बाजारमें अच्छ प्रतिष्ठा है। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स धन्नालाल दीपचंद चंद्रावतीगंज (इन्दौर स्टेट)—इस दुकानपर आसामी ले देन गल्ला व रुईका व्यापार होता है।

रामपुरा

चारों ओर टूटी फूटी पहाड़ीयारोंसे घिरी हुई यह बस्ती प्राचीन समयमें चन्द्रावतोंकी राजधानी थी। इनके वंशज जागीरदारके हैसियतसे अब भी यहां रहते हैं। किम्बदन्ति है कि इस स्थानको रामा नामक भीलने बसाया था इसलिये यह रामपुरा कहलाया। यह बहुत पुरानी और ऐतिहासिक बस्ती है। इसके टूटे फूटे मकानोंके हजारों खंडहर आज भी प्राचीन गौरवकी स्मृति दिला

बड़वाह

इन्दौर राज्यके अन्दर यह स्थान बड़ा प्राकृतिक सौन्दर्य्ययुक्त और रमणीक है। इसके एक तरफ नर्मदाकी निर्मल सलिल धारा बह रही है, और दूसरी ओर चोरल नदी इसके सौन्दर्यको बढ़ा रही है। एक ओर ओंकारेश्वरका रमणीक तीर्थ-स्थान इसकी पवित्रताको बढ़ा रहा है और दूसरी ओर कालाकुण्ड का रमणीक पहाड़ इसकी छविको दीप्तिमान कर रहा है। यहांपर [illegible] कुण्ड नामक एक बड़ा ही सुन्दर कुण्ड बना हुआ है। इस कुण्डमेंसे हमेशा एक सोता निकलता रहता है। सर्दीके दिनोंमें इस सोतेमेंसे बड़ा गर्म और सुहावना जल प्रवाहित होता है। इस स्थानके पास और नर्मदाके किनारे महाराज शिवाजीरावके बनाये हुए महल देखने योग्य है।

व्यापारिक दृष्टिसे भी यह स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। रुई और [illegible] व्यापार यहांपर खूब होता है। यहाँ करीब दस ग्यारह जीनिङ्ग फेक्टरियां बनी हुई हैं। जिनके नाम इस प्रकार है।

(१) जयकिशन गोपीकिशन काटनप्रेस बड़वाह
(२) जसरूप वैजनाथ काटनप्रेस बड़वाह
(३) जयकिशन गोपीकिशन जीन बड़वाह
(४) रामनारायण भवानीराम जीन बड़वाह
(५) रामनारायण भवानीराम काटनप्रेस बड़वाह
(६) जसरूप वैजनाथ जीन बड़वाह
(७) लछमनदास केशरीमल जीन बड़वाह
(८) लछमनदास केशरीमल प्रेस बड़वाह
(९) छगनलाल नानचन्द जीन बड़वाह
(१०) रामकिशन बलदेव जीन बड़वाह
(११) छगनलाल मथुरालाल जीन बड़वाह

है और तकुओंकी १०,१३,८२१ । बाकी चार मिलें मद्रासमें हैं जिनमें ५६५ कर्घे हैं और एक मिल संयुक्त प्रान्तमें है। जिस भाँति जूटकी पैदावारका ठेका बङ्गालने ले रखा है उसी भांति इसके उद्योगमें भी प्रधान हाथ या कहा जाय कि लगभग समचा हाथ बंगालका है। हुगलीके किनारे दूर तक ये मिलें चली गई हैं। और स्वयं मिलोंकी दशा अच्छी होनेके कारण इनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी भी दशा अच्छी है और उन्हें भारतवर्षकी अन्य किसी भी कामकी मिलोंके मजदूरोंसे मजूरी अधिक ही मिलती है। मिलोंका पूर्व इतिहास सन्तोषप्रद ही नहीं पर बहुत समृद्धि पूर्ण रहा है। सन् १९१४ में कचे पाटके दाम बहुत चढ़ गये। कलकत्तामें भाव ८२ रुपये गांठ और लंदनमें ३६ पौंड प्रति टनका दाम होगया। जब युद्ध आरम्भ हुआ कलकत्तामें भाव ५०-५५ रुपया और लन्दनमें २३½ पौंड ही रह गया। इसपर भी जब फसलकी आनुमानिक रिपोर्ट निकली और उसमें बड़ी भारी फसलकी बड़ी बात प्रगट हुई तो दाम बुरी तरह घट गये और उस समय मिलोंने यह समझकर कि युद्धमें उनके बनाये हुए मालकी बड़ी मांग रहेगी कचा माल खूब मन्दे दामोंमें भर पेट खरीद किया। इधर कचा माल सस्ते दामोंमें मिलना और बनाया हुआ माल हाथों हाथ ऊंचे दामोंमें बिक जाना इससे और अधिक क्या बात हो सकती थी। जूटके बने पदार्थोंका निर्यात सन् १९१४-१५ में १७३ लाख पौंडका हुआ वही सन् १९१६-१७ में २८० लाख पौंड, सन् १७-१८ में २९० लाख पौंड और सन् १८१८-१९ में ३५० लाख पौंडका हुआ। युद्ध काल जूट उद्योगके लिए स्वर्ण युग होगया जिसमें मिलोंने आश्चर्यजनक उन्नति की एवं अपार वैभव और समृद्धि पैदा की।

एक्सपोर्ट ड्यूटी

सरकारको जूट और उसके पदार्थोंके निर्यातसे एक्सपोर्ट ड्यूटी अर्थात प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयासे अधिक ही बैठती है यह पहले लिखा जा चुका है। सन १९१६ की पहली मार्चसे भारत सरकारने कचे पाटपर (टुकड़ोंको छोड़कर) ४०० रतलकी प्रति गांठ पर २¼ रु० अर्थात मूल्यके लिहाजसे अनुमान ५ रु० सैकड़ा एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाया। टुकड़ोंपर ड्यूटी दस आना प्रति गांठ नियत की गई इसी भांति हेसियनपर १६ रुपया प्रति टन और बोरोंपर १० प्रति टनकी ड्यूटी लगाई गई। सन् १९१७ की पहली मार्चसे यही ड्यूटी डबल कर दीगई और कचे पाटकी ४½ रुपया टुकड़ोंकी १¼ रुपया प्रतिगांठ, हेसियनपर ३२ रु० और बोरोंपर २० रुपया प्रति टन हो गया। यह ड्यूटी बिमलीपटम जूटपर लागू नहीं पड़ती।

रुई

भारतके निर्यातमें रुईका निर्यात प्रधान स्थान धारण करता है। यद्यपि सन् १९२५-२६ में

६४११ लाख रुपयेकी ४१,७३,००० गांठोंका निर्यात हुआ था। सन् १९२६-२७ में यहां फसलकी खराबी और अमेरिकामें भारी पैदावार एवं अमेरिकन रुईके सस्ती होनेके कारण यहांसे केवल ५८६० लाख रुपयेकी ३१९८००० गांठें बाहर भेजी गईं। सन् १९२६-२७ में रुईके निर्यातमें भारतके समूचे निर्यातका १९ सैकड़ा भाग रहा जो १९२५-२६ में २५ सैकड़ा और १९२४-२५ में २४ सैकड़ा रहता था। भारतीय रुईका सबसे बड़ा खरीददार जापान है। उसने सन् १९२५-२६ में ४७॥ करोड़ रुपयेकी २०,८४,००० गांठे ली थी वहीं सन् १९२६-२७ में ३५॥ करोड़की १८,४२,००० गांठें ली। चीनको ३,९१,००० गांठें गईं। इटलीने ३,१५,०००, जर्मनीने १,४१,००० बेलजियमने १,५६,००० फ्रांसने १,२३,००० और स्पेनने ५४,००० गांठें लीं। ग्रेटब्रिटेनको निर्यातमें बहुत घटी हुई। सन् १९२५-२६ में उसने २,३५००० गाठें ली थी पर सन् १९२६-२७ में केवल ८७,००० गांठें लीं।

जिस भांति पाटके निर्यातमें बंगाल प्रधान है उसी भांति रुईके निर्यातमें बम्बई प्रधान है। रुईके समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा भाग बम्बईसे, २६ सैकड़ा करांचीसे और ५ सैकड़ा मद्राससे माल बाहर भेजा गया। सन् १९२६-२७ में रुईकी पैदावारका अनुमान ५० लाख गांठका था और अमेरिकाकी फसल सन् १९२६में १,८६,१८००० अथवा ४०० रतलकी २३२७२००० गांठोंका अन्दाजा किया गया था। इस भांति अमेरिकामें भारतसे अनुमानतः चौगुनी रुई पैदा होती है। सबसे बढ़िया रुई मिश्रकी होती है जहांकी फसल सन् १९२६ में १९३ लाख गांठोंकी कूती गई थी। मिश्रकी रुईसे दूसरे नम्बरमें अमेरिकाकी रुई होती हैं और तीसरे नंबरमें भारतकी। भारतीय रुईकी अनुमान २० लाख गांठे यहां भारतकी मिलोंमें खपजाती हैं। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि भारतमें रुई यहां की आवश्यकतासे अधिक होती है, क्योंकि भारतमें विदेशी कपड़ा ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है। जबतक इसतरह विदेशी कपड़ा आता रहेगा तबतक यहांकी रुईका बाहर जाना रुईकी अधिकता कैसे कही जासकती है। एक बात अवश्य है कि ५०-६० करोड़की जो रुई बाहर जाती है उसे यदि भारतहीमें रखकर कपड़ा बनाया जाय तो वह बहुत अधिक मूल्यका—कमसे कम १ अरब रुपये का—हो जायगा और यहांकी कपड़ेकी आवश्यकता जो कपड़ेके आयातसे प्रगट होती है अनुमान ५०-६० करोड़ रुपयेकी है इस हिसाबसे ५०-६० करोड़ रुपयेका कपड़ा अधिक बन जायगा। इसमें क्या हर्ज है, यहांकी आवश्यकतासे अधिक जो कपड़ा बचे वह फिर बाहर भेज दिया जाय। देशके लिए यह निश्चय ही लाभप्रद होगा कि कच्चे मालके स्थानमें तैयारी भेजा जाया जब रुई जिससे कपड़ा बनता है यहीं मौजूद है तब फिर क्यों तो वह बाहर भेजी जाय और क्यों बाहरसे कपड़ा मंगाया जाय। क्यों न यहांकी रुई यहीं रहे और उससे कपड़ा बना लिया जाय जिससे बाहरसे न मंगाना

कपड़ेके व्यापारी

किशनजी जीवराज नाहर
केसरीचंद रखबचंद भंडारी
छव्याजी जड़ावचन्द
ख्यालीजी राजमल सुराना
पन्नालाल तेजमल मारू
पृथ्वीराज मन्नालाल फड़ावत
मगनीराम जड़ावचन्द

गल्लेके व्यापारी

गञ्याजी साकरचन्द
छिनीदास मोतीलाल
बच्छराज मन्नालाल राबिया
शिवलाल चिमनलाल
शिवचंद मन्नालाल धाकड़

किरानाके व्यापारी

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

लोहेके व्यापारी

अब्दुल हुसेन महम्मदअली

पीतलके बर्तन

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

मानपुरा

सुप्रसिद्ध अर वली पहाड़के रमणीय अंचलमें बसा हुआ यह एक छोटासा कसबा है। ऐ[सा] कहा जाता है कि इस गांवको माना नामक भीलने बसाया था। इसीसे इसका नाम मानपुरा प[ड़ा]। करीब १००-१२५ वर्ष पूर्व यह गांव जयपुर राज्यके अंतर्गत था। जयपुरके तत्कालीन महार[ाजा] माधोसिंहजीको मदद करनेके बदलेमें महाराजा यशवंतरावको यह जिला मिला था। यह [स्थान] महाराजा यशवंतरावको बहुत पसंद था। आपका स्वर्गवास भी इसी स्थानपर हुआ है। आ[पकी] स्मृतिमें यहांपर एक बड़ी रमणीक छत्री बनी हुई है। जो इन्दौर राज्यकी एक मशहूर वस्तु स[मझी] जाती है।

कुछ समयके पूर्व यह कसबा व्यापारका एक अच्छा केन्द्र था जिन दिनों अफीमका [व्यापार] चलता था, उन दिनों यहांपर बहुतसे अच्छे २ व्यापारी व्यापार करते थे। मगर अफीमका व्या-पार बंद होते ही और पासमें सनावदगंज मंडीके खुल जानेसे यहांका व्यापार नष्ट होगया और आज यह कसबा व्यापार शून्य होकर बरबाद होता जारहा है। फिर भी पानकी खेती होनेसे इसका अच्छा यहांपर अच्छा चल रहा है। यहांसे बहुत दूर दूरके प्रांतों तक पान एक्सपोर्ट होता है। प्राकृतिक सौन्दर्य भी यहांका बड़ा रमणीक है इसके पाससे एक नदी बह रही है, और इसके दूसरे किनारे अरवलीका रमणीक पहाड़ झुका हुआ है। इस पहाड़में कई सुन्दर प्राकृतिक कुंड, कन्-

होता है। निर्यातके लिए ग्रेट ब्रिटेनको मात्र C. I. F. प्रति रतल बोला जाता है। बंबईमें निर्यात ३९२ से ५०० रतल तककी गांठोंका होता है करांचीमें ४०० रतल की गांठ, कलकत्तामें ३१२ रतल की गांठ और मद्रासमें ४०० से ५०० रतल तक की गांठ होती है।

सन १९२३ के कानून (Indian Cotton cess act XIV of 1923) के अनुसार भारतमें उत्पन्न होने वाली रुई पर दो आना प्रति गांठ (४०० रतल) पर या खुली रुई पर दो पैसा प्रति एक सौ रतल पर चुंगी लगाई गई है। इस चुंगीसे जो आय होती है वह इंडियन सेंट्रल काटन कमिटीके हाथमें सौंप दी जाती है और उससे इंडियन काटन कमिटीकी बताई हुई बातोंके अनुसार कार्य किया जाता है। इससे रुईकी कृषिमें सुधार और अनुसन्धानादिक कार्य किये जाते हैं। इस विषयमें इन्दौरकी संस्था भी अच्छा काम कर रही है। कमेटी अन्य प्रान्तोंको भी इस कार्यमें आर्थिक सहायता देती है। यदि वे इस विषयकी विशेष खोज और कीड़ोंसे बचाव या रुईके दाग आदिकी खोजमें हाथ डालें। मद्रास, सिंध और खानदेशमें भी यह काम आरंभ करनेका निश्चय किया गया है। इंडियन सेंट्रल कमिटीने बाहरसे आई हुई सब अमेरिकन रुईको हाइड्रोसियानिक एसिडगेससे धूंनी देनेकी प्रणाली स्थिर करनेमें सफलता पाई है जिससे अमेरिका के बोलवीविल (Boll weevil) नामक कीड़ेके यहां भारतमें प्रवेश करनेका भय न रहे।

रुईका बना माल

यद्यपि भारतमें विदेशी कपड़ा प्रति वर्ष ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है तथापि यहांसे सूत और कपड़ेका थोड़ासा निर्यात भी होता है। यहांकी मिलोंकी दशा सन्तोषजनक नहीं है। कपड़ेकी काफी खपत होने पर भी यहांके सूत और कपड़ेके उद्योगकी दशा अच्छी न होनेके कारण इसकी जांचके लिए सरकारने टेरिफ बोर्ड नियत किया। बोर्डने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी और सरकारने भी आँसू पोंछनेकी चेष्टा की। कई तरहकी मिल स्टोर सामग्री और मशीनरी पर सरकारने आयात कर हटा दिया और बाहरसे आनेवाली सूते पर आयात कर लगा दिया। इस प्रकार दो एक बातें की गई हैं पर इनसे भारतके इस उद्योगमें कितनी सहायता पहुंचती है यह सन्दिग्ध है। इसके उद्योगियोंकी शिकायतें अभी मिटी नहीं हैं और न जाने देशके इस बड़े भारी उद्योगकी दशा कब सन्तोषजनक होगी।

सूतका निर्यात सन् १९२५-२७ में ३,०६ लाख रुपयेका हुआ। इस रकमका ४१५ लाख रतल सूत बाहर भेजा गया, जिसमेंसे चीनने १०३½ लाख रुपयेका १,६० लाख रतल माल लिया। सीरिया, फारस और एडनने क्रमशः ३६ लाख ४४ लाख और ३८ लाख रतल सूत लिया। मिश्रने ५० लाख और स्यामने २६ लाख रतल माल लिया।

हुई। चांवल इस वर्ष ५,१५,००० टन अर्थात् २० सैकड़ा कम भेजा गया इसी भांति गेहूं ३६००० टन अर्थात् १७ सैकड़ा कम भेजा गया। जौ सन् १६२५-२६ में जहां ४२००० टन भेजा गया था वहां इस वर्ष केवल १६०० टन बाहर गया। दाल दलियेकी चीजें चना मटर आदिका निर्यात १,१८,००० टन हुआ अर्थात इसमें भी २१,००० टनकी घटी हुई। नीचे गत तीन वर्षोंके एवं युद्धके पहलेके पंच वर्षीय औसतका ब्यौरा दिया जाता है:—

	युद्धके पूर्व औसत	सन् १६२४ २५	१६२५ २६	१९२६ २७
	हजार टन—			
चांवल	२,४४०	२,३०१	२,५८५	२,०५८
गेहूं	१,३०८	१,११२	२१२	१७६
गेहूंका आटा	५१	७८	६७	५९
दाल दलियेकी चीजें	२६१	२८६	१३६	११८
जौ	२२७	४४६	४२	२
जवार और बाजरा	४१	५	१४	१५
मकई और अन्य धान्य	४६	२६	४	१
कुल जोड़ हजार टन	४५०१	४२६०	३०६३	२४२६
कुल मूल्य लाख रुपया	२५,८२१	६५०६	४८,०३,	३१२५

इन पदार्थोंमें मुख्य निर्यात चांवलका है जिसका सन् १६२६-२७ में ८५ सैकड़ा, गेहूंका १० सैकड़ा और दाल दलियाका ५ सैकड़ा भाग रहा।

चांवल—इसका ३३,२० लाख रुपयेका निर्यात हुआ। चांवलके निर्यातमें बरमा मुख्य है जहांसे ८७ सैकड़ा और बंगाल तथा मद्राससे ५-५ सैकड़ा मालका निर्यात हुआ। सबसे अधिक माल सीलोनको गया जिसने ३,६६०००, टन लिया। स्ट्रेटसेटलमेंटको २,०४००० जर्मनीको १,१४,००० चीन और हांगकांगको १८८००० मिश्रको १८२,००० ग्रेटब्रिटेनको ७७,०८० और नेदरलैंडको ७४,००० टन चांवल भेजा गया।

पहले चांवल छिलका सहित रहता है जिसे धान कहते हैं। कृषक इस छिलके सहित चांवल या धानको किसी स्थानीय व्यापारी या मिलके आदमीके हाथ बेच देता है। चावलकी फसल नवम्बरके अन्तमें कटती है और माल जनवरी महीनेमें बाजारमें आता है। मिलें अपनी नावें रखती हैं और मालके खरीददारोंको रुपया अगाऊ देकर उनके द्वारा माल खरीद करती है। व्यापारी धान खरीदकर मिलोंमें ले जाते हैं और वहां उसका नाप होता है। धान इतने जल्दी नाप लिया जाता है कि नावें माल एक ही दिनमें उतार वापिस चली जा सकती है। नावमेंसे जब माल खाली किया जाता है तो उसकी कुछ डालियां

लिये एक कमिश्नर (Food stuffs commissioner) नियत किया गया और चावलके कमिश्ना-का इसी उसके नीचे कर दिया गया। इस प्रतिबंधक प्रणाली (control scheme) का ध्येय यही था कि किस देशको कितना माल भेजा जाय इसका निर्णय सरकारके हाथमें रहे और जो बाहर जाने उसके लिए सरकारसे लाइसेंस लेना पड़े। ये लाइसेंस तभी दिये जाते थे जब यह बात सिद्ध हो जाती थी कि बाहर जानेवाले चावलके लिए नियत किये हुए भावसे ऊंचा दाम नहीं दिया गया है। धानकी कमीके कारण १९१९के मई महीनेमें सरकारको भी भावकी लिमिट बढ़ा देना पड़ी और फिर १९२०के जनवरीमें जब इस कानूनके पक्षमें सुधार हुआ तो दाम और भी बढ़ाने पड़े १९२०के अन्ततक प्रतिबंध चलता रहा पर उस समय चावलके लिए भारतीय मांगके एकदम घट जानेपर इस विषयमें फिरसे विचार करना आवश्यक हुआ। सन् १९२१में चावलके लिए रोकटोक उठा दी गई और निर्यात सुचारुरूपसे किया गया। पर हां इस कामके लिये लाइसेंस प्राप्त करना जरूरी रक्खा गया और यदि भाव अधिक ऊंचा चढ़ा जाय तो फिरसे प्रतिबंध कर दिया जायगा यह बात भी खुली रक्खी गई। सन् १९२१के दिसम्बरमें बरमासे चावलके निर्यातपर और सन् १९२२ की १ अप्रैलको भारतसे चावलके निर्यातपर सब तरहकी रोकटोक उठा दी गई। इस कंट्रोलसे ६ करोड़ रुपयेकी बचत रही जो रकम बरमा सरकारको यहांके प्रान्तीय सुधारके लिए सौंप दी गई।

गेहूं

गेहूं दूनियाकी सम्पूर्ण पैदावारका एक दसवां भाग भारतमें पैदा होता है और यद्यपि इसका व्यवहार भारतमें थोड़ा बहुत सब जगह होता है तथापि यह पंजाबका एक मुख्य पदार्थ है। सन् १९२६-२७में इसका निर्यात २,७१ लाख रुपयेका हुआ। यह निर्यात घटता आ रहा है। इसका एक प्रधान कारण विदेशोंमें गेहूंकी पैदावारका बढ़ जाना है। सन् १९२४-२५में यहांसे ११,१२००० टनका निर्यात हुआ था वही सन् १९२५-२६में २,१२,०00 टनका रह गया और उससे फिर घटकर सन् १९२६-२७में १,९६,००० टनका रह गया। सन् १९२६-२७में भारतमें गेहूंकी कुल पैदावार ८९९ लाख टनकी बैठी। सबसे अधिक गेहूं—अर्थात् १,५१००० टन—ग्रेट ब्रिटेनको भेजा गया। फ्रांस को १३,४०० टन बेलजियमको ७४०० टन इटलीको ९५० टन, अरबको १७०० टन और दक्षिण-अफ्रिकाको ३००० टन गेहूं भेजा गया। गेहूंका मुख्य निर्यात करांचीसे होता है जहांसे ९६ सैकड़ा और बम्बईसे ३ सैकड़ा माल गया। ४०,३७६ टन गेहूंका आयात भी हुआ जिसमें मुख्यतया आस्ट्रेलियासे आया। सन् १९२५-२६में ३५,४२० टन गेहूं आया था। भारतमें गेहूंका आयात बढ़ रहा है सन् १९२४-२५में केवल ४१९.८ टन गेहूं आया था। गेहूंका आयात गत तीन वर्षोंमें किस प्रकार बढ़ा है यह बात इन अंकोंसे स्पष्ट हो जाती है। न जाने भारतके भाग्यमें क्या बदा है कि जो धन-धान्यका भण्डार था वहीं अन्य पदार्थोंके साथ अब धान्यके भी आयातका मौका आने लगा है।

श्री विश्वनाथजी झंवर (पृथ्वीराज प्रभूलाल) मनासा

यद्यपि सन् १९१८ के अक्टूबर महीनेमें रायल कमीशनके खाने गेहूंकी खरीद करना बन्द कर दिया गया था तोभी अगले वर्ष कमीशनकी तर्फसे ३,२१,५६४ टनका निर्यात हुआ।

सन् १९१८-१९ में वर्षाकी कमीके कारण पंजाबकी फसलमें अधिक हानि न हुई पर तोभी भारतमें अन्नका भाव बहुत मंहगा हो गया और इसलिये रायल कमीशनने कुछ समय पहले जो बहुतसा आस्ट्रेलियाका गेहुं खरीद रखा था उसमेंसे थोड़ा भारत सरकारने ले लिया। सन् १९१९ के मार्चसे जून तक ४ महीनोंमें यहांपर १९८००० टन आस्ट्रेलियाका गेहुं आया। सन् १९२० में फसल यहां अच्छी हुई और सरकारने ४ लाख टन गेहूं निर्यात करनेकी आज्ञा दे दी पर उस वर्ष करांचीसे केवल २२९००० टनका निर्यात हो सका। अगली साल फिर मानसूनकी खराबीके कारण फसलको धक्का पहुंचा और केवल ८०००० टनका निर्यात हुआ लेकिन आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे ४॥ लाख टन गेहूंका आयात हुआ। सन् १९२१-२२में फसल बहुत अच्छी हुई और गेहूंकी पैदावार ९८ लाख टनकी कूंती गई। इस वर्ष निर्यात सम्बन्धी सब तरहकी रुकावटें दूर कर दी गईं और तब २२०००० टनका निर्यात हुआ।

गेहूंका आटा—

सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात १३२ लाख रुपयेका हुआ। गत वर्ष १५६ लाख रुपयेका ६७२०० टनका निर्यात हुआ था उसकी जगह इस वर्ष ५८९०० टन बाहर गया। इसमेंसे मिश्रको १५८००, अरबको ८९००, मेसोपोटामियाको २२०० ऐडनके राज्यको ७१००, फारसको ३००० और सिलोनको ४००० टन भेजा गया। भारतमें आटा पीसनेकी मिलें भी बड़े बड़े शहरोंमें हैं जिनमें मैदा आटा और सूजी इस भांति तीन तरहका माल निकाला जाता है पर निर्यात मुख्यतया आटेका ही होता है।

अन्य खाद्य पदार्थ—

सब प्रकारके अन्य खाद्य पदार्थोंका निर्यात २०२ लाख रुपये मूल्यके १३६००० टनका हुआ। इनमें जौ, जवार, बाजरी और चनाका निर्यात मुख्य है। जौका निर्यात यद्यपि सन् १९२५-२६ में ४२४०० टनका हुआ था सन् १९२६-२७ में केवल १६०० टनका हुआ जिसमेंसे १२०० टन अरबने लिया। जवार और बाजरीका १५३०० टन और चनेका १४००० टनका निर्यात हुआ।

चाय—

सन् १९२६-२७ में चायका निर्यात २९०४ लाख रुपयेका हुआ। सन् १९२६ में ७४०००० एकड़की खेतीमें ३९३० लाख रतलकी पैदावार हुई। चायकी खेतीमें आसाम प्रधान है जहां समूची पैदावारका ६२ सैकड़ा भाग पैदा हुआ। ३४९० लाख रतलका निर्यात हुआ, जिसमें २९ करोड़ रतल ग्रेटब्रिटेनने ले ली। चायके निर्यातमें कलकत्ता प्रधान है जहांसे समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा निर्यात हुआ। चटगांवसे २२ सैकड़ा और मदराससे १२ सैकड़ा माल भेजा गया।

तिलहनके विषयमें हम समझते हैं कि इन पदार्थोंका एक्सपोर्ट रोकना देशके लिए हितकारक नहीं होगा। तिलहनकी पैदावार यहांकी खपतसे अधिक होती है और समस्त तेल पदार्थोंसे यदि तेल निकाला जाय, तो वह यहां खप नहीं सकता। तेलको यहांसे भर कर एक्सपोर्ट करनेमें बहुत कठिनाइयां हैं और तेलका लाभदायक एक्सपोर्ट होना कठिन है।

चमड़ा—

कच्चा और कमाया हुआ दोनों तरहके चमड़ेका निर्यात १४६८ लाख रुपयेका हुआ। इसमेंसे अधिक भाग ग्रेटब्रिटेनको गया। भारतमें चमड़ा काफी होता है और यहां इसकी कोई कमी नहीं है जिसके कारण चमड़ा या चमड़ेके पदार्थ बाहरसे मंगाना पड़े। किन्तु बाहरी चमकदमकके कारण अभी बाहरसे तैयारी चमड़ा और उसकी चीजें भारी परिमाणमें आती हैं। युद्धके पूर्व यहांका चमड़ेका व्यापार जर्मन कम्पनियोंके हाथमें था पर इधर चमड़ेको कमानेमें यहां कुछ उन्नति की गई है। इसीलिए अनुमानतः आधा निर्यात कमाये हुए चमड़ेका होता है।

सन् १९११ के सितम्बर महीनेसे कच्चे चमड़ेके निर्यातपर १५ सैकड़ा ड्यूटी लगाई गई जिसमें जो माल ग्रेटब्रिटेन या उसके अधिकृत किसी देशको जाता है उसपर दस सैकड़ा फिरती मिल जाती थी। १९२३ की एक मार्चसे यह ड्यूटी पांच सैकड़ा कर दी गई और इसमें किसी तरहका भेद भाव नहीं रखा गया माल चाहे जहां भेजा जाय ड्यूटी सबपर समान पांच सैकड़ा कर दी गई। सन् १९२७ के फाइनेंस बिलमें लेजिस्लेटिव असेम्बली समक्ष कच्चे चमड़ेकी निर्यात ड्यूटी उठा देनेकी बात रखी गई पर असेम्बलीने इस प्रस्तावको पास नहीं किया। इससे कच्चे चमड़ेके व्यापारी भले ही असन्तुष्ट रहे हों पर इसके उठा देनेसे भारतमें चमड़ेको कमानेके उद्योगोंको जो धक्का लगता वह बच गया।

धातु—

सब प्रकारकी धातुका निर्यात ५११ लाख रुपयेका हुआ। इसमें लोहा, फौलाद, शीशा आदि सब धातुएं आ गईं। ग्रेट ब्रिटेनमें कोयलेकी हड़तालके कारण वहांके लोहेके उद्योगको बहुत हानि पहुंची और इसी लिए ग्रेटब्रिटेनको भारतसे होनेवाले निर्यातमें गत वर्षकी अपेक्षा घटी रही। इधर भारतसे ये धातुएं इतने परिमाणमें जाती हैं और उधर इनके बने हुए पदार्थ यन्त्र, मशीनरी वगैरह बाहरसे इससे ज्यादा यहां आते हैं।

लाख

इसका निर्यात सन् १९२९-३० में ६,५० लाख रुपयेका हुआ। जापान फारमूसा और दूसरे देशोंने इसकी पैदावारके लिये बहुत यत्न किया गया पर सफलता न हुई। यह थोड़ीसी

पड़े। यदि यहांकी आवश्यकताकी पूर्तिके बाद कपड़ा बच जाय तो कपड़ा ही बाहर भेज दिया जाय। यह बात देशके लिए अधिक हितकारक होगी न कि यह कि कचा माल बाहर भेजकर विदेशी बने हुए पदार्थ लिये जायं।

भारतमें रुई करीब करीब सब जगह होती है और प्रान्तके लिहाजसे उसकी कई जातियां बोली जाती हैं। बंबई नगर रूईका प्रधान बाजार है और देशकी रुईकी पैदावारका अधिक भाग यहीं आता है। यहांसे फिर चाहे उसका निर्यात हो जाता है या वह यहींकी मिलोंमें लग जाती है। कहना नहीं होगा कि भारतीय रुईकी मिलोंका अधिक भाग भी यहीं बंबई और बंबई प्रांतमें विद्यमान है। इसलिए बंबई रुईके व्यापारका केन्द्र है। बंबई प्रान्तमें भिन्न २ स्थानोंकी ऊपजके भिन्न २ नाम हैं यथा (१) उत्तर गुजरात, और उससे जुड़े हुए बड़ौदाराज्यके स्थान और काठियावाड़के अधिक भागमें जो रुई होती है उसे 'धोलेरा' कहते हैं। (२) दक्षिण गुजरात जिसमें भड़ूच और सुरतके जिले और बड़ोदाका नवसारी जिला आ जाता है यहां भारतकी सबसे बढ़िया कहलाने वाली 'भड़ूच' रुई होती है। (३) इसी तरह खानदेश, नासिक, अहमदनगर शोलापुर और हैदराबादके बीजापुर जिलेकी रुई "खानदेश' रुई कहलाती है। (४) धारवाड़ बेलगांव कोल्हापुर और सांगली रियासतोंमें होनेवाली रुईको "कुम्पटा धारवाड़" कहते हैं और इसी भांति (५) सिंध, नवाबशाह, थार पारकर और हैदराबाद जिलेकी रुई "सिंध" रूई कहलाती है।

मध्य भारत और मालवाकी रुई उमरा कहलाती है और इस तरह बंबईके बाजारमें सब तरहकी रुईके अलग अलग भाव होते हैं और इसका बड़ा भारी व्यापार चलता है। सबसे बढ़िया भड़ूच कहलानेवाली रुई होती है जिसका रेशा अन्य सब रुईसे लम्बा होता है और इसी लिए इसका दाम भी सबसे तेज रहता है। भारतमें रुईकी यद्यपि खासा पैदावार होती है लेकिन यहांकी रुई उतनी बढ़िया नहीं होती। इसी लिए यहांके कृषकोंका कहिए या यहांकी मिलोंका हित इसीमें है कि यहांपर ऐसी रुई पैदा हो जिसे संसारका कोई भी सूत कातनेवाला पसन्द कर ले। इसी लिए यहांका कृषि विभाग इस बातकी पूर्ण चेष्टामें है और इस ओर बहुत कुछ उद्यम भी किया गया है कि किस तरह ऊपज बढ़े एवं पैदावार बढ़िया जाति की हो इसके लिए चेष्टा हुई है और हो रही है और इस काममें सफलता भी मिली है। सन् १९२५-२६ में ३० लाख एकड़से अधिक भूमिमें बढ़िया रुई बोई गई जो रुई बोई जानेवाली समूची भूमिका १२ सैकड़ा भाग है। इसमेंसे तीन चतुर्थांश भाग पंजाब बंबई और मदरासका रहा, जहां भारतकी लम्बे रेशे वाली रुई मुख्यतया होती है।

भिन्न भिन्न बंदरोंमें रुईके भाव और तोलकी भिन्न २ प्रणालियां हैं। बंबईमें ७८४ रतलकी एक खंडी पर भाव होता है करांचीमें ८४ रतलके मनपर और कलकत्तामें ४० सेरके मन पर भाव

तमाखू

(कच्चा माल) युद्धके पूर्व यहांसे तमाखूका एक्सपोर्ट प्रतिवर्ष ७३ लाख रुपयेका औसत था। सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात १७ लाख रुपयेका हुआ। इस तमाखू भेजनेमें भारतने कदम बढ़ाया तो उधर बाहरसे धुआं उड़ानेकी चीजें सिगरेट आदि मंगानेमें भी कुछ कमी न रखी। युद्धके पूर्व ७१लाख रुपयेकी सिगरेट आदि आई तो सन १९२६-२७ में कलेजा जलानेके साथही साथ इन पदार्थोंके लिये देशका २३ करोड़से भी अधिक रुपया बाहर भेज दिया। यह बात इम्पोर्ट विषयमें लिखी जा चुकी है।

भारतीय व्यापारके इस छोटेसे इतिहासमें यह स्पष्ट प्रगट हो जाता है कि पहले व्यापारकी क्या दशा थी और वह किस तरहका था। उसके बजाए यहां सब कुछ था, धनकी नदी बहती थी और उद्योग एवं कलाकौशलकी बढ़वारी थी। आज यहांका व्यापार जो भी और जैसा भी हो यह स्पष्ट है कि यहांपर उद्योग धंधेकी कमी है, कला-कौशलकी हीनता है और जो कुछ उद्योग धंधा है उसकी दशा भी संतोषजनक नहीं। हां यहांके व्यापारसे यह बात अवश्य है कि उससे विदेशोंका काम और उनका भरण पोषण चलता है। यहांके व्यापार, और उद्योग धंधोंसे विदेशियोंके मौजमजे और गुलछर्रे उड़ते हैं चाहे भारतवासी भूखे पेटही रहें और उन्हें पेट भर खानेको भी चाहे न मिले।

भारतके व्यापारमें चाहे यहांसे जानेवाले मालको समझिए चाहे यहां आनेवालेको लीजिए सबका मूल विदेशी बाजारोंकी इच्छा और खेल पर निर्भर करता है। हमारे यहांके बाजार विदेशी बाजारोंके आधारपर चलते हैं और सौदेके स्थानोंमें आनेपर यही सुनाई देता है " आज विलायत क्या आई ?" अथवा "अमेरिकाका क्या तार आया" ? यदि विलायतकी या अमेरिकाकी खबर तेज आती है तो यहां तेजी आ जाती है और मंदेकी खबर आनेपर यहां भी मंदी हो जाती है। तात्पर्य यह है कि हमारा व्यापार, जैसे विदेशी नचावें, नाचता रहता है।

इसी भांति यहांके व्यापारसे विदेशी जहाज तार बीमा कम्पनियां एवं बैंक लाभ उठाते हैं क्योंकि ये सब कारबार भी मुख्यतया विदेशी कम्पनियोंके ही हाथमें है। इस भांति जिस व्यापारसे भारतमें उद्योग धन्धेकी, कला-कौशलकी बढ़वारी न हो और न ऊपरी अन्य कारबार— यथा जहाज, बीमा और बैंकिंग आदि—ही भारतवासियोंके हाथमें आवें, तबतक कभी भारतीय व्यापारकी उन्नति कैसे कही जा सकती है। इस लिये भारतके व्यापारकी उन्नतिके लिए इन सब बातोंकी ओर समुचित ध्यान देनेकी पूर्ण आवश्यकता है।*

मोहनलाल बड़जात्या

नोट :—भारतके इस छोटेसे इतिहास लिखनेमें मैंने अंग्रेजीकी कई पुस्तकोंसे यथा "Trade Tarrif & Trans port in India" "Wealth of India" Review of the trade of India" आदिसे एवं हिन्दीकी सुविख्यात मासिक पत्रिका "सरस्वती" "माधुरी" और "सुधा" में प्रकाशित मेरे व्यापार विषयक लेखोंसे विशेष सहायता ली गई है। लेखक।

कपड़ा—इसका निर्यात सन् १९२६-२७ में ३३ लाख रुपयेका हुआ। सन् १९२६-२७ में भारतकी मिलोंने गत वर्षसे १६ सैकड़ा कपड़ा अधिक बनाया और बनाये हुए कुल मालका ८ सैकड़ा भाग निर्यात हुआ। इसमेंसे मेसेपोटामियाने ३,८३ लाख गज, फारसने ३९८ लाख गज, सीलोनने २,१७ लाख गज, और स्ट्रेटसेटलमेंटने २,१४ लाख गज कपड़ा लिया। एडनको ६५ लाख, अरबको ७१ लाख, पूर्वी अफ्रिकाको ३६० लाख, मारीशसको २३ लाख और मिश्रको ३४ लाख गज कपड़ेका निर्यात हुआ।

भारतमें अनुमान ३०० मिलें चलती हैं जिनमें ११ लाख कर्घे और ८०-९० लाख तकुवे होंगे इनमें अनुमान ४ लाख मजूर काम करते हैं। नीचे यहांकी मिलोंकी पैदावार और बाहरसे आये हुए कपड़ेका लेखा दिया जाता है।

	सन् १९१३-१४	सन् १९२४-२५	सन् १९२५-२६	सन् १९२६-२७
		लाख गज		
भारतकी मिलोंने बनाया	१,१६,४०	१,९०,००	१,९५,४०	२,२५,८०
विदेशोंसे आया	३,१९,७०	१,८८,३०	१,५६,३०	१,७८,७०
कुल जोड़	४,३६,१०	३,७१,३०	३,५१,७०	४,०४,५०

अब इसमेंसे जो कपड़ा निर्यात हुआ वह बाद देदिया जावः —

	सन् १९१३-१४	सन् १९२४-२५	सन् १९२५-२६	सन् १९२६-२७
निर्यात भारतीय	८,९२	१८,१५	१६,४८	१९,७४
,, विदेशी	६,२१	५,४३	३,५४	२,९१
कुल जोड़	१५,१३	२३,५८	२०,०२	२२,६५
बाकी कपड़ा जो यहां लगा	४२०,९७	३,४७,७२	३,३१,६८	३,८१,८५

इस भांति जबतक यहांकी खपतका आधेसे कुछ ही कम कपड़ा विदेशोंसे आता है तबतक देशमें कपड़ेका उद्योग समुचित और सम्पन्नावस्थामें है यह कैसे कहा जासकता है। न जाने कबतक भारत यों करोड़ों रुपयोंका अरबों गज कपड़ा विदेशोंसे मंगाता रहेगा और कब वह दिन आयेगा जब यहांकी आवश्यकताके अनुसार यहां बना लिया जायगा। जिस दिन यहांकी पूर्ति यहींके कपड़ेसे होगी उस दिन भारतसे होनेवाला वास्तविक निर्यात कहा जायगा। अभी तो भारतके व्यापारमें कपड़ेके आयातकी प्रबलता जारी ही है।

धान और आटा—पहले लिखा जाचुका है कि भारतके निर्यातमें अधिक भाग कच्चे पदार्थ और खाद्य द्रव्योंका रहता है। सन् १९२६-२७ में इन पदार्थोंका निर्यात ३१,२५ लाख रुपये मूल्यके २४,२६,००० टनका हुआ। युद्धके पहलेके औसतसे इस वर्षके निर्यातमें परिमाणके लिहाजसे ४५ सैकड़ा घटी हुई और सन् १९२५-२६ से परिमाणमें २१ सैकड़ा और मूल्यमें १८ सैकड़ा घटी हुई। सन् १९२५-२६ में ४८ करोड़ रुपये मूल्यके ३० लाख टनका निर्यात हुआ। यह घटी सब पदार्थोंमें

भरकर तोल ली जाती है और उनका जितना वजन उतरता है वही प्रति छावड़ीका वजन माना जाकर सब मालकी छावड़ियां भरकर गिनती करके समूचे मालका वजन निकाल लिया जाता है। तब फिर चावल की मिलोंमें यन्त्र द्वारा धानसे छिलका अलगकर चांवल निकाल लिया जाता है। इसके बाद चांवल और छिलका अलग कर लिया जाता है। चांवलकी कनी होजाती है वह भी अलग कर ली जाती है और फिर चावल अलग बोरोंमें भर लिए जाते हैं और कनी अलग भर ली जाती है। बढ़िया चांवलपर जिसका अधिकतर यूरोपको चलान किया जाता है बेलनों द्वारा पालिस भी दी जाती है ये बेलन लकड़ीके होते हैं और उनपर भेड़का चमड़ा मढ़ा रहता है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि बाहर जो निर्यात होता है वह सबसे अच्छे मालका ही होता है। उदाहरणार्थ यहां गरम पानीमें उबालकर जो चांवल निकाला जाता है जिसे उस्ना चांवल कहते हैं और जो सबसे घटिया होता है उसका निर्यात नहीं होता है पर वह देशवासियोंके ही काम आता है। अथवा भारतीय मजदूरोंके लिए सीलोन और मलाया स्टेट्सको भेजा जाता है। इस उस्ना चांवलकी विधि इस प्रकार है। पहले धान पानीमें भिगो दिया जाता है और ४० से लेकर ८० घन्टे तक पानीमें रखा जाता है फिर गरम पानीमें २० से ४० मिनिट तक उबाला जाता है। उबालनेके बाद फिर वह फैलाया जाकर धूपमें सुखाया जाता है और फिर छिलके अलग किये जाते हैं। यह काम छोटी छोटी मिलोंवाले करते हैं और चांवलको इस भांति सुखानेके लिए बहुत जगहकी जरूरत रहती है यद्यपि मशीन द्वारा भी अब सुखाया जाने लगा है। इस घटिया चांवलसे गरीब जनता अपना पेट पालती है। बरमामें चांवलकी मिलें अनुमान ५०० मद्रासमें तीन सोसे अधिक और बंगालमें सो सवासौ होंगी। रंगूनकी एक अच्छी मिल दिनभरमें ४६ रतलकी २०००० टोकरियां तक निकाल सकती है। पाजूनडंगकी सबसे बड़ी मिल दिनभरमें ६०० टन चावल निकाल सकती है। मौसमके ३ महिनोंमें मिलें दिनरात चलती हैं और इनमें चांवलका छिलकाही जलाया जाता है जिससे मिल चलानेके लिए किसी अन्य पदार्थकी आवश्यकता नहीं होती। बर्मामें ३०० से अधिक मिलें ऐसी हैं जिनमें २० या अधिक मजदूर काम करते हैं। बरमा की मिलें प्रति वर्ष ६० लाख टन चांवल तैयार करती हैं और जितना चांवल उन्हें तैयार करनेको मिलता है उससे अधिक तैयार करनेकी वे शक्ति रखती हैं।

सरकारने चांवलके निर्यातपर ३ आना प्रति मन एक्सपोर्ट ड्यूटी लगा रक्खी है जिससे प्रति-वर्ष १ करोड़ रुपयासे अधिक ही मिल जाता है। सन् १९२२-२३में १०८ लाख, सन् १९२३-२४में १,१८ लाख और सन् १९२४-२५में १,२३ लाख रुपया सरकारको ड्यूटीका मिल गया। सन् १९१८में भारत सरकारने यह नियम बनाया कि बरमासे यूरपको चांवलका निर्यात रॉयलकमीशनके सिवा अन्य किसीको नहीं करने दिया जाय और इसीलिए बरमामें एक कमिश्नर तैनात किया गया। इसी वर्ष वर्षाकी कमी रह जानेसे नवम्बर महीनेमें भारतके खाद्य पदार्थोंके

भरकर तोल ली जाती है और उनका जितना वजन उतरता है वही प्रति छावड़ीका वजन माना जाकर सब मालकी छावड़ियाँ भरकर गिनती करके समूचे मालका वजन निकाल लिया जाता है। तब फिर चांवल को मिलोंमें यन्त्र द्वारा धानसे छिलका अलगकर चांवल निकाल लिया जाता है। इसके बाद चांवल और छिलका अलग कर लिया जाता है। चांवलकी कनी होजाती है वह भी अलग कर ली जाती है और फिर चांवल अलग बोरोंमें भर लिए जाते हैं और कनी अलग भर ली जाती है। बढ़िया चांवलपर जिसका अधिकतर यूरोपको चलान किया जाता है बेलनों द्वारा पालिस भी दी जाती है वे बेलन लकड़ीके होते हैं और उनपर भेड़का चमड़ा मढ़ा रहता है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि बाहर जो निर्यात होता है वह सबसे अच्छे मालका ही होता है। उदाहरणार्थ यहां गरम पानीमें उबालकर जो चांवल निकाला जाता है जिसे उसना चांवल कहते हैं और जो सबसे घटिया होता है उसका निर्यात नहीं होता है पर वह देशवासियोंके ही काम आता है। अथवा भारतीय मजदूरोंके लिए सीलोन और मलाया स्टेट्सको भेजा जाता है। इस उसना चांवलकी विधि इस प्रकार है। पहले धान पानीमें भिगो दिया जाता है और ४० से लेकर ८० घन्टे तक पानीमें रखा जाता है फिर गरम पानीमें २० से ४० मिनिट तक उबाला जाता है। उबालनेके बाद फिर वह फैलाया जाकर धूपमें सुखाया जाता है और फिर छिलके अलग किये जाते हैं। यह काम छोटी छोटी मिलोंवाले करते हैं और चांवलको इस भांति सुखानेके लिए बहुत जगहकी जरूरत रहती है यद्यपि मशीन द्वारा भी अब सुखाया जाने लगा है। इस घटिया चांवलसे गरीब जनता अपना पेट पालती है। बरमामें चांवलकी मिलें अनुमान ५०० मद्रासमें तीन सौसे अधिक और बंगालमें सौ लगभग होंगी। रंगूनकी एक अच्छी मिल दिनभरमें ४½ रत्तलकी ३०००० टोकरियां तक निकाल सकती है। पाजूनडंगकी सबसे बड़ी मिल दिनभरमें ८०० टन चावल निकाल सकती है। मौसमके ९ महिनोंमें मिलें दिनरात चलती है और इनमें चांवलका छिलकाही जलाया जाता है जिससे मिल चलानेके लिए किसी अन्य पदार्थकी आवश्यकता नहीं होती। बरमामें ३०० से अधिक मिलें ऐसी हैं जिनमें २० या अधिक मजदूर काम करते हैं। बरमा की मिलें प्रति वर्ष ६० लाख टन चांवल तैयार करती हैं और जितना चांवल उन्हें तैयार करनेको मिलता है उससे अधिक तैयार करनेकी वे शक्ति रखती हैं।

सरकारने चांवलके निर्यातपर ३ आना प्रति मन एक्सपोर्ट ड्यूटी लगा रक्खी है जिससे प्रतिवर्ष १ करोड़ रुपयासे अधिक ही मिल जाता है। सन् १९२२-२३में १०८ लाख, सन् १९२३-२४में १,१८ लाख और सन् १९२४-२५में १,२२ लाख रुपया सरकारको ड्यूटीका मिल गया। सन् १९१८में भारत सरकारने यह नियम बनाया कि बरमासे यूरपको चांवलका निर्यात रॉयलकमीशनके सिवा अन्य किसीको नहीं करने दिया जाय और इसीलिए बरमामें एक कमिश्नर तैनात किया गया। इसी वर्ष वर्षाकी कमी रह जानेसे नवम्बर महिनेमें भारतके खाद्य पदार्थके

थे। इसके उपरान्त ऐसा भी समय यहां अवश्य आया होगा, जब यहां पर 'चालुक्य' राज परिवारका शासन रहा हो। क्योंकि कोली लोगोंके नामके पीछे 'चोलके' शब्द भी जुड़ा हुआ पाया जाता है।

इस द्वीपपुञ्जकी मलाबार पहाड़ीका इतिहास भी यही बताता है कि कोकन प्रदेशका सम्बन्ध इस द्वीप-पुञ्जसे रहा है। वालकेश्वरकी सेवा करनेके लिये दूरसे लोग यहां आते थे और यह युग सन् ९६७ ई० से १२६२ ई० के बीचका है। यद्यपि आज यह प्राचीन शिवमन्दिर नहीं है, पर चौपाटीसे मलबार पहाड़ीपर चढ़ते हुए 'लेडीज् जिमखाना' के पासका 'सिरी रोड' नामक मार्ग पूर्वकालकी पवित्र स्मृति दिखाई देता है। 'सिरी' शब्द 'सीढ़ी' का सूचक है। यह वही पुराना मार्ग है जिससे होकर सिलहरा राजवंशी भक्तमण्डलीके साथ श्री वालकेश्वरजीका दर्शन करने जाया करते थे। यह प्राचीन मन्दिर भी भारतके अनेक मन्दिरोंके समान समयकी भीषण चोटोंसे आज मिट्टीमें मिल गया है।

कोकन प्रदेशपरसे अनार्य-शासनकी जड़ उखड़ी और इस द्वीपपुञ्जपर आर्यसभ्यताका सूर्य चमका। कोकन प्रदेशमें आर्यसभ्यता-मण्डित शासनकी आधारशिला रखनेका श्रेय मुख्यतया देवगिरिके शासकोंको है। डा० फ्लीट० सी० आई० ई० के मतानुसार देवगिरिके नरेश इतिहासप्रसिद्ध रामदेवका अच्युत नायक नामक एक प्रधान, पष्टी द्वीप (वर्तमान साल्सेट) पर सन् १२७२ ई० के लगभग राज्य करता था। उस समय समस्त कोकन प्रदेश देवगिरिके शासनके अन्तर्गत था। परन्तु दिल्लीके यवन शासक अलाउद्दीन खिलजीने देवगिरि पर जय विजय प्राप्त की तो राजवंशकी रक्षाके उद्देश्यसे रामदेवने अपने द्वितीय पुत्र भीमदेवको राजगुरु भरद्वाज गोत्री पुरुषोत्तम पंथ कवळे तथा अन्य ११ सामन्तोंके साथ जलमार्गसे कोकन प्रदेश भेज दिया। पर मार्गमें ही महाराज भीमदेव परनेटा, थर्डी, संजान, दमन तथा शिरगांवके किलोंपर अधिकार कर माहिम (बम्बई) आ पहुंचे। यह स्थान निर्जन तो अवश्य था, परन्तु इसके प्राकृतिक सौन्दर्यसे रीझकर वे यहां पर ठहर गये। आपने अपने लिये यहां पर राज मन्दिर बनवाये और साथवालोंके लिये योग्य स्थान निर्माण कराये। आपने शासन प्रबन्धकी सुविधाके लिये अपने राज्यको १२ तालुकोंमें विभाजित कर दिया। तथा अपने राजगुरुको मलाड़ प्रांत सूर्य ग्रहणके अवसरपर दानकर दिया। *महाराजने इस द्वीप पुञ्जका नाम महिकावती (माहिम) रक्खा।

इस दान पत्रमें प्राप्त अधिकारोंका उपभोग राजगुरुके वंशज जो पटेल कहाते हैं, बाजीरावके समय तक करते रहे हैं। क्योंकि बाजीराव पेशवाने इन लोगोंके अधिकारके सम्बन्धमें एक पत्र बम्बईके अंग्रेज गवर्नरको लिखा था। जिसके उत्तरमें यहांके गवर्नर ब्रानहोर्नने ६ मार्च सन् १७३४ को एक पत्र लिखा था।

राज परिवार और राज कर्मचारियोंके वंशजोंकी बस्तीका विस्तार भी क्रमशः हो चला। पूर्वकी कोल नामक अनार्य जातिको आर्य सन्तानके समीप बैठ सभ्य बननेका सुअवसर मिला। राजसत्ताने अपन

---

* Vadya ac nut appendix के पृष्ठ ५ पर लिखा हुआ है कि उक्त दानपत्र आज भी मलाड़ (बम्बईका उपनगर) में राजगुरुके वंशजोंके पास है। इस पर लिखा हुआ है कि 'शाके १२२० के माघमासमें महाराजाधिराज बिम्बशाहने गोविन्द मिलकरीकी विधवा बकुलाबाईसे मलाड़ प्रांतको सरदेसाई और सरदेश पाण्डेका वतन २४ हजार रायल्स Rayals दे मोल लिया और एक वर्षके बाद राजगुरु पुरुषोत्तम पंथ कवळेको दान कर दिया।

सन् १९२६-२७ में समुद्री मार्गसे ६७ लाख रुपयेकी ७½ लाख रतल चायका आयात भी हुआ पहले सौ रतल चायपर १॥) रुपया निर्यात ड्यूटी लगती थी वह सरकारने एक मार्च सन् १९२७ से उठा दी है।

दुनियामें चायकी मांग अनुमानतः ७२ करोड़ रतलकी होती है जिसमें ४० से ५० सैकड़े की पूर्ति भारतके निर्यातसे होती है। चाय चीन और सीलोनमें भी बहुत होती है पर दुनियामें इसकी सबसे अधिक पैदावार भारतमें ही होती है। भारतमें चायकी खपत बहुत कम होती है और इसकी पैदावारका ९० प्रति शत भाग बाहर भेज दिया जाता है। भारतमें चायकी कृषि थोड़े ही समयसे होने लगी है। १८ वीं शताब्दिके उत्तरार्द्धमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी इसका व्यापार चीनके साथ करती थी। सन १७८९ में ईस्ट इंडिया कम्पनीने चीनसे २ करोड़ रतल चाय भेजी और इसके अगले साल यह राय हुई कि इसकी खेतीके लिए भी भारतमें प्रयत्न किया जाय जिससे चीनमें यदि इसकी प्राप्तिमें कुछ बाधा उपस्थित हो तो कुछ क्षति न उठाना पड़े। सन् १८३४ तक इस विषयमें विशेष कुछ नहीं किया गया पर इस वर्ष तत्कालीन गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम वेंटिकने-जिन्हें यह मालूम नहीं था कि चायका पौधा आसाममें पहलेहीसे मौजूद है—चायके बीज और इसकी खेतीके जानकार लानेके लिये यहांसे चीनको अफसर भेजे। आसाममें सरकारी खेतीसे जो चाय पैदा हुई वह पहले पहल सन् १८३८ में इंगलैंड भेजी गई। सन १८५२ के पूर्व यह बात प्रसिद्ध न हो सकी कि लण्डनमें चीनकी चायके साथ भारतीय चाय मुकाबला कर सकती है। इसके बाद इस काममें इतनी सफलता हुई कि सन् १८६५ में सरकारने अपना हाथ इस काम से उठा लिया। सन् १८६८ में इसका ८० लाख टनका निर्यात हुआ। भारतमें चायकी मुख्य पैदावार आसाममें होती है जहां चायके बगीचोंमें इसकी खेती होती है। अनुमानतः ७-८ लाख मजदूर चायकी खेतीपर काम करते हैं। इसकी खेती और चायके बगीचोंका काम विदेशी कम्पनियोंके हाथमें अधिक है और भारतीय मजदूरोंके साथ उनके मालिकोंके व्यवहारके लिए बहुत कुछ शिकायत रहती है। मुख्य बगीचोंके लिये चायकी फेक्टरियां भी हैं जहां चाय बिक्रीके लायक बनाई जाती है। चायकी पत्ती तोड़ लेनेपर उसे तैयार करनेके लिये बहुत कुछ काम करना पड़ता है वह सब चायकी फेक्टरियोंमें किया जाता है।

तिलहन—

सन १९२६-२७ में सब तरहके तिलहनका निर्यात १९०१ लाख रुपयेका हुआ। इसमें अलसी, तिल्ली, मूंगफली, अण्डी आदि सब पदार्थ आगये। ये सब पदार्थ यहांसे कच्चे रूपमें ही निर्यात कर दिए जाते हैं, यद्यपि बैलों द्वारा चलनेवाली घानियोंमें तेल निकालनेकी विधि यहां बहुत प्राचीन कालसे प्रचलित है एवं अब तो तेल निकालनेकी मिलें भी जगह जगह बन गई हैं। तेलके पदार्थोंके एक्सपोर्टके विषयमें फिसकल कमीशनकी रिपोर्टका कुछ भाग यहां उद्धृत किया जाता है—

प्रमाणको कोई महत्व नहीं देते। पुर्तगालकी भाषामें Buon बों का अर्थ अच्छा होता है और Bahia बहियाका अर्थ बन्दरगाह होता है अर्थात Buonbahia बोंबहियाके अर्थ अच्छे बन्दरगाहके होते हैं। इस एक बात पर ही लोग अधिक जोर देते हैं कि एक अच्छा बन्दरगाह समझ उन्होंने ही इसे बम्बई कहना आरम्भ किया होगा। पर यदि ऐसी ही बात होती तो पुर्तगालवालोंके कागजोंमें भी इसी अर्थके आधारपर इस द्वीपपुंजका नाम Buonbahia लिखा रहता परन्तु वहां तो यह शब्द ही नहीं है। उनके कागजोंमें Buonbahia के स्थानपर इस द्वीपपुंजको Bombaim लिखा जाता था ऐसी दशामें यह युक्ति ठीक नहीं है। दूसरी युक्ति यह है कि दिल्लीके यवन नरेश मुबारकने माहिम और साल्सेट पर अधिकार कर इसका नाम अपने नामपर रख दिया। परन्तु इसका भी कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता कि मुबारक बादशाहने अपनी विजय स्मृति चिरस्थायी रखनेके लिये कोई ऐसा कार्य किया था यदि ऐसा होता तो मुबारकके नामके पीछे इसे मुम्बई न कहकर मुबारकपुर या मुबारकाबाद कहा जाता। अतः यह युक्ति भी उचित नहीं जचती, तीसरी बात यह कही जाती है कि इस नामका सम्बन्ध मुम्बादेवीसे ही है। परन्तु यह मुम्बा शब्द ही कहांसे आया, क्या किसी कोलीका नाम था जिसने यह मन्दिर बनवाया। बात यह भी ऐसी नहीं है। हां यदि कोई बात युक्तियुक्त है तो यह कि महा-अम्बा इस आराध्य शक्तिका सम्बोधन था जिसे इस द्वीपके आदि निवासी पूजते थे। महा अम्बा शिवप्रिया अथवा भवानी सब एक शक्ति विशेषके नाम हैं और ये समय २ पर अम्बा, अम्बिका, महाअम्बाके नामसे पुकारी जाती हैं। यह भी आई शब्दकी बात भी स्पष्ट ही है। महाराष्ट्र भाषामें मां शब्दके लिये आईका प्रयोग सर्वत्र है। अतः यह युक्तियुक्त है कि यहांके आदि निवासी जो निर्विवाद हिन्दू थे, उन्होंने ही अपनी आराध्य देवीके नामपर इस द्वीपपुंजको माम्बाई अर्थात् मुम्बईका नाम दिया है।

द्वीप पुंजसे नगर

इस द्वीप पुंजके क्रमागत विकासके इतिहासकी एक एक पंक्ति व्यवसायकी स्थापना, आरम्भ और उन्नतिके इतिहासकी पूर्ण कथा है। द्वीपपुंजके विभिन्न टापुओंको एकमें सम्मिलित कर बस्तीके लिये तैयार करानेके इतिहासकी ओर यदि ध्यान भी दिया जाय, तो यह स्पष्ट हो जायगा कि इस कार्यको इच्छित स्वरूप देनेमें व्यवसायी भाइयोंने ही प्रधान भाग लिया था। उनके सामूहिक प्रयत्नका ही यह सुपरिणाम है कि आज यहां यह सुविस्तृत नगर हम देख रहे हैं। अतः हम द्वीपपुंजके इतिहासके इस पृष्ठ पर भी एक सरसरी दृष्टि डाल देना उचित होगा।

इस द्वीपपुंजको बस्तीके योग्य बनानेमें अपार समुद्रके गर्भसे भूमि निकाली गयी है। इस प्रकारके [illegible] सबसे प्रथम [illegible] Simao Botelho नामक एक पुर्तगीज महाजन [illegible] हुई। उन्होंने पुर्तगाल नरेशका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। पुर्तगाल वालोंके हाथसे जब यह द्वीपपुंज अंग्रेजोंके हाथमें आया, तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके बोर्डके डायरेक्टरोंने पूर्वकी आयोजनाको [illegible] देनेके लिये [illegible] दे दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सूचना निकालकर जमीन [illegible] और [illegible] निकाली हुई भूमिको निकालनेवालोंके अधीन कर [illegible] दिया। परन्तु फिर भी इच्छित सफलता न मिल सकी। [illegible] एक शताब्दी [illegible] इच्छित [illegible] न मिल सका।

स्याम और इण्डोचाइनामें भी होती है पर वह भारतकी पैदावारका केवल ३॥ सैकड़ा भाग होता है। इसलिए इस पदार्थपर भारतका मानों एकाधिपत्य है। युद्धके समय सरकारको इसकी बड़ी मांग रही। ग्रेटब्रिटेनको इसकी वार्षिक आवश्यकता ५०,००० हंडरवेटकी हुई और तब यहां कलकत्तेके लाखके चलान देनेवालोंसे सरकारने ठेका कर लिया। उस समय लाखके निर्यातके लिए मनाई करदी गई और सरकार लाइसंस इस शर्तपर देती थी कि पहले उसे उसकी आवश्यकतानुसार उसके द्वारा निर्धारित जातिपर ४२ रु० प्रति मनके हिसाब काफी माल दिया जाय। युद्धकी समाप्तिके बाद सरकारने यह कंट्रोल उठा दिया। इसकी मांग अमेरिकामें भी बहुत रहती है। जहां यह ग्रामोफोनकी चूड़ी, वारनिश, स्त्रियोंकी स्याही और बिजलीके पदार्थोंमें काम आती है ज्योंगी विदेशवाले इसका प्रतियोगी पदार्थ खोजनेकी बहुत चेष्टामें है पर अभीतक ऐसा कोई पदार्थ नहीं मिल सका जिससे लाख या चपड़ेका काम चल सके।

ऊन (कच्चा)

सन् १९२६-२७में कच्चे ऊनका निर्यात २,१३ लाख रुपये मूल्य है ४॥ करोड़ रतलका हुआ। इसका निर्यात मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको होता है जिसने ४,०५ लाख रतल ऊन लिया। कच्चे ऊनका निर्यात पहले पहल सन् १८३४से आरम्भ हुआ जब ७०,००० रतल माल भेजा गया। सन् १८३६में १२ लाख रतल भेजा गया और सन् १८७२में २५० लाख रतलका निर्यात हुआ। महायुद्धके समय सैनिक आवश्यकताके लिए ऊनी कपड़ेका कंट्राक्ट सरकारने भारतीय मिलोंके साथ किया तब यहांकी मिलोंको ऊनकी प्राप्तिमें सुगमता रहे इसलिए कच्चे ऊनके निर्यातमें सरकार द्वारा रुकावट डाली गई।

भारतमें भी ऊनी कपड़ा—यथा काश्मीरमें पट्टू और पशमीना आदि—बहुत बढ़िया बनता है। यहांसे कम्बल और गलीचोंका निर्यात भी होता है सन् १९२६-२७में इनका निर्यात ७१॥ लाख रुपयेका हुआ जिसमेंसे २७ लाखका ग्रेटब्रिटेनको हुआ। ये चीजें अमेरिकाको २६ लाख रुपयेकी भेजी गईं।

रबड़ (कच्चा)

२,६० लाख रुपयेका २,२० लाख रतल रबड़ बाहर भेजा गया। ग्रेटब्रिटेनको १ करोड़ रतल और अमेरिकाको २३ लाख रतल भेजा गया। यद्यपि कच्चा रबड़ यहांसे इतना बाहर जाता है फिर भी यहांपर रबड़के पदार्थ—यथा मुख्यतया मोटरोंके ट्यूब टायर आदि—का आयात भारी परिमाणमें होता है।

खल (Oilcakes)

इनका निर्यात २,७३ लाख रुपयेका हुआ। इसके मुख्य खरीददार ग्रेट ब्रिटेन, सीलोन और जर्मनी रहे।

कार और म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने भी समुद्र गर्भसे भूमि निकालनेमें प्रशंसनीय कार्य किया है। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने नगरके कितने ही तालाबोंको पूरकर समतल भूमि बना दिया है। ताड़देवमें परेल तककी भूमि को मिलें स्थापन करने योग्य बनानेका श्रेय यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको ही है। इस कार्पोरेशनके स्वास्थ्य विभागने भी लगभग ८६ एकड़ भूमिको समुद्रसे निकाल बस्ती बसानेके योग्य बनाया है। इसी प्रकार यहां पोर्टट्रस्ट नामक बन्दर प्रबन्ध विभागने भी समुद्र पूर कर भूमि निकालनेके कार्यमें अनुकरणीय उद्योग किया है। इस विभागने सन् १८७३ ई० से इस कार्यको अपने हाथमें लिया। और सन् १८६७ ई० तक कितने ही छोटे २ पर मनमोहक बंदर बना डाले। इनमेंसे सिवरी बंदर तथा फ्रेयर स्टेटका कार्य सबसे अधिक आदरणीय है। इस विभागने सन् १८७६ में एलफिन्स्टोन स्टेट, सन् १८८८ ई० में अपोलो बंदर, सन् १८१० ई० कुलाबा बंदर, सन् १८६२ ई० कस्टम बंदर, सन् १८१४-१५ में टांक बंदर तथा सन १६०४-५ में मझगांव बन्दर बना कर अपने नामको सार्थक किया। इसी प्रकार नगरके सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभागने सन् १६०६ में कुलाबाकी ओर समुद्र पूरनेका अच्छा कार्य किया है।

अमेरिकन सिविल वारके समय समुद्र पूरनेके कार्यको यहांकी सात मुद्दत कम्पनियां कर रही थीं। इनकी सम्मिलित पूंजी अनुमानतया ८०३४ करोड़की होगी, परन्तु युद्धके प्रचण्ड रूप धारण करने पर सन् १८६४-६५के बीच यह पूंजी अनुमानतया १७०५६ करोड़की हो गयी थी। इन कम्पनियोंमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं। *

नाम कम्पनी।	वसूल पूंजी	नाम कम्पनीके महाजनका
(१) बैंक बे कम्पनी	१०४ लाख	एशियाटिक बैंक
(२) पोर्ट केनिङ्ग कम्पनी	६६ लाख	ओल्ड फाइनेनशियल
(३) मझगांव रेक्लेमेशन कम्पनी	८० लाख	अलायन्स बैंक
(४) कोलाबा लेण्ड कम्पनी	१४० लाख	सेन्ट्रल बैंक
(५) फ्रेयर लैंण्ड कम्पनी	८० लाख	सिटी बैंक
(६) बाम्बे एण्ड ट्राम्बे रिक्लेमेशन कम्पनी	१० लाख	प्रेसीडेन्सी बैंक

इस प्रकार बम्बईमें दरिया पूरकर एकके बाद एक नवीन स्थान निकालनेका काम जारी रहा, लेकिन व्यवसायके अधिक बढ़नेसे म्युनिसिपैलेटीको और भी विशेष जमीनकी आवश्यकता प्रतीत हुई। फलतः म्युनिसिपैलेटीने चौपाटीसे लगाकर लाइट हाउस तक समुद्रको पूरनेकी नवीन योजनाकी; तथा डेवलपमेण्टलोन द्वारा करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति भी एकत्रित की, एवं सर चिमनलाल सीतलवड़की देखरेखमें एक डेवलपमेंट बोर्डकी स्थापना की।

* देखिये A financial chapter in the History of Bombay city नामक ग्रन्थ।

बम्बई-विभाग

BOMBAY-CITY.

कार और म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने भी समुद्र गर्भसे भूमि निकालनेमें प्रशंसनीय कार्य किया है। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने नगरके कितने ही तालाबोंको पूरकर समतल भूमि बना दिया है। हारदेवसे परेल तककी भूमि को निर्दोष स्थापन करने योग्य बनानेका श्रेय यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको ही है। इस कार्पोरेशनके स्वास्थ्य विभागने भी लगभग ८६ एकड़ भूमिको समुद्रसे निकाल बस्ती बसानेके योग्य बनाया है। इसी प्रकार यहां पोर्टट्रस्ट नामक बन्दर प्रबन्ध विभागने भी समुद्र पूर कर भूमि निकालनेके कार्यमें अनुकरणीय उद्योग किया है। इस विभागने सन् १८७३ ई० से इस कार्यको अपने हाथमें लिया। और सन् १८६७ ई० तक कितने ही छोटे २ पर मनमोहक बंदर बना डाले। इनमेंसे सिवरी बंदर तथा फ्रीयर स्टेटका कार्य सबसे अधिक आदरणीय है। इस विभागने सन् १८७६ में एलफिन्स्टोन स्टेट, सन् १८८८ ई० में अपोलो बंदर, सन् १८६० ई० कुलाबा बंदर, सन् १८६२ ई० कस्टम बंदर, सन् १८६४-६५ में टांक बंदर तथा सन १६०४-५ में मझगांव बन्दर बनवा कर अपने नामको सार्थक किया। इसी प्रकार नगरके सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभागने सन् १६०६ में कुलाबाकी ओर समुद्र पूरनेका अच्छा कार्य किया है।

अमेरिकन सिविल वारके समय समुद्र पूरनेके कार्यको यहांकी सात सुदृढ़ कम्पनियां कर रही थीं। इनकी सम्मिलित पूंजी अनुमानतया ८०२४ करोड़की होगी, परन्तु युद्धके प्रचण्ड रूप धारण करने पर सन् १८६४-६५के बीच यह पूंजी अनुमानतया १७०१६ करोड़की हो गयी थी। इन कम्पनियोंमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं।*

नाम कम्पनी	असल पूंजी	नाम कम्पनीके महाजनका
(१) बैक बे कम्पनी	१०४ लाख	एशियाटिक बैंक
(२) स्टेट बैंकिंग कम्पनी	६६ लाख	ओल्ड फाइनेनशियल
(३) मझगांव रेक्लेमेशन कम्पनी	८० लाख	अलायन्स बैंक
(४) कोलाबा लैण्ड कम्पनी	१४० लाख	सेन्ट्रल बैंक
(५) फ्रीयर लैण्ड कम्पनी	८० लाख	सिटी बैंक
(६) बम्बे ईस्ट ट्राम्बे रिक्लेमेशन कम्पनी	१० लाख	प्रेसीडेन्सी बैंक

इस प्रकार कम्पनियें दरिया पूरकर एकके बाद एक नवीन स्थान निकालनेका काम जारी रहा, लेकिन [illegible] अधिक बढ़नेमें म्युनिसिपैलिटीकी ओर भी विशेष जमीनकी आवश्यकता प्रतीत हुई। फलतः म्युनि[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समुद्रको पूरनेकी नवीन योजनाको, तथा डेवलपमेण्टलोन द्वारा [illegible] [illegible] [illegible] की, एवं सर चिमनलाल सीतलवाड़की देखरेखमें एक डेवलपमेंट बोर्डकी स्थापना की।

* देखिये A Financial chapter in the History of Bombay city नामक ग्रन्थ।

पूर्वकालीन परिचय

भारतके प्राचीन इतिहासकी भांति बम्बई द्वीपका प्राचीन इतिहास भी आज उपलब्ध नहीं है। असंख्य शताब्दि-समूहने इसपर भी अभेद्य अन्धकारका पर्दा डाल रक्खा है, जो पुरातत्त्ववेत्ताओंकी एक मात्र सम्पत्ति, ऐतिहासिक प्रमाणके प्रसंगवश मिल जानेपर कभी-कभी आंशिक रूपसे उठ जाता है और अन्धकाराच्छादित इतिहास के पृष्ठोंपर सहसा क्षणिक प्रकाश की झलक दौड़ आती है। परिणाम यह होता है कि नवीन आशाएं बलवती हो उठती हैं। ऐसे कई अवसर आये हैं, जब इस द्वीपपुञ्जके प्राचीन इतिहासपर प्रकाश अवश्य पड़ा है, फिर भी अभी तक इसका शृङ्खलाबद्ध इतिहास लेखबद्ध नहीं हो पाया है

इस द्वीपपुंजके प्राचीन इतिहासकी खोजमें लगे हुए व्यक्तियोंसे यदि यह पूछा जाय कि यह द्वीप समूह कहांसे निकल आया, तो एक सामान्य व्यक्तिकी दृष्टिमें ऐसा प्रश्न पूछना ही धृष्टता समझी जायगी परन्तु बात वास्तवमें ऐसी नहीं है। जहां कहीं भी इतिहासको अपने वास्तविक स्वरूपके निर्णय करनेका बल मिला है वहां अन्य प्रमाणोंकी अपेक्षा भूगर्भ-विद्या-मण्डित तर्कका ही उसे आश्रय लेना पड़ा है। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि भूगर्भ विद्याका इतिहासकी छानबीनसे अत्यन्त निकट तम सम्बन्ध है।

भूगर्भ विद्याके सिद्धांतानुसार यदि इस भूखण्डकी परीक्षाकी जाय, तो यही सिद्ध होगा कि यह सुविस्तृत भूभाग कुछ काल पूर्व कमसे कम सात विभागोंमें अवश्य विभाजित था। इतना ही क्यों सन् १८८९ के बंबई टाईम्समें उद्धृत डा० लीथ की *खोजके आधार पर यह भी सिद्ध होता है कि कुछ शताब्दी पूर्व यह द्वीपपुंज भारतके प्रधान भूभागका एक अंग था और उसीसे मिला हुआ था। परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों प्रकृतिके स्वाभाविक गुणानुसार भूपृष्टके ऊंचे-नीचेपनमें अधिक परिवर्तन हो गया और एक समय ऐसा भी आया, जब यह उससे अलग हो गया, तथा इसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया। इस द्वीप समूह की भूमि स्वयं इस बातका प्रमाण दे रही है कि उसने रत्नाकर सागरके आतंककारी थपेड़ोंसे भारतके पश्चिमीय तटको जहां रक्षाकी है, वहां परिवर्तन प्रवर्तक अनिष्टकारी भूचालोंका स्वयं अनुभव किया है। [illegible] उसके भूभागकी परीक्षा भूगर्भवेत्ताओंकी दृष्टिसे यदि की जाय तो पता लगेगा कि भूचालोंकी छिपी हुई [illegible] भूमि [illegible] अपना प्रकोप उसे अवश्य दिखाया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इस [illegible] समुद्र [illegible] भूमि जहां ऊंची नीची हो इसकी सीमा बनी है वहां स्वयं इस द्वीप समूहके [illegible] भूमि [illegible] समुद्रके [illegible] निमग्न हो गयी है।

---

* [illegible]

* सन् १७२७ ई०में यह द्वीपपुंज उपरोक्त दो प्रधान विभागोंमें विभाजित था और इन्हींमें मझगांव, वर्ली, परेल, वडला, नायगांव, माटुंगा, धरावी तथा कोलाबा नामक आठ गांव भी माने जाते थे।

टाइम्स आफ इण्डियाके सन् १८६४ ई०के एक अङ्कसे ज्ञात होता है कि यहांकी उस समयकी सरकारने इस नगरकी सीमा निश्चित की थी, और सीमाके स्वरूपको दिखाकर उसके अन्तर्गत कोलाबा, किला, मांडवी, भोलेश्वर, ब्रीच केनडी, मलबार पहाड़ी, कमाठीपुरा, मझगांव टेकरी, चिंच पोकली, वर्ली, जंगल माहिम तथा माटुंगा को माना था।

सन् १८६५ ई०में Act II के आदेशानुसार म्यूनिसिपल कार्पोरेशनका जन्म हुआ। म्यूनिसिपल कमिश्नर नियुक्त किया गया और प्रबन्ध होने लगा। परन्तु कमिश्नरके सम्मुख सबसे कठिन कार्य नगरको छोटे २ वार्डोंमें विभाजित करनेका था। कमिश्नरने वाध्य होकर पूर्वके विभाजित वार्डोंका आधार ले वार्डोंकी इस प्रकार रचना की:—

(१) कोलाबा, (२) किला, (३) माण्डवी, (४) भोलेश्वर, (५) उमरखाड़ी, (६) गिरगांव, (७) कमाठीपुरा, (८) मलबार पहाड़ी (९) मझगांव, (१०) माहिम और (११) परेल।

परन्तु यह व्यवस्था अधिक दिन टिक न सकी और सन् १८७२ई०में इन वार्डोंमें फेरफार किया गया और छोटे २ सेक्शन बनाये गये जो इस प्रकार थे।

'ए' वार्ड :—कुलाबा, किला और स्प्लैनेड।
'बी' वार्ड :—कार्फर्ड मार्केट, माण्डवी, चकला, उमरखाड़ी, और डोंगरी।
'सी' वार्ड :—धोबी तलाव, फानुसवाड़ी, भोलेश्वर, खारा तलाव, कुम्हारवाड़ा, गिरगांव खेतवाड़ी।
'डी' वार्ड :—चौपाटी, वालकेश्वर, और महालक्ष्मी।
'ई' वार्ड :—मझगांव, ताड़वाड़ी, कमाठीपुरा, परेल और सिउरी।
'एफ' वार्ड :—शिव, माहिम और वर्ली।

इस प्रकारका प्रबन्ध होते हुए भी परिवर्तन होता ही गया और परिणाम यह हुआ कि आजकल ७ म्यूनिसिपल वार्ड हैं जो A, B, C, D, E, आदि नामोंसे व्यवहारमें लाये जाते हैं।

पुलिस

नगरमें शान्ति बनाये रखने और नागरिकोंको उनके कार्यमें सहायता पहुंचानेके लिये यहां पुलिसके हाथमें बहुतसा प्रबन्ध रक्खा गया है। यहांकी पुलिस कमिश्नरकी देखरेखमें एक गुप्तचर पुलिस विभाग भी सुसंगठित किया गया है जो अपनी कार्यदक्षतासे यहांके नागरिकोंको उनके सभी कार्योंमें अच्छा सहयोग देता है। इस नगरमें पुलिसने अपने प्रबन्धको सुव्यवस्थित बनानेकी दृष्टिसे विभिन्न भागोंमें वार्ड स्थापित कर रक्खे हैं। ये वार्ड इस प्रकार हैं:—

* देखिये Bombay Gazetteer Vol. XXXVI Part III Page 523.

पूर्वकालीन परिचय

भारतके प्राचीन इतिहासकी भांति बम्बई द्वीपका प्राचीन इतिहास भी आज उपलब्ध नहीं है। असंख्य शताब्दि-समूहने इसपर भी अभेद्य अन्धकारका पर्दा डाल रक्खा है, जो पुरातत्त्ववेत्ताओंकी एक मात्र सम्पत्ति, ऐतिहासिक प्रमाणके प्रसंगवश मिल जानेपर कभी-कभी आंशिक रूपसे उठ जाता है और अन्धकाराच्छादित इतिहास के पृष्ठोंपर सहसा क्षणिक प्रकाश की झलक दौड़ जाती है। परिणाम यह होता है कि नवीन आशाएं बलवती हो उठती हैं। ऐसे कई अवसर आये हैं, जब इस द्वीपपुञ्जके प्राचीन इतिहासपर प्रकाश अवश्य पड़ा है, फिर भी अभी तक इसका शृङ्खलाबद्ध इतिहास लेखबद्ध नहीं हो पाया है

इस द्वीपपुंजके प्राचीन इतिहासकी खोजमें लगे हुए व्यक्तियोंसे यदि यह पूछा जाय कि यह द्वीप समूह कहांसे निकल आया, तो एक सामान्य व्यक्तिकी दृष्टिमें ऐसा प्रश्न पूछना ही धृष्टता समझी जायगी परन्तु बात वास्तवमें ऐसी नहीं है। जहां कहीं भी इतिहासको अपने वास्तविक स्वरूपके निर्णय करनेका बल मिला है वहां अन्य प्रमाणोंकी अपेक्षा भूगर्भ-विद्या-मण्डित तर्कका ही उसे आश्रय लेना पड़ा है। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि भूगर्भ विद्याका इतिहासकी छानबीनसे अत्यन्त निकट तम सम्बन्ध है।

भूगर्भ विद्याके सिद्धांतानुसार यदि इस भूखण्डकी परीक्षाकी जाय, तो यही सिद्ध होगा कि यह सुविस्तृत भूभाग कुछ काल पूर्व कमसे कम सात विभागोंमें अवश्य विभाजित था। इतना ही क्यों सन् १८८५ के बंबई टाईम्समें उद्धृत डा० लीथ की *खोजके आधार पर यह भी सिद्ध होता है कि कुछ शताब्दी पूर्व यह द्वीपपुंज भारतके प्रधान भूभागका एक अंग था और उसीसे मिला हुआ था। परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों प्रकृतिके स्वाभाविक गुणानुसार भूपृष्टके ऊंचे-नीचेपनमें अधिक परिवर्तन हो गया और एक समय ऐसा भी आया, जब यह उससे अलग हो गया, तथा इसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया। इस द्वीप समूह की भूमि स्वयं इस बातका प्रमाण दे रही है कि उसने रत्नागर सागरके आतंककारी थपेड़ोंसे भारतके पश्चिमीय तटकी जहां रक्षाकी है, वहां परिवर्तन प्रवर्तक अनिष्टकारी भूचालोंका स्वयं अनुभव किया है। सिउरीसे वर्ली तकके भूभागकी परीक्षा भूगर्भवेत्ताओंकी दृष्टिसे यदि की जाय तो पता चलेगा कि भूगर्भकी छिपी हुई अनन्त ज्वालाने अपना प्रकोप उसे अवश्य दिखाया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इस प्रांतकी समुद्र तटवर्ती भूमि जहां ऊंची नीची हो इसकी सीमा बनी है वहां स्वयं इस द्वीप समूहके समीपकी समथल भूमि अगाध समुद्रके गर्भमें निमग्न हो गयी है।

---

* बर्लीमें खोदते समय मेंढ़कोंकी हड्डियां मिलीं और १९ वीं शताब्दीके अन्तमें जब वर्तमान प्रिन्सेस डाक बानक बन्दर की खुदाई हो रही थी उस समय ३२ फीट नीचे अजगर और एक दबा हुआ जंगल मिला। इस जंगलमें खैर आदिके वृक्ष थे जो बम्बईके समीपवर्ती जंगलोंमें अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। अतः सिद्ध है कि कोई समय ऐसा भी था जब यह हंगल भूमि पर

सन् १६७०ई० में यहां शराब, तम्बाकू अफीम, नारियल, और उसकी जटा रस्सियोंका ही केवल व्यापार होता था। परन्तु इसीके बादसे इसके भाग्यचक्रने पलटा खाया और ईस्टइण्डियाकम्पनीके मस्तिष्कमें अपने कारखानेको सूरतसे बम्बई उठा लानेकी बात जमी। सन् १६८७ ई० में ईस्टइण्डिया कम्पनीने अपना आफिस सूरतसे बम्बई उठा लानेका निश्चय कर लिया। इसी समय इस नगरमें व्यवसायकी आधारशिला रक्खी गई। फिर भी आरम्भमें इसकी उन्नतिकी मनचेती सफलता न मिल सकी। इसका कारण था तत्कालीन राजनैतिक अशान्ति।

भारतका राजनैतिक वातावरण उस समय क्षुब्ध हो उठा था। जीवन प्रभातकी नव स्फुर्तिदायिनी शक्तिसे प्रभावित हो महाराष्ट्रसेना अपनी धुनमें आगे बढ़ती जाती थी, और जीवन सन्ध्याकी अन्तिम लालीसे लोहित वर्ण हो राजपूत शौर्य छटपटाकर दड़ना पकड़नेका भगीरथ प्रयत्न करनेमें तल्लीन था। यवन सत्ता अपनी आत्ममर्यादाकी रक्षा करनेमें अपने आपको असमर्थ पाती थी। पुर्तगीज मानवताके मंदिरको मिट्टीमें मिला मन चैन माया जाल-का प्रसार कर धर्मका डिम डिम पीट रहे थे। ऐसी परिस्थितिमें उलझ ईस्टइण्डिया कम्पनी तटस्थ रूपसे अपनी आत्मरक्षाकी समस्या सुलझानेमें व्यग्र थी। अतः अशान्तिमें व्यवसाय कैसा और व्यवसायका प्रसार तथा उसकी उन्नतिकी कल्पनाका अस्तित्व ही क्या! इस नगरकी व्यवसाय सम्बन्धी अवस्था भी पूर्ववत् हो रही। इसी बीच [illegible] कम्पनी और भारतकी कम्पनीमें भी तू तू, मैं मैं की ठनी और व्यवसायका सुखद स्वरूप भी [illegible] आँखोंसे ओझल होगया। यह अवस्था सन् १६९० और १७१० ई०के बीचमें रही। अन्तमें लन्दन और भारतकी कम्पनियोंमें समझौता हो गया और ईस्टइण्डिया कम्पनीको घरेलू अशान्तिसे छुट्टी मिली। इधर [illegible] और राजपूतोंके कार्यक्षेत्रका केन्द्र इस समुद्री तटसे दूर होनेके कारण कम्पनीके व्यवसायपर प्रभाव डालनेमें [illegible] था। अतः निष्पक्ष प्रदेशपर यदि कोई शक्ति अशान्तिकी आशंकाकी ओर ध्यान [illegible] समर्थ थी, तो महाराष्ट्र और पुर्तगालवालोंकी तनातनी। लेकिन इसकी भी अवधि समाप्त हो चली। [illegible] पुर्तगीज [illegible] लोहित लपटोंमें विदग्ध हो शक्तिहीन हो गये।

[illegible] अंग्रेजोंके हाथमें तराजू था, तलवारका दम वे कभी नहीं भरते थे। पर फैलाने वाले करवालके [illegible] पकड़ने लगे। अतः उन्होंने नीतिसे काम लिया। हिन्दू शौर्यके पालभरणकी क्रमशः उत्तत [illegible] उसर [illegible] करना कर भस्मीभूत हो जाना उन्हें इष्ट न था, अतः अंग्रेजोंने अवसर मिलते ही सबसे [illegible] रखने [illegible] करनेकी चेष्टा की। इसके प्रमाणके लिये दूर न जाना होगा। सन् १७४२ ई० में बाजी-राव के [illegible] हुआ था। इस अवसरपर बम्बईके गवर्नरने जो सामान मैत्रीके भावसे उन्हें नजर किया था, वह इस प्रकार है।

६ [illegible] (२०) रु० प्रति [illegible]	१२०) रु०
१ [illegible]	१५०) रु०
१ [illegible]	४०) रु०
४ [illegible] ([illegible])	७२) रु०
[illegible]	५०) रु०
जोड़	३६०) रु०

होता है। भटका अर्थ प्रायः रियासतसे मिलता जुलता है, इस प्रकार कोल-भटका यदि कोई अर्थ हो सकता है तो यही है, कि कोलियोंकी रियासत। अतः ऐसा अनुमान होता है कि वर्तमान कोलाबाके समीप ही इस द्वीप-पुञ्जके दो दक्षिणी द्वीपोंमें ही प्रथम कहीं पर बस्ती बसाना आरम्भ हुआ होगा।

बस्तीके तीसरे स्थानका पता वर्तमान मांडवी मुहल्लेकी कोलीवाड़ी अथवा डोंगरी कोलीवाड़ेके कितने ही जर्जरित घर अब भी दे रहे हैं। इस स्थानसे आजकल समुद्र दूर है, पर यह भी युगके परिवर्तनकारी स्वरूपकीही एक कला मात्र है। कोलियोंके झोंपड़े इस बीसवी शताब्दीके ईंट रोड़ेमें दब गये हैं अवश्य, पर माण्डवीकी 'दरिया स्थान' नामक एक गली आज भी समुद्र-तटकी स्मृति दिला रही है।

इसी प्रकार वर्तमानका 'कैवेल' स्थान (जिसमें आजकल धोबी तलाव भी सम्मिलित है) भी किसी छिपे हुए इतिहासकी स्मृति दिलाता है। पुरातत्ववेत्ताओंका मत है कि 'कैवेल' शब्द 'कोल-वार' शब्दसे ही बिगड़ कर बना है। अतः कोलवार अर्थात् कोलियोंके झोंपड़ेसे भी यही सिद्ध होता है कि सम्भवतः कालबादेवी रोड, पुरानी हनुमान गली आदिके विस्तृत भागपर भी किसी समय कोलियोंके झोंपड़े रहे होंगे।

इस द्वीपपुञ्जमें टेकरियोंकी कमी नहीं थी। टेकरियों पर भी बस्ती बसी हुई थी जो टेकरी परके गांव कहाते थे, जैसा कि वर्तमानका गिरगांव सूचित करता है। यह गांव भी गिरि अर्थात् टेकरी पर ही बसा हुआ था। कैवेलसे गिरगांव जाते हुए जो मूंगभट्ट लेनी पड़ती है यह भी यही सूचित करती है कि मूंगा नामके किसी कोलीकी यहां जागीर सी थी। भट्टका अर्थ जागीर होती है।

इस द्वीपपुञ्जके चौथे द्वीपमें भी कोली ही रहते थे जैसा कि वर्तमानके मझगांव और और धुरुपदेव मन्दिर से सिद्ध होता है। मझगांवमें भी कोली-वाड़ी है। कोली आरम्भसे ही मछली मारकर जीवन निर्वाह करते आये हैं, परन्तु इस गांववालोंने अपना व्यवसाय भी मछली मारना ही रक्खा। अतः इनके झोंपड़ोंके समूहका नाम ही मच्छ-गांव पड़ गया।

इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंके सम्बन्धमें किये गये उपरोक्त विवेचनसे यह बात निश्चित हो जाती है कि अशोकके बाद जब शतकर्णी राजवंशके हाथमें इस द्वीपका शासन आ गया, तब भी इस द्वीपमें कोली ही रहते थे। जिस युगमें दूर देशोंसे व्यवसायी बाहर आनेके पासका स्थान अपने विश्रामके लिये निश्चित करते थे उस समय भी कोली ही इस द्वीपपुञ्जमें बसे हुए थे।

यह तो निश्चित ही है कि इस द्वीप पुंजके आदि निवासी कोली थे। वे लोग अनार्य परिवारके हैं। इनकी भाषा, इनका वेष और इनके भाव सभीमें अनार्य सभ्यताकी स्पष्ट छाप भी मिलती है। वे लोग आर्योंके प्रथम आक्रमणसे डर कर भागे हुए इस द्वीप पुञ्जमें गये, परन्तु इनकी स्वतन्त्रता [illegible]। [illegible] सदा वे लोग पराजित होते गये हैं। [illegible] ही इस द्वीपपुञ्जपर भी शासन शुरू हुआ था। जैसे-जैसे शासन परिवर्तन इस प्रान्तमें हुए, वैसे-वैसे परिवर्तित क्रमका इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंपर भी प्रभाव पड़ा है। सम्भवतः एक युग यहां ऐसा भी आया होगा, जब यहां कोई शासन नहीं होगा। क्योंकि किसी युगमें यहांके [illegible]

सन् १८१३ ई० में लंदनकी पार्लमेन्टमें लाड मेलवेली बिल पास हो गया। अभीतक जहां कम्पनीके हाथमें व्यवसाय करनेकी स्वेच्छाचारी एकतंत्री सत्ता थी और जिसके कारण व्यवसाय करनेवालोंको व्यवसाय करनेके लिये लैसेन्सकी आवश्यकता पड़ती थी, वहां व्यवसायका द्वार सभीके लिये मुक्त रूपसे खुल गया। व्यवसाय परसे कम्पनीका प्रतिबन्ध उठ गया। इस बिलके स्वीकृत हो जानेपर कम्पनीके हाथकी सारी शक्ति निकल गयी, केवल यदि कुछ शेष रह गया तो चीनसे व्यवसाय करनेका विशेष अधिकार। यह अधिकार भी २० वर्षकी अवधि तक ही रहा। प्रतिबन्धके उठते ही लिवरपुल और ग्लासगोके महाजनों और व्यवसायियोंकी घुड़दौड़ मच गयी। फिर क्या था, इस द्वीपपुंजका व्यवसाय भी नव आशापल्लवसे चमक उठा। सन् १८०६ ई० में जहां इस बंदरसे ३ करोड़ पौण्ड वजनमें रूई इंग्लैण्ड गयी थी, वहां सन् १८१६ ई० में ६ करोड़ पौण्ड रूई इंग्लैण्ड गयी।

यदि इस सुदिनको देखनेके लिये राल्फ फिच और जान न्यूबरी जीवित होते तो ये आज फूले न समाते।*

सन् १८२५ में बम्बईका निर्यात छलांग मारकर बढ़ गया। सन् १८३२ ई० में अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीके कारण अमेरिकन रूईका भाव ऊंचा चला गया अतः भारतकी रूईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें घुस पड़नेका सुअवसर हाथ लगा। सन् १८३५-३६ ई० में १० लाख गांठ रूई इंग्लैण्ड पहुंची। बम्बईके व्यवसायकी उन्नतिका इससे अधिक प्रामाणिक प्रमाण और क्या होगा, कि व्यवसायकी वृद्धिके कारण ही सन् १८३६ ई०में बाम्बे चेम्बर ऑफ कामर्स नामक व्यवसायी मण्डलकी स्थापना हुई। महाजनी लेनदेनकी पुरानी परम्परागत प्रथाको तोड़ सन् १८४० ई०में ज्वाइण्ट स्टाक बैंककी पद्धति पर बैंक आफ बाम्बेकी स्थापना की गई। इस बैंककी देखा देखी सन् १८४४ ई० में ओरियण्टल बैंकिङ्ग कार्पोरेशनने भी अपनी एक शाखा इस नगरमें खोली। और सन् १८६० तक कमर्शियल बैंक, चार्टर्ड, मर्केण्टाइल, आगरा एण्ड यूनाइटेड सर्विस, सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया इत्यादि बैंक भी इस नगरमें स्थापित हो गये।

निर्यातकी वृद्धिके साथ साथ आयातकी वृद्धि भी हुई, इंग्लैण्डसे माल आना जोरोंसे आरम्भ हो गया, अतः नगरके व्यवसायियोंने यहां भी मिलें खोलनी आरम्भ कर दीं। सन् १८६० ई० तक लगभग ८ मिलें यहांपर खुल गयीं। व्यवसायकी बढ़ती हुई लहरको लक्ष्यकर एक पत्रने उस समय लिखा था कि बम्बई कारखानोंका केन्द्र बनेगा*।

सन् १८६० ई० में जी० आई० पी० रेलवेने थानातक रेलवे लाइन खोलकर नगरके व्यवसायको समयोचित प्रोत्साहन दिया। सन् १८६९ ई० में स्वेजकी नहर खुली और इसके खुलते ही यूरोपका प्रवेश द्वार पूर्ण रूपेण खुल गया। नगरके व्यवसायको इस घटनाने सबसे अधिक जीवन दान दिया।

३० मार्च सन् १८६६ ई० के टाइम्सके पता चलता है, कि सरकारने बम्बईके समुद्रतटवर्ती व्यवसाय तथा

---

*ये दोनों साहसी वीर स्थल मार्गसे सन १५८३ ई०में भारत आये थे। इन लोगोंका उद्देश्य व्यवसाय मार्गको स्थापित करनेका था परन्तु भारतके व्यापारिक लाभोंके आस्वादनका अनुभव इन्हें न हुआ।

*Bombay has long been the liverpool of the east and she is now become the manchester also (7th july 1860)

सभ्यताका प्रसार किया और महाराजके साथ आये हुए राजपरिवारने प्रचार कार्यमें जीवन फूंक दिया। आर्य परिवारने अपनी अपनी वंशपरम्पराके अनुसार हिन्दू संस्कृतिका बीज वपन किया। यह सब हो ही रहा था, कि सन् १३०३ ई० (शाके १२२५) में महाराज भीमदेवका स्वर्गवास हुआ और सन् १३१८ में दिल्लीके यवन शासक मुबारकने महिकावती (माहिम) पर आक्रमण कर दिया, परन्तु हिन्दू शासनका अन्त सन् १३४८ ई० के बाद हुआ और उसके पश्चात यहां पर गुजरातके मुसलमानोंका राज्य स्थापित हुआ। पर उन्होंने भी अधिक समय तक शासन नहीं किया और सन् १५३४ की बसई वाली सन्धिके अनुसार यह द्वीपपुञ्ज पुर्तगालवालोंके हाथ आया और सन् १६६२ में यह दहेजके रूपमें अंग्रेजोंको मिला।*

आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना चाहिये कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको अपनी कितनी शक्ति व्ययकर इस स्वरूपको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके मतानुसार कहा जायगा कि—

'बम्बई द्वीप मझगांव, सिउरी, पटेल, तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव, धरनी, और बदला बलात् लिये गये; तथा कुलावा वहांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गया।

इस प्रकार वर्तमान बम्बई बनी।

इस द्वीपपुंजके शैशव कालीन इतिहास पर एक दृष्टि डालते ही कहना पड़ेगा, कि यहांकी रंगभूमिपर कितनेही पात्रोंने समय २ पर यहां आकर अपना २ कौशल दिखाया है कालकी कालिखमें अलख होते हुए भी उनके कार्योंकी स्मृतिके एक मात्र आधार चिह्न आज भी अनुभवमें आते हैं। असभ्य कोली जातिने आकर इस द्वीपपुञ्जमें झोंपड़े खड़े किये और मछली मार कालक्षेप भी कर डाला। मलखेद राजवंशने यहां सिक्केका प्रचार किया। सिल्हरा राजवंशने मन्दिर निर्माण कराये और देवगिरिके शासकोंने राजव्यवस्था की आधारशिला रक्खी, जिससे यहां कला-कौशल और उद्योग-धन्धाका सूत्रपात हुआ। अतः स्पष्ट ही है कि इस हिन्दू कालीन युगमें ही इसके वास्तविक स्वरूपका निर्माण हुआ, परन्तु इसी बीच इस्लामकी बांग सुनाई दी और देखते देखते द्वीपपुञ्ज निकुञ्ज पक्षान्धताकी वन्हिसे भस्मी भूत हो भूमिमें मिल गया।

नाम करण

इस द्वीपपुंजका नाम बम्बई कैसे पड़ा, इस सम्बन्धमें पूरा मतभेद है। पौराणिक युगमें जहां यह द्वीपपुंज 'अपरान्तक' प्रदेशके अन्तर्गत माना जाता था वहां महाराज भीमदेवके समयमें 'महिकावती' के नामसे सम्बोधित हो यह अपनी प्रतिष्ठा प्रस्थापित करनेका सूत्रपात करता है। परन्तु पुर्तगालवालोंके पुराने कागजोंमें 'बाम्बेम' के नामसे इसका सम्बोधन होता है। इसी आधारको लेकर लोग कहते हैं कि पुर्तगालवालोंने ही इसे बम्बई कहना आरम्भ किया होगा। परन्तु यह युक्ति-युक्त नहीं प्रतीत होता और यही कारण है कि पुरातत्ववेत्ता इस

---

*आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना बहुत आसान है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको अपनी कितनी शक्ति व्ययकर इसके स्वरूपको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके मतानुसार कहा जायगा कि—बम्बई द्वीपमें मझगांव, सिउरी, परेल तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव, धरनी और बदला बलात् लिये गये; तथा कुलाबा वहांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गया। इस प्रकार वर्तमान बम्बई बनी।

भाटियाः—कपड़ेके व्यवसायी, जमींदार और मिल मालिक हैं।

जैन (गुजरात) :—सर्राफ, महाजन, जौहरी, तथा कमीशन एजेन्ट हैं।

„ (कच्छ) :—अनाजके व्यापारी औररुईके दलाल।

मारवाड़ी महाजनः :— रुई, चांदी, सोनाका सट्टा तथा व्यापार करनेवाले।

घनियांमहाजनः—रुई, चांदी, सोनाका सट्टा और व्यापार करनेवाले।

खोजाः— जागीरदार, मिलमालिक, जेनरलमर्चेन्ट कंट्राकर, एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर।

बोहरा मेमनः—जागीरदार, कंट्राक्टर, स्टेशनरी और जेनरल मर्चेन्ट।

पारसीः—मिल ऑनर्स कॉटन मर्चेण्टस् एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर तथा और भी सभी प्रकारका व्यवसाय करते हैं।

योरोपियनः—एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर।

बम्बईके व्यवसायिक स्थल एवं बाजार

१ फोर्ट [हार्नबीरोड]—यह बस्ती बहुत सुंदर एवं साफ है। यहांकी भव्य एवं आलीशान इमारतें, स्थान २ पर दर्शनीय हृदय वास्तवमें दर्शकोंके हृदयको मंत्र मुग्ध कर देती हैं। यह स्थान क्राफर्ड मार्केटसे आरंभ होकर अपोलो बंदरतक माना जाता है। इस स्थानमें बड़ी २ ऑफिसें, बैंक्स, इन्स्युरेंस कम्पनीज़, मिल ऑफिस बड़े २ स्टोर्स, वाच कम्पनीज, मिशनरी मर्चेन्टस आदि बम्बईके बड़े से बड़े देशी एवं विदेशी व्यापारी और कम्पनियोंकी आफिसें इस स्थानपर हैं। भारतके साथ विदेशी वाणिज्यका सम्बन्ध रखनेवाली पेढ़ियां इसी स्थानपर है। यों तो इस विशाल बाजारका एक एक स्थान दर्शनीय है, पर उनमें खास खास स्थान बोरीबंदर, जनरलपोस्ट ऑफिस, जनरल टेलिग्राफ ऑफिस, म्युजियम, कालाघोड़ा हाइट ह लेडवा फर्म, हाईकोर्ट, क्वीन विक्टोरिया स्टेच्यू, ताजमहलहोटल, शेअर बाजार, गेट ऑफ इण्डिया (भारत द्वार) आदि विशेष दर्शनीय हैं इस बाजारकी चारकोल ऑइलसे बनी हुई स्वच्छ और चमकती हुई सड़कें भव्य मालूम होती है संध्या समय स्थान २ पर पानीके फव्वारे छोड़े जाते हैं। दिनभरके परिश्रमके बाद संध्या समय एक बार इधर भ्रमण कर लेनेसे सारा परिश्रम हलका मालूम होने लगता है।

२ धोबी तालाव—यह स्थान एक तालाबको पाटकर बनाया गया है। यहां स्मालकाज कोर्ट, एलफिन्स्टन हाई-स्कूल, सेंटजेवियर हाईस्कूल, आदि हैं, तथा इनके सामने एक विशाल मैदान फुटबाल, क्रिकेट मेच आदि खेलनेके लिये बना है। वर्षाऋतुमें सुदूर लम्बी दूबपर दौड़नेसे बड़ा आनंद प्राप्त होता है।

३ क्राफर्ड मार्केट—फल, फूल, शाक भाजी तथा सुगन्धी सामानका बहुत बड़ा मार्केट है। इसके अतिरिक्त हजारों गाड़ियां सब प्रकारके फल बाहरसे यहां लाती हैं। और फिर यहांसे सारे शहरके व्यापारी खरीद ले जाते हैं। इसके आस पास फल और सुगन्धी सामानका व्यापार करनेवाली बड़ी दुकानें हैं। इसके अतिरिक्त यहां सब प्रकारके पक्षी और झाड़ वगैरा भी मिलते हैं।

४ बेलार्ड स्टेट—यहां बड़ी २ देशी तथा विदेशी कम्पनियोंकी ऑफिसें हैं। विलायतके लिये डाक लेकर पी०

ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इस द्वीपपुंजका प्रबन्ध भार ले सबसे प्रथम आत्मरक्षार्थ एक दुर्ग निर्माण करनेका निश्चय किया और समुद्र पूरकर जलसे स्थलकी रचना करनेका आयोजन भी आरम्भ कर दिया। कम्पनीकी कल्पनामें यह बात इसलिये आयी, कि वह भूमि पूरकर नगर बनानेका कार्य करना चाहती थी और इसी उद्देश्य से यह कार्य भी अविलम्ब आरम्भ हो गया। सबसे प्रथम महालक्ष्मी और वर्लीके बीचसे जलराशि निकालकर भूमिकी रचना करनेका कार्य हाथमें लिया गया। इसके बाद द्वीपके मध्य भागमें समुद्र पूरने का कार्य आरम्भ हुआ। इस प्रकार आरम्भ होनेवाले कार्यने प्रारम्भमें बालरीतिसे ही उन्नति करनी प्रारम्भ की, परन्तु कुछ काल व्यतीत हो जानेके बाद इस ओर लोगोंका ध्यान अधिक उत्साहसे जाने लगा और फल यह हुआ, कि व्यक्तिगत उद्योगके स्थानमें सामूहिक शक्तिसे काम आरम्भ हुआ। बम्बई टाइम्सके ता० ६ फरवरी सन् १८३६ वाले अंकसे ज्ञात होता है कि सन् १८३६-३७ के बीच कोई सुदृढ़ कम्पनी संगठित की गयी थी, जो कुलाबाकी ओर लोगोंका काम कर रही थी। सन् १८४४ की रेलवे कमेटी रिपोर्टसे पता चलता है कि वाड़ी बन्दर और चिंच बन्दरके बीचकी भूमि भी जलराशिके गर्भसे निकल चुकी थी। इसी प्रकार बम्बई क्वार्टरली रिव्यू नामक मासिक पत्रका भी यही मत है, कि सन् १८५५ ई० तक द्वीपका अधिकांश भाग पूरा जा चुका था। इतना होते हुए भी इस कार्यका भार उठाने वाली कम्पनियोंके पास आर्थिक सामर्थ्य पर्याप्त न होनेसे इच्छित लाभ और मनचाही सफलता अभी तक न मिली थी; पर इसी समय अमेरिकन सिविल वार नामक घरेलू युद्धके छिड़ते ही इस द्वीपपुंजकी परिस्थितिने पलटा खाया और कितनी ही कम्पनियां बन गयीं।

इस युद्धके छिड़ते ही बम्बई नगरको स्वर्ण सुअवसर मिला। इंग्लैण्डके लंकाशायर केन्द्रमें रुईका भयंकर अकाल पड़ा जिससे यहांका बाजार नवजीवनसे उत्फुल्लित हो उठा। यहांके व्यवसाय कुसुमकी मुकुलित कलिका प्रफुल्लित हो निज सौरभसे संसारको मंत्र मुग्ध करने लगी। पलक मारते यथेष्ट पूंजीकी प्रकट प्रतिमा अपने प्रकाश पुंजसे नवस्फूर्तिका संचार करने लगी। कितनी ही नयी कम्पनियोंका जन्म हुआ और उन्होंने समुद्रको पूर कर भूमि निकालनेका उद्योग हाथमें लिया। इस कार्यमें यहांकी प्रबन्ध व्यवस्थाने सहायता दे उनके उत्साहको और भी पुष्ट कर दिया। इस द्वीपपुंजके पूर्वीय पार्श्व पर मोदी खाड़ी, एलफिन्स्टन, मझगांव, टांक बंदर तथा [illegible] और पश्चिमीय पार्श्व पर कुलाबासे मलबार पहाड़ी तककी भूमि समुद्रके गर्भसे निकाल कर बस्ती बसानेके योग्य बना दी गयी।

मोदी खाड़ीवाला क्षेत्र कर्नाक बन्दरसे टकसाल पर्यन्त माना जाता है। इस क्षेत्रके पूरनेका कार्य, प्रथममें यहांका प्रबन्ध भार वहन करनेवाली सरकारने आरम्भ किया था, परन्तु कुछ समय बाद एक दूसरी प्राइवेट कम्पनीने यह कार्य अपने हाथमें लिया और इसे पूरा कर डाला। इसी पूरी हुई भूमिपर जी० आई० पी० रेलवेका प्रधान रेलवे स्टेशन जो बोरी बन्दरके नामसे सुपरिचित है, बना हुआ है। इस कम्पनीने लगभग १० लाखकी पूंजी लगा कर ८४ एकड़ भूमि तैयार की थी। एलफिन्स्टन क्षेत्रके पूरनेका काम एक दूसरी कम्पनीके हाथमें था। इसने १४। लाख लगाकर १८। एकड़ भूमि निकालनेकी व्यवस्था की, परन्तु इसमें तैयार-का भार लिए जानेसे यह कम्पनी अधिक समय तक कार्य न कर सकी और कम्पनी टूट गयी। इस प्रकार इस-

समुद्रके तूफानको कम करनेके लिये तथा व्यवसायकी सहूलियतके लिये नवीन जमीन तैयार करनेके लिये समुद्रके बीचमें एक सोलह फुटकी दीवाल बांधी जा रही है, इस दीवालको पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओरसे बांधनेका काम जारी है। इस दीवालके बनवानेमें करीब १२ लाख ५० हजार टन पत्थर और १०८५७४० घन फीट कीचड़ और सिमेंटकी आवश्यकता होगी। यह दीवाल बहुत वैज्ञानिक ढंगसे अत्यन्त व्यय पूर्वक बनवायी जा रही है।

इतना अधिक पत्थर आसानीसे मिलना अत्यन्त कठिन है इसकी सुविधाके लिये म्युनिसिपैलेटीने कांदीवलीके समीप एक टेकरीको तोड़ना आरंभ किया है और वहांका टूटा हुआ पत्थर वेगनों द्वारा समुद्र तक पहुंचाया जाता है। उपरोक्त दीवाल जब कुलाबासे मरीन लाइन तक पूरी हो जायगी तब इसके बीचका हिस्सा ट्रेम्बर नामकी एक मशीन द्वारा हारवरके तलेमेंसे कीचड़ निकालकर भरा जायगा। इस बीचके स्थानको भरनेके लिये पचीस करोड़ घनगज कीचड़की आवश्यकता होगी। इस कीचड़को १००० टन कीचड़ प्रति दिन ले जानेवाली २ ट्रेनें यदि सालमें ३१० दिन काम करें तो इतना स्थान ४१ वर्षमें भरा जा सकता है, परन्तु ट्रेम्बर नामकी मशीन द्वारा ७० क्युबिक गज गहराईमेंसे २००० फुट कीचड़ निकाल कर १० हजार फुट दूर ले जाया जा सकता है। यह मशीन दिनमें १५ घंटा काम करके ३० हजार टन कीचड़ निकाल सकती है।

इस प्रकार इस काममें सन् १९२३ तक करीब ३ अरब से भी अधिक रुपयोंकी सम्पत्ति व्यय हो चुकी है। इस व्ययसे अभी करीब तिहाई काम हो चुका है। अनुमान है कि इतनी जमीनको भरनेके लिये ७ अरब २ करोड़ ४३ लाख रुपया व्यय होगा। इसके द्वारा ११५५ एकड़ नयी जमीन निकल आयेगी, वह जमीन नीचे लिखे अनुसार काममें लाई जायगी। २३७ एकड़ रास्तेके काममें, १८७ एकड़ मैदानमें, २६७ एकड़ मिलिटरीके काममें, तथा ४५५ एकड़ जमीन बिल्डिंग बनानेके काममें लायी जायगी।

इस प्रकार इस स्थान की विपुलता होनेके बाद पशुओंके तबेले कसाईखाने फेक्टरियां मिल्स वगैरह बम्बई-से दूर लगानेकी योजना भी यह विभाग कर रहा है।

म्युनिसिपल कार्पोरेशन

द्वीपपुंजसे सुविस्तृत जनाकीर्ण नगरकी रचनाका इतिहास व्यवसायके विकासका ही प्रतिबिम्ब है। नगरके रूपमें यहांके सुप्रबन्धमें भारतीयोंको भी सेवा करनेका अवसर मिला है। जिस सामूहिक शक्तिके द्वारा लोग अपने घरका प्रबन्ध कर अपने सामीप्य जनोंकी सेवा कर सकते हैं उसे म्यूनिसिपैलिटी अथवा स्वायत्व शासनकी प्रतिमा कहते हैं। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनके वर्तमान स्वरूपका निर्माण पूर्वकालकी प्राकृतिक व्यवस्था-को आधार मानकर ही किया गया है, सुव्यवस्थाकी दृष्टिसे यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको छोटे २ वार्डोंमें विभाजित किया गया है। इन वार्डोंकी रचना पूर्व-कालीन प्राकृतिक विभागोंके आश्रयको लेकर की गयी है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रबन्धके आरम्भ कालमें इस द्वीपपुञ्जको बम्बई नगरके नामसे जब जब सम्बो-धित किया गया है तब तब उसका भाव बम्बई और माहिमकी संयुक्त बस्तीसे लिया गया है। बम्बई नगरसे दो स्थानोंके सम्मिलित स्वरूपका बोध होता था, जिनमेंसे एकको बम्बई और दूसरेको माहिम कहते थे।

१३ प्रिंसेसस्ट्रीट—यहां केमिस्ट और ड्रगिस्टकी बड़ी २ दुकानें हैं। देवकरण मेनशन नामक एक विशाल दर्शनीय बिल्डिंग यहांपर है।

१४ सुनारचाल—यहां सोना चांदीके दागीनेवाले और कागजके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१५ लुहारचाल—यहां कांचका सामान बेचनेवाले व्यापारियोंकी फर्म्स हैं।

१६ मिरजा स्ट्रीट——पेपर स्टेशनरी तथा कांचके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१७—मूलजी जेठा मारकीट—(न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लिमिटेड) इसको मूलजी जेठा कम्पनीके मालिक स्वर्गीय सेठ सुंदरदास मूलजी जेठाने ६ लाखकी लागतसे बनवाया था। इस बाजारमें गांवठी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार करनेवाली सैकड़ों पेढियां हैं। इस विशाल बाजारमें भयंकर जन वृष्टिके समय भी एक बूंद पानी नहीं पड़ सकता। इसकी अनुमानतः ३ लाख रुपया साल किरायाकी आमद है। बम्बईकी कापड़ मारकीटमें यह सबसे बड़ा मारकीट है। मारकीटके भीतर प्रवेश करनेपर अपने २ मालके खरीदने और बेचनेमें व्यस्त व्यापारियोंकी कार्य दक्षता बड़ी ही भली मालूम होती है।

१८-विठलवाड़ी—इसमें कपड़ेकी गांठें बांधनेके संचोंकी दुकानें हैं।

१९—भुलेश्वर—यह बम्बईका एक खास धार्मिक स्थान है। श्रीवल्लभ संप्रदायका प्रसिद्ध बालकृष्णलालजीका मंदिर, भुलेश्वर महादेवका मन्दिर, पंचमुखी हनुमानका मंदिर, लालबाबाका मंदिर आदि पचीसों मंदिर हैं, जिनके दर्शनोंके लिये सैकड़ों स्त्री और पुरुष सायं एवं प्रातः उमड़े हुए नजर आते हैं। इस जगह गाड़ी, घोड़ा, मोटर आदिकी विचित्र धमाल रहती है। यहां भुलेश्वर यंबाखाना भुलेश्वर फलका मारकीट, गंधीकी दुकानें, परचूरन किरियानाके व्यापारी, मिठाईके व्यापारी तथा नाटक वगैराकी फैंसी ड्रेस चेहरे आदिके व्यापारियोंकी दुकानें हैं, इसके अतिरिक्त स्त्रियोपयोगी शृंगारकी वस्तुएं एवं फैंसी वस्त्र यहां अच्छी मात्रामें मिलते हैं।

२०—गुलालवाड़ी—यहां तिजोरीके व्यापारियोंकी दुकानें हैं।

२१—जकरिया मस्जिद—यहां चायनीज और जापानीज सिल्कका व्यापार करनेवाली अच्छी २ दुकानें हैं, तथा इसके आसपासके बाजारोंमें विलायती कटपीस (थोक वपरचूरन) बेचनेवाली कई दुकाने हैं।

२२—दाना बंदर—यहां अनाजके बड़े २ गोडाउन हैं तथा गल्लेका व्यवसाय करनेवाले बड़े २ मुकादमोंकी पेढ़ियां हैं।

२३—करनाक बंदर—नामक टीनकी नलियों एवं चद्दरोंका बड़ा भारी जत्था है।

२४—माण्डवी—इसमें कई बाजार हैं जिनमें सब प्रकारका थोक किराना, रंग, रद्दी, केशर, बारदान, शक्कर, जीरा, घी, आदि वस्तुओंका थोक व्यापार करनेवाली बड़ी २ पेढ़ियां हैं। व्यापारिकवर्गके लिये यह बाजार बहुत ही आवश्यकीय है। यहां माल लदी हुई बैल गाड़ियोंकी विचित्र भीड़ रहती है।

२५—क्वीन्स रोड—इस रोडके एक ओर बी० बी० सी० आई० रेल तथा दूसरी ओर मोटर कम्पनियां हैं। प्रातः ऑफिसके समय तथा सन्ध्या समय यहांपर आने-जानेवाली मोटरोंकी रफ्तार दर्शनीय होती है।

समुद्रके तूफानको कम करनेके लिये तथा व्यवसायकी सहूलियतके लिये नवीन जमीन तैयार करनेके लिये समुद्रके बीचमें एक सोलह फुटकी दीवाल बांधी जा रही है, इस दीवालको पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओरसे बांधनेका काम जारी है। इस दीवालके बनवानेमें करीब १२ लाख ५० हजार टन पत्थर और १०८५७४० घन फीट कीचड़ और सिमेंटकी आवश्यकता होगी। यह दीवाल बहुत वैज्ञानिक ढंगसे अत्यन्त व्यय पूर्वक बनवायी जा रही है।

इतना अधिक पत्थर आसानीसे मिलना अत्यन्त कठिन है इसकी सुविधाके लिये म्युनिसिपैलेटीने कांदीवलीके समीप एक टेकरीको तोड़ना आरंभ किया है और वहांका टूटा हुआ पत्थर वैगनों द्वारा समुद्र तक पहुंचाया जाता है। उपरोक्त दीवाल जब कुलाबासे मरीन लाइन तक पूरी हो जायगी तब इसके बीचका हिस्सा ड्रेजर नामकी एक मशीन द्वारा हारबरके तलमेंसे कीचड़ निकालकर भरा जायगा। इस बीचके स्थानको भरनेके लिये पचीस करोड़ घनगज कीचड़की आवश्यकता होगी। इस कीचड़को १००० टन कीचड़ प्रति दिन ले जानेवाली २ ट्रेनें यदि सालमें ३१० दिन काम करें तो इतना स्थान ४१ वर्षमें भरा जा सकता है, परन्तु ड्रेजर नामकी मशीन द्वारा ३० क्यूबिक गज गहराईमेंसे २००० फुट कीचड़ निकाल कर १० हजार फुट दूर ले जाया जा सकता है। यह मशीन दिनमें १५ घंटा काम करके ३० हजार टन कीचड़ निकाल सकती है।

इस प्रकार इस काममें सन् १९२३ तक करीब ३ अरब से भी अधिक रुपयोंकी सम्पत्ति व्यय हो चुकी है। इस व्ययसे अभी करीब तिहाई काम हो चुका है। अनुमान है कि इतनी जमीनको भरनेके लिये ७ अरब २ करोड़ ४३ लाख रुपया व्यय होगा। इसके द्वारा ११४५ एकड़ नयी जमीन निकल आवेगी, यह जमीन नीचे लिखे अनुसार काममें लाई जायगी। २२७ एकड़ रास्तेके काममें, १८७ एकड़ मैदानमें, २६७ एकड़ मिलिटरीके काममें, तथा ४१५ एकड़ जमीन बिल्डिंग बनानेके काममें लायी जायगी।

इस प्रकार इस स्थान की विपुलता होनेके बाद पशुओंके तबेले फलाईखाने फेक्टरियां मिल्स वगैरह बम्बई-से दूर लगानेकी योजना भी यह विभाग कर रहा है।

म्यूनिसिपल कार्पोरेशन

छोटेसे सुविस्तृत जनाकीर्ण नगरकी रचनाका इतिहास व्यवसायके विकासका ही प्रतिबिम्ब है। नगरके रूपमें यहांके सुप्रबन्धमें भारतीयोंको भी सेवा करनेका अवसर मिला है। जिस सामूहिक शक्ति द्वारा लोग अपने घरका प्रबन्ध कर सकते सार्वजनिक कार्योंकी सेवा कर सकते हैं उसे म्यूनिसिपैलिटी अथवा स्थानिक शासनकी प्रतिमा कहते हैं। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनके वर्तमान स्वरूपका निर्माण पूर्वकालकी प्राकृतिक व्यवस्था-ओंके आधार मात्र पर ही किया गया है, सुप्रबन्धकी दृष्टिसे यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको छोटे २ भागोंमें विभाजित किया गया है। इन भागोंकी रचना पूर्व-कालीन प्राकृतिक विभागोंके आधारको लेकर की गई है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें आरम्भ कालमें इन टुकड़ोंको बम्बई नगरके नामसे जब जब सम्बो-धित किया गया है तब तब इसका अर्थ बम्बई और माहिमको संयुक्त रूपमें लिया गया है। बम्बई नगरके दो भागोंमें विभाजित करनेवाला खाड़ी टाप था, जिसने एकदम बम्बई और दूसरेको अलग करते थे।

'ए' वार्ड:—कोलाबा, किला (उत्तर] किला (दक्षिण) स्प्लैनेड और डाकयार्ड ।
'बी' वार्ड :—मांडवी, चकला, उमरखाड़ी, डांगरी जनरल, ड्यूटी ।
'सी' वार्ड—बाजार, धोबी तलाव, भोलेश्वर और खारा तलाव।
'डी' वार्ड:—मझगांव, तारवाड़ी, कमाठीपुरा, नवीनागपाड़ा, भायखाला ।
'एफ' वार्ड:—परेल और मांटुगा ।
"जी" वार्ड: - माहिम और वर्ली ।

इसके अतिरिक्त बंदरकी सुव्यवस्थाके लिये रक्खी गयी बंदर पुलिस, प्रिन्स और विक्टोरिया डाक, सी आई. डी. विभागकी पुलिस, रिजर्व घोड़सवार, तथा सिनेटरी पुलिस सबके मिलाकर नगरमें ३२ थाने हैं।

यहां आग तथा अन्य प्रकारकी आकस्मिक दुर्घटनाओंमें जनताकी सेवा करनेके लिये स्वतन्त्र रूपसे व्यवस्था की गयी है।

आगसे बचाव

आग लगनेके समय नगरकी सुव्यवस्था करनेके लिये यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने स्थान २ पर 'फायर ब्रिगेडके अड्डे बना रक्खे हैं और सड़कोंपर थोड़ी २ दूरीसे आग लगनेके सम्बन्धमें भयसूचक घण्टीकी व्यवस्था भी कर रक्खी है, जिससे आग लगते ही सड़कपर लगी हुई भय सूचक घण्टी द्वारा पासके 'फायर ब्रिगेडको बातकी बातमें सूचना भेज दी जाती है और वह आकर परिस्थिति संभाल लेते हैं।

"फायर ब्रिगेड" कहां है यह नीचेकी सूचीसे ज्ञात होगा।

फायरब्रिगेडके अड्डे—(१) भायखाला (२) हेइन्सरोड (भाई खाला) (३) ग्वालिया टैंक (४) चौंच पोकली (५) बाबूला टैंक (६) किला (हार्नबीरोड) (७) कोलाबा (८) भोलेश्वर (९) मलबार हिल (१०) डेलाइल रोड (११) माहिम (१२) नई गांव (१३) मझगांव।

यह विभाग अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओंके समय भी अपना कर्तव्य पालन कर कष्टपीड़ितोंकी सहायता करता है।

बम्बईका व्यवसायिक विकास

प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें विदेशवालोंने बम्बईको थानातटका एक छोटा सा बन्दर माना है। उस समय भारतके इस समुद्री तटपर थाना ही सबसे अधिक प्रभावशाली स्थान था अतः दूर देशोंके व्यवसायी जहाज ले थानाका बाजार करने आते थे और कभी २ क्षणिक विश्राम करनेके लिये इस बंदरके तटपर लंगर डाल देते थे। इसके अतिरिक्त इस बंदरका और कोई उपयोग किसीने भी नहीं लिया। शताब्दियां व्यतीत हो गयीं, पर इसके भाग्यपलटने पल्टा न खाया। यहांतक कि १७वीं शताब्दीके अन्ततक लोगोंकी यही धारणा थी कि लाख चेष्टा करनेपर भी यह बंदर व्यवसायकी सुविधाके लिये कभी उपयुक्त नहीं हो सकता। यही कारण था कि इस द्वीपपुंजके व्यवसायने कभी उन्नतिकी कल्पना भी नहीं की। सबसे पहले ईस्टइण्डियाकम्पनीके प्रबन्धमें आकर इसने अपने स्वरूपको पहिचाननेकी चेष्टा करनेके लिये आंखें खोलीं।

कहनेका मतलब यह है कि बम्बईकी विशाल २ इमारतोंके बीचमें यह चौड़े सुन्दर और सजे हुए राजमार्ग बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं। और बाहरी दृष्टिसे देखनेपर बम्बई एक इन्द्रपुरीकी तरह मालूम होती है।

मगर यह सब अमीरोंकी कहानियां हैं। इस मायाजालके पीछे गरीबीका जो दर्दनाक दृश्य बम्बई शहरमें अभिनीत होता है उसको देखकर हृदय बड़ा दुःखित हो जाता है। इस १२ लाखकी विशाल जन संख्या पूर्ण बस्तीमें केवल ३४८०८ रहनेके मकान हैं। जिनमेंसे दो तिहाईके करीब ऐसे हैं जिनमें केवल एक २ कमरा है ऐसा अंदाज लगाया जाता है कि जहां बस्तीकी गहराई है, वहांपर एक एकड़ जमीनके पीछे लगभग ४५० मनुष्योंके रहनेकी औसत पड़ती है। इस बातकी जांच करके शहरकी सोशियल सर्विस लीगने "मुम्बईनी गली कुच्चियों" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है। उसके अन्दर एक स्थान पर लिखा हुआ है कि बहुतसी चालें (बड़ा मकान जिसमें बहुतसे परिवार एक साथ निवास करते हैं) ऐसी देखनेमें आती हैं जहां भीतर और बाहर कीचड़ और कचरा भरा हुआ रहता है। एक स्थान पर पांच सौ मनुष्योंके लिये केवल दो जगह कपड़े धोनेके लिये बनी हुई हैं जहांपर २ फीट गंदा पानी हमेशा भरा रहता है।

जून सन् १६२२ को लोअर परेलकी म्युनिसिपल चालके लिये एक्जीक्युटिव्ह आफिसरके पास अर्जियां गयी थीं। उनमें एक जगह पर लिखा हुआ है कि ४० किरायेके कमरोंके पीछे केवल एक टट्टी और एक धोनेकी जगह बनी हुई है। दूसरी सात टट्टियां इतनी गन्दी हैं कि वहांपर एक मिनट भी खड़ा रहना असह्य मालूम होता है। यहां तक कि कई दफे इस गंदगीकी वजहसे डाक्टरोंने उस चालमें बीमार मनुष्योंको देखनेके लिये आनेसे भी इनकार कर दिया।

इस नारकीय स्थितिके अन्दर बम्बईकी अधिकांश गरीब जन संख्या अपने संकटमय जीवनको व्यतीत कर रही है। इनके यहां जन्म पाये हुए हजार बालकोंमें से लगभग ४४१ बच्चे जन्मके कुछ ही समय पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

हर्ष इतना ही है कि यहांके म्युनिसिपल कारपोरेशन और इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और वे इनमें सुधार करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

बम्बईका सामाजिक जीवन

बम्बई नगरमें हिन्दुस्थानकी प्रायः सभी जातियोंके तथा सभी भाषाभाषी लोग कमोवेश तादादमें पाये जाते हैं। फिर भी यहांपर प्रधानतया पारसी, भाटिया, गुजराती, मारवाड़ी, खोजा, पञ्जाबी, मुल्तानी, बोहरा इत्यादि जातियोंकी बस्ती विशेष रूपसे पायी जाती है।

पारसी—बम्बई नगरकी जातियोंमें सबसे आगे बढ़ी हुई और सुधारके ऊँचे शिखरपर पहुंची हुई यहांकी पारसी जाति है। जिस प्रकार यह जाति अपने अतुल धन और आश्चर्यकारी व्यापारी प्रतिभाकी वजहसे संसारमें प्रख्यात है उसी प्रकार अपने सुधरे हुए सामाजिक जीवनमें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना सानी नहीं रखती। केवल भारतवर्षमें ही क्यों, दुनिया भरमें सामाजिक दृष्टिसे आगे बढ़ी हुई सभी

इस प्रकार सबसे मेल जोल बढ़ाकर कम्पनीने किसी प्रकार अपना काम चलाया, एक बार शान्ति स्थापित होतेही इस नगरका व्यवसाय उन्नतिकी ओर बढ़ा और पासके नगरोंको भी विदित हो गया, कि कम्पनीने अपना प्रधान कार्यालय सूरतसे उठाकर बम्बईमें लाकर रक्खा है। फिर क्या था व्यवसायियोंको अवसर मिला और उन्होंने वहां जाकर बसनेकी इच्छा प्रकट की। कम्पनीकी ओरसे पूर्ण आश्वासन मिलनेपर सन् १७५३ ई० में औरंगाबाद और पूनासे आकर कुछ महाजन बसे, और अपनी दुकानें खोलीं। सन् १७७० में कम्पनीने यहांसे चीन रुई भेजना आरम्भ किया।

देशका राजनैतिक वातावरण शान्त हो गया, घरेलू अशान्तिने कम्पनीका पीछा छोड़ा, समीपके नगरोंसे महाजन तथा इतर व्यवसायी नगरमें आकर बस गये, कम्पनीका प्रधान कार्यालय भी यहीं उठ आया, परन्तु फिर भी नगरके व्यवसायने किसी प्रकारकी उल्लेखनीय उन्नति नहीं कर दिखायी। इसका भी कारण था। ईस्ट-इण्डिया कम्पनी किसीको स्वतंत्र रूपसे इस नगरमें व्यवसाय करनेकी आज्ञा नहीं देती थी। व्यवसायका द्वार बंद था। व्यवसाय करनेके इच्छुकोंको कम्पनीसे व्यवसाय करनेके लिये लैसेन्स लेना पड़ता था। मिल्बर्न नामक लेखकके मतानुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी सद्भावना तथा सहानुभूति उपार्जितकर कुछ इनी गिनी योरोपियन कम्पनियां चलतू व्यवसाय कर रही थीं। उन कम्पनियोंके नाम ये हैं:—

(१) ब्रूस फासेट एण्ड को०
(२) फारबेस एण्ड को०
(३) शोटन एण्ड को०
(४) जान लेकी
(५) एस ब्यूफर्ट
(६) बैंकर सन्स एण्ड को०
(७) जान मिचेंल एण्ड को०
(८) बूलर एण्ड को०
(९) आर० मैकलीन एण्ड को०

इनके अतिरिक्त सब कारोबार कम्पनीकी देखरेखमें होता था। कम्पनीके निजके जहाज थे। इन जहाजोंके कमान्डर तथा कम्पनीके अन्य कर्मचारी अपने जहाजोंपर पारसी लोगोंको कम्पनीका एजेन्ट नियुक्त करते थे। ये एजेण्ट सभी प्रकारके उत्तरदायी माने जाते थे। उस समयका बड़ेसे बड़ा जहाज रुईकी ४ हजार गांठ लाद सकता था। जहाजसे जानेवाले उतरनेवाले और गुदाममें पड़े रहनेवाले मालका बीमा करनेवाली केवल एक ही बीमा कम्पनी थी। इस बीमा कम्पनीका नाम बाम्बे इन्स्यूरेन्स सोसाइटी था और यह २० लाख रुपयेकी पूंजीसे स्थापित की गयी थी।

सूरतके व्यवसायपर दोहरी शनि दृष्टि पड़ रही थी, एक ओर तो कम्पनीकी एकतंत्री व्यवसाय जनित स्वार्थ नीति और दूसरी ओर मुगल सत्ताका दुर्लक्ष्य। अतः वहांके व्यवसायको मरणासन्न धक्का लगा, फल यह हुआ, कि बम्बईको अवसर मिला। इस सुअवसरसे यहांके व्यवसायकी वृद्धि हुई। सन् १८०२ ई० से सन् १८०६ के बीच २५ ला० पौण्डके मूल्यका सामान विदेशसे आया और १६ ला० २८ हजार पौण्डके मूल्यका यहांसे विदेश गया। इसमेंसे भी केवल चीनको सन् १८०५ ई० में ६४,७३,६३९) रु० की रुई गयी। परन्तु सन् १८१३ ई० में इस शहरमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ और यहांके व्यवसायके भाग्यचक्रने अनुकूल पलटा खाया।

हर्ष है कि मारवाड़ी समाजका ध्यान इस ओर जाने लगा है और भविष्यके सुदूर पर्देपर प्रकाशकी चमकती हुई उज्ज्वल रेखा दिखाई देने लगी है।

बोहरा—यह समाज भारतवर्षके सभी समाजोंमें संगठन शक्तिके अन्दर बहुत बढ़ा हुआ है। इस समाजका कोई व्यक्ति अपनी असमर्थताके कारण भूखों नहीं मरता और न अपनी पेट पूर्तिके लिये वह किसी दूसरी जातिवालेके यहां नौकरी ही करता है। व्यापारिक कुशलतामें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना अच्छा स्थान रखती है। फिर भी सामाजिक दृष्टिसे इसमें पर्दे आदिकी कुप्रथाका काफी जोर है।

साधारण दृष्टिसे देखा जाय तो बम्बईका सामाजिक जीवन भारतके दूसरे शहरोंसे बहुत सुधरा हुआ और समुन्नत है। खासकर पर्देकी नाशकारी प्रथाका प्रचार न होनेकी वजहसे स्त्रियोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके गार्हस्थ्य जीवनका यहांपर बड़ा सुन्दर रूप नजर आता है। यहांपर स्त्रियोंकी शिक्षाके लिये कई स्कूल तथा ऊंची शिक्षा देनेवाले हाईस्कूल और कालेज भी बने हुए हैं। जिनमें प्रतिवर्ष सैकड़ों स्त्रियां शिक्षा प्राप्तकर गार्हस्थ्य जीवनमें प्रवेश करती हैं। संध्या समय हिंगिंग गार्डन, चौपाटी तथा अपोलो बन्दरपर जाकर देखनेसे स्त्री-स्वाधीनता और शिक्षाका रमणीय परिणाम तथा दाम्पत्य जीवनका सुमधुर स्वरूप देखनेको मिलता है। इन स्थानोंपर सैकड़ों शिक्षा सम्पन्न दम्पति घूमने आते हैं और जीवनका लाभ और सुमधुर आनन्द लेते हैं। इस गुलाम देशमें भी स्वाधीनताके संसर्गसे बनेहुए इन स्वर्गीय दृश्योंको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

इसी प्रकार और २ जातियोंका सामाजिक जीवन भी भिन्न२ प्रकारका है मगर स्थानाभावसे हम उन सबका परिचय देनेमें असमर्थ हैं।

बम्बईके कसाई खाने और पशुओंकी करुणाजनक स्थिति

बम्बईमें दूध देनेवाले पशुओंकी दशा बड़ी शोचनीय है। यहांपर दूधका व्यापार करनेवाले लोगोंके तबेले बने हुए हैं। तबेलेवाले बाहर गावोंसे अच्छे दूध देने वाले पशुओंको खरीदकर लाते हैं, और उन्हें तबेलोंमें रखते हैं। इस प्रकार इस शहरमें १०६ तबेले,तथा इसके आसपासके दूसरे स्थानोंमें १५१ तबेले बने हुए हैं। इस प्रकार इन तबेलोंमें लगभग ३६००० पशु रहते हैं जिनके छः हजार मन दूधसे बम्बई शहरके निवासी लाभ उठाते हैं। इन जानवरोंके लिये तबेलेवालोंको प्रति दिन प्रति ढोर करीब १॥, २ रुपया खर्च पड़ता है।

यह खर्च जबतक ढोरके दूधसे निकलता है अर्थात् जबतक वह ढोर कमसे कम पांच सेर दूध प्रति दिन देता है तबतक ये लोग उसे रखते हैं और जब दूधका औसत कम हो जाता है, अर्थात् वह ढोर पांच सेरसे चार सेर या तीन सेर दूधपर आ जाता है तब खर्च पूरा न पड़ सकनेकी वजहसे वे लोग लाचार होकर इन हृष्ट-पुष्ट ढोरोंको कसाइयोंके हाथमें बेच देते हैं।

यह तो बड़े ढोरोंकी हालत हुई। बच्चोंकी हालत इनसे भी ज्यादा दर्दनाक और करुणाप्रद है। तबेले वाले समझ लेते हैं कि ये ढोर हमेशा तो हमारे पास रहेंगे ही नहीं, इसलिए उनके बच्चोंकी ओरसे प्रायः वे निर्मम रहते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंके पालनेमें उन्हें दूधकी भी क्षति होती है, और उनके खूंटेका भी अलग किराया

नदियोंके मार्गसे होनेवाले व्यवसायकी वृद्धिके लिये बाम्बे कॉस्ट एण्ड रिवर स्टीम नेवीगेशन कम्पनियोंकी व्यवस्था कर दी।

सन् १८६५ में इस नगरसे करांची और फारसकी खाड़ीके मार्गसे समुद्री तारकी व्यवस्था हुई। इससे भी नगरके व्यवसायको बल मिला।

इसी बीच अमेरिकन युद्धके छिड़ जानेसे भारतको स्वर्ण सुअवसर हाथ लगा, और बातकी बातमें यहांके बुद्धिमान व्यापारियोंकी जेबें गरम हो उठीं। सन् १८६४ के अन्तमें ३१ बैंकें, १६ अर्थ संस्थाएं, ८ लैण्ड कम्पनीज, १६ प्रेस कम्पनीज, २० इन्स्यूरेंस कम्पनियां और ६२ ज्वाइन्ट-स्टॉक कम्पनियां खुल गयीं। स्मरण रहे कि सन् १८५५ ई० में एक भी ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनी यहां न थी हां केवल दस बीमा कम्पनियां थीं। इस समय इतना ऐश्वर्य हो गया कि लोग मदान्ध हो गये; परन्तु सन् १८६५ ई० के बसन्त ऋतुमें यह युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्धके समाप्त होते ही बम्बईका बाजार एकदम आपत्ति ग्रस्त होगया। उसे भीषण शिथिलताने आ दबोचा। कम्पनियां टूट चलीं, कमर्शियल बैंकें दरवाजा बंदकर बैठ गयीं, हजारों बड़े २ व्यवसायी दिवालिये करार दिये गये। यहां तक कि उस समयके सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यवसायी दानवीर प्रेमचन्द रायचन्द तथा आर० जमशेदजी जीजी भाई भी नादार करार दिये गये।*

इसी धड़कड़ाहटके बीच यहांकी सरकारी बैंक भी चूर-चूर होकर धराशायी हो गई। इस वर्षके अगस्त मासके टाइम्ससे पता चलता है कि लोगोंको देना तो कई गुना अधिक था, परन्तु उनके मकान और जमीन नीलामकरके भी कुछ चार करोड़ रुपये वसूल किये गये। इससे नगरकी बढ़ती हुई उन्नति को भारी धक्का पहुंचा।

सन् १८६७ ई० में कुछ शान्ति हुई। सन १८६८ में पुनः सरकारी बैंक खुली। सन १८७०—७२ के बीच यहांका निर्यात २४ करोड़का और आयात १२ करोड़का था। वही सन् १८८०—८२ ई० में बढ़कर २७ करोड़ और १७ करोड़का हो गया। वही निर्यात् सन् १८८५-८७ में २७ करोड़से बढ़कर ३३ करोड़ हो गया और सन् १८९०-९२ में ३३ से ३६ करोड़ हो गया। इसी प्रकार आयात भी जहां १७ करोड़ था, वहां सन् १८८५-८७ में २२ करोड़ और सन् १८९०-९२ में २२ करोड़से बढ़कर २७ करोड़ हो गया।

यह है यहांके व्यवसायका संक्षिप्त इतिहास। इसी व्यवसायके बलपर मछली मार कर पेट भरनेवालोंका द्वीपसमूह आज सब प्रकार फूला-फला और हरा भरा हो लहलहा रहा है।

पूंजीपति—बम्बईमें सभी प्रकारके लोगोंकी आबादी है। अतः भाटिया, जैन, मारवाड़ी, बनियां खोजा, मेमन, बोहरा, पारसी, तथा यहूदी आदि सभी जातियोंके लोग यहां पूंजीपति हैं। यहां गुजराती वालों और दक्षिणवालोंमें ब्राह्मण तथा सोनार अधिक धनवान हैं। इनके अतिरिक्त अरबी और मुल्तानी भी बड़े २ महाजन और सर्राफ हैं।

---

* S. M. Edwardes I. C. S. writes "By the end of 1864 the whole community, from the highest English official to the lowest native hocker, became utterly demoralised.

[The rise of Bombay page 2?0]

इस ओर जब आज हम अपनी परिस्थितिको देखते हैं तो हमें भारी निराशा होती है, वर्तमानमें हमारे देशमें मालको एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करनेवाली, डाकको लादनेवाली, और पेसेन्जरोंको ले जानेवाली जितनी भी जहाजी कम्पनियां हैं प्रायः सभी विदेशी हैं। हां, एक समय ऐसा भी था जब हमारे देशमें भी इस व्यवसायका इतना उत्थान था कि हम अपने यहांके बने हुए जहाजोंपर माल लादकर इंग्लैण्ड वगैरह देशोंमें भेजते थे और विदेशोंमें हमारे जहाज टिकाऊ एवं मजबूत प्रतीत हो चुके थे। लोग बड़ी चाहसे उन्हें खरीदते थे। लेकिन ज्यों ज्यों अंग्रेजी आधिपत्य हमारे देशमें जड़ पाता गया, त्यों त्यों हम इस व्यवसायको भूलते गये एवं इस बातकी चेष्टाएं की गईं जिससे हम इस व्यवसायको सर्वथा भूल जांय।

प्रसन्नताका विषय है कि इधर कुछ वर्षोंसे हममें जागृतिके चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे हैं। बम्बईके प्रतिष्ठित मिल मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० और कई सज्जन इस विषयमें भारतीयोंका पैर आगे बढ़ानेके लिए बहुत अधिक प्रयत्न कर रहे हैं। आप लोगोंके परिश्रमसे सन् १९२६ से गवर्नमेंटने डफरिन ट्रेनिंग शिप नामक जहाजी विद्या सिखलानेका एक स्कूल स्थापित किया है। यह शिक्षा समुद्रमें डफरिन नामक जहाजपर ही दी जाती है। इस विद्याके सिखलानेके लिए करोड़ोंकी लागतसे डफरिन नामक एक स्पेशल जहाज बनवाया गया है, इसमें प्रति वर्ष ३० भारतीय छात्रोंको जिनकी वय १६ वर्षसे अधिक न हो, जहाजी शिक्षा देनेके लिए भरती किया जाता है। यहांका ३ वर्षका कोर्स है। यहां शिक्षा प्राप्त करनेके बाद ३ वर्ष दूसरे जहाजमें काम करनेपर यहांका छात्र जहाजी आफिसरका पद पा सकता है। गवर्नमेंट द्वारा भारतीयोंको इस प्रकारकी शिक्षा देनेका यह प्रथम ही स्कूल है। वर्तमानमें इस जहाजमें २९ छात्र हैं। महीनेके प्रथम रविवारको गेट आफ इण्डियासे २ बजे एक नौका उन छात्रोंसे भेंट करनेवाले मनुष्योंको ले जाती है। एवं जहाजपर सब छात्रोंसे भेंट कराकर वापस छोड़ जाती है, यह प्रबंध डफरिन जहाजकी ओरसे ही है। इसीप्रकार महीनेके अंतिम रविवारको सब छात्र शहरमें आ सकते हैं। इसमें ब्राह्मण, पंजाबी, क्रिश्चियन, गुजराती, दक्षिणी आदि सभी तरहके छात्र हैं।

हम ऊपर कह आये हैं कि हमारा विदेशोंके साथ जितना व्यवसायिक सम्बन्ध है उन सबके लिये हमें विलायती जहाजी कम्पनियोंकी शरण लेनी पड़ती है वर्तमानमें कुछ नीचे लिखी हुई प्रसिद्ध कम्पनियां विदेशोंके साथ भारतका व्यवसायिक सम्बन्ध जोड़नेका काम करती हैं दूसरे देशोंके पक्के मालको भारतमें लाती हैं, तथा यहांका कच्चा माल लादकर सात समुद्र पार पहुंचा देती हैं।

(१) पी० एण्ड० ओ० स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—यहांसे अदन, इजिप्ट, माल्टा, जिब्राल्टर होती हुई इङ्गलेण्ड जाती है। यह जहाज प्रति शनिवारको यहांसे मेल स्टीमर तथा पेसेंजर लेकर नियम पूर्वक

म्यूनिसिपल ऑफिस, बम्बई

कुलाबासे बारातक करीब ९० लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। इस कम्पनीने भी जी० आई० पी० की तरह अपने लोकल व्यवहारमें बिजलीकी गाड़ीका आरंभ किया है। इस कम्पनीका मुख्य आफिस कलाबा बंदरपर है। तथा रेलवे स्टेशनके अतिरिक्त टिकिट और पार्सलके लिये कालबादेवी, क्रॉफर्ड मार्केट, ताजमहल होटल, तथा आर्सनेल स्ट्रीटपर प्रबंध किया है।

सन् १८८५ की पहिली जनवरीको जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० का कोचिंग और गुड्स स्टॉक परस्पर परिवर्तन किया जाने लगा। इससे एक दूसरेकी लाइनके डब्बे दोनों लाइनोंपर आने जाने लगे, जिससे व्यवसायमें बहुत सहूलियतें पैदा हो गईं।

पोस्टऑफिस

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समय भारतमें डाककी कोई सुव्यवस्था नहीं थी। सन् १६६१ ईस्वीके लगभग ईस्ट इण्डिया कम्पनीके पास जो पत्र आते थे वे उन व्यापारी जहाजोंके द्वारा आते थे जो समय २ पर इधर होकर निकल जाते थे। इन जहाजोंमें लंदन होकर जानेवाले जहाज बहुत कम मिलते थे। इसी प्रकार भारतके भीतरी भागमें पत्रोंके पहुंचानेका कोई प्रबंध नहीं था। इसलिये १६८८ में ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने यहां पोस्टका व्यवहार जारी करनेके लिये विचार किया। परदेशी और विदेशी डाककी नियमित व्यवस्थाका परिचय सन् १७८७ से शृंखलाबद्ध मिलता है। उस समय प्रतिवर्ष ३० नवम्बरको क्रूजर जहाज कलकत्तेसे डाक लेकर मद्रास और बम्बई होता हुआ स्वेज नहरतक अपने एजेंटके पास पहुँच जाता था। सन् १७८७ में बम्बईमें पोस्टमास्टरकी नियुक्ति हुई। प्रांतकी डाक व्यवस्थाके लिये मि० चार्ल्स एल्फिस्टनकी देख-रेखमें बम्बई-का जनरल पोस्ट ऑफिस खोला गया। सन् १७९८ में मासिक रूपमें विलायत डाक भेजनेका प्रबंध किया गया।

यह प्रबंध ईस्टइण्डिया कम्पनीका निजका था। बम्बईके टाइम्स ऑफ इण्डियाके अक्टोबर सन् १८५४ के अंकसे पता चलता है, कि उस समय अपने प्राइवेट पत्र भेजनेवाले व्यक्तिको सेक्रेटरी टू दि गवर्नमेंटको एक पत्र लिखना पड़ता था, तथा साथमें भेजा जानेवाला पत्र भी भेजना पड़ता था। पत्रमें भेजने वालेका परिचय एवं हस्ताक्षरकी आवश्यकता होती थी, इस प्रकार ४ इंच लम्बे २ इंच चौड़े तथा ½ तोला वजनके पत्रकी १०), आधा तोला की १५) तथा १ तोलाकी २०) रुपया फीस देनी पड़ती थी। पता चला है कि उन्नीसवीं शताब्दीमें मेहरवानजी पोस्टवाला नामक, एक पारसी सज्जनने एक स्थानसे दूसरे स्थानपर डाक भेजनेका अपना प्राइवेट प्रबंध कर रखा था, और ये प्रतिपत्र १ पैसा लेकर पत्र भी पहुँचा देता था। १८२५ में थैलेकी प्रथाका जन्म हुआ एवं बम्बई और पूनेके बीच बंगकी पिटारीमें कुलीके सिरपर डाक पहुँचाई जाती थी। सन् १८४१ में रजिस्टर्ड पत्रोंकी व्यवस्था की गई और १८५४ में छापे कागजोंपरसे ।) फीस उठाकर

एण्ड० को० कम्पनीका जहाज यहींसे प्रति शनिवारको रवाना होता है, तथा पेसेंजर जहाज भी यहींसे छूटते हैं। भारतकी एक मात्र जहाजी कम्पनी सिंधिया स्टीमनेवीगेशन कम्पनीका ऑफिस भी सुदामा हाउसमें यहींपर है। यहां पोर्ट ट्रस्टका ऑफिस, इम्पीरियल बैंक आदि कई दर्शनीय इमारतें हैं।

एल्फिन्स्टन सर्कल—पहिले यहां रुईका बाजार लगता था, जो अब वर्तमानमें शिवरीमें ले जाया गया है। इस बाजारमें टाउनहाल तथा ऑफिसें हैं।

कालबादेवी रोड—यहां हारमोनियमवाजे इत्यादि सब प्रकारके वाद्य यंत्रोंकी दुकानें साइकिलके व्यापारी तथा बड़ी २ मारवाड़ी एवं गुजराती सराफी पेढ़ियें हैं। देशी ढंगसे हुंडी चिट्ठीका व्यापार करनेवाली पेढ़ियाँ इस बाजारमें हैं। प्रतिदिन संध्या समय करोड़ों रुपयोंकी हुंडीका भुगतान इस बाजारमें होता है। अलसीका पाटिया (जहां अलसी और गेहूं के वायदेका बिजिनेस होता है) भी इसी बाजारमें है।

शेखमेमन स्ट्रीट—इस सड़कके छोटे २ हिस्सोंके कई नाम हैं।

१—मारवाड़ी बाजार—यहां रुईके वायदेका बड़ा भारी बिजिनेस होता है। रुईका कच्चा और पक्का दोनों पाटिये यहींपर हैं। इस बाजारमें रुईका काम करनेवाले व्यापारियों और सराफोंकी पेढ़ियें हैं। दिनके १२ बजेसे रात्रिके १२ बजेतक यहां भयंकर भीड़ एवं चहल-पहल रहती है। इसके अतिरिक्त यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा काश्मीरी शालका व्यापार करनेवाली पंजाबी पेढ़ियां तथा जर्मन सिल्वरके बर्तनोंकी दुकानें हैं।

सराफ और मोती बाजार—इस बाजारमें चांदी सोनेके हाजर मालका एवं वायदेका बिजिनेस करनेवाली कई पेढ़िये हैं। कई लाखकी लागतसे बनीहुई बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग जिसमें चांदी तथा सोनेका बिजिनेस होता है, इस बाजारमें हैं। इसके अतिरिक्त सेंट्रलबैंक, और इण्डिया बैंककी शाखाएं भी यहांपर हैं। लखमीदास मार्केट, मूलजी जेठा मार्केट, चांदी सोनेके जेवरों तथा जौहरियोंकी दुकानें, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट, कम्बर तथा बरासके व्यापारी और मंगलदास मारकीट भी इसी रोडपर हैं।

८ जौहरी बाजार—यहां हीरा, पन्ना, मानक, मोती, आदि जवाहिरातका व्यापार करनेवाले जौहरियोंकी पेढ़ियां हैं। संध्यासमय ४ बजे खड़े २ सौदा करते हुए एवं नगोंकी परीक्षा करते हुए जौहरियोंकी भीड़ लगी रहती है। जरा-जरासी पुड़ियामें लाखों रुपयोंके नग इसी बाजारमें दृष्टिगोचर होते हैं। प्रसिद्ध मुम्बादेवीका मंदिर एवं तालाब भी इसी बाजारमें है।

९ तांबाकांटा—यहां तांबा पीतलकी चद्दरें एवं सूतके व्यापारियोंकी पेढ़ियें हैं।

१० पायधुनी—यहां औषधि बेचनेवाले अत्तारोंकी दुकानें हैं।

११ अब्दुलरहमान स्ट्रीट—इस रास्तेपर स्टेशनरी, कटलरी, हथियार तथा कांचका सामान थोक और परचून बेचनेवाली बड़ी २ दुकानें हैं।

१२ नागदेवीस्ट्रीट—इस रास्तेपर माचिसके व्यापारी जीन एवं मील सम्बन्धी छोटी २ मशीनरीके व्यापारी और हार्डवेरके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

एक ओरसे दूसरी ओर जाना कठिन मालूम होता है। एक स्थान पर ५ मिनिट खड़े रहकर आने और जानेवाली मोटरोंकी संख्या गिनी जाय, तो ५०० मोटरें हमारी दृष्टिके सामने गुजर जावेंगी। बम्बईका सोनापुर स्मशानघाट भी इसी सड़कके एक किनारे है।

२५—गिरगांव—सब प्रकारके स्टोर्स एवं माल बेचनेवालोंकी दुकानें हैं।

२६—फारसरोड-गोलपीठा—यहां कई नाटक एवं सिनेमा कम्पनियां हैं। बम्बईके मवालियोंका यह खास स्थान है। इस स्थानपर जोखम लेकर जानेमें बड़ी जोखम है।

२७—चोर बाजार-भिंडीबाजार:—यहां सब प्रकारकी सस्ती वस्तुएं बिकती हैं। नलबाजारका मारकीट यहीं पर है। यहां चोर बाजारके नामसे चार पांच गलियां हैं, जहां बहुत बड़ी तादादमें पुराने लोहेके सामान, तरह तरहके बढ़िया फरनीचर, हार्डवेयरके सामान, पुराने कोट, कम्बल, कटलरी आदि आदि सब प्रकारके सामान पुराने और नये सभी प्रकारके बिकते हैं। सन्ध्या समय ठसाठस भरे हुए बाजारमें जेबकट और मवालियोंसे विशेष सावधान रहना चाहिये।

२८—ग्रांटरोड—यहां सुप्रसिद्ध फर्म्स, होटल तथा नाटक-सिनेमा कम्पनियां हैं। इसके अतिरिक्त लेमिंगटनरोड चर्नीरोड आदि बहुत बाजार हैं। पर वे खास व्यापारिक बाजार न होनेसे उनका परिचय यहां देना व्यर्थ है।

२९—पुराना दारूखाना—यहां सब प्रकारका भारी पुराना लोहका सामान बहुत बड़ी तादादमें मिलता है।

बम्बई नगरकी बस्ती

यह शहर समुद्रके किनारेपर बहुत सुन्दर स्थानपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर समुद्र अपनी प्रचंड तरंगोंसे लहरा रहा है। कुछ समय पूर्व यहांके रास्ते व सड़कें बड़ी तंग और संकुचित हालतमें थीं। मगर गवर्नमेंटका एक प्रिय और कृपापूर्ण स्थान होनेसे यहांकी गवर्नमेन्टका ध्यान बहुत शीघ्र इस ओर गया और सन् १८०३ में यहांके गवर्नरने एक विज्ञप्ति निकालकर आज्ञा दी, कि परेलरोड और गिरगांवरोड नामक सड़कें बढ़ाकर ६० फीट चौड़ी कर दी जांय और शेखमेमन स्ट्रीट और डोंगरी स्ट्रीटकी सड़कें बढ़ाकर ४० फीट चौड़ी कर दी जांय। इसके पश्चात् सन् १८१२ में तीसरे आर्डिनेन्स और रेजोल्युशनके मुताबिक किले की सड़कोंमें सुधार हुआ। नगरमें भी सड़कें चौड़ी करनेका कार्य जोरोंसे होने लगा। सन १८३८ में ग्रांटरोडका उद्घाटन हुआ। सन् १८५० में हार्नबी रोड बना और सन् १८६०, ७० के बीच नगरमें ३५ बड़े बड़े राजमार्ग बनकर तैयार हो गये। पहले इन सब सड़कोंका काम म्युनिसिपल कारपोरेशनके हाथोंमें था, परन्तु सन् १८९८ में जब सिटी इम्प्रूवमेन्ट-ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभाग स्थापित हुआ, तभीसे यह कार्य इस विभागके हाथमें है। यहांकी सड़कोंमें धीरे धीरे लगातार सुधार होता गया और आज ये सब इतनी सुन्दर और विशाल अवस्थामें हैं कि देखकर तबियत प्रसन्न हो जाती है। प्रायः सभी सड़कें डामरसे पाट दी गयी हैं जो इस समय आईनेकी तरह चमकती हैं। इन सड़कोंपर प्रायः दिनमें दो बार छिड़काव होता है। पहले यह छिड़काव समुद्रके पानीसे होता था पर वैज्ञानिक दृष्टिसे यह अस्वास्थ्यकर सिद्ध होनेसे अब नलसे मीठे पानीका छिड़काव होता है।

एक ओरसे दूसरी ओर जाना कठिन मालूम होता है। एक स्थान पर ५ मिनिट खड़े रहकर आने और जानेवाली मोटरोंकी संख्या गिनी जाय, तो ५०० मोटरें हमारी दृष्टिके सामने गुजर जावेंगी। बम्बईका सोनापुर स्मशानघाट भी इसी सड़कके एक किनारे है।

२५—गिरगांव—सब प्रकारके स्टोर्स एवं माल बेचनेवालोंकी दुकानें हैं।

२६—फारसरोड-गोलपीठा—यहां कई नाटक एवं सिनेमा कम्पनियां हैं। बम्बईके मवालियोंका यह खास स्थान है। इस स्थानपर जोखम लेकर जानेमें बड़ी जोखम है।

२७—नल बाजार-भिंडीबाजारः—यहां सब प्रकारकी सस्ती वस्तुएं बिकती हैं। नलबाजारका मारकीट यहीं पर है। यहां चोर बाजारके नामसे चार पांच गलियां हैं, जहां बहुत बड़ी तादादमें पुराने लोहेके सामान, तरह तरहके बढ़िया फरनीचर, हायफरीके सामान, पुराने कोट, कम्बल, कटलरी आदि आदि सब प्रकारके सामान पुराने और नये सभी प्रकारके बिकते हैं। सन्ध्या समय ठसाठस भरे हुए बाजारमें जेबकट और मवालियोंसे विशेष सावधान रहना चाहिये।

२८—ग्रांटरोडः—यहां मुत्तफर्रिक फर्म्स, होटल तथा नाटक-सिनेमा कम्पनियां हैं। इसके अतिरिक्त लेमिंगटनरोड चर्नीरोड आदि बहुत बाजार हैं। पर वे खास व्यापारिक बाजार न होनेसे उनका परिचय यहां देना व्यर्थ है।

२९—पुराना कारखाना—यहां सब प्रकारका भारी पुराना लोहका सामान बहुत बड़ी तादादमें मिलता है।

बम्बई नगरकी बस्ती

यह शहर समुद्रके किनारेपर बहुत सुन्दर स्थानपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर समुद्र अपनी प्रचंड तरंगोंसे लहरा रहा है। कुछ समय पूर्व यहांके रास्ते व सड़कें बड़ी तंग और संकुचित हालतमें थीं। मगर गवर्नमेंटका एक प्रिय और कृपापूर्ण स्थान होनेसे यहांकी गवर्नमेण्टका ध्यान बहुत शीघ्र इस ओर गया और सन् १८०६ में यहांके गवर्नरने एक विज्ञप्ति निकालकर आज्ञा दी, कि परेलरोड और गिरगांवरोड नामक सड़कें बढ़ाकर ६० फीट चौड़ी कर दी जांय और शेखमेमन स्ट्रीट और डोंगरी स्ट्रीटकी सड़कें बढ़ाकर ४० फीट चौड़ी कर दी जांय। इसके पश्चात् सन् १८१२ में तीसरे आर्डिनेन्स और रेजोल्युशनके मुताबिक किले को सड़कोंमें सुधार हुआ। नगरमें भी सड़कें चौड़ी करनेका कार्य जोरोंसे होने लगा। सन १८३८ में ग्रांटरोडका उद्घाटन हुआ। सन् १८५० में हार्नबी रोड बना और सन् १८६०, ७० के बीच नगरमें २५ बड़े बड़े राज मार्ग बनकर तैयार हो गये। पहले इन सब सड़कोंका काम म्युनिसिपल कारपोरेशनके हाथोंमें था, परन्तु सन् १८८८ में जब सिटी इम्प्रवमेण्ट-ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभाग स्थापित हुआ, तभीसे यह कार्य इस विभागके हाथमें है। यहांकी सड़कोंमें धीरे धीरे लगातार सुधार होता गया और आज ये सब इतनी सुन्दर और विशाल अवस्थामें हैं कि देखकर तबियत प्रसन्न हो जाती है। प्रायः सभी सड़कें अलकतरेसे पाट दी गयी हैं जो इस समय आईनेकी तरह चमकती हैं। इन सड़कोंपर प्रायः दिनमें दो बार छिड़काव होता है। पहले यह छिड़काव समुद्रके पानीसे होता था पर वैज्ञानिक दृष्टिसे यह अस्वास्थ्यकर सिद्ध होनेकी वजहसे अब मीठे पानी का छिड़काव होता है।

यहांके कुएँका जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

मारकेट मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, मुरगेकी सामान, होजरी, कटलरी, एवं शीशे वगैरह, मेवा आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकानें इस मार्केटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाड़ियोंमें भरा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाब भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनबार पर्याप्त बड़ा स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलाबाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ६ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलाबासे थोड़ी दूरपर है। सुदूरदेशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है। इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलाबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान हैं। यहीं गवर्नमेंट हाउस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी क्रांतिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी मातुश्रीके नामपर यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २२०० फुट ऊंची भव्य एवं कई रमणीय छोटी २ पहाड़ियां हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पानीके झरने हैं। यहांके छोटे २ पर्वतीय रास्ते, तरह तरहके दृश्य एवं शीतल मंद सुगंध वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे अधिक शांति प्रदान करती हैं।

जातियोंमें इनका स्थान ऊंचा है। पारसी समाज की सबसे बड़ी विशेषता इसके अंदर पाया जाने वाला स्त्री स्वातंत्र्य है। इस समाजकी सभी स्त्रियां ऊंची शिक्षासे शिक्षित और सुधरे हुए विचारोंकी होती हैं। इनका गार्हस्थ्य-जीवन, दाम्पत्य-जीवन तथा मातृ-जीवन सभी उच्च कोटिके हैं। किसी प्रकारका पर्दा न होते हुए भी इनका चरित्र बड़ा उज्ज्वल है और शुद्ध वायुमें अपने पति पुत्र और दूसरे व्यक्तियोंके साथ स्वच्छन्दता पूर्वक घूमते रहनेसे इनका स्वास्थ्य भी उच्च कोटिका रहता है। इस समाजके जीवनसे सारे बम्बई शहरके ऊपर अपना एक अच्छा और वांछनीय प्रभाव पड़ता है।

भाटिया—बम्बईका भाटिया समाज एक धार्मिक समाज है। परंपरासे चले आते हुए धार्मिक विश्वासोंपर इस समाजकी अटल श्रद्धा है। यह समाज अपने धार्मिक विश्वासोंके नामपर लाखों रुपया उदारतापूर्वक खर्च कर देता है। इस समाजके व्यक्ति बड़े सरल सात्विक और व्यापार-कुशल होते हैं। इस समाज में स्त्री-स्वाधीनताकी भावनाएं पारसी समाजकी तरह प्रसार नहीं हैं। बालविवाह इत्यादि कुरीतियां भी इस समाजमें काफी जोरपर पायी जाती हैं। फिर भी यह समाज पर्देकी गंदी, बीभत्स और स्वास्थ्य का नाश करनेवाली भीषण प्रथासे मुक्त है। गुजराती समाजकी स्त्रियां पर्देका बंधन न होनेकी वजहसे स्वच्छन्द वायुमण्डलमें टहल सकती हैं।

दक्षिणी—बम्बईका दक्षिणी समाज एक सुधरा हुआ, सुशिक्षित और उन्नत विचारोंका समाज है। यद्यपि इस समाजने व्यापारिक जगतमें अधिक उन्नति प्राप्त नहीं की है पर अपने विचारोंकी गंभीरता एवं अपनी राजनैतिक नेतृत्वके लिये यह भारतवर्षमें प्रसिद्ध है। इस समाजमें भी स्त्रियोंकी शिक्षा—दीक्षा की ओर काफी ध्यान दिया जाता है। परन्तु, बाल विवाह आदि भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंसे यह समाज मुक्त है।

मारवाड़ी—मारवाड़ी समाज अपने व्यापार कौशल और अपनी साहसिकताके लिये संसारमें प्रसिद्ध है। हिन्दुस्थानका शायद ही कोई नगर, शहर, कस्बा ऐसा होगा, जहां मारवाड़ी जातिने पहुंचकर अपने व्यापारका सिक्का न जमाया हो। मगर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि इस जातिकी व्यापारिक विशेषता और साहस प्रवृत्ति जितनी बढ़ी हुई है उतने ही इसके सामाजिक विचार पिछड़े हुए हैं। यदि आज इस जातिके लिए विदेश यात्राके द्वार खुले हुए होते तो क्या आश्चर्य है कि कलकत्ता आदि स्थानोंकी तरह लन्दन और न्यूयार्कके बाजारोंमें भी इस जातिका व्यापार चमकता हुआ नजर आता। केवल विदेश यात्रा ही क्यों बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, पर्दा आदि भयङ्करसे भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंने इस जातिको जर्जर कर रखा है। पर्देकी प्रथाकी वजहसे इस जातिकी नारियां घरके बर्तनोंकी तरह पीली, दुर्बल, अस्वस्थ और कमजोर संतानोंकी माताएं हो रही हैं। बाल और अनमेल विवाहकी वजहसे मारवाड़ी संतानें दुर्बल और सत्व-हीन होती हैं। जब इतनी बुरी सामाजिक अवस्थामें भी यह जाति व्यापारके इतने ऊंचे शिखरपर बैठी हुई है तब यदि ये कुरीतियां निकल जाय तो यह जाति और भी कितनी उन्नत हो सकती? इसकी कल्पना भी आनन्द दायक है।

यहांके कुएँका जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

क्राफर्ड मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, मुरब्बेका सामान, होजियरी, स्टेशनरी, एवं कीमती पक्षी, तोता मैना आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकानें इस मारकीटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाड़ीयोंका लगा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाब भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनचार फर्लांग लम्बा स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलाबाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ६ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलाबासे थोड़ी दूरपर है। सुदूरदेशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलाबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान है। यहीं गवर्नमेंट हाउस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी क्रांतिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी मातुश्रीके नामपर यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २५०० फुट ऊंची भव्य एवं कई रमणीय छोटी २ पहाड़ियां हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पानीके झरने हैं। यहांके छोटे २ पर्वतीय रास्ते, तरह तरहके प्राकृतिक दृश्य एवं शीतल मंद सुगंध वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे घबराये हुए व्यक्तियोंको बहुत अधिक शांति प्रदान करती है।

देना पड़ता है । इनसे वे उनकी कुछ भी फ़िकर नहीं लेते, और इस प्रकार वे भूख और प्याससे मारे हुए छोटे २ मासूम बच्चे सूर्य्यकी कड़कड़ाती धूपमें तड़फ २ कर मर जाते हैं। कई ट्रामों और दूसरी गाड़ियोंसे कुचल जाते हैं। महालक्ष्मी नामक स्थानमें प्रति दिन बारह बजेके करीब इस प्रकारके बहुतसे मरे हुए बच्चे म्युनिसिपैल्टीके खटारों पर लदते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

इस प्रकार बम्बई शहरमें बड़े हृष्ट पुष्ट और दुधारू ढोर केवल थोड़ेसे घाटेके निमित्त कतल कर दिये जाते हैं। यह कतल बांद्रा और दरलाके कसाईखानोंमें होती है। बान्द्राके कसाई-खानेमें गाय, भैंस और बैल मिलकर लगभग २०० जानवर रोज काटे जाते हैं, जिनमें अधिकांश पशु जवान, दुधारू और प्रथम श्रेणीके होते हैं।

इस कसाईखानेकी फर्शपर बलात्कार पशुओंको ले जाया जाता है। वहांपर जाते ही खूनके बहते हुए फव्वारों, कटे हुए धड़ों और मस्तकोंको देखकर ये निर्दोष पशु एकदम चमक उठते हैं और अत्यन्त भयभीत होकर करुण स्वरमें रोते हैं, चिल्लाते हैं, जीवन रक्षाके लिए वहांसे भागनेका प्रयत्न करते हैं, फिर बलात्कार वे वहां लाये जाते हैं, और आखिरी दूध निकालनेके लिये अत्यन्त निर्दयता पूर्वक लाठियोंसे मारे जाते हैं। जिससे उनके सब अङ्ग ढीले हो जाते हैं मारते २ जब वे मृतकवत् हो जाते हैं उस समय उनका आखिरी दूध निकाला जाता है, और फिर मशीनोंसे वे काट दिये जाते हैं।

इस प्रकार हजारों हृष्ट पुष्ट पशु मनुष्यकी रसना तृप्तिपर निर्दयता पूर्वक बलिदान कर दिये जाते हैं। जिस शहरमें धर्म प्राण भाटिया जैन और मारवाड़ीजातियां अतुल धनके साथ वास करती हैं। उसमें इस प्रकारके नारकीय काण्डोंको देखकर आश्चर्य होता है। धार्मिक दृष्टिको छोड़कर आर्थिक दृष्टिसे भी इस प्रश्नपर विचार किया जाय, तो यह प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं है। गवर्नमेन्टका यह प्रधान कर्त्तव्य है कि जिन नारकीय काण्डोंसे देशकी सम्पत्ति का इस प्रकार शीघ्र गतिसे ह्रास होता हो उन्हें रोकनेका प्रयत्न करे और कमसे कम इस प्रकारके हृष्ट पुष्ट और उत्पादक प्राणियोंकी हत्याको रोकनेकी ओर ध्यान दे। यहांके जैन समाजका ध्यान आज इस ओर गया है, मगर इस दिशामें और भी बहुत अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

बम्बईके व्यापारिक साधन

जहाजी व्यापार—वर्तमान युगमें व्यापारकी उन्नतिका सर्व प्रधान साधन जहाजी बियाही है। जिस देशका शीपिंग व्यवहार जितना ही अधिक सुव्यवस्थित होगा, वह देश उतना ही समुन्नत माना जायगा। जिस देशको पक्के मालका एक्सपोर्ट तथा कच्चे मालका इम्पोर्ट करनेकी सब जहाजी सहूलियतें प्राप्त है, वही देश आज संसारमें अपना सिर ऊँचा कर सकता है। आज इस व्यवसायमें अमेरिका, इंग्लेंड, जापान, फ्रांस, जर्मनी आदि २ देश वायु वेगसे अपनी उन्नति कर रहे हैं, दिन प्रतिदिन नयी २ खोज एवं सुधार हो रहे हैं। लेकिन

यहांके कुएं का जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

माफर्ड मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, खुराकी सामान, होयजरी, कटलरी, एवं जीवित पक्षी, तोता मैना आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकाने इस मारकीटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाडीयों तरहमें लगा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाब भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनचार फर्लांगकायह स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलाबाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ६ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलाबासे थोड़ी दूरपर है। सुदूरदेशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलाबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान है। यहीं गवर्नमेंट हाउस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी क्रांतिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी मातुश्रीके नामपर यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २५०० फुट ऊंची भव्य एवं कई रमणीय छोटी २ पहाड़ियां हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पानीके झरने हैं। यहांके छोटे २ पर्वतीय रास्ते, तरह तरहके प्राकृतिक दृश्य एवं शीतल मंद सुगंध वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे घबराये हुए व्यक्तियोंको बहुत अधिक शान्ति प्रदान करती हैं।

रवाना होता है। इस कम्पनीके पूर्व सन् १८२५में सबसे पहिले बम्बईसे योरोपकी यात्रा भाफसे चलनेवाले जहाजपर की गई, इस यात्रामें ११३ दिन लगे। सन् १८३८ में मासिक डाक भेजनेका प्रबंध किया। यह डाक इण्डियन नेवीके क्रूजरपर मासकी पहिली तारीखको रवाना होकर स्वेज नहर तक स्टीमर पर ही जाती थी, वहां ब्रिटिश एजेंट उपस्थित रहते थे, क्रूजर उनको डाक सौंपकर और उनसे इङ्गलैण्डकी डाक ले वापस भारतके लिये रवाना हो जाता था। इंग्लिश एजण्ट आई हुई डाकको घारवोंपर लादकर भूमध्यसागरकी ओर चल देते, रास्तेमें मिश्रकी राजधानी कैरो, तथा मिश्रके एकमात्र महत्वपूर्ण बंदर सिकंदरियामें विश्राम करते हुए समुद्रतटपर पहुंचते। वहांपर इंग्लिश जहाज डाककी प्रतीक्षामें खड़े रहते थे,वे अपनी डाक इन्हें सौंप भारतकी डाक लेकर माल्टा, मार्सेलीज तथा पेरिस होते हुए २६ दिनमें इङ्गलैंडपहुंचते। इतना प्रबंध होते हुए भी वर्षाऋतुके लिये कोई सुप्रबंध नहीं था। बम्बई टाइम्सके ५ सितम्बर सन् १८५३ के अंकसे पता चलता है कि डाकके कुप्रबंधपर असंतोष प्रगट करनेके लिये यहांके नागरिकोंने टाउनहालमें एक सार्वजनिक सभा कर प्रबंध की ओर संकेत करते हुए सरकारकी कड़ी आलोचना की थी।

परिणाम यह हुआ कि गवर्नमेंटने पी० एण्ड ० ओ० कम्पनीको भारत और इङ्गलैंडके बीच डाक लाने और ले जानेका कंट्राक्ट सन् १८५५में दे दिया यह कंट्राक्ट मासमें एकबार डाक ले जानेका था। इसनेपर भी जनता का आंदोलन शांत न हुआ। तब सन् १८६७में फिर पी० एण्ड० ओ० कम्पनीसे साप्ताहिक डाकका कंट्राक्ट किया गया। जहां पहिले २८ दिनमें डाक पहुंचती थी वहां २६ दिनमें ही डाक पहुंचने लगी। इस समय सारी अंग्रेजी डाकके लाने और ले जानेका केन्द्र बम्बई नियत किया गया। सन् १८३६में स्वेजनहर बनी और धीरे धीरे डाककी व्यवस्थाएं सोची जाने लगीं। सन् १८८० में पी० एण्ड० ओ कम्पनीसे एक नवीन कंट्राक्ट किया जिससे २६ दिनमें पहुंचाई जानेवाली डाक १७½ दिनमें पहुंचने लगी। बादमें १७½ दिनसे १६½ दिनोंमें डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की गई और फिर अन्तमें सन् १८९८में १६½ दिनकी अवधिको कमकर १३½ दिनमें भारतसे इङ्गलैंड डाक पहुंचानेका नया करारनामा किया गया। यह सुप्रबंध आजतक भली प्रकार चल रहा है। इसप्रकार नियत मितीपर डाक पहुंचानेके लिए भारतसरकार, पी० एण्ड० ओ० कम्पनीको ३ लाख ३० हजार पौंडसे अधिककी आर्थिक सहायता हर साल देती है।

इस प्रकार भारतके डाक विभागके सुप्रबंधसे इस कम्पनीका बहुत सम्बन्ध है। सन् १८६८ के नियमके अनुसार जहाजपर ही डाक छांटकर भिन्न २ कोलोंमें बंदकर रक्खी जाती है। जहाजके बंदरपर पहुंचते ही सब कोले रेलवेके डब्बेमें लाद दिये जाते हैं। जहाजके बंदरपर पहुंचनेके कुछ घंटे बाद ही स्पेशल इम्पीरियल मेल नामक डाकगाड़ी डाक एवं दूर देशोंसे आये हुए यात्रियोंको लेकर भारतके विभिन्न शहरोंके लिये रवाना हो जाती है।

यहांके कुएँका जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

क्राफर्ड मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, खुराकी सामान, होयजरी, कटलरी, एवं जीवित पक्षी, तोता मैना आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकाने इस मारकीटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाड़ीकी तादादमें लगा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाब भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनचार फर्लाङ्गकायह स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलाबाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ६ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलाबासे थोड़ी दूरपर है। दूर देशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान हैं। यहीं गवर्नमेंट हाउस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी कान्तिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी माताजीके स्मरणार्थ यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलिटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २५०० फुट ऊंची भव्य एवं बड़ी रमणीय चोटी २ बनी हुई हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पाइंट माने हैं। यहांके छोटे २ दर्शनीय झरने, तरह तरहके प्राकृतिक दृश्य एवं सौन्दर्य और सुन्दर वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे घबराये हुए व्यक्तियोंको बहुत अधिक शांति प्रदान करती है।

जनरल पोस्ट ऑफिस, बम्बई

ताजमहल होटल बम्बई

एक आना कर दिया गया । १८८० से बम्बईमें वी० पी० और मनीआर्डरकी प्रथा जारी हुई। सन् १८८१।८२ में यहां पोस्टकार्ड प्रचलित हुए । १८८२ में ही पोस्टल सेविंगबैंककी स्थापना और १८९८ में बीमा भेजनेकी प्रथा प्रचलित की गई ।

वर्तमान बम्बई नगरमें ३६ पोस्ट ऑफिस हैं। कुछ पोस्टऑफिसमें केवल डाक ली जाती है बांटी नहीं जाती और कई डाकखानोंमें डाक ली भी जाती है और बांटी भी जाती हैं। कई पोस्ट ऑफिस ऐसे हैं जिनमें दिनमें १३ बार डाक निकाली जाती है। नगरमें ७ डाकखाने ऐसे हैं जिनके साथ तार ऑफिस भी है। इसके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंपर लगे हुए नगरमें करीब ३३७ लेटर बक्स हैं।.नगरके क्षेत्रफल और डाक विभागकी तुलना की जाय,तो प्रत्येक २ वर्गमीलके क्षेत्रमें ३ पोस्ट ऑफीस तथा ३० लेटरबॉक्सका औसत आता है।

सन् १८८८ से यहांके जनरल पो० ऑ० में घंटे-घंटेमें डाक बांटा जाना आरंभ हुआ। ब्रिटेनके लिये यहांसे प्रति शुक्रवारको मध्याह्नके १ बजे डाक रवाना की जाती है

तार

सन् १८४९ में ईस्टइण्डिया कम्पनीने डा० मीनको तारकी प्रथा जारी करनेका भार सौंपा। आपने सिक्रेटेरियट भवनसे परेल गवर्नमेंट हाऊसके बीच बिजलीके तारसे बातचीत करनेकी व्यवस्था की। इस बातके लिये बम्बई सरकारने ७४२१) की सहायता आपको दी। सन् १८५४ में थानातक तार की लाइन बनी और १८५५ में बम्बई और मद्रासके बीच तारसे बातचीत करना आरंभ हो गया।

चेम्बर आफ कामर्सकी १८५४ की रिपोर्टसे पता चलता है कि उस समय गवर्नर जनरलने सपरिषद् तारके नियम तैयार किये थे इस प्रकार हैं।

एक शब्दसे सोलह शब्दतक १) सत्रहसे चौबीसतक १॥)

पचीससे बत्तीसतक २) तैंतीससे अड़तालीस तक ४॥)

सन् १८५६ में तारकी चार लाइने और खोली गईं और सन् १८६४ की १५ मईसे बम्बईका योरोपसे तार सम्बन्ध स्थापित हुआ।

वर्तमानमें इस विभागने आशातीत उन्नति कर दिखाई है। इस समय नगरके प्रधान तार घरके अलावा ८ स्वतंत्र तारघर और हैं और ६ तारघर पोस्टके साथ जुड़े हैं नगरके सभी तार ऑफिसोंका सम्बन्ध नगरके बड़े सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिससे है। सेन्ट्रल टेलिग्राफ ऑफिस फ्लोराफाउण्टनपर है।

टेलीफोन—सन् १८८०।८१ के नवम्बर मासमें भारत सरकारने यहांके चेम्बर ऑफ कामर्ससे टेली- फोन स्थापित करनेके लिये पत्र व्यवहार किया। चेम्बरने सरकारको परामर्श दिया कि टेलीफोनका काम स्वयं सरकार हाथमें न ले, प्रत्युत किसी व्यवसायी कम्पनीके जिम्मे यह काम कर दिया जाय। सन् १८८१ में टेलीफोन कम्पनीको आज्ञा भी मिली पर वह काम न कर सकी। तब सन् १८८२ में बाम्बे टेलीफोन कम्पनीकी स्थापना हुई और

निशानीकी शक्तिका उपयोग करनेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षा करना है। साथ ही जन समुदाय और इसके उपयोग करनेवालोंमें परस्पर बहुत अच्छा सम्बंध स्थापित करना भी है। इसके मेम्बर भारतीय हैं। इसका संचालन २० व्यक्तियोंके हाथमें है। इन्हीं व्यक्तियोंमें प्रेसिडेण्ट तथा वाईस प्रेसिडेण्ट भी शामिल हैं। यह एसोसियेशन लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके लिये एक प्रतिनिधि अहमदाबाद मिल ऑनर्स एसोसियेशनके साथ क्रमशः भेज सकती है। साथ ही बाम्बे गवर्नरकी लेजिस्लेटिव कौंसिल बाम्बे पोर्टट्रस्ट बोर्ड, सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशन तथा इंडियन सेंट्रल काटन कमेटीमें भी अपना प्रतिनिधि भेज सकती है। यह संस्था अपने मेम्बरोंके द्वारा उपयोगमें आनेवाले (रजिस्टर्ड नम्बरों) ट्रेडमार्कोंकी एक लिस्ट रखती है।

इस प्रकारके ट्रेडमार्कोंके रजिस्ट्रेशन स्पेशल नियमों द्वारा रजिस्टर्ड होते हैं, आपसमें ट्रेडमार्कके सम्बन्धमें होनेवाले झगड़े सुलझनेके लिये इसमें पेश होते हैं।

जनवरी सन् १९२४में इस एसोसियेशनके कुल ९४ मेम्बर थे। जिसमें एक सिल्क मिलकी तरफसे, २ पब्लिक ऑफिसर, ६ जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरीजसे, २ रंगने तथा धोनेके कारखानोंसे, और शेष काटन स्पीनिंग एण्ड विविंग मिल्सकी ओरसे थे।

यह एसोसियेशन हरसाल एक स्टेटमेंट इस आशयका निकालती है कि भारतमें कितने काटन स्पिनिंग विविंग मिल्स काम करते हैं। उनकी पूंजी कितनी है, तथा उनमें कितने २ लूम्स और स्पिंडल्स हैं। उनमें कितने २ व्यक्ति कार्य करते हैं। उनमें कितनी रुई खर्च होती है, आदि आदि। यह एसोसियेशन इसकी भी जांच रखती है कि बाम्बेसे कितना कपड़ा तथा सूत बाहर गया तथा बाहरसे कितना २ बम्बईमें आया।

४ बाम्बे नेटिव पीस गुड्स मर्चेण्ट्स एसोसियेशन—इस संस्थाका स्थापन सन् १८८२ में सेठ दामोदर ठाकुरदास महाशयके हाथोंसे हुआ। इस संस्थाका प्रधान उद्देश व्यापारियोंके भीतर एकता स्थापित कर बम्बईके कपड़ेके व्यवसायको उत्तेजन देना एवं उसके लाभोंकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना है। कपड़ेके व्यवसाय सम्बन्धी सब प्रकारके झगड़े यहीं निपटानेका प्रयत्न किया जाता है। इस संस्थाकी मैनेजिंग कमेटीके ४५ मेम्बर हैं। एवं इसके कुल ११११ मेम्बर हैं इस संस्थाका प्रमुख पद सन् १८९३ से ऑनरेबल सर मनमोहनदास रामजी सुशोभित करते हैं। आप बम्बईकी प्रतिष्ठित व्यापारिक संस्थाओंके सफल कार्यकर्ता माने जाते हैं। इस संस्थाके उपप्रमुख सेठ देवीदास माधवजी ठाकरसी हैं। इस संस्थाकी ओरसे एक औषधालय और लायब्रेरी भी है औषधालयमें अंग्रेजी दवा लेनेवाले व्यक्तियोंकी औसत प्रति दिन ७६ और देशी दवा लेनेवालोंकी ३४ आती है। इस संस्थाका ऑफिस मूलजी जेठा मारकीट पर है।

एक आना कर दिया गया । १८८० से बम्बईमें वी० पी० और मनीआर्डरकी प्रथा जारी हुई। सन् १८८१।८२ में यहां पोस्टकार्ड प्रचलित हुए। १८८२ में ही पोस्टल सेविंगबैंककी स्थापना और १८९८ में बीमा मेसेनेरी प्रथा प्रचलित की गई ।

वर्तमान बम्बई नगरमें ३६ पोस्ट आफिस हैं। कुछ पोस्टआफिसमें केवल डाक ली जाती है बांटी नहीं जाती और कई डाकखानोंमें डाक ली भी जाती है और बांटी भी जाती है। कई पोस्ट आफिस ऐसे हैं जिनमें दिनमें १२ बार डाक निकाली जाती है। नगरमें ७ डाकखाने ऐसे हैं जिनके साथ तार आफिस भी है। इसके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंपर लगे हुए नगरमें करीब ३२० लेटर बक्स हैं। नगरके क्षेत्रफल और डाक विभागकी तुलना की जाय,तो प्रत्येक २ वर्गमीलके क्षेत्रमें ३ पोस्ट आफीस तथा ३० लेटरबॉक्सका औसत आता है।

सन् १८८८ से यहांके जनरल पो० ऑ० में घंटे-घंटेमें डाक बांटा जाना आरंभ हुआ। विदेशके लिये यहांसे प्रति शुक्रवारको मध्याह्नके १ बजे डाक रवाना की जाती है

तार

सन् १८४९ में ईस्टइण्डिया कम्पनीने डा० मीनको तारकी प्रथा जारी करनेका भार सौंपा। आपने सिक्रेटेरियट भवनसे परेल गवर्नमेंट हाऊसके बीच बिजलीके तारसे बातचीत करनेकी व्यवस्था की। इस कामके लिये बम्बई सरकारने ७४२१) की सहायता आपको दी। सन् १८५३ में थानातक तार की लाइन बनी और १८५५ में बम्बई और मद्रासके बीच तारसे बातचीत करना आरंभ हो गया।

चेम्बर आफ कामर्सकी १८५४ की रिपोर्टसे पता चलता है कि उस समय गवर्नर जनरलने सर्वोपर तारके नियम तैयार किये वे इस प्रकार हैं।

एक शब्दसे सोलह शब्दतक १) सत्रहसे चौबीसतक १।।)

पचीससे बत्तीसतक २) तैंतीससे अड़तालीस तक ४।।)

सन् १८५६ में तारकी चार लाइनें और खोली गई और सन् १८६४ की १५ मईसे बम्बईका योरोपसे तार सम्बन्ध स्थापित हुआ।

वर्तमानमें इस विभागने आशातीत उन्नति कर दिखाई है। इस समय नगरके प्रधान तार घरके अलावा ८ स्वतंत्र तारघर और हैं और ६ तारघर पोस्टके साथ जुड़े हैं नगरके सभी तार ऑफिसोंका सम्बन्ध नगरके बड़े सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिससे है। सेन्ट्रल टेलिग्राफ ऑफिस फ्लोराफाउण्टनपर है।

टेलीफोन—सन् १८८०।८१ के नवम्बर मासमें भारत सरकारने यहांके चेम्बर ऑफ कामर्ससे टेलीफोन स्थापित करनेके लिये पत्र व्यवहार किया। चेम्बरने सरकारको परामर्श दिया कि टेलीफोनका काम स्वयं सरकार हाथमें न ले, प्रत्युत किसी व्यवसायी कम्पनीके जिम्मे यह काम कर दिया जाय। सन् १८८१ में टेलीफोन कम्पनीको आज्ञा भी मिली पर वह काम न कर सकी। तब सन् १८८२ में बाम्बे टेलीफोन कम्पनीकी स्थापना हुई और

बिजलीकी शक्तिका उपयोग करनेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षा करना है। साथ ही जन समुदाय और इसके उपयोग करनेवालोंमें परस्पर बहुत अच्छा सम्बंध स्थापित करना भी है। इसके मेम्बर भारतीय हैं। इसका संचालन २० व्यक्तियोंके हाथमें है। इन्हीं व्यक्तियोंमें प्रेसिडेण्ट तथा वाईस प्रेसिडेण्ट भी शामिल हैं। यह एसोसियेशन लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके लिये एक प्रतिनिधि अहमदाबाद मिल ओनर्स एसोसियेशनके साथ क्रमशः भेज सकती है। साथ ही बाम्बे गवर्नरकी लेजिस्लेटिव कौंसिल बाम्बे पोर्टट्रस्ट बोर्ड, सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशन तथा इंडियन सेंट्रल काटन कमेटीमें भी अपना प्रतिनिधि भेज सकती है। यह संस्था अपने मेम्बरोंके द्वारा उपयोगमें आनेवाले (रजिस्टर्ड नम्बरों) ट्रेडमार्कोंकी एक लिस्ट रखती है।

इस प्रकारके ट्रेडमार्कोंके रजिस्ट्रेशन स्पेशल नियमों द्वारा रजिस्टर्ड होते हैं, आपसमें ट्रेडमार्कके सम्बन्धमें होनेवाले झगड़े सुलझनेके लिये इसमें पेश होते हैं।

जनवरी सन् १९२४में इस एसोसियेशनके कुल ९४ मेम्बर थे। जिसमें एक सिल्क मिलकी तरफसे, २ फ्लावर मिलसे, ६ जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरीजसे, २ रंगने तथा धोनेके कारखानोंसे, और शेष काटन स्पीनिंग एण्ड विविंग मिलसकी ओरसे थे।

यह एसोसियेशन हरसाल एक स्टेटमेंट इस आशयका निकालती है कि भारतमें कितने-काटन स्पिनिंग विविंग मिलस काम करते हैं। उनकी पूंजी कितनी है, तथा उनमें कितने २ लूम्स और स्पिंडल्स हैं। उनमें कितने २ व्यक्ति कार्य करते हैं। उनमें कितनी रुई खर्च होती है, आदि आदि, यह एसोसियेशन इसकी भी जांच रखती है कि बाम्बेसे कितना कपड़ा तथा सूत बाहर गया तथा बाहरसे कितना २ बम्बईमें आया।

४ बाम्बे नेटिव पीस गुड्स मर्चेण्ट्स एसोसियेशन—इस संस्थाका स्थापन सन् १८८२ में सेठ दामोदर गोकुल दास मास्तरके हाथोंसे हुआ। इस संस्थाका प्रधान उद्देश व्यापारियोंके भीतर एकता स्थापित कर बम्बईके कपड़ेके व्यवसायको उत्तेजन देना एवं उसके लाभोंकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना है। कपड़ेके व्यवसाय सम्बन्धी सबप्रकारके झगड़े यहीं निपटानेका प्रयत्न किया जाता है। इस संस्थाकी मेनेजिंग कमेटीके ४५ मेम्बर हैं। एवं इसके कुल १६१ मेम्बर हैं इस संस्थाका प्रमुख पद सन् १९११ से ऑनरेबल सर मनमोहनदास रामजी सुशोभित करते हैं। आप बम्बईकी प्रतिष्ठित व्यापारिक संस्थाओंके सफल कार्यवाहक महानुभाव हैं। इस संस्थाके उपप्रमुख सेठ देवीदास माधवजी ठाकरसी हैं। इस मंडलकी ओरसे एक औषधालय और लायब्रेरी भी है औषधालयमें अंग्रेजी दवा लेनेवाले व्यक्तियोंकी औसत प्रति दिन ७९ और देशी दवालेनेवालोंकी ३४ आती है। इस मंडलका ऑफिस मूलजी जेठा मारकीट पर है।

म्यूजियम (अजायब घर) बम्बई

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

म्यूज़ियम (अजायब घर) बम्बई

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०
" " (२) अमृतलालजी कालीदास
उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—
ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट
प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०
वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०
(२) के० एच० मेकार्मिक
सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०
उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—
स्थापन १८९५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।
सभापति—एच० पी० मोदी
उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।
मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—
प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०
वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी
ट्रेसरर—गोकुल भाई मूलचन्द
उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक मन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—
डायरेक्टर्स:
श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)
श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

म्यूनिसिपल्टी (कार्यालय घर) बम्बई

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०
" " (२) अमृतलालजी कालीदास
उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—
ऑफिस—ताज बिल्डिंग फोर्ट
प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०
वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०
(२) के० एच० मेकार्मिक
सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०
उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—
स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।
सभापति—एच० पी० मोदी
उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।
मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल आनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—
प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०
वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुगरजी
ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द
उद्देश्य—हुंडी.चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, ढाराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसायकरनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक मन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—
डायरेक्टर्स:
श्री फजलभाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)
श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

म्यूजियम (अजायब घर) बम्बई

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायन जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मिक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८९५ ऑफिस—सोराव हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसायकरनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्सः

श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमैन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

चेम्बर्स एण्ड एसोसिएशन्स

बाम्बे चेम्बर आफ कॉमर्स—इस चेम्बरकी स्थापना बम्बई शहरमें सन् १८३६ में हुई। इसका मुख्य उद्देश अपने मालपर कस्टम हाऊससे स्पेशल सुविधाएं प्राप्त करनेका है। इसका संचालन ९ व्यक्ति मिलकर करते हैं। इनमेंसे एक सभापति, एक उपसभापति तथा सात मेम्बर हैं। इसमें खास २ जानेवाले तथा आनेवाले मालकी प्रति सप्ताह २ बार रिपोर्ट प्रकाशित होती है। कपड़ा तथा सूतकी गति विधिकी रिपोर्ट यहांसे प्रतिमास प्रकाशित होती है। इस चेम्बरकी विशेषता यह है कि इसमें व्यापारियोंके झगड़ोंको सुलझानेके लिये एक कमेटी बनी हुई है। इस चेम्बरके द्वारा १ मेम्बर स्टेटकौंसिलमें तथा २ मेम्बर बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिलमें नामांकित किये जाते हैं। इसी प्रकार बाम्बे कार्पोरेशन और इम्प्रूवमेंट ट्रस्टमें एक २ और पोर्ट ट्रस्टमें पांच मेम्बर चुनकर भेजे जाते हैं। इस चेम्बरमें दो प्रकारके मेम्बर रहते हैं। चेम्बर मेम्बर्स और असोसियेटेड मेम्बर्स, इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकारके और भी अनियमित मेम्बर्स होते हैं। सन् १९२४में इसमें कुल मिलाकर १४४ मेम्बर थे। जिनमें १६ मेम्बर बैंकिंग संस्थाओंके, ६ मेम्बर जहाजी एजंसियों और कम्पनियोंके, ३ मेम्बर सालीसीटरके, ३ मेम्बर रेलवे कंपनियोंके, ६ मेम्बर इंजिनियर तथा कंट्राक्टरके और बाकीके मेम्बर जनरल मरकें-टाईल्सके थे।

दी इंडियन मरचेंट्स चेम्बर एण्ड ब्यूरो—इस इण्डियन मरचेंट्स चेम्बर एण्ड ब्यूरोकी स्थापना सन् १९०७में हुई। प्रारंभमें इसके १०१ सभासद थे इसका उद्देश प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपसे भारत निर्मित तथा और दूसरी व्यापारिक वस्तुओंके व्यापार तथा इसमें दिलचस्पी लेने वालोंका समुचित प्रबंध करना है। यह संस्था देशके आर्थिक लाभोंकी रक्षाके लिये मज-बूतीके साथ प्रयत्न करती है। इस चेम्बरमें बम्बईकी ११ प्रतिष्ठित २ व्यापारिक संस्थाएं (Association) शामिल हैं। जो कि भारतीय व्यापारमें दिलचस्पी लेनेवालोंकी प्रतिनिधि हैं। इस चेम्बरको अधिकार है कि यह बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा भारतीय लेजिस्लेटिव एसेम्बलीमें अपना एक २ प्रतिनिधि भेज सके। साथ ही बाम्बे पोर्ट ट्रस्टमें ५ प्रतिनिधि तथा बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशनमें भी एक प्रतिनिधि नामांकित करनेका इसे अधिकार है। इसका कार्य सुन्दर और नियमित रूपसे होता है। यहांसे हर तीसरे माह "एङ्गलो गुजरात जरनल"के नामसे पत्र निकलता है। इसमें व्यापारिक तथा व्यापारसे सम्बन्ध रखनेवाले समाचार रहते हैं।

बाम्बे मिल आनर्स एसोसिएशन—मिल मालिकोंकी यह संस्था सन् १८७५ में स्थापित हुई। इसके स्थापित करनेका उद्देश भारतमें मिल-मालिकोंके स्वार्थोंकी तथा स्टीम, वाटर और

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकामेक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाउस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीजके व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएशन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री फ़ज़ल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

दि हिन्दुस्तानी नेटिव मरचेंट एसोसिएशन—इस एसोसिएशनका स्थापन सेठ ताराचन्द जुहारमलके मुनीम जगन्नाथजीके हाथोंसे संवत १९५५ में हुआ था। इस मंडलीके सदस्य कपड़ा, किराना,गल्ला, शक्कर तांबा पीतल सूत, चांदी तथा सोनेका, आढतका तथा सराफीका काम करनेवाले व्यापारी ही अधिक हैं। यह संस्था अपने मेम्बरोंमें पड़े हुए व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारके झगड़ोंको निपटाती है। इस संस्थाकी ओरसे इण्डियन चेम्बरमें एक प्रतिनिधि भेजा जाता है। इस संस्थामें सन् १९२६ में ७० आढ़तियोंके २३ हजार रुपयोंके झगड़े आये उनमेंसे ५० झगड़े निपटाये गये। वाहरसे आई हुई हुण्डी न सिकरनेपर यदि वापस जाय तो उसकी निकराई सिकराई प्राप्त करनेके लिये इस संस्थाकी मुहर की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इस चेम्बर द्वारा सन् १९२६ की दिवालीसे १९२७ की दिवाली तक ६२ लाख रुपयोंकी १४६०१ हुण्डियां वापस गईं। उनमेंसे ५२७२ पीछी दिखानेसे सिकर गई। इस संस्थाकी ओरसे एक मारवाड़ी व्यापारी स्कूल नामक हिन्दीका स्कूल चलता है जिसमें दस बारह हजार रुपया प्रति वर्ष यह संस्था खर्च करती है। इसके अतिरिक्त इस संस्थाने ३० हजार रुपया तिलक स्वराज फण्डमें तथा २१ हजार रुपया गुजरात जल प्रलयके समय दान दिये हैं। इस संस्थाके वर्तमान प्रमुख सेठ आनन्दराम मंगतु राम तथा उपप्रमुख गोरखराम गणपत राय है। इस संस्थामें ३५३ मेम्बर हैं। जिनमें फतेपुरके १०१ बीकानेरके ११ माहेश्वरी समाजके ५४ बड़ी मारवाड़के ७४ इन्दौरके २५ बखारके ४२ पंजाबी १८ सरावगी ९ तथा जनरल १७ हैं।

मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स—इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१५ में बम्बईके मशहूर सेठ रामनारायणजी रुइया, तत्कालीन माधोसिंह छगनलाल फर्मके पार्टनर नीमच निवासी श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया चम्पालाल रामस्वरूप फार्मके मुनीम श्रीयुत मिश्री लालजी; और गुलाब राय केदारमलके मुनीम श्रीयुत जयनारायणजीके प्रयत्नसे हुई। तबसे यह चेम्बर बराबर अपनी उन्नति करती जारही है। इस चेम्बरका मुख्य उद्देश्य हुण्डी चिट्ठी सम्बन्धी झगड़ोंको निपटाना तथा और भी दूसरे व्यापारिक झगड़ोंको सुलझाना है। गम्भीर व्यापार नीतिके प्रश्नोंपर भी यह चेम्बर अपनी विचारपूर्ण राय प्रकाशित करती रहती है। इस समय इसके प्रेसिडेण्ट मानराम रामभगतकी मशहूर फर्मके मालिक श्रीयुत बेनी प्रसादजी डालमिया है। इसके इस समय करीब २५० मेम्बर हैं।

नेटिव शेयर्स एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोसिएशन—

आनरेरी चेयरमैन—सरदेशार होरमसजी मादन

ट्रेझेरर—के० आर० पी० श्राफ, जे० पी

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०
„ „ (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसियेसन—

ऑफिस—ताज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०
(२) के० एच० मेकार्मिक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रूईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रूईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रूईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोसियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ओनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोसियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - सटाऊ भाई मुगरजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, काराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसियेशन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे बुलियन एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री मथुरादास भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मरचेंट एसोसिएशन—इस एसोसिएशनका स्थापन सेठ ताराचन्द जुहारमलके मुनीम जगन्नाथजीके हाथोंसे संवत १९५५ में हुआ था। इस मंडलीके सदस्य कपड़ा, किराना,गल्ला, शक्कर तांबा पीतल सून, चांदी तथा सोनेका, आढ़तका तथा सराफीका काम करनेवाले व्यापारी ही अधिक हैं। यह संस्था अपने मेम्बरोंमें पड़े हुए व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारके झगड़ोंको निपटाती है। इस संस्थाकी ओरसे इण्डियन चेम्बरमें एक प्रतिनिधि भेजा जाता है। इस संस्थामें सन् १९२६ में ७० आढ़तियोंके २३ हजार रुपयोंके झगड़े आये उनमेंसे ५० झगड़े निपटाये गये। बाहरसे आई हुई हुण्डी न सिकरनेपर यदि वापस जाय तो उसकी निकराई सिकराई प्राप्त करनेके लिये इस संस्थाकी मुहर की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इस चेम्बर द्वारा सन् १९२६ की दिवालीसे १९२७ की दिवाली तक ६२ लाख रुपयोंकी १४६०१ हुण्डियां वापस गईं। उनमेंसे ५२७२ पीछी दिखानेसे सिकर गई। इस संस्थाकी ओरसे एक मारवाड़ी व्यापारी स्कूल नामक हिन्दीका स्कूल चलता है जिसमें दस बारह हजार रुपया प्रति वर्ष यह संस्था खर्च करती है। इसके अतिरिक्त इस संस्थाने ३० हजार रुपया तिलक स्वराज फण्डमें तथा २१ हजार रुपया गुजरात जल प्रलयके समय दान दिये हैं। इस संस्थाके वर्तमान प्रमुख सेठ आनन्दराम मंगतु राम तथा उपप्रमुख गोरखराम गणपत राय हैं। इस संस्थामें ३५३ मेम्बर हैं। जिनमें फतेपुरके १०१ बीकानेरके ११ माहेश्वरी समाजके ५४ बड़ी मारवाड़के ७४ इन्दौरके २५ मखारके ४२ पंजाबी १८ सरावगी ६ तथा जनरल १७ हैं।

मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स—इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१५ में बम्बईके मशहूर सेठ रामनारायणजी रुइया, तत्कालीन माधोसिंह छगनलाल फर्मके पार्टनर नीमच निवासी श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया चम्पालाल रामस्वरूप फ़र्मके मुनीम श्रीयुत मिश्री लालजी; और गुलाब राय केदारमलके मुनीम श्रीयुत जयनारायणजीके प्रयत्नसे हुई। तबसे यह चेम्बर बराबर अपनी उन्नति करती जारही है। इस चेम्बरका मुख्य उद्देश्य हुण्डी चिठ्ठी सम्बन्धी झगड़ोंको निपटाना तथा और भी दूसरे व्यापारिक झगड़ोंको सुलझाना है। गम्भीर व्यापार नीतिके प्रश्नोंपर भी यह चेम्बर अपनी विचारपूर्ण राय प्रकाशित करती रहती है। इस समय इसके प्रेसिडेण्ट मानराज रामभगतकी मशहूर फर्मके मालिक श्रीयुत वेणी प्रसादजी डालमिया है। इसके इस समय करीब २५० मेम्बर हैं।

नेटिव्ह शेअर्स एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोसियेशन—

आनरेरी पेट्रन—आरदेशार होरमसजी भादन

प्रेसिडेंट—के० आर० पी० श्राफ, जे० पी

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। औफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसियेशन—

औफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मेक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ओनर्स एसोसियेशन—

स्थापन १८७५ औफिस—सोराव हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एच० स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ओनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोसियेशन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट—[illegible] भाई मुरारजी

सेक्रेटरी—[illegible] भाई [illegible]

उद्देश्य—हुंडी चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें अनेक तरहकी अड़चनोंको दूर करना। आफिस-सराफ बाजार, [illegible]। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसियेशन है। इसकी ओरसे व्यापारिक [illegible] की एक कमेटी भी है।

बाम्बे [illegible] एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री [illegible] भाई [illegible] भाई (चेयरमैन)

श्री [illegible]दासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—दत्तसराम मस्त्राराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—बाजा बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मेक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीजके व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ओनर्सकी यह संस्था है।

बम्बई शराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट—[illegible] भाई मुरारजी

ट्रेजरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठी आदि व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें अनेकांकी अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, कालबादेवी। बम्बईके शराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसियेशन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बम्बई बुलियन एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री [illegible] भाई [illegible] भाई (चेयरमैन)

श्री [illegible] बिड़ला

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-काटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८९५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अडचनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, साराकुआ। बम्बईके सराफी (बेंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री फाजलभाई इब्राहिम भाई (चेयरमैन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ज्वॉ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड ब्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्टस् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मैकार्मक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंको सुविधा करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेज़रर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बेंकर्स) व्यवसायकरनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल, शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंको कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अल्याराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

„ „ (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया काटन एसोशियेसन—

ऑफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मेक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फैक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल आनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी,चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमैन)

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल, शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्टस् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) रामेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसियेसन—

ऑफिस—राम बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मिक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सुविधा करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोसियेसन—

स्थापन १८९५ ऑफिस—सोराव हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोसियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अडचनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआ। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्स:

श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लास्टन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स हिन्दुस्थान बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे ग्रेन एण्ड ग्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी मान्डवी-डाडा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, दाना बन्दर)

दी शुगर मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

" " (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। औफिस—दलाल स्ट्रीट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

औफिस—राज बिल्डिंग फोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मिक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८९५ औफिस—सोराब हाऊस हार्नबी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीजके व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बम्बई सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - स्टाक भाई मुगरजी

ट्रेजरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी, चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अड़चनोंको दूर करना। आफिस-सराफ बाजार, मारकुआ। बम्बईके सराफी (बैंकर्स) व्यवसाय करनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे भारतीय मन्दोंकी एक जन्त्री भी है।

बम्बई [illegible] लिमिटेड—

डायरेक्टर्स.

श्री [illegible] भाई [illegible] भाई (चेयरमेन)

श्री [illegible] बिड़ला

श्री गोविंदलाल, शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मनदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—रतनराम सन्दागन

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेण्ट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

दीमानेकजी पेटिट मैन्युफेक्चरिंग को० लिमिटेड

(१) इस कम्पनीमें दीमानेकजी पेटिट मिल्स लिमिटेड (२) दी दीनशा पेटिट मिल्स लिमिटेड, तथा (३) दी बोमनजी पेटिट मिल्स लिमिटेड, सम्मिलित हैं। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख ५० हजार रुपया है जो ४०५० साधारण शेअर्समें विभाजित है। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस २५६ हार्नबी रोड, फोर्टमें है। तारका पता (Dinpetit) तथा टेलीफोन नं० २००७१ है। इसके डायरेक्टर्स निम्नाङ्कित सज्जन हैं—

(१) सरदिनशा एम० पेटिट बैरोनेट।
(२) दादा भाई मेरवानजी जीजी भाई।
(३) मानेकजी कावसजी पेटिट।
(४) जहांगीर बोमनजी पेटिट।
(५) बेरामजी जीजी भाई।

इसकी एजेन्सी डी० एम० पेटिटसन्स एण्ड कम्पनीके पास है। इस कम्पनीके द्वारा संचालित तीन मिलोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) **मानेकजी पेटिट मिल्स**—इसकी स्थापना सन् १८६० में हुई थी यह बम्बईकी प्रमुख प्राचीन तथा अपने पूर्व नाममें जीवित रहने वाली मिलोंमें एक प्रधान मिल है। यह मिल तारदेवमें बनी हुई है। इसका टेलीफोन नम्बर ४१८१८ है। इस मिलमें सब प्रकारके १८६६१ स्पिण्डिल्स तथा २२७६ लूम्स हैं। इसमें ४६०० मजदूर काम करते हैं। इस मिलमें ४ से २० नम्बर तकका सूत काता जाता है तथा कोरा रंगीन और धुला हुआ कपड़ा तैय्यार होता है। इस मिलमें कातने और बुननेकी कलामें निपुण भारतीय व्यक्ति ही काम करते हैं।

(२) **दिनशा पेटिट मिल्स**—इसकी स्थापना सन् १८७१ में रायल मिलसके नामसे हुई थी। १८८० में यह दिनशा पेटिट मिल्सके नामसे काम करने लगी। यह लालबाग परेलमें हैं तथा इसका टेलीफोन नं० ४०८८१ है। इस मिलमें ४२२९६ स्पेण्डिल्स तथा १४७० लूम्स हैं। इसमें काम करनेवाले व्यक्तियोंकी संख्या २५३६ है। यहां ४ से लेकर ३२ नं० तकका सूत तथा कोरा, धुला, रंगीन सब तरहका कपड़ा तैय्यार होता है।

(३) **बोमनजी पेटिट मिल्स**—इसकी स्थापना सन् १८८२ में गार्डन मिलसके नामसे हुई थी। सन् १८८९ में इसे वर्तमान नाम मिला। यह महालक्ष्मीपर बना हुआ है। तथा इसका टेलीफोन नं० ४०८८४ है। इसमें सब प्रकारके ४२३६८ स्पेण्डिल्स और १२६३ लूम्स हैं। काम करनेवाले मजदूरोंकी संख्या २३११ है यहांपर ६ से २६ नं० तकका सूत तथा सभी तरहका कोरा धुला, रंगीन माल तैय्यार होता है।

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—रतनराम मन्छाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेन्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लाउस्टन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेन्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेन्ट्स एसोसिएशन पायधुनी बान्दा-वाड़ा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

मिलाकर ८९६३४ स्पिण्डल्स और ६१३ लूम्स हैं। इसमें भी ऊपरकी मिलों ही की तरह कपड़ा तैयार होता है।

मथुरादास मिल्स लिमिटेड:—इस मिलकी स्थापना सन् १८८३ में क्वीन्स मिलसके नामसे हुई। सन् १९१३ में यह किङ्गजार्ज मिल्सके नामसे प्रसिद्ध हुई। उसके पश्चात् इसका जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम मथुरादास मिल्स हुआ। इसके डाइरेक्टर्स प्रायः वही लोग हैं जो कस्तूरचन्द मिलके हैं। केवल कीका भाई प्रेमचन्दकी जगह इसके डायरेक्टरोंमें जमशेदजी वाड़ियाका नाम है।

इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है। जो ४८०० साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गई है। यह मिल डिलाइलरोड पर बना हुआ है। जहांका टेलीफोन नं० ४०८५१ है। इस मिलमें ४३५६६ स्पेण्डिलस और ९०७ लूम्स हैं। इसमें २४६५ मजदूर काम करते हैं। यहां पर भी रंगीन, सफेद, कोरा और धुला हुआ कपड़ा बनता है।

माधवराव सिन्धिया मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८८६ में सन मिलके नाम से हुई थी। सन् १९१७ में जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम बदलकर माधवराव सिंधिया मिल्स कर दिया गया। इसका आफिस आऊट्रम रोड फोर्टमें है। इसके तारका पता मिलआफिस (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२१७ है। इसके डायरेक्टरोंमें (१) सर सासुन डेविड बेरोनेट (२) जमशेदजी अर्देसर वाड़िया (३) करीमभाई इब्राहिम बेरोनेट (४) एफ० ई० दीनशा (५) ऑ० सर फिरोज सेठना (६) अर्देसर जमशेदजी वाडिया आर (७) सर फाजल भाई करीम भाई के० टी० हैं।

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एन्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३८ लाख है जो २० हजार प्रिफरेन्स तथा १८ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। इसका कारखाना लोअर परेलमें है। इसका टेलीफोन नं० ४०११० है। इस मिलमें ४४३२० स्पिडल्स तथा १०५ लूम्स हैं। इसमें २२१० मजदूर काम करते हैं। यहां सब प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

क्रेसेन्ट मिल्स लिमिटेड:—इसकी स्थापना सन् १८८३ में रिपन मिलके नामसे हुई थी इसी मिलका नाम बदलकर सन् १९१४ में क्रेसेन्ट मिल हो गया। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आऊट्रम रोड (फोर्ट) में है। तारका पता-मिल आफिस (Milloffice) और टेलीफोन नं० २१२९० है इसके डाइरेक्टर करीब २ उपरोक्त मिलवाले ही हैं। सिर्फ आर० डी० जीजी भाई और बैरामजी जीजी भाई विशेष हैं।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स लिमिटेड के पास है। स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी है। जो ६ हजार प्रिफरेन्स तथा ४ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गयी है इसका कारखाना रिपन रोडपर है जिसका टेलीफोन नं० ४०८४१ है। इस मिलमें

श्री गोविंदलाल, शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकार की सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—हरसराम अमृतराम

ज्वॉ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लास्टन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेन्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्टस् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-काटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

मिलाकर ८१६३४ स्पिंडल्स और ६१३ लूम्स हैं। इसमें भी ऊपरकी मिलों ही की तरह कपड़ा तैयार होता है।

मथुरादास मिल्स लिमिटेडः—इस मिलकी स्थापना सन् १८८३ में क्वीन्स मिलसके नामसे हुई। सन् १९१३ में यह किङ्गजार्ज मिलसके नामसे प्रसिद्ध हुई। उसके पश्चात् इसका जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम मथुरादास मिल्स हुआ। इसके डाइरेक्टर्स प्रायः वही लोग हैं जो कस्तूरचन्द मिलके हैं। केवल चीका भाई प्रेमचन्दकी जगह इसके डायरेक्टरोंमें जमशेदजी वाडियाका नाम है।

इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है। जो ४८०० साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गई है। यह मिल डिलाइलरोड पर बना हुआ है। जहांका टेलीफोन नं० ४०८५१ है। इस मिलमें ४३५९६ स्पेंडिल्स और ९०७ लूम्स हैं। इसमें २४३५ मजदूर काम करते हैं। यहां पर भी रंगीन, सफेद, कोरा और धुला हुआ कपड़ा बनता है।

माधवराव सिन्धिया मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८८९ में सन मिलके नाम से हुई थी। सन् १९१७ में जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम बदलकर माधवराव सिंधिया मिल्स कर दिया गया। इसका आफिस आउट्रम रोड फोर्टमें है। इसके तारका पता मिलआफिस (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२१७ है। इसके डायरेक्टर्स (१) सर सासुन डेविड बेरोनेट (२) जमशेदजी अर्देसर वाडिया (३) करीमभाई इब्राहिम बेरोनेट (४) एफ० ई० दीनशा (५) ऑ० सर फिरोज सेठना (६) अर्देसर जमशेदजी वाडिया और (७) सर फजल भाई करीम भाई के० टी० हैं।

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एन्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३८ लाख है जो २० हजार प्रिफेरेन्स तथा १८ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। इसका कारखाना लोअर परेलमें है। इसका टेलीफोन नं० ४०११० है। इस मिलमें ४४३२० स्पिंडल्स तथा ६०४ लूम्स हैं। इसमें २३१० मजदूर काम करते हैं। यहां सब प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

मेडबरी मिल्स लिमिटेडः—इसकी स्थापना सन् १८८३ में रिपन मिलके नामसे हुई थी इसी मिलका नाम बदलकर सन् १९१४ में मेडबरी मिल हो गया। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड (फोर्ट) में है। तारका पता-मिल आफिस (Milloffice) और टेलीफोन नं० २१२९७ है इसके डाइरेक्टर करीब २ उपरोक्त मिलवाले ही हैं। सिर्फ आर० डी० जीजी भाई और बैरामजी जीजी भाई विशेष हैं।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स लिमिटेड के पास है। स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी है। जो ६ हजार प्रिफरेन्स तथा ४ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गयी है इसका कारखाना रिपन रोडपर है जिसका टेलीफोन नं० ४०८४१ है। इस मिलमें

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल चीजी

मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—दत्तमराम सम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुंवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लाउटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड ग्रेन्ट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लोथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लोथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बम्बे डायमंड मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स विनिस्स बिल्डिंग वेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बम्बे आयरन एण्ड ग्लास नेटिव मर्चेन्ट्स एसोसिएशन पायधुनी कान्दा-भाटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू ग्रेन मार्केट, कर्नाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—रत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर फ्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग वेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-काटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल मीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-काटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

रेशम के कारखाने

(१) सासून एण्ड अलायन्स सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड ऑफिस ३ पारसेस स्ट्रीट फोर्टमें है। इसका कारखाना विक्टोरिया रोड मझगांवमें है। इसमें २८५ लूम्स तथा ६५२० स्पेंडल्स हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। इसमें ६६७ आदमी काम करते हैं। इसके मैनेजिंग एजंट डेविड सासून एण्ड कंपनी लिमिटेड है। और डायरेक्टर निम्न लिखित सज्जन हैं।

(१) एच० एच० स्कायर
(२) सिडने गुड डब्ल्यू
(३) एच० टेम्पल
(४) ईश्वरदास लक्ष्मीदास
(५) एफ. आर. वाडिया
(६) रणछोड़दास मी० मेहरा

(२) ईस्ट सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड आफिस २०७ हार्नबी रोड फोर्ट बम्बईमें है और कारखाना सुपारी बाग रोड परेलमें है। इसमें सन् १९२५ में ३८० आदमी काम करते थे।

ऊनके कारखाने

(१) बाम्बे ऊलन मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड—इसका आफिस ईवर्ट हाउस, टेमिरंड लेन फोर्टमें है इसका कारखाना दादरमें है। यहां पर ऊनी माल तयार होता है। इसके मैनेजिंग एजण्ट एंड्रोइरम कारपोरेशन लिमिटेड है। तारका पता—ईवर्ट (Ewart) है। इसमें सन् १९२५ में ६६१ आदमी काम करते थे।

(२) इण्डियन ऊलन मिल (हांगकांग मिल लिमिटेड)—इसका आफिस हॉर्नबी रोड फोर्टमें है। कारखाना चिंचपोकली पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की है। जिसमेंसे ८७ लाखकी पूंजी वसूल हो चुकी है। इसमें २२० लूमस औरकी १०४०० स्पिंडल्स हैं। इनके अतिरिक्त ४८०० सूत बनानेके स्पिंडल्स हैं। और २८८० ऊन कातने वाले स्पिंडल है। इसके एजंट हुसेन भाई दिवानी वाडिया एण्डको है।

(३) रेमंड ऊलन मिल्स लिमिटेड—इसका आफिस ई० डी० सासुन बिल्डिंग कूपल रोड बेलार्ड एस्टेट पर है। इसका मिल थाना (बम्बई) में है। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाखकी है। इसमें सन् १९२५ में ६०० आदमी काम करते थे। इसकी भारत और इंग्लैंडकी एजन्सी ई० डी० सासुन एण्ड कंपनी लिमिटेडके पास है। इस कंपनीका

श्री गोविंदलाल, शिवलाल, मोतीलाल

श्री लक्ष्मनदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल घीवी

ग्रेन मर्चेंट एसोसियेशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायके आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—रतनसी चन्दरान

ज्वॉ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेन्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मालकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लेस्टन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेन्ट्स एसोसियेशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसियेशन है।

दी सीड्स एन्ड ग्रेन्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी मुकादम एसोसियेशन

दी हॉप मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी जापानीज हॉप मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी मेटल बोर्ड एसोसियेशन

दी बाम्बे हार्डवेयर मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

इम्पोर्ट एन्ड एक्सपोर्ट मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसियेशन

दी मिल स्टोर्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स हिन्दुस्तान बिल्डिंग बेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास मेटल मर्चेन्ट्स एसोसियेशन पायधुनी तांबा-कांटा

दी बाम्बे पेपर एन्ड स्टेशनरी मर्चेन्ट्स एसोसियेशन

दी बाम्बे राइस मर्चेन्ट्स एसोसियेशन (न्यू राइस मार्केट, डाणा बन्दर)

दी शुगर मर्चेन्ट्स एसोसियेशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

रेशम के कारखाने

(१) सासून एण्ड अलायन्स सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड ऑफिस ३ फारबेस स्ट्रीट फोर्टमें है। इसका कारखाना विक्टोरिया रोड मझगांवमें है। इसमें २८५ लूम्स तथा ६५२० स्पेंडल्स हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। इसमें ६६७ आदमी काम करते हैं। इसके मैनेजिंग एजंट डेविड सासून एण्ड कंपनी लिमिटेड है। और डायरेक्टर निम्न लिखित सज्जन हैं।

(१) एच० एच० स्कायर
(२) सिडने म्रुड डब्ल्यू
(३) एच० टेम्पल
(४) ईश्वरदास लक्ष्मीदास
(५) एफ. आर. वाडिया
(६) रणछोड़दास बी० मेहरा

(२) डोह सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड आफिस २०७ हार्नबी रोड फोर्ट बम्बईमें है और कारखाना सुपारी बाग रोड परेलमें है। इसमें सन् १९२५ में ३८० आदमी काम करते थे।

ऊनके कारखाने

(१) बाम्बे ऊलन मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड—इसका आफिस ईवर्ट हाउस, टेमिरंड लेन फोर्टमें हैं इसका कारखाना दादरमें हैं। यहाँ पर ऊनी माल तयार होता है। इसके मैनेजिंग एजण्ट एंग्लोश्याम कारपोरेशन लिमिटेड है। तारका पता—ईवर्ट (Ewart) है। इसमें सन् १९२५ में ६६१ आदमी काम करते थे।

(२) वाडिया ऊलन मिल (हांगकांग मिल लिमिटेड)—इसका ऑफिस ब्रूडबी रोड फोर्टमें है। कारखाना चिंचपोकली पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोडकी है। जिसमेंसे ८७ लाखकी पूंजी वसूल हो चुकी है। इसमें २२० लूमस औरकी १०४०० स्पिंडल हैं। इनके अतिरिक्त ४८०० सूत बनानेके स्पिंडल हैं। और २८८० ऊन कातने वाले स्पिंडल हैं। इसके एजंट हुसैन भाई पिलानी वाडिया एण्डको हैं।

(३) रेमंड ऊलन मिल्स लिमिटेड—इसका आफिस ई० डी० सासुन बिल्डिङ्ग डूगल रोड बेलार्ड स्टेट पर है। इसका मिल थाना (बम्बई) में है। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाखकी है। इसमें सन् १९२५ में ६०० आदमी काम करते थे। इसकी भारत और इग्लण्डकी एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कंपनी लिमिटेडके पास है। इस कंपनीका

करीम भाई मिल्स लिमिटेड

इस कम्पनीमें दो मिल्स सम्मिलित हैं। (१) करीम भाई मिल्स (२) मोहम्मद भाई मिल्स। करीम भाई मिल्सकी स्थापना सन् १८८६ में हुई थी, और मोहम्मद भाई मिलसकी स्थापना १८६६ में हुई थी। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख रुपयेकी है। जो ८८०० साधारण शेअर्समें विभाजित की गई है। इस कम्पनीका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्ट बम्बईमें है। इसका तारका पता (millofiico) है। तथा टेलीफोन नं० २१२६७ है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(१) सर सासुन डेविड बैरोनेट।
(२) फर्दूनजी जमशेदजी वाड़िया।
(३) सर करीमभाई इब्राहीम बैरोनेट।
(४) सर जमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट।
(५) एफ० ई० दीनशा।
(६) सरफजलभाई करीम भाई के० टी०।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहीम एण्ड सन्सके पास है। इस कम्पनीके द्वारा जिन दो मिलोंका प्रबन्ध होता है उनका विवरण इस प्रकार है—

करीम भाई मिल्स—यह टिलाइल रोडपर बना हुआ है। इसका टेलीफोन नं० ४०८७२ है। इस मिलमें सब प्रकारके ८६८०४ स्पेण्डिल्स और १०५० लूम्स हैं। इस मिलमें ६ से ३४ नम्बरतकका सूत काता जाता है। तथा कोरा, रंगीन, धुला सब प्रकार कपड़ा तैय्यार होता है। ऊपर जिस मोहम्मद भाई मिलका विवरण आया है, वह भी इसीमें सम्मिलित हैं।

फ़ज़ल भाई मिल्स लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १६०५ में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२-१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। इसका तारका पता—(millofiico) है। तथा टेलीफोन नं० २१२६० है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(१) जमशेदजी अर्देशिरजी वाड़िया।
(२) सर सासुन डेविड बैरोनेट के० सी० एस० आई०
(३) सर करीम भाई इब्राहिम बैरोनेट।

जहांगीर आई-हास्पिटल, (आंखका दवाखाना) एलिफस्टन कालेजका मकान, तथा सिन्ध हैदराबादमें पागलों का हास्पीटल और बगीचा इत्यादि सार्वजनिक संस्थाएं निर्माण की। बम्बईके दानवीरोंमें आपका नाम बहुत ऊँचा था। आपकी योग्यता और दानवीरतासे प्रसन्न होकर सरकारने आपको जे० पी० की उपाधिसे सम्मानित किया है। इसके बाद सन् १८६० में आप इनकमटेक्स डिपार्टमेन्टके कमिश्नर नियुक्त हुए। सन् १८७१ में आपको सी० एस० आई० और १८७२ में सर नाइटका अलङ्कार प्राप्त हुआ। १८७८ में आपका स्वर्गवास हुआ आपके कोई पुत्र न होनेकी वजहसे आपने अपने बड़े भाईके पुत्र जहांगीरजीको गोद लिया।

सर कावसजी जहांगीर बेरोनेट जे० पी०

आपका प्रथम नाम जहांगीरजी था। आप सर कावसजीके (प्रथमके) बड़े भाई हीरजी जहांगीरके बड़े पुत्र सेठ जीवनजीके पुत्र थे। आपका जन्म सन् १८५२ में हुआ। आपकी शिक्षा एल्फिन्स्टन कालेजमें हुई। आपने अपनी पत्नी श्रीमती धनबाईके साथ कई बार विलायत यात्रा की। सन् १८६५ में जब आप चौथी बार लन्दन गये थे तब श्रीमती विक्टोरिया महारानीने अपने हाथोंसे आपको सरनाइटके प्रसिद्ध खिताबका चार्ज प्रदान किया। उस समय आपने इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटकी लन्दनमें रेडीमनीटाऊ बन्द ... लिये २ लाख रुपये प्रदान किये उसके पश्चात सन् १९१२ में बम्बईके ... ८ लाख रुपये दान किये। आपकी दानवीरतासे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको बेरोनेटका अत्यन्त सम्मान पूर्ण खिताब प्रदान किया। सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एक अत्यन्त ... पुरुष, म्युनिसिपल कारपोरेटर, लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके मेम्बर, प्रसिद्ध मिल मालिक, और बम्बई ... के ... ट्रस्टी रहे हैं गवर्नमेन्टने सन् १९१८ साऊके लिये आपको बम्बईके ... ... पद प्रदान किया था। टाटा आयरन स्टील एण्ड कम्पनी, हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी, सुंदरी मिल आदिके समान व्यापारिक उद्योग धन्धोंके बड़े शौक के साथ आपकी बहुत सहानुभूति रही।

जहांगीर सर कावसजी [जूनियर]

आपका जन्म सन् १८७८ में हुआ। आपने केम्ब्रिजके सेण्ट जोन्सकालेजमें शिक्षा प्राप्त कर एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। बम्बईके पब्लिक-जीवनमें आपका बुद्धिमत्ता पूर्ण हाथ रहा है। आपने बम्बईके म्युनिसिपल कारपोरेशनकी सन् १८९५ से सन् १९२१ तक बहुत अच्छी सेवायें की हैं। आप इसकी कमेटीके सन् १९१४-१५ में चेयरमेन रहे और सन १९१९—१९२०में आप इसके सभापति रहे हैं, आपने युद्धके समयमें गवर्नमेंटकी बहुत सेवाएं की थीं। इसके बदलेमें गवर्नमेंटने आपको सन् १९१८ में ओ० बी० ई० तथा सन १९२० में सी० आई० ई० की पदवीसे विभूषित किया है। आपने

३५८८४ स्पिण्डल्स और ६६२ करघे हैं। तथा इसमें १६४१ मजदूर कार्य करते हैं। यहाँ नं४ से नं० १२ तकका सूत काता जाता है। इस मिलमें सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

मुरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एण्ड विविङ्ग कम्पनी लिमिटेड:—इसकी स्थापना सन् १८७२ में सेठ मुरारीजीके हाथोंसे हुई। इसकी स्वीकृत पूञ्जी ११५०००० है। जो ११५० शेयरोंमें विभक्त की गयी है। इस मिलमें ८४००० स्पेंडल्स तथा १६०० लूम्स हैं। इसमें ४२०७ मजदूर काम करते हैं। इसके डाइरेक्टर सेठ नरोत्तम मुरारजी (२) ऑ०सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी (३) एफ० ई० दीनशा (४) त्रीकमदास धरमसी मुरारजी (५) अम्बालाल साराभाई (६) ए० जे० रायमंड (७) शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। इसकी एजन्सी मेसर्स मुरारजी गोकुलदासके पास है। इसमें खाकी कपड़ा, ड्रील, शर्टिंग कोटिंग आदि २ सभी प्रकारके कपड़े बनाये जाते हैं।

एलायन्स कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कं० लिमिटेड—इसका मिल तारदेवमें है। लूम्स ५६२ स्पिडल २८११६ और केपिटल ७ लाख है। इसकी एजंट मोरार भाई वृजभूषण दास एण्ड कम्पनी हैं।

अपोलो मिल्स लिमिटेड—मिल डेलिस्ले रोड में है। इसमें लूम्स ८९६ और स्पिडलस ३६६५४ हैं। केपिटल २५ लाख है और इसके मैनेजिंग एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है। ऑफिसका पता—डगल रोड बेलार्ड स्टेट है।

डेविड मिल्स कम्पनी लिमिटेड—मिल फरोल रोड परेलमें है लूम्स ११३० और स्पेंडल्स ८२६२६ हैं। केपिटल २२ लाख और एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

ई० डी० सासून युनाइटेड कं० लिमिटेड—मिल मूप देव रोडपर है। इसमें लूमुस ८०० और स्पेंडल्स ३७१२० है। एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है।

जेकोब सासून मिल—मिल सुपारी बाग रोडपर है इसमें २२८१ लूमुस और १००८,२ स्पेंडलस हैं। एजंट ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड है।

रेचल सासून मिल—चिंच पोकली रोड, लूम्स २०२० हैं। इसके एजंट है ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड।

ई० डी० सासून मिल—मूप रोड, लूमुस ८४१ स्पेंडल्स ६००२६ एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड। ऊपरकी चार मिलें और मेंचेस्टर मिल, टर्की रेड डाईवर्क्स नामकी ६ मिलोंकी सम्मिलित पूञ्जी ६ करोड़ है। इन सब मिलोंकी एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग कं० लि०—इसका मिल रिपन रोड में है। इसमें लूमुस ६६० और स्पिंडलस ४१३२८ हैं। केपिटल ६ लाखका है। एजंट दामोदर थैकरसी मूलजी एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट हैं।

स्व० सेठ सर करीम भाई इब्राहीम (प्रथम बेरोनेट) बम्बई

सर फाजल भाई करीम भाई, बम्बई

सेठ महम्मद भाई करीम भाई (द्वितीय बेरोनेट) बम्बई

३५८८५ स्पिंडल्स और ६६२ करघे हैं। तथा इसमें १६४१ मजदूर कार्य करते हैं। यहाँ नं४ से नं० १२ तकका सून काता जाता है। इस मिलमें सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

मुरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड:—इसकी स्थापना सन् १८७२ में सेठ मुरारजीके हाथोंसे हुई। इसकी स्वीकृत पूंजी ११५०००० है। जो ११५० शेअरोंमें विभक्त की गयी है। इस मिलमें ८४००० स्पिंडल्स तथा १६०० लूम्स हैं। इसमें ४२०७ मजदूर काम करते हैं। इसके डाइरेक्टर सेठ नरोत्तम मुरारजी (२) ऑ०सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी (३) एफ० ई० दीनशा (४) त्रीकमदास धरमसी मुरारजी (५) अम्बालाल साराभाई (६) ए० जे० रायमंड (७) शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। इसकी एजन्सी मेसर्स मुरारजी गोकुलदासके पास है। इसमें खाकी कपड़ा, ड्रील, शर्टिंग कोटिंग आदि २ सभी प्रकारके कपड़े बनाये जाते हैं।

एलायन्स कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कं० लिमिटेड—इसका मिल तारदेवमें है। लूम्स ५६२ स्पिंडल २८११६ और केपिटल ७ लाख है। इसकी एजंट मोरार भाई वृजभूषण दास एण्ड कम्पनी हैं।

अपोलो मिल्स लिमिटेड—मिल डेलिस्ले रोड में है। इसमें लूम्स ८६६ और स्पिंडल्स ३६६५४ हैं। केपिटल २५ लाख है और इसके मैनेजिंग एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है। ऑफिसका पता—डगल रोड बेलार्ड स्टेट है।

डेविड मिल्स कम्पनी लिमिटेड—मिल फरोल रोड परेलमें है लूम्स ११३० और स्पेंडल्स ८२६२६ हैं। केपिटल २२ लाख और एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

ई० डी० सासुन युनाइटेड कं० लिमिटेड—मिल ग्रूप देव रोडपर है। इसमें लूम्स ८०० और स्पेंडल्स ३७१२० है। एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है।

जेकोब सासुन मिल—मिल सुपारी बाग रोडपर है इसमें २२८१ लूम्स और १००८८२ स्पेंडल्स हैं। एजंट ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड है।

रेचल सासुन मिल—चिंच पोकली रोड, लूम्स २०२० हैं। इसके एजंट है ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड।

ई० डी० सासुन मिल—ग्रूप रोड, लूम्स ८४१ स्पेंडल्स ४००२६ एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड। ऊपरकी चार मिलें और मैंचेस्टर मिल, टर्की रेड डाईवर्क्स नामकी ६ मिलोंकी सम्मिलित पूंजी ६ करोड़ है। इन सब मिलोंकी एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग कं० लि०—इसका मिल रिपन रोड में है। इसमें लूम्स १६० और स्पिंडल्स ४१३२८ हैं। केपिटल ६ लाखका है। एजंट दामोदर थैकरसी मूलजी एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट हैं।

कं० लि० नामक एक मिल और खोली। तत्पश्चात् आपने दामोदर लक्ष्मीदास मिलकी एजेंसी ली। कुछ समय बाद आपने इस मिलकी सम्पत्ति बढ़ाई और इसका नाम बदलकर सिसेंट मिल कं० लि० रक्खा।

सर करीमभाईने सन् १९०५ में फाजलभाई मिल्स कं० लिमिटेडकी स्थापनाकी, एवं सन् १९१२ में पर्ल मिलको जन्म दिया। इन्दौरकी मालवा युनाइटेड मिल भी आपहीके हाथोंमें है।

आपने इतने अधिक मिल खोले कि उनके कपड़ेकी धुलाई व रंगाईकी सुव्यवस्थाके लिये करीमभाई डाइंग एण्ड ब्लीचिंग मिल नामक एक स्वतन्त्र मिल आपको स्थापित करना पड़ा। भारतसे जो रद्दी रूई विलायत जाती है उसका मोटा कपड़ा और सस्ते कम्बल आदि बनते हैं उस रूईका प्रयोग करनेके लिये आपने प्रीमियर मिल कम्पनी लिमिटेड नामसे विशेष कारखाना खोला। वर्त्तमानमें आपकी फर्म करीब १३।१४ मिलोंकी एजेण्ट है। जिनके नाम इस प्रकार हैं, करीमभाई मिल (महम्मद-भाई मिल सहित) फाजल भाई मिल, पर्लमिल, भवानी मिल, क्रिसेंट मिल, इन्दौर मालवामिल, इण्डियन ब्लीचिंग मिल, प्रीमियर मिल, कस्तूरचन्द मिल, इम्पीरियल मिल, मेडवरी मिल, मथुरा दास मिल, माधोराव सिंधिया मिल, सीलोनमिल, उस्मान शाहीमिल (हैदराबाद) है। (इन सब मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।) इन सब मिलोंके मेनेजमेंटमें इस फर्मकी करीब ३ करोड़-की सम्पत्ति लगी हुई है। इस उद्योगकी सफलतामें इस कार्यके सुप्रबन्धक निरीक्षक मि० एम० एम० फकीराका बहुत बड़ा हाथ था।

यह खानदान खास कच्छ-मांडवीका रईस है खोजा समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य है। कच्छकी स्टेटको छोड़कर भारतकी शायदही किसी देशी रियासतको इतना बड़ा व्यवसायी कुटुम्ब पैदा करनेका गर्व होगा। यह फर्म भारतके मशहूर रुई और कपड़ेके व्यवसाइयोंमेंसे एक है।

सर करीमभाई (प्रथम बेरोनेट) ने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग धन्धोंकी जो उन्नति की है,वह इतिहासके पन्नोंमें अमिट है। इसप्रकार परम गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए आपका देहावसान २६ सितम्बर सन् १९२४ ईस्वीको हुआ। आपने बारह तेरह लाखका दान अपने जीवनमें किया है। जिसमेंसे ढाई लाख रुपया एक आर्फनेजके लिये दिया है। कच्छमांडवीमें आपका एक गर्ल्स स्कूल, एक दवाखाना और एक धर्मशाला है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक (१) सर फाजलभाई करीमभाई (२) सेठ हुसैनभाई करीमभाई (३) सेठ इस्माइलभाई करीमभाई (४) सेठ करीमभाई हुसैनभाई भाई तीसरे बेरोनेट (५) अहमदभाई सर फाजलभाई और (६) इब्राहिमभाई गुलाम हुसैन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर कारबार की दुकानें तथा एजेंसिया हैं।

(१) मेसर्स करीमभाई इब्राहिम एण्डसन्स—(शेखमेमनस्ट्रीट-बम्बई) (T. a. Setaran)

इस फर्मपर १२ मीलोंका बना हुआ करीब ४।५ करोड़का माल प्रतिवर्ष बेंचा जाता है।

फिनिक्स मिल लिमिटेड—फरग्यूसनरोड, एजंट रामनारायण हरनन्दराय एन्ड सन्स १४३ एस्प्लेनेड-रोड फोर्ट, पूंजी ८ लाख, स्पिण्डल्स ५२५०० लूम्स ६६६ हैं।

फिरदा मिल्स लिमिटेड नं० १—एल्फिंस्टन रोड, एजंट एलन रहीमतुल्ला एन्ड कम्पनी चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट, स्पिण्डल्स १६०८६ लूम्स ३२०।

फिरदा मिल्स लिमिटेड नं २—सिवरीरोड परेल, एजंट एलन रहीम तुल्ला एण्ड कम्पनी चर्चगेट फोर्ट स्पिंडल्स २५५६२ लूम्स ४००-दोनों मिलोंकी मिश्रित पूंजी ६०६८८००।

कुरला स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल—कुरला, एजंट फावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लूम्स ७१६, स्पिंडल्स २७६४०, पूंजी १३ लाख, आँफिस चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट।

मून मिल्स लिमिटेड—शिवरीन्यूरोड, लूम्स ७५६ स्पिंडल्स ३४४१४ पूंजी २५०००० एजण्ट पी० ए० होरम्सजी एण्ड कम्पनी ७० फारबसस्ट्रीट फोर्ट।

एडवर्ड एडवर्ड स्पिनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—रेरोड मजगांव,लूम्स१३६३ स्पिंडल्स ४६-४५२, पूंजी १५ लाख ए० पी० डी० पेटिट ए० सन कम्पनी ७।११ एलफिंस्टन सरकल फोर्ट।

सेंचुरी स्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—एल्फिंस्टनरोड, २६६६ लूम्स स्पिण्डल्स १०४-६८० पूंजी १८५०००० एजंट सी० एन वाडिया एण्ड कम्पनी।

सदनस्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लि०—परेल, लूम्स ६६८ स्पेण्डल ४१७६८ पूंजी ८ लाख एजण्ट पुरुषोत्तम विट्ठलदास एण्ड कंपनी १९ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट।

हेनेट मिल्स लिमिटेड—फर्ग्यूसन रोड लूम्स ६३० स्पिण्डल्स ३५८६ एजेंट तिलोकचंद कल्यानमल एण्डको कालबादेवी कल्याण भवन, पूंजी १६ लाख।

सिंद्रेस मिल्स कं० लिमिटेड - मायखला, स्पिण्डल्स ३७२०८ लूम्स १२३० पूंजी २२ लाख ५० हजार, एजण्ट एलन ब्रदर्स एण्ड कं० (इण्डिया) लि० हार्नबीरोड।

स्वदेशमेन्युफेक्चरिंग कं० लि—लूम्स ७४७ स्पिण्डल्स २६१०४, पूंजी १० लाख एजण्ट टर्नर मरीसन एण्ड कं० लि १६ बैंक स्ट्रीट फोर्ट।

कोहिनूर मिल्स कं० लि – दादर, पूंजी ११ लाख, २९११४ स्पिंडल्स ७४४ लूम्स, एजेंट किलिक निक्सन एण्ड कम्पनी लि० होम स्ट्रीट फोर्ट।

गोल्ड मोहर मिल्स कं० लि०—दादर—लूम्स १०४० स्पिंडल्स ४०४७२ पूंजी २० लाख, एजण्ट जेम्स फिनले कं० लिमिटेड फोर्ट।

फिनले मिल्स लिमिटेड—परेल, लूम्स ८१२, स्पिण्डल्स ४६१६२ पूंजी २१ लाख, एजण्ट जेम्स फिनले एण्ड कंपनी लि० फोर्ट

इसके अतिरिक्त और भी कई मिलें हैं सब मिला कर इनकी संख्या करीब ८० है। पर इन सबका परिचय स्थानाभावसे यहां देनेमें हम असमर्थ है।

स्व० जमशेदजी नसरवानजी ताता

सर विक्टर सासुन

स्व० सर दोराबजी जमशेदजी ताता नाइट, जे०पी०,

सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एम०ए०, जे०पी०, ओ०बी०ई०

फिनिक्स मिल लिमिटेड—फरग्यूसनरोड, एजेंट रामनारायण हरनन्दराय एन्ड सन्स १४३ एस्प्लेनेड-रोड फोर्ट, पूंजी ८ लाख, स्पिण्डल्स ५२५०० लूम्स ६६६ हैं।

बिरला मिल्स लिमिटेड नं० १—एल्फिंस्टन रोड, एजेंट एलन रहीमतुल्ला एन्ड कम्पनी चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट, स्पिण्डल्स १६०८६ लूम्स ३२०।

बिरला मिल्स लिमिटेड नं २—सिवरीरोड परेल, एजेंट एलन रहीम तुल्ला एण्ड कम्पनी चर्चगेट फोर्ट स्पिंडल्स २५५६२ लूम्स ४००-दोनों मिलोंकी मिश्रित पूंजी ६०६८८००।

इराला स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल—पुतला, एजेंट कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लूम्स ७१६, स्पिंडल्स २७६४०, पूंजी १३ लाख, ऑफिस चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट।

मून मिल्स लिमिटेड—शिवरीन्यूरोड, लूम्स ७५६ स्पिंडल्स ३४४१४ पूंजी २५०००० एजण्ट पी० ए० होरम्सजी एण्ड कम्पनी ७० फ्रावसस्ट्रीट फोर्ट।

एम्परर एडवर्ड स्पिनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—रेरोड मजगांव,लूम्स१२६३ स्पिंडल्स ४६-४५२, पूंजी १५ लाख ए० पी० डी० पेटिट ए० सन कम्पनी ७।११ एलफिंस्टन सरकल फोर्ट।

सेंचुरी स्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—एलिफंस्टनरोड, २६६६ लूम्स स्पिण्डल्स १०४-६८० पूंजी १८५०००० एजेंट सी० एन वाडिया एण्ड कम्पनी।

क्राउनस्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लि०—परेल, लूम्स ६६८ स्पेण्डल ४१७६८ पूंजी ८ लाख एजण्ट पुरुषोत्तम विट्ठलदास एण्ड कंपनी १९ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट।

डैनेट मिल्स लिमिटेड—फर्यूसन रोड लूम्स ६३० स्पिण्डल्स ३५८६ एजेंट तिलोकचंद कल्यानमल एण्डको कालबादेवी कल्याण भवन, पूंजी १६ लाख।

सिंप्लेक्स मिल्स कं० लिमिटेड - मायखला, स्पिण्डिल्स ३७२०८ लूम्स १२३० पूंजी २२ लाख ५० हजार, एजण्ट एलन ब्रदर्स एण्ड कं० (इण्डिया) लि० हार्नबीरोड।

न्ज्ञोबमेन्युफेक्चरिंग कं० लि—लूम्स ७४८ स्पिण्डल्स २६१०४, पूंजी १० लाख एजण्ट टर्नर मरीसन एण्ड कं० लि १६ बैंक स्ट्रीट फोर्ट।

कोहिनूर मिल्स कं० लि - दादर, पूंजी ११ लाख, २९११४ स्पिंडल्स ७४४ लूम्स, एजेंट किलिक निक्सन एण्ड कम्पनी लि० होम स्ट्रीट फ्रोर्ट।

गोल्ड मोहर मिल्स कं० लि०—दादर—लूम्स १०४० स्पिंडल्स ४२४७२ पूंजी २० लाख, एजण्ट जेम्स फिनले कं० लिमिटेड फोर्ट।

फिनले मिल्स लिमिटेड—परेल, लूम्स ८१२, स्पिण्डल्स ४६१७२ पूंजी २१ लाख, एजण्ट जेम्सफिनले एण्ड कंम्पनी लि० फोर्ट

इसके अतिरिक्त और भी कई मिलें हैं सब मिला कर इनकी संख्या करीब ८० है। पर इन सबका परिचय स्थानाभावसे यहां देनेमें हम असमर्थ हैं।

हुई। १९ वर्षकी अवस्थामें आपने कॉलेज छोड़ दिया और उसके कुछ समय पश्चात् सन् १८५९ में आप काम सीखनेके लिये हांगकांग चले गये। यहांपर आपको कई प्रकारके व्यापारिक अनुभव हुए।

सन् १८६१ में अमेरिकाके उत्तरी और दक्षिणी सूबोंमें युद्ध प्रारम्भ हुआ। जिससे अमेरिकासे इंग्लेंड रूईका आना बिल्कुल बन्द होगया इस वजहसे लङ्काशायरके कपड़ेके कारखानोंको बड़ा धक्का पहुँचा। यह देख भारतके व्यवसाय कुशल पारसियोंने इस अवसरसे लाभ उठानेका पूरा २ निश्चय किया। प्रसिद्ध पारसी प्रेमचन्द रायचन्द्र इसके नेता बने। इस समय रूईके व्यापारमें इन लोगोंको करीब ८१ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। श्रीयुत जमशेदजीको भी इस अवसरपर बहुत लाभ हुआ, मगर सन १८६५ में एकाएक युद्धके बन्द हो जानेसे बम्बईके व्यवसायिक जगत्में एक बड़ा-भारी अनिष्टकारी परिवर्तन हुआ। पहली जुलाई सन् १८६५ ई० का दिन बम्बईके इतिहासमें अभाग्यका दिन समझा जाता है। उस दिन बम्बईकी कई प्रतिष्ठित फर्मका पलड़ा बैठ गया। अमीर गरीब हो गये, गरीब भिखारी बन गये और भिखारी भूखों मरने लगे। इस घटना चक्रमें ताता परिवारको भी बहुत हानि उठानी पड़ी, मगर जमशेदजी ताता बड़े हिम्मत बहादुर और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। आपने इस भयंकर दुर्दिनमें भी अपने साहसको न छोड़ा और इंग्लेंडका कारोबार बन्द करके भारतका व्यवसाय चलाते रहे। इसी बीच थोड़े दिनोंके बाद अबीसीनियांकी लड़ाई शुरू हुई, उस समय जो अंग्रेजी पलटन बम्बईसे भेजी गई थी उसकी रसदका ठेका आपने लिया था उसमें आपको बड़ा मुनाफा हुआ और आपका व्यवसाय फिर सम्हल गया। जिस रूईके रोजगारने बम्बईको धक्का दिया था उसीको आपने फिरसे सम्हाला और बम्बईमें चिंचपोकली नामक ऑईल मिलके कारखानेको खरीदकर उसे एलेक्जण्ड्रा स्पिनिंग एण्ड विविंग नाम देकर चलाया। आपने सन् १८७१ में ताता एण्डको नामक एक व्यवसायिक कम्पनीकी स्थापनाकी और लंदन, हांगकाग, शंघाई, याकोहामा, कोबी, पेकिंग,पेरिस, न्यूयार्क आदि संसारके कितनेही व्यवसाई केन्द्रोंमें उसकी शाखाएं खोलीं। इसके पश्चात् विलायतके कई नये अनुभवोंके साथ आपने नागपुरमें सेंट्रल इंडियन स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी खोलकर १ जनवरी सन् १८७७ के दिन प्रसिद्ध एम्प्रेस मिलकी स्थापना की। इस मिलमें आपको आशातीत सफलता हुई। सन् १९११ के अन्ततक इस कम्पनीने २६३४१००७) रु० मुनाफेमें बांटे।

सन् १८८७ में आपने लिश्विटरसे कुरलाके धर्मसी मिलसको खरीद लिया और उसमें कई नये यंत्र लगाकर इसे चलाया। इसने भी प्रांतकी उन्नतिशील मिलोंमें नाम पाया। ताता महोदयने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने बारीक सूत कातनेका लिये सबसे पहले मिश्रके कपासकी खेती करानेका इस देशमें उद्योग किया और महीन माल तैयार कराया।

बम्बईका पता पो०बा० नंबर १६८ है। और विलायतका पता ७१ विंटवर्थ स्ट्रीट मैंचेस्टर है। इसके अतिरिक्त बम्बई इण्डियन ऊलन मील कंपनी लिमिटेड और धरमसी मुरारजी ऊलन मील ये दो मिलें और हैं।

लोहेके कारखाने

(१) गहननजी० ओ० एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकलमें है। यहां पर लोहा गलाया जाता है और ढलाईका काम होता है। यह कम्पनी इंजनियरिङ्गसे सम्बन्ध रखने वाला सामान तैय्यार करती है।

(२) सी० डी केरावाला एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना चिंचपोकली परेलमें है। यहां लोहा तथा पीतलकी ढलाईका काम होता है, इसके मालिक हैं मि० सी० डी० केरा वाला। तारका पता है "मशनिरी" machnery।

(३) करोनेशन आयर्न वर्कस—इसका कारखाना गिल्डर स्ट्रीट लेमिंगटन रोड पर है। यहां पर लोहे की ढलाईका काम होता है। इस कम्पनीमें मि० गफूर मेहर अली, मि० जाफर मेहर अली आदि व्यक्ति भागीदार हैं।

(४) एम्प्रेस आयर्न एण्ड ब्रास वर्कस—इसका कारखाना परेलमें है। यहां पर लोहा और पीतलकी ढलाईका काम होता है। इसके मालिक हैं बरजोरजी पेस्तनजी एण्ड सन्स।

(५) गार्लिक एण्डको—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकल पर है। इस कम्पनीमें इंजनियरिङ्ग तथा लोहेकी ढलाईका काम होता है। इसकी एक ब्रँच ऑफिस नरकती मार्केट अहमदाबादमें है। इसके पास नीचे लिखे विदेशी कारखानोंकी एजंसियां हैं।

(१) श्यँगुस एण्ड को लिमिटेड सेनेटरी इन्जिनियर ग्लासगो।
(२) सी. एफ. विल्सन एण्ड को ऑइल एंजिन मेकर एवर्डीन।
(३) ब्रिज एण्ड आयर्न वर्क शिकागो।
(४) स्टेंडर्ड मेटल विंडोस कम्पनी मान्चेस्टर

इस कम्पनीका तारका पता गार्लिक (Garlik) है।

(६) मार्शल सन्स एण्ड कम्पनी लिमिटेड—इसका कारखाना मझगांवमें है। तथा ऑफिस विलियम बिल्डिङ्ग बेलार्ड स्टेट पर है। इसकी रजिस्टर्ड पूंजी १० लाखकी है। यह पूंजी १००) प्रति शेयरके हिसाबसे वसूल करली गई है। इसके निम्न लिखित डायरेक्टर हैं।

(१) सर लल्लूभाई सामलदास मेहता, सी० आई० ई०
(२ माधवजी डी० ठाकरसी
(३) एच० पी० मिस्त्री
(४) [illegible]चंद हीराचंद

यहांसे १९२४ में आप वापिस लौट आये, और दिनशा मानेकजी पेटिट एण्ड सन्स काम करने लगे। आजकल आप स्वयं अपनी देख-रेखमें मिलोंका संचालन कर रहे हैं। परिवारमें आप बड़े होनहार व्यक्ति मालूम होते हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स कंपनी, मानेकजी पेटिट मिल्स, दीनशा पेटिट मिल्स और जी पेटिट मिलसकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय पहले दिया जा चुका है।

नवरोजी नसरवानजी वाडिया एण्ड सन्स

१—नवरोजी नसरवानजी वाडिया सी० आई० ई०—उपरोक्त फर्मके आप जन्मदाता हैं। आपका जन्म सन् १८४९ में हुआ। आप बम्बईके मिल व्यवसायको उन्नतिपर लानेवाले मुख्य व्यवसायी थे। सन् १८७० में आप बम्बईकी एल्बर्ट मिलसके तथा सन् १८७४ में मानेकजी पेटिट मिलसके मैनेजर हुए। सन १८७८ में आपने नवरोजी वाड़िया एण्ड सन्स नामक स्वतन्त्र कम्पनीकी स्थापना की। यन्त्रकलामें आप बड़े प्रवीण थे। आपने नेशनल मिल, नाड़ियाद मिल, ई० डी० सासुन मिल, डेविड सासुन मिल, करीमभाई मिल, वाड़िया मिल, आदि कई मिलोंके डिजाइन तैयार करवाये। सन् १८८४ में आपने मानेकजी पेटिट मिलके लिए बहुत बड़ा यन्त्र बनवाया। सन् १८८० में आपने विलियम रोड़के साथ माहिममें एक रंगका कारखाना खोला। आपने टैक्सटाइल और सेंचुरी मिलका भी आयोजन किया था।

(२) सी० एन० वाड़िया—आप नवरोजी नसरवानजीके पुत्र हैं। सेंचुरी मिलके आप एजण्ट तथा वाड़िया एण्ड को० के आप हिस्सेदार हैं। बम्बईकी मिल मालिकोंकी सभाके आप एक जीवित कार्य्यकर्ता हैं। आप सन् १९१८ में इसके प्रमुख रहे थे। इस संस्थाकी ओरसे आप सन १९२४ से २६ तक बम्बई कौंसिलके निर्वाचित सदस्य रहे।

(३) सर नेस वाड़िया के० बी० ई०, सी० आई० ई०, एम० आइ० एम० ई०—आप नवरोजी नसरवानजी वाड़ियाके द्वितीय पुत्र हैं। आप एक अत्यन्त सफल मिल व्यवसायी हैं। सन १९२५ में आप मिल आनर्स एसोसियेशनके प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप मजदूरोंके हित और स्वास्थ्यकी ओर अत्यन्त दयापूर्ण दृष्टि रखनेवाले मिल ओनर हैं। आपने अपने पिताकी स्मृतिमें ११ लाख रुपयेका दान दे मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंके लिए एक सूतिकागृह बनवाया है।

यह फर्म बाम्बे डाइंग, स्प्रिंग और टैक्सटाइल इन तीन मिलोंकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विलायतके चार मशहूर कारखानोंकी एजेंसियां भी इसके पास हैं।

बम्बईका पता पो०बा० नंबर १६८ है। और विलायतका पता ७३ विंटवर्थ स्ट्रीट मेंचेस्टर है। इसके अतिरिक्त बम्बई इण्डियन ऊलन मील कंपनी लिमिटेड और धरमसी मुरारजी ऊलन मील ये दो मिलें और है।

लोहेके कारखाने

(१) गहगनजी० सो० एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकलमें है। यहां पर लोहा गलाया जाता है और ढलाईका काम होता है। यह कम्पनी इंजनियरिङ्गसे सम्बन्ध रखने वाला सामान तैय्यार करती है।

(२) सी० डी केरावाला एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना चिंचपोकली परेलमें है। यहां लोहा तथा पीतलकी ढलाईका काम होता है, इसके मालिक हैं मि० सी० डी० केरा वाला। तारका पता है "मशनिरी" machinery।

(३) कारोनेशन आयर्न वर्कस—इसका कारखाना गिल्डर स्ट्रीट लेमिंगटन रोड पर है। यहां पर लोहे की ढलाईका काम होता है। इस कम्पनीमें मि० गफूर मेहर अली, मि० जाफर मेहर अली आदि व्यक्ति भागीदार हैं।

(४) एम्प्रेस आयर्न एण्ड ब्रास वर्कस—इसका कारखाना परेलमें है। यहां पर लोहा और पीतलकी ढलाईका काम होता है। इसके मालिक हैं बरजोरजी पेस्तनजी एण्ड सन्स।

(५) गार्लिक एण्डको—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकल पर है। इस कम्पनीमें इंजनियरिङ्ग तथा लोहेकी ढलाईका काम होता है। इसकी एक ब्रेंच ऑफिस मस्कती मार्केट अहमदाबादमें है। इसके पास नीचे लिखे विदेशी कारखानोंकी एजंसियां हैं।

(१) ट्वॅग्स एण्ड को लिमिटेड सेनेटरी इञ्जिनियर ग्लासगो।
(२) सी. एफ. विल्सन एण्ड को ऑइल एञ्जिन मेकर एवर्डीन।
(३) ग्रिज एण्ड आयर्न वर्क शिकागो।
(४) स्टेंडर्ड मेटल विंडोस कम्पनी ग्राम्बीज

इस कम्पनीका तारका पता गार्लिक (Garlik) है।

(६) मार्सेंड प्राइस एण्डकम्पनी लिमिटेड—इसका कारखाना मजगांवमें हैं। तथा ऑफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग वेलार्ड स्टेट पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। यह पूंजी १००) प्रति शेअरके हिसाबसे वसूल करली गई है। इसके निम्न लिखित डायरेक्टर हैं।

(१) सर लल्लूभाई सामलदास कैटी, सी० आई० ई०
(२ माधवजी डी० ठाकरसी
(३) एच० पी० गिब्स
(४) घालचंद हीराचंद

वहांसे १९२४ में आप वापिस लौट आये, और दिनशा मानेकजी पेटिट एण्ड सन्स कंपनी काम करने लगे। आजकल आप स्वयं अपनी देख-रेखमें मिलोंका संचालन कर रहे हैं। पेटिट परिवारमें आप बड़े होनहार व्यक्ति मालूम होते हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स कंपनी, मानेकजी पेटिट मिल्स, दीनशा पेटिट मिल्स और धंमनजी पेटिट मिलसकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय पहले दिया जा चुका है।

नवरोजी नसरवानजी वाडिया एण्ड सन्स

१—नवरोजी नसरवानजी वाडिया सी० आई० ई०—उपरोक्त फर्मके आप जन्मदाता हैं। आपका जन्म सन् १८४६ में हुआ। आप बम्बईके मिल व्यवसायकी उन्नतिपर लानेवाले सुफल व्यवसायी थे। सन् १८७० में आप बम्बईकी एम्परर मिलसके तथा सन् १८७४ में मानेकजी पेटिट मिलसके मैनेजर हुए। सन १८७८ में आपने नवरोजी वाड़िया एण्ड सन्स नामक स्वतन्त्र कम्पनीकी स्थापना की। यन्त्रकलामें आप बड़े प्रवीण थे। आपने नेशनल मिल, नाड़ियाद मिल, ई० डी० सासुन मिल, डेविड सासुन मिल, करीमभाई मिल, वाड़िया मिल, आदि कई मिलोंके डिजाइन तैयार करवाये। सन् १८८४ में आपने मानेकजी पेटिट मिलके लिए बहुत बड़ा यन्त्र बनवाया। सन् १८८० में आपने विलियम रोड़के साथ मदिसमें एक रंगका कारखाना खोला। आपने टैक्सटाइल और सेंचुरी मिलका भी आयोजन किया था।

(२) सी० एन० वाड़िया—आप नवरोजी नसरवानजीके पुत्र हैं। सेंचुरी मिलके आप एजण्ट तथा वाड़िया एण्ड को० के आप हिस्सेदार हैं। बम्बईकी मिल मालिकोंकी सभाके आप एक भूतपूर्व कार्यकर्ता हैं। आप सन् १९१८ में इसके प्रमुख रहे थे। इस संस्थाकी ओरसे आप सन १९२४ से २६ तक बम्बई कौंसिलके निर्वाचित सदस्य रहे।

(३) सर नेस ब० वेडिया के० बी० ई०, सी० आई० ई०, एम० आइ० एम० ई०—आप नवरोजी नसरवानजी वाड़ियाके द्वितीय पुत्र हैं। आप एक अत्यन्त सफल मिल व्यवसायी हैं। सन १९२५ में आप मिल ओनर्स एसोसियेशनके प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप मजदूरोंके हित और स्वास्थ्यकी ओर अत्यन्त दयापूर्ण दृष्टि रखनेवाले मिल ओनर हैं। आपने अपने पिताकी स्मृतिमें ११ लाख रुपयेका दान दे मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंके लिए एक सूतिकागृह बनवाया है।

यह फर्म बाम्बे डाइंग, स्प्रिंग और टैक्सटाइल इन तीन मिलोंकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विलायतके चार मशहूर कारखानोंकी एजेन्सियां भी इसके पास हैं।

वहांसे १९२४ में आप वापिस लौट आये, और दिनशा मानेकजी पेटिट एण्ड सन्स कंपनीमें काम करने लगे। आजकल आप स्वयं अपनी देख-रेखमें मिलोंका संचालन कर रहे हैं। पेटिट परिवारमें आप बड़े होनहार व्यक्ति मालूम होते हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स कंपनी, मानेकजी पेटिट मिल्स, दीनशा पेटिट मिल्स और बमनजी पेटिट मिल्सकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय पहले दिया जा चुका है।

नवरोजी नसरवानजी वाडिया एण्ड सन्स

१—नवरोजी नसरवानजी वाडिया सी० आई० ई०—उपरोक्त फर्मके आप जन्मदाता हैं। आपका जन्म सन् १८४६ में हुआ। आप बम्बईके मिल व्यवसायको उन्नतिपर लानेवाले सुफल व्यवसायी थे। सन् १८७० में आप बम्बईकी एम्परर्ट मिलसके तथा सन् १८७४ में मानेकजी पेटिट मिलसके मैनेजर हुए। सन १८७८ में आपने नवरोजी वाड़िया एण्ड सन्स नामक स्वतन्त्र कम्पनीकी स्थापना की। यन्त्रकलामें आप बड़े प्रवीण थे। आपने नेशनल मिल, नाड़ियाद मिल, इ० डी० सासुन मिल, डेविड सासुन मिल, करीमभाई मिल, वाड़िया मिल, आदि कई मिलोंके डिजाइन तैयार करवाये। सन् १८८४ में आपने मानेकजी पेटिट मिलके लिए बहुत बड़ा यन्त्र बनवाया। सन् १८८० में आपने विलियम रोड़के साथ माहिममें एक रंगका कारखाना खोला। आपने टेक्सटाइल और सेंचुरी मिलका भी आयोजन किया था।

(२) सी० एन० वाड़िया – आप नवरोजी नसरवानजीके पुत्र हैं। सेंचुरी मिलके आप एजण्ट तथा वाड़िया एण्ड को० के आप हिस्सेदार हैं। बम्बईकी मिल मालिकोंकी सभाके आप एक जीवित कार्य्यकर्ता हैं। आप सन् १९१८ में इसके प्रमुख रहे थे। इस संस्थाकी ओरसे आप सन १९२४ से २६ तक बम्बई कौंसिलके निर्वाचित सदस्य रहे।

(३) सर नेस वाड़िया के० बी० ई०, सी० आई० ई०, एम० आइ० एम० ई०—आप नवरोजी नसरवानजी वाड़ियाके द्वितीय पुत्र हैं। आप एक अत्यन्त सफल मिल व्यवसायी हैं। सन १९२५ में आप मिल ओनर्स एसोसियेशनके प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप मजदूरोंके हित और स्वास्थ्यकी ओर अत्यन्त दयापूर्ण दृष्टि रखनेवाले मिल ओनर हैं। आपने अपने पिताकी स्मृतिमें १६ लाख रुपयेका दान दे मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंके लिए एक सूतिकागृह बनवाया है।

यह फर्म बाम्बे डाईंग, स्प्रिंग और टैक्सटाइल इन तीन मिलोंकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विलायतके चार मशहूर कारखानोंकी एजेन्सियां भी इसके पास हैं।

एक्जिक्यूटिव्ह कौंसिलकी मेम्बरी भी बड़ी योग्यता और बुद्धिमानीके साथ की थी। आपको सन् १९२७ में के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। यह फर्म कई मिलोंकी मैनेजिंग एजण्ट है।

करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स

भारतके कपड़ेके व्यवसायी और मिल मालिकोंमें सेठ करीम भाई इब्राहिमका स्थान बहुत ऊँचा है। इस फर्मकी स्थापना सेठ करीमभाई इब्राहिमने १६ वर्षकी आयुमें की थी। आपके पिताका नाम सेठ इब्राहिम भाई पबानी था। ये अफ्रिकाके जंजीबार नामक बन्दर और बम्बईके बीच निजकी नावोंमें माल लादकर लाते और व्यवसाय करते थे। सन् १८५५ में सेठ इब्राहिम भाई पबानीका देहावसान होगया। अपने पिताके देहावसानके पश्चात् सर करीम भाईने उस व्यवसायको छोड़कर सुधरे हुए तरीकेसे पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करना आरम्भ किया, एवं आपने १६ वर्षकी उम्रमें ही स्वयं पूर्वीय देशोंकी यात्रा की। उस समय सुदूर चीन आदि देशोंके साथ भारत अच्छा व्यवसाय होता था। इसलिये सेठ करीम भाईने इस ओर अपनी पूर्ण शक्ति लगानेका निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् आपने अपने पिताश्रीके नामसे सन् १८५७ में हांगकांगके अंदर एक फर्म खोली। इसके बाद आपने शंघाई, कोबी और सिंगापुरमें भी अपनी फर्म स्थापितकी, एवं कलकत्तेमें भी अपने नामसे एक शाखा खोली। सेठ करीम भाईने अपनी व्यवसायिक योग्यताके बलपर व्यापारको खूब तरक्की दी और थोड़े ही समयमें यह फर्म पूर्वीय देशोंसे व्यवसाय करनेवाली फर्मोंमें बहुत ऊँची मानी जाने लगी। उस समय यह फर्म अफीम, रूई, सूत, रेशम, चाय आदि वस्तुओंका व्यवसाय करती थी।

बहुत समय तक सर करीमभाई स्वयं सब प्रबन्ध देखते रहे पश्चात् आपने अपने सुपुत्र मोहम्मद भाई तथा फजलभाईको भी सन् १८८१ से साथ ले लिये कुछ समय बाद आपके तीसरे पुत्र हुसेन भाई भी एक हिस्सेदारके रूपमें फर्ममें काम करने लगे और अन्तमें सर करीमभाईके शेष चारों पुत्र सेठ अहमदभाई, सेठ रहीमतुल्ला भाई, सेठ हबीब, भाई और सेठ इस्माइल भाई भी फर्मके हिस्सेदार बनाये गये और अन्तमें फर्मका सारा कारोबार इन्हीं सब भाइयोंके हाथमें आया। सर करीमभाईने अपने देहावसानके समय अपनी फैमिलीका बहुत सुप्रबन्ध कर दिया था।

सर करीमभाईने पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करते हुए देशी उद्योग धन्धेकी ओर भी खूब ध्यान दिया। पुराने प्रिन्स आफ वेल्स मिलकी मैनेजिङ्ग एजेंसी जब आपने अपने हाथोंमें ली, तबसे आपने रूईके व्यापारको विशेष बढ़ाया। आपने सन् १८८८ में करीम भाई इब्राहिम मिल्स कं० लि० की स्थापना की। इस मिलने इतनी अधिक उन्नतिकी, कि उसकी आमदसे मोहम्मद भाई मिल नामक एक मिल और खोली गयी। इसके बाद सर करीमभाईने इब्राहिमभाई पबानी मिल्स

यहांका नमक कलकत्ता, चटगांव, सिंगापुर और रंगूनको भेजा जाता है। इस कंपनीने जापानमें कोयला लादनेके लिये एक गोदी भी बनवाई है।

बम्बई फर्मके व्यवसायकी वृद्धि पुरंदर और जापानकी शाखाके व्यापारसे हुई। इस कंपनी के वर्तमान मालिक हैं (१) अब्दुला भाई लालजी (२) फजल भाई जुम्मा भाई लालजी (३) इस्माइल भाई ए० लालजी (४) नासर भाई ए० लालजी (५) हुसेन भाई ए० लालजी (६) जाफर भाई ए० लालजी

इस फर्मकी शाखाएं, कलकत्ता, चटगांव, अदन, बरमा आदि कई प्रसिद्ध बन्दरोंमें हैं। यह फर्म जनरल मर्चेंट, गवर्नमेंट कंट्राक्टर, मिल एण्ड इंस्युरेन्स एजेंटका काम करती है। इस कंपनीके तारके पते 'Prim,' security 'Voteran' है।

भाटिया और गुजराती मिल ऑनर्स

मेसर्स खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित एवं प्रतापी फर्मकी, स्थापना सेठ खटाऊ मकनजीने की। आपका जन्म कच्छ प्रान्तके टेरा नामक स्थानमें हुआ था। आप बाल्यावस्थासे ही बम्बईमें आगये। एवं अपने मामा सेठ द्वारिकादास वसनजीकी प्रसिद्ध फर्म जीवराज बालू कम्पनीमें कार्य करने लगे। अल्पवयमें ही आपने अपनी व्यवसायिक दूरदर्शिताका परिचय दिया, व थोड़े ही समय पश्चात् आप उस कम्पनीके भागीदार बनाये गये। इस कम्पनीने अपना व्यवसाय कुमटामें खोला। कुछ समय बाद बम्बई दूकानका सारा प्रबंध आपके हाथमें आ गया।

अमेरिकाकी सिविल वारके (गृहयुद्ध) छिड़ते ही तरुण वय सेठ खटाऊको अपने व्यवसाय सम्बन्धी विशेष गुणोंके प्रगट करनेका सुअवसर प्राप्त हुआ। अमेरिकाके बंदरोंका बंद होना था, कि इग्लैंडके लंकाशायर नामक केन्द्रमें रुईका भयंकर अकाल पड़ गया। कितने ही कारखाने बंद हो गये। बाकी कारखानोंके चलानेके लिये भारतसे आनेवाली रुईपर निर्भर रहना पड़ा। फल यह हुआ कि भारतमें भी रुईका बाजार बहुत ऊँचा हो गया। जोरकी सट्टेबाजीने बाजारमें अपना अच्छा दबदबा जमा दिया। सेठ खटाऊ मकनजी उन दूरदर्शी नवयुवकोंमेंसे थे, जिन्होंने इस प्रकार सट्टेबाजीकी अनिष्टकारी आमदसे दूर रहनेमें ही नीतिमत्ता समझी। फल यह हुआ कि यहांके व्यापारिक समाजमें आपकी प्रतिष्ठा दिनोंदिन अधिकाधिक होने लगी, एवं अपने समयके आप माननीय व्यवसायी समझे जाने लगे। आपका देहावसान सन १८७६ में हुआ।

आपके देहावसानके पश्चात् व्यवसायका संचालन-भार आपके छोटे भाई सेठ जयराज मकनजीने लिया।

(२) दिल्ली—मेसर्स करीम भाई इब्राहीम (T. A. mill office)
(३) इन्दौर—मे० करीम भाई इब्राहीम (T. A. [illegible])
(४) कलकत्ता—एजंट सुखदेवदास रामप्रसाद (T. A. Sitapal)
(५) अहमदाबाद—एजेंट सीताराम परमानन्द (T.A mill office)
(६) कानपुर—एजेंट-गंगानारायण पन्नालाल (T. A Durgaji)

इसका हेड ऑफिस- १२।१४ आउट्रम रोड फोर्ट, बम्बई है।

डेविड सर सासून बेरोनेट

आपका जन्म सन् १८४८ में हुआ। आप जेविश जातिके सज्जन थे। बम्बईके जेविश समाजमें आप बड़े उन्नतिशील तथा कुशल व्यापारी हुए हैं। बंबई प्रेसिडेन्सीके उद्योग धंधे और व्यापारकी तरक्कीमें आप एक स्वतंत्र व्यक्तिकी हैसियतसे सम्मानित हुए थे। बम्बईकी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके आप करीब २० वर्ष तक अग्रगण्य मेम्बर तथा सन् १९२१, २२ में उसके सफल सभापति रहे थे। इंडिया बैंक आदि और भी कई व्यापारिक संस्थाओं तथा प्रजा-हितमें आपका अच्छा हाथ रहा है। आप कई संस्थाओंके डायरेक्टर तथा प्रेसिडेन्ट रहे हैं। इसके अतिरिक्त सन् १९०५ में आप मिल-आनर्स एसोसिएशनके सभापति, बांबे इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके मेम्बर और बंबई लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके मेम्बर रहे हैं। भारत सरकार गवर्नर जनरलकी कौंसिलके भी आप मेम्बर रहे हैं। आपको सन् १९०५ में भारत सरकारने नाईट (Knight) की पदवीसे सम्मानित किया। साथ ही सन् १९२२ में आप के० सी० एस० आई भी हो गये। आपको सन् १९०१ में बेरोनेटका खिताब भी मिल गया। कहनेका मतलब यह है कि आपका व्यापारमें तथा गवर्नमेंटमें बहुत अच्छा सम्मान रहा है। आप कई मिलोंके डायरेक्टर तथा मैनेजिंग एजेंट हैं। जिनका परिचय प्रथम दिया जा चुका है।

ताता सन्स लिमिटेड

भारतके आधुनिक औद्योगिक विकासमें, कलाकौशलकी उन्नतिमें तथा मिल व्यवसायके इतिहासमें ताता परिवारका बहुत ऊंचा स्थान है। श्रीयुत जमशेदजी नसरवानजी ताताका नाम भारतके व्यवसायिक इतिहासमें प्रकाशमान नक्षत्रकी तरह चमक रहा है। आपने हिन्दुस्थानकी कला और कारीगरीमें, उद्योग और आर्थिक उन्नतिमें एक नया जीवन फूंक दिया था। आपका जन्म सन् १८३९ में बड़ौदा राज्यके नौसारी नामक ग्राममें हुआ था। आपके पिता एक बहुत साधारण स्थितिके पारसी पुरोहित थे। श्रीयुत जमशेदजीकी शिक्षा बम्बईके एलफिन्स्टन कालेजमें

उपरोक्त घटनाएं ताताके जीवनकी प्रस्तावना मात्र हैं। इस महा पुरुषके जीवन-नाटकके तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण और मनोरञ्जक अंक और हैं। (१) लोहेका कारखाना (२) बिजलीघर और (३) रिसर्च इन्स्टीट्यूट। ताता महोदयका बहुत दिनोंसे विचार था कि इस देशमें बड़े स्केलपर लोहेका कारखाना खोला जाय। बहुत तहकीकात और जांच करनेके पश्चात् पता चला कि मयूर-भंजमें बहुत लोहा निकलनेकी संभावना है। इसपर आपने सब जगह पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। उसमें मयूर-भंज रियासतने सहायता देनेका वचन दिया, बङ्गाल नागपुर रेलवेने किराया कम करनेका वायदा किया। भारत सरकारने प्रतिवर्ष २० हजार टन माल खरीदनेकी जिम्मेदारी ली। सन् १९०७ ई० में २३१००००० की पूंजीसे टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी स्थापित हुई, मगर खेद है कि आप अपने जीवनमें इस कम्पनीको न देख सके। क्योंकि इसकी स्थापनाके पूर्व ही सन् १९०४ में आपका देहान्त हो गया था। सन्तोषकी बात है कि आपके पश्चात् आपके सुयोग्य पुत्रोंने इस कार्य्यको बहुत सफलताके साथ चलाया। यह कारखाना सारे भारतवर्षमें एकही है। जापान, इङ्गलैण्ड, इटली, फिलीपाइन आदि देश और हिन्दुस्थानकी रेलवे कम्पनियां इस कारखानेका माल बड़ी प्रसन्नतासे खरीदती हैं। यह इस देशके लिए कम गौरवकी बात नहीं है।

टाटा महोदयके जीवनका दूसरा महत्वपूर्ण काम उनके द्वारा चलाया हुआ ताता इलेक्ट्रिक वर्क्स है। आपने देखा कि पश्चिमीय घाटमें बहुत अधिक बरसात होती है और बरसातका वह सब पानी बहकर व्यर्थ समुद्रके खारे पानीमें मिल जाता है। कोई उसका उपयोग लेनेवाला नहीं है। प्रकृतिकी इस वृहत् शक्तिका उपयोग करनेके लिए मिस्टर ताताने प्रसिद्ध इञ्जीनियर मि० डेविड गास्टिंगसे परामर्श किया। कई वर्षोंतक आप इस विषयमें विचार करते रहे। अन्तमें सन् १९०३ में आपने इस कार्य्यको करनेका निश्चय कर लिया। मगर सन् १९०४ में आपका देहान्त हो जानेसे इसे भी आप कार्य्यरूपमें न देख सके। आपके पश्चात् आपके पुत्रोंने सन् १९११ में इस कार-खानेकी इमारतकी नींव डाली और सन् १९१५ में इस वृहत् कार्य्यका आरम्भ कई करोड़की पूंजीसे आरम्भ हो गया। पानी इकट्ठा करनेका इतना बड़ा कारोबार शायद दुनियामें दूसरा नहीं है। इस कारखानेमें पीनेसे इतना पानी निकलता है जितना टेम्स नदीमें नव महीनेमें बहता है। इस कार-खानेसे निकलनेवाली बिजलीकी शक्तिके द्वारा बम्बईकी कई मिलें चल रही हैं। इसके सिवाय पीनेके पानीके अतिरिक्त इस कारखानेसे पानीसे तीन चालीस हजार एकड़ जमीन सींची जा सकती है। इस कारखानेसे लगभग एक लाख बीस हजार घोड़ोंकी शक्तिकी (Horse power) बिजली पैदा होती है। जिसमेंसे ३०००० घोड़ोंकी ताकतसे बम्बईकी ३० मिलें चलती हैं।

टाटा महोदयका ध्यान देशके सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी बहुत था। उन्होंने भारतीय नवयुवकोंको उच्चशिक्षा प्राप्त करनेके लिए विदेश भेजने [illegible] सहायताके रूपमें

अपने पिताको व्यापारमें सहायता प्रदान करते हैं। तथा आप एक प्रसिद्ध चित्रकार भी हैं। आपके चित्र बीसवीं सदीमें निकला करते हैं।

आँ० सर मनमोहन दास रामजी के० टी०

बम्बई शहरमें विरलाही कोई ऐसा व्यक्ति निकलेगा जो कि आपसे परिचित न हो। ऑनरेबल सर मनमोहन दास रामजीका जन्म सन् १८५७ ईस्वीमें बम्बई नगरमें हुआ, प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश करते ही ईश्वर प्रदत्त दैवी गुणोंने आप की ख्याति व्यवसायिक समाजमें फैला दी। थोड़े ही समयमें आपने अपनेको चतुर मिलमालिक एवं कुशल व्यवसायी सिद्ध किया। फल यह हुआ कि व्यवसायी संस्थाओंने आपको अपनी ओर आमंत्रित किया, एक एक करके आप सभी बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओंमें सम्मिलित हुए। आप बम्बईकी बड़ीसे बड़ी व्यापारिक संस्था इण्डियन मर्चेंट चेम्बरके स्थापकोंमें हैं एवं उसके १९०७ से १९१३ तक और १९२४में सभापतिका स्थान सुशोभित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त मिल ऑनर्स एसोसियेशन इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, पीस गुड्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन, आदि कई व्यापारिक संस्थाओंके आप प्रधान कार्यकर्त्ता, अथवा जीवन स्वरूप हैं। बम्बईके कापड़ बाजारकी मंडलीके आप सन् १८९१से सभापति हैं, इससे आपकी लोक प्रियताका पता लगता है।

आप भारतीय औद्योगिक उत्कर्षके कट्टर पक्षपाती हैं। भारतीय व्यवसाइयों एवं कारीगरोंकी ओरसे उनके हितके विरोधियोंसे आपने अच्छी लड़ाई की है। आपको भारत सरकारने सर नाइटकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप कौंसिल आफ स्टेटके करीब १५ वर्षोंसे मेम्बर हैं।

आपका जीवनकाल औद्योगिक दृष्टिसे बड़ा आदर्श रहा है। सरकार द्वारा नियोजित कितनी ही कमेटियोंमें आपने लोकोपकारी योजनाओंका सूत्रपात कराया है। आप प्राचीन विचारोंके कट्टर सनातनधर्मी सज्जन हैं।

आप कैसरे हिन्द हिन्दुस्तान और इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग नामक मिलोंके डायरेक्टर और मैनेजिङ्ग एजंटोंके भागीदार हैं।

इस समय आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे श्री नारायण दास, श्री कृष्णदास, और श्री भगवानदास है।

मूलजीजेठा मारकीटमें आपकी कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित फर्मके स्थापक सेठ मुरारजी गोकुलदास सी० आई० ई हैं। आपका जन्म सन् १८३४ में हुआ था। आपके कुटुम्बका आदि निवास स्थान पोरबंदर है। आपके पिताजीका नाम सेठ

र दिनशा माणेकजी पेटिट (द्वितीय बैरोनेट)

श्रीमान् एन० एन० वाडिया

सर फिरोज मेहता के० टी०

सर शापुरजी बरजोरजी भरोचा के० टी०

सर दिनशा माणेकजी पेटिट (द्वितीय बेरोनेट)

श्रीमान् एन० एन० वाड़िया

ऑ० सर फिरोज सेठना के० टी०

सर शापुरजी बरजोरजी भरूचा के० टी०

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे०पी०(२)ऑनरेबल सेठ खनसी धरमसी मुरारजी, (३) सेठ त्रिकमदास धरमसी मुरारजी एवं (४) सेठ शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० से बम्बईका शिक्षित समाज भलीप्रकार परिचित है। बम्बईके व्यवसायिक भवनके आप स्तंभ-स्वरूप हैं। भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिके लिये आपके हृदयमें गहरी लगन है। आपहीके परिश्रमसे सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी नामक एकमात्र बड़ी भारतीय जहाजी कम्पनी स्थापित हुई है वर्तमानमें उसके मैनेजिंग एजंट आपही हैं। *भारतीय युवकोंको जहाजी विद्या सिखानेके लिये गवर्नमेंट द्वारा १९२६में खोले गये 'डफरिन' नामक जहाजके लिए आपने अनवरत परिश्रम उठाया है। आप टाटाके हाइड्रो, स्टील, टाटा मिल आदि कारखानोंके डायरेक्टर हैं। १९११ में आपको सरकारने शरीफके पदसे सम्मानित किया है। सन् १९१२ के देहली दरबार (कोरोनेशन दरबार) की कमिटीपर आप सक्रेटरी निर्वाचित हुए थे। आपने १९१३में विलायत यात्रा की, एवं अभी भी सन् १९२८की जिनेवाकी ११ वीं लेबर कान्फ्रेन्समें गवर्नमेंट ऑफ इण्डियाके प्रतिनिधि होकर गये हुए हैं। आप कई मिल्सएवं इन्स्यूरेंस कम्पनीजके डायरेक्टर हैं। आपने बम्बईका प्रसिद्ध मुरारजी गोकुलदास मारकीट सन् १९०८में बंधवाया है। आपके सुपुत्र सेठ शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। आपको देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इसप्रकार है।

(१) मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी सुदामा हाउस बेलार्ड स्टेट फोर्ट बम्बई

(२) नरोत्तम मुरारजी एण्डको, ८८बिशप गेट स्ट्रीट, लंदन ई सी. ३ एक्सपोर्टर, इंपोर्टर।

(३) आपके दोनों मिलोंकी हायराफ, मुरारजी गोकुलदास मारकीट कालबादेवी पर है इसके अतिरिक्त मां०धामजी, मुरारजीका धरमसी मुरारजी केमिकल वर्क्स भी है।

मेसर्स मूलजी जेठाभाई कम्पनी

इस मशहूर फर्मका आरम्भ सेठ मूलजी जेठाभाईके हाथोंसे सन् १८३४ ईस्वीमें हुआ। प्रारम्भमें इस फर्मने बहुत छोटे रूपमें व्यापार करना आरंभ किया था। उस समय सेठ मूलजी भाई [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) व मलाबार प्रान्तमें पैदा होने वाली वस्तुओंका व्यापार करते थे। आप बड़े व्यापारिक ढंगके ज्ञाता एवं चतुर पुरुष थे। थोड़े ही समयमें आपका व्यापार खूब चल निकला, जिसकी वजहसे आपको कामपर और [illegible] पड़े। २० वर्ष तक इसी प्रकार लगातार आप व्यापार करते रहे। बादमें आपने [illegible] एक कम्पनी स्थापित की। इस फर्मका सब माल कोचीनमें इकट्ठा किया जाता था, एवं स्टीमरोंके द्वारा करांची और बम्बई भेजा जाता था।

* इसका वर्णन बम्बई के [illegible] विभागमें दिया जा चुका है।

ऑनरेबल सर फ़िरोज सेठना के० टी०

सर फिरोज सेठना एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका सम्बन्ध कई प्रकारके आन्दोलनोंसे रहा है आपने बहुतसे विभागोंमें बहुत ही बहु मूल्य सेवाएं की हैं। आपका जन्म स० १८६६ ईस्वीमें हुआ था। आप व्यवसायी कुलके एक विख्यात व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवनको बीमा कम्पनियों, बैंकों, रुईकी मिलोंकी कम्पनियों, तथा ज्वाइण्ट स्टॉक (joint stock) के कामोंमें लगाया है। आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरके सभापति, और सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डियाके चेयरमैन थे। आप बम्बईकी पुरानी प्रदर्शिनी, जो हिज मेजेस्टी बादशाहके भारत भ्रमणके समय १९११ में की गई थी, मन्त्री थे। आप बम्बई पोर्टट्रस्ट और सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त आपका म्युनिसपैलिटीके शासनसे भी गहरा सम्बन्ध रहा है। आप १९०७ से कौरपोरेशनके सदस्य हैं और १९११ में स्टैन्डिङ्ग कमिटीके चेयरमैन एवं १९१५ में उसके सभापति रह चुके हैं। आप बहुतसे सार्वजनिक चन्दोंके अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे। प्रिन्स ऑफ वेल्सके स्वागत एवं ड्यूक ऑफ कनाटके स्वागतके लिये जो चन्दे एकत्र किये गये थे उसके आप ही कोषाध्यक्ष थे। चील्डरन लीगका भी फन्ड आपके ही पास रखा गया था। लड़ाईके समयमें, की गई सेवाओंके सम्बन्धमें विशेष परिचय दिखलानेके लिये कमान्डर-इन चीफने बम्बई प्रेसिडेन्सी से १० व्यक्तियोंका नाम उल्लेख किया था जिनमें बम्बई शहरसे केवल आपका ही नाम था। आप स्कीन कमेटीके भी सदस्य थे। आप भारत सरकारकी ओरसे दक्षिण अफ्रिकामें प्रतिनिधि बनाकर १९२६ में भेजे गए थे। १९१६ में आप बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलमें वहांकी सरकार द्वारा निर्वाचित किए गये। इसके पश्चात् १९२१ से ही आप कौन्सिल ऑफ स्टेटके निर्वाचित सदस्य रहे हैं। १९१५ में आपने आनरकी, तथा सन् १९२६ में नाइट हुडकी उपाधि पाई।

सर सापुरजी बरजोरजी भरोंचा

सर सापुरजी बरजोरजी भरोंचा नाइट जे० पी० उन महानुभावोंमेंसे हैं जो साधारण स्थितिसे निकल कर अपने पैरोंके बल उच्चस्थितिमें प्रवेश करते हैं। जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय आपके पिताकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी इस कारण आप ऊंचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त न कर सके और छोटी उमरमें ही आपको व्यापारके अन्दर प्रवेश करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् सूरतके एक प्रसिद्ध जैन गृहस्थ सेठ लखमचन्द मानकचन्दके साथ आपका मिलना हो गया और बम्बईमें आपने लखमचन्द एण्ड सापुरजीके नामसे एक फर्म स्थापित की। यह फर्म बम्बईकी एक प्रतिष्ठित फर्म गिनी जाती है और यहांकी बैंकों, मिलों तथा रुई और शेयर बाजारोंसे बहुत कुछ इसमें व्यापारिक सम्बन्ध रखनेके लिये प्रसिद्ध है सन १८९८ से सर सापुरजीने मि

लिग थे इसलिये व्यापारका सारा भार वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजीभाईकोही उठाना पड़ा। उस समय सेठ मूलजीके भतीजे सेठ वल्लभदासजीने कार्य संचालनमें हाथ बढ़ाया और श्रीधरमसीजीके बालिग होकर कार्य भार गृहण करनेतक आपने व्यापारकी देख मालकी। कुछ समय बाद श्री गोवर्द्धनदासजीने भी व्यापारमें सहयोग लेना आरम्भ किया, जिससे व्यापारमें फिर उन्नति होने लगी। इसी बीचमें सन् १८८९ में सेठ मूलजी भाईका स्वर्गवास हो गया। तथा इस घटनाके १० वर्ष बाद सेठ धरमसी भाईका भी स्वर्गवास हो गया। इस समय सारा कारबार सेठ गोवर्द्धनदासजी ही सम्हालते थे। सन् १९०२ में सेठ गोवर्द्धन दासजीका भी देहान्त हो गया। उस समय आप दोनों भाइयोंके एक एक नाबालिग पुत्र विद्यमान थे। सन् १९०८ ईस्वीमें आपकी सम्पतिका बँटवारा हो गया। तथा सेठ धरमसीजीके पुत्र कृष्णदास मूलजी जेठाके हिस्सेमें मद्रास स्पीनिङ्ग एण्ड विविंग कम्पनी लि० आई, उसे आपने अपने नामसे चलाया और गोवर्द्धन दासजीके पुत्र सेठ चतुर्भुजजीने मूलजी जेठा कम्पनीका काम अपने हाथमें लिया।

खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लि० जिसकी रजिष्ट्री सन् १८७३ में हुई थी, इसके मिल जलगांवमें सात एकड़ भूमिपर बने हुए हैं। इस मिलमें आरंभमें १३ हजार स्पिण्डल्स और २५० लूम्स थे। परन्तु वर्तमानमें २० हजार स्पिण्डल्स तथा ४२५ लूम्स हैं। इस कंपनीका आरंभ पहिले ५ लाखकी पूंजीसे हुआ था पर पीछेसे बढ़ाकर ७लाख ५० हजारकी कर दी गई. मिलमें लगभग ३५० खांडी रुईकी खपत हैं, इसमें से अधिकांश सूतका कपड़ा बुना जाता है, तथा शेषांश सूत बाजारमें बिकता हैं मिलमें धुलाई व रंगाईके स्वतंत्र कारखाने हैं।

सन् १८७४ में जिस न्यू इण्डिया प्रेस कंपनी लिमिटेडकी रजिष्ट्रीकी गई थी, इसकेमेनेजिङ्ग एजंट भी आप ही हैं। उस समय इस कंपनीकी ओरसे बरार प्रान्तके मूर्त्तिजापुर एवं जलगांवमें काटन प्रेस खोले गये थे, परन्तु तबसे व्यापारने अब अधिक उन्नतिकी हैं और आज मूर्त्तिजापुर, नगर देवला, नेरी (पर्व खानदेश) सांकली (पूर्व खानदेश) में इस कंपनीकी जीनिङ्गकी फेक्टरियाँ तथा कारंजा, अकोला, वासिम, बरसी (सोलापुर) और करमला (सोलापुर) में प्रेसिंग फेक्टरियाँ चल रही हैं।

मूलजी जेठा कम्पनीकी ओरसे कपासकी खरीदी तथा बेचवालीका अच्छा व्यापार होता है। कम्पनीने अपना एक एजेंट यूरोपमें भेजकर वहांके विभिन्न देशोंमें अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कराया है।

सेठ चतुर्भुजजी, न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लि० के मेनेजिङ्ग एजेंट हैं। इस बाजारसे लगभग ३ लाख रुपये वार्षिक किराया वसूल होता है। इसके अतिरिक्त मूलजी जेठा कम्पनीकी बम्बई नगरमें एवं बाहर बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति है।

बाम्बे डाइंग स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी द्वारा तैयार किया गया माल बेंचने के लिये मेसर्स चतुर्भुज एण्ड कम्पनीकी स्थापना की गई है।

ऑनरेबल सर फ़िरोज सेठना के० टी०

सर फिरोज सेठना एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका सम्बन्ध कई प्रकारके आन्दोलनोंसे रहा है आपने बहुतसे विभागोंमें बहुत ही बहुमूल्य सेवाएं की हैं। आपका जन्म स० १८६६ ईस्वीमें हुआ था। आप व्यवसायी कुलके एक विख्यात व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवनको बीमा कम्पनियों, बैंकों, रूईकी मिलोंकी कम्पनियों, तथा ज्वाइन्ट स्टॉक (joint stock) के कामोंमें लगाया है। आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरके सभापति, और सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डियाके चेयरमैन थे। आप बम्बईकी पुरानी प्रदर्शिनी, जो हिज मेजेस्टी बादशाहके भारत भ्रमणके समय १९११ में की गई थी, मन्त्री थे। आप बम्बई पोर्टट्रस्ट और सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त आपका म्युनिसपैलिटीके शासनसे भी गहरा सम्बन्ध रहा है। आप १९०७ से कॉरपोरेशनके सदस्य हैं और १९११ में स्टैन्डिङ्ग कमिटीके चेयरमैन एवं १९१५ में उसके सभापति रह चुके हैं। आप बहुतसे सार्वजनिक चन्दोंके अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे। प्रिन्स ऑफ वेल्सके स्वागत एवं ड्यूक ऑफ कनाटके स्वागतके लिये जो चन्दे एकत्र किये गये थे उसके आप ही कोषाध्यक्ष थे। चौल्डरन लीगका भी फन्ड आपके ही पास रखा गया था। लड़ाईके समयमें, की गई सेवाओंके सम्बन्धमें विशेष परिचय दिखलानेके लिये कमान्डर-इन चीफने बम्बई प्रेसिडेन्सी से १० व्यक्तियोंका नाम उल्लेख किया था जिनमें बम्बई शहरसे केवल आपका ही नाम था। आप रकीन कमेटीके भी सदस्य थे। आप भारत सरकारकी ओरसे दक्षिण अफ्रिकामें प्रतिनिधि बनाकर १९२६ में भेजे गए थे। १९१६ में आप बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलमें वहांकी सरकार द्वारा निर्वाचित किए गये। इसके पश्चात् १९२१ से ही आप कौन्सिल ऑफ स्टेटके निर्वाचित सदस्य रहे हैं। १९१६ में आपने आनरकी, तथा सन् १९२६ में नाइट हुडकी उपाधि पाई।

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा नाइट जे० पी० उन महानुभावोंमेंसे हैं जो साधारण स्थितिसे निकल कर अपने पैरोंके बल उच्चस्थितिमें प्रवेश करते हैं। जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय आपके पिताकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी इस कारण आप ऊँचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त न कर सके और छोटी उम्रमें ही आपको व्यापारके अन्दर प्रवेश करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् सूरतके एक प्रसिद्ध जैन गृहस्थ सेठ तलकचन्द मानकचन्दके साथ आपका हिस्सा हो गया और बम्बईमें आपने तलकचन्द एण्ड सापुरजीके नामसे एक फर्म स्थापित की। यह फर्म बम्बईकी एक प्रतिष्ठित फर्म गिनी जाती है और बम्बईकी बैंकों, मिलों तथा रुई और सूतके व्यापारियोंके साथ वृहत रूपमें व्यापारिक सम्बन्ध रखनेके लिये प्रसिद्ध है सन १८९६ से सर सापुरजीने मिल

सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाऊ—सेठ मकनजीके पुत्र सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाऊ, अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके बाद केवल १७ वर्षकी आयुसे ही व्यापारिक कार्मोंमें भाग लेने लगे। आप अपने काका सेठ जयराम मकनजीकी मौजूदगीमें ही खटाऊ मकनजी स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग मिल्स कम्पनी लिमिटेड और थाने युनाइटेड स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी लिमिटेडका कार्य संचालन करने लगे। उपरोक्त खटाऊ मकनजी मिल, आपके पिता श्री सेठ खटाऊने सन् १८५४ में स्थापित की थी।

सेठ मकनजी खटाऊ मोतीका व्यापार भी करते थे, एतदर्थ सेठ गोवर्द्धनदास खटाऊने भी उस व्यापारकी ओर लक्ष दिया। कुछ दिनोंतक आप इस व्यापारको अपने व्यक्तिगत नामसे चलाते रहे। पश्चात् सन् १९०८ में आपने एक संघ बनाकर उसका नाम मेसर्स खटाऊ मकनजी सन्स एण्ड को० रक्खा, और मोतीके व्यापारको खूब बढ़ाया। इस फर्मपर बिक्रीके हेतु विदेश भेजनेके लिये मोती आते थे। आपने अपने एजेंट लंदन और पेरिसमें नियत कर रक्खे थे, जो वहां आपके संकेतानुसार मोतीका व्यापार बड़ी सावधानीसे करते थे। आपने इस व्यापारमें अच्छी ख्याति प्राप्त की। एक समय ऐसा भी था, जब बम्बईका मोतीका व्यापार आपकी मुट्ठीमें था, पर आपने सन् १९१० में इस फर्मको बंद कर दिया, तथा पुनः अपने व्यक्तिगत नामसे यह व्यापार करने लगे।

सेठ गोवर्द्धनदासजी सन् १८९०में स्थानीय म्युनिसिपल कारपोरेशनके सदस्य निर्वाचित हुए थे। आप कितनी ही मिलोंके प्रबंधकर्ता व कितनी ही कम्पनियोंके डायरेक्टर भी थे, आपने अपने छोटे भाई सेठ मूलराज खटाऊके साथ शिक्षा प्रचारार्थ १ लाख रुपयोंका दान दिया था, जिसकी ब्याजकी आमदनीसे आज भी गोकुलदास तेजपाल हाईस्कूलमें शिक्षा प्राप्त करनेवाले, भाटिया विद्यार्थियोंके भरण-पोषणका कार्य होता है। आपने थानेमें बाल-राजेश्वरका एक विशाल मन्दिर निर्माण कराया, आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था।

सन् १९१३ में आपने अपने पुत्र सेठ तुलसीदासजी एवं अपने जामात्र सेठ नरोत्तम मुरारजीके साथ योरोपकी यात्रा की। अपने भोजनादिके प्रबंधके लिये आप यहांसे रसोइया, भट, ब्राह्मण आदि साथ लेते गये थे। लेकिन तौभी वहांसे लौटनेपर भाटिया समाजके कट्टर लोगोंने आपसे सामाजिक संबन्ध विच्छेद कर लिया। मगर इससे कोई प्रभावात्मक कार्य नहीं हुआ, वरन् कई व्यक्तियोंने "कच्छी तथा हलाई समस्त भाटिया महाजन" नामक सामाजिक संस्थासे अलग होकर "बंबई भाटिया महाजन" नामक एक नवीन सामाजिक संस्थाको जन्म दिया, उसी दिन इसके पांच सौ सदस्य हो गये। इसके प्रथम सभापति राव बहादुर सेठ वसनजी खेनजी नियुक्त किये गये। आपने

पेपर, डीवीडेण्ट वारण्ट, इत्यादिको घटाकर उनको अपने ग्राहकोंके खातेमें जमा करती हैं और यदि उन्हें आवश्यकता हो तो उनके लिए खरीद भी देती हैं। इस प्रकार की बैंकें संसारमें स्थान २पर खुल गई हैं। भारतवर्षमें भी कई बैंकें काम करती हैं, जिनका परिचय आगे दिया जायगा।

इन बैंकोंकी वजहसे, अथवा इस प्रकारके बैंकिंग व्यवसायसे व्यापार करनेवालोंको अत्यन्त सुविधाएं होती हैं: उनके मार्गकी बहुतसी कठिनाइयां नष्ट हो जाती हैं। इस व्यवसायके द्वारा उनका बहुतसा खर्च बच जाता है। उदाहरणार्थ एक व्यापारी यहांपर खपनेवाला माल बाहरसे मंगाता है, और दूसरा व्यापारी अपना माल यहांसे बाहरी देशोंको भेजता है। यदि बैंकिङ्ग व्यवसाय न हो तो पहले व्यापारीको भी मंगाये हुए मालका रुपया मनीआर्डरसे वहांकी कम्पनीको भेजना पड़ता, और दूसरे व्यापारीको भी अपने भेजे हुए मालका रुपया वहांसे मंगवाना पड़ता। इस प्रकार करोड़ों रुपयोंके एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले सामान पर केवल मनीआर्डरका खर्च ही कितना लगता, यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मगर बैंकिंग व्यवसायके प्रचलित होनेपर यह सब कठिनाई और खर्च एकदम बचगया है। आप अपना माल जापान, अमेरिका, इंग्लेण्ड कहीं भी भेज दीजिए और जिस व्यक्तिको माल भेजा है उसपर एक हुण्डी लिखकर किसी दलालको दे दीजिये। बस वह दलाल जाकर आपकी हुण्डी उस व्यापारीको बेच देगा जिसके यहां उस देशसे मालका इम्पोर्ट होता है वह व्यापारी आपकी हुण्डीके रुपये आपको चुकाकर, उसे अपने आढतियेके पास भेजदेगा, और वह आढतिया आपके आढतियेसे अपने रुपये मंगवा लेगा। हिसाब साफ हुआ, न आपको तकलीफ हुई न आपके आढतियेको। हां, इतनी बात अवश्य है कि यदि बाजारमें हुण्डीकी आमदसे खप अधिक हुई तब तो आपको बाजार भावसे कुछ पैसे अधिक मिल जायगे, और यदि खपतसे आमद अधिक हुई तो कुछ पैसे बट्टे के कट जाएंगे। बैंक भी इस प्रकारकी हुण्डियां उनकी फीस लेकर लेते बेचते रहते हैं जिससे इस कार्य्यमें और भी सुविधा हो जाती है।

बिल आफ एक्सचेंज परदेशी हुण्डी—

जिन देशोंमें एक ही प्रकारके सिक्के प्रचलित रहते हैं उन देशोंके बीच जिन पुर्जोंके द्वारा लेन देनका व्यवहार होता है उन्हें परदेशी हुण्डी कहते हैं। मगर जिन देशोंमें भिन्न २ प्रकारके सिक्के प्रचलित हैं उन देशोंके बीच लिखे जानेवाले इस प्रकारके कागजोंको बिल आफ एक्सचेंज कहते हैं। इन बिलोंमें और परदेशी हुण्डियोंमें कुछ अन्तर होता है। ये बिल बैंकोंके द्वारा ही आते जाते हैं। बाहरी देशोंके जो व्यापारी यहांपर माल भेजते हैं वे मालको रवानाकर यहांके व्यापारी (माल मंगानेवाले) के नामकी हुण्डी या बिल, उस मालकी रसीदके साथ यहांके बैंक पर भेज देते हैं। यह बैंक बिल आते ही उसपर यहांके व्यापारीकी सही ले लेता है। इस सहीके होजानेपर वह व्यापारी उस बिलमें लिखी हुई निश्चित अवधिके भीतर उस बिलका रुपया भरदेनेके लिए बाध्य हो जाता है।

स्व० सर मनमोहनदास रामजी के० टी० बम्बई

स्व० (स्व०) सेठ मुरारजी गोकुलदास, सी० आई० ई० बम्बई

बैंकोंका इतिहास

बम्बईके इतिहासमें सबसे प्रथम बैंकका यदि परिचय कभी मिलता है तो वह सन् १७२० ई० में ही। इसके पूर्व बैंक नामकी कोई वस्तु भी न थी और न उसके स्वरूपकी किसी प्रकारकी कल्पना ही की गयी थी। सन् १७२० ई० के दिसम्बर मासमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नगरकी साधारण प्रजाके लाभकी दृष्टिसे एक बैंककी स्थापना की गयी। ईस्ट इण्डिया कंपनीने अपनी रोकड़से १ लाखकी रकम निकाल कर बैंकको प्रारम्भिक पूंजीके रूपमें दी और इस प्रकार "बैंक आफ बाम्बे" नामके प्रथम बैंकका जन्म हुआ। इस बैंककी सुव्यवस्थाका प्रबन्ध भार बम्बई सरकारके हाथमें दिया गया। बैंकमें १००) रु० की रकम जमा करने वालेको बैंक एक दुगानी दैनिक ब्याज देती थी। यदि बैंक किसीको ऋण देती तो वह ६ प्रतिशत ब्याजके अतिरिक्त एक प्रति शत ब्याज बैंकके सुप्रबन्ध संचालनके लिये लेती। इस प्रकार १० प्रतिशत ब्याज पर बैंक रुपये कर्ज देती थी। लगभग २४ वर्ष तक इसी प्रकार बराबर काम होता गया परन्तु बैंकने कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं की। फल यह हुआ कि इस प्रयोगसे लोग उदासीन हो चले और प्रबन्धमें भी शिथिलता आ गयी। सन् १७४४ ई० के लगभग १००३१३) रु० बैंक की रकममेंसे उधार खातेमें निकल चुके थे। इस रकममेंसे केवल ४२६००) रु० की रकम ही वसूल हो पायी। सरकारने लाख चेष्टा की परन्तु उदासीनता दूर न हुई और अन्तमें सन् १७६८ में इस बैंकने अपनी जीवन लीला समाप्त की। इस प्रकार प्रथम बैंककी समाप्ति हुई।

यहांके सराफ—इस १८ वीं शताब्दीमें बैंकने फिर जोर मारा, परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। १६ वीं शताब्दीमें इतिहाससे पता चलता है कि इस नगरमें लगभग १०० हिन्दू महाजन सराफी का व्यवसाय खूब जोरोंसे करते थे। १८ वीं शताब्दीमें भी यहांके हिन्दू महाजनोंका व्यवसाय अच्छी उन्नत अवस्थामें था। जिस समय 'बैंक आफ बाम्बे' नामक बैंक की स्थापना हुई थी उस समय भी ये लोग बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठासे देखे जाते थे।* इनके पास पर्याप्त पूंजी थी अतः इनकी हुण्डीकी प्रतिष्ठा समस्त भारतमें थी। सन् १८०२ ई० में सेठ पेस्तमजी बोमनजीने सरकारको आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार स्थानीयबाजार गेट स्ट्रीटके निवासी आत्मारामम भूखनने भी सरकारको मुक्तहस्तसे आर्थिक सहायता प्रदान की। उस समय इस पीढ़ीकी ख्याति काका पारख की पीढ़ीके नामसे थी।

सेविङ्ग बैंक - इस परिस्थितिमें सरकार चुप बैठ न सकती थी। सन् १८३५ ई० में उसने एक

* इस समयके महाजनोंमें मंगीलाल ग्वीरचन्द का नाम सबसे अधिक उल्लेखनीय है। यों तो कितने ही महाजनोंने समय समयपर सरकारको आर्थिक सहायता दी है परन्तु इन्होंने भारतीय विप्लवके समय भी बंगाल सरकार को पर्याप्त आर्थिक सहायता दी थी।

गोकुलदासजी तथा पितामहका नाम सेठ जीवणजी था। सेठ जीवणजी, रवजी गोविंदजीके नामसे पोरबंदरमें संवत् १८७० में व्यवसाय करते थे। संवत् १८७३के करीब इस खानदानको बहुत व्यापारिक नुकसान लगा। फलतः सेठ गोकुलदासजी संवत् १८७४में बम्बई आये और बादमें आपने अपने पिता सेठ जीवणजी और अपने भाईको भी यहां बुलिया। आप यहां खांडकी दलाली और कपड़ेका व्यवसाय करते थे।

मुरारजी सेठको अपने पिताश्रीके द्वारा धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा अच्छी मिली थी। आपने अपने पिताश्रीके साथ तीर्थक्षेत्रों और नगरोंका बहुत पर्यटन किया था इसलिये १२ वर्षकी अल्पवयसे ही आपको व्यवसायिक हिताहितका ज्ञान हो गया था। संवत् १९०४से आप अपने काकाके साथ व्यवसायमें सहयोग देने लगे। उस समय आपको उनकी ओरसे केवल ४५१) प्रति वर्ष मिलता था। थोड़े ही समयमें मुरारजी सेठका कई बड़ी२ अंग्रेजी कम्पनियोंसे परिचय होगया एवं उन कम्पनियोंने आपको अपने यहां आनेके लिये आमंत्रित किया। जवाहरात और कपड़ेके व्यवसायमें आपकी दृष्टि बहुत थी। विलायती कपड़ेकी माल आनेके पूर्व ही आप बहुत बड़ी खरीदी कर लेते थे। आपके इस साहसको देख व्यापारी चकित रहते थे। इस प्रकार संवत् १९१६में पाटसन बोगडे एण्ड कम्पनीके साथ आप हिस्सेदारके रूपमें शरीक हुए। १९वीं शताब्दीमें विलायती कपड़ेके व्यवसाइयोंमें मुरारजी सेठका बड़ा नाम था। सन् १८७१से आपने मिलोंके स्थापनका काम करना आरंभ किया। उस समय सोलापुरमें अकाल बहुत पड़ता था इसलिये अकाल पीड़ितोंको मजदूरी देने और मिल उद्योगकी वृद्धिके लिये सन् १८७४में आपने सोलापुर स्पीनिंग कं० लि० के नामसे ६ लाखकी पुंजीसे सूत कातने और कपड़ा बुननेका कारखाना खोला। प्रारंभके २५ वर्षोंमें हिंदुस्थानमें यह मिल सर्व श्रेष्ठ मानी जाती थी। पीछेसे इस मिलकी पूंजी बढ़ाकर ८ लाख कर दी गयी। इस समय मिलमें १११२६० स्पेंडलस और २१७२ लूम्स हैं। यह मिल १६ हजार गांठ माल हर साल तैयार करती है। इसके अतिरिक्त यह फर्म बम्बईके मुरारजी गोकुलदास स्पी० वि० मिलकी भी मैनेजिंग एजंट है। इस मिलमें ८४ हजार स्पेंडल और १६०० लूम हैं। इसकी स्थापना १८७२ में सेठ मुरारजी गोकुलदासके हाथोंसे हुई इसकी पंजिटल ११ लाख ५० हजारकी है यह मिल [illegible] हर १५ हजार गांठ माल तैयार करती है।

इस प्रकार १९ वी शताब्दीमें भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिके लिये प्रयत्न करते हुए महानु-भावका देहावसान सन् १८८८ में ६६ वर्षकी वयमें हुआ। गवर्नमेंटने आपको जे० पी० और सी० आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया था। आपके [illegible] सेठ [illegible] देहावसान सन् १९१५ में होगया।

आपने खोपरेके तेलमें शुद्धता लानेके लिये खास प्रबन्ध किया था, इसका परिणाम यह हुआ कि आपको कई बड़ी २ कम्पनियोंके कंट्राक्ट मिल गये, जिनमें ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे व बम्बे पोर्ट ऑफ ट्रस्टके कन्ट्राक्ट मुख्य थे।

सेठ मूलजी भाईके पुत्र सेठ सुन्दरदासजी ज्योंही वयस्क हुए त्योंही अपने पिताजीके साथ व्यापार करने लगे। आपके हाथोंसे कम्पनीकी बहुत अधिक तरक्की हुई, सबसे पहले अमेरिकन सिविलवार छिड़नेके समय आपके मस्तिष्कमें यह बात आई, कि लंकाशायर रुई भेजी जाय, तद्नुसार आपने ६ जहाज रुईके भरकर केप ऑफ गुड होपके रास्तेसे लंकाशायर भेजे। आपके जहाज मर्सेकी खाड़ीमें पहुंचे थे, कि अमेरिकन सिविलवार (गृहयुद्ध) छिड़ गया। फलतः अमेरिकाके बन्दर बन्द होगये और लंकाशायरमें रुईका अकाल पड़गया, ऐसे समयमें आपका माल वहां पहुंचा। उस समय आपको अपने मालका मूल्य सोनेके बराबर मिला। उस समय सारा व्यापारी समाज मिलोंके शेअरोंपर टूट रहा था। पर सेठ सुन्दरदासजी इतने दूरदर्शी थे कि सट्टबाजीमें न आकर शांत रहे व आपने उस व्यापारमें हाथ नहीं डाला। सेठ सुन्दरदासजीकी मेघा शक्ति बड़ी तीव्र थी। सन् १८७० से आपने ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनीके रूपमें व्यापार करना आरम्भ किया।

सबसे प्रथम आपने ३ लाख ५० हजारकी पूंजीसे दि न्यू ईष्टइण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड स्थापितकी। इसके बाद आपने ७ लाख ५० हजारकी पूंजीसे खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी स्थापित की। इसके अतिरिक्त १ लाखकी पूंजीसे सिंध एण्ड पंजाब काटन प्रेस कम्पनी लिमिटेड एवं ५ लाख पूंजीसे मद्रास स्पीनिंग वीविंग मिल कम्पनी लिमिटेड और ८ लाखकी पूंजीसे सुन्दरदास स्पीनिंग वीविंग मिल्स कम्पनी स्थापित की। और अन्तमें ६ लाखकी लागतसे न्यू पीस गुड्सबाजार कम्पनीलि० जो मूलजीजेठा मारकीटके नामसे मशहूर है स्थापित की। इन सब कम्पनियोंकी मेनेजिङ्ग एजेण्ट, सेक्रेटरी, और ट्रेजरर मूलजीजेठा कम्पनी थी।

सन् १९०५ में भयंकर आग लग जानेके कारण सुन्दरदास स्पीनिङ्ग वीविङ्ग मिल बरबाद हो गया, और वह कम्पनी लिक्विडेशनमें चली गई। सिंध पंजाब कम्पनी भी ५ लाख रुपये शेअर्स होल्डरोंको अदा करनेके बाद स्वेच्छासे लिक्विडेशनमें चली गई।

खानदेश स्पीनिङ्ग वीविंग कम्पनी जलगांव, न्यूईष्टइण्डिया कम्पनी व न्यूपीस गुड्सबाजारके मेनेजिङ्ग एजेंट्स अब भी आप हैं।

श्रीयुत सुन्दरदासजीकी अल्पवयमें ही सन् १८७६ के जनवरी मासमें ३६ वर्षकी अवस्थामें खेद जनक मृत्यु हो गई। आपका चिर विछोह सहन करनेके लिये आपके वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजी भाई और आपके दो पुत्र श्री धरमसी जी एवं गोवर्द्धनदासजी विद्यमान थे। आपके दोनों पुत्र नाबा-

बेङ्कस्

इलाहाबाद बेङ्क

यह बेङ्क सन् १८६५ ईस्वीमें स्थापित हुआ था। इसकी इमारत बम्बईमें इलाहाबाद बेङ्क बिल्डिङ्गके नामसे विख्यात है। यह चर्चगेट स्ट्रीटमें है। आजकल यह बेङ्क पी० एण्ड० ओ० बेङ्किङ्ग कार्पोरेशन लिमिटेडमें सम्मिलित कर दिया गया है। इसका निश्चित मूलधन ४०,००,००० है। वसूल मूलधन ३२,५०,००० और रिजर्व फण्ड ४३,६०,००० है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। इसकी मुख्य २ शाखायें—बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहौर, रावलपिन्डी, नागपुर और पटना में है।

इम्पीरियल बेङ्क ओफ इण्डिया

बङ्गाल बेङ्क, मद्रास बेङ्क, और बम्बई बेङ्क, इन तीनों बेङ्कोंके मिश्रणसे सन् १९२१ के जनवरी मासमें इस बेङ्कका जन्म हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य सोनेकी जमानतको सुरक्षित रखना है। इस बेङ्ककी लगभग १६५ शाखाएं सारे भारतमें भारतीय गवर्नमेन्टसे किये हुए करारके अनुसार, भिन्न २ शहरों, कस्बों, और व्यापारिक केन्द्रोंमें स्थापित की गई हैं। जिनमेंसे मुख्य २ के नाम इस प्रकार हैं—बम्बई, इलाहाबाद, कलकत्ता, मद्रास, आगरा, बनारस, अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, खण्डवा, जैपुर, अमृतसर, बङ्गलोर, करांची, कानपुर, ढाका, दार्जिलिङ्ग, ग्वालियर, जमशेदपुर, जोधपुर, जबलपुर, लाहौर, लखनऊ, मुरादाबाद, मदुरा, मरकरा, मसुलीपट्टम, नागपुर, नासिक, रङ्गून, रावलपिण्डि, शिलाङ्ग, त्रिचनापल्ली, सूरत, वीजगापट्टम इत्यादि।

यह बेङ्क सरकारी खजानेकी भी व्यवस्थापक है और आवश्यकताके समय सरकारको उचित सहायता प्रदान भी करता है।

इसका निश्चित मूलधन,	११,२५,००,०००
वसूल मूलधन, ३० जून १९३० तक	५,६२,५०,०००
रिजर्व फण्ड,	५,०३,००,०००
[illegible]	५,९२,५०,०००

इसका लन्दन आफिस— २२ ओल्ड ब्राड स्ट्रीट ई० सी० २ पर है।

मेसर्स लालजी नारायणजी

सेठ लालजी नारायणजी भाटिया जातिके सज्जन हैं। आप अपने समाजमें जिस प्रकार एक अग्रगण्य एवं विचारवान अगुआ समझे जाते हैं, उसी प्रकार बम्बईके व्यापारिक समाजमें भी आप बड़े प्रतिष्ठित एवं व्यवसाय कुशल नेता माने जाते हैं। आपका जन्म सन १८५८में हुआ। आपने अपने व्यवसायी जीवनके प्रभात कालसे ही अपनी अनोखी सूझका परिचय दिया। फल यह हुआ कि थोड़े ही समयमें आप यहांकी कितनीही व्यापारिक संस्थाओंके सदस्य और कितनी ही संस्थाओंके प्रमुख बनाए गए। यहांकी प्रतिष्ठित फर्म मूलजी जेठा कम्पनीके सीनियर मैनेजरके रूपमें आप समस्त फर्मका कार्य संचालन करते हैं। आप एक सफल मिल मालिक एवं सिद्ध हस्त व्यापारी हैं। आप समयकी प्रगतिके अनुसार राजनैतिक क्षेत्रमें भी भाग लेते हैं। यही कारण है कि यहांकी प्रतिष्ठित व्यवसायी संस्थाने आपको अपना प्रतिनिधि बना बम्बई कौंसिलमें भेजा है, आप भारतीय व्यवसाय और उसकी अर्थवृद्धिके लिये सदैव संकोच रहित होकर सरकारसे भिड़ते हैं। आप यहांकी मिल ओनर्स एसोसिएशन एवं इन्डियन मर्चेंट चेम्बर नामक प्रसिद्ध व्यापारिक संस्थाओंके जीवित कार्यकर्ता एवं सदस्य हैं। आप इन्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके सन् १९२१ और सन् १९२६ में प्रेसिडेंट भी रहे हैं। आप स्वानीय स्वान मिल, तथा गोल्ड मुहर मिलके डायरेक्टर तथा यहांकी अन्य कितनी ही ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं, आप लालजी नारायणजी कम्पनीके मालिक हैं। मूलजी जेठा मारकीट चौकमें आपकी कपड़ेकी दुकान है। आपका आफिस ईवर्ट हाऊसमें है।

इनके अतिरिक्त बम्बईमें और भी कई बड़े २ प्रतिष्ठित मिल मालिक हैं। पर चेष्टा करनेपर भी हम उनका परिचय न प्राप्त कर सके इसका हमें खेद है। वैसे तो कई मिल मालिकों और एजेंटोंकी नामावली हम पीछे मिलोंके परिचयमें दे चुके हैं।

बैङ्कर्स

इलाहाबाद बैङ्क

यह बैङ्क सन् १८६५ ईस्वीमें स्थापित हुआ था। इसकी इमारत बम्बईमें इलाहाबाद बैङ्क बिल्डिङ्गके नामसे विख्यात है। यह एपैलो स्ट्रीटमें है। आजकल यह बैङ्क पी० एण्ड० ओ० बैङ्किङ्ग कारपोरेशन लिमिटेडमें सम्मिलित कर दिया गया है। इसका निश्चित मूलधन ४०,००,००० है। वसूल मूलधन ३५,१०,००० और रिजर्व फण्ड ४४,५०,००० है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। इसकी मुख्य २ शाखायें—बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावलपिन्डी, नागपुर और पटना में है।

इम्पीरियल बैङ्क औफ इण्डिया

बङ्गाल बैङ्क, मद्रास बैङ्क, और बम्बई बैङ्क, इन तीनों बैङ्कोंके मिश्रणसे सन् १९२१ के जनवरी मासमें इस बैङ्कका जन्म हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य सोनेकी अमानतको सुरक्षित रखना है। इस बैङ्ककी लगभग १२५ शाखाएं सारे भारतमें भारतीय गवर्नमेन्टसे किये हुए करारके अनुसार, भिन्न २ शहरों, बन्दरों, और व्यापारिक केन्द्रोंमें स्थापित की गई हैं। जिनमेंसे मुख्य २ के नाम इस प्रकार हैं—बम्बई, इलाहाबाद, कलकत्ता, मद्रास, आगरा, धनबाद, अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, खण्डवा, जैपुर, अमृतसर, बङ्गलोर, बनारस, कालिकट, ढाका, दार्जिलिङ्ग, ग्वालियर, जमशेदपुर, जोधपुर, जबलपुर, लाहोर, लखनऊ, लुधियाना, मदुरा, माण्डले, मछलीपट्टम, नागपुर, नासिक, रङ्गून, रावलपिण्डि, शिलाङ्ग, शिमला, सूरत, श्रीनगर इत्यादि।

यह बैङ्क सरकारी खजानेको भी सम्हालता है और आवश्यकताके समय सरकारको उचित ब्याजपर रुपया भी देता है।

इसका निश्चित मूलधन,	११,२५००,०००
वसूल मूलधन, ३० जून १९२७ तक	५,६२,५०,०००
रिजर्व फण्ड,	५,०७,००,०००
शेअर होल्डरोंपर	५,६२,५०,०००

इसका लन्दन आफिस— २२ ओल्ड ब्रॉड स्ट्रीट इ० सी० २ पर है।

बैंकर्स

BANKERS.

बैंक्स

इलाहाबाद बैङ्क

यह बैङ्क सन् १८६५ ईस्वीमें स्थापित हुआ था। इसकी इमारत बम्बईमें इलाहाबाद बैङ्क बिल्डिङ्गके नामसे विख्यात है। यह एपेलो स्ट्रीटमें है। आजकल यह बैङ्क पी० एण्ड० ओ० बैङ्किङ्ग कारपोरेशन लिमिटेडमें सम्मिलित कर दिया गया है। इसका निश्चित मूलधन ४०,००,००० है। वसूल मूलधन ३५,००,००० और रिजर्व फण्ड ४४,५०,००० है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। इसकी मुख्य २ शाखायें—बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावलपिन्डी, नागपुर और पटना में है।

इम्पीरियल बैंङ्क ऑफ इण्डिया

बङ्गाल बैङ्क, मद्रास बैङ्क, और बम्बई बैङ्क, इन तीनों बैङ्कोंके मिश्रणसे सन् १९२१ के जनवरी मासमें इस बैङ्कका जन्म हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य लोगोंकी अमानतको सुरक्षित रखना है। इस बैङ्ककी लगभग १५५ शाखाएं सारे भारतमें भारतीय गवर्नमेन्टसे किये हुए करारके अनुसार, भिन्न २ शहरों, बन्दरों, और व्यापारिक केन्द्रोंमें स्थापित की गई है। जिनमेंसे मुख्य २ के नाम इस प्रकार हैं—बम्बई, इलाहाबाद, कलकत्ता, मद्रास, आगरा, धनबाद, अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, खण्डवा, जेपुर, अमृतसर, बङ्गलोर, बनारस, कानपुर, ढाका, दार्जिलिङ्ग, ग्वालियर, जमशेदपुर, जोधपुर, जबलपुर, लाहोर, लखनऊ, लुधियाना, मथुरा, मण्डले, मछलीपट्टम, नागपुर, नासिक, रङ्गून, रावलपिण्डि, शिलाङ्ग, शिमला, सूरत, श्रीनगर इत्यादि।

यह बैङ्क सरकारी खजानेको भी सम्हालता है और आवश्यकताके समय सरकारको उचित रकम उधार भी देता है।

इसका निश्चित मूलधन,	११,२५,००,०००
वसूल मूलधन, ३० जून १९२० तक	५,६२,५०,०००
रिजर्व फण्ड,	५,०३,००,०००
डेपा (डिपाजिट)	५,६२,५०,०००

इसका लन्दन आफिस— २२ ओल्ड ब्राड स्ट्रीट ई० सी० २ पर है।

बैंकिंग-बिजीनेस

(सराफी व्यापार)

पारस्परिक व्यापारिक सुविधाके लिए, बाजारके नियमके अनुसार व्याज लेकर, साख (credit) पर, अथवा जमीन, जेवर, मकान, मिल्कीयत, प्रामेसरीनोट, इत्यादि पर रुपया देने लेनेका जो व्यवसाय होता है, अथवा एक स्थानसे दूसरे स्थानपर रुपया भिजवाने या मंगवानेके लिए, हुण्डी चिट्ठी या एक्सचेंज बिलका जो व्यवहार चलता है उसे अंग्रेजीमें बैंकिंग बिजीनेस और हिन्दी भाषामें सराफी-व्यापार कहते हैं।

किसी भी व्यापार प्रधान देशके लिये, बैंकिंगका बिजीनेस उतना ही आवश्यक है जितना किसी युद्ध प्रधान देशके लिए बारूद, गोला या शस्त्रास्त्रकी सामग्री आवश्यक है। सच बात तो यह है कि बिना बैंकिङ्ग-व्यवसायके विकसित हुए किसी देश अथवा शहरकी व्यापारिक उन्नति हो ही नहीं सकती। जो देश प्राचीन कालमें व्यवसाय प्रधान रहे हैं, उन देशोंमें बैंकिंग बिजीनेसका अस्तित्व भी अवश्य पाया जाता है। हमारे देशमें भी पूर्वकालमें सराफी व्यवसाय काफी तादादमें प्रचलित था। उस समय चीन, जावा, सुमात्रा, ईरान, इत्यादि देशोंसे यहांके बने हुए मालका एक्सपोर्ट (निर्यात) और वहांके मालका इम्पोर्ट (आयात) होता था। इस आने जाने वाले मालकी भुगतानके लिए इन देशोंके बीचमें हुण्डीका व्यवहार प्रचलित था। कौटिल्यके अर्थशास्त्र, शुक्रनीति तथा और भी प्राचीन अर्थशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें इस व्यवसायके सम्बन्धका विवरण पाया जाता है।

फिर भी यह निश्चित है कि वर्तमान युगमें इस व्यापारका रूप जितना प्रामाणिक और विकसित होगया है उतना पूर्वकालमें नहीं था। इस युगके बैंकिंग व्यवसायका उन्नत स्वरूप आधुनिक बैंकोंमें दिखलाई देता है।

बैंक—एक या एकसे अधिक व्यक्तियोंकी सम्मिलित पूंजीसे स्थापितकी हुई जो संस्था एक निश्चित स्थानपर अपना आफिस खोलकर उचित व्याजपर लोगोंके सिक्के जमा रखती है और उन्हीं सिक्कोंको कुछ अधिक व्याज लेकर दूसरे व्यापारियोंको उनकी साखपर, या उनकी किसी स्थावर, जङ्गम सम्पत्तिपर कर्ज देती है ऐसी संस्थाको बैंक कहते हैं इस प्रकारकी बैंक देशी तथा [illegible] हुण्डियोंको भी अपनी उचित फीस लेकर खरीदती तथा बेचती है। और बैंकोंके शेयर, गव

और वह रसीद उसे देदी जाती है। इस रसीदको दिखाकर वह जहाजपरसे अपना माल ले आता है। इस बिलपर सही होजानेके पश्चात्, जबतक उसकी मुद्दत पूरी नहीं होती, तब तक वह नोटोंकी तरह भिन्न २ व्यापारियोंके पास आता जाता रहता है और मुद्दत पूरी होनेपर वह उस व्यापारीके पास आ जाता है जिसे रुपया देकर वह व्यापारी लेलेता है।

इस प्रकार दुनियाके सब देशोंके बीच बिल आफ एक्सचेंजके द्वारा लेनदेनका काम चलता है लेकिन इस प्रकारके व्यवहारमें बड़ी सावधानी रखनेकी आवश्यकता पड़ती है साधारणतया ऐसा होता है कि जिस देशसे माल आता है उसी देशसे सीधा बिल आफ एक्सचेन्जका व्यवहार करनेमें सुभीता होती है। मगर कभी २ ऐसा होता है कि सीधे उस देशके सिक्केके भावमें रुपया भरनेसे भाव अधिक पड़ता है, मगर यदि वही रुपया दूसरे देशके सिक्केके द्वारा भरा जाय तो उसमें भाव सस्ता पड़ता है। उदाहरणार्थ हमें फ्रान्स देशके फ्रांक नामक सिक्केमें मूल्य चुकाना है। अब कल्पना कीजिए कि हमारे देशके एक रुपयेके बदलेमें ६ फ्राङ्क मिलते हैं, मगर इंग्लेंडके एक पौण्डके बदलेमें ८६ फ्राङ्क मिलते हैं, इधर हमारे देशमें एक पौण्ड तेरह रुपयेमें मिलता है। यदि हम रुपयोंके द्वारा वहांका बिल चुकावेंगे तो तेरह रुपयोंके बदले केवल ७८ फ्राङ्कका बिल चुकेगा, मगर उन्हीं तेरह रुपयोंसे एक पाउंड लेकर उसके द्वारा हम वह बिल चुकाएंगे तो ८६ फ्राङ्कका बिल चुक जायगा। इसी प्रकारका अन्तर और २ देशोंके सिक्कोंमें भी कभी २ रहा करता है। जो व्यापारी सब देशोंके सिक्कोंपर दृष्टि रखकर इस प्रकारके बिल चुकाता है उसे कभी २ बड़ा लाभ हो जाता है। इस प्रकारके एक्सचेन्ज सम्बन्धी कार्य्योंमें इस प्रकारका कार्य्य करनेवाले बैङ्कों तथा दलालोंके द्वारा हुण्डीका कार्य्य करवाना विशेष अच्छा है।

<u>परदेशी हुण्डीके भेद</u>

इस प्रकारकी परदेशी हुण्डियां तीन प्रकारकी होती हैं। (१) डी० टी० (तुरन्त सिकरनेवाली) (२) टी० टी० (तारके द्वारा भेजी जानेवाली (३) साइबिल (मुद्दती) यह हुण्डी लिखी हु मुद्दत और मेलके दिनोंकी मियाद पूरी हुए पश्चात् सिकरती है। (४) बिल आफ कलेक्शन, वह कह लाता है जो मालके डाक्यूमेन्टके साथ उसकी कीमतका बिल बनाकर दिया जाता है। इस प्रकारके बिलका रुपया वहांसे वसूल हो जानेपर निलता है।

<u>देशी हुण्डी</u>

देशी हुण्डी चार प्रकारकी होती है। (१) शाहजोग हुण्डी (२) नामजोग हुण्डी (३) धणीजोग हुण्डी और (४) फरमानकी हुण्डी। इन सब प्रकारकी हुण्डियोंका परिचय प्रायः सब व्यापारी जानते हैं अतः इनका यहांपर विस्तारपूर्वक वर्णन करना व्यर्थ है। फिर भी जो सज्जन इस विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहें उन्हें मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, और बम्बई सराफ एसोसियेशनकी नियमावली मंगाकर पढ़ना चाहिए।

मारवाड़ी बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। इसकी बम्बईकी फर्मका पता—रामहल, मूलेश्वर है। यहां श्रीयुत मुनीम ओच्छवलालजी काम करते हैं। इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौर (सेंट्रल इंडिया) में दिया गया है।

मेसर्स खुशालचंद गोपालदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी हैं। आप माहेश्वरी (मालपाणी गौत्र) जातिके सज्जन हैं।

इस खानदानका मूल निवास जैसलमेरमें है, पर बहुत समयसे जबलपुरमें रहनेके कारण जबल-पुर वालोंके नामसे यह कुटुम्ब विशेष प्रख्यात है।

इस फर्मका हेड ऑफिस जबलपुरमें है। बम्बईमें इसे स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। राजा गोकुल दासजीके हाथों इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। राजा गोकुलदासजी और सेठ गोपाल दासजी दोनों भाई २ थे। पहिले आप दोनों भाइयोंका शामिल व्यवसाय सेवाराम खुशाल-चन्दके नामसे होता था, पर आगे जाकर दोनों अलग अलग हो गये, और यह फर्म दीवान बहादुर सेठ बल्लभ रायजीके हिस्सेमें आई। आप माहेश्वरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। आपका देहावसान हुए तीन चार वर्ष हुए। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ जमना दासजी माल-पाणी एम० एल० ए० हैं। आप बड़े शिक्षित एवं सुधरे विचारोंके सज्जन हैं। आप ऑल इंडिया लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली (वाइसरायकी कौंसिल) के मेम्बर निर्वाचित किये गये है। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेविंग बैंककी भी स्थापना की। ज्यों २ यह द्वीप पुंज उन्नति करता गया त्यों २ यहांका व्यवसाय वाणिज्य भी उन्नति कर अपनी वृद्धि और पुष्टि करता गया। इस उन्नति शील युगमें पूंजीकी व्यवस्थाकी ओर सभीकी दृष्टि गयी और बैंककी आवश्यकता सभीको समान रूपसे खटकने लगी। फल यह हुआ कि सन् १८४० ई० में पुनः बैंककी स्थापना हुई। इसका नाम भी बैंक आफ बाम्बे रक्खा गया। इसने ५२, २५ , ०००) रु० की पूंजी से कार्यारम्भ किया। इस प्रकार सन् १८४० ई० से पुनः इस ओर कार्य होना आरम्भ हुआ और बढ़ते २ इतना बढ़ा कि आज यहां बैंकोंकी भरमार हो पड़ी है। इस बैंकने उन्नतिकी ओर दृढ़तासे पैर उठाये और कुछ ही समयमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। इसकी देखा देखी सन् १८४४ ई० में ओरियन्टल बैंकिंग कार्पोरेशनने भी अपनी एक शाखा यहां खोली। सन् १८६० ई० तक कमर्शियल बैंक, चार्टर्ड बैंक, सेन्ट्रल बैंक आफ वेस्टर्न इण्डिया, चार्टर्ड मर्केन्टाइल, और आगरा एण्ड यूनाइटेड सरविस नामक कितनी ही बैंकें खुल गयीं। इसी बीच अमेरिकन सिविल वार नामक घरेलू युद्ध अमेरिकामें छिड़ गया और अमेरिकन रुईका अकाल पड़ गया। अतः लंकाशायर (इंग्लैण्ड) के कारखाने भारतकी रुईके आश्रित हो गये। जिससे भारतका व्यवसाय चमक उठा इस कालमें यहांपर सब मिलाकर लगभग ३१ बैंकें बम्बईमें स्थापित हो चुकी थीं।

इस प्रकार बैंकोंका यहां जन्म हुआ और बाल्यकाल व्यतीत कर बैंकोंने युवावस्थामें पदार्पण किया। इस समय निम्न लिखित बैंकें यहांपर अधिक प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। अतः उनका संक्षिप्त परिचय हम यहां दे रहे हैं :—

इम्पीरियल बैङ्क ऑफ परसिया

यह १८८९ में राजकीय चार्टर द्वारा स्थापित हुआ था। इसका वसूल मूलधन, ६५,०००० पौण्ड है। रिजर्व फण्ड ५२०,०००, पौण्ड है। मालिकोंके पास १००,००० पौण्ड है। इसकी मशहूर शाखाएं परसिया, सुल्ताना बाद, इराक, मेसोपोटामिया, बगदाद तथा बम्बईमें हैं।

इंडिया बैङ्क लिमिटेड

बैङ्क ऑफ इण्डियाका जन्म सन् १९०६ ईस्वीमें हुआ था। इसकी स्थापना सर सैसून डेवीड बैरोनेटके उद्योगसे हुई थी। आपने इसकी सफलताके लिये आजीवन प्रयत्न किया। यहां तक कि अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें भी इन्होंने इसके लिये कठिनसे कठिन परिश्रम किया। इसका पूर्व सञ्चालक मण्डल सभी जातियोंके प्रतिनिधियोंसे बना हुआ था। इसमें सर सैसून डेविड, सर फ्रेडरिक मौफ्ट, सर कावसजी जहांगीर, मि० आर० डी० टाटा, मि० गोवर्धन दास खटाऊ, सर लल्लूभाई सामलदास सी० आई० ई०, मि० खेतसी खेसी, से० रामनारायन हरनन्द राय रुइया, मि० जे० एच० दानी, मि० नूरदीन और सर इब्राहीम रहीम तुल्ला सी० आई०ई० थे इनके अतिरिक्त मि० ए० पी० स्ट्रींङ्गफेलो इसके मैनेजर बनाए गए। इन्होंने बैङ्ककी सफलताके लिये बहुत ही उद्योग किया। इसकी रजिस्ट्री १८८२ के कम्पनी एक्ट ६ के अनुसार हुई थी।

इसका वसूल मूलधन	२०७,००,०००,
रिजर्व फन्ड	६१,००,०००

इसके तारका पता "स्ट्रींजेन्ट" बम्बई है फो० नं० २०२१०, पो० बॉ० २२८ है।

इसकी मुख्य शाखाएँ— बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद में।

इसका बम्बईका पता—ओरियेन्टल बिल्डिंग् स्ट्रेनेड रोड है.

इस्टर्न बैंक लिमिटेड

इसका सम्बन्ध इङ्गलेन्डसे है। इसका निश्चित मूलधन २,०००००० पौण्ड है जो २,००१०० हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन १,०००,००० पौ० है और रिजर्व फन्ड ४,००,००० पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्दनमें है और इसका पता मलखी स्क्वायर बीशोप्सगेट लन्दन ई० सी० है। इसकी मशहूर शाखाएं—आमारा, बगदाद, कलकत्ता, बम्बई, करांची, कोलम्बो, मद्रास और बसरामें हैं। इसका बम्बईका पता चर्चगेट हार्नबीरोड है, तारका पता "इस्टराइट" फो० नं० २००५३ और पो० बो० नं० २११ है।

इम्पिरियल बैङ्क ऑफ वेस्टर्न इन्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता रेडीमनी मेनशन चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट है।

इम्पीरियल बैङ्क ऑफ परसिया

यह १८८९ में राजकीय चार्टर द्वारा स्थापित हुआ था। इसका वसूल मूलधन, ६५,०००० पौण्ड है। रिजर्व फण्ड ५२०,०००, पौण्ड है। मालिकोंके पास १००,००० पौण्ड है। इसकी मशहूर शाखाएं परसिया, मुल्तानाबाद, इराक, मेसोपोटामिया, बगदाद तथा बम्बईमें हैं।

इंडिया बैङ्क लिमिटेड

बैङ्क ऑफ इण्डियाका जन्म सन् १९०६ ईस्वीमें हुआ था। इसकी स्थापना सर सैसून डेवीड बेरोनेटके उद्योगसे हुई थी। आपने इसकी सफलताके लिये आजीवन प्रयत्न किया। यहां तक कि अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें भी इन्होंने इसके लिये कठिनसे कठिन परिश्रम किया। इसका पूर्व सञ्चालक मण्डल सभी जातियोंके प्रतिनिधियोंसे बना हुआ था। इसमें सर सैसून डेविड, सर फ्रेडरिक मैकैट, सर कावसजी जहांगीर, मि० आर० डी० टाटा, मि० गोवर्धन दास खटाऊ, सर लल्लूभाई सामलदास सी० आई० ई०, मि० खेतसी खेसी, से० रामनारायन हरनन्द राय रुइया, मि० जे० एच० दानी, मि० नूरदीन और सर इब्राहीम रहीम तुल्ला सी० आई०ई० थे इनके अतिरिक्त मि० ए० पी० स्ट्रोङ्गरको इसके मैनेजर बनाए गए। इन्होंने बैङ्ककी सफलताके लिये बहुत ही उद्योग किया। इसकी रजिस्ट्री १८८२ के कम्पनी एक्ट ६ के अनुसार हुई थी।

इसका वसूल मूलधन	२००,००,०००,
रिजर्व फन्ड	७६,००,०००

इसके तारका पता "स्ट्रीजेन्ट" बम्बई है फो० नं० २००१०, पो० बॉ० २३८ है।

इसकी मुख्य शाखाएँ— बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद में।

इसका बम्बईका पता—ओरियेन्टल बिल्डिंग् स्प्लेनेड रोड है,

इस्टर्न बैंक लिमिटेड

इसका सम्बन्ध इङ्गलैन्डसे है। इसका निश्चित मूलधन २,०००००० पौण्ड है जो २,००००० हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन १,०००,००० पौ० है और रिजर्व फन्ड ४,००,००० पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्डनमें है और इसका पता क्रासबी स्कायर बीशोप्सगेट लन्दन ई० सी० है। इसकी मशहूर शाखाएं—आगरा, बगदाद, कलकत्ता, बम्बई, करांची, कोलम्बो, मद्रास और बसरामें है। इसका बम्बईका पता चर्चगेट हार्नबीरोड है, तारका पता "इस्टराइट" फो० नं० २००५३ और पो० बॉ० नं० २१६ है।

इन्डस्ट्रियल बैङ्क ऑफ वेस्टर्न इन्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता रेडीमनी मेनशन चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट है।

(३) बम्बई मेसर्स गनपतराय हनुमानदास ३२५ कालबादेवी रोड—इस फर्म पर टिम्बरका व्यापार होता है तथा बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम भी होता है।

(४) रंगून—मेसर्स गणपतिराम नागरमल मुगल स्ट्रीट—इस फर्मपर टिम्बरका बहुत बड़ा व्यापार होता है इसके सिवाय बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका भी काम होता है। यहांपर श्रीयुत नागरमलजी काम करते हैं जो आपके पार्टनर हैं।

मेसर्स गाढ़मल गुमानमल

इस फर्मके मालिक प्रसिद्ध लोढ़ा परिवारके हैं। आपका मूल निवास स्थान अजमेरमें है अतएव आपका परिचय अजमेरमें दिया जायगा। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके बिन्दल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मण्डावा (जयपुर) में हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ गुलाबरायजीने की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पौत्र केदारमलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। क्योंकि सेठ गुलाबरायजीके पुत्र सेठ भूरामलजीका देहावसान पहिलेही हो गया था। सेठ केदारमलजीका जन्म संवत् १९२१ में हुआ।

आपकी ओरसे मण्डावेमें अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा एक औषधालय चल रहा है। बम्बईमें आपका एक आयुर्वेदिक विशुद्ध औषधालय भी चल रहा है। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। आपकी यहां ११ बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स बनी हुई हैं।

सेठ केदारमलजी पहिले यूनियन बैंकके डायरेक्टर थे। तथा वर्तमानमें आप सनातन धर्मावलम्बीय अग्रवाल सभाके सभापति हैं।

इस समय आपके एक पुत्र हैं, जिनका नाम कुं० कीर्तिकृष्ण है। इनके जन्मके समय आपने २ लाख रुपये दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

(१) बम्बई—गुलाबराय केदारमल कालबादेवी T. A. Yellowrose—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी, बैंकिंग, गल्ला, कपड़ा, रुई, आदिका काम होता है। कमीशन एजंसीका कार्य भी यह फर्म करती है।

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बजरंगदासजी और सेठ फूलचंदजी हैं। आप अग्रवाल जातिके तायल गोत्रीय रुकमाणी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान राजगढ़में (बीकानेर) है। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। इसके पूर्व इस फर्मपर गोपीराम भगतराम नाम पड़ता था। कलकत्तेमें इस नामसे यह फर्म ५३ वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इस फर्मकी स्थापना सेठ शंकरदासजीके हो सामने हुई थी। सेठ शंकरदासजी संवत् १८८८ में कलकत्ता आये। आपका स्वर्गवास संवत् १९३४ में हुआ। आपके सामने ही आपके पुत्र श्रीगोपीरामजी, श्रीभगतरामजी और श्री बजरंगलालजी

इम्पीरियल बैङ्क ऑफ परसिया

यह १८८९ में राजकीय चार्टर द्वारा स्थापित हुआ था। इसका वसूल मूलधन, ६५,००००० पौण्ड है। रिजर्व फण्ड ५२०,०००, पौण्ड है। मालिकोंके पास १००,००० पौण्ड है। इसकी मशहूर शाखाएं परसिया, सुलताना बाद, इराक, मेसोपोटामिया, बगदाद तथा बम्बईमें हैं।

इंडिया बैङ्क लिमिटेड

बैङ्क ऑफ इण्डियाका जन्म सन् १९०६ ईस्वीमें हुआ था। इसकी स्थापना सर सैसून डेवीड बैरोनेटके उद्योगसे हुई थी। आपने इसकी सफलताके लिये आजीवन प्रयत्न किया। यहां तक कि अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें भी इन्होंने इसके लिये कठिनसे कठिन परिश्रम किया। इसका पूर्व सञ्चालक मण्डल सभी जातियोंके प्रतिनिधियोंसे बना हुआ था। इसमें सर सैसून डेविड, सर फ्रेडरिक क्रोफ्ट, सर कावसजी जहांगीर, मि० आर० डी० टाटा, मि० गोवर्धन दास खटाऊ, सर लालूभाई सामलदास सी० आई० ई०, मि० खेतसी खेसी, से० रामनारायन हरनन्द राय रुइया, मि० जे० एच० दानी, मि० नूरदीन और सर इब्राहीम रहीम तुल्ला सी० आई०ई० थे इनके अतिरिक्त मि० ए० पी० स्ट्रीङ्गफेलो इसके मैनेजर बनाए गए। इन्होंने बैङ्ककी सफलताके लिये बहुत ही उद्योग किया। इसकी रजिस्ट्री १८८२ के कम्पनी एक्ट ६ के अनुसार हुई थी।

इसका वसूल मूलधन	२००,००,०००,
रिजर्व फन्ड	७६,००,०००

इसके तारका पता "स्ट्रीजेन्ट" बम्बई है फो० न० २००१०, पो० बो० २२८ है।

इसकी मुख्य शाखाएँ— बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद में।

इसका बम्बईका पता—ओरियेन्टल बिल्डिंग् स्प्लेनेड रोड है.

इस्टर्न बैङ्क लिमिटेड

इसका सम्बन्ध इङ्गलेन्डसे है। इसका निश्चित मूलधन २,०००००० पौण्ड है जो २,००००० हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन १,०००,००० पौ० है और रिजर्व फन्ड ४,००,००० पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्दनमें है और इसका पता क्रासबी स्क्वायर बीशोप्सगेट लन्दन ई० सी० है। इसकी मशहूर शाखाएं—आगरा, बगदाद, कलकत्ता, बम्बई, करांची, कोलम्बो, मद्रास और बसरामें हैं। इसका बम्बईका पता चर्चगेट हार्नबीरोड है, तारका पता "इस्टराइट" फो० नं० २००५३ और पो० बो० नं० २११ है।

इन्डस्ट्रियल बैङ्क ऑफ वेस्टर्न इन्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता रेटोनजी मेनशन चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट है।

स्व० सेठ गोपीरामजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

श्री० सेठ बजरंगदासजी (गोपीराम रामचन्द्र)

श्री० सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

स्व० सेठ रामचन्द्रजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

इम्पीरियल बैङ्क ऑफ परसिया

यह १८८९ में राजकीय चार्टर द्वारा स्थापित हुआ था। इसका वसूल मूलधन, ६५,०००० पौण्ड है। रिजर्व फण्ड ५२०,०००, पौण्ड है। मालिकोंके पास १००,००० पौण्ड है। इसकी मशहूर शाखाएं परसिया, सुल्ताना बाद, इराक, मेसोपोटामिया, बगदाद तथा बम्बईमें हैं।

इंडिया बैङ्क लिमिटेड

बैङ्क ऑफ इण्डियाका जन्म सन् १९०६ ईस्वीमें हुआ था। इसकी स्थापना सर ससून डेवीड बैरोनेटके उद्योगसे हुई थी। आपने इसकी सफलताके लिये आजीवन प्रयत्न किया। यहां तक कि अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें भी इन्होंने इसके लिये कठिनसे कठिन परिश्रम किया। इसका पूर्व सञ्चालक मण्डल सभी जातियोंके प्रतिनिधियोंसे बना हुआ था। इसमें सर ससून डेविड, सर फ्रेडरिक लोफ्ट, सर कावसजी जहांगीर, मि० आर० डी० टाटा, मि० गोवर्धन दास खटाऊ, सर लाल्लुभाई सामलदास सी० आई० ई०, मि० खेतसी रुंसी, से० रामनारायन हरनन्द राय रुइया, मि० जे० एच० दानी, मि० नूरदीन और सर इब्राहीम रहीम तुल्ला सी० आई०ई० थे इनके अतिरिक्त मि० ए० पी० स्ट्रीङ्गकेलो इसके मैनेजर बनाए गए। इन्होंने बैङ्ककी सफलताके लिये बहुत ही उद्योग किया। इसकी रजिस्ट्री १८८२ के कम्पनी एक्ट ६ के अनुसार हुई थी।

इसका वसूल मूलधन	२००,००,०००,
रिजर्व फन्ड	७६,००,०००

इसके तारका पता "स्ट्रीजेन्ट" बम्बई है फो० न० २००१०, पो० बॉ० २३८ है।

इसकी मुख्य शाखाएँ— बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद में।

इसका बम्बईका पता—ओरियेन्टल बिल्डिंग् स्प्लेनेड रोड है,

इस्टर्न बैंक लिमिटेड

इसका सम्बन्ध इङ्गलेन्डसे है। इसका निश्चित मूलधन २,०००००० पौण्ड है जो २,००००० हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन १,०००,००० पौ० है और रिजर्व फन्ड ४,००,००० पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्दनमें हैं और इसका पता क्रासवी स्कायर बीशोप्सगेट लन्दन ई० सी० है। इसकी मशहूर शाखाएं—आमरा, बगदाद, कलकत्ता, बम्बई, करांची, कोलम्बो, मद्रास और बसरतमें है। इसका बम्बईका पता चर्चगेट हार्नबीरोड है, तारका पता "इस्टराइट" फो० नं० २००५३ और पो० बो० नं० २१६ है।

इन्डस्ट्रियल बैङ्क ऑफ वेस्टर्न इन्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता रेडीमनी मैनशन चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट है।

५ फिरोजाबाद—मेसर्स गोवीराम रामचन्द्र T. A. Tikamani	यहांपर कमीशन सम्बन्धी काम होता है।
६ सिरसागंज—(मैनपुरी) मेसर्स गोवीराम रामचन्द्र T. A. Tikamani	यहांपर गल्ले तथा रुईका प्रधान व्यापार होता है।
७ मैनपुरी—मेसर्स गोवीराम रामचन्द्र	यह फर्म रुई तथा गल्ला खरीदकर फिरोजाबाद भेजती है।
८ राजगढ़ [बीकानेर] मेसर्स गोवीराम बजरंगदास	यहां आपका खास मकान है तथा जागीरदारों और तअल्लुके-दारोंसे लेनदेन होता है।

मेसर्स चेनीराम जेसराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजीके पुत्र श्री घनश्यामदासजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं।

इस खानदानका मूल निवासस्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) में है। इस दुकानको यहांपर स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। पहिले पहिल इस फर्मको सेठ नाथूरामजीने स्थापित किया। आपके बाद क्रमशः सेठ रामनारायणजी, सेठ किशनदयालजी तथा सेठ सीतारामजीने इस फर्मका संचालन किया। सेठ सीतारामजीने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। आपने जनतामें अच्छी प्रसिद्धि पाई। इस फर्मकी ओरसे बम्बई ठाकुर द्वारमें हिन्दू गृहस्थोंके ठहरने और ब्याह शादीके कार्योंके लिये वाड़ी बनवाई हुई है। आपकी ओरसे बम्बईमें सीताराम पोद्दार बालिका-विद्यालय, मारवाड़ी औषधालय, मारवाड़ी सम्मेलन तथा बिसाऊमें, बिसाऊ कन्या पाठशाला, लायब्रेरी, डिस्पेंसरी तथा एक लड़कोंका स्कूल चल रहा है। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ।

सेठ सीताराम, यूनियन बैंकके डायरेक्टर थे तथा इसकी स्थापना भी आपने ही की थी। इसके अतिरिक्त आप एडवांस मिल तथा आर० डी० ताता कम्पनीके डायरेक्टर थे।

इस फर्मका संबन्ध टाटाकी मिलोंसे बहुत पूर्वसे—ही सेठ नसरवानजी टाटाके समयसे है। सेठ नाथूरामजी उनके साथ भागीदारीमें चीनके साथ अफीमका व्यापार करते थे। इस प्रकारकी व्यापारिक हिस्सेदारीका सम्बन्ध सेठ किशनदयालजीके देहावसानके पश्चात्‌तक जारी रहा।

इस समय इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

१ बम्बई—मेसर्स चेनीराम जेसराज, कालबादेवी रोड T. A. Swarga,	यहां टाटा संसकी इंप्रेस मिल नागपुर, टाटामिल बम्बई स्वदेशी मिल नं० १ तथा २ बंबई, एडवांस मिल अहमदाबाद इत्यादि मिलोंकी भारतभरमें कपड़ा बेचनेकी सोल एजन्सी हैं। इसके अतिरिक्त यहांपर बेंकिङ्ग एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट तथा काटनका बिजिनेस भी होता है।

ठ रामनारायणजी पोद्दार (चैनीराम जेसराज) बम्बई

१०. सेठ किशनदयालजी पोद्दार (चैनीराम जेसराज)

सीतारामजी पोद्दार (चैनीराम जेसराज) बम्बई

श्री० घनश्यामदासजी पोद्दार (चैनीराम जेसराज) बम्बई

दी० बा० सेठ [illegible]जी (खुशालचन्द गोपालदास) बम्बई

सेठ रुकमानन्दजी (गणपतराय रुकमानन्द) बम्बई

[illegible]जी M.L.A. (मु० गो० बंबई)

सेठ राधाकृष्णजी (गणपतराय रुकमानन्द) बम्बई

बम्बई तक बढ़ाया। सेठ चतुर्भुजजीके पश्चात् उनके पौत्र सेठ ताराचन्द्रजीके पुत्र सेठ पुरुषोत्तमलजी एवं हरसामलजीने इस फर्मके व्यापारको और भी विशेष उत्तेजन दिया। उस समय मालवा, बम्बई और मारवाड़ आदि स्थानोंमें इस फर्मकी सैकड़ों शाखाएं थीं। सुदूर चीन देशमें भी इस फर्मकी शाखा स्थापित की गई थी। उस समय दोनों भाई रामगढ़ में ही रहकर सब दुकानोंका संचालन करते थे।

सेठ पुरुषोत्तमजीने मथुरामें राधागोविन्ददेवजीका मन्दिर बनवाया, और उसके स्थाई प्रबंधके हेतु बहुतसा गहना और जमींदारी खरीदकर मन्दिरको भेंट किया। इसके अतिरिक्त आपने रामगढ़में बद्रीनारायणजीका मन्दिर, धर्मशालाएं, कुएं और तालाब बनवाये। आपका देहावसान संवत् १९२१ में हुआ। आपने इस कुटुंबमें अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

सेठ पुरुषोत्तमजीके पश्चात् उनके पुत्र सेठ घनश्यामदासजी व्यवसायिक कार्य देखते रहे, इन्होंने भी काशी, मथुरा, प्रयाग आदि स्थानोंपर क्षेत्र (सदावर्त) एवं पाठशालाएं जारी कीं। आपका स्वर्गवास संवत् १९४० में हुआ।

सेठ घनश्यामदासजीके पांच पुत्रोंमेंसे (१) सेठ जयनारायणजी (२) सेठ लक्ष्मीनारायणजी और (३) सेठ राधाकृष्णजीका देहावसान हो गया है। आपके चौथे पुत्र सेठ केशवदेवजी वर्तमानमें अपना सब व्यापारिक भार अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहे हैं। सेठ जयनारायणजीका देहावसान, अपने पिताश्री के देहावसानके ५ दिन पूर्वही हो गया था। इन पांचों भाइयोंकी धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रुचि रही है। सेठ लक्ष्मीनारायणजीने मथुरामें बरसाना और नन्दगांवके बीच प्रेम निकुंज नामक स्थानमें श्री राधागोविन्दचन्द्रदेवजीका मन्दिर बनवाया और वहां बहुत अधिक मूल्यके आभूषण भेंटकर सदावर्त, गौशाला, क्षेत्र, और संस्कृत पाठशाला स्थापित की जो अबतक चल रही हैं। आपने अपने जीवनमें मन्दिरों एवं धार्मिक संस्थाओंमें करीब ५ लाख रुपयोंकी संपत्ति दान की है। आपका देहावसान संवत् १९४८ में हो गया। सेठ राधाकृष्णजी अन्तिम समयमें चित्रकूटमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका संवत् १९७३ में देहावसान हुआ। सेठ केशवदेवजी तथा सेठ राधाकृष्णजीने इस फर्मके वर्तमान व्यापारको अच्छा बढ़ाया। बर्मा आइल कम्पनीकी भारतभरकी एजेंसी आपहीने स्थापित की और उसके प्रबंधके लिये कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं करांचीमें दुकानें स्थापित कीं। आप दोनों भाइयोंका व्यवसाय अभीतक शामिल ही चला आ रहा है। इस समय सेठ केशवदेवजी सब व्यापारिक कार्य अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहे हैं। सेठ मुरलीधरजीने अपनी २१ वर्षकी आयुमें स्त्रीके देहावसान हो जानेपर भी द्वितीय विवाह नहीं किया। तथा इस समय सांसारिक कार्योंसे विरक्त होकर आप गङ्गा तटपर निवास करते हैं।

राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार (नागचन्द घनश्यामदास)

श्री० कुंवर [illegible]लालजी पित्ती (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर गोवर्द्धनलालजी पित्ती (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० सेठ केदारमलजी (मे० गुलाबराय केदारमल) बम्बई

कुंवर कीर्तिकृष्णजी S/o सेठ केदारमलजी बम्बई

बंगला (मे० गुलाबराय केदारमल) बम्बई

स्थानमें दुकान की। कुछ समय पश्चात् हैदराबादमें भी आपकी दुकान स्थापित हो गई। उस समय इस फर्मपर शिवदासराम जेसीरामके नामसे व्यापार चलता था। संवत् १८८० में आपने बंबई, कलकत्ता, इन्दौर इत्यादि भारतके भिन्न २ प्रान्तोंमें अपने व्यापारको बढ़ाया और दुकानें कायम की। उसी समय बरार प्रान्तके एलचपुर, चिचकुंडा, अमरावती, खामगांव आदि स्थानोंमें दुकानें स्थापित की गईं। उस समय इन सब फर्मोंपर बड़ा व्यापार अफीम, गल्ला, चांदी और हुंडी होता था। सेठ शिवदासरामजीका देहावसान संवत् १९०० के करीब हुआ। थोड़े ही समयमें इस फर्मका इतना व्यापार फैल गया कि जहां २ आपकी फर्में थी वहां २ के आप प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाने लगे। उस समय बरार प्रांतकी सब तहसील इस फर्मपर ही जाती थी, एवं इसके द्वारा सरकारको दी जाती थी। सेठ जेसीरामजीके पश्चात् इस फर्मके कामको उनके पुत्र सेठ शिवनारायणजीने सम्हाला।

सेठ जेसीरामजीके भतीजे सेठ शिवलालजी एवं उनके पौत्र सेठ कृष्णलालजी (सेठ शिवनारायणजीके पुत्र) जो उस समय इस फर्मके मालिक थे, अलग २ हो गये। सेठ कृष्णलालजीने अपनी फर्म शिवदासराम जेसीराम, एवं सेठ शिवलालजीने शिवदासराम अबीरचन्दके नामसे स्थापित की। स्थान स्थानपर यह दुकानें संवत् १९०१ के वैशाख द्वितीय सुदी ६ के दिन एवं दक्षिणमें संवत् १९०९ की फागुन बदी ९ के दिन अलग २ हुईं। (सेठ कृष्णलालजीका देहावसान संवत् १९११ में हुआ। आपके पश्चात् आपकी फर्मका काम आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी एवं सेठ मदनलालजी (मोहनलालजीके पुत्र) ने सम्हाला—मोहनलालजीका देहावसान संवत् १९३२ में एवं मदनलालजीका १९७२ में हुआ।)

इस मशहूर फर्मके मालिक सेठ शिवलालजीके यहां सेठ मोतीलालजी साहब संवत् १९०२ में नागौरसे गोद आये।

सेठ शिवलालजीकी दानधर्मकी ओर विशेष रुचि थी। आपने मद्रास प्रान्तमें श्री रंगजी, श्री वेङ्कटजी आदि स्थानोंमें धर्मशालाएं बनवाईं, एवं सदाव्रत जारी किये। नागौरमें आपने सदाव्रत जारी किया। पुष्करमें आपने एक धर्मशाला बनवाई। सेठ शिवलालजीका निजाम सरकार बहुत सम्मान करते थे। सम्वत् १९१४ (सन् १८५७) के भारत व्यापी गदरमें इन्होंने सरकारको अच्छी सेवा की, इसके लिये आपको कई अच्छे प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए थे, एवं सरकारने आपको पालिडँवालमें जमीन देकर सम्मानित किया था। आपका देहावसान संवत् १९१९ में हुआ।

आपके पुत्र राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीका जन्म संवत् १८९६ में नागौरमें हुआ था। आपने इस फर्मके कार्यका अच्छा संचालन किया। आपने बम्बईमें अपने बैङ्किङ्ग कार्यको बढ़ाया, एवं बम्बई तथा पूनेमें दो मिलें खरीदीं। इसके अतिरिक्त आपने स्थाई सम्पत्ति भी अच्छी एकत्रित की। आपको एवं आपके पुत्र सेठ बंशीलालजी (वर्तमान मालिक) को संवत् १९५२ में निजाम सरकारने राजा बहादुरकी उपाधिसे सम्मानित किया।

दुकानके कामको सम्हालते थे। सेठ गोपीरामजी तथा सेठ भगतरामजी संवत् १९२३ में व्यापार करनेके लिये कलकत्ता आये। यहां आकर आपने दलालीका कार्य शुरू किया। पश्चात् संवत् १९३१ में फर्मकी स्थापना की। संवत् १९७२ में सेठ गोपीरामजी तथा बजरंगलालजी से सेठ भगतरामजी अलग हो गये। सेठ गोपीरामजीका देहावसान संवत् १९७३ में काशीजीमें जन्माष्टमीको हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ फूलचन्दजी तथा सेठ बजरंगलालजीके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी इस फर्मके कार्यका संचालन करने लगे। लेकिन सेठ रामचन्द्रजीका देहावसान संवत् १९७८ में २६ वर्षकी आयुमें ही हो गया। वर्तमानमें इस फर्मका सारा भार सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी सम्हालते हैं। आपने इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

दोनों भाई सेठ गोपीरामजी, सेठ भगतरामजी एवम् सेठ बजरंगलालजीके द्वारा जो सार्वजनिक कार्य हुए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—बनारसके संस्कृत टिकमाणी कालेजमें जो सेठ गोपीरामजीके स्मारक स्वरूप बनाया है, करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति लगी है। इस समय इसका सारा कार्यभार सेठ फूलचन्दजी सम्हालते हैं। राजगढ़के एक मन्दिरमें आपकी ओरसे करीब ८००००) की लागत लगी है। आपकी ओरसे बहुतसी गोचर भूमि छुड़वाई गई है। राजगढ़में आपकी ओरसे २ धर्मशालाएं तथा ६ कुएं भी बने हुए हैं। आप दोनोंही भाइयोंकी ओरसे राजगढ़ पींजरापोलमें २१ हजार रुपया दिया गया है। आपकी ओरसे एक घंटाघर भी राजगढ़में बना हुआ है। इसके अतिरिक्त सेठ फूलचन्दजीने प्रायवेट रूपसे २५ हजार रुपया और पिंजरापोलमें दिया है।

कलकत्तेमें भगड़ा कोठीके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें बनी हुई है। जिसका फोटो इस पुस्तकमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—हे० आ०—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Tikamani—इस फर्म पर बारदान तथा हेसियनका व्यापार होता है। बारदानकी कई अच्छी २ कंपनियोंसे आपका व्यापारिक संबंध है। पेरिसकी प्रसिद्ध कपड़ेकी कंपनी कान एण्ड कम्पनीके आप मुत्सद्दी हैं। बंगालके अन्तर्गत धान्सडेहामें 'गड़रिया कुआरी' नामसे आपकी एक कोयलेकी खान है।

बम्बई—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र टिकमाणी बिल्डिङ्ग कालबादेवी रोड, T. A. Tikamani—यहां हुंडी चिट्ठी, रुई, गल्ला, सिल्व्हर आदिका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त सब प्रकारकी आढ़तका काम भी यहां होता है। इस फर्मको मुनीम गंगारामजीने संवत् १९४६ में स्थापित किया था। बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आपका अच्छा सम्मान था। आप मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके आनरेरी सेक्रेटरी भी रहे थे।

सिराजगंज—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। यहां पाटका व्यापार तथा आढ़तका भी काम होता है।

[illegible]—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां बैंकिङ्ग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

लक्ष्मणदासजी डागा (मुनीम ग०व० बंशीलाल अबीरचंद) बंबई.

श्री रामगोपालजी (मुनीम ग०व० सरूपचंद हु०) बम्बई

मुनीम गंगारामजी (गोपीरतन रामचन्द्र) बम्बई,

सिलुआका बंगला कलकत्ता (शिवप्रताप रामनारायण)

२ अमृतसर—मेसर्स रामनारायण किशनदयाल।	यहां टाटा संसकी मिलोंका कपड़ा बेचा जाता है।
३ कानपुर ,,	
४ जयपुर ,,	
५ देहली मे० माथराम रामनारायण	यहां आपकी एक पोद्दार जीनिंग फेक्टरी है।
६ उज्जैन ,,	कपड़ेका व्यापार होता है।
७ मुजफ्फरपुर ,,	
८ गुरुहट्टी बाल.घाट ,,	यहां आपकी एक मेंगनीज (फौलाद)की खान है।
९ बम्बई—नाथूराम रामनारायण धर्मराज गली मूलजी जेठा मारकीट	यहां सिका बंध कपड़ेकी गांठोंका व्यापार होता है।
१० बम्बई—नाथूराम रामनारायण चम्पागली, मूलजी जेठा मारकीट	यहांपर खुदरा कपड़ेका व्यापार होता है।
११ बम्बई—खेमीराम केशराज पार्क बिल्डिंग फोर्ट	यहां एक्सपोर्ट-इम्पोर्टका काम होता है।
१२ बम्बई—मे० खेमीराम केसराज टाटा बिल्डिंग फोर्ट	यहां टाटा संसकी एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स जुहारमल मूलचन्द सोनी

इस प्रतिष्ठित फर्मका हेड आफिस अजमेर है। बंबईकी फर्मका पता—अजमेरका पाटिया, कालबादेवी रोड है। तथा आफिसका पता—जुहारपैलेस, कालबादेवी है। यह पैलेस आपहीका है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। बंबईमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा एक्सपोर्ट इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स तिलोकचंद कल्याणमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास-स्थान इन्दौरमें है। यहांकी फर्मका पता कल्याण भवन, कालबादेवी रोड है। यह फर्म यहांके हुकुमचंद मिलकी एजंट है। इसका विशेष परिचय इन्दौर (सेंट्रल-इण्डिया) में चित्रोंसहित दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास

इस मशहूर फर्मका स्थापन सेठ भगवतीरामजीके हाथोंसे हुआ था उस समय आपका कुटुम्ब चूरूमें रहता था। महाराज सीकरके बहुत आग्रहसे सेठ चतुर्भुजजी (भगवती रामजीके पुत्र) चूरू छोड़कर रामगढ़में निवास करने लग गये। उस समय रामगढ़के स्थानपर लोसा नामक एक गांव था, वहां इन्होंने ही सर्व प्रथम अपनी दो हवेलियां बनवाईं।

सेठ चतुर्भुजजीने प्रथम मिर्जापुरमें अपनी दूकान स्थापित की और वहांसे ३ बारको मुसाफिरीमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। धीरे २ इस कुटुम्बने अपने व्यापारको मालवा, मेवाड़, और

इस दुकानके संचालक मुनीम श्रीयुत लक्ष्मणदासजी डागा हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आप मारवाड़ी जातिके अग्रगण्य सज्जनोंमेंसे हैं। मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके पूर्व जो पंच सराफ एसोसिएसन नामक संस्था थी उसके संस्थापक आपही थे। इसके अतिरिक्त मारवाड़ी चेम्बरके मूल संस्थापकोंमेंसे भी आप एक प्रधान व्यक्ति हैं। पहले आप इसके वाइस चेअरमेन भी रहे हैं। बुलियन मर्चेण्ट एसोसिएशनके स्थापकोंमें भी आपका नाम अग्रगण्य है। इस समय आप उसके वाइस चेअरमेन हैं। मारवाड़ी विद्यालय और मारवाड़ी सम्मेलनके भी आप सभापति रह चुके हैं। वर्तमानमें यूनियन बैंक ऑफ् इंडिया, यूनिवर्सल फायर इन्स्युरेन्स कम्पनी, मॉडल मिल नागपुर, बरारमिल बड़नेरा, औरङ्गाबाद मिल और बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, बाम्बे स्टाक एक्सचेंज इत्यादि संस्थाओंके आप डाइरेक्टर हैं। बाम्बे पंसेञ्जर रिलिफ् एसोसिएशनके आप वाइस चेअरमेन हैं। मतलब यह कि बम्बईमें आप बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति हैं।

मेसर्स बच्छराज जमनालाल बजाज

इस फर्मके वर्तमान मालिक भारत प्रसिद्ध देशभक्त त्यागमूर्त्ति से० जमनालालजी बजाज हैं। इस समय सेठ जमनालालजीका कुछ भी परिचय लिखना सूर्य्यको दीपक दिखाना है। आपके नामसे आज भारतका बच्चा २ परिचित है। आपके त्यागमय जीवनसे भारत-भूमिका एक २ रजःकण गौरवान्वित हो रहा है।

सेठ जमनालालजी उन महापुरुषोंमेंसे हैं जिन्होंने एक साधारण स्थितिमें जन्म लेकर, अपनी कर्मवीरतासे लाखों रुपयेकी दौलत उपार्जन की और फिर बड़ी उदारताके साथ उसे अपनी जातिके लिए और अपने देशके लिए अर्पण कर रहे हैं।

आपका जन्म सीकरके समीपवर्त्ती एक छोटेसे गांवमें श्रीकनीरामजी बजाजके यहां हुआ था। श्रीयुत कनीरामजी बहुतही साधारण स्थितिके पुरुष थे। जब आप पांच वर्षके हुए तब आप वर्धाके सेठ बच्छराजजीके पुत्र स्व० रामधनजीके नामपर दत्तक लाए गए। सेठ बच्छराजजी बड़े प्रतिष्ठित, धनाढ्य और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आप रायबहादुर, आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल मेम्बर थे। इस खानदानमें आजानेपर श्रीयुत जमनालालजीको अपना विकास करनेका अच्छा मौका मिला। उचित अवसर मिलनेके कारण आपकी प्रतिभा धीरे २ चमकती गई। गवर्नमेण्टमें, तथा व्यापारिक समाजमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। सन् १९०८ में सी० पी० की गवर्नमेन्टने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट और सन् १९१८ में भारत गवर्नमेन्टने आपको रायबहादुरकी सम्माननीय उपाधिसे विभूषित किया, मगर ईश्वरने आपको इन मोहक इन्द्रजालोंमें फंसनेके लिए पैदा नहीं किया था। कुदरत

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ केशवदेवजी और उनके पुत्र कुंवर श्रीनिवासजी एवं कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार, एवं स्वर्गीय सेठ राधाकृष्णजीके पुत्र सेठ रघुनाथ प्रसादजी, सेठ जानकी प्रसादजी, सेठ लक्ष्मण प्रसादजी और सेठ हनुमान प्रसादजी हैं।

कुंवर श्रीनिवासजी तथा कुंवर बालकृष्णलालजी दोनों सज्जन बड़े समाजसेवी एवं सुधरे हुए विचारोंके हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस समाजकी उन्नतिमें आप अच्छी दिलचस्पी लेते रहते हैं। हालहीमें बम्बईमें जो अग्रवाल महासभा हुई थी, उसकी स्वागतकारिणीके सभापति कुँवर बालकृष्ण लालजी थे।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई-मेसर्स ताराचन्द घनश्याम-दास मारवाड़ी बाजार T. A. seth, poddar	इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, और बैंकिंगका व्यापार होता है तथा यहां बर्माआइल कंपनीकी भारतभरकी सोल एजंसी हैं। इस कंपनीका भारतभरमें जितना तेल खपता है वह सब इसी फर्मके द्वारा सप्लाई होता है। भारतके प्रायः सभी बड़े २ रेलवे स्टेशनोंपर इस फर्मकी शाखाएं तथा एजन्सियां कायम हैं।
२ कलकत्ता—मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar १८ मलिकस्ट्रीट	इस फर्म पर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और बर्मा कम्पनीकी सोल एजन्सीका काम होता है।
३ मद्रास—मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar	"
४ करांची - मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास T. A. Poddar	"

मेसर्स नैनसुखदास शिवनारायण

इस फर्मके मालिक श्रीजयनारायणजी डागा बीकानेर रहते हैं। वहीं आपका हेड आफिस है। यहांकी फर्मका पता—केदार भवन, कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग हुंडीचिट्ठी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इस फर्मका संचालन मुनीम जगन्नाथ प्रसादजी पुरोहित करते हैं। इस फर्मका विशेष हाल बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है।

राजा बहादुर वंशीलाल मोतीलाल

इस सुप्रसिद्ध फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ वंशीलालजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान नागोर में (मारवाड़) है।

सर्व प्रथम इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ शिवदत्तरायजी तथा उनके पुत्र सेठ जेसीरामजीने लगभग संवत् १८३१ में, नागोरसे आकर जिला बीड़ (निजाम हैदराबाद) के जोगी पेंठ नामक

रा० बा० सेठ मोतीलालजीके पश्चात इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंसीलालजी हैं। आपका जन्म संवत् १९१८ की पौष सुदी १२ को सहाजपुर (मेवाड़) में हुआ, एवं आप संवत् १९२४ के मगसर मासमें हैदराबादकी मशहूर फर्मके मालिक राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीके यहां गोद लाये गये। सेठ बंसीलालजी १८ वर्षकी आयुसे ही व्यापार एवं राज दरबारका कार्य करने लगे। प्रारम्भमें करीब १५ वर्षोंतक आपने तालुकेदारीका सरकारी काम किया था। वर्तमानमें आप हरिद्वारमें एक अच्छी धर्मशाला बनवा रहे हैं जिसकी जमीन ५१०००) में ली गई है। आपने २ साल पूर्व करीब ५० हजार रुपया लगाकर श्री विष्णुयज्ञ किया था। उसमें श्रीमद् भागवत, एवं वाल्मिकी रामायणके १०८ पारायण कराये थे। रा० बा० सेठ बन्सीलालजीका हैदराबाद राज्यमें अच्छा सम्मान है। निजाम सरकारके सम्मुख आपको कुरसी मिलती है। इसके अतिरिक्त वहांके रईस एवं जागीरदार भी आपका अच्छा सम्मान करते हैं।

इस फर्मकी बम्बई, अजमेर, हैदराबाद आदि स्थानोंपर अच्छी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल रेसिडेंसी बाजार हैदराबाद (दक्षिण) — इस फर्मपर बैङ्किंग, हुन्डी चिट्ठी, स्टेटमार्गेज एवं जवाहरात का व्यापार होता है।

२ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल बेगम बाजार हैदराबाद — यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

३ राजा बहादुर बन्सीलाल मोतीलाल कालबादेवी रोड बम्बई — यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इस समय आपके तीन बड़े पुत्र श्री सेठ गोविन्दलालजी, श्री सेठ मुकुन्दलालजी, एवं सेठ नारायणलालजी अपना अलग २ व्यापार कर रहे हैं। एवं आपके दो छोटे पुत्र श्री पन्नालालजी एवं श्री गोवर्द्धनलालजी आपके साथ हैं।

मेसर्स बन्सीलाल अबीरचन्द

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। बम्बईमें आपकी फर्मका पता मारवाड़ी बाजार, शेखमेमन स्ट्रीट है। यहां बैङ्किंग तथा हुन्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। यहींपर आपकी एक कम्पनी है जिसपर रुई आदिका विलायत एक्सपोर्ट होता है और कई वस्तुएं विलायतसे यहां आती हैं। आपका विशेष परिचय बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है। यहांका तारका पता Raibansi. है।

रा० बा० सेठ मोतीलालजीके पश्चात इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी हैं। आपका जन्म संवत् १९१८ की चैत सुदी १२ को जहाजपुर (मेवाड़) में हुआ, एवं आप संवत् १९२४ के अगहन मासमें हैदराबादकी मशहूर फर्मके मालिक राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीके यहां गोद लाये गये। सेठ बंशीलालजी १८ वर्षकी आयुसे ही व्यवसाय एवं राज दरबारका कार्य करने लगे। प्रारम्भमें करीब १५ वर्षोंतक आपने तालुकेदारीका सरकारी काम किया था। वर्तमानमें आप हरिद्वारमें एक अच्छी धर्मशाला बनवा रहे हैं जिसकी जमीन ५१०००) में ली गई है। आपने २ साल पूर्व करीब ५० हजार रुपया लगाकर श्री विष्णुयज्ञ किया था। उसमें श्रीमद् भागवत, एवं बाल्मिकी रामायणके १०८ पारायण कराये थे। रा० बा० सेठ बन्सीलालजीका हैदराबाद राज्यमें अच्छा सम्मान है। निजाम सरकारके सम्मुख आपको कुरसी मिलती है। इसके अतिरिक्त वहांके रईस एवं जगीदार भी आपका अच्छा सम्मान करते हैं।

इस फर्मकी बम्बई, अजमेर, हैदराबाद आदि स्थानोंपर अच्छी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल रेसिडेंसी बाजार हैदराबाद (दक्षिण)	इस फर्मपर बैङ्किग, हुन्डी चिट्ठी, स्टेटमार्गेज एवं जवाहरात-का व्यापार होता है।
२ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल बेगम बाजार हैदराबाद	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।
३ राजा बहादुर बन्सीलाल मोती-लाल कालबादेवी रोड बम्बई	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इस समय आपके तीन बड़े पुत्र श्री सेठ गोविन्दलालजी, श्री सेठ मुकुन्दलालजी, एवं सेठ नारायनलालजी अपना अलग २ व्यापार कर रहे हैं। एवं आपके दो छोटे पुत्र श्री पन्नालालजी एवं श्री गोवर्द्धनलालजी आपके साथ हैं।

मेसर्स बन्सीलाल अबीरचन्द

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। बम्बईमें आपकी फर्मका पता मारवाड़ी बाजार, शेखमेमन स्ट्रीट है। यहां बैङ्किग तथा हुन्डी चिट्ठीका व्यापार होता है। यहींपर आपकी एक कम्पनी है जिसपर रुई आदिका विलायत एक्सपोर्ट होता है और कई वस्तुएं विलायतसे यहां आती हैं। आपका विशेष परिचय बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है। यहांका तारका पता Raibansi. है।

व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त बनारस, धुलानाला पर आपकी ओरसे एक बड़ी विशाल और सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। हिंगोली और नारनोलमें भी आपकी एक २ धर्मशाला बनी हुई है। इसके अतिरिक्त तिलक-स्वराज्य-फंड, अग्रवाल जातीय कोष, मारवाड़ी विद्यालय कलकत्ता, तथा विशुद्धानन्द अस्पताल कलकत्तामें भी आपने अच्छी आर्थिक सहायता पहुंचाई है।

इस समय दुकानके संचालकोंमें सेठ रामभगतजीके पुत्र सेठ हरकिशनदासजी सबसे बड़े हैं। आप बड़ी शांत-प्रकृतिके पुरुष हैं। सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलीचंदजी और सेठ वेणी प्रसादजी, सेठ मामराजजीके पौत्र हैं। आप तीनों ही बड़े योग्य और सज्जन हैं। श्रीयुत दुलीचंदजी के हाथोंसे इस फर्मके अन्दर कई नये २ कार्यों की तरक्की हुई है। आप बड़े उदार, उत्साही एवम् व्यापार निपुण पुरुष हैं। श्रीयुत वेणीप्रसादजी डालमियां भी बड़े उत्साही, नवयुगके नवीन विचारोंके पोषक और सच्चे कार्यकर्ता हैं। आप इस समय मारवाड़ी चेम्बर आफ कॉमर्सके प्रसीडेन्ट तथा ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन और सेन्ट्रल बैंक आफ़ इंडियाके डायरेक्टर हैं। गतवर्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके आप सेक्रटरी रह चुके हैं। इसी प्रकारके और भी सार्वजनिक कार्योंकी ओर आपका बहुत प्रेम है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड-आफिस, बम्बई—मेसर्स मामराज रामभगत, मुम्बादेवी T.A.dalmija	इस फर्मपर रुई और गल्लेका प्रधान व्यवसाय होता है। बैंकिंग और कमीशन एजंसीका कामभी यह फर्म करती है। इस समय इस फर्मका काम निम्नाङ्कित विभागोंके द्वारा होता है।
बम्बई—मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत	इस विभागमें रुईका जत्था और कमीशन एजंसीका कार्य होता है। इसके अधीन बम्बई प्रान्तमें कई स्थानोंपर शाखाएं है। खामगांव और चांदामें २ जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी इसकी ओरसे चल रही है। इसी फर्मकी एक शाखा जापान-कोबी बन्दरमें है। यहांसे जापान तथा यूरोपके दूसरे देशोंको रुईका एक्सपोर्ट होता है इस दुकानमें इन्दौरके सेठ सर हुकुमचन्दजीका साझा है।
बम्बई—मेसर्स मनराज बसन्तलाल	इस फर्मपर गल्लेकी वखारका व्यापार होता है। गल्लेकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है यह फर्म चीनके कियांगवान नामक प्रसिद्ध शक्करके चीनी व्यवसायीकी बम्बईमें सोल ग्यारंटर है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता, कानपुर, करांची आदि मुख्य २ भारतीय व्यापारी केन्द्रोंमें भी आपकी फर्म्स खुली हुई हैं। इन चारों फर्मों के अधीन यू० पी०, पंजाब, बरार और निजाम हैदराबादके भिन्न २ स्थानोंमें आपकी लगभग ४० शाखाएं भिन्न २ नामोंसे चल रही हैं।

रा० बा० सेठ मोतीलालजीके पश्चात इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंसीलालजी हैं। आपका जन्म संवत् १९१८ की चैत सुदी १२ को जहाजपुर (मेवाड़) में हुआ, एवं आप संवत् १९२४ के मगसर मासमें हैदराबादकी मशहूर फर्मके मालिक राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीके यहां गोद लाये गये। सेठ बंसीलालजी १८ वर्षकी आयुसे ही व्यापार एवं राज दरबारका कार्य करने लगे। प्रारम्भमें करीब १५ वर्षों तक आपने बालूके घाटेका सरकारी काम किया था। वर्तमानमें आप हरिद्वारमें एक अच्छी धर्मशाला बनवा रहे हैं जिसकी जमीन ५१०००) में ली गई है। आपने २ साल पूर्व करीब ५० हजार रुपया लगाकर भी विष्णुयज्ञ किया था। इसमें श्रीमद् भागवत, एवं वाल्मिकी रामायणके १०८ पारायण कराये थे। रा० बा० सेठ बन्सीलालजीका हैदराबाद दरबारमें अच्छा सम्मान है। निजाम सरकारके सम्मुख आपको कुरसी मिलती है। इसके अतिरिक्त यहांके रईस एवं जागीरदार भी आपका अच्छा सम्मान करते हैं।

इस फर्मकी बम्बई, अजमेर, हैदराबाद आदि स्थानोंपर अच्छी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ राजा बहादुर मोतीलाल बन्सीलाल रेसिडेंसी बाजार हैदराबाद (दक्षिण) — इस फर्मपर बैंकिंग, हुन्डी चिट्ठी, स्टेटमार्गेज एवं जवाहरात का व्यापार होता है।

२ राजाबहादुर मोतीलाल बन्सीलाल बेगम बाजार हैदराबाद — यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

३ राजा बहादुर बन्सीलाल मोतीलाल कालबादेवी रोड बम्बई — यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इस समय आपके तीन बड़े पुत्र श्री सेठ गोविन्दलालजी, श्री सेठ मुकुन्दलालजी, एवं सेठ नारायणलालजी अपना अलग २ व्यापार कर रहे हैं। एवं आपके दो छोटे पुत्र श्री पन्नालालजी एवं श्री गोवर्द्धनलालजी आपके साथ हैं।

मेसर्स घन्सीलाल अबीरचन्द

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। बम्बईमें आपकी फर्मका पता मारवाड़ी बाजार, शेखमेमन स्ट्रीट है। यहां बैंकिंग तथा हुन्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। यहींपर आपकी एक कम्पनी है जिसपर रुई आफ्रिका विलायत एक्सपोर्ट होता है और कई वस्तुएं विलायतसे यहां आती हैं। आपका विशेष परिचय बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है। यहांका तारका पता Raibansi. है।

झगड़ाकोठी (टिकमाणी बन्धु) कलकत्ता

टिकमाणी संस्कृत कालेज, बनारस

आपसे देश सेवाका महान कार्य्य करवाना चाहती थी। समाज सेवा और देश सेवाकी भावनाएं बीज रूपमें तो आपके अन्दर विद्यमान थी ही, सौभाग्यसे उनको विकसित करनेके लिए आपको बहुत ऊंचे दर्जेकी सोसायटी भी मिल गई, जिससे आपके अन्तर्गत समाज सेवाकी भावनाएं प्रबल रूपसे जागृत हो उठीं। सबसे पहले आपका ध्यान अग्रवाल समाजकी उन्नतिकी ओर गया। जिसके फलस्वरूप आपने सन् १९१२ में वर्धाके अन्तर्गत मारवाड़ी हाई स्कूल खोला। तथा कुछ समय पश्चात् एक कन्या पाठशालाकी भी स्थापना की।

सन् १९१५ में बम्बईके सुप्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालयकी नींव पड़ी। इस संस्थाकी स्थापनामें आपका खासभाग था। इसके पश्चात् संम्वत् १९७६ में आपने अपने मित्रों सहित दीर्घ प्रयत्नके साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल सभाका संगठन किया, जो आपके जीवनकी एक महत्वपूर्ण घटना है।

मगर आपका ध्येय यहींतक परिमित न था जातिकी सीमासे निकालकर कुदरत आपको देशके विशाल क्षेत्रमें लाना चाहती थी, और इसी कारण वह आपके जीवनकी घटनाओंको बदलती गई। सन् १९१८ में आपका महात्मा गांधीके साथ परिचय हुआ। यह परिचय दिन २ दृढ़ होता गया। कुछ समय पश्चात् महात्मा गान्धीका देश व्यापी आन्दोलन जारी हुआ। इस आन्दोलनमें आपने तन, मन, धनसे भाग लिया। सन् १९२१ में आपने अपना राय बहादुरीका खिताब लौटा दिया। और मोटी खादीके वस्त्र धारण कर आपने असहयोगका झण्डा पकड़ लिया। असहयोग के आन्दोलनमें आपका बहुत अधिक भाग रहा। जिस दिन भारतकी राजनीतिके इतिहासमें असहयोगका अध्याय लिखा जायगा, उस अध्यायमें उसके प्रधान प्रवर्तकोंके साथ सेठ जमनालालजी बजाजका नाम भी स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जायगा।

तभीसे सेठ जमनालालजी बजाज देशभक्तिके रंगमें मतवाले होगये हैं। आज भी इस [illegible] युगमें भी सेठ जमनालालजी सिरसे पैर तक खादीके वस्त्र धारण किये हुए स्थान २ पर भ्रमण कर भारत निवासी लोगोंको असहयोगात्मक सन्देश देते फिरते हैं। इस त्यागी वीरको इस वेशमें देखकर सहसा हृदय पुलकित हो जाता है, और हृदयमें एक उन्नत गौरवका अनुभव होता है।

जिस समय श्रीयुत सेठ बच्छराजजीका स्वर्गवास हुआ था, उस समय आप केवल पांच छः लाखकी स्थावर और जंगम सम्पत्तिके उत्तराधिकारी हुए थे, मगर आपने अपनी प्रतिभा और चतुराईके बदौलत इस सम्पत्तिको इतना अधिक बढ़ा लिया कि गत पन्द्रह वर्षोंमें आप इस सम्पत्तिमेंसे करीब ११ लाख रुपया तो दानमें दे चुके हैं। आपका व्यापारिक ज्ञान बहुतही उच्चकोटिका है। बम्बईके व्यापारिक समाजमें आपकी बहुत ही अच्छी प्रतिष्ठा है। जिस समय आप बम्बईके [illegible] थे, उस समय कई व्यापारी कम्पनियोंके डायरेक्टर थे। आपहीने टाटाके साथ मिल

…जर्षि सेठ जमनालालजी बजाज

स्व० सेठ भगवानदास बागला रायबहादुर

स्व० सेठ [illegible]

सेठ मदनगोपालजी बागड़ा

३ मोलमीन (बर्मा) रा० ब० भगवानदास बागला T. A. Bagla — यहांपर भी आपकी एक टिम्बर और एक राइस मिल है तथा बेंकिंग बिजिनेस होता है

४ मान्डले (बर्मा) रा० ब० भगवान दास बागला — यहां जमींदारी तथा बेंकिंग बिजिनेस होता है।

५ कलकत्ता—रा० ब० भगवानदास बागला एण्ड सन्स ओल्ड चायना बाजार T. A. Karora — टिम्बर मर्चेंट, बेंकिंग तथा आढ़तका काम होता है। यह फर्म गवर्नमेंटके रेलवे कंट्राक्टर है।

६ बम्बई—मेसर्स भगवान दास बागला रा० ब०—कालबादेवी रोड T. A. Sarvabhom — इस फर्मपर बेंकिंग, टिम्बर तथा राइस एवं कमीशन एजेंसी-का काम होता है।

७ चूरू—मेसर्स सेठ भगवान दास — यहां आपका खास निवास स्थान है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ तुलीचन्दजी, सेठ बेणी प्रसादजी, सेठ जुहारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशरदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके डालमियां गोत्रके सज्जन हैं। इस खानदानका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर-स्टेट) में है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए ५० वर्षसे ऊपर हुए। सबसे पहले यहांपर इसको स्थापना सेठ मामराजजीने की। शुरू २ में आपने अपनी दुकानपर मालवेसे आनेवाली अफीमका व्यवसाय शुरू किया। उस समय आपकी मालवेमें भी कई स्थानोंपर दुकानें स्थापित थीं। इस व्यापारमें आपको अच्छी सफलता और सम्पत्ति प्राप्त हुई। श्रीयुत मामराजजीके पश्चात् उनके चचेरे भाई रामभगतजी और शिवसुखरायजीने स फर्मके कार्यको बहुत उत्तेजन दिया। सेठ शिवसुखरायजी बड़े साहसी एवम् प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

इस समय इस फर्ममें श्रीयुत मामराजजी, श्रीयुत रामभगतजी और श्रीयुत बालकिशन दासजी के वंशज शरीक हैं। सेठ शिवसुखरायजीके वंशज अलग हो गये हैं। इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे चिड़ावेमें एक धर्मार्थ अस्पताल चल रहा है। चिड़ावेकी १० हजारकी बस्तीमें एक मात्र यही अस्पताल है। इस अस्पतालमें रोगियोंके ठहरने एवम् भोजनकी भी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त चिड़ावेमें आपकी ओरसे एक कन्या पाठशाला, एक संस्कृत पाठशाला, एक प्रारंभिक हिन्दी-पाठशाला और सदाव्रत आदि सार्वजनिक संस्थाएं चल रही हैं। हालहीमें वहांपर आपने गेस्ट-हाऊसके ढंगपर एक धर्मशाला भी बनवाई है। बद्रीनारायणके रास्तेपर लक्ष्मण-झूलेके पास आपने स्वर्गाश्रम नामक एक बड़ा रमणीय स्थान बना रक्खा है। यहांपर वानप्रस्थ लोगोंके रहनेकी, और सदाव्रतकी

आपने अपनी फर्मके कार्यको उत्तमतासे सम्भाला है। आपका विशेष परिचय तथा फोटो छोटी सादड़ीमें दिया है स्थानकवासी समाजमें आप समाज-सुधारके बहुतसे काम करते रहते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१	हेड आफिस—छोटी सादड़ी-मेसर्स गिरधरलाल गोपाजी	इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा लेन-देनका काम होता है। पहिले इस दुकानपर अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था।
२	बम्बई—मेसर्स मेघजी गिरधरलाल धारसी नजी धनजी स्ट्रीट T. A. Lantara	इस फर्मपर कॉटन, तांबे, बैंकिंग तथा सब प्रकारके कमीशन एजंसीका अच्छे स्केलपर व्यापार होता है।

मेसर्स शिवनारायण बलदेवदास बिड़ला

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका निवासस्थान पिलानी (जयपुर-राज्य) है। [illegible] आपका पूरा परिचय चित्रों सहित वहीं दिया गया है।

यहां इस फर्मका पता—मारवाड़ी बाजार, बम्बई है। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

आफिसका पता—बिड़ला ब्रदर्स, सुदामा बिल्डिंग चर्चगेट स्ट्रीट है यहां कॉटन और [illegible] तथा इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजगढ़ (बीकानेर स्टेट) में है। [illegible] हेड आफिस कलकत्तामें है। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ६०—७० वर्षोंसे चल रही है। [illegible] पहिले कलकत्तेमें गोपीराम भगतरामके नामसे व्यापार होता था। संवत् १९[illegible] में [illegible] अलग २ हो गये। अब इस समय कलकत्तेमें भगतराम शिवप्रतापके [illegible] बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए ३ वर्ष हुए। इस फर्मको विशेष तरक्की [illegible] आपने बनारसमें टिकमाणी संस्कृत कालेज स्थापित किया। इसमें [illegible] ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति लगी है। राजगढ़में आपकी ओरसे एक [illegible] ८० हजारकी लागत लगी है—बना है, तथा वहींपर आपकी [illegible] बने हैं।

आपने कोटी (जिला हिसार) नामक गांव जो [illegible] जिम्मे कर उसकी आमदनीसे राजगढ़की धर्मशाला, [illegible] सञ्चालनका स्थाई प्रबन्ध कर दिया है। राजगढ़में [illegible]

सीतारामदासजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

श्री मनराजजी S.o सेठ रामनारायणजी

श्री तेजपालजी S o सेठ रामनारायणजी

कुंवर लाला S o श्री लक्ष्मीनारायणजी

कॉटन मिल्स

१ अहमदाबाद—न्यू स्वदेशी मिल्स लिमिटेड } इस मिलमें २५००० सोपिडल्स लूम और ७००
इसमें आपका और शिवनारायणजी नेमाणीका सा

२ अकोला—अकोला काटन मिल्स लिमिटेड } यह मिल पहले हुकुमचन्द हाजीमियां मिल्सके नामसे
थी। इसमें २३००० स्पेंडिल्स और ४८० लूम्स हैं।
साथ एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

फेक्टरिज

हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जो कारखाने हैं उनके अतिरिक्त हिंगोली (निज़ाम), (निजाम), पानीपत (पंजाब) कानपुर, मोतीपुर और कुलपहाड़, ;इन स्थानोंपर आप जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरियाँ चल रही हैं।

आईल मिल्स

हरपालपुरमें आपकी एक आईल मिल चल रही है।

इन्दौरके सरसेठ हुकुमचन्दजी और बम्बईके सेठ ताराचन्द घनश्यामदासके इस फर्मसे बहुत पुराने समयसे व्यापारिक सम्बन्ध चला आया है। हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जितना काम चलता है, उन सबमें सेठ हुकुमचन्दजीका व आपका साझा है। इसके अतिरिक्त करांची डिस्ट्री- कका, बर्मा आईल कंपनीका कुछ काम आपके और ताराचन्द घनश्यामदासके साझेमें चल रहा है।

मेसर्स मेघजी गिरधरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री छगनलालजी गोधावत हैं। आप ओसवाल जा सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना छोटी सादड़ीमें हुई। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। बम्बईमें इ फर्मकी स्थापना संवत् १९७८ में हुई। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ मेघजी हैं तथा इसक विशेष तरक्की सेठ मेघजीके पौत्र सेठ नाथूलालजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य, दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने छोटी सादड़ीमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गीय नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम नामक एक आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रमके स्थायी प्रबन्धके हेतु आपने सवालाख रुपयोंका दान कर रक्खा है। सेठ नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ की ज्येष्ठ वदी १० को हुआ। आपके पुत्र श्री हीरालालजीका देहान्त आपकी मौजूदगीहीमें हो चुका था। अब इस समय सेठ नाथूलालजीके पौत्र श्रीयुत् छगनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं, युवावस्थामेंही

किया। आपके पिताजी सेठ रामेश्वरदासजी अभी विद्यमान हैं। इस फर्मको विशेष उत्तेजन सेठ शिवचन्द्रायजीने दिया। कलकत्ता तथा बम्बईमें इस फर्मकी अच्छी साख एवं प्रतिष्ठा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ रामकुंवारजी, सेठ श्रीरामजी, सेठ मुरलीधरजी सेठ शिवचन्द रायजी एवं सेठ सद्दारामजी हैं।

सेठ शिवचंद्रायजी ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनके डायरेक्टर हैं। अभी २ आपहीके परिश्रमसे सनातनधर्मावलम्बीय मारवाड़ी अग्रवाल पञ्चायत स्थापित हुई है।

वर्तमानमें आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

१ कलकत्ता—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल बड़तल्ला स्ट्रीट बड़ाबजार	यहां हुंडी, चिट्ठी, रुई, हेशियन तथा चीनीका घरू एवं आढ़त का काम होता है।
२ बम्बई—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी	यहां हुंडी चिट्ठी, रुई, गल्ला, सराफी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मके अन्डरमें शिवरीके पास एक न्यू ऑइल मिल है।
३ कानपुर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल नयागंज	यहां हुंडी, चिट्ठी, सराफी तथा मिलोंको रुई सप्लाईका काम होता है।
४ अमरावती (बरार) मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण	यहां हुंडी, चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है।
५ खामगांव [बरार]—मेसर्स मन्ना-लाल शिवनारायण	यहां भी हुण्डी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।
६ अमृतसर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल	यहां रुई तथा गल्लेका व्यापार होता है।
७ अकोला -मेसर्स शिवनदयाल चिमनराम	इसफर्ममें आपका साझा है, तथा रुईका व्यवसाय होता है।
सरनौगंज [पटियाला] मेसर्स गनेशनारायण ओंकारमल	इसमें गनेशनारायण ओंकारमलका तथा आपका साझा है। इस नामका यहां एक शुगर मिल है।
९ बनोसा (बरार)	यहां आपकी एक एक जीन है।
१० हिंगनपुर (बरार)	
११ करांची—मेसर्स रतनचंद ओंकारमल रामकुंवार सराई रोड	यहां गल्ला तथा रुईका व्यापार होता है।

बम्बईमें आपका चार और फर्मोंपर व्यवसाय होता है। जिनके नाम नीचे दिये जाते हैं।

(१) टुपरान एन्ड को० लिमिटेड—

(२) शिवचन्द्राय सूरजमल—

कॉटन मिल्स

१ अहमदाबाद—न्यू स्वंदेशी मिल्स लिमिटेड — इस मिलमें २५००० स्पेंडिल्स लूम और ७०० लू... इसमें आपका और शिवनारायणजी नेमाणीका साझा है

२ अकोला—अकोला कॉटन मिल्स लिमिटेड — यह मिल पहले हुकुमचन्द डालमिया मिल्सके नामसे चल... थी। इसमें २३००० स्पेंडिल्स और ४५० लूम्स हैं। इस... साथ एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

फेक्टरिज

हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जो कारखाने हैं उनके अतिरिक्त हिंगोली (निज़ाम), सेलू (निजाम), पानीपत (पंजाब) कानपुर, मोरानीपुर और कुलपहाड़, इन स्थानोंपर आपकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरियां चल रही हैं।

आईल मिल्स

हरपालपुरमें आपकी एक आईल मिल चल रही है।

इन्दौरके सरसेठ हुकुमचन्दजी और बम्बईके सेठ ताराचन्द घनश्यामदाससे इस फ... बहुत पुराने समयसे व्यापारिक सम्बन्ध चला आया है। हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जितना क... चलता है, उन सबमें सेठ हुकुमचन्दजीका व आपका साझा है। इसके अतिरिक्त करांची हिन्दु... कलकत्ता, बर्मा आईल कंपनीका कुछ काम आपके और ताराचन्द घनश्यामदासके साझेमें चल रहा है।

मेसर्स मेघजी गिरधरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री छगनलालजी गोपावत हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना छोटी सादड़ीमें हुई। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। बम्बईमें फर्मकी स्थापना संवत् १९७८ में हुई। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ मेघजी हैं तथा इस... विशेष तरक्की सेठ मेघजीके पौत्र सेठ नाथूलालजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य, दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने छोटी सादड़ीमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गीय नाथूलाल गोपावत जैन आश्रम नामक एक आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रमके स्थायी प्रबन्धके हेतु आपने सवालाख रुपयोंका दान कर रक्खा है। सेठ नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ की ज्येष्ठ वदी १० को हुआ। आपके पुत्र श्री हीरालालजीका देहान्त आपकी मौजूदगीहीमें हो चुका था। अब इस समय सेठ नाथूलालजीके पौत्र श्रीयुत् छगनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं, युवावस्थामेंही

कॉटन मिल्स

१ अहमदाबाद—न्यू स्वदेशी मिल्स लिमिटेड	इस मिलमें २५०००१ स्पेण्डिल्स लूम और ७०० लूम्स हैं। इसमें आपका और शिवनारायणजी नेमाणीका साझा है।
२ अकोला—अकोला काटन मिल्स लिमिटेड	यह मिल पहले हुकुमचन्द डालमियां मिल्सके नामसे चलती थी। इसमें २३००० स्पेंडिल्स और ४५० लूम्स हैं। इसके साथ एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

फेक्टरिज

हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जो कारखाने हैं उनके अतिरिक्त हिंगोली (निज़ाम), हेडू (निज़ाम), पानीपत (पंजाब) कानपुर, मोरानीपुर और कुलपहाड़, इन स्थानोंपर आपकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरियां चल रही हैं।

आईल मिल्स

हरपालपुरमें आपकी एक आईल मिल चल रही है।

इन्दौरके सरसेठ हुकुमचन्दजी और बम्बईके सेठ ताराचन्द घनश्यामदाससे इस फर्मका बहुत पुराने समयसे व्यापारिक सम्बन्ध चला आया है। हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जितना काम चलता है, उन सबमें सेठ हुकुमचन्दजीका व आपका साझा है। इसके अतिरिक्त कराची डिस्ट्रीक्ट, बर्मा आईल कंपनीका कुछ काम आपके और ताराचन्द घनश्यामदासके साझेमें चलता है।

मेसर्स मेघजी गिरधरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री छगनलालजी गोधावत हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना छोटी सादड़ीमें हुई। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना संवत् १९७८ में हुई। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ मेघजी हैं तथा इसकी विशेष तरक्की सेठ मेघजीके पौत्र सेठ नाथूलालजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य, दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने छोटी सादड़ीमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गीय नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम नामक एक आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रमके स्थायी प्रबन्धके हेतु आपने सवालाख रुपयोंका दान कर रक्खा है। सेठ नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ की ज्येष्ठ वदी १० को हुआ। आपके पुत्र श्री हीरालालजीका देहान्त आपकी मौजूदगीहीमें हो चुका था। अब इस समय सेठ नाथूलालजीके पौत्र श्रीयुत् छगनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं। युवावस्थामें ही

१ मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण कालबादेवी रोड-बम्बई	यहांपर बैङ्किंग हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यवसाय होता है यह फर्म यहांके फिनिक्स मिलकी मेनेजिंग एजंट तथा ट्रेजरर है।
२ मेसर्स रामनारायण हरनन्दराय एलफिन्स्टन १४२ एस्प्लेनेड रोड-फोर्ट	यहीं फिनिक्स मिलका आफिस है।

मेसर्स हरनंदराय सूरजमल रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान रामगढ़ है। इस नामसे यह फर्म संवत १८५३ से व्यापार करती है। पहिले इस फर्मपर खेतसीदास हरनंदरायके नामसे व्यापार होता था। इस फर्मके व्यवसायको सेठ सूरजमलजीने विशेष तरक्की दी। आपके पिता सेठ हरनंदरायजीका देहावसान हुए करीब १७'१८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ सूरजमलजीने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालयमें ५० हजार रुपया तथा अग्रवाल महासभामें ५० हजार रुपया प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयमें भी अपने अच्छी रकम दी है आपकी ओरसे कनखल (हरिद्वार) में एक धर्मशाला बनी हुई है; और वहांपर सदाव्रत जारी है। अभीतक उस स्थानपर आप करीब ३॥ लाख रुपया व्ययकर चुके हैं इसके अतिरिक्त आपके बड़े भ्राता सेठ रामनारायणजी तथा आपके साझेमें रामगढ़में एक बोर्डिंग हाउस व एक विद्यालय चल रहा है। जिसमें २० विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं। आपका वहां एक आयुर्वेदिक औषधालय भी चल रहा है। रामगढ़ (गोरखना-जोड़ा) में आपकी १ धर्मशाला बनी हुई है तथा वहां सदाव्रतका प्रबंध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स हरनंदराय सूरजमल बदाम कल्याण कालबादेवी रोड T.A Chhabara	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा रुईके जत्थेका व्यापार होता है। तथा यहांसे जापानको रुई भेजी जाती है।
२ कोपरी—(खानदेश) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल T. A Surajmal	यहां काटनका व्यवसाय होता है। तथा आपका रुईका जत्था है।
३ खामगांव (निजाम-बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां आपकी १ जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।
४ पाथरी (बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां भी आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है।

स्व० हीराचन्द लूनिंदाराम (तीरथदास लूनिंदाराम) बम्बई

स्व० प्रेमचन्द सेवाराम (तीरथदास लूनिंदाराम) बंब

सेठ भोजराज प्रेमचन्द (तीरथदास लूनिंदाराम) बम्बई

सेठ द्वारकादास ज्ञानचन्द (नन्दराम द्वारकादास) ब

सेठ भगवतरामजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

सेठ शिवप्रतापजी (शिवप्रताप रामनारायण) बंबई

सेठ रामनारायणजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई,

कुंवर रामेश्वरदासजी B.A. (सेठ शिवप्रतापजी)

३ लाहौर—मेसर्स तीरथदास सुर्वोदाराम शाहआलमीगेट T. A. Joti swarup
४ मुलतान—मेसर्स तीरथ दास सुर्चिदाराम चौकबाजार T. A. Jotiswarup
५ मांटगोमरी (पंजाब) तीरथ दास सुर्चिदाराम T. A. Jotiswarup
६ बहुवलपुर—तीरथदास सुर्वोदाराम गुल बाजार T. A. Jotiswarup
७ भटिंडा—तीरथदास सुर्वोदाराम T. A. Jotiswarup
८ करांची—तीरथ दास सुर्चीदाराम बन्दर बाजार T. A. Jotiswarup
९ लायलपुर—सुर्चीदाराम तेवाराम T. A. Jotiswarup
१०. सरगोधा—सुर्चीदाराम तेवाराम T. A. Jotiswarup

इन सब पतोंपर मेसर्स टोयो मेनका कैसा (जापानी फर्म) वालकर्ट ब्रदर्स तथा रेलीस एण्ड को० इन कम्पनियोंके लिए रुई । रुई आदि माल खरीदने तथा नाणा सप्लाई करनेका काम होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी व कमीशन एजंसीका काम भी इन दुकानोंपर होता है।

इस फर्मकी काटन तथा सीड़ डीटके सीजनमें पंजाब, सिंध तथा यू० पी०में करीब ६० टेम्पररी ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स नंदराम द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब सेठ द्वारकादास ज्ञानचंद हैं, आपका मूल निवास स्थान शिकारपुरमें (सिंध) है। आप अरोड़ा क्षत्रिय (जेसिंग) जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्म बम्बईमें करीब १६१२० वर्षों से व मलाबारमें ५० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ द्वारिकादासजीको ५।६ वर्ष पूर्व गवर्नमेंटने रायसाहबकी पदवी दी है। आप शिकारपुरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा हिन्दू पंचायतके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—नन्दरामदास ज्ञानचंददास — यहाँ हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।
२ बम्बई—मेसर्स नन्दरामदास द्वारकादास बस्तो बिल्डिंग बारभाई मोहल्ला पो० नं० २ T. A. shining — " "

है। सेठ भगवतीरामजी इस समय वृद्धावस्थाके कारण काशी-निवास कर रहे हैं। आपने अभी अभी २ मास पूर्व अपनी जागीरका मेहलसरा (जिला हिसार) नामक ग्राम भी राजगढ़की संस्थाओंके प्रबन्धके लिये ट्रस्टके सुपुर्द किया है। इसके अतिरिक्त इस खानदानने राजगढ़ पिंजरापोलमें २५ हजार रुपयोंकी सम्पत्ति दी है, तथा ५ हजार रुपया विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयमें सेठ भगवतीरामजी टिकमाणीके नामसे स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं।

इस समय इस फर्मका सञ्चालन सेठ शिवप्रतापजी, सेठ रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी करते हैं। श्री लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी गत वर्ष अग्रवाल महासभाके सहायक मंत्री रह चुके हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। तथा अग्रवाल समाजके अच्छे कार्यकर्ता हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स भगतराम शिवप्रताप २६।१ आरमेनियन स्ट्रीट — यहां हुंडी चिट्ठी, गल्ला तथा हेशियनका व्यापार होता है।

२ बम्बई—मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण कालबादेवी रोड T A Anandmaya — यहां रुई, सोना, चांदी तथा कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

३ कानपुर—मेसर्स भगतराम रामनारायण [illegible] — यहां बारदान, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

४ हिसार—मेसर्स भगतराम रामनारायण — यहां रुई, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

५ [illegible] [पंजाब] मेसर्स भगतराम रामनारायण — यहां आपकी १ जीनिङ्ग और १ प्रेसिङ्ग फैक्टरी है, तथा रुई गल्ले का व्यापार होता है।

६ [illegible] (पंजाब) [illegible] — यहां रुई गल्ले की आढ़तका काम होता है।

७ [illegible] भगतराम शिवप्रताप — रुई, गल्ले की आढ़तका काम होता है।

८ [illegible] — यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा गल्ला, किराना आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान [illegible] (शेखावाटी) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २८ वर्ष हुए। [illegible] यह फर्म करीब ४० वर्षोंसे काम कर रही है। इस फर्मके मालिक [illegible] जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ [illegible]ने स्थापित

ठ] सवरानसिंह मंगूलङ (मंगूलङ जेतसिंह).

ाठ जेतसिंह सवरानसिंह (मंगूलङ जेतसिंह)

श्री० सेठ रामकुमारजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

श्री० सेठ श्रीरामजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

श्री० सेठ शिवचन्द्ररायजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

(३) सनेहीराम जुहारमल एण्ड को०—

(४) मनोपचन्द मगनीराम—इसमें आपका साभा है।

इसके अतिरिक्त आपकी १० । १५ दुकानें पंजाब प्रांतमें हैं जो रुईके दिनोंमें खरीदीका काम करती हैं। इसफर्मके द्वारा कोबी (जापान) तथा यूरोपमें भी रुईका एक्सपोर्ट होता है तथा जापानसे इस फर्मपर डायरेक्ट कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

ओजो योशिन कम्पनी जापानी फर्मका बम्बईका काम नामक मीयही फर्म करती है।

मेसर्स सदासुख गम्भीरचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसके मालिकोंका निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित अन्यत्र दिया गया है इस फर्मकी बम्बई ब्रांचका पता – कालबादेवी रोड है। यहां बेंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामनारायणजी रुइया हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर-स्टेट) में है।

सेठ रामनारायणजीको बम्बई आये करीब ४५ वर्ष हुए, इसफर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ हरनन्दरायजीनेकी थी। पहिले यह फर्म खेतसीदास हरनन्दरायके नामसे व्यवसाय करती थी। सेठ रामनारायणजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला आपने सासुन जे०डेविड मेरोनेटकी दलालीमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की।

सेठ रामनारायणजी रुइया बड़े योग्य और व्यापारदक्ष पुरुष हैं। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। आप बम्बई बेंक आफ इण्डिया, न्यूइण्डिया इन्स्युरंस कम्पनी, इंडस्ट्रियल कारपोरेशनके डायरेक्टर हैं। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके कई वर्षों तक आप सभापति रह चुके हैं। बम्बईके प्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूलके स्थापकोंमें आपका नाम बहुत अग्रगण्य है। और वर्तमानमें आप उसके सभापति हैं। इसके स्थापनमें आपने बहुत अधिक रकम दान की है। मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके दूसरे अधिवेशनके समय आप स्वागतकारिणी समितिके सभापति थे। एवं उस समय आपने उसमें १ लाख रुपयोंका चन्दा दिया था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें आपने १ लाख रुपयोंकी रकम प्रदान की है। आपके इस समय चार पुत्र हैं, जिनके नाम श्री रामनिवासजी, श्री मदनमोहनजी, श्रीराधाकृष्णजी एवं श्री सुशीलकुमार हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुलतानी बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स तीरथदास लुणींदाराम

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अरोड़ा क्षत्रिय (मिंढा) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ लुणींदारामजीने स्थापित किया था, तथा आरंभसे ही यह फर्म इसी नामसे व्यापार कर रही है। आपके पश्चात् सेठ खेयारामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और उनके बाद सेठ हीरानंदजी व प्रेमचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रेमचन्दजीके पुत्र सेठ भोजराजजी हैं; इस फर्मकी ओरसे शिकारपुरमें एक हीरानंद आई हास्पिटल चालू है। यहां आंखका इलाज व सब तरहके ऑपरेशनका अच्छा प्रबंध है। दो मासके लिये दो तीन अमेरिकन डाक्टर भी इलाज करनेके लिये बुलाये जाते हैं। इस हास्पिटलमें बीमारोंके रहने व भोजन आदिका भी प्रबंध है।

आपकी ओरसे शिकारपुरमें स्टेशनके पास १ मुसाफिरखाना और श्री द्वारिकानाथजीमें एक धर्मशाला बनी हुई है। फिलहाल सेठ हीरानंदजीके नामसे एक जनाना अस्पताल बननेवाला है। जेसलमेरमें इस फर्मकी ओरसे एक कुंआ बनवाया है जिसमें करीब २५ हजार रुपयोंकी लागत लगी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर-मेसर्स तीरथदास द्वारकादास	यहां इस फर्मका हेडऑफिस है।
२ बम्बई-मेसर्स तीरथदास लुणिंदाराम-बार भाई मोहल्ला मस्जिद बिल्डिंग नागदेवी स्ट्रीट पो० नं० ३ T. A. Jou swarup	यहां बेङ्किंग, तथा बेङ्कोंके साथ हुंडी चिट्ठीका व्यापार व कमीशन-का काम होता है यह फर्म मेसर्स ग्लेंडर्स, अरब्यूनाट एण्ड कम्पनी की जामनगर तथा बम्बईके वास्ते शुगरको ग्यारेंटेड ब्रोकर

मेसर्स खूबचंद दीपचंद *

इस फर्मको १० वर्ष पहिले सेठ दीपचंदजीने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ खूबचंदजीके पुत्र चेतनदासजी, दीपचंदजी और थावरदासजी हैं। आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी मधवा जातिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स खूबचंद चेतनदास } यहां आपका हेड ऑफिस है।

२ बम्बई—मेसर्स खूबचंद दीपचंद ७० मारवाड़ी स्ट्रीट T.A.Deepa } बैंकिंग और कमीशनका काम होता है।

३ सेलम [मद्रास] मेसर्स खूबचंद दीपचंद } बैंकिंग और कमीशनका होता है।

पंजाबी बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स किशनचंद बूंटामल

इस फर्मके मालिक डि० अटकके निवासी हैं। आप बुलरायन सेठी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ किशनचंद बूंटामलने सन् १९२४में स्थापित किया था, इस फर्मके वर्किंग पार्टनर सेठ मूलचंदजी, हरीचंदजी, सेठ किशनचंदजी, सेठ परमानन्दजी, सेठ दुरानाराहजी और सेठ देसराजजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—पेशावर—मेसर्स अमीरचंद लखमीचंद अन्दर-शहर T. A. [illegible] } यह हेड आफिस है। इसका स्थापन सन् १८८० में हुआ। यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, शक्कर और जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेजरर और इम्पीरियल बैंकका ट्रेजरर है।

२ करांची—किशनचंद बूटामल, बम्बई बाजार T. A. [illegible] } बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

३ रावलपिंडी—मेसर्स मूलचंद मेहरचंद } " " "

४ होती (पंजाब) मेसर्स दुनीचंद हरीचंद [illegible] } बैंकर्स कमीशन एजंट और जमींदार।

५ होती (पंजाब) मेसर्स हरीचंद किशनचंद [illegible] } कमीशनका काम होता है।

---

* इस फर्मका परिचय [illegible] स्थान नहीं [illegible]।

मेसर्स खूबचंद दीपचंद *

इस फर्मको १० वर्ष पहिले सेठ दीपचंदजीने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ खूबचंदजीके पुत्र चेतनदासजी, दीपचंदजी और थावरदासजी हैं। आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी यथवा जातिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स खूबचंद चेतनदास	यहां आपका हेड ऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स खूबचंद दीपचंद ७० नागदेवी स्ट्रीट T.A.Deepa	बैङ्किंग और कमीशनका काम होता है।
३ सेलम [मद्रास] मेसर्स खूबचंद दीपचंद	बैङ्किंग और कमीशनका होता है।

पंजाबी बैङ्कर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स किशनचंद बूंटामल

इस फर्मके मालिक डि० अटकके निवासी हैं। आप खुखरायन सेठी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ किशनचंद बूंटामलने सन् १९२४में स्थापित किया था, इस फर्मके वर्किंग पार्टनर सेठ मूलचंदजी, हरीचंदजी, सेठ किशनचंदजी, सेठ परमानन्दजी, सेठ दुरानाशाहजी और सेठ देहराशाहजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—पेशावर—मेसर्स अमीरचंद लखमीचंद अन्दर-शहर T. A. bansriwala	यह हेड ऑफिस है। इसका स्थापन सन् १८८० में हुआ। यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, शक्कर और जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेझरर और इम्पीरियल बैंकको ट्रेझरर है।
२ करांची—किशनचंद बूंटामल, बम्बई बाजार T. A. mormukat	बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।
३ रावलपिंडी—मेसर्स मूलचंद मेहरचंद	,, ,, ,,
४ होती (पंजाब) मेसर्स दुनीचंद हरीचंद क्याम्पगंज	बैङ्कर्स कमीशन एजंट और जमींदार।
५ होती (पंजाब) मेसर्स हरीचंद किशनचंद कम्पागंज	कमीशनका काम होता है।

---

* इस फर्मका परिचय टरोते मिला, अतएव यथा स्थान नहीं दिया गया।

मेसर्स धनपतमल दीवानचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ ज्वालादासजी तथा उनके छोटे भाई सेठ दीवानचंदजी हैं। इस फर्मको आपने लायलपुरमें करीब ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान लायलपुर (पंजाब) है। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप दोनों भाइयोंके हाथोंसे हुई।

आपकी ओरसे लायलपुरमें एक धनपत-हाईस्कूल चल रहा है। तथा आपने अपनी माता के नामसे लायलपुरमें स्त्रियोंके लिये एक अस्पताल खोल रक्खा है।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं—

१ लायलपुर (पंजाब) मेसर्स धनपतमल दीवानचंद T.A.Dhanpat — यहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा हुंडी चिट्ठी और आढ़त का काम होता है।

२ लाला ज्वालादास दीवानचंद लायलपुर पंजाब T.A.Birmani

३ धनपतमल दीवानचंद जेड़ावाला लायलपुर (पंजाब) T.A.Dhanpat

४ लायलपुर धनपतमल दीवानचंद-गोइड़वाला (पंजाब) T.A.-Dhanpat

५ धनपतमल ज्वालादास-सारकवाला लायलपुर (पंजाब

(२ से ५) — यहां आपकी एक २ जीनिंग फेक्टरी व प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा रूईका व्यापार होता है। आइल मिल भी जीनिंग फेक्टरीके साथ है।

६ दीवानचंद जीवनलाल लायलपुर [पंजाब] — आपकी यहां एक आइल फेक्टरी तथा फ्लोअर मिल है।

७ करांची—धनपतमल दीवानचंद बंदरोड T.A. Dhanpat — यहांपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

८ बम्बई—धनपतमल दीवानचंद पायधुनी T.A.Dhanpat — इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

९ ढकालगढ़ [पंजाब] धनपतमल दीवानचंद — यहां आपकी राइस मिल है।

१० महेश बिलोचन [पंजाब] — यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

इसके अतिरिक्त रामनारायन सत्यपालके नामसे, लाहौर, झरिया, कलकत्ता, रानीगंज, तथा लायलपुरमें कोलका व्यापार होता है। कलकत्तेका तारका पता है (Fath) तथा अन्य स्थानोंपर (Fortuno) है।

ठ हासासिंह जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

से० आत्मासिंह जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

ठ [illegible] जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

से० [illegible] जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

कॉटन मर्चैण्ट्स एण्ड ब्रोकर्स

COTTON MERCHANTS & BROKERS.

(५) त्रिचनापल्ली-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह चिनाबाजार T.A Hargobind	यहां बेंकिंग हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(६) बंगलोर-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह कुब्बेट T A Omnarayan	"
(७) ऊटी—मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह मार्केट स्ट्रीट T A.Om Satnam	यहां बेङ्किग हुण्डी चिट्ठी कमीशन तथा रुईका काम होता है।

मेसर्स मंगूमल चेलासिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चेलासिंह सतरामसिंह अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपकी वय अभी ५२।५३ वर्ष की है। आपके खानदानकी ओरसे शिकारपुरमें एक मुसाफिर खाना बना हुआ है। सेठ चेलासिंहजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम सेठ ईसरसिंह और लक्ष्मणदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स सतरामसिंह चेलासिंह	यहां हेड आफिस है।
२ बम्बई—मंगूमल चेलासिंह बारभाई मोहल्ला मागदेवी स्ट्रीट पो० नं० ३ T. A- Satguroo	यहां बेङ्किग हुंडी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।
३ मद्रास-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह साहुकार पेठ T. A. Satguroo	
४ बांगलोर-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह छावनी T. A. Parmatama	
५ कालीकट (मालाबार) मेसर्स मंगूमल चेलासिंह गुजराती स्ट्रीट	

कॉटन मर्चेण्ट्स

रुईका इतिहास

भारतमें सूत कातने और कपड़ा बुननेकी कलाका आरम्भ कबसे हुआ; यह निश्चित् रूपसे नहीं कहा जा सकता, परन्तु एक बात जो निश्चित रूपसे कही जा सकती है वह यह है कि इस कलाके आधार भूत सिद्धान्तोंकी चर्चा स्वयं वेदोंमें आयी है; अतः इस कलाका जन्म यहां सहस्रों वर्ष पूर्व हुआ होगा, यह मानना असङ्गत न होगा। यद्यपि पाश्चात्य विद्वानोंके मतके आधारसे भारतकी परम्परा गत परिधान प्रथापर पक्षपात जनित प्रभाव पड़ता है, फिर भी इसमें तो सन्देह नहीं कि जहां मिली नामक देशसे लाकर सूती कपड़ोंका प्रथम प्रचार लन्दनमें सन् १५९० ई०में किया गया वहां भारतमें कम-से-कम आजसे तीन हजार वर्ष पहिलेसे सूती कपड़ोंका प्रचार था।

मि० हेनरी ली एफ०एल०एसने अपने The vegetable lamb of Tartary नामक ग्रन्थमें लिखा है कि बहमा (Bahamas)के लोगोंने कोलम्बसको प्रथम बार सूत दिखाया और कोलम्बसने अपने जीवनमें पहिली बार क्यूबाके लोगोंको सूती कपड़े पहिने हुये देखा। इससे सिद्ध होता है कि ब्रिटेनवालोंने कोलम्बसकी यात्राके बाद ही सूतका वर्णन सुना। परन्तु भारतवासी हजरत ईसा-के सैकड़ों वर्ष पूर्वसे इसका व्यवहार करते आये हैं। सिकन्दर बादशाहकी चढ़ाईके विवरणमें रुई-की चर्चा बराबर मिलती है। अतः भारतमें इसके व्यवहारकी प्रथाका पाया जाना कुछ नया नहीं है। इसका व्यवसाय भी यहां बहुत पुराना नहीं, तो पुराना अवश्य ही है।

पुराने कागजोंके आधारपर मानना पड़ेगा कि १८ वीं शताब्दीके आरम्भमें यहांसे रुई विदेश नहीं भेजी जाती थी। बम्बईकी भौगोलिक विशेषताने उसे इस व्यवसायका प्रधान केन्द्र बननेमें सबसे अधिक सहायता प्रदान की है। भारतके कपास उत्पन्न करनेवाले केन्द्रोंके समीप होनेके कारण भी उसे अच्छा अवसर मिला है। बम्बईका बन्दर भी सब प्रकारसे जहाजों-के लिये उपयुक्त है। इन सब कारणोंसे यह स्थान बहुत शीघ्र रुईके व्यवसायका प्रधान केन्द्र बन गया और ज्यों २ समय बीतता गया, त्यों २ उन्नति ही करता गया। यहांतक कि आज समस्त एशियामें यही एक प्रधान बाजार है जहां सबसे अधिक रुईका व्यवसाय होता है।

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन मंडी के बनानेमें १ करोड़ २३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७६०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्घाटन सन् १९२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी है। यहां सौदा करनेके लिये बड़ा कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका मकान कमरा यूरोप देशोंमें अपनी शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और मिंटनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी उपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गांठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्षमें औसत पचास लाख गांठे तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियाके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ बैठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ बैठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेयर (६) गुडफेयर (७) फेयर इत्यादि। इनमेंसे भड़ौंच तथा अमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

सेठ टहलरामजी (वेगराज टहलराम) बम्बई

सेठ मूलचन्दजी (किशनचन्द बूंदामल) बंबई

सेठ हीरचन्द सूरचन्द (सूरचन्द हीरचन्द) बम्बई

सेठ हरनामदासजी (जवाहरसिंह हरनामदास) बम्बई

वायदेका सौदा—भरोंच, ऊमरा और बङ्गाल ये तीन प्रकारके सौदे यहां विशेष प्रचलित हैं। इनमें भी विशेष प्रधानता भरोंचके सौदेकी है। अप्रेल मई और अगस्त सितम्बर इस प्रकार यहां पर दो भरोंचके सौदे होते हैं। वायदेका सौदा उस लेन देनको कहते हैं जिसमें माल तुरन्त नहीं देना पड़ता। जिस मितीका वायदा होता है, उस मितीपर माल देनेके इकरारसे व्यापारी परस्पर सौदा करते हैं।

पक्का वायदा—भरोंच, बङ्गाल और ऊमराके सौदे करनेवाले व्यापारीको २० हजार रुपया क्लीअरिंग हाउसमें जमा कर कार्ड प्राप्त करना पड़ता है। बिना कार्डके किसी व्यक्तिके नामका सौदा बाजारमें नहीं हो सकता। भरोंचका सौदा जबतक अप्रैल मईमें खतम नहीं होता, तब तक व्यापारियोंकी लेवा वेचौ हुआ करती है और लाखों रुपयोंके नफा नुकसानका हिसाब हर १५ वें दिन हुआ करता है। इस प्रकारके सौदोंके भुगतान आदिको निपटानेके लिये क्लीअरिंग हाउस नामकी संस्था स्थापित है। ये सौदे १२ से ५ बजे तक मारवाड़ी बाजारमें पक्के पाटियेपर और सन्ध्या समय शिवरीमें होते हैं। इन बाजारोंके भावोंकी उथल-पुथल और रुखके हजारों रुपयोंके तार प्रतिदिन बम्बईसे भारतके कोने २ में भेजे जाते हैं। बाहरके व्यापारी बड़ी उत्कंठासे राह देखा करते हैं। यहां यह लिख देना आवश्यकीय है कि बम्बई और भारतका बाजार न्यूयार्क और लिवर पुलके बाजारोंपर ही सर्वथा निर्भर रहता है। आज न्यूयार्कमें पानी अच्छा बरसा, बोहनी अच्छी हुई, फ्यूचर नरम जाये, बस फिर हमारे यहांके बाजारको भी नीचेकी गति पकड़नी होगी, चाहे यहां रुईके पौधे सूख ही रहे हों। हमारे देशकी पैदावारीकी बाहुल्यता एवं न्यूनताका बाजारपर विशेष असर नहीं पड़ता। दुनियामें रुई पैदा करनेवाले देशोंमें सबसे प्रधान नम्बर अमेरिका का है। अमेरिकाने इस व्यवसायमें आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई है। वहां बोअनी आरम्भ होनेके १ माह पहलेसे ही व्यापारी इस विषयमें अपने २ मस्तिष्क लगाने लगते हैं। अमेरिकन सरकार भी बड़ी छानबीनके साथ खोजकर हर पंद्रहवें दिन हवा, पानी अन्दाज, जीनिंग, वजन आदिके आंकड़ोंकी रिपोर्ट निकालती है और इन्हीं रिपोर्टोंके आधारपर बड़ी तेजीके साथ बाजारोंमें घटा-बढ़ी हुआ करती है। इस अठवाड़ियेमें अमेरिकामें पानी काफी बरसा, वायु अनुकूल चल रही है, अब अमेरिकाकी रुईकी [illegible] दुनियाके ढंग देख रहे हैं। दूसरे अठवाड़ियेमें ही पानी बन्द हो गया गरम हवाएं चलने लगीं, कपासके पौधोंमें बोलवीविलोंका [illegible] शुरू होगया, [illegible] ऐसी खबर बाजारकी हर प्र-काशित होती है तब मन्दीवाले खरीदनेके लिये पागल उठते हैं और बाजार तेजी की ओर

कॉटन एक्सपोर्टर

मेसर्स अमरसी दामोदर

इस फर्मको सेठ अमरसी दामोदरने करीब ६० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरीदास माधवदास, सेठ मनमोहनदास माधवदास,और सेठ नंदलाल माधवदास हैं। यह फर्म आरम्भसेही रुईके एक्सपोर्ट इम्पोर्ट और कमीशनका काम करती है। इस फर्मका व्यवसायिक सम्बन्ध पूर्वीय देशोंके साथ विशेष है। सेठ हरीदास माधवजी ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनके वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपको रुईके व्यवसायका २५ वर्षोंसे अनुभव है। आपके २ छोटे भाई व्यापारके लिये यूरोप अमेरिका चीन आदि देशोंमें भ्रमण कर चुके हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

[१] बम्बई-मेसर्स अमरसी दामोदर मुलेश्वर T. A. Mayoralpy } यहां कॉटनका काम होता है।

[२] बम्बई—माधवदास अमरसी एण्ड कम्पनी एसप्लेनेड रोड फोर्ट T. A. Warbler } रुईके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय होता है।

[३] बम्बई—अमरसी एण्ड सन्स बेलार्ड स्टेट फोर्ट T. A. Amarsins } रुईके एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कपासकी सीजनमें तथा बाहरी प्रान्तोंमें भी आपकी खरीदी होती है। अकोलाकी भूलराज लखाऊ जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरीमें भी आपका साझा है।

मेसर्स नारायणदास राजाराम एण्ड को०

इस कम्पनीका ऑफिस नवसारी चेम्बर आउटरामरोड फोर्टमें है। इसका तारका पता वर्दी (Worthy) बम्बई है और टेलीफोन नं० २०१०१ है। इसकी शाखाएं कम्पाला (Kampala) यूगेण्डा जिनजा (jinja) यूगेण्डा पालेज (Palaj) इन्दौर, आगरा, सूरत तथा हरिपुरमें हैं। यह कम्पनी स्थानीय ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशन,इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर तथा चेम्बर ऑफ कामर्स

ज्वालादासजी (धनपतमल दीवानचन्द) बम्बई

ला० चैंकामलजी (राय नागरमल गोपीमल) बम्बई

दीवानचन्दजी (धनपतमल दीवानचन्द) बम्बई

सेठ निरंजनदासजी (राय नागरमल गोपीमल) बम्बई

र पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के०टी० (नारायणदास राजाराम), बम्बई, सेठ नेणसी भाई पोपण जे०पी० (गील एंड को०), बंबई

सेठ मोतीलाल मूलजी भाई बम्बई

सेठ जेठाभाई देवजी बम्बई

मेसर्स राय नागरमल गोपीमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान फीरोजपुर है। इस फर्मको बम्बईमें ३० वर्ष पूर्व लाला बेङ्कामल जी ने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक लाला बेङ्कामल जी के पुत्र लाला निरञ्जनदास जी ए० एम० एस० टी० बी० एस० सी० हैं। आप बहुत शिक्षित एवं सज्जन महानुभाव हैं। यह फर्म यहांकी पंजाबी फर्मोंमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कैथल—मेसर्स बेंकामल निरंजन दास डि० करनाल [पंजाब] T. A. Pawan	(हेड आफिस) यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और कॉटन बिजिनेस होता है।
२ मथुरा—मेसर्स बेंकामल निरंजन दास T.A.Pawan	यहांपर आपके पंजाबी कारखानेका नाम जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा कॉटन बिजिनेस होता है।
३ फ़ोको [पंजाब] ,, ,, —	जीन प्रेस फेक्टरी तथा काटन बिजिनेस होता है
४ मोगा [पंजाब] T. A. Amrit	,, ,, ,,
५ फीरोजपुर सिटी—पंजाब। राय नागरमल गोपीमल बड़ाबाजार T. A. Pawan	यह फर्म करीब १००वर्षोंकी पुरानी है। यहां बेङ्किग व हुंडी चिट्ठीका बिजिनेस होता है।
६ बम्बई—रायनागर मल गोपीमल मोती बिल्डिंग—कालबादेवी	यहां बेङ्किग, आढ़त व रुईका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे राय नागरमल गोपीमलके नामसे फीरोजपुरमें एक बहुत बड़ी सराय बनी हुई है और फीरोजपुरमें आपका लाला हरभगवानदास मेमो हाई स्कूल नामसे एक स्कूल चलता है। आपकी ओरसे लाहोरके डी० ए० वी० कालेजमें कई इमारतें बनी हुई हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि इस खानदानके मालिकोंका शिक्षाकी उन्नतिकी ओर विशेष लक्ष रहा है। पंजाबमें यह खानदान मशहूर रुईका व्यापारी माना जाता है, एवं बहुत प्रतिष्ठाकी नजरोंसे देखा जाता है।

मेसर्स भगवानदास माधोराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप खत्री जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ भगवानदासजीने करीब २० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ माधोरामजी व आपके पुत्र सेठ नरोत्तमदासजी हैं। नरोत्तमदासजी शिक्षित सज्जन हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—मेसर्स भगवानदास माधोराम, गुरु बाजार T A Sarswati—यहां बेङ्किग व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स भगवानदास माधोराम, माधोराम बिल्डिंग कालबादेवी—T A "Surajbansi यहां बेङ्किग बिजिनेस व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

सदस्य थे। उस समय कौन्सिलमें आप ही एक ऐसे सदस्य थे जिन्होंने बम्बईमें आनेवाली रुईकी प्रत्येक गांठपर १) रु० नगद कर लिये जानेका विरोध किया था। आपने नगरके आयात और निर्यातपर कर लगानेके सिद्धान्तकी तीखी तथा जोरदार आलोचना की थी। सन् १९२०में आपने इण्डियन रेलवे कमेटी, सन् १९२२ में इंचकेप कमेटी तथा सन् १९२३ में ऐट ले कमेटीमें सदस्य रहकर भारत हित रक्षणके लिये अच्छी चेष्टा की। आप इम्पीरियल बैंकके लोकलबोर्डके सदस्य हैं। इसके प्रमुख होनेके नाते आप इम्पीरियल बैंकके गवर्नर भी हैं। आप यहांकी लगभग ३० बैंकों, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों तथा इन्स्यूरेंस कम्पनियोंके सदस्य तथा डायरेक्टर भी हैं। सन् १९१४ से आप बम्बई पोर्ट ट्रस्टके ट्रस्टी हैं। तथा सन् १९२७ में इण्डियन चेम्बर आफ कामर्सके फिडरेशनके उप-प्रमुख नियुक्त किये गये थे। सन १९२६ में आपने रायल करेंसी कमीशनमें एक भारतीय सदस्यके रूपमें काम किया और भारतकी वास्तविक स्वार्थकी दृष्टिसे उसके स्वत्वके लिये अपना विरुद्ध मत निडर भावसे व्यक्त कर १६ पेंसकी हुण्डीकी दरके लिये देश व्यापी आन्दोलन खड़ाकर यहांकी प्रान्तीय कौन्सिलमें सन् १९१६ में सरकारी मनोनीत सदस्यके रूपसे काम किया। आप सन् १९२० में यहांके शरीफ भी रहे। सन १९११-१२ के अकालके समय प्रपीड़ितोंको सहाय पहुंचानेमें प्रधान भाग लेनेके कारण सरकारने आपको कैसरे-हिन्दका स्वर्णपदक प्रदान किया। योरोपीय युद्धके सम्बन्धमें चलाये गये वार रिलीफ फण्डमें काम करनेके उपलक्षमें सरकारने आपको एम० बी० ई० की उपाधि दी। इसी प्रकार अकाल प्रपीड़ितोंको सहाय पहुचानेका आपने सन १९१८-१९ में कार्य किया और सरकारने आपकी सेवाको सी० आई० ई० की प्रतिष्ठासे अलंकृत किया। सन १९२३ में आप सरके सम्मानसे सम्मानित किये गये। इस समय आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरकी ओरसे केन्द्रीय सरकारकी लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके सदस्य हैं।

आप यहांके वालकेश्वर पहाड़के मलाबार केसल रिजरोडपर रहते हैं और आपके आफिसका पता नारायणदास राजाराम कम्पनी है।

सेठ मेघजी भाई थोबण जे० पी०

सेठ मेघजी भाईका मूल निवास स्थान कच्छ (भुज) है। आप ओसवाल जैन स्थानकवासी कच्छी गुर्जर सज्जन हैं। आपके पिता श्री सेठ थोबण भाईकी आर्थिक परिस्थिति बहुत साधारण थी। प्रारंभिक गुजराती शिक्षा प्राप्त करनेके बाद सेठ मेघजी भाई ११ वर्षकी अवस्थामें बम्बई आये। दो तीन वर्षतक मामूली उम्मेदवारीका काम करनेके बाद आप अपने बड़े भाईके साथ गीळ कम्पनीमें रुईकी दलाली कमीशन एवं मुकादमीके व्यवसायमें भागीदारके रूपमें काम करने लगे उस समय

सेठ शांतिदास आसकरण शाह जे॰ पी॰, बम्बई

सेठ रवीलाल शांतिदास शाह (शांति भुवन) बम्बई

सेठ वीरचन्द भाई मेघजी भाई बम्बई

शांतिनिवास नेपियंसी रोड (शांतिदास आसकरण शाह) बम्बई

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहांसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु इस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलेंड भेजी। सन् १७९० ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी गाँठ रुईकी मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें प्रवेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २११८२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहांके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८६०के बादसे आजतक वह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे क़िलेके नागरिकों को बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलाबामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटी २ डोंगियोंपर जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिक्री हो जानेके बाद बिना कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि वह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रुई रेल्वेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेल्वेके माल—स्टेशनपर उतारी जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार उठाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र पाटकर ५७१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहींपर रुईका व्यापार होता है।

पश्चात कुछ समय गीज कंपनीमें काम करते हुए आपने बहुत अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। उस समय कुलावाके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें आपकी गिनती थी।

संवत् १९७४ में सेठ शांतिदासजीने इस कंपनीसे अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाय स्थापित किया। इस समय आप चांदी सोना रुई और शेअरका बहुत बड़े स्केलपर व्यवसाय करते है।

सेठ शांतिदासजी, देशभक्त गोखले द्वारा संस्थापित डेक्कन एज्यूकेशन सोसाइटी और हिन्दू-जीम खानाके पेट्रन हैं। आप जैन एसोसिएशन आफ इण्डियाके प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आप कई प्रतिष्ठित जैन संस्थाओंके सहायक हैं। आपके एवं सेठ मेघजी भाई थोबणके परिश्रम से महियर स्टेटमें हर साल हजारों जीवोंका होनेवाला वध बंद हुआ है। उस कार्य्यके लिये आप दोनोंने १५००१ देकर महियर स्टेटमें एक अस्पताल बनवा दिया है। मांडवीमें विद्यार्थियोंके शिक्षण-के लिये आपकी ओर स्कालरशिपका भी प्रबंध है।

संवत् १९६८ के अकालके समय (५००१) अपने वहांकी पिञ्जरापोलको दान दिये थे। एवं उस समय हमेशा १०० आदमियोंको भोजन (खीचड़ी) देनेकी व्यवस्था भी आपने करवाई थी। इसी प्रकार १९७७।७८ में अहमदनगरमें दुष्कालके समय १००० मनुष्योंको प्रतिदिन भोजन देनेका प्रबंध आपकी ओरसे किया गया था। आपने ५० हजार रुपया मालवीयजीको हिन्दू युनिवर्सिटीके लिये दिये हैं।

सेठ शांतिदासजीके प्रति जनताका विशेष प्रेम है। आप सन् १९२० में गिरगांव इलाकेकी ओरसे म्युनिसिपैलेटी मेम्बर निर्वाचित हुए थे। सन १९८८ में आपको गवर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। यूरोपीय महासमरके समय आपने एक वर्षमें करीब २॥ लाख रुपयोंके लोन खरीदे थे। प्रिन्स आफ वेल्सके भारत आगमनके समय आप पूवर फीडिंग कमिटीके प्रेसिडेण्ट थे। उस समय आपने उसमें २५०००) भी दिये थे।

इस समय आप न्यू ग्रेट मिल, कोहिनूरमिल, मॉडल मिल नागपुर, ज्युपिटल जनरल इंश्युरेन्स कंपनीके डायरेक्टर और मद्रास युनाइटेड प्रेसके प्रेसिडेंट हैं। आपका कई राजा महाराजाओंसे अच्छा परिचय है। इस समय आप विलायत यात्राके लिये गये हुए हैं।

आप बम्बईके गेगनपेन्ट एण्ड वार्निस कंपनी नामक रंगके कारखानेमें एटन ब्रदर्सके साथ भागीदार हैं।

आपका निवासस्थान है नेपियंसी रोड, शांति-निवास टे० नं० ४०२८८ है।

इस समय आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ रवीलालजी है। आप भी अपने पिताश्री के साथ व्यवसायमें भाग लेते हैं। वर्तमानमें आपकी उम्र २७ वर्षकी है।

का कपास पैदा होता है। इसी प्रकार राजपूताना, सिन्ध पंजाब इत्यादिका माल फुलीगुड और फाइन क्वालिटीका आता है।

भारतवर्षमें जितनी रुई उत्पन्न होती है उसमेंसे यहांकी आवश्यकताके अनुसार (मिल तथा दूसरे कामोंके लिये) रखकर शेष विदेशोंको चढ़ा दी जाती है। सन् १९२१-२२में ५३३८०२ टन रुई यहांसे विदेश गई थी। यह सब रुई अधिकांशमें बम्बईके बन्दरोंसे ही चढ़ाई जाती है।

बम्बईमें रुईके व्यापारका मुख्य स्थान ग्रीन काटन मार्केट (सिवरी) है। यहांके गोदामोंमें (जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है।) बम्बईकी तमाम कम्पनियां, व्यापारी और बैंकें अपना २ माल रखती हैं। रुईके काम करनेवाले सभी व्यापारी अपना और अपने आढ़तियोंका माल यहांपर उतारते हैं। यहांके व्यापारी अपने आढ़तियोंको उनके मालपर ८० प्रति सैकड़ा रकम पहले दे देते हैं और शेष रकम माल बिकनेपर दी जाती है। जो रकम पहिले दी जाती है, उसपर बारह आनाका व्याज लिया जाता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि मालका भाव अस्सी टकेसे भी नीचे गिरता चला जाता है, उस समय यहांके व्यापारी मालवालेके पाससे नुकसानीका रुपया (वारण) मंगा सकते हैं और यदि वे नहीं भेजें तो उनकी बिना इजाजतके माल बेच देनेका अधिकार रखते हैं। इसके लिये ये व्यापारी दैनिक या साप्ताहिक रिपोर्टोंके द्वारा अपने माहकोंको रुईकी हलसे वाकिफ करते रहते हैं। इन रिपोर्टोंमें न्यूयार्क, लिवरपुल इत्यादि विदेशी बाजारोंकी गतिविधिके समाचार, हाजिर माल और वायदेके भाव, बाजारकी तेजी मन्दीकी रुख, हुण्डीके भावकी खबर इत्यादि बातोंका उल्लेख रहता है।

इस प्रकारकी रिपोर्टें यहांके सिवरी बाजारसे, मारवाड़ी बाजारसे, ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनसे, पटेल ब्रदर्सके यहांसे तथा और भी एक-दो अंग्रेजी कम्पनियोंके यहांसे निकलती रहती हैं।

यहांपर बिकनेवाली रुईपर बारह आना सैकड़ा आढ़त, दो आने गांठ मुकादमी बीमा और रेल्वे धीमाभाड़े, यदि किसी मिलको माल बेचा गया हो तो आठ आना सैकड़ा मिलकी दलाली, मिलकी मुकादमी और नमूना प्रति गांठ आठ आना और धर्मादेका सवा आना प्रतिखण्डी (२८ मन) खर्च लगता है।

बम्बईमें दो प्रकारके रुईके व्यवसाय होते हैं। (१) हाजरका और (२) वायदेका। हाजरका व्यापार सिवरीमें होता है। यहां भारतीय मिलों, जापानी और लिवरपुलकी कम्पनियों और आफिसोंकी खरीदीपर ही बाजारकी मजबूती और घटा-बढ़ी रहती है। यहां रुईका बड़ा भारी दर्शनीय जत्था है। सन्ध्या समय वायदेका बाजार बन्द हो जानेपर ५ बजेके करीब इस बाजारमें दर्शनीय चहल-पहल रहती है। रुईके जत्थेदारोंकी संस्था मुकादम एसोसिएशन, हाजर रुईके व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारका प्रबंध करती है। ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशन भी इस व्यवसायके लिये सब प्रकारका सुप्रबन्ध करती है।

सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार, बम्बई

सेठ रामगोपालजी (रामगोपाल जगन्नाथ), बम्बई

जोरोंसे चढ़ने लगता है। इस प्रकारकी १॥।१३ रिपोर्ट अमेरिकन गवर्नमेंट प्र
करती है और प्रत्येक रिपोर्ट अपनी पहिली रिपोर्टसे विचित्र और चौंका
है। न्यूयार्कमें १०॥ बजे मुख्येबाजे बाजारका तार हमारे पास रातके ८॥६
है और उस समयसे न्यूयार्क बाजारके बन्द होनेतक तारोंका तांता बन्
रातको १२ से २ बजेतक लगा रहता है। प्रति रातको हजारों रुपयोंके तार बम
है। प्रातःकाल अमेरिकाके क्लोजिंग फ्यूचर जाननेके लिये रुईका काम करनेवाल
आलम बड़ा उत्सुक हो उठता है। बम्बईमें रुईका भाव १ खण्डीपर रहता है
न्यूयार्कके सौदे एक रतल रुई पर होते हैं। यदि आज ४० पाईंट बाजार मंदा आ
अमेरिकामें एक रतल रुईपर)॥ पैसा कम होगया। (१०० पाईंट=१ सेंट, १०० सें
१ डालर, १ डालर करीब ३=)। पक्के सौदेके अतिरिक्त रुईसे सम्बन्ध रखने
और भी कई प्रकारके सौदे यहांपर होते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

गली, तेजी-मंदी (अथवा जोटा)—प्रत्येक वायदेपर निश्चित भाव चढ़ने और उतरनेके बाद जो नफ
नुकसान देना पड़ता है वह गली जोटा या तेजी-मंदी कहा जाता है।

कची खंडी—रुईके वायदेका कचा सौदा भी पक्के सौदेपर ही सर्वथा निर्भर रहता है। इसमें और
पक्के सौदेमें इतना फरक है कि पक्का सौदा लम्बी मुद्दत तक रहता है। उसमें सौदा किये
हुए मालको हाजिर रूपमें देनेका इकरार भी होता है। इसके विरुद्ध इस कची खंडीमें
प्रति शनिवारको खुलावाके भावपर भाव कट जाता है और उसपर सोमवारको नफा नुक-
सान पेमेंट हो जाता है।

फ्यूचरका धंधा—अमेरिकामें होनेवाली घट बढ़के तार जो यहां आते हैं उन्हींपर यहां रातको फ्यूचर-
का धंधा होता है। इसका भुगतान प्रति दूसरे दिन संध्या समय हो जाया करता
है। इसका काम संध्या समय ४ बजे लिवरपुलका तार आनेसे लेकर रातके ११२
बजे अमेरिकाके क्लोजिङ्ग फ्यूचर आजानेतक जारी रहता है।

आंक फरक (या जुगार)—अमेरिकाके फ्यूचरोंपर यह भयंकर नाशकारी धंधा जारी हुआ है। गव-
र्नमेंटका अंकुश होते हुए भी इस धंधेका इतना अधिक प्रचार है, कि प्रत्येक मामूलीसे
मामूली मजदूर तथा शहरके लाखों आदमी झूठी मृगतृष्णामें पड़कर फना हो जाते हैं।

न्यू काटन डिपो सिवरीका टेलीफोन नं ४०५३३ है। इसके हिस्सेदार किशनचन्द देवचन्द, नवीलाल किशनचन्द और तुलसीदास किशनचन्द हैं।

केशवदास गोकुलदास एण्ड को०—इसका आफिस १८ चर्चगेट स्ट्रीटमें है।

खीमजी विसराम एण्ड को०—इसका आफिस इस्लाईल बिल्डिङ्ग, हार्नबीरोड, फोर्टमें है। यह कम्पनी सन् १८८६में स्थापित हुई थी। इसकी शाखाएं ५४ कम्बरलैंड स्ट्रीट मेनचेस्टर, दर्बिड चेम्बर्स फाग फार्लोस्ट्रीट लिवरपुल और कराचीमें हैं। इसका तारका पता मगनोलिया है। टेलीफोन नं० २४८४० है। तथा न्यू कॉटन डिपो सिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०५४५ है। इसके यहां कोड ए० बी० सी० ५ वें एडीशनका उपयोग होता है। इसके हिस्सेदार भूलजी जीवनदास, कानजी जीवनदास, जमनादास रामदास, वीरजी नंदाजी, हरगोविन्ददास रामभाई, त्रिभुवनदास और हरिजीवनदास हैं। यह कंपनी अपना माल यूरोप, अमेरिका आदि देशोंमें भेजती है।

गोकुलदास एण्ड को० - इसका आफिस १४ हम्मानस्ट्रीटमें है। इसकी शाखाएं कोबे और एन्टवर्पमें हैं इसका तारका पता "होरी" है। इसमें ए० बी० सी० प्रायवेट तो ५ व ६कोडका उपयोग होता है। इस कंपनीका टेलीफोन नं२२१६३ है। सिवरीका टे०नं० ४०५७१ है। यह कंपनी अपना माल इंग्लैन्ड, जापान आदि स्थानोंमें भेजती है। इसमें वल्लभदास गोकुलदास दोसा, जमुनादास गोकुलदास दोसा, और लक्ष्मीदास गोकुलदास दोसा भागीदार हैं।

गोवर्धन एण्ड सन्स—इसका ऑफिस डोंगरीस्ट्रीटमें है। इसका टेलीफोनका नम्बर है २५१२६ हैं।

बालूभाई अम्बालाल एण्ड को—इस कम्पनीकाआफिस ४९ अपोलोस्ट्रीट फोर्टमें है। यहांका तारका पता एक्सटेन्शन (Extension) तथा टे० नं० २२४६७ है। यह कम्पनी बेंटलीके ए० बी० सी०के ६वें संस्करणके कोडका उपयोग करती है, तथा प्रायवेट कोडका व्यवहार भी होता है। इस कंपनीकी लंदन एजेन्सीका पता बालूभाई एण्ड अम्बालाल ५२ न्यू ब्रांडस्ट्रीट लन्दन ई०सी० २ है। इस कम्पनीके बड़े मालिक हैं सेठ अम्बालाल दोसा भाई। यह कम्पनी अफ्रिकासे रुई यहां मंगवाती है और यहांसे विलायत भेजती है।

भाईदासकरसनदास एण्ड को०—इसका आफिस ३१० एलफिन्स्टन सर्कल, फोर्ट बम्बईमें है। इसका टेलीफोन नं० २०५७३ है। इसका गोदाम न्यू कॉटन डिपो सिवरीमें है। गोदामका टे० नं० ४०५५४ है। इसका कालबादेवीरोड ३६३।३६५ पर रुईकी दलालीका काम होता है। इस आफिसका टे०नं०।२४८३५ है। इस कंपनीकी।स्थापना सन्१९०५ई०में हुई थी। इसकी शाखाएं कराची, भड़ोंच, पचलमाल और सांगलीमें हैं। इसके सेलिंग एजेंट घेंट, हावरे, ब्रीमेन, बार्सिलोना, मिलन, वियाना, एनवेर्प और लिवरपुलमें हैं; इसका तारका पता कैपिटल

नामक प्रसिद्ध व्यवसायी संस्थाओंकी सदस्य हैं। इसके यहां कपास और रुईका काम होता है। यह तैयार और वायदे दोनों प्रकारके सौदेका व्यवसाय करती है। यह भारतकी सभी प्रकारकी रुई तथा पूर्व अफरिकाकी रुईका व्यवसाय करती है। इसके सिवाय भारत तथा पूर्व अफरीकाकी रुईको इङ्गलैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी, इटली, स्पेन आदि दूर देशोंको यह कम्पनी स्वयं भेजती है। इसकी रुईकी खरीद पूर्व अफ्रिकाके बाजारोंमें भी होती है। इस कम्पनीका स्थान भारतकी प्रतिष्ठित व्यवसायी कम्पनियोंमें माना जाता है। इस कम्पनीकी इतनी उन्नति में इसके मालिकोंकी व्यवसाय सिद्ध बुद्धि तथा उनकी व्यवसाय कुशलतत्परताका सबसे अधिक हाथ है। उन्होंके लोकप्रिय व्यवहारके कारण यह कम्पनी आज अपने गौरवको अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। इस कम्पनीके मालिकोंमें सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के. टी. सी. आई. ई. सी. बी. ई. एम. एल. ए., वरजीवनदास मोतीलाल बी. ए. तथा रमनलाल गोकुलदास सरैया बी. ए. बी. एस. सी. हैं।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के०टी०, सी० आई० ई० सी० बी० ई० बम्बईके अग्रगण्य तथा प्रतिष्ठित नागरिक एवं सफल व्यवसायी हैं। आपने केवल बम्बई नगरके ही व्यवसाय एवं औद्योगिक स्वरूपको समुज्वल बनानेमें अनुकरणीय भाग नहीं लिया, वरन् समस्त भारतके व्यवसायको बढ़ाने तथा भारतीय कला कौशल एवं उद्योग धन्धोंकी उन्नतिमें आदर्श कार्यकर दिखाया है। इस नाते आप केवल बम्बईके ही नहीं, वरन् समस्त भारतके एक प्रभावशाली नेता हैं। आपका जन्म सन् १८७९ ई० में हुआ था। आपने बम्बई नगरमें ही शिक्षा पाई। स्थानीय एलफिन्स्टन कालेजसे ग्रेज्यूएट हो, आपने व्यवसायी क्षेत्रमें पदार्पण किया और थोड़े समयमें ही नारायणदास राजाराम कम्पनीके प्रधान हिस्सेदार हो गये। यहांके प्रभावशाली व्यवसायी संघ इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर के आप संस्थापकोंमेंसे हैं। आप सन् १९२४ तथा २६ में इस संस्थाके प्रमुख रहे; तथा इन्हीं वर्षोंमें इस संस्थाकी ओरसे आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके सदस्य भी रहे। आपने केन्द्रीय सरकारके असहनीय व्यवसायको कम करानेके लिये भारतीय तथा योरोपियन व्यवसायियोंका एक संयुक्त शिष्ट मण्डल स्थापित कर इस सम्बन्धमें सन् १९२२ में वायसरायसे भेंट की। आप यहांकी कॉटन एक्सचेंज तथा कॉटन ऐसोसिएशनके कुशल एवं जीवित कार्यकर्ता हैं, तथा यहांकी ईस्ट-इण्डिया कॉटन एसोसिएशनके आजकल आप प्रमुख हैं। आप रुईमें अन्य वस्तुओंकी मिलावटके कट्टर विरोधी हैं। विदेश भेजनेमें अधिक सुविधा उत्पन्न करानेके हेतु आपने कपासकी विशुद्ध उन्नतिके लिये अटूट परिश्रम किया है। आपके ही उद्योगसे सन् १९२२ में भारत सरकारने कॉटन ट्रान्सपोर्ट ऐक्ट नामक कानूनकी रचनाकी। आप इण्डियन सेन्ट्रल कॉटन कमेटीके सीनियर सदस्य रहे हैं तथा इन्दौरकी प्लान्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामक कपासके पौधोंके सम्बन्धकी खोज करनेवाली संस्थाके संचालक मण्डलके सदस्य हैं। बम्बईकी प्रान्तीय कौन्सिलमें योरोपीय युद्धके पूर्व आप

तारका पता—स्टार (Star) है, टेलीफोनका नम्बर २००३६ है। इसके लंदन और मैनचेस्टरके प्रतिनिधियोंके नाम क्रमशः जान इलियट एण्ड सन्स, अलालेन हाउस ई० सी० ४ तथा जेम्स ग्रीवज एण्ड को० हैं।

करसेतजी सोमनजी एण्ड को०—इसका आफिस बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८२८ में हुई थी। यह कंपनी स्थानीय ईस्ट इंडिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसके एजेंट हैं कावसजी पालनजी एण्ड को०। इसका व्यवसाय हांगकांग, शंघाई, कोबी और ओसाकामें होता है। इसके मालिक सेठ बी० सी० सेठना, पी० पी० सेठना, बी० सी० पी० सेठना, और सी० पी० सेठना हैं। इस कंपनीमें भारतके पूर्वीय भागकी रूईका व्यवसाय होता है। इसका टे० नं० २०६३६ है।

क्यानी (के० एच०) एण्ड को०—इसका आफिस ७११ एलफिंस्टन सर्कल फोर्टमें है। यह कंपनी अपना माल यूरप, चीन, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसका टे० फो० २३३०१ है। इसके यहां बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड उपयोग होता है।

टाटा (आर० डी०) एण्ड को०—इसका आफिस बम्बई हाउस नं० २४ ब्रूसस्ट्रीट, फोर्टमें है। इसका स्थापन सन् १८७०में हुआ है। इसकी शाखाएं शंघाई, ओसाका, रंगून, लिवरपुल और यार्कमें है। इसका तारका पता "कूटरनोटी" है। इस कंपनीमें बेंटले, सेवर्स वेस्टर्न यूनियन और प्रायव्हेट ए० बी० सी० ए० आई० का कोड उपयोग होता है। इसके संचालक आर० डी० ताता हैं। इसके डायरेक्टर बी० एफ० मदन, एन० डी० टाटा, बी० ए० बिलीमोरिया, और बी० जी० पोद्दार हैं। इसके सेक्रेटरी एस० डी० दाजी हैं।

नरोत्तम मानिकजी पोपेवाला—इनका आफिस ७८ बाजारगेट स्ट्रीटमें है। यहांका टेलीफोन नं० २३२९९ है।

पटेल कॉटन एण्ड को० लि०—इस कंपनीका पता गुलिस्तां (gulestan) है, नेपियर रोड फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ६८९ है। इसमें वेस्टर्नमेअर ४०, ५० कोडका उपयोग होता है। इसके संचालक ए० जी० रेनन्ड और पेस्तनजी डी० पटेल हैं। इसका न्यूकॉटन डिपो शिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०५३१ है। इस कंपनी द्वारा यूरोप और जापानमें माल सप्लाय होता है।

पवारी (डाक्टर) एण्ड को०—इसका आफिस १८ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह अपना माल यूरोपमें भेजती है। इसका टे० नं० २१२११ है। इसका तारका पता—फौडियेन है।

फतहभाई एण्ड सन्स—इसका आफिस ११ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह कंपनी सन् १८८० में स्थापित हुई थी। इसकी शाखा कोबी (जापान) में है। इसका तारका पता—फतेह-

तारका पता—स्टार (Star) है, टेलीफोनका नम्बर २००३६ है। इसके लंदन और मैनचेस्टरके प्रतिनिधियोंके नाम क्रमशः जान इलियट एण्ड सन्स, प्रफ्लाईन हाउस ई० सी० ४ तथा जेम्स मोत्रुस एण्ड को० हैं।

कसेतजी सोमनजी एण्ड को०—इसका आफिस बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८७८ में हुई थी। यह कंपनी स्थानीय ईस्ट इंडिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसके एजेंट हैं कावसजी पाउनजी एण्ड को०। इसका व्यवसाय हांगकांग, शंघाई, कोबी और ओसाकामें होता है। इसके मालिक सेठ बी० सी० सेठना, पी-पी० सेठना, बी० सी० पी० सेठना, और सी० पी० सेठना हैं। इस कंपनीमें भारतके पूर्वीय भागकी रुईका व्यवसाय होता है। इसका टे० नं० २०६३९ है।

ज्यानी (के० एच०) एण्ड को०—इसका आफिस ७।११ एल्फिंस्टन सर्कल फोर्टमें है। यह कंपनी अपना माल यूरप, चीन, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसका टे० फो० २३३०६ है। इसके यहां बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है।

टाटा (आर० डी०) एण्ड को०—इसका आफिस बम्बई हाउस नं० २५ ब्रूसस्ट्रीट, फोर्टमें है। इसका स्थापन सन् १८७०में हुआ है। इसकी शाखाएं शंघाई, ओसाका, रंगून, लिवरपुल और यार्कमें है। इसका तारका पता "फूटरनोटी" है। इस कंपनीमें बेंटले, सेवर्स वेस्टर्न यूनियन और प्रायव्हेट ए० बी० सी० ए० आई० का कोड़ उपयोग होता है। इसके संचालक आर० डी० ताता हैं। इसके डायरेक्टर बी० एफ० मदन, एन० डी० टाटा, बी० ए० बिलीमोरिया, और बी० जी० पोद्दार हैं। इसके सेक्रेटरी एन० डी० दाजी हैं।

नरसिंग मानिकजी पेंथेरख्य—इनका आफिस ७८ बाजारगेट स्ट्रीटमें है। यहांका टेलीफोन नं० २३२६६ है।

पटेल कॉटन एण्ड को० लि०—इस कंपनीका पता गुलिस्तां (gulestan) है, नेपियर रोड फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ६६९ है। इसमें बेन्टलेमेअर ४०, ५० कोड़का उपयोग होता है। इसके संचालक ए० जी० रेमन्ड और पेस्तनजी डी० पटेल हैं। इसका न्यूकॉटन डिपो शिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०५७१ है। इस कंपनी द्वारा यूरोप और जापानमें माल सप्लाय होता है।

पवारी (कल्लर) एण्ड को०—इसका आफिस १६ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह अपना माल यूरोपमें भेजती है। इसका टे० नं० २२२११ है। इसका तारका पता—फौलिवेज है।

फतइअली एण्ड सन्स—इसका आफिस १६ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह कंपनी सन् १८८० में स्थापित हुई थी। इसकी शाखा कोबी (जापान) में है। इसका तारका पता—"फ्लेद-

गील साहब भी मुफस्सिल कम्पनीमें काम करते थे। आपके भाइयोंने उन्हें उस कामसे छुड़ाकर रूईका व्यापार सिखाया, तथा उस समयसे पचास वर्ष हुए आप सब भागीदारके रूपमें काम करते हैं आपका व्यापार दिनोंदिन तरक्की करता गया। आप मद्रासकी चारपांच तथा बम्बईकी तीन चार मिलोंको रुई सप्लाई करते हैं तथा यहांसे लिवरपुलमें भी रुईका एक्सपोर्ट करते हैं।

सेठ मेघजी भाई ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपको गवर्नमेन्टने सन १९२१ में जे० पी० की उपाधि दी है। महियर राज्यमें दशाल होनेवाले हजारों जीवोंका वध आपहीके परिश्रमसे बन्द हुआ था। इस कार्यके लिये आपने एवं सेठ शान्तिदास आसकरण शाह दोनों सज्जनोंने १५००१) देकर महियरमें एक अस्पताल बनवा दिया है तथा भविष्यमें इस प्रकारको जीव हिंसा न होने देनेके लिये उक्त स्टेटसे परवाना लिखा लिया है। कच्छ मांडवीमें आपने एक स्वजाति सहायक फण्ड और एक जैन संस्कृत पाठशाला स्थापित की है। आपकी ओरसे मांडवी हाई स्कूलमें जैन विद्यार्थियोंके लिये फोर्थ क्लाससे मेट्रिक तक स्कॉलरशिपका भी प्रबन्ध है। इसप्रकार आपने अभीतक करीब ३॥ लाख रुपयोंका दान किया है। बम्बई स्थानकवासी जैन सकल संघके आप २२। २३ वर्षोंसे सभापति हैं, स्था० जै० कॉन्फ्रेंसके मलकापुर अधिवेशनके समय आप प्रमुख तथा बम्बई अधिवेशनके समय आप स्वागत कारिणीके प्रमुख रह चुके हैं।

सेठ मेघजीभाईके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ वीरचन्द भाई है। आप भी व्यवसायमें सहयोग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

१ मेसर्स गील एण्ड कम्पनी वेलार्ड पियर पोर्ट बम्बई T. A. Gillco	इस कम्पनीके द्वारा मिलोंको रुई सप्लाई करने तथा एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है, इसमें आपका साझा है।
२ मेसर्स गील एण्ड कम्पनी—करांची	यहां भी उपरोक्त काम होता है इस कम्पनीमें आपका कई दिनोंसे साझा है।

मेसर्स शान्तिदास आशकरण शाह जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ शांतिदास आशकरण शाह जे० पी० हैं। आप कच्छ मांडवीके निवासी कच्छी जैन ओसवाल (स्थानकवासी) सज्जन हैं।

सेठ शांतिदासजीके पिताश्री सम्वत् १९२२ में बंबई आये थे प्रारम्भमें आप निकल कंपनीको दलालीका काम करते थे। उस समय रुईके व्यवसायमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। अंतिम अवस्थामें आप अपने वतनमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका देहावसान संवत् १९५५ में हुआ।

सेठ शांतिदासजी संवत् १९६७ में बंबई आये। यहां आरम्भमें आपने भाटिया समाजके प्रतिष्ठित व्यक्ति रा० ब० सेठ वसन सेमजीके हाथके नीचे व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की।

हबीब एण्ड सन्स—इस कम्पनीका आफ़िस हनुमान बिल्डिंग तांबा कांटा पायधुनीमें है।

हाजीभाई लालजी—(जे० एन० एण्डको०)—इस कम्पनीका ओफिस ३१४ हार्नबी रोड फ्रोर्ट में है। यूरोपमें इसका सम्बन्ध स्यूक थामसन एण्डको० लिमिटेड १३८ लीडनहाल स्ट्रीट लन्दन इ० सी० ३से है इसका तारका पता "हेण्डसम" है। इस कम्पनीमें वेस्टलेके ए०बी०सी०कोडका उपयोग होता है। इसका टेलीफोन नं० २०३४२ है। सेम्यूएल स्ट्रीट में इसका टेलीफोन नं० २०५८३ है। इसके सञ्चालक ओ०महम्मद हाजीभाई, वी हाजी भाई, और सुल्तान भाई हाजी भाई हैं।

विदेशी एक्सपोर्टर्स

एवार्ट लेथन एण्ड को०—यह डेमरिल्ड लेन (बम्बई) में है इसका पो० बॉ० नं०५० है। इसकी करांची बैंकाक और सिङ्गापुरमें भी शालाएं हैं। पत्र व्यवहार लन्दनके नीचे लिखे पतेके अनुसार होता है। एग्लो स्याम कौरपोरेशन लि०—५ से० हेलेन पेलेस बिशोप बोट ई० सी० ३ टेलीफोन न०२००५ है।

इवलियन काटन को० लि०—मेकमिलन बिल्डिङ्ग हॉर्नबी रोड फोर्टमें है। इसका टेलीफ़ोन न० २२६२९ है।

जापान ट्रेडिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि०—२४ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ४०५ है। यह सन १८९२में स्थापित हुई थी। इसका हेड आफिस ओसाका (जापान) है। इसके प्रतिनिधि रेलवेपुरा पोस्ट अहमदाबादमें हैं। तारका पता "वौविन वर्क"। कोड वेस्टर्न यूनियन ए०बी० सी० ५ वेन्टलेज प्राइवेट है। इसका हर किस्मका माल जापानमें जाता है टेलीफोन नं० २२५७५ है। टी० ओगाया, केओगावा, और कैंसुडा इसके सञ्चालक हैं।

गोरीओ लिमिटेड—अहमदाबाद हाउस वीटेट रोड बेलार्ड स्टेटमें है। तारका पता सीसरो, ट्रूकानों वेनेरसी, सीसेमो है। कोड—ए० बी० सी० ५ वेन्टले स्ट्रीट वेस्टर्न यूनियन है। टेली-फोन २१०६०, २१०६१, २१२४६ है। इसका मैनेजिंग डाइरेक्टर डा० जी० गौरियो हैं।

गोशो काबूशीकी-केशा—अलवर्ट ग्रीज हौर्नबीरोड फोर्टमें है। इसका हेड आफिस ओसाका जापान है। टेलीफोन २१०८४, ४१५५५ (न्यू काटन डीपो शिवरी) ४१२७८ (गौडाउन, काटन डीपो शिवरी है।

महन (डब्लू० ए०) एण्ड को०—कारनाक बन्दरमें है। पो० बा० नं० १० है। इसके एजंट ग्लासगो, लिवरपूल, मैञ्चेस्टर, लन्दन, ओपोर्टो, मास्को, कलकत्ता, करांची और रंगून है। इसका टेलीफोन नं० २२५८५ है।
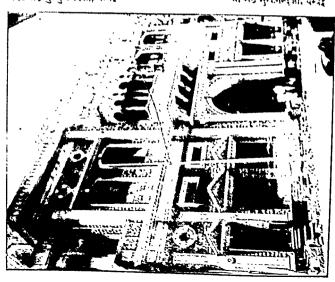
स्व० सेठ गुरमुखरायजी, बम्बई

श्री सेठ सुखानन्दजी, बम्बई

सुखानन्द धर्मशाला, बम्बई

अर्जुन खीमजी एण्ड को०—इस कंपनीका बंबई आफिसका पता डोंगरी स्ट्रीट मांडवी है। यह स्थानीय ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसका मुख्य टे० फो० नं० २५७३८ है। इसके रूईका गोदाम न्यू कॉटन डिपो सिवरीमें है। गोदामका टे०नं०४१०४२,इस कंपनीकी स्थापना सन् १८८५ ई०में हुई। यह कंपनी पुरानी और प्रतिष्ठित है। इसकी शाखाएं खामगांव,कारंजा, धारवाड़, हुबली, अमलनेर धूलिया, वनोसा, डिमस, जलगांव, दरियापुर और मलकापुरमें है। इसके एजंट—बार्सिलोना, घेंट, राटर्डम, मिलन, एम्सटर्डम, शङ्घाई, ज्यूरिक आदि शहरोंमें फैले हुए हैं। इसके तारके पते—फनुलघ्. चिदनचंद, और आनन्द (कारंजा) है इसके यहां बेंटलीके ५ वें और ६ वें ए० बी० सी० एडीशन ३८ वें मेयरके कोडसे काम होता है। इसके अतिरिक्त प्रायवेट कोडका भी उपयोग होता है।

यहां पूर्वीय भारत,उमरा, बरार, खानदेश,गुजराती सुरती आदि २ क्वालिटीके रूईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी ब्रिटिश, अमेरिका, जापान, चीन आदि देशोंको रूई भेजती है।

इसके डायरेक्टर्स हैं:— (१) सेठ अर्जुन खीमजी, (२) सेठ देवजी खीमजी (३) सेठ भगवजी अर्जुनजी, (४) सेठ मानजी देवजी, (५) सेठ मेघजी चतुर्भुज, (६) सेठ मेघजी रायशी (७) सेठ परमसी तेजपाल।

अमुर वीरजी कंपनी—इसका आफिस ३२० मिंटरोड फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८८१ ई०में हुई। इसका तारका पता सन् (Sun) है तथा टे० नं० २०१३८ है। इस कंपनीके मालिक सेठ खीमजी अमुर वीरजी हैं। यह कंपनी सभी प्रकारकी भारतीय रूईका व्यवसाय और एक्सपोर्ट करती है।

[illegible]—इसका हेड आफिस अहमदाबादमें है। बम्बई ऑफिसका पता सूरती मोहल्ला २ टांकोंमें है। इसके तारका पता सेन्सेशन है।

[illegible] एण्ड को०—इसका आफिस ६४ चकलास्ट्रीट, पायधुनीमें है। यह कंपनी स्थानीय ईस्टइन्डिया काटन एसोसियेशनकी सदस्य है। यहांसे विदेशोंमें रूई भेजी जाती है। इसका एक आफिस कोबी (जापान)में भी है। इसका गोदाम न्यू काटन डिपो सिवरीमें है। वहांका टे० नं० ४११३१ है।

[illegible] एण्ड को—इसका आफिस ५१ अपोलोस्ट्रीट, फोर्टमें है। तारका पता सीड्स है। इसका पोस्ट ए० बी० सी० ५,६ वेस्टर्न प्रायवेट है। इसका टेलीफोन नं० २१८८१ है। इसका

रूईका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय ब्यावर (राजपूताना) में दिया गया है।

मेसर्स दौलतमल कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक बूंदीके निवासी हैं। बम्बई दुकानका पता कालबादेवी, दौलत बिल्डिंगमें है। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई और ऊनका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय बूंदीमें दिया गया है।

मेसर्स फूलचंद मोहनलाल

इस फर्मके मालिक हाथरस (यू० पी०) निवासी मारवाड़ी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह फर्म कलकत्तेमें ८५ वर्षोंसे एवं कानपुरमें करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ फूलचंदजीके द्वारा यह फर्म विशेष तरक्कीपर पहुंची। आपका देहावसान संवत् १९५३ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे हाथरसमें फूलचंद एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल चल रहा है, जिसमें करीब ४०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं तथा वहां आपकी चिरंजीलाल बागला डिसपेन्सरी भी चल रही है। इसके अतिरिक्त कर्णवास, रुद्र प्रयाग आदि स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं बनी हैं एवं अन्नक्षेत्र चल रहे हैं।

सेठ फूलचंदजीके पश्चात् इस फर्मका काम सेठ शिवसुखरायजीने सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानका संचालन रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी और आपके भतीजे सेठ प्यारेलालजी (शिवसुखरायजी के पुत्र) करते हैं। रा० ब० चिरंजीलालजी हाथरसमें आनरेरी मजिस्ट्रेट और वहांके डिस्ट्रिक्टबोर्ड एवं म्युनिसिपेलेटीके चेयरमेन हैं। सेठ प्यारेलालजी बम्बई फर्मका काम सम्हालते हैं। बम्बई, हाथरस, कलकत्ता, बुलन्दशहर आदि स्थानोंपर इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—(हेडआफिस) मेसर्स मटरूमल शिवसुखराय—इस फर्मपर सराफी जमींदारी और रूई, गल्ला, सूत आदिकी आढ़तका काम होता है। इसके अतिरिक्त हाथरसमें २।३ दूकानें भिन्न २ नामोंसे और हैं जिनपर आढ़त, गल्ला, किराना, दाल आदिका व्यवसाय होता है। यहां आपके अधिकारमें फूलचंद बागला जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी और यू० पी० इञ्जिनियरिंग वर्क नामका धातुका कारखाना है।

शिवनारायणजी नेमाणी जे॰ पी॰, बम्बई

स्व॰ से॰ फतेलालजी राठी (शालिगराम नारायणदास), बंबई

बिनसीदासजी (बनरथराव बिनसीदास), बम्बई

रा॰ सा॰ नारायणदासजी राठी (शालिगराम नारायणदास) बंबई

(Capital) है। इस कम्पनीके मालिक सेठ भाईदास नानालाल और किसनदास हरिकिशनदास हैं। यह कम्पनी भारतकी प्रायः सभी प्रकारकी रूईका व्यवसाय करती है। इसका व्यापार प्रायः प्रतिवर्ष ७५ हजार गांठोंका होता है।

लक्ष्मीचन्द पदमशी एण्डको०—कालबादेवीरोड,इसका पो०बॉ० नं० २००७ है। इसके सञ्चालक लक्ष्मीचंद मानकचंद जोशी इत्यादि हैं। तारका पता पोपुली है। टेलीफोन नं० २०१८७ (आफिसका) है। और मारवाड़ी बाजारका २१२६६ है।

शामजी हेमराजजी एण्डको०—रेडीमनीमेनशनचर्चगेट स्ट्रीटमें है। तारका पता नरपाणी, टेलीफोन नं० २५१२८ है। इसके मालिक शामजी हेमराज हैं। ये रूईके व्यापारी हैं।

शीतल बाद (जे० सी०) लि०—११३ एसप्लेनेड रोड फोर्टमें हैं। टेलीफोन नं० २१०४६ है। ये कमीशन एजेन्ट हैं।

हरनन्दराय सूरजमल इस फर्मका ऑफिस २५३ कालबादेवी रोडपर है। इसका टे० नं २११४६ है। इसके मालिक हैं सेठ सूरजमलजी। इस फर्मकी एक ब्रांच कोचीनमें भी है। यह सब प्रकारकी रूईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका विशेष परिचय बैंकरोंमें दिया जा चुका है।

हीरजी नेनसी एण्डको०—इस कम्पनीका आफिस पोटिट बिल्डिंग ७।११ एलफिन्स्टनरोड, (सम्रा सरकल) में है। इसका स्थापन सन् १८६५ ई० में हुआ था। इसकी शाखाएं चालस (ईस्ट खानदेश), और गादाग (धारवाड़) में हैं। इसका तारका पता—रिप्लेनिश है।यहां बेंटले, मेयर्स तथा प्रायवेटके ए बी सी ५ ६ एडिशनका कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २१११४ है। शिवरी न्यूकाटनडिपोका टे० नं ४२१५० है तथा जवरी बाजार और रेसिडेन्सीका टे० नम्बर क्रमशः २३६६१ और ४१३७३ हैं। इसके भागीदार सेठ पदमसी हीरजी नेनसी और थेकरसी हीरजी नेनसी हैं। इस कम्पनीके द्वारा हर किस्म की रूई फ्रान्स, इटली, बेलजियम, स्पेन, हालैंड, इङ्गलैंड, आष्ट्रिया, जर्मनी, जापान, स्विट्जरलैंड और शंघाई जाती है।

पारसी तथा खोजा काटन एक्सपोर्टर्स

आदमजी हाजी दाऊद एण्ड को०—इसका हेड आफिस ६२ मुगल स्ट्रीटमें है। बम्बई ऑफिसका पता—भन्डारी स्ट्रीट है। कलकत्तामें भी इसकी एक ब्रांच है। यहांके तारका पता—गनीवाला, बम्बई है। इनके यहां बेन्टलीका ए०बी० सी० ५ वां संस्करणका कोड उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रमहाल और प्रायवेट भी व्यवहार किया जाता है।

करीमभाई एण्ड को० लिमिटेड—इसका हेड आफिस नं० १२।१४ आउट्रम रोड, फोर्टमें है। इसकी शाखाएं—कलकत्ता, हांगकांग, शंघाई, कोची तथा ओसाका (जापान) में हैं। इसका

किया। आप इस व्यापारमें इतने चतुर, मेधावी और दक्ष हैं कि इस धन्धेमें १९५० से अब तक आपने करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जन की। इस समय बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आप बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। रूईके बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है। बोलचालमें आपको लोग कॉटनकिंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप मारवाड़ी अग्रवाल सभाके सातवें अधिवेशनके सभापति रहे हैं। नासिकमें आपकी तरफसे धर्मशाला बनी हुई है। बम्बईमे आपका एक दवाखाना भी बना हुआ है इसके अतिरिक्त आजितगढ़में आपकी तरफसे एक दवाखाना और गौशाला बनी हुई है।

आपके कार्य्योंसे प्रसन्न होकर बम्बईकी गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की उपाधि प्रदान की है।

आपके इस समय एक पुत्र और तीन पौत्र हैं पुत्रका नाम श्रीयुत सूरज मलजी नेमाणी है।

मेसर्स समरथराय खेतसीदास

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (सीकर) निवासी अग्रवाल जातिके (बांसल गोत्रीय) सज्जन हैं। पहिले इस फर्मपर फकीरचंद समरथरायके नामसे व्यापार होता था। वर्तमान इस नामसे यह फर्म करीब ५० वर्षोंसे काम कर रही है। यह बहुत पुरानी फर्म है। इसे सेठ खेतसीदासजीने स्थापित किया। आप रामगढ़ हीमें रहते हैं। आपके पुत्र श्री० मोतीलालजी इस समय इस दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे नीचे लिखे स्थानोंपर व्यापार होता है।

(१) बम्बई—मेसर्स समरथराय खेतसीदास मारवाड़ी बाजार—हुंडी चिठ्ठी, सराफी तथा कपड़ा रूई एवं गल्लेकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) अमृतसर-मेसर्स समरथराय खेतसीदास आलू कटरा—इस फर्मपर विलायतसे डायरेक्ट कपड़ा आता है तथा सराफीका काम होता है।

(३) मन्दसोर—मेसर्स समरथ राय खेतसीदास—यहां आपकी एक जीन फेक्टरी है, तथा रूई व आड़तका काम होता है।

(४) प्रतापगढ़—(मालवा) मेसर्स समरथराय खेतसीदास—यहां आपकी १ जिनिंग फेक्टरी है। तथा रूई और आड़तका व्यापार होता है।

(५) नयानगर (ब्यावर) मेसर्स रामवक्स खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है।

(Capital) है। इस कम्पनीके मालिक सेठ भाईशम नानालाल और किसनदास हरिकिशनदास हैं। यह कम्पनी भारतकी प्रायः सभी प्रकारकी रुईका व्यवसाय करती है। इसका व्यापार प्रायः प्रतिवर्ष ७५ हजार गांठोंका होना है।

लक्ष्मीचन्द पदमशी एण्डको०—कालबादेवीरोड,इसका पो०बॉ० नं० २००० है। इसके सभ्याउक लक्ष्मीचंद मानकचंद जोशी इत्यादि हैं। तारका पता पोपुली है। टेलीफोन नं० २०१८७ (आफिस) है। और मारवाड़ी बाजारका २१२६६ है।

शामजी हेमराजजी एण्डको०—रेडीमनोमैनशनचर्चगेट स्ट्रीटमें है। तारका पता नरपाणी, टेलीफोन नं० २५१२८ है। इसके मालिक शामजी हेमराज हैं। ये रुईके व्यापारी हैं।

घोतलबाद (जे० सी०) लि०—११३ एसप्लेनेड रोड फोर्टमें हैं। टेलीफोन नं० २१०४६ है। ये कमीशन एजेन्ट हैं।

हरनन्दराय सूरजमल इस फर्मका ऑफिस २५३ कालबादेवी रोडपर है। इसका टे० नं २११४६ है। इसके मालिक हैं सेठ सूरजमलजी। इस फर्मकी एक ब्रांच कोचीनमें भी है। यह सब प्रकारकी रुईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका विशेष परिचय बैंकरोंमें दिया जा चुका है।

हीरजी नेनसी एण्डको०—इस कम्पनीका ऑफिस पोटिट विल्डिंग ७।११ एलफिन्स्टनरोड, (रस्म सरकल) में है। इसका स्थापन सन् १८६५ ई० में हुआ था। इसकी शाखाएं चालक (ईस्ट खानदेश), और गादाग (धारवाड़) में हैं। इसका तारका पता—रिप्लेनिश है यहां बेंटले, मेयर्स तथा प्रायवेटके ए बी सी ५ ६ एडिशनका कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २१११४ है। शिवरी न्यूकाटनडिपोका टे० नं ४२१५० है तथा जवरी बाजार और रेसिडेन्सीका टे० नम्बर क्रमशः २३६६१ और ४१३७२ हैं। इसके भागीदार सेठ पदमसी हीरजी नेनसी और खेतसी हीरजी नेनसी हैं। इस कम्पनीके द्वारा हर किस्म की रुई फ्रान्स, इटली, बेलजियम, स्पेन, हालैंड, इङ्गलेंड, आष्ट्रिया, जर्मनी, जापान, स्विट्जरलैंड और शंघाई जाती है।

पारसी तथा खोजा काटन एक्सपोर्टर्स

आदमजी हाजी दाऊद एण्ड को०—इसका हेड आफिस ६२ मुगल स्ट्रीटमें है। बम्बई ऑफिसका पता—भन्डारी स्ट्रीट है। कलकत्तामें भी इसकी एक ब्रांच है। यहांके तारका पता—गनीवाला, बम्बई है। इनके यहां बेन्टलीका ए०बी० सी० ५ वां संस्करणका कोड उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रमहाल और प्रायवेट भी व्यवहार किया जाता है।

करीमभाई एण्ड को० लिमिटेड—इसका हेड आफिस नं० १२।१४ आउट्रम रोड, फोर्टमें है। इसकी शाखाएं—कलकत्ता, हांगकांग, शंघाई, कोबी तथा ओसाका (जापान) में हैं। इसका

अली' है। इसमें बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २०१२४ है। इसका व्यापारिक संबंध चीन और जापानसे है। इसके अन्तर्गत अहमद एन० फतेह अली, रईस एन० फतेह अली० आशद एन० फतेह अली, आबू एन० फतेहअली और आदनन् एन० फतेह अली पार्टनर हैं।

बाम्बे कॉटन कम्पनी—इसका आफ़िस हार्नबी-बिल्डिंग हार्नबीरोड, फोर्टमें है। इसका टे० नं० २३११० है। इस कंपनीका एक छोटा आफिस रायबहादुर बन्सीलाल अबीरचंदकी कोठी-पर मारवाड़ी बाजारमें है। इस कंपनीका स्थापन संवत् १९१५ है। इसका एक एजेंट फर्सेतजी बोमनजी एण्ड को० कोबीमें है। इसका तारका पता—स्कायर (esquire) है। इस कंपनीमें सिंध, उमरा, भरोच, अमेरिकन आदि रुईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी अपना माल यूरोप, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसके पार्टनर फिरोजशाह सोराबजी गजपर और फ़ाजलभाई इब्राहिम एण्ड को० लिमिटेड हैं।

बोरा मियाभाई नत्थू—इसका ऑफिस हनुमानबिल्डिंग तांबा कांटा, पायधुनीमें है। इसका टेलीफोन नं० २०२६८ और २२०६१ है।

ससून डेविड एण्ड को० लि०—५६ फ़ार्बस स्ट्रीट, पो बॉ १६७। इसका हेड ऑफिस लन्दनमें है। इसकी शाखायें मेञ्चेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, हांगकाङ्ग, संघाई, बगदाद, बसरा, और हैंकोमें हैं। टेलीफोन नं० २००२५ है।

ससून ई० डी० एण्ड को० लि०—डगौलरोड बेलार्ड स्टेट पो० बॉ १६८, शाखायें लन्दन, माञ्चेस्टर, कलकत्ता, हाङ्गकाङ्ग करांची, बगदादमें हैं। तारका पता "एलियस" और टेलीफोन नं० २१६११ है। कोड मारकोनी ए, बी,सी, ५, ६ बेंटलेज है।

मेरवानजी ... एण्ड को०—७ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। यह सन् १८९६में स्थापित हुई थी। इसके एजेन्ट लन्दन, हेमबर्ग, पेरिस और जिनोवा इत्यादिमें हैं। तारका पता 'दूयूनी-डिटी' है कोड ए. बी. सी ५ प्राइवेट,टेलीफोन नं० ४१३८१ है। इसके मालिक आर, एस, पूनभी हैं।

मेहता एच० एन० एण्ड को०—१२३ एसप्लेनेड रोड फ़ोर्टमें है। इस फ़र्मकी स्थापना सन् १८८६में हुई। इसका तारका पता "मर्क्यरी" है। कोड यूज्ड ए० बी० सी० पांचवां एडिशन है इसका ऑफिस टेलीफ़ोन नं० २० ३२४, और २३५२१ है। और न्यूकाटन डिपो सिवरीके गोडाउनका टेलीफ़ोन नम्बर ४००११ है। इसका माल लिवरपूल और यूरोपके अन्य नगरोंमें जाता है।

व्यापार रुईका है। सेठ भागचंदजीका सब व्यवसाय सी० पी० में है। वरारमें आपकी कई जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

बम्बईमें यह फर्म कथेड्रल स्ट्रीट, (कालबादेवी रोडके पास) पर है। इस फर्म पर काटन, सराफी और गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हीरालाल रामगोपाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी हैं। आप फतहपुर (सीकर) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना ६७ वर्ष पूर्व सेठ हीरालालजीने की। आपका देहाव-सान सं० १९४२ में हुआ। आपके पुत्र सेठ रामगोपालजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष उत्तेजन दिया था। आपका देहावसान भी संवत् १९७८ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे देशमें एक संगमरमरकी छत्री और एक मन्दिर बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपने ४ लाख ७५ हजारका एक ट्रस्ट किया है। जिससे धार्मिक कृत्योंका प्रबंध बराबर होता रहे। आपकी फतहपुर, मथुरा और ऋषीकेशमें धर्मशालाएं बनी हैं, और सदाव्रत चालू है। हरिद्वारमें भी सदाव्रतका प्रबंध है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल शेख मेमन स्ट्रीट—T. A. Honar—यहां सराफी और आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रामगोपाल केशवदेव—इस नामसे रुईका जत्थेका व्यापार होता है।

(३) वरधा (C. P.) हीरालाल रामगोपाल—यहां आपकी एक जीनङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी है। और रुईका व्यापार होता है। आपका एक जमींदारीका गांव भी है। इस फर्मके पास मुत्सान, जापान, फारवस आदि विदेशी कम्पनियोंको एवं मॉडल मिल नागपुरकी रुईकी खरीदीकी एजेंसी रहती है।

(४) नागपूर—हीरालाल रामगोपाल काटन-मार्केट—रुईका व्यापार और उपरोक्त कम्पनियोंकी रुई खरीदनेकी एजेंसी है।

(५) सांवनेर (नागपुर) हीरालाल रामगोपाल—रूईका व्यापार और एजेंसीका काम।

(६) पाण्डुरना (नागपुर)—हीरालाल रामगोपाल— " " "

(७) धामनगांव (बरार) हीरालाल रामगोपाल—जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी है।

(८) चंदोसी (यू० पी०) मे० रामगोपाल हीरालाल और रामगोपाल केशवदेवके नामसे २ दुकानें हैं यहां रुई और गल्लेकी आढ़त का काम होता है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर २ जीनिङ्ग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां है। ट्रस्टके २ जागिरीके गांव भी यहांपर हैं।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके (गर्ग गौत्री) जैन धर्मावलम्बी हैं। आपका आदि निवासस्थान फतहपुर (सीकर स्टेट) में है। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना ६०।७० वर्ष पहिले सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुई थी। तथा इस फर्मको विशेष तरक्की सेठ सुखानन्दजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। आपने संवत् १९५६ में जब शेखावाटी प्रान्तमें दुर्भिक्ष पड़ा था तब रुपयेका सोलह सेर अनाजका भाव बांधकर जनताको बहुत लाभ पहुँचाया था। फतहपुरमें आपने गुरुमुखराय जैन स्कूल खोल रक्खा है। आप श्रीशिखरजीकी रक्षार्थ तीर्थक्षेत्र कमेटीमें अभीतक करीब ३० हजार रुपया दे चुके हैं। बम्बईके माधोबागमें आप की एक विशाल तथा प्रसिद्ध धर्मशाला है, जिसमें हमेशा सैकड़ों मुसाफिर विश्रान्ति पाते हैं। इसमें करीब ६ लाख रुपयोंकी लागत लगी है। एक धर्मशाला आपने श्रीमन्दार गिरिमें जैन यात्रियोंके सुभीतेके लिये करीब तीस हजार रुपयोंकी लागतसे खोली है। इसके अतिरिक्त आप एक विशाल मन्दिर बनवानेका आयोजन कर रहे हैं जिसके लिये आपने अनेक स्थानोंके भव्य मन्दिरोंकी इमारतोंके फोटो मंगवाये हैं।

आपका मैसूरके महाराज तथा सीकरनरेशसे भी परिचय है। वर्तमान सीकरनरेशके पिता महाराज माधोसिंहजीको आपने अपनी धर्मशालाका दरवाजा खोलनेके लिये आमन्त्रित किया था। उस खुशीके उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशहरेके दिन भैंसा मरवाना बन्द करनेकी आज्ञा जारी की थी। इसके पूर्व एक बार महाराज सीकर यहां और आये थे, उस समय आपने जैन समाजकी ओरसे महाराजको मानपत्र दिया था। इस उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशलक्षिणी पर्वमें तथा अष्टमी चतुर्दशीको जीवहिंसा बिल्कुल बन्द करवानेकी आज्ञा दी थी।

वर्तमानमें आपकी दूकान मारवाड़ी बाजारमें है। (T.A. Cloudy) इस फर्मपर हुण्डी, चिट्ठी, रूई, अलसी, गेहूं, चांदी, सोना, तथा सराफी बिजिनेस एवं कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स गोरखराम साधूराम

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। बम्बईकी फर्मका पता कालबादेवी रोड बम्बई है। यहांपर रूई और बैंकिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इस फर्मका विस्तृत परिचय अन्यत्र दिया गया है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके संचालक ब्यावरके निवासी हैं। ब्यावरमें यह फर्म एडवर्ड मिलकी मैनेजिंग एजेंट है। बम्बईकी शाखाका पता लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग, ऊन और

४ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० मलकवल (पंजाब)—यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है। तथा कॉटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कंपनी

इस फर्मका स्थापन सन् १८५१ में सेठ धरमसीजीके हार्थोंसे हुआ। इस फर्मके मालिक जामनगर (शाकर) के निवासी माटिया जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कम्पनी धानजी—मांडवी } कॉटन मरचेंट और कमीशन एजंसीका काम होता है।

२ अमरावती—धरमसी जेठा कम्पनी काटन मार्केट } कॉटन बिजिनेस होता है।

ठक्कर माधवदास जेठाभाई

इस फर्मकी स्थापना सेठ माधव दासजीने संवत् १९४७ में की। आप शाकर जामनगर के निवासी माटिया जातिके हैं। वर्तमानमें सेठ माधवदासजी ही इस फर्मके मालिक हैं। आपकी ओरसे शाकरमें सेठ माधव दास जेठा भाई ब्राह्मण बोर्डिंग हाऊस चल रहा है। इसमें २६ विद्यार्थियों के भोजन एवं शिक्षणका प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—ठक्कर माधव दास जेठा भाई होली चकला—फोर्ट } यहां कॉटन कमीशन.एजंसी और मुकादमीका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मिलोंका एक्स्पोर्टरका काम मुकादमी तरीके से यह फर्म करती है। इस फर्मका शिवरीपर रूईका काम है।

मेसर्स मोतीलाल मूलजी भाई

इस फर्मको ३६वर्ष हुए सेठ मोतीलाल मूलजीभाईने स्थापित किया था,आपका देहावसान संवत् १८९१ में होगया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मणीलाल मोतीलाल भाई हैं। आप राधनपुरके निवासी जैन सज्जन हैं। मणीलालसेठको सन् १९२४ में गव्हर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। आपने १॥ लाखकी लागतसे राधनपुरमें एक फ्री डिस्पेंसरी स्थापित की है। तथा वहां २० हजारकी लागतसे एक सदाव्रत की स्थापना की है। २०हजार रुपया आपने स्वजाति फण्डमें दिया है। तथा २० हजार रुपया राधनपुरसे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये बाहर जानेवाले विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं। १० हजारकी लागतसे आपने एक जैन-पाठशाला स्थापित की है। और ४० हजारकी लागतसे आपने एक पालीतानाका संघ निकाला। इसके अतिरिक्त ३० हजार रुपया महावीर बोर्डिंग हाउसमें और ३७ हजार रुपया पंजाब गुरुकुलमें दान किये हैं।

मेसर्स बाबूलाल गंगादास

इसफर्मके वर्तमान मालिक बाबू गंगादासजी यहांपर करीब १४ वर्षोंसे रुई व गल्लेका व्यापार करते हैं। इसके पूर्व आप केवल ३०) मासिकपर सर्विस करते थे। इतने थोड़े समयमें आपने रुई बाजारसे अच्छी सम्पत्ति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स बाबूलाल गंगादास मारवाड़ी बाजार- (T. A. Babstcarn) इसफर्मपर रुई, गल्ला, और तिलहनके वायदेका काम होता है।

मेसर्स परी मूलचन्द जीवराज

इस फर्मको सेठ मूलचन्द जीवराजने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। वर्तमानमें इसके मालिक सेठ मोहनलाल मूलचन्द और केशवलाल मूलचन्द हैं।

लीमड़ीमें आपकी ओरसे मूलचंद जीवराज कन्या-विद्यालय स्थापित है। बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालयमें आपने १० हजार रुपये दिये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

बम्बई-मेसर्स मूलचन्द जीवराज—सिलवर मेन्शन पारसी गली—यहां चांदी सोना रुई शक्कर और कमीशनका काम होता है, इसके अतिरिक्त रमणीकलाल केशवलालके नामसे एरण्डा अलसी, गेहूं, शक्कर और कमीशनका काम होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी बढ़वाण शहरमें एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, बोटातमें एकजीनिंग फेक्टरी, तथा बढ़वाण केम्पमें एकजीनिंग फेक्टरी है और लीमड़ीमें कॉटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक सेठ रतीलाल त्रिभुवनदास ठक्कर हैं। आप सूरत निवासी लोहाना जातिके सज्जन हैं। सेठ रतीलाल भाईने इसफर्मको सन् १८२० में स्थापित किया, तथा इसकी विशेष उन्नति भी आपहीके द्वारा हुई, आप ईस्ट इण्डिया कॉटन ब्रोकर्स एसोशिएशनकी रिप्रेजेंटेटिव्ह कमेटीके मेम्बर तथा कॉटन ब्रोकर्स एसोशिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी कॉटन केबिन—मम्बादेवी-बम्बई T. A. Cabin इस फर्ममें रुईके वायदेका काम बम्बई लिवरपूल तथा न्यूयार्कके बाजारोंसे होता है। इसके अतिरिक्त सोना, चांदी, अलसी, गेहूंका काम भी यह फर्म करती है।

सालिगरामजीने पोकरनमें वल्लभ सम्प्रदायका एक मन्दिर स्थापित किया है, तथा धर्मशालाएं, कुंए, सदाव्रत आदि जारी किये हैं। सेठ सालिगरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी माहेश्वरी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठा-सम्पन्न व्यक्ति हो गये हैं। आपने नागपुर अधिवेशनके समय माहेश्वरी महासभाके सभापतिका पद सुशोभित किया था। आपने कई धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाया, कुएं खुदवाये, तथा विद्यालयों एवं संस्थाओंको सहायताएं दीं। आपने एक बड़ी रकमका धर्मादे फंडका ट्रस्ट कर रक्खा है, आपकी ओरसे एक सदाव्रत चालू है। तथा नाशिकमें एक बड़ी धर्मशाला आपने बनवाई है। आपने करीब १॥ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति एक विद्यालय स्थापित करनेके लिये दान की है। आपका देहावसान हुए करीब १८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ फतेलालजीके भतीजे सेठ नारायणदासजीको गवर्नमेन्टने सन् १९२५ में रायसाहबकी पदवी दी है। आप उमरावतीमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने पोकरनमें एक अस्पतालकी स्थापना की है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ अमरावती—मेसर्स हीरालाल शालिगराम T. A. Diamond	यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और जमींदारी बैंकिंग व काटनका बिजिनेस होता।
२ बम्बई—मेसर्स शालिगराम नारायणदास एण्ड कम्पनी ... T. A. Rainfall	बैंकिंग कमीशन एजेंसी तथा काटन बिजिनेस होता है। रूईका जत्था, काटनका एक्सपोर्ट तथा काटन बिजिनेस होता
३ खिरनी (बरार) मेसर्स श्रीराम शालिगराम	जमींदारी-बैंकिंग तथा काटन कमीशनका काम होता है। यहां आप की २ जीनिङ्ग व एक प्रेसिंग फेक्टरी है।
४ ... (बरार) मेसर्स श्रीराम शालिगराम	बैंकिंग व काटनका बिजिनेस होता।
५ ... मेसर्स रामचंद्र नारायणदास	जमींदारी और बैंकिंग वर्क होता है। तथा जीनिङ्ग फेक्टरी है

इसके अतिरिक्त अकोला, खामगांवकी कई जीनिङ्ग प्रेसिङ्ग फेक्टरीजमें आपके भाग हैं। तथा ... कृष्णा मिलस के आप शेयर होल्डर हैं।

सेठ शिवनारायण नेमाणी जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीमान सेठ शिवनारायणजी नेमाणी जे० पी० हैं। आप अग्रवाल जातिके बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूड़ी (खेतड़ी-जयपुर) में है। संवत् १९०१ में आपके पिता सेठ बंशीरामजी नेमाणी बम्बई आये। आप पहले पहल ... रतनसीरामके यहां काम करते थे। बादमें संवत् १९३० से १९४२ ई० तक गोविन्दराम ... के यहां पर काम किया। संवत् १९४३ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् संवत् १९४१ में आपके पुत्र श्रीयुत शिवनारायणजी नेमाणी बम्बईमें आये। संवत् १९५० तक आपने दुकानोंकी दलाली की। इसके पश्चात् आपने रूईका व्यापार प्रारम्भ

रुईके व्यापारी और ब्रोकर्स

अनूपलाल अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट एण्ड कमीशन एजन्ट

अनूपचन्द लक्ष्मीचंद सोलानी शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स एण्ड कमीशन एजेंट

अमरसी एण्ड संस सुदामा हाउस वेलार्ड स्टेट मर्चेन्ट

अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट

अबूबकर अब्दुल रहमान एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट, मरचेंट ब्रोकर्स

आदम दाऊजी हाजी एण्ड कं० लि० मन्हारी स्ट्रीट

अमरसी दामोदर भुलेश्वर मरचेंट

अर्जुन खीमजी एण्ड को० डोंगरी स्ट्रीट मरचेंट

असुर वीरजी मिंटरोड फोर्ट मरचेंट

आसाराम मूलचंद मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स

ईश्वरदास एण्ड कम्पनी मारवाड़ी बाजार कमीशन एजेंट

करमचंद जगजीवन एण्ड को० कालबादेवी रोड ब्रोकर्स

करीमजी के० एच० एण्ड को० एल्फिन्स्टन सर्कल फोर्ट मरचेंट

करीम भाई एण्ड कं० लि० आउटरम रोड मरचेंट

कॉटन एजेंट लिमिटेड चर्चगेट स्ट्रीट मरचेंट

किलाचंद देवचंद कसेरा स्ट्रीट मरचेंट

केशरभाई प्रेमचंद रामचन्द्र शेअरबाजार

कुंवरजी वीरजी एण्ड को० चकला स्ट्रीट मरचेंट

केसरीमल अमरीलाल कालबादेवी मरचेंट

कृष्णलाल एण्ड को० लिमिटेड कालबादेवी मरचेंट

कृष्णदास वसनजी खेमजी वर्जिस स्ट्रीट मरचेंट

खीमजी विश्राम एण्ड को० हार्नबी रोड मरचेंट

खुशालचंद गोपालदास भुलेश्वर मरचेंट

गजाधर नागरमल मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स

गुलराज चूड़ीवाला केदार भवन कालबादेवी ब्रोकर्स

गाडूमल गुमानमल मम्बादेवी, मरचेंट

गोरखराम साधूराम कालबादेवी मरचेंट

गोपीराम रामचंद्र कालबादेवी मरचेंट

गोकुलभाई दौलतराम ब्रोकर्स

गोल्डा लि० बेलार्ड स्टेट मरचेंट

गोकुलदास डोसा एण्ड को० हनुमानगली मरचेंट

गोविंदजी वसनजी एण्ड संस गिरगांव बैंक रोड

गोविन्दजी धानजी चिंचबंदर मरचेंट एण्ड कमीशन एजेंट

गुजरात कॉटन कम्पनी हार्नबी रोड मरचेंट

चम्पालाल रामस्वरूप कालबादेवी मरचेंट

चांदमल फतहचन्दास कालबादेवी मरचेंट

चिमनलाल सुराभाई मारवाड़ी बाजार

चुन्नीलाल नानचंद मारवाड़ी बाजार—ब्रोकर्स

जमना दास अडूकिया कालबा देवी रोड ब्रोकर्स

जयदेवजी [illegible] मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स

जगजीवन [illegible] मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स

जवाहर सिंह [illegible] पारसीगली मरचेंट

जीवनलाल [illegible] शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स

डुंगरमल [illegible] मरचेंट,

[illegible] मारवाड़ी बाजार [illegible]

[illegible] मरचेंट [illegible]

कपड़ेके व्यापारी

CLOTH-MERCHANTS

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबल्ला खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है, तथा रूईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़) —यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १६४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १६१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १६२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडआफिस है। तथा आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रूईका घरू और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्मके द्वारा मिलोंको रूई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आलू कटरा (T. A Bagla)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरसुखराय भागचंद

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। सेठ हरसुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरसुखरायजीका हेड आफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दुकाने हैं। इस फर्मका प्रधान

कपड़ेके व्यापारी

कपड़ेका व्यवसाय—

समय चक्र हमेशा परिवर्तित होता रहता है। उत्थानसे पतन और पतनसे उत्थान यह प्रकृतिका सनातन नियम है। संसारका इतिहास इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक समय जिस भारतके बने कपड़ेकी सफाई, बारीकी और मुलामियतको देखकर आजका सभ्य कहलानेवाला संसार दंग रह जाता था आज वही भारत गज गज कपड़ेके लिए विदेशोंका मुंह ताकता रहता है। इतिहाससे पता चलता है कि भारतवर्षमें हजारों वर्ष पहिलेभी बढ़ियासे बढ़िया कपड़ा बुना जाता था और यहांके बुने हुए कपड़ेको विदेशवाले बड़े चावसे खरीदते और पहनते थे। ईसवी सन्‌के आरम्भमें इतिहासवालोंने लिखा है कि अरबके निवासी यहांसे सादे, रंगीन, सूती मालको खरीदकर लाल सागरकी राहसे यूरोप पहुंचाते थे। रोमके बादशाह अगस्त सीजरके समय रोमकी रानियां भारतीय कपड़ेसे अपनी देहको सजानेमें बड़ा गौरव समझती थीं। इसके पश्चात मध्यकालीन युगमें भी— जब पोर्तगीज, अंगरेज, फ्रांसीसी और डच कम्पनियां सीधे भारतवर्षसे व्यापार करने लगीं— उस समयभी करोड़ोंकी लागतका सूती माल यूरोप जाता रहा। नीचे लिखे अङ्कोंसे यह बात और स्पष्ट हो जायगी।

सन्	भारतसे विलायतको एक्सपोर्ट हुई गांठे— (ये अङ्क केवल कलकत्ते से गई हुई गांठोंके हैं)
१८०१	६००० से ऊपर
१८०२	१४००० से ऊपर
१८०३	१३००० से ऊपर
१८२६	१००० के भीतर

सन्०	भारतसे अमेरिकाको एक्सपोर्ट हुई गांठे—
१८०१	१३००० से ऊपर
१८२६	केवल ३००

स्व० सेठ रामगोपालजी (हीरालाल रामगोपाल)
बम्बई

श्री० केशवदेवजी गनेड़ीवाला (ही० रा०) बम्बई

श्री० विश्वेश्वरलालजी टीबड़ेवाला, बम्बई

सेठ गोकुलदास डूंगरसी जे० पी०

सेठ दामोदर गोविन्दजी बम्बई

मेसर्स वेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी

इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ वेगराजजीने स्थापित किया। आप मायन (रेवाड़ी गुड़गांव) के निवासी सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री वेगराजजी गुप्त, रामस्वरूपजी गुप्त और प्यारेलालजी गुप्त हैं। आप तीनों भाई शिक्षित हैं, एवं मारवाड़ी समाजके हरएक कार्यों में अग्रगण्य रहते हैं। आप मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी वाचनालय, मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स कॉटनशीड ह्वीट ब्रोकर्स एसोशिएशनके जीवित कार्यकर्ता हैं। श्रीवेगराजजी गुप्त मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर और ईस्ट० इण्डिया का० ए० के रिप्रेजेंटेटिव कमेटीके मेम्बर हैं। बाम्बे काटन ब्रोकर्स एसोशियेशनके स्थापनमें आपने विशेष रूपसे भाग लिया था। श्री० प्यारेलालजी गुप्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयके मैनेजिङ्ग कमेटीके सदस्य और उपमंत्री हैं। आप यहांके मारवाड़ी वाचनालय (जो बम्बईमें एक मात्र हिन्दी सार्वजनिक वाचनालय है) के मंत्री हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) वेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी * कालबादेवी बम्बई T, A, sodalabha—यहां कॉटन अलसी, गेहूं कमीशन व दलालीका बिजिनेस होता है।

(२) वेगराम रामस्वरूप—रेवाड़ी—आढ़तका काम होता है।

कॉटन मुकादम

मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक काठियावाड़ प्रांतमें जामनगरके पास शाफर नामक स्थानके निवासी भाटिया जातिके हैं। इस फर्मको यहां सेठ जेठाभाई देवजीने संवत् १९६० में स्थापित किया था।

सेठ जेठाभाई देवजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। इस फर्मकी ओरसे सेठ देवजी वसनजी एग्लोवर्नाक्यूलर स्कूलके नामसे एक प्राइवेट स्कूल शाफरमें चल रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक (१) सेठ जेठाभाई देवजी, (२) गोकुलदास देवजी, (३) सेठ लक्ष्मीदास देवजी, (४) सेठ नारायणदास जेठाभाई हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स जेठाभाई देवजी शाकगली-मांडवी बम्बई—इस फर्मपर कॉटन व शीड्सका घरू व इतर मुकादमी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर एक्सपोर्टका भी काम होता है।

२ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० केम्पवेल स्ट्रीट करांची—यहां भी कॉटन शीड्सका व्यवसाय एवं एक्सपोर्टका काम होता है।

३ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० गोंडल-काठियावाड़—यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन बिजिनेस होता है।

---

* परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथा स्थानमें नहीं छाप सके—प्रकाशक।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स गोकुलदास डुंगरसी मूलजी जेठा मारकीट चौक T. A. Promsukh इस फर्मपर बाम्बे कॉटन मिलकी २० वर्षसे, जमरोद मिलकी १२ वर्षसे तथा आसर मीलकी ३ वर्षसे एजंसी है। यह फर्म रुबी मिलमें पार्टनर भी है।

मेसर्स घेलाभाई दयाल

इस फर्मका स्थापन सेठ घेलाभाई दयालने ६५ वर्ष पूर्व किया तथा सेठ जीवराज दयाल और सेठ घेलाभाई दयालके हाथोंसे इसके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरीदास घेलाभाईदयाल और गोकुलदास जीवराजदयाल हैं। सेठ गोकुलदासजी, पीसगुड्स मरचेंट्स एसोसिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप (जामनगर) खम्भालियाके निवासी भाटिया जातिके हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स घेलाभाईदयाल घड़ियालगली मूलजी जेठा मारकीट—इस फर्मपर विलायती, कोरी-जगन्नाथी और मलमलका व्यापार होता है। इस फर्मपर कपड़का विलायतसे डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स दामोदर गोविन्दजी

इस फर्मके मालिक खम्भालिया (जामनगर) के निवासी भाटिया (वैष्णव) जातिके सज्जन हैं। इस को सेठ दामोदरदासजीने संवत् १९६०में स्थापित किया था। इसके पूर्व आप सेठ घेला-दयालके साथ साझेमें कपड़का व्यापार करते थे। आपका देहावसान संवत् १९८१में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ विठ्ठलदास दामोदर गोविन्द जी और सेठ पदमसी दामोदर गोविंद जी हैं। सेठ विठ्ठलदास जी संवत् १९५५से कपड़का व्यापार करते हैं। आपने संवत् १९५६के भयङ्कर दुष्कालके समय बहुत फंड एकत्रित करके जानवरों और गरीबोंकी सहायतामें बहुत परिश्रम उठाया था। आप सन् १९८१से पोर्टट्रस्टके और १९२४से बाम्बे कार्पोरेशनके मेम्बर हैं। आप कपड़ा बाजारके सर्वेयर और पञ्चायत हैं।

सेठ विठ्ठलदास जी कपड़ेके व्यापारियोंकी मंडलीके वाइसप्रेसिडेन्ट रह चुके हैं। आप इण्डियन मर्चेंट्स चेम्बरकी कमिटीके मेम्बर और सर हरकिसनदास हास्पिटल और उनकी संस्थाओंके ट्रस्टी हैं। भाटिया कान्फ्रेन्सके दूसरे अधिवेशनके आप सभापति भी रह चुके हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सेठ मणीलाल भाई बम्बईके महावीर विद्यालय बोर्डिंग हाउसके एवं एरंडा एण्ड शीड मरचेंट्स एसोसिएशनके ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप कॉटन ब्रोकर्स एसोशियेसन, बाम्बे सराफ महाजन एसोशिएशनके वाइस प्रेसिडेंट हैं। आप जैन कान्फ्रेन्सके सुजानगढ़में प्रेसिडेंट रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त जैन कान्फ्रेंसके जनरल सेक्रेटरीके रूपमें आपने १० वर्ष तक काम किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई —मोतीलाल मूलजीभाई चांदरावाला माला T. A. mahabir यहां कॉटनका हाजिर और वायदेका तथा चांदी एरंडा और शीडका व्यवसाय होता है।

(२) धीरमगाव-मोतीलाल मूलजीभाई—कॉटनका व्यापार है।

(३) वढ़वाण-मोतीलाल मूलजीभाई—काटनका व्यवसाय होता है।

कॉटनब्रोकर्स (गुजराती)

मेसर्स खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी

इस फर्मको सेठ खीमजीभाईने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था और इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ खीमजीभाईका देहावसान १६८४ में हो गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपालदास पुंजा, सेठ पुरुषोत्तमदास जेठाभाई और सेठ लटाऊ खीमजी हैं। यह फर्म कई व्यापारिक एसोशिएशनकी मेम्बर है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी १३ हमामस्ट्रीट-बम्बई T. A. Gainsure—शेअर और स्टॉकको दलालीका काम होता है।

(२) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी-मारवाड़ी बाजार बम्बई—यहां रुई और चान्दी सोनेकी दलालीका काम होता है। इस फर्मके द्वारा न्यूयार्क वगैरह बाहिरी देशोंसे भी रुईके सौदे दलालीसे होते हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मेहता

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चुन्नीलाल भाईचन्द हैं। आप वणिक जैन सज्जन हैं। सेठ चुन्नीलाल भाईको कॉटनका काम करते हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके हाथोंसे व्यवसायकी विशेष तरक्की हुई। आप शिक्षित व्यक्ति हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मारवाड़ी बाजार—यहां कॉटन सोना चांदी अलसी और गेहूंकी दलाली तथा कमीशनका काम होता है।

श्रीयुत् विश्वम्भरलाल माहेश्वरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीविश्वम्भरलालजी माहेश्वरी हैं। आपका मूल निवास स्थान वगड़ (जयपुर-राज्य) में है। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब १२।१३ वर्ष हुए। सेठ विश्वम्भरलालजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। रूईके सौदेमें आपको अच्छा अनुभव है। संडी बाजारमें आप अच्छे साहसी व्यापारी माने जाते हैं। आप ईस्ट इण्डिया कॉटन एसो-शियेशनके मेम्बर हैं।

आपकी ओरसे वगड़में एक अपर स्कूल चल रहा है। जिसे आप बहुत शीघ्र मिडिल स्कूल करने वाले हैं। इसका फंड भी आपने अलग कर दिया है। इसके अतिरिक्त एक कन्या पाठशाला भी आपकी ओरसे वगड़में चल रही है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स विश्वम्भरलाल माहेश्वरी मोतीसाकी चाल मारवाड़ी बाजार – यहां रूई आल्सीके वायदेका अच्छा काम होता है। तथा न्यूयार्क और लिवरपुलके बाजारोंसे डायरेक्ट तार आते हैं।

श्रीयुत विसेसरलाल चिड़ावावाला

इस फर्मके मालिक सेठ विसेसरलालजी टीबड़ेवाले, चिड़ावा (खेतड़ी) के निवासी अग्रवाल सज्जन हैं। १८ वर्ष पूर्व आपने इस दुकानको स्थापित किया, एवं रूईके वायदेमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति पैदा की।

यह फर्म ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर व कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशनकी मेम्बर है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—विसेसरलाल चिड़ावावाला कालबादेवी रोड—मारवाड़ी बाजार — यहां खासकर रूईके वायदेका सौदा होता है और अलसी, गेहूं, चांदी सोनाका भी काम होता है। यहां न्यूयार्क आदिसे मालोंके तार आते हैं।

डर मनुस और मनुस तथा बाम्बे पोर्टट्रस्टके ट्रस्टी रह चुके हैं। करीब १५ वर्षोंसे आप आनरेरी प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट हैं। आप कापड़ बाजारके बड़े अगेवान व्यापारी माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—माधवजी ठाकरसी एण्ड कम्पनी गोविन्दचौक मूलजी जेठा मारकीट—इस दुकानपर रङ्गीन छींट चेक और सूती कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—देवीदास माधव जी ठकरसी,चम्पागली मूलजी जेठा मारकीट-इस दुकानपर मानिकजी पेटिट मिल्स कम्पनीकी एजेन्सी है।

(३) बम्बई—माधवजी ठाकरसी कम्पनी फर्बेस्ट्रीट फोर्ट—यहां छींट तथा विलायती मालका इम्पोर्ट यहू और कमीशनसे होता है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत

इस फर्मके मालिक बम्बईके निवासी गौड़ सारस्वत ब्राह्मण जातिके हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व इस फर्मको सेठ बलवंतराव रामचन्द्रने स्थापित किया, तथा आपहींके हाथोंसे इस फर्मको विशेष तरक्की मिली। वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता सेठ भालचन्द्रजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत, नारायन चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—(T. A. Piecegoods) यहां सफेद, कोरा तथा विलायती मालका थोक व्यापार और एक्सपोर्ट इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

मेसर्स मुरारजी केशवजी

इस फर्मको सेठ हरीभाई हेमराजने ३२ वर्ष पहिले स्थापित किया था। वर्तमानमें आपके छोटे भाई सेठ केशवजीके पुत्र सेठ तुलसीदास केशवजी और सेठ मुरारजी केशवजी इस फर्मका संचालन करते हैं। सेठ पुरुषोत्तमकेशवजी अपना अलग व्यवसाय करते हैं। मुरारजी सेठ खंभालियाके (जामनगर)निवासी हालाई लुहाना समाजके सज्जन हैं। आप ३२वर्षोंसे देशी मिलोंकी कपड़ेकी एजंसी का काम करते हैं। लुहाना समाजमें मुरारजी सेठ अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मुरारजी एण्ड होरमसजी,चम्पागली मूलजी जेठा मा०—यहां स्वान, फीनले,गोल्ड मुहर स्पिनिङ्ग और मून मिलकी कपड़ेकी एजंसी है।

जेनूभो एण्ड संस हार्नबी रोड—मरचेंट
जोगीराम जानकीराम कालबादेवी मरचेंट, एण्ड कमीशन एजंट
जोतराम केदारनाथ कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट,
धरमसी जेठा मांडवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
दुलेराय एण्ड कंपनी अपोलो स्ट्रीट, ब्रोकर्स
द्वारकादास त्रिभुवनदास शेखमेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
दामजी शिवजी शेख मेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
दुर्गादत्त सांवलका मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
देवकरणदास रामकुँवार मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
देवसी लेतसी ब्रोकर्स
दौलतराम कुन्दनमल कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
देहदारती (एम०एच०)१ आसलेन फोर्ट, मरचेन्ट एण्ड कमीशन एजंट
धनपतमल दीवानचंद सोनापाटा, मरचेंट
नरसिंहदास जोधराज कालबादेवी, मरचेंट
नवीनचंद दामजी हमाम स्ट्रीट
नैनसुखदास शिवनारायण मरचेंट
पूनमचंद वखतावरमल मम्बादेवी, मरचेंट
मावजी भीमजी मरचेंट
न्यू मुफस्सिल कंपनी हमाम स्ट्रीट फोर्ट
मामराज रामभगत मारवाड़ी बाजार, मरचेंट

मेहता (एम० एम०) कालेनेडरोड फोर्ट, मरचेंट
रणछोड़ एण्ड को० मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
रामकुँवार मुरारका ब्रोकर्स मारवाड़ी बाजार
लच्छीराम नूरीलाल ब्रोकर्स मारवाड़ी बाजार
लक्ष्मीनारायण सरावगी ब्रोकर्स
लक्ष्मीदास भारजी मरचेंट
लक्ष्मीचंद परमसी कालबादेवी, मरचेंट
लालजी देवसी मूलराज हटाऊ हाऊस चिंचबंदर, मरचेंट
लक्ष्मीनारायण मूलमोहन कालबादेवी, ब्रोकर्स
संतलाल किशोरीलाल कालबादेवी।
शिवलाल अमराजा कालबादेवी, ब्रोकर्स
शिवजी पुंजा कोठारी, ब्रोकर्स
सरूपचंद पृथ्वीराज मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
हरविलास गंगादत्त कालबादेवी, ब्रोकर्स
हरसुखराय गोपीराम कालबादेवी, मरचेंट
हरसुखराय सुन्दरलाल मारवाड़ी बाजार
हीरजी नेनसी एल्फिन्स्टन सर्कल,
हुकमचंद राम मगन मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
हरगोविंददास भनजी,
हीराचंद पनेचंद कालबादेवी
हरदत्तराय रामप्रताप शेख मेमन स्ट्रीट, कमीशन एजंट एण्ड मरचेंट
हरनंदराय रामनारायण मरचेंट
हरनंदराय सूरजमल, मरचेंट
हरनंदराय बैजनाथ कालबादेवी मरचेंट

मेसर्स आनन्दराम मंगतूराम

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको यहां सेठ आनंदरामजीने संवत् १९७७ में स्थापित किया। सर्व प्रथम सेठ आनन्दरामजी अकोलेमें संवत् १८५२ तक गल्ला रुई एवं आढ़तका काम करते रहे। पश्चात् करीब १३ वर्षतक कलकत्तेमें सुखदेवदास रामप्रसादके साझेमें आपने रंगलाल मोतीलालके नामसे व्यवसाय किया। बादमें आपने ४ वर्षतक मेसर्स ताराचंद घनश्यामदासके साझेसे व्यवसाय किया। तत्पश्चात् संवत् १९७७ से कलकत्तेमें और बम्बईमें आपने अपनी फर्म स्थापित की।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन कर्ता सेठ आनन्दरामजी, आपके पुत्र मंगतूरामजी एवं आपके भतीजे गजाधरजी और पूर्णमलजी हैं। आपकी ओरसे नवलगढ़में श्रीचतुर्भुजजीका मंदिर बना है। उसमें २१ विद्यार्थी रोज भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स आनंदराम मंगतूराम यादानका म्हाड़ कालबादेवी - इस फर्मपर कपड़ेकी आढ़तका व्यापार तथा हुंडी चिट्ठी, सोना, चांदी सूत इत्यादि की कमीशन एजंसीका व्यवसाय होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स आनंदराम गजाधर पांचागली—इस फर्मपर जापान और विलायतसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स कालूराम बृजमोहन

इस फर्मके मालिक सेठ बृजमोहनजी फतहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपने इस फर्मको बम्बईमें १८ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके व्यवसायकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स कालूराम बृजमोहन दूसरा भोईवाड़ा—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

(४) मंगलदास मारकीट—यहां देशी, कटपीस और सब प्रकारका माल थोक और परचूरन बिकता है।

(५) जकरिया मस्जिद और चकला स्ट्रीट—इस बाजारमें विलायती कटपीस और चायना सिल्कके व्यापारी बैठते हैं।

(६) भोलेश्वर—यहांपर स्त्रियोपयोगी सब तरहके फेन्सी कपड़े और फीतें परचूरन बिकते हैं।

बम्बईके कपड़ेके व्यापारको सुदृढ़ रूपसे चलाने और उसके सम्बन्धमें पड़नेवाले झगड़ोंको निपटाने, तथा नियम बनानेके लिए बाम्बे नेटिव पीसगुड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन बहुत अग्रगण्य है। इसके प्रमुख ऑनरेबल सर मनमोहनदास रामजी हैं।

व्यापारिक नियमके अनुसार इन बाजारोंमें गांवठी और विलायती दोनों प्रकारके मालोंपर भिन्न २ रूपमें बटाव (कमीशन) मिलता है। यह बटाव तीन प्रकारका होता है:—

(१) बटाव—यह प्रति सैंकड़ा और कहीं २ प्रति थानके हिसाबसे निश्चित रहता है। इसमें भी बंधी गांठ और खुले माउके बटाव, और मेमेण्टकी मुद्दतके दिनोंकी तादादमें अन्तर रहता है।

(२) शाही—यह भी एक प्रकारका बटाव है। जो पूरी गांठपर मिलता है।

(३) बारदान-यह भी एक प्रकारका बटाव है जो विलायती तथा और भी कई किस्मके मालोंपर मिलता है।

इस बटावकी तादाद तथा इस सम्बन्धकी विशेष जानकारीके लिए बाम्बे नेटिव्हपीस गुड्स एसोसिएशनकी नियमावली मंगाकर देखना चाहिए।

कपड़ेके व्यवसायी

मेसर्स गोकुलदास डुंगरसी जे० पी०

इसफर्मके मालिक खंभालिया (जाम नगर) के निवासी भाटिया जातिके सज्जन हैं।

इसफर्मका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ डूंगरसी पुरुषोत्तमके हाथोंसे हुआ था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ रतनसी डूङ्गरसीके हाथोंसे प्राप्त हुई।

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोकुलदास डूंगरसी जे० पी० हैं। आपने भट्ट छगनगोपालजी से व्यापारिक शिक्षा पाई है। इसफर्मपर पहिले वल्लभदास लखमीदासके नामसे व्यापार होता था। सेठ गोकुलदासजीको इसी साल २२ अप्रेलको गवर्नमेंटसे जे० पी० की उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी ओरसे सेठ रतनसी डूंगरसीके नामसे गायवाड़ीमें एक औषधालय तथा सेठ लखमीदास मूलजी गोकुलदासके नामसे एक अयब्रेरी स्थापित है।

खम्भालिया (जाम नगर) में सेठ पुरुषोत्तमडूंगरसीके नामसे आपका एक अस्पताल चल रहा है। द्वारकाजीमें और पोरबन्दर स्टेशनके पास आपकी विशाल धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

३ जयपुर—मेसर्स श्रीराम नारायण जौहरीबाजार-डाकचला—यहां सराफी तथा आड़तका काम होता है।
४ व्यावर—देवकरणदास रामकुंवार—यहां आपकी एक जिनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरी है।
५ कलकत्ता (मानभूमि) करनाटान कांडेरी—श्रीराम कोलकम्पनी—यहां इस फर्मकी १ कोयलेकी खान है।
६ मडुवा रोड—(व्यावर) मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार—यहां रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास जोधराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी भिवानी (हिसार)के हैं आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ बंशीलालजीने संवत् १८५३ में स्थापित किया, इसकी विशेष तरक्की भी आपही के हाथोंसे हुई। इस समय आप अधिकतर देशहीमें निवास करते हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन आपके छोटे भाई श्री सेठ रामचन्द्रजी बी०ए० करते हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं, तथा अग्रवाल समाजके कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त आप मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर भी हैं।

श्रीयुत रामचन्द्रजी बी०ए० ने देशव्यापी असहयोगआन्दोलनके समय आच्छा भाग लिया था। उस समय आपने अपना अमूल्यसमय देकर देश सेवा करते हुए १ मासतक जेलयात्रा भी की थी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज बादामका झाड़—यहां हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलसी, सोना, चांदी तथा शेराकी आड़तका काम होता है।
२ करांची—मेसर्स रामप्रताप रामचन्द्र नीयर बोल्टन मार्केट बंदररोड—(T. A. Bansal) यहां हुण्डी चिट्ठी तथा रुई, गल्ला, तिलहन आदि सब प्रकारकी आड़तका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे भिवानीमें एक धर्मशाला है, तथा मथुरामें एक अन्नक्षेत्र एवं धर्मशाला एवं अन्य क्षेत्र चालू है।

मेसर्स फूलचंद केदारमल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (सीकर) निवासी माहेश्वरी (सोढ़ानी गोत्र) के सज्जन हैं। इस फर्मको ३० वर्ष पूर्व सेठ फूलचन्दजी और उनके छोटे भाई सेठ केदारमलजीने स्थापित किया था। आप दोनोंका देहावसान होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ फूलचन्दजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी एवं हनुमान बक्सजी तथा सेठ केदारमलजीके पुत्र श्री मंगलचन्दजी हैं। लक्ष्मणगढ़में आपका एक मंदिर, एक धर्मशाला, और एक बगीचा बना हुआ है। आपकी ओरसे वहां १ कन्यापाठशाला भी चल रही है जिसमें ८० कन्याएं शिक्षा पाती हैं। लक्ष्मणगढ़के ब्राह्मण विद्यालयके लिए आपने एक मकान दिया है।

(१) मेसर्स दामोदर गोविन्दजी एण्ड कम्पनी चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—इस फर्मपर धोती जगन्नाथी, मलमल तथा धोये मालका थोक व्यापार होता है। इस फर्मने पहिले मेडनसी मिल, असुर वीरजी मिल, गोल्ड मुहर मिल, स्टार मकनजी मिलकी एजेन्सीका काम किया है। इस समय मेनचेस्टर एक्सपोर्टर माहम कम्पनी और रायली ब्रदर्ससे आपका डायरेक्ट सम्बन्ध है।

(२) मथुरादास हरीभाई मू० जे० मारकीट बम्बई—इस फर्ममें आप भागीदार हैं। यहाँ नमुन्या तथा छपे मालका व्यापार होता है।

मेसर्स धरमसी माधवजी

इस फर्मका स्थापन संवत् १९६४में सेठ धरमसी भाईके हाथोंसे हुआ तथा इसके व्यापारकी तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई। सेठ धरमसी जी रङ्गीन कपड़ेके व्यापारियोंकी मंडलीके वाइस-प्रेसिडेण्ट और गो-रक्षक मंडलीकी मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। कपड़ेके व्यापारियों और रायली-ब्रदर्सके बीच जो कपड़ेका झगड़ा खड़ा हुआ था, वह आपहीने उठाया था। और उसमें आपको सफलता भी मिली थी।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—धरमसी माधव जी चौकलगली मूलजी जेठा मारकीट—यहाँ रङ्गीन फेंसी, विलायती और मर्सराइज़ कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—त्रीकमदास धरमसी-संघागली मूल जी जेठा मारकीट—यहाँ गांवठी तथा (देशी) रङ्गीन चेकका व्यापार होता है।

मेसर्स माधवजी ठाकरसी एण्ड कम्पनी

इस फर्मका स्थापन सेठ माधव जी ठाकरसीके हाथोंसे ५०।५२ वर्ष पूर्व हुआ था। आपका देहावसान अभी ६ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान संचालक सेठ देवीदास माधव जी ठाकरसी जे० पी० हैं। आप खास निवासी द्वारिकाके हैं। आप ५० वर्षोंसे रङ्गीन छोटोंका और २०. वर्षोंसे गांवठी (देशी) कपड़ोंका व्यवसाय करते हैं। अभी ३ वर्षोंसे मानिक जी पेटिट मिलोंकी सेलिंग एजेन्सीका काम आपके नामसे हुआ है।

सेठ देवीदास जी को करीब २० वर्ष पूर्व भारत सरकारने जे० पी०की उपाधिसे सम्मानित किया था। आप नेटिव्हपीस गुड्स मर्चेण्ट एसोशिएशनके उप प्रमुख हैं। तथा इण्डियन मर्चेंट चेम्बरके

सेठ देवीदास माधवजी ठेकरसी जे० पी०
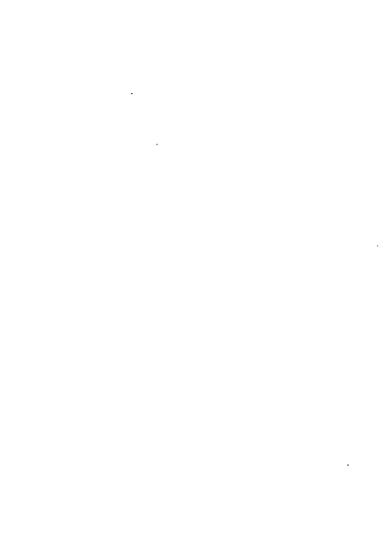
राव साहब सेठ हरजीवन वालजी जे० पी०

सेठ राघवजी पुरुषोत्तम

सेठ सूरजी भाई वल्लभदास (रंगवाले) पृष्ठ नं० २२०

मेसर्स ब्रजमोहन सीताराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लच्छीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको आपके पुत्र श्री० ब्रजमोहनजीने स्थापित किया। श्रीयुत ब्रजमोहनजीके २ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः सीतारामजी तथा श्रीकृष्णदासजी हैं। वर्तमानमें आप सब सज्जन दुकानके काममें भाग लेते हैं। आपकी फर्म ईस्ट इण्डिया काटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स और दी ग्रेन एण्ड सीड्स मरचेन्ट एसोसिएशनकी मेम्बर है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) ब्रजमोहन सीताराम १६२।६४ कालबादेवी, बम्बई (T. A. Pooddarbares) यहां सब प्रकार की कमीशन एजंसीका काम होता है। साथ ही वायदेका काम भी होता है।

(२) मागकराम लच्छीराम फतेहपुर—(सीकर) यहां आपका निवास स्थान है। तथा आपकी यहां शानदार इमारत बनी हुई है।

मेसर्स बालमुकुन्द चन्दनमल मूथा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पीपाड़ (राजपूताना) है। आप ओसवाल स्थानकवासी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ बालमुकुन्दजीने स्थापित किया तथा इसकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। ८ वर्ष पूर्व आपका देहावसान होगया। आप अ० भा० स्थानकवासी कान्फ्रेन्स अजमेरके सभापति रहे थे।

इस समय इस फर्मका संचालन सेठ बालमुकुन्दजीके पुत्र सेठ चन्दनमलजी तथा आपके भतीजे सेठ मोतीलालजी करते हैं। सेठ मोतीलालजी स्था० जै० कान्फ्रेंसके सेक्रेटरी हैं। सितारामें आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सताराकी फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

(१) हेड आफिस—मुकुन्ददास हजारीमल सतारा	इस फर्म पर हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है। कमीशन एजेंसीका काम भी यह फर्म करती है।
(२) सोलापुर—चन्दनमल मोती लाल सोलापुर	यहां सराफी तथा कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।
(३) बम्बई—बालमुकुन्दचन्दनमल टिकमानी बिल्डिंग कालबादेवी	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स अर्जुन गोरधनदास मूलजी जेठा मारकीट
" अर्जुन त्रिकमजी मूलजी जेठामारकीट
" जेठाभाई गोविन्दजी "
" जेठाभाई डोसाजी मूलजी जेठामारकीट
" जेठाभाई रामदास "
" जेठाभाई भाऊजी लखमीदास मारकीट ३ री गली
" देवकरनमूलजी गोकुलदास मूलजी जेठा मारकीट
" डी० डी० पटेल मूलजी जेठामारकीट
" दामोदर हरीराम मूलजीजेठामारकीट चौकला गली
" धनेरा नारायण ओंकारमल मूलजी जेठामारकीट
" प्रागजी पूरन चौकलगली "
" मालजी सुन्दरजी पदियलगली "
" नटवरलाल केशवलाल प्रागराजगली मूलजी जेठा मारकीट
" नाथूराम रामनारायण धर्मराज गली
" वल्लभदास अर्जुन त्रिकमजी चौक मू० जे० मा०
" पालजी रामजी करनजी चौक मू० जे० मा०
" वंशीधर गोपालदास चौक मू० जे० मा०
" भीमजी द्वारकादास लखमीदास मारकीट १ गली
" मोतीलाल कानजी चौक मू० जे० मा०
" मनमोहनदास रामजी गोविन्दचौक मू० जे० मा०
" धरमसी माधवजी चौकलगली
" मुरारजी गोकुलदास एण्डकम्पनी मुरारजी गोकुलदास मारकीट कालबादेवी
" राव साहब हिम्मतगिरि प्रतापगिरि चम्पागली बम्बई
" वामनश्रीधर आपटे मूलजी जेठामारकीट
" लालजी नारायणजी चौक मू० जे० मा०
" मुरारजी कानजी संघागली मू० जे० मा०
" रघुनाथदास प्रागजी मूलजीजेठामारकीट
" मफतलाल गगलभाई प्रागराजगली मू० जे० मा०
" राघवजी पुरुषोत्तम c/o करीमभाई इब्राहिम एण्ड संस शेलमेमन स्ट्रीट
" हरीदास धनजी मूलजी छीपीचाली
" राघवजी आनन्दजी चौकलगली मू० जे० मा०
" रामदास माधवजी चम्पागली
" मालजी सुन्दरजी पदियलगली मू० जे० मा०
" मुरारजी कानजी मूलजी जेठा मारकीट

सेठ आनन्दरामजी (आनन्दराम मंगतूराम) बम्बई

सेठ ब्रजमोहनजी (कालूराम ब्रजमोहन) बम्बई

सूरजमलजी ([illegible]) बम्बई

कुंवर मोतीलालजी (देवकरणदास रामकुमार) बम्बई

सन् १९१६ में गवर्नमेंटसे राव बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई है। आपका अपने समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपकी ओरसे पूनामें मारवाड़ी विद्यार्थी बोर्डिंग हाऊस नामक एक बोर्डिंग हाऊस बना हुआ है जिसमें ४० विद्यार्थियोंके रहनेका स्थान है। इसके अतिरिक्त करीब ५० हजारकी लागतकी एक धर्म• शाला आपकी ओरसे वृन्दावनमें बनी हुई है। पूनाके पब्लिक हास्पीटलके चंदेमें आपने ५० हजार रुपया दिये हैं। पूना एवं वृन्दावनमें आपकी ओरसे अन्नक्षेत्र चल रहे हैं। आप तृतीय महाराष्ट्र प्रांतीय माहेश्वरी परिषद्के स्वागताध्यक्ष, और छठी बम्बई प्रांतीय माहेश्वरी परिषद्के अध्यक्ष रह चुके हैं। पूना रविवार पैठमें आपका एक आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय चल रहा है।

श्रीहनुमंतरामजी सेठ रामनाथजीके यहां दत्तक आये हैं। वर्तमानमें आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीनिवासजी और श्रीवल्लभजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ पूना—(हेड आफिस) मेसर्स ताराचन्द रामनाथ रविवार पेठ-कपड़गंज—यहां यह फर्म करीब १०० वर्षोंसे स्थापित है। इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। आपकी फर्मकी यह विशेषता है कि उसपर विदेशका बुना कपड़ा नहीं बेचा जाता।

२ बम्बई—रामनाथ हनुमन्तराय रा० ब० लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी नं० २—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार होता है। आपकी फर्म सट्टे व किसी प्रकारके वायदे-का व्यापार नहीं करती।

३ नागपुर—रामनाथ रामरतन इतवारिया बाजार—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

४ कोयम्बतूर—(मद्रास) श्रीनिवास श्रीवल्लभ—यहांपर हेंडलूमका बना देशी कपड़ा बेचा जाता है।

५ सूरत—बद्रीनारायण झूमरमल छपरिया सेठी—यहांपर देशी कपड़ेका व्यापार होता है।

६ बम्बई—हनुमन्तराम रघुनाथ मूलजी जेठा मार्केट- यहांपर देशी कपड़ेका तथा आढ़तका व्यापार होता है।

७ कहारंड (नागपुर) रामनाथ रामरतन—यहांपर कपड़ेका बिजिनेस होता है।

८ पौनी (नागपुर) मेसर्स रामनाथ राठी—यहांपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकरणदास खेतान

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रामकरणदासजीके पुत्र श्री[illegible] अग्रवाल जातिके झुंझनूं निवासी हैं। आप फर्मका कार्य अपने पुत्रोंको सौंपकर हरिद्वार निवास करते हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब २०,२२ वर्ष हुए।

(१) बम्बई—मेसर्स जौहरीमल रामलाल कालबादेवी, भीमराज बिल्डिंग...यहां हुंडी, चिट्ठी तथा कपड़ेका परूव आढ़तका काम होता है।

(२ अमृतसर - मेसर्स जौहरीमल रामलाल आलू कटरा—यहां सब प्रकारके कपड़ेका थोक व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक पंजाब (भिवानी) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहां करीब ३० वर्ष पूर्व सेठ तुलसीरामजी व रामस्वरूपजीने स्थापित किया। तुलसीरामजीका देहावसान करीब ८।१० वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ रामस्वरूपजी तथा श्री मदनलालजी एवं तुलसीरामजीके पुत्र श्री प्रह्लादरायजी करतेहैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप-बादामका झाड़ कालबादेवी नं० २—यहां गेहूं अलसी, रुई तथा गल्लेका, हाजिर और वायदेका व्यापार व आढ़तका काम होता है।

२ ब्यावर—तुलसीराम रामस्वरूप —यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

३ भिवानी—बलदेवदास तुलसीराम लाडेड बाजार —यहां आपका निवासस्थान है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। बम्बईमें यह फर्म बहुत पुरानी है। यहां इसे स्थापित हुए करीब १०० वर्षसे अधिक हुए। इस फर्मपर पहिले श्रीराम दौलतरामके नामसे व्यापार होता था। करीब ४१ वर्षसे वर्तमान नामसे यह फर्म काम कर रही है। इसे सेठ देवकरणजीने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आपका देहावसान संवत् १९७४ में हुआ। आपके पुत्र सेठ रामकुंवारजीका भी देहावसान हो गया है। अब इस समय इस फर्मके मालिक मोतीलालजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। नवलगढ़में इस फर्मकी ओरसे एक धर्मशाला एवं मन्दिर और ब्यावरमें एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार मारवाड़ीबाजार—यहां हुंडी चिट्ठी सराफी तथा रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार कॉटन स्ट्रीट नं० १३७—यहां सराफी तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रायचंद खेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडवारिया (सिरोही-राज्य) में है। आप पोरवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए, इसे सेठ डायाजी ने स्थापित किया। तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ डायाजीके पुत्र देवीचंदजी, रायचंदजी व, पौत्र खेमचन्दजी हैं।

आपकी ओरसे मंडवारियामें एक बहुत सुन्दर दर्शनीय मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर सारा संगमरमरका है आपने इसमें करीब २ लाख रुपये लगाये हैं। मंडवारियामें आपकी एक धर्मशाला व एक विद्यालय है। मण्डवारियाके मंदिरके पास आपका एक अच्छा बगीचा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रायचंद खेमचन्द धनजीस्ट्रीट नं० ३ यहां हुंडी चिठ्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
(२) बम्बई—डायाजी देवीचंद पारसी गली-मिरजास्ट्रीट यहां इमीटेशन मोतीका व्यापार होता है।
(३) हुबली—(धारवाड़) डायाजी देवीचन्द, यहां सराफीका काम होता है।

मेसर्स राजाराम कालूराम

इस फर्मके मालिक भिवानी (पंजाब) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपकी इस फर्मको स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए। इसे श्री कालूरामजीने स्थापित किया है। तथा वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्रीकालूरामजी तथा श्रीमाधोमलदासजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स राजाराम कालूराम, कालबादेवी रोड, यहां कपड़ा तथा किरानेकी आढ़तका काम होता है।
(२) देहली—मेसर्स कालूराम मंगतराम अशर्फी-कटड़ा यहांपर कपड़े की बिक्रीका काम होता है।
(३) भिवानी—कालूराम मंगतराम यहां आढ़तका काम होता है।
(४) अहमदाबाद—कालूराम रामकिशन-नया माधोपुरा यहां आढ़तका काम होता है, इसमें कालूरामजीका साझा है।

श्रीमाधोमलदासजी दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मर्चेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

मेसर्स रायचंद खेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडवारिया (सिरोही-राज्य) में है। आप पोरवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए, इसे सेठ डायाजी ने स्थापित किया। तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ डायाजीके पुत्र देवीचंदजी, रायचंदजी व, पौत्र खेमचन्दजी हैं।

आपकी ओरसे मंडवारियामें एक बहुत सुन्दर दर्शनीय मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर सारा संगमरमरका है आपने इसमें करीब २ लाख रुपये लगाये हैं। मंडवारियामें आपकी एक धर्मशाला व एक विद्याशाला है। मण्डवारियाके मंदिरके पास आपका एक अच्छा बगीचा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रायचंद खेमचन्द धनजीस्ट्रीट नं० ३ यहां हुंडी चिट्ठी तथा आड़तका काम होता है।

(२) बम्बई—डायाजी देवीचंद पारसी गली-मिरजास्ट्रीट यहां इमीटेशन मोतीका व्यापार होता है।

(३) हुबड़ी—(धारवाड़) डायाजी देवीचन्द, यहां सराफीका काम होता है।

मेसर्स राजाराम कालूराम

इस फर्मके मालिक भिवानी (पंजाब) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपकी इस फर्मको स्थापित हुए करीब १८ वर्ष हुए। इसे श्री कालूरामजीने स्थापित किया है। तथा वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्रीकालूरामजी तथा श्रीमाधोप्रसादजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स राजाराम कालूराम, कालबादेवी रोड, यहां कपड़ा तथा किरानेकी आड़तका काम होता है।

(२) देहली—मेसर्स कालूराम मँगतराम अशर्फी-कटला यहांपर कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है।

(३) भिवानी—कालूराम मंगतराम यहां आढतका काम होता है।

(४) अहमदाबाद—कालूराम राधाकिशन-नया माधोपुरा यहां आड़तका काम होता है, इसमें कालूरामजीका साझा है।

श्रीमाधोप्रसादजी दि हिन्दुस्थानी नेटिव्ह मर्चेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, केदार-भवन कालबादेवी रोड (T. A. Phul Kedar) यहां सराफी, चांदी, सोना, गल्ला, किराना, कपड़ा तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका व्यवसाय और चांदी सोना तथा रुईका काम होता है। इस फर्मपर हनुमानबक्स मंगलचन्द के नामसे तिलहन और गेहूंका भी काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, सोढ़ानी हाऊस नं० ३ चितरंजन एवेन्यू रोड (T. A. Fresh) यहां गल्लेका व्यवसाय होता है इसके अतिरिक्त कलकत्तेके केनिंग स्ट्रीटमें आपकी एक ऑफिस है उसके द्वारा हेसियनका एक्सपोर्ट और चीनीका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। यहां आपकी २ बिल्डिंग्ज़ है।

(३) देहली—मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद न्यूक्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी व्यवसाय होता है।

—:*:—

मेसर्स वंशीधर गोपालदास

इस फर्मके मालिक फरुखाबाद (यू० पी०) के निवासी रस्तोगी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ वंशीधरजीने ६० वर्ष पूर्व स्थापित किया था, तथा इस फर्मके व्यवसायकी वृद्धि सेठ वंशीधर जी और उनके पुत्र सेठ माधोदास जी और गोपालदास जी के हाथोंसे हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ गोपालदासजी एवं उनके पुत्र सेठ हरनारायणजी तथा सेठ गोपालदासजीके भतीजे सेठ रामनायणजी एवं सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। इस कुटुम्बकी ओरसे बद्रिकाश्रम और प्रयागमें धर्मशालाएं बनी हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स वंशीधर गोपालदास मुरारजी गोकुलदास मारकीटके ऊपर कालबादेवीरोड, इस फर्मपर कपड़ेका घरू व आढ़तका व्यापार तथा सब प्रकारकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स माधवदास गोपालदास मूलजी जेठा मारकीट गोविंदचौक—इस फर्मपर मद्रासके बेङ्किघम, व कर्नाटक मिल तथा बंगलोर मिलकी एजेन्सी हैं। इसके अतिरिक्त कपड़ेका थोक व परचूनी व्यापार होता है

(३) कानपुर—मेसर्स वंशीधर गोपालदास जनरलगंज—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) फर्रुखाबाद—मेसर्स वंशीधर गोपालदास—यहां आपका खासनिवास है, तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

श्री लाला दुनीचन्दजीको सन् १९२० में गवर्नमेन्टने रायबहादुरकी पदवी प्रदानकी है, आप अमृतसरमें सेकण्डक्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपके पितामह लाला जिवन्दामलजीका महाराजा रणजीतसिंहजीसे अच्छा स्नेह था।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रा० ब० दुनीचन्द दुर्गादास चौकसी बाजार, (T. A. Laraaja) यहां कपड़ेकी आढ़तका व घरू व्यापार होता है।

(२) अमृतसर—दुनीचन्द विशुनदास आलूवाला कटला, T. A. mehara यहां कपड़ेके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

मेसर्स नीकाराम परमानंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहराइस्माइलखां है। आप पंजाबी सज्जन हैं। इसफर्मकी स्थापना बम्बईमें सेठ नीकारामजी व परमानन्दजी दोनों भाइयोंने करीब २५वर्ष पूर्वकी थी। इस समय बम्बई फर्मके मैनेजर श्री रामचन्द्रजी परमानन्द जी हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) देहराइस्माइलखां—टिकायाराम चोखाराम—यहां बैङ्किंग व कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) कलकत्ता—नीकाराम परमानन्द १५६ हरिसन रोड़-यहां भी आढ़त व बैंकिंग वर्क होता है।

(३) बम्बई—नीकाराम परमानन्द मस्जिद बन्दररोड बारभाई मोहल्ला नं० ३, T. A. shamsunder आढ़त व सराफीका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—नीकाराम परमानन्द-इस फर्मपर कई मिलोंकी कपड़ेकी एजेंसी है, तथा आढ़तका काम होता है।

(५) देहली-चोखाराम आसानन्द-यहां बैङ्किग व कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर है। आप कपूर जातिके सज्जन है। इस-फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत अधिक समय हुआ। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दीवानचन्दजीके पुत्र सेठ दुर्गादासजी, सेठ द्वारकादासजी व सेठ बिहारीलालजी हैं। आपकी ओरसे अमृतसरमें दीवा-नचन्द अस्पताल नामका एक अस्पताल चल रहा है।

मेसर्स भीमाजी मोतीजी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान देलदर (रियासत सिरोही) है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब ५५ वर्ष हुए। इसे यहां सेठ भीमाजीके पुत्र सेठ चत्राजीने स्थापित किया था। आप पोरवाल (बीसा) जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चत्राजीके पुत्र सेठ मभूतमलजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजन मिला। बम्बईकी पालाड़ पार्टीके सभापतिका काम करते हुए आपको करीब १५ वर्ष हो गये हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स भीमाजी मोतीजी चम्पागली, मूलजी जेठा मारकीटके सामने—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स भीमाजी मभूतमल सराफ बाजार—यहाँ भी हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

३ अहमदाबाद—मेसर्स भीमाजी मोतीजी मस्कती मार्केट—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

४ अहमदाबाद—मोतीजी मभूतमल मस्कती मार्केट—यहां आपकी एक कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स रघुनाथमल रिधकरण बोहरा

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रिधकरणजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास जोधपुर (मारवाड़) है। श्रीयुत रिद्धकरणजी संवत् १८५० में सर्व प्रथम बम्बई आये कुछ समयके पश्चात् आपने यहांपर दुकान स्थापित की। वर्तमानमें आप दि हिन्दुस्तानी नेटिव मरचेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—रघुनाथमल रिधकरण विट्ठलवाड़ी, पत्थरका माला—यहां कपड़ा किराना चांदी सोना तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स रामनाथ हनुमंतराम रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ हनुमंतरामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान खाड़ोपा ग्राम (जोधपुर-स्टेट) में है।

इस फर्मका हेड आफिस पूनामें है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ हनुमंतरामजीने स्थापित किया। आप सेठ रामनाथजीके पुत्र हैं। आपको

सेठ बन्सीधर गोपालदास, बम्बई
(पृ० नं० १२८)

स्व० सेठ गोऊमल डोसामल, बम्बई

सेठ मूलचन्द रायचन्द, बम्बई

सेठ पुरुषोत्तमदास गोकुलदास, बम्बई

(३) मेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचन्द दीपचन्द कम्पनी T. A, Ghee यहांपर मोती, अनाजका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(४) दुबई (पारशियन गल्फ) —T. A Ghee यहां भी मोती अनाज और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्मको सेठ ठाकुरदासजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ पेरूमल देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास, और अगरिभाई हैं। आप लोग शिकारपुरके निवासी रोहेरा जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर (हेड ऑफिस) ठाकुरदास देऊमल—कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई-ठाकुरदास देऊमल; आदिभाई मोहल्ला—कपड़ेकी खरीदीका काम होता है।

(३) करांची-ठाकुरदास देऊमल-बम्बई बाजार—कपड़ेका व्यवसाय होता है

मेसर्स तेजभानदास उद्धवदास

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी हैं। इस फर्मपर पहिले तेजभानदास सुंदर दासके नामसे व्यापार होता था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत ठारूमल, तेजभानदास तथा उद्धवदासजीके पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—उद्धवदास ठारूमल-यहां हेड आफिस है तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई-तेजभानदास उद्धवदास बाराभाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Tejbhan) यहां आपकी फर्मोंपर भेजनेके लिये कपड़ेकी खरीदीका काम होता है।

(३) करांची--तेजभानदास ठारूमल बम्बई बाजार T. A. Hanuman यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम मोहनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास शिकारपुर (सिंध) है। आप छावड़िया जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ३० वर्ष हुए और इस नामसे व्यापार करते हुए १० वर्ष हुए। इसे सेठ दौलतरामजीने स्थापित किया तथा इसके वर्तमान मालिक आपही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेठ रामविलासरायजीने इस फर्मको स्थापित की तथा इसको अच्छी उन्नतिपर पहुंचाया। इस फर्मका पहिले रामकरनदास रामविलास नाम पड़ता था।

श्रीयुत रामविलासजीके इस समय ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीवसन्तलालजी, श्रीमुन्नालालजी, श्रीचिरञ्जीलालजी, श्रीमदनलालजी तथा श्रीयुत लीलाधरजी हैं। बम्बई दुकान सब भाइयोंके शामिलमें है, तथा बाकी सब भाइयोंकी अलग २ फर्मे है।

आपकी ओरसे झूंझनूमें १ धर्मशाला, २।३ पक्के कुएं, एक लक्ष्मीनाथजीका मन्दिर तथा उसमें एक औषधालय, एक पाठशाला व एक पुस्तकालय बना है। हरिद्वारमें आपका एक मकान है उसमें एक अन्न क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त बद्रीनारायण व काशीमें आपने अन्नक्षेत्र स्थापित कर रक्खे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स रामकरणदास सेनान २१७ शेखमेमन स्ट्रीट बम्बई—इस फर्मपर कमीशन और सराफीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कानपुरमें चार बस्ती, घुघली चौराचोरी, शिशुआ बाजार (गोरखपुर) आदि स्थानोंमें भी इस कुटुम्बकी दुकाने हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौर है। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। बम्बई फर्मका पता कसारा चाल पो० नं० २ है। यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।

मेसर्स रामकिशनदास सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सागरमलजी गर्ग हैं। आप अग्रवाल जातिके सुजानगढ़के निवासी हैं।

बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब २० साल हो गये। इस फर्मकी स्थापना सबसे पहले सेठ रामकिशनदासजीने की। आपका देहावसान संवत् १९६७ में हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत सागरमलजी इस दुकानका काम सम्हालते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास सागरमल कल्याण भुवन ३२४ कालबादेवी—इस दुकानपर कपड़ा, सूत, कच्चा रेशम, पक्का रेशम, आर्टिफिशियल मर्सराइज और गांठी सूतका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

इस दुकानमें श्रीयुत नथमलजीका साझा है। आप भी सुजानगढ़के रहने वाले हैं।

मेसर्स चेराम्रल परशुराम

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अमूजा जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चेरामलजी, परशुरामजी और जुहारमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स चेरामल परशुराम, यहां कपड़ेका व्यापार होता है।
२ बम्बई—चेरामल परशुराम मूलजी जेठा मारकीट चौक (Ghgharni) यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।
३ करांची—चेरामल केवलराम गोवर्द्धनदास मारकीट, यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।
४ सक्खर—चेरामल जुहारमल " "

कमीशन एजंट्स

आत्माराम मोतीलाल, कालबादेवी
अमोलकचंद मेवाराम, कालबादेवी
आसाराम लालावत कसाराचाल
अमूलख अमीचंद कं०, सराफ बाजार
ओंकारमल मिश्रीलाल, बदामका झाड़, कालबादेवी
उसमान हाजी जूसब फरनीचर बाजार
केवलचंद कानचंद कालबादेवी रोड
कालूराम सीताराम कालबादेवी रोड
कापासिंह जगन्नाथ, मारवाड़ी बाजार
किशनलाल हीरालाल, कालबादेवी रोड
कुंवरजी उमरसी कम्पनी, सराफ बाजार
केशरीमल आनन्दीलाल, कालबादेवी
कोडूमल जेठानंद, नागदेवी लेन
खेतसीलाल सुंदरलाल, मोतीबाजार
गोविन्दराम सेखसरिया, कालबादेवी रोड
गिरधारीलाल पालजर, कसाराचाल
गोरधनदास ईश्वरदास, सराफबाजार
गंगाराम आसाराम तांबाकाटा
चंदूलाल रामेश्वरदास, कालबादेवी
चांदमल घनश्यामदास कालबादेवी
चांडूमल वलीराम करनाक बन्दर
चतुरभुज गनेशीराम, कालबादेवी
चतुर्भुज पीरामल शेखमेमन स्ट्रीट
चिरंजीलाल हनुमानप्रसाद कालबादेवी रोड
चौथमल मूलचंद कालबादेवी
छोटेराम जेवर कसाराचाल
जयगोपालदास घनश्यामदास पारसीगली
जगन्नाथ किशनलाल कालबादेवी
जीवनराम मोदी कालबादेवी
जीवराम केदारनाथ सराफबाजार
जोगीराम जानकीप्रसाद कालबादेवी
जूहार नथ फोफेराड़ रहित बिल्डिंग
जोहरीमल ज्ञानचन्द बदामका झाड़, कालबादेवी

रेशमके व्यवसायी

रेशमका व्यवसाय

वस्त्र बनानेके जितने रेशेदार पदार्थ हैं उनमें रेशम सबसे मजबूत, मुलायम, चमकीला और बहुमूल्य होता है। यह रेशम एक खास प्रकारके कीड़ोंको लारसे उत्पन्न होता है। ये कीड़े पेड़ोंके पत्ते खाकर जीते हैं और एक प्रकारकी लार उगलते रहते हैं जो हवा लगते ही कठिन हो जाती है। इसी लारके लूलनेसे कीड़ेकी देहके चारों तरफ एक प्रकारका वेष्टन बन जाता है। जिसे अंग्रेजीमें ककून (Cocoon) और हिन्दीमें कोप कहते हैं। ये कोप गर्म पानीमें रखकर गलाए जाते हैं। गल जानेपर ६ से २० कोपों तकके रेशोंको मिलाकर उनका सुत तैयार किया जाता है। इसीको अंग्रेजीमें रेलिंग कहते हैं।

रेशम दो प्रकारका होता है एक जंगली रेशम और दूसरा असली रेशम। जंगली रेशम उन कीड़ोंकी लारसे बनता है जो जंगलोंमें रहते हैं और गाछ वृक्षकी पत्तियां खाकर जीते हैं। असली रेशमके कीड़े घरोंमें पाले जाते हैं और तून्त वृक्षकी पत्तियां खाते हैं। भारतवर्षमें जङ्गली रेशमके तीन प्रकारके कीड़े पाये जाते हैं (१) टसर (२) अण्डो (३) और मूंगा। टसरके कीड़े भागलपुर, छोटा नागपुर, उड़ीसा नागपुर, जबलपुर इत्यादि जिलोंके जंगलोंमें पाये जाते हैं। ये आसन, साल, हर्र, सिद्ध आदिके वृक्षोंको खाकर जाते हैं। अण्डोके कीड़े उत्तर बंगाल और आसाममें पाये जाते हैं। ये कीड़े विशेष कर अण्डीके पत्ते खाकर जीते हैं। इनके कोपोंको उबाला नहीं जाता, प्रत्युत रूईकी तरह धुनकर उनका सूत काता जाता है। यह सूत टसर और तून्तके सूतकी अपेक्षा अधिक मजबूत और टिकाऊ होता है। तीसरा मूंगा नामका कीड़ा लाल रंगका होता है। यह नागा पहाड़, सिल्हट, कछार, त्रिपुरा और बर्माकी पहाड़ियोंमें पाया जाता है। बंगालमें पुण्ड्रनामक जाति इन कीड़ोंको पालनेका काम करती है। इनका बनाया हुआ रेशम बड़ा बढ़िया और चमकीला होता है। बरहमपुरका मशहूर गरद इसीसे बनता है।

रेशमके इतिहासकी खोज करनेपर पता चलता है कि सबसे पहले चीनवालोंने इस वस्त्रको उपयोगमें लेना प्रारम्भ किया। भारतवर्षके वैदिक और पौराणिक युगमें भी क्षौम, और कौशेय, इन दो नामोंके रेशमी वस्त्रोंका पता चलता है। फिर भी इस बातके प्रमाण मिलते हैं कि असली रेशमके

मेसर्स शिवदयालमल बखतावरमल

इस फर्मके मालिक बेरी जिला रोहतक के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २२ वर्ष हुए। बम्बई दुकानमें शिवदयालमलजी तथा बखतावरमलजी-का साझा है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स शिवदयाल बखतावरमल धानामकी झाड़-कालबादेवी, तारका पता—परमात्मा— इस फर्मपर कपड़ा, किराना, चान्दी, सोना, तथा रूईकी आढ़तका काम होता है। तथा वायदाकी अढ़तका काम भी होता है।

शिवदयालमलजीकी फर्म—

(१) बम्बई—शिवदयाल गुलाबराय दानार्षदर-मरोचा स्ट्रीट (Beriwala) यहां गल्ला तथा तिलहनकी मुकादमीका काम होता है।

(२) ब्यावर—चिरंजीलाल रोडमल, यहां गल्ला आढ़त तथा वायदेका काम होता है।

(३) मानसा—आत्माराम परशुराम—यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

(४) दिल्ली—हेतराम गुलाबराय नया बाजार-हुंडी, चिट्ठी तथा गल्ला और कपड़ेकी आढ़तका काम होता है। इस फर्मके मालिक बखतावरमलजी हैं।

पंजाबी कमीशन एजंट

किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मको स्थापित हुए करीब १२ साल हुए। यह लिमिटेड कम्पनी है। इस फर्मके बम्बई ब्रांचके मैनेजर लाला किशनप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अम्बाला (हेड ऑफिस) किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड (Nitanpha)—यहां बैंकिंग एण्ड कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

(२) बम्बई—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड कालबादेवी (तार नम्बर) यहां कॉटन और गेहूंका बिजिनेस व कमीशनका वर्क होता है।

(३) कराची—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड खोरी बगीचा (तार नम्बर) यहां कॉटन, गेहूंका बिजिनेस व कमीशनका वर्क होता है।

रायबहादुर दुनीचंद दुर्गादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप क्षत्री (पंजाबी) सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला दुनीचन्दजी राय बहादुर है। आपहीने इस फर्मको करीब ३० वर्ष पूर्व यहां स्थापित किया था।

१० वनरोव (नार्थ अफ्रिका) ११ कोरिया १२ माल्टा १३ जिब्राल्टर १४ डैनराल्मस १५ मडवरेलो १६ नेडोडिया १७ कोडेन १८ पनामा १९ मनीला २० बताव्या २१ कैंटान २२ हांगकांग २३ शंघाई २४ योकोहामा २५ कोबी आदि स्थानों पर भी है।

मेसर्स पोमल ब्रदर्स

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान—हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८५८ में स्थापित हुई। इस फर्मको सेठ पोमल शिवानल एवं आपके ५ भाई सेठ बधोरामजी, सेठ मूलचन्दजी, सेठ लेखराजजी एवं सेठ सहजरामजीने स्थापित किया था। प्रारंभसे ही यह फर्म भारतीय पुरानी कारीगरी एवं पुरानी विचित्र वस्तुओंको चीन, यूरोप, अफ्रिका आदि विदेशोंमें भेजकर उनके विक्रय करनेका व्यवसाय करती है। भारतीय उत्पन्न वस्तुओंका प्रचार विदेशोंमें करना, एवं भारतीय कारीगरोंको उत्तेजन देना ही इस फर्मका काम है। ज्यों ज्यों आपका व्यापार विदेशोंमें उन्नति पाता गया, त्यों-त्यों आप हरेक देशमें अपनी आफिसें स्थापित करते रहे, आज दुनियाके कई प्रसिद्ध २ देशोंमें आपकी दुकानें हैं एवं बहुत प्रतिष्ठाके साथ वहां आपका माल खपता है। यह फर्म सिंधवर्कों के नामसे मशहूर है।

इस फर्मकी ओरसे हैदराबाद (सिंध) में सेठ पोमलजीके नामसे एक अस्पताल स्थापित है, तथा वहांपर आपका एक स्कूल भी है। मालकेश्वरपर सेठ नारायणदासजीके नामपर सिंधी सज्जनोंके लिये एक सेनेटोरियम आपकी ओरसे बना हुआ है।

इस समय इस फर्मके मालिक इस फर्मके स्थापनकर्ता पांचों भाइयोंके पांच पुत्र हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं। (१) सेठ नारायनदास पोमल, (२) सेठ गोकुलदास सहजराम (३) सेठ पेसूमल मूलचंद (४) सेठ रोचलदास बधोराम (५) सेठ किशनचन्द लेखराज। इन पांचों सज्जनोंमेंसे इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता एवं सबमें बड़े सेठ नारायनदासजी हैं। सेठ नारायनदासजी हैदराबादमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। तथा सेठ पेसूमलजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नरीका काम करीब ७ वर्षोंसे कर रहे हैं। सेठ किशनचन्दजी हैदराबाद सनातनधर्म सभाके स्थापक हैं एवं वर्तमानमें आप उसके प्रेसिडेन्ट भी हैं। आपने उक्त सभाके लिये एक स्थान भी दिया है, तथा बम्बईकी जापानी सिल्क मर्चेन्ट्स एसोसियेशनके आप ६ वर्षोंसे सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद—(सिंध) मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता-पोमल—यहां इस फर्मका हेड आफिस है, तथा यहां आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है।

(२) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ तारका पता—पोमल—यहां रेशमी कपड़ेका जापान व चीनके साथ बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा रेशमी माल, फूलका

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेडऑफिस) हीरालाल दीवानचन्द T. A. Diwanchand-माल् कटला—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२) अमृतसर-हीरालाल दीवानचन्द—यहां इस फर्मका शाल डिपार्टमेन्ट है।

(३) अमृतसर- दुर्गादास बिहारीलाल कृष्णामारकीट-यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—दीवानचन्द द्वारकादास आलू कटला-यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(५) अमृतसर—हेमराज मनमोहनदास गुरुबाजा बाजार—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टाका व्यापार होता है।

(६) अमृतसर—दीवानचन्द एण्ड संस—इस ऑफिसके द्वारा विलायतसे शाल व कपड़ेका एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यापार होता है।

(७) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल मारवाड़ी बाजार—(तारकापता—पश्मीना) यहां पश्मीना,बनारसी साड़ियाँ व काश्मीरी शालका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

(८) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल दीवानचन्द बिल्डिंग मारवाड़ी बाजार—T. A. Pashmina इस फर्मपर आढ़तका व्यापार होता है।

(९) बनारस—दुर्गादास द्वारकादास नन्दन साव्का मोहल्ला—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टेका व्यापार होता है।

मुलतानी कमीशन एजंट

मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी

इस फर्मके मालिक करांचीके निवासी लुहाना रघुवंशी जातिके हैं। इसफर्मको सेठ गोऊमल ने स्थापित किया, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मूलचन्द दीपचन्द हैं। आपहीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारने तरक्की मिली। इसफर्ममें श्री पुरुषोत्तमदास गोकुलदासका पार्ट है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) करांची (हेड आफिस) मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी—T. A. Ghee, यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है यह फर्म ३० वर्षोंसे स्थापित है।

(२) बम्बई-मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी मारवाड़ी मोहल्ला पो० नं० ३ T A. Ghee यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय होता है।

(१३) तनरीफ (नार्थ आफ्रिका) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, (Teneriffe) तारकापता पोमल—यहां भारतीय कारीगरी तथा हीरा पन्ना और जवाहरातका व्यापार होता है।

(१४) त्रिपोली (इटली)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारकापता पोमल -यहां भी उक्त व्यापार होता है।

(१५) अलजेर (फ्रांस)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल „

पूर्वीय देशोंकी दुकानें

(१६) बटाव्या (जावा) मेसर्स पोमल ब्रदर्स (Batavia) तारकापता पोमल—यहां भारतकी पुरानी कारीगरी तथा जवाहरातका व्यापार होता है। आपकी यहां आसपास बेंगाली, गुलाव्या आदि स्थानोंपर तीन चार दुकाने हैं।

(१७) जावा—मेसर्स, पोमल ब्रदर्स, तारका पता पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है

(१८) कोलालामपुर (मलायास्टेट)—उपरोक्त व्यापार होता है, तथा यहां पर आपकी रबर की खेती है।

(१९) सेगून (फ्रेंच कालोनी)—यहां रेशमी कपड़ोंका व्यापार होता है।

(२०) मनेला (फिलिपाइंस—अमेरिका) यहां भी रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है। इसके आसपास आपकी तीन चार दुकानें हैं।

(२१) हांगकांग—मेसर्स पोमल ब्रदर्स HongKong तारका पता पोमल—इस बंदरके द्वारा चीन और भारतका सब व्यापार विदेशोंके साथ होता है, तथा चीनकी कारीगरीका माल भी इस बंदरसे विदेशोंमें भेजा जाता है।

(२२) केंटन (चीन) (Canton) इस बन्दरपर भी हांगकांगकी तरह काम होता है।

(२३) शंघाई (Shanghai)—(चीन) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारका पता पोमल चीनसे रेशम खरीद कर यहांके द्वारा बड़ी तादादमें सब मुल्कोंको एक्सपोर्ट किया जाता है, इसके अतिरिक्त कमीशनका काम होता है।

(२४) कोबी (जापान) koba)—एक्सपोर्टका व्यापार होता है।

(२५) कोलोन (Colon)—(नार्थ एण्ड साउथ अमेरिकाके सेंटरमें, पनेमा नहरके बाजूमें) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल—यहांसे रेशम एक्सपोर्ट होता है।

(२६) बेरा (ईस्ट आफ्रिका) पोर्तुगीज—उपरोक्त व्यापार होता है।

(२७) सेल्सबड़ी („)— „

(२८) योकोहामा (जापान) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, मेसर्स पेसूमल मूलचंद—इन दोनों फर्मों पर रेशमी व सूती माल, जापान की हाथ की कारीगरी व एवरीके मालका व्यापार दुनियाके साथ होता है।

इस फर्मकी जहां २ शाखाएं हैं, वहां २ इसकी स्थाई सम्पत्ति भी बहुत है, जापानके भूकम्पके समय योकोहामाकी प्रतिष्ठित वसियामल बिल्डिंग जिसमें जुड़े २ पांच ब्लोक्स थे, गिर गई। वर्तमान में इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर ब्रांचेज हैं।

हेड आफिस-बम्बई-मेसर्स वसियामल आसूमल एण्ड को० जकरिया मस्जिद बम्बई नं० ३ चायनीज और जापानीय सिल्क मरचेंट और बैङ्कर्स

ब्रेंचज़ हिन्दुस्थान—(१) करांची (२) अमृतसर (३) सिंध हैदराबाद।

स्टेटसेटिलमेंट—सिंगापुर, पेनांग, ईपो (Singapore, Penang, Ipoh,)

जावा-बताव्या, सोरबाया (Balavia, Sourabaya)

चीन—शंघाई, हांगकांग, कॅंटान (Hongkong, Canton Shanghi)

जापान--कोबी, योकोहामा (Kobe, yokohama)

आस्ट्रेलिया---मेलबर्न सिडनी, (melbourne, sydney)

फिलिपाइंस---मनेला (Manilla)

फ्रेंच इण्डोचायना—सेगून (saigon)

सेठ वसियामलजीका देहान्त सन् १९११ में हुआ। इस समय इस फर्मके प्रधान काम करनेवाले सेठ थाकूमलजी सेठ जीवन दासजी, सेठ ढोलूमलजी ,सेठ श्यामदासजी व सेठ गंगारामजी तथा और और कई सज्जन हैं।

सिंध हैदराबाद, अमृतसर, हरिद्वार, बम्बई आदि जगहोंमें आपकी धर्मशालाएं बनी हुई हैं। हैदराबादमें आपका एक वाचनालय तथा फ्री वैद्यक औषधालय भी है।

इस फर्मकी ग्रांटरोड पर बनी हुई वसियामल बिल्डिंग बम्बईकी प्रसिद्ध बड़ी बड़ी इमारतोंमेंसे एक है। इसके अतिरिक्त सेठ वसियामलजीके नामसे गवालियाटेंक, चौपाटी, बाबुलनाथ, कोलावा, जकरिया मस्जिद आदि स्थानोंमें आपकी अच्छी २ बिल्डिंग्स हैं।

उपरोक्त व्यापारके अलावा यह फर्म बहुत बड़ा बैंङ्किग बिजिनेस एवं पायटोंका व्यवसाय भी करती है। तारका पता सब जगह (T. A. wassiamall) (वसियामल) है।

सिल्क मरचेंट

मेसर्स गोभाई करंजा लिमिटेड

मेसर्स एन० एन० गोभाई एण्ड कम्पनीका व्यापार सन् १८८१ में चीनमें स्थापित हुआ और इस फर्मका व्यापार चीन, जापान, और यूरोपमें सन् १९१९ तक जारी रहा। इसके बाद यह कम्पनी लिमिटेड कम्पनीके रूपमें परिवर्तित हो गई। वर्तमानमें इस फर्मपर करंजा लिमिटेडके

१ शिकारपुर—मेसर्स दौलतराम मोहनदास (हेड आफिस) यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।

२ बम्बई—मेसर्स दौलतराम मोहनदास बार भाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Lalpagari) इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।

३ बम्बई—मूलजी जेठा मारकीट सुन्दर चौक (Lal pagari) यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

४ करांची—दौलतराम मोहनदास बम्बई बाजार " " "

५ सक्खर— दौलतराम मोहनदास " "

६ बम्बई—दौलतराम डाइंग एण्ड ब्लीचिंग मिल अपर माहीम मुगल गली पो० नं० ६—इस मिलमें कोरे कपड़ेकी धुलाई और पालिस होती है। इस मिलका माल बाजारमें लाल पगड़ी मार्का छिंटके नामसे बिकता है, तथा इसका माल पंजाब, अफगानिस्तान, रूस और भारतके कई प्रान्तोंमें जाता है।

मेसर्स पोकरदास मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान शिकारपुर (सिंध) है। आप नागपाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म सेठ द्वारकादासजीके समयमें स्थापित हुई थी, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ द्वारकादासजीके पुत्र सेठ मेघराजजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—पोकरदास मेघराज हेड आफिस (Sinah) यहांपर बैङ्किंग और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

२ बम्बई—पोकरदास मेघराज बार भाई मोहल्ला पो० नं० ३, (Red cloth) इस दुकानपर बैङ्किंग, कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

३ करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्द्धनदास मारकीट (Swadeshi) यहां स्वदेशी, विलायती तथा जापानी कपड़ेका बिजिनेस होता है।

४ करांची—द्वारकादास धर्मचंद मूलजी जेठा मारकीट, यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।

५ करांची— पो० द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट (Swadeshi), इस आफिस पर विलायतसे इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

१ नैदर (डि० [illegible] सिंध)—मेसर्स मेघराज [illegible], यहां फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।

इस फर्मके करांचीके ब्रांच मैनेजर मि० धर्मचंद सोहनदास [illegible] और बम्बई फर्मके ब्रांच मैनेजर मि० [illegible] तथा [illegible] भगवानदास [illegible] हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रीकूमल दुहिलानामल और आपके छोटे भाई टीकमदास दुहिलानामल तथा आपके पार्टनर सेठ मूलचंद मतनमल हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T. A. whitesilk) यहां आपका जापानी व चायनी रेशमी मालका पीस गुड्स डिपार्टमेंट है।

(२) बम्बई—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T. A whitesilk) यहां आपका रेशमी हेण्डकरचीफका डिपार्टमेंट है।

(३) देहली—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स चांदनी चौक—(T. A. white silk) यहां रेशमी पीसगुड्स तथा हेण्डकरचीफ दोनोंका बिजिनेस होता है।

(४) हैदराबाद (सिंध) मेसर्स दुहिलानामल तोलाराम शाही बाजार (T. A, whitesilk) यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा सराफी और रेशमका बिजिनेस होता है।

(५) योकोहामा (जापान)—मेसर्स रीकूमल ब्रदर्स यामास्टाचो (T. A. white silk) यहांसे जापानी रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

मेसर्स हीरानंद ताराचंद (मुखी)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी जातिके सज्जन हैं। यह खानदान मुखीके नामसे मशहूर है, तथा सिंधी व्यापारियोंमें बहुत मशहूर माना जाता है। इस फर्मको १०० वर्ष पूर्व मुखी हीरानंदजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक मुखी हरकिशनदास गुरनामल तथा मुखी दयाराम विशनदास हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिंध)—हीरानंद ताराचंद (T. A Mukhi)—यहां आपका हेड ऑफिस है।

(२) बम्बई मेसर्स हीरानंद ताराचंद जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T, A, Mukhi,) यहां जापानीज़ तथा चायनीज सिल्कका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद कर्नाक ब्रिज—यहां बैङ्किग व बुलियनका बिजिनेस होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद खारक बाजार—यहां खजूर, चावल, खोपरा, छुहारा आदिका व्यापार व कमीशनका काम होता है।

(५) करांची—मेसर्स हीरानंद ताराचंद बंदर रोड T. A. mukhi —बैङ्किग बुलियन और कमीशन एजंसीका काम होता है।

जौहरीमल हरसुखराय बारामका माड़
तिलोकचन्द हरसुखराय कालबादेवी
तेजपाल वरदीचंद बारामका माड़, कालबादेवी
त्रिलोकचन्द मामराज, मारवाड़ी बाजार
धीरधराव किशनदास बारभाई मोहल्ला
दुर्गादास दीनानचंद कालबादेवी
देवकरणदास रामविलास, मारवाड़ी बाजार
धरमसी नरसी खांड बाजार
नरसिंहदास मालीराम कालबादेवी रोड
दयाल प्रधान कालबादेवी
नेवाराम भोलानाथ, कालबादेवी
नाथूराम जुहारमल सराफ बाजार
नारायणदास मोहता दराकुवा
पूनमचन्द बख्तावरमल मुम्बादेवी
फूलचंद मोतीलाल, मारवाड़ी बाजार
फतेचंद अन्नराज एण्डसंस सुतारचाल
बद्रीप्रसाद राधारमण कालबादेवी
भगवानदास नेतराम कालबादेवी
भीखमचंद रेखचंद विट्ठलवाड़ी
भानामल गुलजारीलाल कालबादेवी
मन्नालाल भागीरथदास एण्डसंस, सराफबाजार

गुरुदत्त ? वर्मा बारामके माड़के पास
मिन्ना मन्ना बिल्डिंग स्ट्रीट
रामदास नेमजी एण्ड कम्पनी हार्नबी रोड मर्चेन्ट बिल्डिंग
रामचन्द्र ईश्वरदास बारभाई मोहल्ला
रामलाल नथी गुलेरा
रामगोपाल मुंगालाल बारामका माड़
रणछोड़दास मानजी दानाबंदर
शिवजीराम रामनाथ रूमालचाल
शिवनाथ हरलाल बारामका माड़
संतलाल किशोरीलाल कालबादेवी
सखाराम कृष्णराव गुरुदत्त कालबादेवी
संतराम गणपत कालबादेवी
हरमुखराय सुंदरलाल शेखमेमन स्ट्रीट
सम्पतकुमार जाजोदिया, कालबादेवी
हरनंदराय घनश्यामदास हनुमान गली
हरविलास गंगादत्त कालबादेवी
हरिकृष्णलालजी मेहरा कालबादेवी
हीराचंद फतेचंद देसाई कालबादेवी रोड
श्रीराम मोहता भुलेश्वर

मेसर्स सीताराम जयगोपाल

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास अमृतसरमें (पंजाब) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसफर्मका हेड आफिस अमृतसर है। इसे यहां बम्बईमें लाला गंगाविशनजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक लाला जयगोपालजी हैं। आपके भाई लाला सीतारामजीका देहावसान होगया हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेड ऑफिस) मेसर्स सीताराम जयगोपाल गुरु बाजार, यहां शालका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स सीतारामजयगोपाल मारवाड़ी बाजार, यहां काश्मीरी शाल, बनारसी साड़ी और दुपट्टोंका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स जयगोपाल लक्ष्मीनारायन कुंजगली, यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा सब प्रकारके बनारसी रेशमी मालका व्यापार होता है।

मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मका परिचय ऊपर कमीशन एजंट्समें दिया गया है। इस फर्मपर काश्मीरी तथा बनारसी रेशमी मालका अच्छा व्यापार होता है।

चायनीज़ और जापानी सिल्क—मरचेंट्स

ओंकारदास दुर्गादास मसजिद् बंदर रोड,

आदम अब्दुल करीम मदर्स मसजिद बंदररोड,

एदलजी फ्रामजी

ए० सी० पटेल कम्पनी हार्नबी रोड, फोर्ट,

के० हासाराम कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,

केशवलाल मगनलाल मसजिद बन्दर रोड,

कपूरचन्द मोहनजी कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,

किशनचंद चेलाराम मसजिद बन्दर रोड,

गुमानमल परशुराम कोलीवाड़,

चेलाराम ज्ञानचंद इनावन्दर,

इस फर्मको लार्ड मिंटो, लार्ड किचनर, कमिश्नर इनचीफ इण्डिया, महाराज काश्मीर, महाराज कोल्हापुर व बम्बई गवर्नरने अपाइण्टमेंट किया है। सन् १८०३के देहली दरबार एक्जी बीशनमें इस फर्म को फर्स्टक्लास सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ है। तथा १९०४ के बम्बई एक्जीबीशनके समय एक गोल्ड मेडेल और १९०७में कलकत्ता एक्जीबीशनके समय २ गोल्ड मेडिल्स प्राप्त हुए हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिन्ध)—मेसर्स ताराचन्द परशुराम बड़ाबाजार, यहां आपका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स ताराचन्द परशुराम जकरिया मसजिद पो० नं ०३, यहां जापानी व चायनी रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ६३ मेडोजस्ट्रीट फोर्ट—यहां हीरा, पन्ना, मोती, जवाहरात तथा क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम करनाक ब्रिज—यहां फरुखाबाद, मिर्जापुर आदिके पीतलकी कारीगरीके बर्तन व क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(५) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ५७ पार्क स्ट्रीट कलकत्ता—यहां हीरा, पन्ना तथा दूसरे जवाहिरात और क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(६) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम स्टार्टसरेल मार्केट हीरा, पन्ना और जवाहिरातका व्यापार होता है।

(७) कलकत्ता- मेसर्स ताराचन्द परशुराम लिण्डसे ट्रीट, " "

(८) योकोहामा (जापान) योमास्टाचो, मेसर्स ताराचन्द परशुराम यहांसे जापानी डाय खरीद कर मारवके लिये भेजा जाता है।

सब जगह तारका पता:— (showroom) है।

मेसर्स धन्नामलचेलाराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध (हैदराबाद) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ धन्नामल चेलारामने सन् १८६० में स्थापित किया। इस फर्मकी ब्रॅचेज यूरोप चायना, अमेरिका, जापान आदि देशोंमें हैं। यहां इस फर्मपर सिल्क, ज्वेलरी और क्यूरियोका बिजिनेस होता है। आपका हेड आफिस बम्बई है। जिसका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स धन्नामल चेलाराम ६३ मेडोजस्ट्रीट-फोर्ट (T, A, Allgems) यहां सिल्क ज्वेलरी तथा क्यूरियोका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी और फर्में भारतमें-बम्बई, मद्रास, और विदेशमें१ केरो (इजिप्त) २ अलेक्जेंड्रिया (इजिप्त) २ पोर्टसेड ४ मसाउन ५ ऊरसो ६ नेपल्स ७ पाल्मी ८ जिनोवा ९ ब्राजील

मेसर्स सीताराम जयगोपाल

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास अमृतसरमें (पंजाब) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसफर्मका हेड आफ़िस अमृतसर है। इसे यहां बम्बईमें लाला गंगाविशनजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक लाला जयगोपालजी हैं। आपके भाई लाला सीताराम-जीका देहावसान होगया है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेड आफिस) मेसर्स सीताराम जयगोपाल गुरु बाजार, यहां शालका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स सीतारामजयगोपाल मारवाड़ी बाजार, यहां कारमीरी शाल, बनारसी साड़ी और दुपट्टोंका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स जयगोपाल लक्ष्मीनारायण कुंजगली, यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा सब प्रकारके बनारसी रेशमी मालका व्यापार होता है।

मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मका परिचय ऊपर कमीशन एजंट्समें दिया गया है। इस फर्मपर कारमीरी तथा बनारसी रेशमी मालका अच्छा व्यापार होता है।

चायनीज़ और जापानी सिल्क—मरचेंट्स

ओंप्रसाद दुर्गादास मसजिद् बंदर रोड,
आदम अब्दुल करीम अदर्स मसजिद बंदररोड,
एदलजी फ्रामजी
ए० सी० पटेल कम्पनी हार्नबी रोड, फोर्ट,
के० हाथाराम कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,
केशवलाल व्रजलाल मसजिद बन्दर रोड,
कपूरचन्द मोहनजी कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,
किशनचंद चेलाराम मसजिद बन्दर रोड,
गुमानमल परशुराम कोलीवाड़,
चेलाराम ज्ञानचंद दानाबन्दर,

स्व० सेठ पोहमल खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ मूलचन्द खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ [illegible] खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ [illegible] खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

ग्रेन मर्चेण्ट्स

GRAIN MERCHANTS

गलीचा, विलायती गलीचा, और अमृतसरके आर्डर वी० पी० से ३ मासोंसे सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त बैङ्किंग बिजिनेस भी होता है। इसी नामकी यहां पर भारतकी ३ दुकानें हैं।

(३) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स अपोलो बंदर-तारका पता—पोमल यहां मोतीके हार, हीरेकी अंगूठी तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है, इसके अतिरिक्त भारतकी पुरानी हाथकी कारीगरी, परसी, पब्लिक, ईरानी गलीचा आदि अंग्रेज गृहस्थोंके ऐश आरामकी वस्तुएं भी यहां बहुत बड़ी तादादमें मिलती हैं।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद पजीराम फरनाक ब्रिज तारका पता —पोमल—यहां जयपुर, मुरादाबाद, बनारस आदि स्थानोंपर बने हुए पीतलकी कारीगरीके बर्तन, मिर्जापुर, जयपुर अहमदाबाद आदि स्थानोंके गलीचे, काश्मीरका टेबल कवर व नमदा तथा काश्मीर सहारनपुर और जयपुरका लकड़ीकी कारीगरीका काम और मद्रासके भरतके कामका माल बहुत बड़ी तादादमें स्टाकमें रहता है एवं बिकता है, इस फर्मके द्वारा अमेरिका तथा आस्ट्रेलियामें अच्छी तादादमें माल भेजा जाता है, तथा यह फर्म येमली एक्जीबीशन (इंग्लेंड) को २ वर्षोंसे अच्छी तादादमें माल सप्लाई करती है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स पोमल ब्रदर्स ३३ केनिङ्गस्ट्रीट—तारका पता—पोमल—यहां जापानी चीनी रेशमी गलीचा व मुसल्ला थोक व्यापार होता है।

(६) देहली—मेसर्स पोमल ब्रदर्स चांदनी चौक तारका पता—पोमल—उपरोक्त व्यापार होता है।

(७) करांची—मेसर्स पोमल ब्रदर्स बंदररोड—तारका पता—दीपमाला—यहां लोहेका इम्पोर्ट तथा गेहूं आदि वस्तुओंके एक्सपोर्ट व कमीशनका काम होता है।

पश्चिमीय देशोंका व्यापार

(८) केरो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स (cairo) तारका पता—पोमल—यहां भारतकी पुरानी कारीगरी तथा हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है यहांसे अमेरिकन यात्री बहुतसा माल खरीदते हैं।

(९) लक्सो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहां भी यही व्यापार होता है अमेरिकन यात्रियोंके साथ ६ महीना अच्छा व्यापार रहता है।

(१०) अलेकजेंड्रिया (इजिप्ट) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल—भारतीय पुरानी कारीगरी तथा हीरापन्ना जवाहरातका व्यापार होता है।

(११) जिब्राल्टर—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है, यहां आसपास ५।६ शाखाएं और हैं।

(१२) माल्टा (टापू) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल-यहां भी उक्त व्यापार होता है।

ग्रेन मर्चेण्ट्स

GRAIN MERCHANTS

स्व० सेठ वसियामल आसूमल, बम्बई

स्व० सेठ बन्सीधरजी (बन्सीधर गोपालदास)
(पृ० नं० १२८)

ठ गोपालदास आसूदामल (वसियामल आसूमल)

सेठ माधवदासजी (बन्सीधर गोपालदास)
(पृ० नं० १२८)
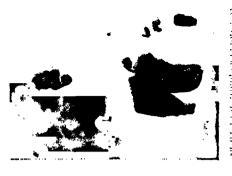
नामसे व्यापार होता है। यह फर्म सिल्क मर्चेंट्समें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। मस्जिद बंदर रोड बम्बईपर इस फर्मकी ३ शाखाएं हैं। (१) हेड आफिस (२) जापानी सिल्क ब्रांच और (३) शंघाई सिल्क ब्रांच।

भारतकी अन्यत्र शाखाएं— कराची और अमृतसर हैं।

विदेशी ब्रांच—शंघाई और कोबी।

इन सब फर्मोंपर इसी प्रकारके सामानका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट होता है तथा सिल्क बिजिनेस होता है।

मेसर्स गागनमल रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक हैदराबाद (सिंध) के निवासी माईबंद जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सन् १८८४ में सेठ कुंदनमल गागनमलने स्थापित किया और आपहीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजना मिली। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुंदनमलजीके पुत्र सेठ जीवतरामजी, सेठ खूबचंदजी और सेठ मुरलीधरजी हैं। इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता सेठ जीवनरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिंध)—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र (Popularity) यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T. A. Bharatawasi) यहां जापानीज व चायनीज़ रेशमी कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स जीवतराम कुंदनमल जकरिया मस्जिद—यहां रेशमी हेण्डकरचीफ तथा फैंसी गुड्सका व्यापार होता है।

(४) योकोहामा (जापान) मेसर्स जी० रामचन्द्र कम्पनी यामास्टाचो (T.A. Ramchandra) यहांसे रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध हैदराबाद है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ रीझूमलजीने सन् १९१६ में स्थापित किया।

(६) मुलतान (पंजाब)—हीरानंद ताराचंद (T, A, Mukhi) यहां बैङ्किग और बुलियनका व्यवसाय होता है।

(७) सरगोधा (पंजाब) हीरानंद ताराचंद (T,A,Mukhi) बेङ्किग और बुलियनका काम होता है।

(८) पुलरवार (पंजाब)—हीरानंदताराचंद—यहां कमीशनका काम होता है।

(९) सिलांवाली मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(१०) चींचवतनी मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(११) नवादेरा (सिंध)—गुरनामल दयाराम—यहां राइस फेक्टरी है। तथा कमीशनका काम होता है।

(१२) टंडावागा (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद—कमीशनका काम होता है।

(१३) भिंदाशहर (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद ,, ,,

(१४) वदीना (सिंध)—सुखरामदास हीरानन्द ,, ,,

विदेशी ब्रांचेज्

(१५) पोरसेड—(इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स, क्यूरियो, जापानी, चायनीज सिल्क मरचेंट्स तथा पुरानी कारीगरीके सामानके व्यापारी।

(१६) इस्माइलया (इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स,क्यूरियो,जापानी,चायनीज सिल्क मर्चेंट्स।

(१७) वेरूथ—(सीरिया) मेसर्स ए० नेचामल- ,, ,,

(१८) एथेन्स—(ग्रीस) मेसर्स सी० डी० मुखी ,, ,,

(१९) योकोहामा—[जापान] १२६ यामास्टाचो (T, A, Mukhi) मुखी हीरानंद ताराचंद, यहांसे जापानीज तथा चायनीज माल भारतके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

बनारसी व काश्मीरी सिल्क मरचेण्ट

मेसर्स अहमदई-ईसाअली

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बम्बई है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसे सेठ ईसाअली जी ने स्थापित किया था।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अहमदई, ईसाअली हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स अहमदई ईसाअली बोटी मन्दरके पास इम्पायर बिल्डिङ्ग बम्बई—यहां कोर, बार्डर, व जरीके कामका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त रेशमी कीमती साड़ियोंके रङ्गाईका काम होता है। बम्बईके जामली मोहल्लामें आपकी इसी नामसे २ दुकानें और हैं।

---

(२) रंगून—मेसर्स वेलजी लालजी एण्ड कम्पनी मुगलस्ट्रीट, T.A.Prominent यहां चांवलका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

सेठ वेलजी भाईके छोटे भाई श्रीनारायणजी हैं। आप दुकानका कार्य सम्हालते हैं। सेठ वेलजी भाईके २ पुत्र हैं जिनका नाम श्रीनेणसीजी तथा कल्याणजी हैं। नेणसीजी अभी पढ़ते हैं।

मेसर्स सेवाराम गोकुलदास

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जैसलमेर है, पर आप लगभग सवा सौ वर्षसे जबलपुरमें निवास करते है, इसीसे जबलपुर वालेंके नामसे विशेष विख्यात हैं। जबलपुरमें आपके महल, गोविन्द भवन नामक कोठी और बगीचा, केवल यहां ही नहीं किन्तु सी० पी० भरमें दर्शनीय समझे जाते हैं। आपका यहां वल्लभ कुल सम्प्रदायका एक बहुत बड़ा मन्दिर है जिसका लाखों रुपयों की सम्पत्ति का पृथक् ट्रस्ट है। इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ जीवनदास जी एवं आनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी "मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट",हैं।

सेठ सेवारामजी जैसलमेरसे जबलपुर आये तथा उनके पौत्र राजा गोकुलदासजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। राजा गोकुलदासजी एवं सेठ गोपालदासजी दोनों भाई भाई थे। पहिले यह फर्म सेठ सेवाराम खुशालचन्दके नामसे व्यवसाय करती थी। यह फर्म यहां करीब ७५ वर्षोंसे स्थापित थी। संवत् १९६४ से आप दोनों भाइयों की फर्म अलग अलग हुई और तबसे इस फर्मपर 'सेवाराम गोकुलदास' एवं दीवान बहादुर वल्लभदासजीकी फर्मपर "खुशालचन्द गोपालदास" के नामसे व्यवसाय होता है। इस फर्मका हेड ऑफिस जबलपुर है।

यह खान्दान:माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं माननीय समझा जाता है। गवर्नमेंने सेठ गोकुलदासजीको राजाकी उपाधि दी थी और सेठ जीवनदासजी साहबको प्रथम राय बहादुर एवं फिर दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी साहब कौंसिल आफ़ स्टेटके मेम्बर हैं। आप बड़े शिक्षित एवं प्रतिष्ठासम्पन्न महानुभाव हैं। असहयोग आन्दोलनके आरंभसे देशके राजनैतिक आन्दोलनोंमें आपका सदैव हाथ रहा है।

जबलपुरमें प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओंका निर्माण राजा गोकुलदासजी और उनके खानदानवालोंके हाथों हुआ है। जबलपुरका टाउनहाल, यहांकी स्त्रियोंके लिए "लेडी एलिगन फ़ीमेल हॉस्पिटल" और "क्रम्प चिलडरन हॉस्पिटल" नामक बच्चोंका अस्पताल आपहीके खान्दान द्वारा बनवाया गया है। आपहीने जबलपुर वाटर वर्क्सके निर्माणके लिये जबलपुर म्युनिसिपेल्टीको सात लाख रुपया कुछ कम ब्याजपर और कुछ बिनाब्याज दिये थे। जिसके द्वारा जबलपुरमें वाटर वर्कसका सुप्रबंध आजतक चला आता है। इस रकमकी अदाई लगभग २० वर्षोंमें हुई, अतएव

(६) मुलतान (पंजाब)—हीरानंद ताराचंद (T, A, Mukhi) यहां बैंकिंग और बुलियनका व्यवसाय होता है।
(७) सरगोधा (पंजाब) हीरानंद ताराचंद (T,A,Mukhi) बैङ्किग और बुलियनका काम होता है।
(८) फुलरवार (पंजाब)—हीरानंदताराचंद—यहां कमीशनका काम होता है।
(९) सिलांवाली मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद " "
(१०) चीचवतनी मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद " "
(११) नवादेरा (सिंध)—गुलामल दयाराम—यहां राइस फेक्टरी है। तथा कमीशनका काम होता है।
(१२) टंडावागा (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद—कमीशनका काम होता है।
(१३) विंदाशहर (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद " "
(१४) वद्दीना (सिंध)—सुखरामदास हीरानन्द " "

विदेशी ब्रांचेज्

(१५) पोरसेड—(इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स, क्यूरियो, जापानी, चायनीज सिल्क

(१७) वरूथ—(सीरिया) मेसर्स ए० नेचामल- " "
(१८) एथेन्स—(ग्रीस) मेसर्स सी० डी० मुखी " "
(१९) योकोहामा—[जापान] १२६ यामास्टाचो (T, A, Mukhi) मुखी हीरानंद ताराचंद, यहांसे जापानीज तथा चायनीज माल भारतके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

बनारसी व काश्मीरी सिल्क मरचेण्ट

मेसर्स अहमदई-ईसाअली

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बम्बई है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसे सेठ ईसाअली जी ने स्थापित किया था।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अहमदई, ईसाअली हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स अहमदई ईसाअली मोटी बन्दरके पास इम्पायर बिल्डिङ्ग बम्बई—यहां कोर, फार्डर, व जरीके कामका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त रेशमी कीमती साड़ियोंकी रफूका काम होता है। बम्बईके जामली मोहल्लामें आपकी इसी नामसे २ दुकानें और हैं।

जेठमल धाऊमल मसजिद बन्दर रोड
जगमोहनदास विट्ठलदास ,, ,, ,,
जेमतमल फीमनराय ,, ,, ,,
जमनादास अमरचन्द ,, ,, ,,
जेगोपाल रामकिशन ब्रदर्स ,, ,,
तोलाराम देवजीराम ,, ,,
टी० खेमचंद तेजूमल ,, ,,
देसाई एण्ड को० नाकूदा मोहल्लामांडवी
पेमूमल मूलचंद मसजिद बंदर रोड
मंचेरजी हीरजी भाई ,, ,,
एल० छबीलदास ,, ,,
लेहूराम सद्धराम ,, ,,
रघुनाथदास कन्हैयालाल ,, ,,
आर० एम० तलाटी कम्पनी ,, ,,
सतरामदास किशनचंद ,, ,,
सी० एम० मेसानिया एण्ड कम्पनी बोरीबंदर.फोर्ट
हाजी अहमदहुसेन मसजिद बंदरोड

(५) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास २०१ हरिसनरोड कलकत्ता—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़त-
का काम होता है।

(नोट)—पहिले आपका यहां विलायती कपडेका बहुत बड़ा व्यापार था। आप गिलेंडर्स आरवथ नॉट एन्ड कम्पनीके बेनियन थे। यह कार्य लगभग ३० वर्षतक चलता रहा। असहयोगके ज़मानेमें विलायती कपड़ेका व्यापार होनेके कारण सेठ गोविन्ददासजीने यह कार्य छोड़ दिया। कलकत्तेमें केवल आपहीकी फर्मने सदाके लिये विलायती कपड़ेके व्यापारको छोड़ा।

(६) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास कालबादेवी, बम्बई—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका काम होता है।

(७) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास दानाबन्दर, बंबई—यहां गल्लेका व्यापार होता है। आपका यहां अनाजका गोडाउन है।

(८) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जौहरी बाजार जैपुर—यहां बैंकिंग व हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। इसके सिवा यहांके जागीरदारोंके साथ लेनदेनका काम भी होता है।

(९) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास मलकापुर—यहां आपकी कॉटन जीन व प्रेस फेक्टरी तथा आइल फेक्टरी है।

(१०) सेठ रामकिशनदास गोकुलदास बरेली (भोपाल स्टेट)—यहां आपकी जमींदारी है तथा बैंकिङ्गका काम भी होता है।

(११) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जैसलमेर—यह आपका आदि निवास स्थान है। यहां आपका प्राचीन मकान है और यहांकी दुकानमें बैंकिङ्ग और आढ़तका काम होता है।

जेठमल घालामल मसजिद बन्दर रोड
जगमोहनदास विठ्ठलदास ,, ,, ,,
जेमतमल कीमतराय ,, ,, ,,
जमनादास प्रमरचन्द ,, ,, ,,
जेगोपाल रामकिशन ब्रदर्स ,, ,,
तोलाराम देवजीराम ,, ,,
टी० खेमचंद तेजूमल ,, ,,
देसाई एण्ड को० नाकूरा मोहल्लामांडवी
पेसूमल मूलचंद मसजिद बंदर रोड
मंचेरजी हीरजी भाई ,, ,,
एल० छबीलदास ,, ,,
लोकूराम सहजराम ,, ,,
रघुनाथदास कन्हैयालाल ,, ,,
आर० एम० तलाटी कम्पनी ,, ,,
सवरामदास किशनचंद ,, ,,
सी० एम० भेसानिया एण्ड कम्पनी बोरीबंदर.फोर्ट
हाजी अहमदहुसेन मसजिद बंदररोड
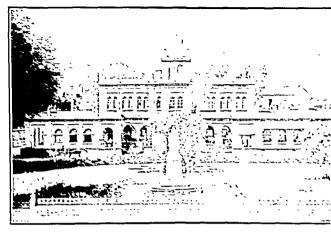
विक्टोरिया टाउन हाल जबलपुर

राजा गोकुलदास ड्राइंग रूम जबलपुर

माने जाते हैं। इस फर्मका आफिस ५६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है। T.A. sheed है। इस फर्म रितर्थमें फाटनडेपो हैं। एवं दानाबंदरपर मेनका गोडाउन है। इसके अतिरिक्त बम्बईसे बाहर कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। यह फर्म खिआचंद मिल्स कम्पनी लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है।

मेसर्स नप्पू नेनसी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वेलजी भाई हैं आप ओसवाल स्थानक वासी संप्रदाय के सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कच्छ है।

इस फर्मकी स्थापना सेठ नप्पू भाईने करीब ६४ वर्ष पूर्व की थी। आप श्रीमान् नेनसी भाईके पुत्र थे, सेठ नप्पू भाईके बाद इस फर्मके कामको सेठ लखमसी भाईने सम्हाला, आपका जन्म संवत् १६०३ में हुआ, आपके हाथोंसे इस फर्मकी खूब उन्नति हुई, आपको गवर्नमेन्टने जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था। आप ग्रेन मर्चेट्स एसोसियशनके सभापति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १६७० में हुआ। इस समय इस फर्मके कामको आपके पुत्र श्री सेठ वेलजी भाई संचालित करते हैं। आप बड़े विद्याप्रेमी देश एवं जाति भक्त सज्जन हैं आप बम्बई युनिवर्सिटीकी बी० ए० एल० एल० बी० परीक्षा पास हैं। कुछ समय पूर्व आप बम्बई म्युनिसिपलेटी व बाम्बे पोर्टट्रस्टके सदस्य रह चुके हैं। लेकिन जिस समय सारे देशमें असहयोगकी सात्विक क्रांतिका प्रवाह उठा था उस समय आपने देश भक्तिसे प्रेरित हो इन पदोंको छोड़दिया तथा आप ऑल इण्डिया कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बर हो गये। उक्त कमेटीके ट्रेझररका सम्माननीय कार्य भी आप ही करते थे। उसी समय अपने ५० हजार रुपया एक मुश्त तिलक स्वराज फंडमें दान दिया था।

आप बम्बई ग्रेन मर्चेट्स एसोसिएशनके कई वर्षोंसे सभापतिके पदपर प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त कच्छी वीसा ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज बम्बईके आप प्रेसिडेन्ट हैं व बम्बई स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके आप वाइस प्रेसिडेन्ट हैं। इसके अतिरिक्त ऑल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके, मलकापुर अधिवेशनके समय आप ऑनरेरी सेक्रेटरी नियत हुए थे, तथा अब भी उसी पदपर कार्य कर रहे हैं। आपने १५ हजार रुपया कांदावाड़ी संस्थामें दान दिया है। आप अत्यन्त सरल एवं शांत प्रकृतिके सज्जन हैं। आप शुद्ध खादीका व्यवहार करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—(हेड ऑफिस) मेसर्स नप्पू नेनसी दाणाबन्दर-अरगायरोड (T. A. popat) यहां मेन मर्चेंट तथा कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

मेसर्स नारायणजी कल्याणजी
,, नानजी लखमसी (आत बाजार)
,, नोपचन्दमगनीराम
,, परमानन्द जादवजी
,, प्रधान ढंकड़ा
,, प्रेमजी हरिदास
,, पोहुमल मदर्स
,, प्रेमजी डोसा
,, फूलचन्द केदारमल
,, भगवानदास मूलजी
,, भगवानदास मुरारजी,
,, भारमल श्रीपाल
,, मगनलाल प्रेमजी
,, मणसी लखमसी
,, मदनजी रतनजी
,, मेघजी चतुर्भुज
,, मोतीभाई पचाण
,, मोनराज दसन्तीलाल
,, मामराज रामभगत
,, मेघजी हरिराम
,, रणछोड़दास प्रागजी
,, रवजी नेगसी
,, रतनसी पूंजा
,, रामजी रवजी
,, रामचन्द्र रामविलास
,, रामजी भोजराज
,, लखमीदास हेमराज
,, लहरचन्द जोरावदास
,, लालजी गणपत
,, लालजी पुनशी
,, लालजी तेजू

मेसर्स वल्लभदास मगनलाल
,, वल्लभजी गोविन्दजी
,, वरुनजी पदमसी
,, वसनजी मेघजी
,, वालजी हीरजी
,, वालजी लीलाधर
,, वीरजी जेठा
,, विट्ठलदास उधवजी
,, वेलजी कानजी
,, वेलजी दामजी
,, वेलजी शामजी
,, वेलजी लखमसी
,, साकरचन्द त्रिकमजी
,, शिवजी भारा
,, शिवजी हीरजी
,, शिवजी राघवजी
,, शिवनारायण बलदेव
,, शिवदयाल गुलाबराय
,, सुन्दरजी लधा
,, सुन्दरलाल गोरधनदास
,, सेवंतीलाल नगीनदास
,, सेवाराम गोकुलदास
,, सेंसमल सुगनचन्द
,, सोमचन्द धारसी
,, हरिदास शिवजी
,, हरिदास प्रेमजी
,, हरसुखदास जोधराज
,, हरजीवन जगजीवन
,, हाथी भाई तुलसीदास
,, हीरजी गोविन्दजी
,, हीरजी गंगाधर

जौहरी

JEWELLERS

स्व॰ राजा गोकुलदासजी (सेवाराम गोकुलदास) बम्बई

दी॰ ब॰ सेठ जीवनदासजी (सेवाराम गोकुलदास) बम्बई

जवाहिरातका व्यापार

भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार और उपयोग बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। कालिदास इत्यादि कवियोंके काव्योंमें भी इन जवाहिरातोंका वर्णन पाया जाता है। जिस समय यह देश सौभाग्यके शिखरपर मण्डित था उस समय यहांके समृद्धिशाली लोग अपने महलोंके चौक जवाहिरातोंसे जड़ाते थे। यहांके पुराण-साहित्यमें कौस्तुभमणि (हीरा) सूर्य्यमणि (माणिक) चन्द्रमणि (पुखराज) मरकतमणि (पन्ना) इत्यादि नव प्रकारके रत्नोंका वर्णन प्रचुरतासे पाया जाता है। पहले यहांके व्यापारी विदेशोंसे भी जवाहरातका लेनदेन करते थे, ऐसा कई प्रमाणोंसे ज्ञात होता है।

मुगल कालीन भारतवर्षमें जवाहिरातोंका बहुत प्रचुरतासे उपयोग होता था। मुगल सम्राटोंके महलोंकी सौभाग्यशालिनी रमणियां इन जवाहिरातोंसे बनेहुए जेवरोंको बड़े चावसे धारण करती थीं। शाहजहां बादशाहके मुकुटका कोहिनूर हीरा जगत प्रसिद्ध है जो कई स्थानोंपर घूमता हुआ अब भारतसम्राटके मुकुटकी शोभा बढ़ा रहा है।

इस समय भी भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार प्रचुरतासे होता है। पर रूई और जूटके व्यापार ही की तरह यह व्यापार भी विदेशाश्रित हो गया है।

इस समय भारतवर्षमें जितने जवाहिरातके बाजार हैं बम्बईका उनमें सबसे पहला नम्बर है। इस शहरमें इस कार्य्यके करनेवाले सैंकड़ों बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी निवास करते हैं, जो लाखों रुपयोंका व्यवसाय करते रहते हैं। बाजारके टाइमपर सैंकड़ों व्यापारी अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जवाहिरातकी परीक्षा करते हुए दिखलाई देते हैं। इनकी इसी सूक्ष्म दृष्टिपर हजारों रुपयेके वारे न्यारे हो जाते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो जवाहिरातका व्यापार दृष्टि व नजरका व्यापार है। इस व्यवसायके अन्दर वही व्यापारी विजयी और सफल हो सकता है जिसकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और मालको परखनेवाली हो! क्योंकि यह व्यापार इतना चपल और चक्करदार है कि कभी २ बड़े २ सूक्ष्मदृष्टि अनुभवी और तीक्ष्ण बुद्धिवाले भी इसमें गोता खा जाते हैं। बात यह है कि सोना चांदी या दूसरी वस्तुओंकी परीक्षाके जैसे निश्चित तरीके हैं वैसा कोई निश्चित तरीका जवाहि-

यदि ब्याजका हिसाब लगाया जाये तो एक प्रकारसे आपकी यह कुछ रकम बाटर वर्कसके लिये दान समझी जा सकती है। मध्य प्रान्तके अनेक पुराने खान्दानोंको बचानेके लिये भी आपने इसी प्रकारकी अनेक रकमें कम ब्याजपर कर्ज दी थीं। इस कार्यमें आपका लगभग २५ लाख रुपया सदैव लगा रहता था। इस खान्दानकी ओरसे खंडवा स्टेशनके पास "सौभाग्यवती सेठानी पार्वती बाई धर्मशाला" के नामसे एक बहुत उत्तम धर्मशाला बनी हुई है। इस धर्मशालाके निर्माणमें लगभग दो लाख रुपया व्यय हुआ है। जबलपुरमें नर्मदा किनारे भृगुक्षेत्र (भेड़ाघाट) नामक तीर्थ स्थानपर आपके द्वारा बनाई हुई एक बड़ी धर्मशाला है जिससे यहां आने जानेवाले यात्रियोंको बड़ा आराम मिलता है। इसके अतिरिक्त गाडरवाड़ा, अजमेर, इटारसी, मथुरा आदि स्थानोंमें भी आपकी धर्मशालाएं हैं जिनमें लाखों रुपयोंकी लागत लगी है। हालहीमें कुछ वर्ष हुए, जबलपुरमें राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर नामक संस्थाका आपकी खान्दानने ५० हजार रुपया देकर निर्माण कराया है और गत अप्रेल महीनेमें 'राजकुमारीबाई अनाथालय' भवन निर्माणके लिये आपने दस हजार रुपया दिये हैं। इस अनाथालयकी नींव महामना मालवीयजीके द्वारा डाली गई है। इसी प्रकार हर एक सार्वजनिक कार्योंमें आपके खानदानवालोंने उदारता पूर्वक अनेक दान दिये हैं। जबलपुर म्युनिसिपेल्टीने राजा गोकुलदासजीके स्मारकके लिये जबलपुर स्टेशन के पास ही एक बहुत अच्छी धर्मशालाका निर्माण कराया है। इस धर्मशालाके सामने दीवान बहादुर जीवनदासजीने अपने पिता और माताकी पाषाण मूर्त्तियां स्थापित की हैं।

आपके यहां प्रधानतया जिमींदारीका काम है। मध्य प्रान्तमें आपके सैकड़ों गांव हैं और हजारों एकड़ जमीनमें आपकी घर खेती होती है। आपके किसानोंकी संख्या भी हजारों है और इन किसानोंके साथ आपके खानदानका अन्य जिमींदारोंके सदृश व्यवहार न होकर यथार्थमें जैसा व्यवहार जिमींदार और किसानमें होना चाहिये वैसा ही होता है जिसका प्रमाण यह है कि समय समय पर आपने लगभग १५ लाख रुपया अपने ऋणका इन किसानोंपर छोड़ा है।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) राजा गोकुलदास जीवनदास गोविन्ददास जबलपुर—यहां आपका हेड आफिस है—

(२) राजा गोकुलदास जीवनदास जबलपुर—इस फर्मके ताल्लुक जमींदारीका कुछ काम है

(३) सेठ सेवाराम जीवनदास जबलपुर—इस फर्मके ताल्लुक आपके जबलपुरके बंगले व मकानों के किरायेका काम होता है।

(४) सेठ सेवाराम गोविन्ददास मिलौनीगंज, जबलपुर—यहां गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।

राजा गोकुलदास धर्मशाला जबलपुर

सौ० पार्वतीबाई धर्मशाला खण्डवा
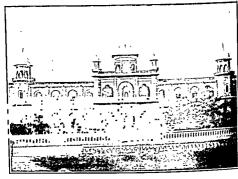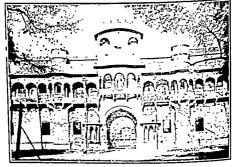
हीरे और जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल रायचन्द जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अमृतलाल भाई हैं। आप ओसवाल जातिके श्वे० जैन सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर (गुजरात) है। आपकी फर्मको बम्बईमें व्यवसाय करते करीब २५ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई। आपके पिता सेठ रायचन्द भाईका देहावसान हुए करीब ३५ वर्ष हुए।

सेठ अमृतलाल भाई स्थानकवासी ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवम् आगेवान सज्जन हैं। आप जैन स्थानक वासी संघके ट्रस्टी हैं, तथा सार्वजनिक घाटकोपर जीव-दया-फण्डके ट्रस्टी एवम् ट्रेजरर हैं। आप स्थानकवासी जैन रत्न चिन्तामणी मण्डलके प्रेसिडेण्ट हैं।

इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—अमृतलाल रायचन्द जवेरी जवेरीबाजार, इस फर्मपर हीरा, मोती, पन्ना तथा सब प्रकारके जवाहरातका काम होता है। खास व्यवसाय हीरे, पन्ने तथा मोतीका है आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी

इस फर्मके मालिक पालनपुर(गुजरात)के निवासी हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ अमूलख भाई खूबचन्दने ८० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। बम्बईके जौहरी समाजमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है सेठ अमूलख भाई पालनपुरके जौहरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके स्मारकमें आपके कुटुम्बियों एवं आपके सम्बन्धियोंकी ओरसे एक स्मारक भवन खड़ा किया गया है। आपका देहावसान सम्वत् १९६६की पौष सुदी १४ को हुआ।

वर्तमानमें सेठ अमूलख भाईके पुत्र सेठ केशवलालजी सोभागमल जी, जेसगलालजी और कान्तिलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द धनजीस्ट्रीट—T.A.Activa इस फर्मपर हीरा,पन्ना मोती, माणिक तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है। और विलायतसे हीरा इम्पोर्ट होता है।

(२) करांची—मार्फत मेसर्स एल्फिंस्टनस्ट्रीट-यहां हीरेका व्यापार होता है।

मेनमर्चेण्ट्स,

(मेनमर्चेण्ट्स एसोसिएशनकी लिस्टसे)

मेसर्स अब्दुल अजीज हाजी तैय्यब
,, अमरसी हरीदास
,, आनन्दजी प्रागजी
,, इबराहिम आमद
,, उमेदचंद काशीराम
,, ऑकारमल मिश्रीलाल
,, कालीदास नारायणजी
,, काराभाई रामजी
,, किलाचन्द देवचन्द
,, केसरीमल रतनचन्द
,, केशवजी देवजी
,, खरसेदजी अरदेसरजीदीवेचा एण्ड ब्रादर्स
,, खटाऊ शिवजी
,, खीमजी धनजी,
,, खीमजी लखमीदास
,, खेराज मणसी
,, गंगुभाई डूंगरसी
,, गुरुमुखराय सुखनन्द
,, गोकुलदास मुरारजी
,, गोपालदास परमेश्वरीदास
,, गोविन्दजी मारमल
,, गोपीराम रामचन्द्र
,, गोरधनदास भीमजी
,, गोरधनदास वल्लभदास
,, गंगाराम धारसी
,, घनश्यामलाल एण्ड को०
,, घेलाभाई हंसराज
,, घनाभाई वीरजी
,, चांपसी मारा
,, चुन्नीलाल रामरतन,

मेसर्स चुन्नीलाल अमथालाल
,, चुन्नीलाल अमरजी
,, चन्दूलाल हीराचन्द
,, चन्दूलाल रामेश्वरदास
,, छोटालाल किलाचन्द
,, जमनादास प्रभुदास
,, जमनादास अरजन
,, जयन्तीलाल मूलचन्द
,, जैराम परमानन्द
,, जैराम लालजी
,, जेठाभाई देवजी
,, जेराम हरिदास
,, जवेरचंद देवसी
,, टोकरसीभवानजी
,, डूंगरसी प्रागजी
,, डूंगरसीवीरजी
,, डूंगरसी पेखजी
,, डूंगरसी एण्ड सन्स
,, तार्या रावजी
,, त्रीकमदास रतनसी
,, त्रिभुवनदास बापूभाई
,, दयालदास छबीलदास
,, देवसीकुरपाल
,, धनजी देवसी
,, धारसीनानजी
,, नवीनचंद सरूपचन्द
,, नवीनचन्द्र.दामजी
,, नंदराम नारायणदास
,, नथूभाई कुँवरजी
,, नथूभाई नानजी
,, नारायणजी नरसी

बाबू दौलतचन्द अमीचन्द जौहरी, बम्बई

बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी, बम्बई

बाबू सिताबचन्द अमीचन्द जौहरी, बम्बई

अमीचन्द बाबू पन्नालाल जौहरी, बम्बई
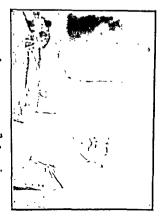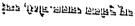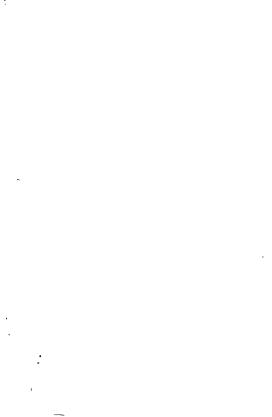
मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल जवेरी

मिस्टर गफूर भाईको हीरा तथा मोतीका व्यापार करते हुए करीब १८ वर्ष हुए। आपका खास निवास पालनपुर है। आप जैन सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल संडहर्स्ट रोड प्रार्थना समाजके पास क्लिफर्ड मंजिल, आपके यहां हीरा तथा मोतीका व्यापार होता है।

२ बम्बई—चिमनलाल वीरचंद जौहरी बाजार, इस स्थानपर मोतीका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स डाह्यालाल मकनजी जवेरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्यालाल मकनजी भाई तथा सेठ अमृतलाल भाई प्राणजीवनदास हैं। आप श्रीमाल जातिके वैष्णव धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है।

इस फर्मकी स्थापना संवत् १९६० में सेठ डाह्यालाल भाईने की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की भी हुई। श्रीयुत अमृतलाल भाई इसके पार्टनर हैं। आप श्रीयुत डाह्या भाईके भतीजे हैं।

इस फर्मको मोरवी, ध्रांगधरा, राजपीपला और देवगढ़ बारिया आदि स्टेटोंने अपाईण्टमेण्ट दिया है।

श्रीयुत डाह्यालाल भाई दी डायमण्ड मरचेंट्स एसोसिएशनके वाईस प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप इंडियन मरचेंट्स एसोसिएशनकी मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपको कई अच्छे २ स्थानोंसे सार्टिफिकेट मिले हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ बम्बई—मेसर्स डाह्यालाल मकनजी शेखमेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर हीरे तथा अन्य प्रकारके जवाहिरातका काम होता है। यहां जवाहिरातके दागिने भी बनाये जाते हैं।

मेसर्स नगीनदास लल्लुभाई एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्याभाई नगीनदास, ठाकुरचन्द नगीनदास; त्रिकमचन्द डाह्याभाई, और कीर्तिलाल डाह्याभाई हैं। आप वीसा ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर है।

जवाहिरातका व्यापार

भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार और उपयोग बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। कालिदास इत्यादि कवियोंके काव्योंमें भी इन जवाहिरातोंका वर्णन पाया जाता है। जिस समय यह देश सौभाग्यके शिखरपर मण्डित था उस समय यहांके समृद्धिशाली लोग अपने महलोंके चौक जवाहिरातोंसे जड़ाते थे। यहांके पुराण-साहित्यमें कौस्तुभमणि (हीरा) सूर्य्यमणि (माणिक) चन्द्रमणि (पुखराज) मरकतमणि (पन्ना) इत्यादि नव प्रकारके रत्नोंका वर्णन प्रचुरतासे पाया जाता है। पहले यहांके व्यापारी विदेशोंसे भी जवाहिरातका लेनदेन करते थे, ऐसा कई प्रमाणोंसे ज्ञात होता है।

मुगल कालीन भारतवर्षमें जवाहिरातोंका बहुत प्रचुरतासे उपयोग होता था। मुगल सम्राटोंके महलोंकी सौभाग्यशालिनी रमणियां इन जवाहिरातोंसे बनेहुए जेवरोंको बड़े चावसे धारण करती थीं। शाहजहां बादशाहके मुकुटका कोहिनूर हीरा जगत् प्रसिद्ध है, जो कई स्थानोंपर घूमता हुआ अब भारतसम्राटके मुकुटकी शोभा बढ़ारहा है।

इस समय भी भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार प्रचुरतासे होता है। पर रुई और जूटके व्यापार ही की तरह यह व्यापार भी विदेशाश्रित हो गया है।

इस समय भारतवर्षमें जितने जवाहिरातके बाजार हैं बम्बईका उनमें सबसे पहला नम्बर है। इस शहरमें इस कार्य्यके करनेवाले सैकड़ों बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी निवास करते हैं, जो लाखों रुपयोंका व्यवसाय करते रहते हैं। बाजारके टाइमपर सैकड़ों व्यापारी अपनी सूक्ष्म दृष्टिसे जवाहिरातकी परीक्षा करते हुए दिखलाई देते हैं। इनकी इसी सूक्ष्म दृष्टिपर हजारों रुपयेके वारे न्यारे होजाते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो जवाहिरातका व्यापार दृष्टि व नजरका व्यापार है। इस व्यवसायके अन्दर वही व्यापारी विजयी और सफल हो सकता है जिसकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और मालको परखनेवाली हो। क्योंकि यह व्यापार इतना चपल और चक्करदार है कि कभी २ बड़े २ सूक्ष्मदृष्टि अनुभवी और तीक्ष्ण बुद्धिवाले भी इसमें गोता खा जाते हैं। बात यह है कि सोना चांदी या दूसरी वस्तुओंकी परीक्षाके जैसे निश्चित तरीके हैं वैसा कोई निश्चित तरीका जवाहि-

बाबू पूर्णचन्द्र पन्नालाल जौहरी

इस प्रतिष्ठित एवं पुराने जौहरी वंशमें प्रख्यात पुरुष श्रीमान् बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी० हुए हैं। आपका जन्म संवत् १८८५ की कार्तिक वदी ६ को काशीमें हुआ था। आपका आदि निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। आप जैन वीशा श्रीमाली वाणिया सज्जन हैं।

आपका प्रारंभिक जीवन कलकत्तेमें व्यतीत हुआ था, एवं हिन्दी अंग्रेजी भाषाओंका ज्ञान भी आपने वहीं प्राप्त किया था। आपके पिता श्री सेठ पूर्णचन्द्रजी तथा आपके नाना स्वयं जौहरी थे; परंतु पराई दृष्टिके नीचे शिक्षा अच्छी मिलती है इसी सिद्धान्तको ध्यानमें रखकर आपके पिताश्रीने आपको कलकत्तेमें प्रसिद्ध जौहरी बाबू बलदेवदासजीके पास जवाहरातकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये रक्खा था।

आपके जीवनका करीब आधा हिस्सा कलकत्तेकी ओर हुआ इसीसे गुजराती सज्जन होते हुए भी आप बाबूके नामसे विशेष सम्बोधित किये जाते थे।

आपके पिताश्रीका संवत् १९०६ में देहावसान हुआ। तबसे आपने साहसके साथ व्यापारमें भाग लेना प्रारंभ कर दिया।

उस समय बर्मामें बहुत थोड़े मूल्यमें अमूल्य जवाहरात मिलता था बाबू पन्नालालजी तीन गृहस्थोंके साथ संवत् १९११।१२ में दरियाके रास्तेसे बर्मा गये, तथा वहांसे रंगून और रूबी माईसकी भी यात्रा आपने की। इस सात मासके सफरमें आपने बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जित की। इसी मुसाफिरीमें आपने बर्माके महाराज "थीबो" से भी मुलाकात की थी। इस प्रकार संवत १९२१ तक आप कलकत्ता, लखनऊ, कानपुर आदि शहरोंमें व्यापार करते रहे और बाद १९२२ में बम्बई आये। तबसे आपका खानदान एक प्रसिद्ध जौहरी कुटुम्बकी तरह बम्बईमें निवास कर रहा है।

बाबू पन्नालालजीने जोधपुर, जयपुर, अलवर, इन्दौर, हैदराबाद त्रावनकोर, भावनगर, जम्बू; (काश्मीर) विजय नगर, उदयपुर, जूनागढ़, झालरापाटन, डुंगरपुर, भोपाल, पटियाला, कच्छ, वड़वाण, पालीताना, व नेपाल आदि नरेशोंको जवाहरात बेंचकर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की थी।

केवल भारतीय नरेशोंके साथ ही नहीं। वरन् कई यूरोपीय बड़े २ पुरुष, जैसे लार्ड रिपन, एशियाके जार्ज निकोलस, जर्मनीके प्रसिद्ध केसर विलियम,ड्यूक ऑफ कनॉट, आष्ट्रेलियाके एम्परर लार्ड लेंसडाऊन,लार्ड एल्गिन आदि पाश्चात्य राजवंशियोंके साथभी आपका सहयोग हुआ था, तथा इन लोगोंने प्रसन्न होकर समय समयपर आपको प्रशंसा पत्र भी दिये थे। उस समयके प्रिंस ऑफ वेल्स (भावीएडवर्ड) के पास भी आपने अपने जवाहिरात भेजे थे एवं आप स्वयंभी भारतमें इनसे मिले थे।

होता है। यह मोती उत्कृष्ट श्रेणीका समझा जाता है। इसके सिवाय परशियन गल्फमें से आनेवाला अरबियन मोती भी बहुत अच्छा समझा जाता है। मस्कतसे निकलनेवाला मोती भी ठेठ होता है इन मोतियोंको सीलीदाणा कहते हैं। इन मोतियोंके अतिरिक्त अफ्रिकाके "नीनीसारी" जातिके, चीन समुद्रके "मगज" जातिके, सीलोनके "उडन" जातिके, आस्ट्रेलियाके "टाल" जातिके, और बम्बई नगरके किनारेके गामशाई जातिके मोती भी बाजारमें बिकते हैं, मगर ये सब उपरोक्त जातियोंसे हल्के होते हैं।

जो मोती जितना ही सफेद, गुलाबी झाईवाला, गोल, बड़ा और अधिक वजनवाला होता है, वह उतना ही कीमती समझा जाता है। इसके अतिरिक्त मोतीके छिद्रसे भी उसकी बहुमूल्यताका बहुत सम्बन्ध है। जिस मोतीका छिद्र छोटा होगा वह मोती ज्यादा कीमती होगा। बड़े छिद्रवाला मोती यदि आबदार और गोल भी हुआ, तो भी उसकी कीमत बारीक छिद्रवाले मोतीसे कम हो जायगी। मोतीका आब बढ़ानेके लिये तथा उसका छिद्र छोटा करनेके लिए अनुभवी लोग कई तरहके प्रयोग करते हैं। आब बढ़ानेके लिए उन्हें एसिडकी बोतलोंमें रक्खा जाता है, और छिद्र छोटा करनेके लिए उनमें एक ऐसा पदार्थ भर दिया जाता है जिससे उनका छिद्र भी छोटा हो जाय और उनका वजन भी बढ़ जाय। मोतीको सुधारनेकी और भी कई तरकीबें हैं जिनके बदौलत बांके टेढ़े और कम आबवाले मोतीको भी सुधारकर अनुभवी लोग उसे बढ़िया बना लेते हैं।

उपरोक्त रत्नोंके सिवाय नीलम, पुखराज; गोमेधक, लहसुनिया, ओपाल राजावर्त, पीरोजा, सुलेमानी, गउदन्ती, चकमक इत्यादि कई प्रकारके नग तथा मोतीका चूरा और इमीटेशन नग इत्यादि वस्तुओंका व्यापार भी बम्बईके बाजारमें चलता है। कुछ दिनोंसे माणिककी भी एक नई जाति बाजारमें चालू हुई है। इसका रंग और इसकी लाली कभी २ तो ऐसी देखनेमें आती है कि असल माणिक भी उसके आगे फीका नजर आने लगता है। इसकी कीमत भी असली माणिकसे बहुत सस्ती होती है। अर्थात् एक रुपया रत्तीसे लेकर चार पांच रुपया रत्ती तक यह बिकता है। आजकल बम्बईमें इन नगोंका प्रचार बड़े जोरोंसे हो रहा है।

उपरोक्त रत्नोंका तोल अधिकांशमें रत्तीसे ही होता है, जौहरी लोग आपसमें कैरेटके हिसाबसे लेन देन करते हैं। ये सब तोल यहांके धर्म कांटेपर होता है। इन सब रत्नोंपर भिन्न २ प्रकारके प्रमाणसे बट्टाव भी मिलता है। जवाहिरात सम्बन्धी झगड़ोंको निपटानेके लिए "दी डायमण्ड-मरचेण्ट्स एसोसियेशन" नामक मण्डल बना हुआ है। जवाहिरातका व्यापार जौहरी बाजार, मोती बाजार और धारा कुआपर होता है, कुछ दुकानें फोर्टमें भी है।

इस प्रकारके कार्य्यमें मालको जाननेवाले, समझनेवाले, और बाजारके अनुभवी आदमीकी सलाह या सहायता लेनेसे किसी प्रकारकी ठगीका डर नहीं रहता है।

सेठ नाथालाल भाई (नाथालाल गिरधरलाल) बम्बई

सेठ माणिकलाल नरोत्तमदास जौहरी, बम्बई

सेठ अमृतलाल रायचन्द भाई जौहरी, बम्बई

सेठ अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी, बम्बई

सेठ डायालाल मा[illegible] जौहरी, बम्बई

सेठ नगीनदास लल्लू भाई जौहरी, बम्बई

अच्छा संबंध है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर बैङ्किंग, सोना, चांदी तथा शेअर्सका बिजिनेस भी होता है।

मेसर्स परमानंद कुंवरजी जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीपरमानंद भाई बी० ए० एल० एल० बी० हैं। आप जैन बीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान भावनगर (काठियावाड़) है। इस फर्मका स्थापन परमानंद भाईने करीब ६ वर्ष पूर्व किया था। सेठ परमानंद भाई डायमंड मरचेंट्स एसोसियेशनकी मेनेजिंग कमेटीके सभ्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स परमानंद कुंवरजी जौहरी, जौहरी बाजार, T, A, Kalpataru—इस फर्मपर हीरा, पन्ना तथा प्रेशस स्टोनका व्यापार होता है। खासकर आप हीरेका व्यापार करते हैं। आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

(२) भावनगर—आनंदजी पुरुषोत्तम—यहां कपड़ेकी थोक बिक्रीका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स पुन्नीलाल कुंवरजी चौक T, A, Kalabattu—यहां पक्के कलाबत्तूका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स पुन्नीलाल कुंवरजी, गुलालवाड़ी—यहां कलाबत्तूका व्यापार होता है।

मेसर्स भोगीलाल लहरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद उमयचन्द व भोगीलाल लहरचंद हैं। सेठ लहरचंद भाई करीब ५०वर्षोंसे हीरेका व्यवसाय करते हैं। आप जैन बीसा श्रीमाल सज्जन हैं आपका मूल निवासस्थान पाटन (गुजरात) है। इस फर्मकी तरक्की सेठ लहरचंद भाईके हाथोंसे हुई।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स भोगीलाल लहरचंद चौकसी बाजार बम्बई। T. A. Shashikant.—इस फर्मपर हीरा, पन्ना, मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है तथा विलायतसे डायरेक्ट जवाहिरातका इम्पोर्ट होता है।

(२) बाटली बाई कम्पनी फोर्ट—इस फर्मपर मिल, जीन, एवं एग्रीकलचर (खेतीवारी) सम्बंधी मशीनरीका बहुत बड़ा व्यापार व्यापार होता है।

मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू अमीचंदजीके पुत्र बाबू शेठानंदजी और बाबू शिवचंदजी हैं। आप जैन बीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास पाटन (गुजरात) है।

इस फर्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पूर्व बाबू पन्नालालजीके पुत्र बाबू अमीचंदजीने किया था। बाबू अमीचंदजीकी धार्मिक कार्योंकी ओर अच्छी रुचि थी। आपने वालकेश्वरपर तीन बत्तीके पास श्री आदिश्वर भगवानका एक सुन्दर जैन मंदिर बनवाया है। आप निजाम साहबके खास जौहरी थे। निजाम साहबके साथ जवाहिरात बेचनेका सम्बन्ध आपके कुटुम्बने आपहीने स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त आपने ग्वालियर, पटियाला, ट्रावनकोर, उदयपुर, रामपुर आदि नरेशोंको भी अच्छा जवाहरात बेचा था। आपका देहावसान ७८ वर्षकी आयुमें सम्वत् १९८४ में हुआ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी, वालकेश्वर तीन बत्ती, यहां हीरा तथा सब प्रकारके जवाहिरातोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैङ्किंग और शेअरका व्यापार होता है।

बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी

बाबू पन्नालालजी जौहरीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९०५ में कलकत्ते हुआ था। अल्प वयमें ही आपके पिताजीने आपको २ लाख रुपये देकर अलग कर दिया था आपने अपनी व्यापार एवं व्यवहार कुशलतासे बहुत सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपने पटियाला भावनगर आदि रजवाड़ोंमें अच्छा जवाहिरात बेंचकर द्रव्य संचय किया था। आपका देहावसान संवत् १९५९ की ज्येष्ठ सुदी १५ को हुआ। मरहूम बाबू साहबके स्मरणार्थ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भीखीबाईने करीब १० जैन ग्रंथोंका प्रकाशन कर जैन जगतमें अच्छा ज्ञान प्रचार किया है बाबू अमीचंदजीने अपनी मातु श्री रतनबाईके स्मरणार्थ एक उपाश्रय, अपने अल्पवयमें स्वर्गवासी हुए पुत्र माणकलालके नामपर राधनपुरमें एक ज्ञान मंदिर, और रणुंजमें एक उपाश्रय बनवाया है इस समय इस फर्मके मालिक बाबू रतनलालजी चुन्नीलालजी जौहरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

बम्बई—बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी, वालकेश्वर तीन बत्तीके पास—यहां हीरा मोती तथा सब प्रकारके जवाहरातोंका व्यापार होता है।

कीर्तिलाल मनीलाल (सूरजमल लल्लूभाई) बम्बई

सेठ हेमचन्द मोहनलाल जौहरी बम्बई

ठ मोहनलाल हेमचन्द (चिमनलाल मोहनलाल) बम्बई

सेठ चिमनलाल भाई (चिमनलाल मोहनलाल) बंबई

मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी

इस फर्मको २५ पूर्व सेठ चिमनलाल भाईने स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान अहमदाबाद है। आप जैन सज्जन हैं।

सेठ मोहनलाल हेमचंद भाईकी उम्र इस समय ६० वर्ष की है। सेठ मोहनलालजीके ७ पुत्र हैं जिनमें सेठ मगीभाई और सेठ चिमनभाई व्यापारमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनलालभाई सेठ भाईचंदभाई, तथा सेठ नवलचंद भाई हैं। सेठ नवलचंदभाई तथा सेठ भाईचंद भाईका मूल निवास सूरत है। आप इस फर्ममें पाटनर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी शेखमेमनस्ट्रीट-जवेरी बाजार T. A. Droph यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त हीरा, पन्ना का व्यापार भी होता है।

आपका व्यापारिक सम्बन्ध पेरिससे भी है। वहांके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स रोजन थालके साथ यह फर्म मोतीका व्यापार करती है।

मेसर्स नगीनचंद कपूरचंद जवेरी

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी वीसा ओसवाल जातिके श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ नगीनचंद कपूरचंदने करीब ६२ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपने सूरतमें एक जीवदया संस्था स्थापित की थी। उसमें इस समय करीब १॥ लाख रुपया जमा है। इसके व्याजसे जीव रक्षाका कार्य होता है। इसके अतिरिक्त आपने श्रीशांतिनाथजीके मन्दिरमें २५०००) का एक मुकुट अर्पण किया है। इस समय आपका बहुत बड़ा कुटुम्ब है। आपके ६ पुत्र हैं, सबसे बड़े श्रीफकीरचचंद नगीनचन्द हैं। आप जीवदयाका कार्य संचालन करते हैं। आपके भाई सेठ गुलाब-चन्द नगीनचन्द जौहरी महाजन धर्मकांटेके प्रमुख हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१)—मेसर्स नगीनचन्द कपूरचंद जौहरी, मम्बादेवीके सामने जौहरी बाजार—T. A monner यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त सब तरहके जवाहरातोंका काम भी होता है।

(२) सूरत—नगीनचंद कपूरचंद, गोपीपुरा सूरत—T. A. Naginchand यहां मोती तथा जवाहिरातका व्यापार होता है।

इस फर्मके मूल स्थापक सेठ नगीनदास लल्लूभाई हैं। आपकी फर्मपर १७ वर्षसे हीरे
होता चला आया है। आपका स्वर्गवास हुए करीब ७ वर्ष हुए।

सेठ नगीनदास भाईके २ पुत्र हैं (१) सेठ [illegible] भाई (२) सेठ लहरचन्दजी, धेघु
चन्द जी डायमण्ड मर्चेण्ट्स् एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप पालनपुर
मण्डलके भी प्रेसिडेंट हैं। पालनपुर नगर सादरके आप नामी जौहरी हैं। यहां जौहरी स
आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) बम्बई मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई एण्ड सन्स धनजीस्ट्रीट T.A Pendent इस फर्मपर
व्यापार हीरा पन्ना तथा जवाहरातका होता है। यहां थोक और फुटकर दोनों तरहसे हो
बेचा जाता है।

(२) पालनपुर (गुजरात) मेसर्स नगीनदास लल्लू भाई ज्वेलर्स। इस फर्मपर भी हीरेका व्यापार
होता है।

(३) रङ्गून मेसर्स नाथा भाई डाह्याभाई एण्ड को० ज्वेलर्स T. A. Honesty इस फर्मपर भी हीरे
तथा दूसरी प्रकारके जवाहरातका काम होता है।

(४) एण्टवर्प (बेल्जियम) मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई T. A. Dahyabhai यहांपर भी आपकी
दुकान है एवम् यहांसे डायरेक्ट हीरा आपके यहां आता है।

इस फर्मकी ओरसे देशी राजाओंमें बहुत जवाहिरात जाता है। आपके ट्रेवलिंग एजंट
मिस्टर एम० डब्ल्यू एडवानी राजघरानोंमें घूमते रहते हैं।

मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्त्तमान संचालक सेठ नाथालाल भाई तथा गिरधरलाल जी हैं। आप दोनों पार्टनर
हैं। इस फर्मके तीसरे भागीदार श्री रतनचन्द जीका देहावसान हो गया है।

इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३० वर्ष हो गये हैं। सेठ नाथालाल भाईका मूल निवास
खंभात है। आप पाटीदार सज्जन हैं। सेठ गिरिधरलाल जी पहिली वार १९००में एवं दूसरी वार
१९२४में व्यापारके लिये विलायत जाकर आये हैं। वहांसे आपने अच्छी सम्पति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी कसाराचाल इस फर्मपर हीरा पन्ना-
माणिक, आदि सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है।

श्री नाथालाल भाईके भतीजे माणिकलाल भाई भी माणिक पन्ना और नीलमका व्यापार
करते हैं।

सेठ नगीनभाई मंछुभाई जौहरी, बम्बई

स्व॰ सेठ माणकचन्द पानाचन्द, बम्बई

[illegible] जौहरी, बम्बई

स्व॰ बाड़ीलालजी (हीरालाल बाड़ीलाल) बम्बई

स्व० बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी०

बाबू जीवनलाल पन्नालाल जौहरी जे० पी० (पूर्णचन्द्र पन्नाला

... भगवानदास पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बाबू मोहनलाल पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

आपकी ओरसे हीराचंद गुमानजी बोर्डिंग हाउस चल रहा है उसमें करीब ८० हजार रुपये आपने दिये हैं। आपने ४० हजार रुपयोंकी लागतसे अहमदाबादमें सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस स्थापित किया तथा कोल्हापुरमें २२ हजार रुपयोंकी लागतसे दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया, सूरतमें दस हजार रुपयोंकी लागतसे एक चन्दावाड़ी धर्मशाला बनवाई, सम्मेदशिखर-रक्षा फण्डमें आपने करीब १० हजार रुपये दिये व आपने अपनी जिन्दगीके बीमेके दस हजार रुपये कोल्हापुर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके नाम तबदील कर दिये। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें करीब ५ लाख रुपयोंका दान किया है।

आपने चौपाटीपर रत्नाकर राज भवन नामक इमारत बनवाई तथा उसमें श्रीचन्द्राप्रभु स्वामीका सुन्दर चैत्यालय बनवाया।

बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके स्थापन कर्ता आपही थे तथा सर्व प्रथम उसके सभापतिका आसन आपहीने सुशोभित किया था। भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीके आप महामंत्री थे। सम्मेद शिखरजीपर भा० दि० जैन महासभाके आप स्थायी सभापति नियत किये गये थे। सहारनपुरकी भा० दि० जैन महासभाके सभापति भी आप रह चुके हैं। आपहीने लाहौरमें दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउसको स्थापित किया था।

आपकी सेवाओं और गुणोंसे प्रसन्न होकर बम्बई सरकारने आपको सन् १९०६ में जे० पी० (जस्टिस आफ दी पीस) की पदवीसे सुशोभित किया था। इसके अतिरिक्त दक्षिण महाराष्ट्रीय जैन सभाने दानवीर, एवं भा० दि० जैन महासभाने आपको जैन कुल भूषण, आदि पदवियोंसे सम्मानित किया था। आपने अपने जीवनमें ही अपनी प्रापर्टीका ट्रस्ट किया है जिसका नाम जुबिली बाग ट्रस्ट फण्ड है, इस ट्रस्ट की सब सम्पति धर्मादेमें दीगई जिसकी मासिक आय करीब २ हजारके है। इसकी सुव्यवस्थाका सब भार ट्रस्टके अधीन है।

इस समय इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीचंदजीके पौत्र श्रीरतनचंदजी, सेठ पानाचंदजीकेपुत्र श्री ठाकुरदासजी। सेठ माणिकचंदजीके पुत्र श्री चिमनलालजी एवं सेठ नवलचंदजीके पुत्र श्रीताराचंदजी हैं। इस समय सारे कुटुम्बमें श्रीताराचंदजी ही प्रधान रूपसे कार्य करते हैं। आप शिक्षित एवं सादगी प्रिय सज्जन हैं। आपकी विधवा बहिन सेठ माणिकचंदजीकी पुत्री मगन बेनके नामसे एक विधवाश्रम चल रहा है। इसके अतिरिक्त आपने १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी तयार करवाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स माणकचंद पानाचंद जवेरी मोती बाजार-बम्बई आरबीट—इस फर्मपर खास व्यापार मोतीका है तथा दूसरे प्रकारके जवाहरातका व्यापार भी होता है। विलायतको आपके द्वारा मोतीका एक्सपोर्ट होता है।

बाबू साहबने [illegible] आपके व्यापारकी [illegible] अधिक कार्य कर एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आप जैन श्वेताम्बर [illegible] थे। [illegible] बाबू साहबको जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था। जिस समय [illegible] तब बाबू साहबको सरकारने [illegible] सम्मानित किया था।

बाबू साहबकी धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि थी। [illegible] अन्य स्थानोंको सम्पत्ति दान की थी, [illegible] देहावसानके समय लिखे गये थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन व्यतीत करते आपका देहावसान संवत् १९५५ की कार्तिक बदी ८ के रोज ७० वर्षकी उम्रमें बम्बईमें हुआ था।

बाबू पन्नालालजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू चुन्नीलालजी, बाबू मनोचंदजी, बाबू जीवनलालजी, बाबू भगवानदासजी व बाबू मोहनलालजी हैं। इनमें बाबू चुन्नीलालजी तथा बाबू मनोचंदजीका देहावसान हो गया है।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू जीवनलालजी जे० पी०, बाबू भगवानदासजी एवं बाबू मोहनलालजी हैं।

बाबू जीवनलालजी भी [illegible] रखते हैं। बाबू पन्नालालजी द्वारा की गई पेढ़ीके आप प्रधान हुए हैं। तथा आप तीनों भाइयोंने इस पेढ़ीमें [illegible] सम्पत्ति और प्रदान की थी।

बाबू जीवनलालजी जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंसके प्रेसिडेंट रह चुके हैं। आपने मुनि महाराज श्रीमोहनलालजी द्वारा स्थापित की हुई जैन सेंट्रल लायब्रेरी [illegible] भी अच्छी सहायता दी है। इसके अतिरिक्त पाठशाला, धर्मशाला आदिमें भी आप ट्रस्टीके रूपमें काम करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे आप तीनों भाइयोंने मालवीयजीको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयको ८००००) अस्सी हजार रुपये आपकी मातुश्री श्रीपार्वती बाईके नामसे दिये हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात जल-प्रलयके समय भी आपने उसमें अच्छी सहायता प्रदान की थी। हकीम अजमलखांके तिब्बिया कालेज देहलीमें, और तिलक स्वराज फंड आदिमें भी आपने सहायता दी है।

इसी प्रकार बाबू जीवनलालजीके भाई बाबू मोहनलालजी भी हरेक धार्मिक, सार्वजनिक एवं जाति सम्बन्धी कामोंमें भाग लिया करते हैं। बाबू विजयकुमार भगवानलालजी भी फर्मके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स पूर्णचन्द्र बाबू पन्नालाल जौहरी निजाम बिल्डिंग कालबादेवी रोड T. A. Jewel store यहां हीरा पन्ना मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है। जवाहरातका आपके यहां

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी शेखमेमनस्ट्रीट बम्बई—इस फर्मपर सब प्रकारका चांदी व सोनाका सब दागीना, चांदीके बर्तन, मानपत्र, मेडिल्स, हीरा,मोती माणिक आदि जवाहरातके दागीने हर समय अच्छी तादादमें तैयार रहते हैं, तथा बाहरके आर्डर सप्लाई करनेमें बहुत सावधानी रक्खी जाती है।

(२) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी मुलाबचाल—यहां सब प्रकारका चांदीका दागीना मिलता है।

मोतीके मुलतानी व्यापारी

मेसर्स आसनमल लालचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगरटट्ट (सिंध) है। यह फर्म पहिले जागूमल आसनमल नामसे करीब ४० वर्षोंसे व्यापार करती थी,वर्तमानमें ३।४ वर्षोंसे इस फर्मपर इस नामसे व्यापार होता है।

इस फर्मको सेठ जागूमलजी व आपके भानजे आसनमलजीने तरक्की दी। सेठ जागूमलजीका देहावसान १९७०में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र सेठ आसनमलजी, जेठानंदजी तथा श्रीयुत सेठ जागूमलजीके पुत्र सेठ धमनमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स आसनमल लालचंद बारभाई मोहल्ला नं०३ T.A.Fertile इस फर्मपर मोतीका व्यापार होता है, तथा कमीशनका काम भी यह फर्म करती है।

(२) छारगा (परशियन गल्फ) मेसर्स आसनमल लालचंद—यहां अनाजका व्यापार तथा मोतीका व्यापार होता है। यह फर्म यहां करीब १०० वर्षोंसे व्यापार कर रही है।

(३) दवई—(परशियन गल्फ) यहां कमीशनका व अनाजका काम होता है।

मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद रघुवंशी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगरटट्ट (सिंध) है आप रघुवंशी जातिके हैं। इस फर्मको सेठ गिरधारी दासजीने संवत १९८०में स्थापित किया, तथा वर्तमानमें इसके मालिक सेठ गिरिधारीदास जेठानंद तथा आपके छोटे भाई सेठ नारायणदास जेठानंद हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) नगरटट्ट—(सिंध) मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद T.A. Ragoowansi यहां इसफर्मका हेड आफिस है तथा इसफर्मके यहां राइस और फ्लावरमिल भी है।

हीरालाल हेमराज (३) जेसिंगलाल केशवलाल और (४) मोतिलाल मनीलाल। मैनूरमल लल्लूभाई व्यवसायदक्ष व्यक्ति हैं।

आपका बम्बईका निवास स्थान डायमण्ड हाउस वरल्ला गंड्रोरोड है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई--मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई जौहरी कालबादेवीरोड —इस फर्मपर हीरा तथा सब प्रकारके आर्टिफल्सका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हेमचन्द मोहनलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक पाटन (गुजरात) के निवासी जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म २२ वर्षोंसे बम्बईमें हीरेका व्यवसाय कर रही है, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हेमचन्द्र भाई, सेठ भोगीलाल भाई, सेठ मणिलाल भाई एवं सेठ चन्दुलाल भाई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हेमचंद मोहनलाल जौहरी, धनजीस्ट्रीट। यहां हीरे और पन्नेका थोक व्यापार होता है। यह फर्म विलायतसे डायरेक्ट माल मंगाती है। यहां सिर्फ व्यापारियोंके साथही व्यवसाय होता है।

(२) एण्टवर्प (बेलजियम)—मेसर्स हेमचन्द्र मोहनलाल-इस-फर्मके द्वारा भारतके लिये हीरा खरीद कर भेजा जाता है।

मोतीके व्यापारी—

कल्यानचन्द घेलाभाई

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन हैं। इस फर्मको यहां करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कस्तूरचन्दजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ प्रेमचन्दजीव केसरीचन्दजी हैं।

आपने बम्बईमें महावीर स्वामीकी प्रतिष्ठामें करीब १० हजार रुपया खर्च किया तथा पालीताणाके ब्रह्मचर्याश्रममें भी आपने १०हजार रुपया दिया। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स कल्यानचन्द घेलाभाई जौहरी बाजार—यहां मोतीका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा पेरिस मोती भेजे जाते हैं।

स्व० सेठ लक्ष्मीदास देवचन्द जौहरी बम्बई

सेठ दामोदर हेमनदास जौहरी बम्बई

नामपर एक अस्पताल स्थापित किया है जो अभीतक म्युनिसिपैलिटीकी स्वाधीनतामें भली प्रकार चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स लखमीदास टेकचन्द जौहरी बारभाईमोहल्ला-इस फर्मपर मोतीका बिजिनेस होता है तथा विलायत भी मोतीका एक्सपोर्ट यह फर्म करती है इसके अतिरिक्त कमीशनका काम भी आपके यहां होता है।

मेसर्स लल्लूमल नाथामल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगर ठठ्ठ (सिंध) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ किशनदासजी हैं। आप भाटिया (वैष्णव-पुष्टिमार्गीय) सज्जन हैं। यह फर्म यहां संवत् १९८४ में स्थापित हुई।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स लल्लूमल नाथामल मस्जिद बंदररोड (हेड ऑफिस) यहां कमीशन एजंसी तथा मोतीका व्यापार होता है।

(२) बैरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (Γ.a. krishna) यहां कमीशन एजन्सी अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

(३) दुबई (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (T.A. Kisani) —यहां भी कमीशन, अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

नगीनचंद मंच्छूभाई *

इस फर्मके मालिक सूरतके निवासी वीसा ओसवाल जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मंच्छू भाईने स्थापित किया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन सेठ नगीन भाईने ४० वर्षोंतक किया। आपका देहावसान संवत १९७७ में हो गया है।

सेठ नगीनचंद भाईने सूरतमें २५ हजारकी लागतसे एक साहित्य उद्धार फण्डकी स्थापना की है, जिसके द्वारा सस्ते मूल्यमें ग्रन्थ प्रकाशितकर ज्ञान प्रचार किया जाता है। तथा सूरतमें आपने २५ हजारकी लागतसे एक जैन श्वेताम्बर मंदिर बनवाया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भाईचंद नगीन भाई तथा सेठ पानाचंद चुन्नीलाल हैं। सेठ नगीन भाईके पुत्रोंने उनके स्मरणार्थ ३० हजारकी लागतसे सूरत लाइंसमें एक सेनेटोरियम बनवाया है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स नगीनभाई मंच्छूभाई शेख मेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर प्रधानतया मोतीका व्यापार होता है।

---

* इस फर्मका परिचय पृष्ट १९० में छपना चाहिये था। पर भूलसे रह जानेके कारण यहां दिया गया—प्रकाशक—

मेसर्स नेमचंद [illegible] एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप वीसा ओसवाल श्वेताम्बर जैन हैं। सेठ अमरचन्दजीके पिताजीके हाथोंसे इस फर्मका स्थापन हुआ था। सेठ अमरचन्दजीका देहावसान संवत् १९७१ में हुआ। इस समय इस फर्मके संचालक सेठ नेमचन्द अमरचन्द जी हैं। अभी १ मास पूर्व आपको गवर्नमेंटने जस्टिस ऑफ दी पीसकी पदवी दी है। आप मोतीके व्यापारियोंमें [illegible] हैं। इसके अतिरिक्त आप गुजराती [illegible] (मिश्र) स्कूल दृष्टी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नेमचन्द अमरचन्द जौहरी पुलिस [illegible] के सामने मोती बाजार, यहां खास मोतीका व्यापार होता है तथा हीरेका भी काम होता है। यह फर्म विलायत भी माल भेजती है।

मेसर्स माणकचंद पानाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास सूरत है। आप जैन वीसा हूमड़ जातिके सज्जन हैं। इस वंशमें प्रतिष्ठित व्यक्ति दानवीर जैन कुल भूषण सेठ माणिकचंदजी जैन जे० पी० हुए हैं। आपके पितामहका नाम सेठ गुमानजी व आपके पिताजीका नाम सेठ हीराचंदजी था। आपका जन्म मिती कार्तिक बदी १३ संवत् १९०८ में सूरतमें हुआ था। आप ५ भाई थे। सेठ मोतीचन्दजी, सेठ पानाचन्दजी, सेठ माणकचन्दजी, व सेठ नवलचंदजी।

सेठ माणिकचन्दजी प्रारंभमें बहुत साधारण स्थितिके व्यक्ति थे। प्रारम्भमें आपने केवल १५) मासिकपर सर्विस की थी। संवत् १९२० में आप अपने भाइयोंके साथ बम्बई आये, एवं १७ वर्षकी आयुसे भाइयोंके साथ मोतीका व्यापार आरंभ किया। संवत् १९२८ में आपने माणकचंद पानाचंदके नामकी फर्म स्थापित की। संवत् १९३४ से आपने यूरोपीय देशोंसे मोतीका व्यापार आरंभ किया तथा उससे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बम्बईमें बहुतसी स्थाई मिल्कियत स्थापित की।

व्यापारिक जीवनके साथ २ बाल्यकालहीसे आपकी धर्मकी ओर अधिक रुचि थी। ८ वर्षकी अवस्थासेही आप अपने पिताश्रीके साथ श्री जिनेश्वरजीकी पूजामें शरीक हुआ करते थे। आप अपने समयके एक मख्यात धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने कई तीर्थोंकी व्यवस्थामें बहुत सुधार किया। बम्बईमें आपकी ओरसे हीराबाग धर्मशाला नामक एक बहुत प्रसिद्ध धर्मशाला बनी हुई है। सैकड़ों यात्री रोज इस धर्मशालामें विश्राम पाते हैं इसका प्रबंध बहुत अच्छा है। बम्बईमें

चांदी सोनेके व्यापारी

BULLION-MERCHANTS

सोने और चांदीका व्यवसाय

सोना खाननेंसे निकलनेवाली धातु है। दूसरी धातुओंकी तरह यह खानोंमेंसे थोकबन्द नहीं निकलता, प्रत्युत् बिखरा २ बहुत ही थोड़ी तादादमें निकलता है। कहीं २ नदियोंकी बालूमें से भी सोनेके परमाणु निकलते हुए देखे जाते हैं।

दुनियाके अन्दर सबसे अधिक सोना दक्षिण अफ्रिकामें निकलता है। वहांका सोना होता भी बहुत बढ़िया हैं। उसके पश्चात् अमेरिकाके संयुक्त राज्य और अफ्रिकाका नम्बर है। भारतवर्ष में बहुत कम सोना निकलता है। दुनियाकी पैदावारकी अपेक्षा यहां ३ प्रतिशतसे भी कम सोना निकलता है। औसत दृष्टिसे यहां प्रति वर्षकी पैदावार छः लाख औंसके लगभग मानी जाती है। इस पैदावारका बहुत अधिक भाग अर्थात् करीब ६४ प्रतिशत तो अकेले मैसूर राज्यकी कोलर गोल्ड फील्ड नामक खदानसे निकलता है। इस खदानसे १९०५ में ६१६७५८ औंस सोना निकाला गया था। मगर उसके बादसे वहांकी तादाद कुछ कम हो गई है। सन् १९१६ में वहां कुल ५५४००० औंस सोना तैयार हुआ था। इन खानोंमें काम करनेके लिये मैसूर दरबारकी ओरसे कावेरी नदीके जलप्रपातसे बिजली तैयार की जाती है, और वहांसे खानोंमें बिजलीकी शक्ति भेजी जाती है। इस कारखानेका काम सन् १९०२ से प्रारम्भ हुआ है और तबसे इसकी बड़ी तरक्की हो गई है। इसकी वजहसे खानोंमें पड़नेवाला खर्च भी बहुत कम हो गया है।

मैसूरके पश्चात् भारतवर्षमें सोना निकालनेवाले प्रांतोंमें निजाम राज्यका नम्बर है। यहां लिंगसागर जिलेके हट्टी नामक स्थानमें सोनेकी खान है। सन् १९१६ में इस खानसे १७६०० औंस सोना निकला था।

खानोंको छोड़ नदियोंकी बालूको धोकर सोना निकालनेकी चाल भी भारतमें कई स्थानोंपर प्रचलित है। बिहारके सिंहभूम और मानभूमि जिलेमें सुवर्णरेखा और उसकी सहायक नदियोंकी बालू धोनेसे सोना निकलता है। सन् १९१५ सिंहभूमसे करीब ४५० और १९१६ में ८६५ औंस सोना निकाला गया था। बर्माको इरावदी नामक नदीकी बालूमें भी सोना पाया जाता है। सन् १९०२ में इस उद्योगके लिये बड़ी एक कम्पनी खड़ी की गई थी कुछ वर्षों तक इसकी खूब

मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक अहमदाबादके निवासी हैं। इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ भोगीलाल भाईने स्थापित किया था। आप ओसवाल जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अहमदाबाद—(हेडऑफिस) मेसर्स दौलतचंद जवेरचंद, डोसीवालानी पोल—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खास व्यापार मोतीका है एवं इसके अतिरिक्त हीरे तथा जवाहरातका काम भी होता है।

(३) बम्बई—चिमनलाल साराभाई जौहरी हार्नबीरोड नवाब बिल्डिंग—यहां हाजर रूईका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—चिमनलाल साराभाई मारवाड़ी बाजार, यहां रूईके वायदेका काम होता है।

(५) अहमदाबाद—चिमनलाल साराभाई डोसीवालानी पोल यहां रूईका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल

इस फर्मके मालिक पाटन (पालनपुर) के निवासी बीसा ओसवालजैन (साधु मार्गीय) हैं बम्बईमें इस फर्मको सेठ वाड़ीलाल भाईने ४०।४५ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका देहावसान संवत् १९७३में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ वाड़ीलाल भाईके भतीजे सेठ हीरालालजी हैं। सेठ वाड़ीलाल भाईने पालनपुरमें जीवनलाल त्रिभुवनदासके नामपर २८ हजार की लागतसे एक वाड़ो बनवाई है। सेठ हीरालालजीके पिता सेठ छोटालालजीने ५ हजारकी लागतसे पालनपुरमें एक लायब्रेरी बनवाई है, तथा फीमेल हास्पिटलमें सेठ सरूपचंद त्रिभुवन दासके नामसे १४ हजारकी सहायता दी है। आपका व्यापारिक :परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खासतौरसे मोतीका व्यापार होता है।

गोरडसिमथ

मेसर्स नरोत्तम भाउ जौहरी

इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पहिले सेठ नरोत्तम भाऊनेकी थी। आप सोनी जातिके भावनगर निवासी सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादास नरोत्तमदास हैं। आपको फर्मको मदराज भावनगरने अपाइंटमेंट किया है।

सेठ जगूमल टीकमदास (आसनमल लालचन्द) बम्बई

सेठ गिरधारीदास जेठानन्द बम्बई

सेठ [illegible] (गिरधारीदास जेठानन्द) बम्बई

सेठ नरोत्तम भाऊ जोशी

यह खानदान सिंध प्रांतमें बहुत मशहूर माना जाता है, तथा मुखीके नामसे विशेष प्रसिद्ध है। मुखी जेठानंदजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नर रह चुके हैं, आप बम्बई कौंसिलके भी ६ वर्षतक मेम्बर रहे हैं। बम्बईके सिंधी व्यापारियोंमें मुखी जेठानंदजीकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी स्थायी सम्पत्ति बाग बगीचा वगैरः करांची, हैदराबाद, सक्खर, फिरोजपुर नवाबशाह जिला आदि स्थानोंपर अच्छी तादादमें हैं। मुखी प्रीतमदासजीके नामसे प्रीतमाबाद नामका एक गांव नबाबशाह जिलामें बसा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद(सिंध)—मेसर्स चांडूमल वलीराम (T,A. Bulion)यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स चांडूमल वलीराम करनाक ब्रिज (T A Mukhi) यहां बुलियन, बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) करांची—मेसर्स चांडूमल वलीराम (Bullion) यहां हाजिर रुई, मेन, चांदी, सोना तथा कमीशनका काम होता है।

(४) फीरोजपुर सिटी-मेसर्स चांडूमल वलीराम (Mukhi) यहां बैंकिंग, चांदी, सोना तथा कपड़ा और शक्करके कमीशनका काम होता है।

(५) फाजिलका—(Mukhi) बैंकिंग, सोना, चांदी, कमीशन, और शक्करका काम होता है।

(६) अबोहर—(Mukhi) बैंकिंग, सोना, चांदी, मेन, कपड़ा शक्कर और कमीशनका काम होता है।

(७) भटिंडा - मेसर्स चांडूमल वलीराम (Mukhi) बैंकिंग बुलियन मर्चेण्ट व कमीशनका काम होता है।

(८) जेतू—(पंजाब) (Mukhi) बैंकिंग, बुलियन, कमीशन व शक्करका काम होता है।

(६) बरनाला—(पंजाब) मेसर्स चांडूमल वलीराम ,, ,,

१०) सटरवन—(हैदराबाद) (mukhi) ,, ,,

मेसर्स नारायणदास मनोहरदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप वाणिया सज्जन हैं। इस फर्मको करीब १२५ वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने स्थापित किया था। तबसे यह फर्म बराबर तरक्की करती आ रही है। यह फर्म चांदी बाजारमें बहुत पुरानी मानी जाती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोवर्द्धनदासजी हैं। आप सेठ नारायणदासजीकी सातवीं पीढ़ीमें हैं। आप केलवणीके काममें अच्छा भाग लिया करते हैं।

जी चार भाई थे मूलचंदजी २ प्रह्लाददास जी ३ सन्तरामदासजी ४ ईश्वरदास जी । इनमेंसे सेठ मूलचंदजी, प्रह्लाददास जी तथा ईश्वरदास जी इन तीनों भाइयोंके पुत्र इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) बम्बई नं० ३ मेसर्स मूलचंद हेमराज चारभाई मोहल्ला T.A. Histori इस फर्मपर चांवल काफीतथा शक्करका परशियाके लिये एक्सपोर्ट होता है तथा बेंकिंग व कमीशन एजेंसीका वर्क और मोतीका व्यापार होता है ।

(२) बेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचंद प्रह्लाददास T.A. Totai यहां चावल काफी आदिका व्यापार कमीशन एजेंसी तथा मोतीका भारतके लिये इम्पोर्ट होता है।

मोतीकी सीज़नके समय आपकी एक और ब्रांच चेत्रसे कार्तिकतक यहां खुल जाया करती है इस फर्मपर समुद्रसे निकाले जानेवाले मोतीकी खरीदका व्यापार होता है ।

(३) गेस (परशियन गल्फ)—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नारायणदास—यहां चांवल, काफी, खांड एवं मोतीका व्यापार होता है यह फर्म सीज़नके समय रहती है ।

(४) दबई-(परशियन गल्फ) पुरुषोत्तमदास नारायणदास इस नामसे यह फर्म सीज़नके समय मोतीकी खरीदीका काम करती है ।

सिन्ध प्रांतके दरा नामक स्थानमें आपकी द्वारकादास भगवानदास एण्ड कंपनीके नामसे राइस फ्लोमर और पेढ़ी मिल है। आपकी ओरसे सेठ प्रह्लाददास हेमराज इस नामसे नगर ठट्ठामें एक बगीचा और तालाब बना हुआ है । सेठ मूलचंद हेमराजके नामसे भी एक बगीचा और कुंआ बना हुआ है । सेठ पुरुषोत्तमदास प्रह्लाददासके नामसे आपकी वहांपर खेती है।

मेसर्स लखमीदास टेकचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगर ठट्ठ (सिन्ध) है । इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ६४ वर्ष हुए । सेठ लक्ष्मीदासजीने इसे यहां स्थापित किया था । आप सेठ टेकचंदजीके पुत्र थे । आपका देहावसान संवत् १९६७में हुआ ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीदासजी के भानजे सेठ तोलाराम जी हैं। सेठ—तोलारामजी, बम्बई निवासी नगरठट्ठके भाटिया तथा लुहाना व्यापारियोंके मंडलके प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ लक्ष्मीदास जी ने नगरठट्ठमें एक श्री रामजीका मंदिर बनवाया है तथा एक मन्दिर और श्री वल्लभाचार्य मतावलम्बी गो-स्वामियोंके ठहरनेके लिए बनवाया है। वहांपर आपका सदाव्रत भी चालू है ओरसे सेठ तोलाराम जी ने सेठ लक्ष्मीदाम जी के पश्चात् उनके

बुलियन मर्चेण्ट्स

सेठ अगरचन्दजी बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग
" अनुपम अमीचंद बुलियन एक्सचेंज
" कचरा भाई जुमखराम बुलियन एक्सचेंज
" कस्तुरचंद पूनमचंद बुलियन एक्सचेंज
" कान्तिलाल कल्याणदास बुलियन एक्सचेंज
" केदारमल सांवलदास बुलियन एक्सचेंज
" गजानन्दजी बियाणी बुलियन एक्सचेंज
" गणपतलाल माधवजी बुलियन एक्सचेंज
" गोविन्दराम नारायणदास बुलियन एक्सचेंज
" गोरधनदास पुरुषोत्तमदास बुलियन एक्सचेंज
" गोविन्ददास भैय्या C/O चांददास दम्माणी
" चम्पकलाल नगीनदास बुलियन एक्सचेंज
" चांददास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
" चिमनराम मोतीराम बुलियन एक्सचेंज
" चेतनदास बनेचंद बुलियन एक्सचेंज
" जगजीवनदास तेरकराम बुलियन एक्सचेंज
" जमुनादास मथुरादास वशी हार्नबी रोड
" जीवनलाल प्रतापसी बुलियन एक्सचेंज
" जीवनलाल भीखिराम बुलियन एक्सचेंज
" जीवाभाई केसरीचंद बुलियन एक्सचेंज
" ठाकरसी पुरुषोत्तम मारवाड़ी बाजार
" ठकुरभाई दीपचंद खारा कुंआ
" दयालदास सुखीराम बुलियन एक्सचेंज
" द्वारकादास मोतीराम बु० ए० बिल्डिंग
" देवकरण नानजी बुलियन एक्सचेंज
" नारायणदास केदारनाथ बुलियन एक्सचेंज
" नारायणदास मनोहरदास बु० ए० बिल्डिंग
" नारायणदास मणीलाल बु० ए० बिल्डिंग
" प्रेमसुख गोवर्द्धनदास बु० ए० बिल्डिंग
" बालाबक्स बिरला बु० ए० बिल्डिंग
" बिडला ब्रदर्स बु० ए० बिल्डिंग
" ब्रजमोहनदास बिरला C/O बिरला ब्रदर्स
सेठ भोगीलाल अचरजलाल खारा कुंआ
" भोगीलाल मोहनलाल जवेरी खारा कुंआ
" भोलाराम सराफ बु० ए० बिल्डिंग
" भोगीलाल चिमनलाल सराफ बाजार
" भोगीलाल अमृतलाल बु० ए० बिल्डिंग
मेसर्स एम० बी० गांधी एण्ड को० बु० ए०
सेठ मगनलाल मणिकलाल बु० ए० बिल्डिंग
" मंगलदास मोतीलाल बु० ए० बिल्डिंग
" माणीलाल चिमनलाल सराफ बाजार
" मनुभाई प्रेमानन्ददास लश्करचाल
" माणेकलाल प्रेमचंद रामचन्द्र अमोली स्ट्रीट
" मोतीलाल वृजभूषणदास सराफ बाजार
" रतनजी नसरवानजी लाकड़ावाला बु० ए०
" रामकिशनदास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
" रामकिशन सीताराम बु० ए० बिल्डिंग
" रामकिशनदास खत्री बु० ए० बिल्डिंग
" हरजीवन नागरदास कम्पनी बु० ए०
" हिम्मतलाल हेमचंद बु० ए० बिल्डिंग

हीरा पन्ना मोती और जवाहरातके व्यापारी

अलीभाई अब्बाभाई धनजी स्ट्रीटका नाका
अरदेसर होरमसजी माउंटवाला
कन्हैयालाल ईश्वरलाल एण्ड को० जौहरीबाजार
के० वाडिया एण्ड० को० मींट रोड
कल्याणचंद सोभागचंद विट्ठलवाड़ीका नाका
खेरातीलाल सुन्दरलाल शेखमेमनस्ट्रीट (आपका परिचय जयपूरमें दिया गया गया है।)
गोदड़ भाई डोसूजी जौहरी बाजार (मोती)
गुलाबचंद देवचंद जौहरी बाजार
चिमनलाल छोटालाल जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
चुन्नीलाल खजमचंद शाह, जौहरी बाजार
जुगल किशोर नारायणदास कालवादेवी (पन्ना) (आपका परिचय उज्जैनमें दिया गया है)
जीवराज वेचर भाई कोठारी जौहरी बाजार
जीवाभाई मोहकम जौहरीबाजार
डायालाल छगनलाल जौहरी
धन्नामल चेलाराम फोर्ट मेडोजस्ट्रीट
ताराचंद परशुराम फोर्ट (क्यूरियो मरचेन्ट)
नगीनचंद फूलचन्द जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
पोमल ब्रदर्स फरनाकर्वदर, अपोलोस्ट्रीट,
फरामरोज सोरावजीखान फोर्ट
विट्ठलदास चतुर्भुज एण्ड कं० जौहरी बाजार
बापूजी बालूजी सरकार जौहरी बाजार
फूलचन्द कानूरचन्द, लखमीदास मारकीटकेपास
मानचन्द चुन्नीभाई सराफ कालवादेवी
मणीलाल अमूलखभाई जौहरी बाजार
मणीलाल रिखबचन्द जौहरी बाजार
मंगलदास मोतीलाल मम्बादेवी
मणीलाल सूरजमल एण्ड को० धनजी स्ट्रीट
रामचन्द्र ब्रदर्स मेडो स्ट्रीट फोर्ट
रामचन्द मोतीचन्द जौहरी बाजार
रूपचन्द घेलाभाई पारसीगली
पी० डुवास एण्ड कं० मेडो स्ट्रीट फोर्ट
लल्लूभाई गुलाबचन्द जौहरी चौकसी बाजार
वाड़ीलाल हीरालाल एण्ड को० जौहरी बाजार
लखमीदासचुन्नीलाल मारवाड़ी बाजार
रेवाशंकर गजजीवन शेखमेमनस्ट्रीट
न्यू पर्ल ट्रेडिंग कम्पनी गनेशवाड़ी
लालभाई कल्याणभाई एण्ड कम्पनी

शेअर- मर्चैण्ट्स

SHARE-MERCHANTS

सेठ प्रेमचन्द रायचन्द (रा० सट्टाके राजा) बम्बई

सेठ के० आर० पी० श्राफ, बम्बई

सोने चांदीके व्यापारी

मेसर्स चिमनराम मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मलसीसर (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसे सेठ मोतीलालजीने स्थापित किया, और आपहीके द्वारा इस फर्मको अच्छी तरक्की मिली। सेठ मोतीलालजी चांदी बाजारमें अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी माने जाते हैं। साधारण बोल-चालमें लोग आपको सिलवर किंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं। आपकी अवस्था इस समय ६३ वर्षकी है। आप जयपुरमें अग्रवाल सम्मेलनके सभापति रहे हैं। चांदी बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ बम्बई—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेख मेमन स्ट्रीट, यहां सोने चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस और वायदेका बहुत बड़ा काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल १३२ तुलापट्टी, यहां चांदी सोनेके हाजर तथा वायदेका बिजिनेस होता है।

३ कानपुर—कमलापत मोतीलाल, यहां इस नामसे एक शक्करकी मिल है, उसमें आपका साझा है।

४ अहमदाबाद—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल स्टेशनके पास; यहां कपड़ेकी आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स चांडूमल वलीराम मुखी

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए यहां ८० वर्ष हुए। इसे मुखी चांडूमलजीने स्थापित किया था। आपके बाद सेठ प्रीतमदासजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें मुखी प्रीतमदासजीके पुत्र मुखी जेठानन्दजी और मुखी गोविंदरामजी इस फर्मके मालिक हैं।

अपने परिश्रमसे आपने संवत् १८६०में फर्म स्थापित की। प्रारम्भमें आपने चांदीकी दलालीका कार्य शुरू किया और तरक्की करते २ आज आप चांदी, सोना, रूई शेअर, एरंडा तथा अलसीके बाजारोंमें प्रतिष्ठित दलाल माने जाते हैं। आप व्यापारमें बड़े उत्साही, साहसी एवं चतुर सज्जन हैं। बाजारके व्यापारिक पेचीदा मामलोंमें व्यापारी लोग आपकी सलाह लिया करते हैं।

सेठ जीवनलाल बुलियन एक्सचेंज, शेअर एण्ड स्टाक एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं। अपने समाजमें भी आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने तिलक स्वराज्य फण्ड, एवं और देशहितके व सामाजिक कार्योंमें अपनी सामर्थ्य अनुसार अच्छी सहायता की है। तथा इस ओर आपका प्रेम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जीवनलाल प्रतापसी बुलियन एक्सचेंज हाल—यहां चांदी सोनेके वायदेका तथा इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स जीवनलाल प्रतापसी शेअर बाजार—यहां शेअर और सिक्यूरिटीजका सब प्रकारका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स जीवनलाल प्रतापसी मारवाड़ी बाजार—यहां रुईके वायदेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त आप हाजरका व्यापार भी करते हैं।

(४) अहमदाबाद इण्डियन जिनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी लिमिटेड नरोड़ा रोड—इसके आप एजंट हैं व यहां कॉटन बिजिनेस होता है।

(५) बम्बई—मेसर्स जीवनलाल मनीलाल बड़गादी मांडवी—यहां आपके कारखानेका बना हुआ रंग बिकता है।

मेसर्स जगजीवन उजमसी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जगजीवन उजमसी हैं। आपका मूल निवास स्थान लींबड़ी (काठियावाड़) है। आप स्थानकवासी जैन हैं।

सेठ जगजीवन भाई प्रारंभमें मेसर्स आर० पी० आफ़के—यहां सर्विस करते थे। प्रारंभमें आपकी परिस्थिति बहुत साधारण थी। उसके बाद आप शेअर्सकी दलाली करने लगे। एवं सन् १६१६ में इस फर्मकी स्थापना की। सेठ जगजीवन भाईने थोड़े ही समयमें अपने व्यवसायकी अच्छी तरक्की की और वर्तमानमें आप शेअर बाजारके अच्छे दलाल माने जाते हैं। आप सन् १९२५ में शेअर एण्ड स्टोक ब्रोकर्स एसोशियेशनके डायरेक्टर थे। इसके बाद आपने रुईका व्यापार विशेष बढ़ाया तथा इस समय आप ६०।६० हजार रुईकी गांठोंका पंजाब, बरार, गुजरात खानदेश, काठिया-

पता—Seaworthy यहां आपका हेड ऑफिस है इसमें बैंकिंग और फ़ाइनेंड ब्रोकर्सका काम होता है।
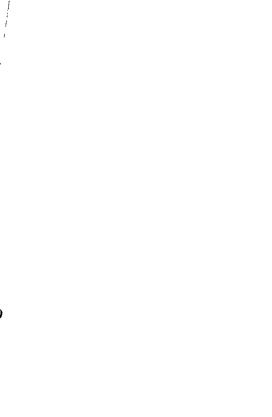
२ बंबई—मेसर्स देवकरण नानजी ओल्ड शेअर बाजार—यहां आपके २ ऑफिस हैं। जिनमें शेअर, स्टाक ब्रोकर्स और गवर्नमेण्ट सेक्यूरिटीका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार—यहां रूईकी दलाली निजी व्यवसाय होता है।

४ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी शिवरी—यहां रूईका व्यवसाय होता है।

५ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी जवेरी बाजार—यहां बुलियन मर्चेण्ट तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास हीरलाल गांधी

इस फर्मके मालिक खंभात निवासी लाडवाणियां वीसा जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको २५ वर्ष पूर्व सेठ माणिकलाल बेचरदास गांधीने स्थापित किया था। आपका देहावसान सन् १९२१ में हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदास हीरालाल और सेठ मङ्गलदास हरीलाल भाई हैं। सेठ भगवानदासजीने सन् १९०८ में विलायतकी हुण्डीकी दलालीका काम आरंभ किया तथा वर्तमानमें आप सब बैङ्कोंके साथ हुण्डीका बिजिनेस करते हैं। आपने सन् १९२० में अपनी जातिके लिये मलाड़में एक सेनेटोरियम बनवाया तथा अपनी मातुश्रीके नामसे सन् १९२१ में एक होमियोपैथिक डिस्पेंसरी स्थापित की। आपने सन् १९२७ में बुलियन मार्केटमें अपनी फर्म स्थापित की। आपको शुद्ध देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स एन० बी० गांधी कम्पनी ८० एस्प्लेनेड रोड फोर्ट—यहां फारेन एक्सचेंजका व्यापार होता है।

(२) बम्बई-मेसर्स भगवानदास हीरालाल दलालस्ट्रीट-शेअरबाजार—यहां शेअर और सिक्यूरिटीजका व्यवसाय होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स एन० बी० गांधी बुलियन एक्सचेंज हाल शेरानेमन स्ट्रीट—यहां चांदी सोनेका व्यापार तथा इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

(४) मेसर्स भगवानदास हीरालाल गांधी जौहरी बाजार-बम्बादेवी—यहां काटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जूनागढ़ (काठियावाड़) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखलाल भाई हैं। आप १२ वर्षसे शेअरका व्यवसाय करते हैं।

प्रारंभिक जीवन नौकरीसे आरंभ हुआ। आपने स्वयं अपने हाथोंसे व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त कर मान, सम्पति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। प्रथम आप रामगोपाल कम्पनीमें कार्य करते थे, फिर आप पी० किस्टल कम्पनीमें शेअर्स तरीके काम करने लगे। उसमें आप २ वर्षतक कार्य करते रहे। इस समयमें आपने अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। पश्चात् लालदास दुलारीदास कम्पनीके नामसे आप अपना स्वतन्त्र काम करने लगे। स्वास्थ्यकी अस्वस्थताके कारण आपने इस व्यवसाय को छोड़ दिया। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स लालदास भगतलाल १२ ए दलाल स्ट्रीट शेअर बाजार—यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स लालदास मगनलाल एण्ड कम्पनी अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां मिल तथा जीन सम्बन्धी सब सामानका स्टोर है।

शेअर मार्केटके व्यवसायी

मेसर्स अमरचंद जवेरचंद
,, अमृतलाल मोहनदास
,, अमृतलाल कालीदास
,, ए० पी० कांगा
,, कांगा एण्ड होलेस
,, केशवलाल मूलचंद
,, सोनजी पूनजी एण्ड कं०
,, गिरधरलाल एण्ड त्रिभुवनदास
,, चुन्नीलाल वीरचन्द एन्ड संस
,, छगनलाल जवेरी एण्ड को०
,, जीवनलाल प्रतापसी
,, जमनादास सुरजदास
,, जमनादास मथुरादास
,, जे० एस० गज्जर एण्ड संस
,, डूंगरसी एस० जोशी
,, देवकरण नानजी
,, दाराशा एण्ड को०
,, नारायणदास रामसुख
,, पारख अमरदास मूलचंद
,, पटेल एण्ड रामदय
,, प्रेमचन्द रायचन्द एण्ड संस
मेसर्स प्रेमजी नागरदास
,, प्रभुदास जीवनदास
,, पी० एम० नादन
,, भगवानदास जेठा भाई
,, पाटलीवाला एण्ड कम्पनी
,, पी० ए० बिलिमोरिया
,, वाडीलाल पूनमचन्द
,, मंगलदास चिमनलाल
,, मंगलदास हुकुमचन्द
,, मनमोहनदास नेमीदास
,, मेहता वकील एण्ड को०
,, मेरवानजी एण्ड संस
,, एन० पी० भरूचा एण्ड संस
,, एम० आर० वेद एण्ड को०
,, एन० व्ही० खांडवाला एण्ड को०
,, राजेन्द्र सोमनारायन जे० पी०
,, लक्ष्मीदास पीताम्बर
,, वसनजी गोरधनदास
,, एस० डी० बिलिमोरिया
,, सामलदास प्रभुदास
,, हरगोविन्ददास मूलजी

नोट—उपरोक्त व्यवसायियोंकी आफिसें अधिकतर शेअर बाजारमें ही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेखमेमन स्ट्रीट यहां चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस एवं वायदेका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास जौहरी बाजार, यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना १०० वर्ष पूर्व बीकानेरमें हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ राधाकृष्णजी दम्माणी एवं सेठ देवकिशनदासजी दम्माणी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास कालबादेवी रोड, इस फर्मपर बेङ्किग हुंडी चिट्ठी और कमीशनका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास दम्माणी बुलियन मार्केट—इस फर्मपर चांदीके इम्पोर्ट एवं वायदे का बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

—:—

मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री मदनगोपालजी दम्मानी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर है।

यह फर्म यहांपर करीब १०० वर्षों से स्थापित है। पन्तु इस नामसे इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३०।३५ वर्ष हुए। इस फर्मको स्थापना सेठ बालकिशनदासजीके समयमें हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। श्री रामकिशनदासजी व श्री मदनगोपालजी। सम्वत् १९७६ में दोनों भाइयोंका कार्य अलग २ विभक्त हो जानेसे अब इस फर्मका सञ्चालन श्री मदनगोपालजी करते हैं। आप विशेषकर बीकानेरहीमें रहते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम चिमनलालजी तथा हरगोपालजी हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ हेड ऑफिस—बीकानेर—श्रीकिशनदास बालकिशनदास दम्माणी (Dammani) यहां बेङ्किग वर्क होता है, तथा मालिकोंका निवास स्थान है।

२ बम्बई—मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास विट्ठलवाड़ी (Dammani) यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठी और चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। आपकी इसी नामसे बुलियन एक्सचेंज हालमें भी दुकान है।

—:*:—

वर्तमानमें इस कार्यालयके मालिक सेठ खेमराजजीके पुत्र राव बहादुर सेठ रंगनाथजी एवं श्री श्रीनिवासजी बजाज हैं।

सेठ रंगनाथजीको जनवरी सन् १९२६ में गवर्नमेंटसे राव साहबकी उपाधि प्राप्त हुई है।

सेठ श्रीनिवासजी बजाज शिक्षित एवं व्यवसाय-कुशल सज्जन हैं। प्रेसके सम्बन्धमें आपने अच्छी उन्नति की है। आप मारवाड़ी विद्यालयके वाइस प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी हैं। मारवाड़ी विद्यालयके संचालनमें आप बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं।

आप की ओरसे उज्जैन, नासिक, हरिद्वार, बालाजी (दक्षिण) भूगुरी श्रीरंगम आदि स्थानों पर धर्मशालाएं बनी हैं। तथा वहां पर भोजनका भी प्रबन्ध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस ७ खेतवाड़ी-खम्बाटालेन बम्बई तारका पता—वेंकटेश्वर	यहां आपका विशाल प्रेस है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें पुस्तकें बाहर जाती हैं।
२ लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्याण (बम्बई)	यहां भी आपका बड़ा प्रेस है।
३ श्री वेंकटेश्वर प्रेस कोलापुर	यहां भी आपके प्रेसकी एक ब्रांच है।
४ मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास कालबादेवी खेमराज बिल्डिंग	यहां सराफी तथा पुस्तक विक्रयका काम होता है।
५ खेमराज श्रीकृष्णदास बुक डिपो-चौक बनारस	यहां आपके प्रेसकी छपी पुस्तकें बेचनेका डिपो है।
६ खेमराज श्रीकृष्णदास इलाहाबाद	यहां एक फ्लावर मिलके आप लेसी हैं।
७ खेमराज श्रीकृष्णदास लखनऊ	यहां पर आपका फ्लावर मिल है।
८ खेमराज श्रीकृष्णदास आगरा	यहां आपकी १ जीन व १ प्रेस फेक्टरी है। तथा काटन बिजिनेस होता है।
९ वर्धा—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां भी आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है। और मोटर बिजिनेस होता है।
१० पुलगांव—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है।
११ धामनगांव—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन फेक्टरी है।

इस प्रेसके द्वारा श्री वेङ्कटेश्वर समाचार नामक एक साप्ताहिक समाचारपत्र करीब ३३।३४ वर्षों से निकलता है।

„ रामदयाल सोमाणी पु० प० बिल्डिंग
„ रामचंद मोतीचंद पु० प० बिल्डिंग
मेसर्स रिपकरणदास फायरा एण्ड को० पु० प०
सेठ वाड़ीलाल चुन्नीलाल पुलियन एक्सचेंज
„ विट्ठलदास ठाकुरदास पु० प० बिल्डिंग
„ विट्ठलदास ईश्वरदास पारेख पु० प० बिल्डिंग
„ विट्ठलदास फतलचंद पु० प० बिल्डिंग
„ शिवप्रताप बी० जोशी c/o भीकमचंद पाऊ
दुधावाला
„ शिवलाल शिवकरण पु० प० बिल्डिंग
„ शिवप्रताप रामरतनदास पु० प० बिल्डिंग
„ श्रीवल्लभ पोती पु० प० बिल्डिंग
„ साकलचंद दामोदरदास बुलियन एक्सचेंज

मार्टिन हैरिस ११६ पारसीबाजार स्ट्रीट फोर्ट
एन० डी० मेहता एण्ड को० ६ बैंक्ट मोहल्ला कोलभाट लेन
एम० मिस्त्री एण्ड को० २३२ बोरा बाजार
श्रवक भीनसी मानेक पारसी गली
मुन्शी एण्ड सन्स जी० एम० खानबहादुर गिरगांव रोड
मेघजी हीरजी बुकसेलर पायधुनी
यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डिया लि० ३४ होनजी स्ट्रीट फोर्ट
राधाभाई आत्माराम सगुन कालबादेवी रोड
आर० बननालीदास एण्ड को० कालबादेवी रोड
रामचंद्र गोविन्द एण्ड सन्स कालबादेवी रोड
रेले एण्ड को० जी० जी० ओ० पी० टैंक रोड
आर० मंगेश एण्ड को० न्यू चिंचबंदर स्ट्रीट
रत्नागर एण्ड को० २७ मेडास स्ट्रीट
लखपति ६५ चिमना बचेर स्ट्रीट
लांगमेन्स ग्रीन एण्ड को० ५३ निकल रोड बेलार्ड स्टेट
व्हीलर एण्ड को० हार्नबी रोड
एस० आई० बी० मिलर कैन्ट मैनेजर कैलिको डाइरेक्टरी लिमिटेड पो० बॉ० नं ८४८
श्रीधर शिवलाल कालबादेवी
एस० पी० सी० के० प्रेस सूनेड रोड
स्टेशनरी एण्ड बुक एजन्सी ठाकुर द्वार
स्टुडेण्ट्स प्रिण्टिंग प्रेस गिरगांव
सनशाइन पब्लिशिंग हाऊस इन्जिनियर बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
हरिप्रसाद भागीरथ कालबादेवी रोड
हॉकेन एण्ड इलियट मेट वेस्टर्न बिल्डिंग वाकर हाऊस लेन फोर्ट
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, गिरगांव

—:o:—

(११) बीस हजार रुपया आनन्द धर्मशालामें

(१२) दस हजार रुपया भडेकजेंड़ा कन्याशालामें

इसके अतिरिक्त जे० एन पेटिट इन्स्टीट्यूशन, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, दि नेटिव ज लायब्रेरी, तथा तारंगा की धर्मशालामें भी आपने अच्छी रकमें दी थीं। गुजरात काठियावाड़के गांवोंमें धर्मशाला, कुएं और तालाबोंके जीर्णोद्धारमें करीब ६। लाख रुपये आपने दिये थे। जैन मन्दि के जीर्णोद्धारमें आपने ८॥१० लाख रुपया लगाये थे, अपने अच्छे समयमें आप आठ हजार रु मासिक धार्मिक एवं परोपकारके काममें व्यय करते थे, और पीछेसे प्रतिमास ३ हजार रुपया करते थे। ऐसे प्रतिभाशाली एश्वर्यवान एवं दानी महानुभाव की जीवनी पढ़ते हुए हरेक व्यक्ति मुंहसे यह सहसा निकल पड़ता है कि हे भारत जननी तू हमेशा इसी प्रकारके व्यक्ति पैदा कि कर, जिसमें धर्म, समाज एवं शिक्षाकी रक्षा होती रहे।

आपकी ओरसे बंधाया हुआ आपकी माताश्रीके नामसे राजाबाई टावर बम्बईमें दर्शनी चीज है।

इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए उक्त प्रभावशाली व्यक्तिका देहावसान सन् १९०६ की ३१ अगस्तको ७१ वर्षकी अवस्थामें हुआ था, आपका स्वर्गवास होनेके शोकमें बम्बईके कई एक बाजारोंमें हड़ताल मनाई गई और शेअर बाजारके राजाके नातेसे आपकी शेअर बाजारमें एक प्रस्तर मूर्ति स्थापितकी गई।

इस समय आपके पुत्र सेठ कीकाभाई फर्मका सञ्चालन करते हैं। इस समय भी आप शेअर और कॉटनके नामाङ्कित व्यापारी हैं। आप कई ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनियोंके डाइरेक्टर हैं।

मेसर्स के० आर० पी० श्राफ

सेठ के० आर० पी० श्राफ महोदय आर० पी० श्राफ एण्ड सन्स फर्मके पार्टनर हैं। आप पारसी सज्जन हैं। वर्तमानमें आप नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोशिएशनके प्रेसिडेण्ट हैं। आप शेअर बाजारके बहुत प्रतिष्ठित एवं आगेवान व्यापारी माने जाते हैं। आपकी फर्म दलाल स्ट्रीट वाड़िया बिल्डिङ्ग फोर्टमें है। यहां सब प्रकारके शेअर और स्टॉक सिक्यूरिटीजका अच्छा विनिमेय होता है।

मेसर्स जीवतलाल प्रतापसी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राधनपुर (गुजरात) है। आप जैन (श्वेताम्बर मंदिर मार्गी) सज्जन हैं। सेठ जीवतलालजीका प्रारम्भिक जीवन नौकरीसे शुरू हुआ एवं

कृत्रिम नीलकी आमद

१८९६ - ९७ में	२.८ करोड़	१९०३ - ४ में	८ करोड़
१९११ - १२ में	१२.२५ करोड़	१९१२ - १३ में	१४.१७ करोड़
१९१३ - १४ में	१७.८६ करोड़		

भारतमें रंग बनानेके नीचे लिखे द्रव्य हैं

(१) नील एक छोटासा पौधा होता है इसके पत्तोंको सड़ाकर रंग तैयार किया जाता है। यूरोपवालोंने सोलहवीं सत्रहवीं शताब्दीमें हमारे यहांसे नील खरीदना आरंभ किया था। पहिले पोर्तगालवाले फिर डच और फिर ईस्ट इण्डिया कम्पनी यहांकी नील खरीदने लगी। इसमें नफा अधिक होनेसे अमेरिकाके उपनिवेशोंमें इसकी खेती भी की जाने लगी। सन् १८९७में जर्मनीने एक ऐसी कृत्रिम नील निकाली, जो बहुत सस्ती पड़ती थी। इसकी प्रतियोगितासे भारतकी नीलका रोजगार किस प्रकार नष्ट हुआ उसका पता नीचेके अंकोंसे चलेगा।

भारतसे नील भेजी गई:—

१८८६-८७ में	३.७ करोड़ रुपयोंकी
१८९६-९७ में	४१ करोड़ रुपयोंकी
१९०३ में	१ करोड़ रुपयोंसे ऊपरकी
१९०६-७ में	७० लाख रुपयोंकी
१९१०-११ में	३५ लाख रुपयोंकी
१९१२-१३में	२२ लाख रुपयोंकी

भारतमें नील बोई गई:—

(१) १८९५में १३ लाख- एकड़में
(२) १९१४ में १४८ हजार ए०में

नीलकी कोठियां थीं

सन् १९०१में	९२३
सन् १९०३में	५११

(२) कुसुम—इसके फलसे तेल व फूलसे रङ्ग निकलता है, जिन गुणोंके कारण विलायती माल प्रतिष्ठा पा रहा है वे सब गुण इसमें हैं। सन् १८७३-७४में ७॥ लाख रुपयोंका कुसुम बाहर भेजागया था। मगर सन् १९०३-४में यह संख्या ६७॥ हजारकी रह गई।

(३) हल्दी—इसकी पैदावार खासकर मद्रास प्रांतमें और बंगाल बिहार और बम्बईमें भी होती है।

(४) आलू—इसकी पैदावार राजपूताना, मध्यभारत, बरार, सी० पी० और यू० पी० में होती है इसका लाल रङ्ग अच्छा बनता है।

इसके अतिरिक्त लाख, त्रिफला, कहुआ, सेनकी, बबूलकी छाल आदि कई वृक्षोंसे भी रङ्ग बनाया जाता है।

बम्बईमें रङ्गके व्यापारी कई जगह बैठते हैं, कई रंगवालोंकी फर्में बड़गादी, तथा बेलार्डपेयर बम्बईमें हैं। इसके अतिरिक्त पेन्टिङ्गके रंगवाले व्यापारी दूसरे स्थानोंपर बैठते हैं। रंगोंमें एलीजराईन मालमें, तीनचन्द्र छाप, बाघ छाप, घोड़ा छाप, डी. डी. मार्का, आदि रंग विशेष मशहूर हैं तथा इसी तरह ब्लीच करनेके रंग तथा केमिकल्सकी भी कई क्वालिटी आती हैं जिसके व्यापारी प्रिंसेस स्ट्रीट और अरोडो स्ट्रीटमें बैठते हैं।

दास गुना एण्ड सन्स २५ कंकूगंधीरोड
नेशनल एनी लाइन केमिकल्स कम्पनी
स्टेंडर्ड केमिकल्स कम्पनी।
विक्टोरिया कोटवाल एण्ड को० चूड़ीगली, मांडवी
हीरालाल एच० ब्रदर्स १ केमेल स्ट्रीट, कालवादेवी
हुसेनअली महम्मदअली एण्ड को० रोलनेमन स्ट्रीट

कच्ची ऊनका व्यापार

भारतवर्षमें कच्ची ऊनके प्रधान उत्पत्ति स्थान सिंध, पंजाब, तथा राजपूताना हैं। इन प्रांतोंमें ऊनकी प्रधान प्रधान मंडियां शिकारपुर, अभोर, फाजिलका, पाली, ब्यावर, केकड़ी और नसीराबाद है। इन मंडियों द्वारा प्रति वर्ष हजारों गांठें ऊन लिवरपूलके मार्केटमें बिकनेको करांची और बम्बईके बंदरोंसे भेजी जाती हैं। भारतमें सबसे बड़ी ऊनकी मंडी फाजिलका (पंजाब) है। दूसरे नम्बरकी मंडी ब्यावर है। ब्यावरसे ऊन साफकर पक्की गांठें बंधाकर करीब २० हजार गांठें प्रतिवर्ष विलायत भेजी जाती हैं। यहां दो हजार मजदूर प्रति दिन ऊन साफ करनेका काम करते हैं। जिस प्रकार फाजिलकाके व्यापारियोंको अपना माल सीधा फाजिलकासे लिवरपूलके लिये बुक कर देनेकी सुविधा है उस प्रकार यहांके व्यापारियोंको नहीं है। यहांके व्यवसाइयोंको बम्बईके द्वारा अपना माल विलायतको भेजना पड़ता है। ऊन भेड़ोंसे सालमें दो बार काटी जाती है। जिन प्रांतोंमें गर्मी विशेष पड़ती है और जहांकी रेतीली भूमि होती है, वहां भेड़ें विशेष मात्रामें पायी जाती हैं। भारतमें सबसे बढ़िया ऊन बीकानेरकी होती है। यहांकी ऊनी लोई बहुत मजबूत, मुलायम एवं सुन्दर होती है। ऊनकी कई किस्में हैं जिनमें सफेद, काली, लाल, और मैली खास हैं।

भारतकी अधिकतर ऊन लिवरपूल जाती है। वहां दो दो तीन तीन मासमें एक सेल होता है उसके पूर्व बाहरके व्यापारी सेलमें बिकनेके लिये अपना माल भेज देते हैं। उस सेलमें बिकनेवाले मालका रुपया पौं० शि० पे० के हिसाबसे नूरभाड़ा,(जहाजका भाड़ा) आढ़त, बीमा, व्याज आदि कई व्यापारिक खर्च बादकर एक्सपोर्ट करनेवाले व्यापारियोंके द्वारा अपने आढ़तियोंको मिलता है।

इस कच्ची ऊनके गोड़ाऊन यहांकी पिंजरापोल (माधोबागके पास) की पहली, दूसरी तथा तीसरी गलीमें है। यहां कई देशी और विदेशी व्यापारियोंके गोडाऊन है। जिनकी आढ़तमें बम्बईके व्यापारी बाहरसे आनेवाले मालको उतारते हैं। यहांके ऊनके व्यवसाइयोंकी संक्षेप सूची नीचे दी जाती है।

वाड़ आदिसे मंगवाकर व्यवसाय करते हैं। आपने लीमड़ीमें एक वाड़ी और भावनगरमें एक म्युनि
हाऊस बनाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जगजीवन उजमसी शेअर बाजार फोर्ट यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका क
होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स जगजीवन उजमसी मारवाड़ी बाजार—यहां कॉटनकी दलालीका काम होता

सेठ जगजीवन भाई ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसनके डायरेक्टर तथा म्युनिसिपल का
पोरेशनके मेम्बर हैं।

मेसर्स देवकरण नानजी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पोरबन्दर है। इसफर्मको ४० वर्ष पूर्व सेठ दे
करण नानजीने बम्बईमें स्थापित किया था। आपका जन्म सन् १८५७ में पोर बन्दरमें हुआ था
लगभग सन् १८८८ में आप यहां आये तथा इस फर्मकी स्थापना की। आप बड़े धर्मात्माव्यक्ति थे।
संस्कृतभाषासे आपको विशेष प्रेम था।

सेठ देवकरण नानजी बहुत व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपकी मौजूदगीमें ही आपकी फर्म
बहुत अच्छी तरक्की कर चुकी थी। आपका देहावसान ६५ वर्षकी आयुमें सन् १९२१ में
हुआ था।

सेठ देवकरण नानजीने पोरबंदरमें एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की। तथा आपने वहीं
सदाव्रत भी जारी किया और एक धर्मशाला बनवाई। स्वजाति प्रेमसे प्रेरित होकर आपने एक जाति
फ़ण्डकी स्थापना की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको जे० पी० की पदवीसे
विभूषित किया था।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ देवकरण नानजी के ३ पुत्र हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं।
(१) सेठ चुन्नीलाल देवकरण (२)सेठ प्राणलाल देवकरण (३) सेठ मनू देवकरण। आपकी फर्म
बम्बई चेम्बर आफ कामर्स (२) इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बर (३) नेटिव्ह शेअर एण्ड ब्रोकर्स एसोसियेशन
(४) दि ईस्टइण्डिया काटन एसोसियेशन लिमिटेड (५) दि बाम्बे काटन मरचेंट्स एण्ड मुकादमस
एसोसियेशन लिमिटेड (६) दि बाम्बे बुलियन एक्सचेञ्ज लिमिटेड (७) दि बाम्बे श्राफ एसोसियेशन
(८) तथा लैंड लार्डस एसोसियेशनकी मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी एण्ड संस १७ एल्फिस्टन सरकल नानजी बिल्डिंग फोर्ट, तरस

माचिसके व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली इब्राहीम माचिसवाला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बम्बई है। आप दाउदी बोहरा जातिके सज्जन हैं इस फर्मको यहां सन् १८८१में सेठ अब्दुलअली भाई और सेठ इब्राहीम भाईने स्थापित किया। आप दोनों सज्जनोंका देहावसान हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स अब्दुल अली इब्राहीम माचिस वाला १२१ नागदेवी स्ट्रीट पो० नं०३—इस फर्मपर सेफ्टी, सल्फर, फासफोरस और सब तरहकी माचिसका व्यापार होता है। T.A. Diyaslai इस फर्मका कुर्लामें एक माचिसका बड़ा भारी कारखाना है। उसमें करीब १३०० मनुष्य रोज काम करते हैं। यहां सब प्रकारकी माचिस तथा दारूखानाका माल तैयार होता है। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ इस्माइलजी अब्दुलजी, सेठ गुलाम हुसेन इब्राहिम, सेठ तय्यब अली इब्राहिम, सेठ साले भाई इब्राहिम और हीरालाल महाशय हैं।

—o—

वेस्टर्न इण्डिया मेच कम्पनी लि० बेलार्ड स्टेट
बर्मा मेच कम्पनी बेलार्ड स्टेट

सेठ मनसुखलालभाईकी रुचि एज्यूकेशन और सेनिटेशनके कार्मोकी ओर विशेष है। आपने दलितोद्धारमें ५० हजार रुपया दान दिया है तथा सोनगढ़ काठियावाड़में आपने एक सेनेटोरियम बनवाया है। आप नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोशिएशनके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल शेअर बाजार T. A. Relief fund यहां शेअरकी दलाली बिजिनेस होता है।

मेसर्स रायचन्द मोतीचन्द कम्पनी

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। (१) सेठ रणछोड़ भाई रामचन्द हैं। आपका मूल निवास सूरत है। (२) सेठ जीवाभाई मोहकम है। आपका मूलनिवास पाटन है। आप जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ रणछोड़भाईने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। तथा वर्तमानमें यह फर्म चांदी सोनेके बाजारमें एवं जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रायचन्द मोतीचंद कम्पनी जौहरी बाजार—यहां चांदी सोनेके तैयार दागिने तथा हीरा मोती और सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रायचंद मोतीचंद कम्पनी बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेखमेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर सोने और चांदीके इम्पोर्टका काम होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स लल्लूभाई रणछोड़दास शेअर बाजार—यहां शेअर्सका बिजिनेस होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स रायचंद मोतीचन्द कम्पनी शिवरी—यहां आपका रूईका जत्था है।

(५) सूरत—मेसर्स प्रेमचंद नाथाभाई—यहां बैङ्किग व सोने चांदीका व्यापार होता है। आपके दो रंगके कारखाने हैं। यहांके बने रंगोंकी खपत खासियां इण्डिया, बरमा, बेरिन आदि जगहोंपर है।

आपके कारखाने (१) करेल वाड़ी ठाकुर द्वार बम्बई तथा (२) मारौबाग (बम्बई) में हैं।

मेसर्स लालदास मगनलाल जे० पी०

इसफर्मके मालिक सेठ लालदासजी जे० पी० हैं। आपका जन्म बम्बईहीमें हुआ है। इसलिये आपका निवास बहुत समयसे यहींपर है। आप गुजराती वणिक सज्जन हैं। सेठ लालदासजीका

महाजनीकम्पनियां

(१) इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स लि० की रजिस्ट्री २८ फरवरी सन् १९२२ ई० को सराफीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ की थी परन्तु कम्पनीने शेअर बेंचकर १७ लाख ८५ हजारकी रकम कम्पनीकी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसका आफिस सेन्ट्रल बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(२) इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि० की रजिस्ट्री २ फरवरी सन् १९२५ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु २ ला० २५ हजारके शेअर बेचकर वसूल पूंजी लगायी गयी है। इसी पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाडिया बिल्डिंग दलाल स्ट्रीट फोर्टमें है।

(३) बाम्बे इनवेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की थी, परन्तु शेअर बेचकर ३४ ला० ५७ हजार ७० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(४) मिस्लेनियस इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ ई०को महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु शेअर बेंचकर ३२ लाख ७२ हजार ७० रु० वसूल किये गये इसी वसूल पूंजीसे व्यवसाय चल रहा है। इसका आफिस ३५६ हार्नबी रोड पर है।

(५) प्राविडेण्ट इन्वेस्टमेण्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ४ दिसम्बर सन् १९२६ ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है। इसका आफिस ५४ स्प्लेनेडरोड फोर्टमें है।

(६) मफतलाल छगनलाल भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २२ दिसम्बर सन् १९२० ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख २५ हजार की है। इसका आफिस २६५ हार्नबीरोडपर है।

(७) यूनिवर्सल ट्रेडिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १२ अगस्त सन् १९१८ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख थी परन्तु शेअर बेंचकर ९ लाख १९ हजार २सौ रुपयेकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस हरामत महल चौपाटीपर है।

(८) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री २१दिसम्बर सन् १९११ ई०में महाजनका व्यवसायकरनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसकी वर्तमान वसूल पूंजी १६७६७२७५ की है।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास

इस मशहूर कार्यालयकी स्थापना से० खेमराजजीके हाथोंसे हुई थी। आपका जन्म संवत् १९१३ में चूरूमें हुआ था। आपका खास निवास स्थान चूरू (बीकानेर स्टेट) है।

सेठ श्रीकृष्णदासजीके २ पुत्र थे, सेठ गंगाविष्णुजी एवं सेठ खेमराजजी। चूरूसे प्रथम गंगाविष्णुजी एवं पश्चात् संवत् १९२१ में सेठ खेमराजजी रतलाम आये। उस समय दोनों भाई वहां अफीमका व्यापार एवं पुस्तक विक्रयका कार्य करते थे। वहां आप अत्यंत मामूली हालतमें आये थे। आप दोनों भाई रतलाम करीब ४ वर्ष तक रहे। पश्चात् दो मासके अंतरसे दोनों भाई बम्बई आये। प्रारंभसे ही सेठ खेमराजजीकी पुस्तकोंके व्यापारमें अधिक रुचि थी, इसलिये आप दूसरे प्रेसोंकी छपी हुई पुस्तकें खरीद कर यत्र तत्र फेरी द्वारा बेंचनेका व्यवसाय करने लगे। १ सालके बाद करीब संवत १९३३।३४ में आपने अपना एक छोटासा प्रेस स्थापित किया। दिन प्रति दिन यह कार्यालय इतनी उन्नति करता गया, कि आज भारतके लब्ध प्रतिष्ठित प्रेसोंमें इसकी गिनती है। इस प्रेसके द्वारा हिन्दी तथा विशेष कर संस्कृत साहित्यकी आशातीत उन्नति हुई है। इस प्रेससे अभीतक करीब २००० ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। इस कार्यालयका स्वतंत्र पोस्ट आफिस है। इस कार्यालयके बम्बई व कल्याण दोनों प्रेसोंमें करीब ७०० व्यक्ति प्रतिदिन काम करते हैं तथा श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बईसे बाहर जानेवाली वी० पी० की औसत करीब ६० हजार एवं कल्याणसे जानेवाली वी० पी० की औसत ४२ हजार है।

संवत् १९५० में दोनों भाई अलग २ हो गये तथा श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसका संचालन सेठ खेमराजजी करने लगे, और सेठ गंगाविष्णुजीने कल्याणमें श्री लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस की अलग स्थापना की, सेठ गंगा विष्णुजीका देहावसान संवत १९६० तथा सेठ खेमराजजीका देहावसान संवत १९७० में हुआ। सेठ गंगाविष्णुजीको कोई संतान न होनेसे उनकी सारी सम्पत्तिके मालिक सेठ खेमराजजीके वंशज ही हैं। सेठ खेमराजजीकी मौजूदगीमें ही यह प्रेस आशातीत उन्नति कर चुका था। इसके छपे ग्रन्थ आज कन्या कुमारीसे लेकर हिमालय तक, शिक्षित एवं अशिक्षित सभी व्यक्तियोंके पास पहुंचते हैं व प्रत्येक घरमें रात दिन बड़े चावसे पढ़े जाते हैं।

महाजनीकम्पनियां

(१) इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स लि० की रजिस्ट्री २८ फरवरी सन् १९२२ ई० को सराफीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ की थी परन्तु कम्पनीने शेअर बेंचकर १७ लाख ८५ हजारकी रकम कम्पनीकी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसका आफिस सेन्ट्रल बैंक बिल्डिङ्ग एस्प्लेनेड रोड फोर्ट में है।

(२) इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि० की रजिस्ट्री २ फरवरी सन् १९२५ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु २ ला० २५ हजारके शेअर बेचकर वसूल पूंजी लगायी गयी है। इसी पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाडिया बिल्डंग दलाल स्ट्रीट फोर्टमें है।

(३) बाम्बे इनवेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की थी, परन्तु शेअर बेचकर ३५ ला० ४० हजार ७० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(४) मिलेनियल इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ ई०को महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु शेअर बेंचकर ३२ लाख ७२ हजार ७० रु० वसूल किये गये इसी वसूल पूंजीसे व्यवसाय चल रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड पर है।

(५) प्राविडेन्ट इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ४ दिसम्बर सन् १९२६ ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है। इसका आफिस ५५ एस्प्लेनेडरोड फोर्टमें है।

(६) मफतलाल छगनलाल भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २२ दिसम्बर सन् १९२० ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख २५ हजार की है। इसका आफिस २६५ हार्नबीरोडपर है।

(७) यूनिवर्सल ट्रेडिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १३ अगस्त सन् १९१८ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख थी परन्तु शेअर बेंचकर ६ लाख १६ हजार २सौ रुपयेकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस हमाम स्ट्रीट चौपाटीपर है।

(८) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि० की रजिस्ट्री २१ दिसम्बर सन् १९११ ई०में महाजनीका व्यवसायकरनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसकी वर्तमान वसूल पूंजी १६८१७०९१ की है।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

आदरजी कावसजी मास्टर गिरगांव रोड
आर्मीएण्ड नेवी कोआपरेटिव्ह सोसायटी लिमिटेड
ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस निकोल रोड स्प्लेनेडरोड
एंग्लो ओरियण्टल बुकडिपो १३२ कालवादेवी, रोड
एम्पायर पब्लिशिंग कम्पनी गिरगांव बैंकरोड
इण्डियन पब्लिशिंग कम्पनी लि॰ कावसजी पटेल स्ट्रीट फोर्ट
इण्डियन बुकडिपो मेडासस्ट्रीट
इण्डियन एन्ड कॉलोनियल बुक एजन्सी ४५-४६ हार्नबी रोड
वेस्टर्न प्रिंटिंग वर्क्स फ्रेरे रोड
कान्तिलाल एण्ड को॰ आर॰ गिरगांव
किंग एण्ड को॰ हार्नबीरोड
के॰ पी॰ मिस्त्री कालबादेवीरोड
खेमराज श्रीकृष्णदास कालवादेवी रोड
गंगोवाला पारख एन्ड को॰ ३१ काव्हेल कालबादेवी
गोपाल नारायण एण्ड को॰ कालवादेवी रोड
गोविन्द एण्ड को॰ एस, सेन्डहर्स्टरोड
गोवर्धन प्रेस, गिरगांव
मॅकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी लि॰ ४६ फोर्टस्ट्रीट
[illegible] बुकडिपो बोरा स्ट्रीट फोर्ट
[illegible] एण्ड को॰ कान्देवाड़ी पो॰ नं॰ ४
[illegible] एन्ड को॰ ४०, प्रिंसेस होटल लेन
[illegible] बी॰ कटनी सन्स बोरा बाजार स्ट्रीट

टाइम्स ऑफ इण्डिया, टाइम्सबिल्डिङ्ग हार्नबी रोड
ट्रैक्ट एन्ड बुक सोसायटी कालबादेवी॰
डी॰एस॰ दत्त एन्ड को॰ सारस्वत कोआपरेटिव बिल्डिङ्ग प्रे॰ष्टोर
तारापुरवाला सन्स एन्ड को॰, १९० क्रिश्चन महल हार्नबीरोड
त्रिपाठी एन्ड को॰ (एन॰ एम॰) कालवादेवी रोड
थैकर एन्ड को एस्प्लेनेड रोड
नरेन्द्र बुक डेपो लेडी जमशेदजी रोड दादर
नेशनल पब्लिशिंग कंपनी लि॰ गिरगांव बैकरोड
न्यू लक्ष्मी प्रिन्टिङ्ग प्रेस १८-२० फ्रासी हैप्परस्ट्रीट
निर्णयसागर प्रिन्टिङ्गप्रेस कालबादेवी;
पापुलर बुक डेपो गुवालिया टैंक रोड
बाम्बे बुकडिपो गिरगांव
ब्रिटिश एण्ड फॉरेन बाइबिल सोसायटी हार्नबी रोड
बरारांमल एण्ड को॰ सी॰ एम॰ १०९ प्रिंसेस स्ट्रीट
ब्लेकी एण्ड सन्स लिमिटेड फोर्ट स्ट्रीट
बेनेटकालेमन एण्ड को॰ लि॰ हार्नबी रोड
बैटरवर्थ एण्ड को॰ लिमिटेड यार्क बिल्डिंग हार्नबी रोड
मैकमिलन एण्ड को॰ हार्नबी रोड

महाजनीकम्पनियां

(१) इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स लि० की रजिस्ट्री २८ फरवरी सन् १६२२ ई० को सराफीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ की थी परन्तु कम्पनीने शेअर बेचकर १७ लाख ८५ हजारकी रकम कम्पनीकी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसका आफिस सेन्ट्रल बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लेनेड रोड फोर्ट में है।

(२) इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि० की रजिस्ट्री २ फरवरी सन् १६२५ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु २ ला० २५ हजारके शेअर बेचकर वसूल पूंजी लगायी गयी है। इसी पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाडिया बिल्डंग दलाल स्ट्रीट फोर्टमें है।

(३) बाम्बे इनवेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १६२१ में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की थी, परन्तु शेअर बेचकर ३४ ला० ५७ हजार ७० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस ३५६ हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(४) मिस्लेनियस इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ ई०को महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु शेअर बेचकर ३२ लाख ७२ हजार ७० रु० वसूल किये गये इसी वसूल पूंजीसे व्यवसाय चल रहा है। इसका आफिस ३५६ हार्नबी रोड पर है।

(५) प्राबीडेण्ट इन्वेस्टमेण्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ४ दिसम्बर सन् १६२६ ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है। इसका आफिस ५५ स्प्लेनेडरोड फोर्टमें है।

(६) मफतलाल छगनलाल भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २२ दिसम्बर सन् १६२० ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख २५ हजार की है। इसका आफिस २६५ हार्नबीरोडपर है।

(७) यूनिवर्सल ट्रेडिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १३ अगस्त सन् १६१८ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख थी परन्तु शेअर बेचकर ६ लाख १६ हजार २सौ रुपयेकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस इमारत महल चौपाटीपर है।

(८) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री २१दिसम्बर सन् १६११ ई०में महाजनका व्यवसायकरनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसकी वर्तमान वसूल पूंजी १६७६७२७५ की है।

रंगका व्यापार

हमारे देशमें रंगका व्यवसाय बहुत पुराने समयसे चला आता है। वैदिक कालसे पीताम्बर, नीलाम्बर आदिका उपयोग होता आता है। रामायण-कालमें रंगाई का काम करनेवालोंको रंगजीव कहा है उस समय कुसुम, मजीठ, लाख, पलास तथा नील विशेष प्रचलित थे। मुसलमानी कालमें भी रंगके व्यावसायकी और उसके पैदाइशकी अच्छी उन्नति थी। पर इधर ४०, ४५ वर्षोंसे हमारे देशका यह व्यवसाय दिनोदिन अवनति करता जारहा है आज तो यह हालत होगई है कि हम लोगोंको पैसे पैसे के रंगके लिये विदेशी मालका मुंह ताकना पड़ता है। विदेशोंमें तरह तरहके कृत्रिम रंगोंका आविष्कार हुआ। तथा उस मालकी चमक दमकके आगे भारतीय माल बाजारमें न ठहर सका। आज करीब २ हजार तरहके रासायनिक रंग तैयार होकर हमारे बाजारोंमें बिकते हैं। इस व्यवसायके नष्ट होनेसे भारतियोंकी बहुत बड़ी जीविका नष्ट होगई।

लड़ाईके पूर्व जर्मनी, दुनियामें खर्च होनेवाले रंगका ८५ प्रतिशत तैयार करता था। पर जब युद्धमें जर्मनीका रंग बन्द हुआ तब दुनियामें रंगकी बड़ी कमी आगई। हमारे यहां २॥-३ आनाके बक्सके तीन तीन रुपये तक दाम चढ़ गये। ऐसा मौका देखकर जापान आदि देश अपने यहां इस मालके तैयार करनेमें जुट गये, फल यह हुआ कि लड़ाईके बाद कई देशोंके रंग भारतमें आने लगे। हमारे देशमें रंगकी आयात कितनी बढ़ी, उसका पता नीचेके कोष्टकसे चलेगा।

सन् १९०३, ४ में	९८ लाख	सन १९१२, १३ में	१५२ लाख
„ १९०७, ८ में	१०४ लाख	„ १९१६ में	११४ लाख
„ १९१०, ११ में	१३४.। लाख		

विदेशी रंग प्रधानतया तीन प्रकारके होते हैं, १ अनीलीन (अलकतरेसे बना) २ अलीजरीन (मजीठसे बना रंग) ३ कृत्रिम नील।

अलकतरा तथा मजीठसे बने रंग विदेशसे आये—

१८७६, ७७ में	५ लाखके
१९०३, ४ में	८२.७ लाखके
सन् १९१२, १३ में	११२ लाखके

शेअर वेचकर वसूल पूंजी इकट्ठी की गयी और उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस याम्बे हाऊस ब्रूस रोड फोर्टमें है।

(७) किलाचंद देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १९१९ में करायी गयी थी। इनके यहां जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय होता है, इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाख की घोषित की गयी, वह सब वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठी कर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस इलाहाबाद बैंक बिल्डिंग ६३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(८) गोविन्दजी माधवजी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९१८ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ७० हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस २ रेमपार्ट रो फोर्टमें है।

(९) खानदेश श्रीकृष्ण ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ दिसम्बर सन् १९१९ ई० में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजी इस व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस ६ काकड़वाड़ीका नाका गिरगांव बैंक रोडपर है।

(१०) विट्ठलदास दामोदर थेकरसी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ सितंबर सन् १९२१ ई० में जनरल मर्चेंटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी परन्तु शेअर बेंचकर ७५ लाखकी वसूल पूंजी इकट्ठी कर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(११) जापान इम्पोटर्स लि० की रजिस्ट्री ता० ८ सितंबर सन् १९१४ में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाखकी घोषित की गयी थी। वह शेअर वेचकर इकट्ठी की गयी और वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है इसका आफिस बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१२) वेल एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जनवरी सन् १९२१ ई०में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ५० हजार घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर वेचकर १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस गोकुलदास तेजपाल अस्पतालके सामने कार्नाक रोडपर है।

(१३) डेविड एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ जनवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी वही वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १०७ स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

रंगके व्यापारी

मेसर्स सूरजी भाई वल्लभदास

इस फर्मके मालिक सेठ सूरजी भाई वल्लभदासका मूल निवास स्थान कच्छ है। इस फर्मको आपने १८।२० वर्ष पूर्व स्थापित किया। वर्तमानमें आप अपने व्यवसायका सब भार अपने पार्टनरोंके सिपुर्द कर रिटायरके रूपमें आराम करते हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपको हिन्दी-भाषा एवं शुद्ध देशीवस्त्रोंसे विशेष प्रेम है। आपने कच्छ कान्फ्रेंसके समय २० लाख रुपयोंका चंदा एकत्रित करनेमें विशेष भाग लिया था, एवं खुद भी जुदे जुदे धर्मार्थ कार्य्योंमें करीब १। लाख रुपये दिये थे। आप अपनी जातिके ११।१२ खातोंके ट्रष्टी एवं आर्यसमाजकी मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपने २ वार विलायत यात्रा की एवं वहां शुद्ध शाकाहारी जीवन बिताया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स सूरजी वल्लभदास एण्ड कम्पनी हार्नवीरोड-फोर्ट—यहां सब प्रकारके रङ्ग, केमिकल काटलयार्न आर्टिफिशल, सिल्क और मिल स्टोर्सका व्यापार होता है।

(२ बम्बई - सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी बड़गादी, यहां रङ्गका थोक व्यापार होता है।

(३) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी पुरानागंज-कानपुर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

(४) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी अमृतसर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

रंग और वार्निसके व्यापारी

अब्दुला समसूद्दीन एण्ड सन्स, शेखमेमन स्ट्रीट

इब्राहिम सुलेमान जी एण्ड सन्स बाजारगेट

ईस्माइल जी करीम भाई एण्ड सन्स फूलगली

कापड़िया ब्रदर्स अब्दुलरहमान स्ट्रीट

कासिमअली विन्नामपूंजा महमदअली मेन्शन, भिंडी बाजार

घेरा भाई जमशेद जी खामभट्टा, कालबादेवी रोड,

दादूजी पाकजी एण्ड को० धूरगली, मांडवी

शेअर बेचकर वसूल पूंजी इकट्ठी की गयी और उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस थाम्बे हाऊस ग्रूस रोड फोर्टमें है।

(७) किलाचंद देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १९१९ में करायी गयी थी। इनके यहां जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय होता है, इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाख की घोषित की गयी, वह सब वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठी कर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस इलाहाबाद बेंक बिल्डिंग ६३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(८) गोविन्दजी माधवजी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ दिसम्बर सन् १९१८ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ७० हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस २ रेमपार्ट रो फोर्टमें है।

(९) खानदेश श्रीकृष्ण ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजी इस व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस ६ काकड़वाड़ीका नाका गिरगांव बेक रोडपर है।

(१०) विट्ठलदास दामोदर थेकरसी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ सितंबर सन् १९२१ ई० में जनरल मर्चेंटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी परन्तु शेअर बेंचकर ७५ लाखकी वसूल पूंजी इकट्ठी कर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(११) जापान इम्पोटर्स लि० की रजिस्ट्री ता० ८ सितंबर सन् १९१४ में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाखकी घोषित की गयी थी। वह शेअर बेचकर इकट्ठी की गयी और वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है इसका आफिस बेंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१२) येठ एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जनवरी सन् १९२१ ई०में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ५० हजार घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेचकर १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस गोकुलदास तेजपाल अस्पतालके सामने कार्नाक रोडपर है।

(१३) डेविड एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ जनवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी वही वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १०७ स्लेनेड रोड फोर्टमें है।

उनके जत्थेदार

(१) मेसर्स नत्सूमल गोकुलदास नागदेवी स्ट्रीट बम्बई—हेड ऑफिस–शिकारपुर, ब्रांचेज फाजिल्का और व्यावर। यह फर्म फार्बस केम्बिल एण्ड कम्पनीकी कराँची ऑफिसकी शिकारपुर, अमोर, तथा फाजिल्काके लिये तथा बम्बई ऑफिसकी, पाली, व्यावर, केंकड़ी और नसीराबादके लिये ग्यारंटेड ब्रोकर्स है इसका जत्था पिंजरापोल गलीमें है।

(२) मेसर्स वीरचंद उमरसी, पांजरापोल ३ गली बम्बई T. A. Promotion, यह फर्म फोक्स एण्ड किंगुस कम्पनीकी बम्बईकी ग्यारंटेड ब्रोकर है। तथा लीवरपूलके लिये उनका एक्सपोर्ट करनेका व्यापार करती है। जत्था पांजरापोल ३ गलीमें है।

(३) मेसर्स मूलजी उमरसी पांजरापोल (मेनलाइन) बम्बई—यहां इस फर्मका जत्था है और उनकी मुकादमी का काम होता है।

(४) कासमअली इब्राहीम ढोसा खड़ग डूंगरी

(५) डेविड सासुन एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(६) भवानजी हरभगवान पांजरापोल ३ गली

(७) बाम्बे कम्पनी लिमिटेड पांजरापोल गली

(८) रतनसी तुलसीराम पांजरापोल गली

(९) साडे महम्मद धरमसी खड़ग डूंगरी

(१०) शेरअली नानजी पांजरापोल

(११) मायर नृसिंह एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(१२) ग्लेंडर्स आरबुथनाट कम्पनी

माचिसका व्यापार

माचिसके व्यापारी वडगादी और नागदेवी स्ट्रीटपर बैठते हैं। यहां स्वीडन स्वीटजरलेंड और जापानसे माचिस आती है. तथा देशी बना हुआ माल भी बिकता है। यह माल सप्ताहमें एकवार रेलपर आता है। इसी तरह फटाकड़ा आदि शस्त्रखानेका माल भी सप्ताहमें एकवार रेल्वेपर पहुंचा करता है इसका रेलवेका भाड़ा सब पेशगी ले लिया जाता है। यहांके व्यापारी आर्डर लेकर व्यापारियोंके लिये डायरेक्ट भी माल मंगा देते हैं।

शेअर बेचकर वसूल पूंजी इकट्ठी की गयी और उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस थान्से हाउस ग्रूस रोड फोर्टमें है।

(७) छिलचंद देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १९१८ में करायी गयी थी। इनके यहां जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय होता है, इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख की घोषित की गयी, वह सब वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठी कर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस इलाहाबाद बैंक बिल्डिंग १३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(८) गोविन्दजी माधवजी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ११ दिसम्बर सन् १९१८ में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ७० हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस २ रेमपार्ट रो फोर्टमें है।

(९) खानदेश श्रीकृष्ण ट्रेडिंङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ दिसम्बर सन् १९१९ ई० में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजी इस व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस ६ काकड़वाड़ीका नाका गिरगांव बेक रोडपर है।

(१०) विठ्ठलदास दामोदर थेकरसी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ सितंबर सन् १९२१ ई० में जनरल मर्चेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी परन्तु शेअर बेंचकर ७५ लाखकी वसूल पूंजी इकट्ठी कर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(११) जापान इम्पोटर्स लि० की रजिस्ट्री ता० ८ सितंबर सन् १९१४ में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाखकी घोषित की गयी थी। वह शेअर बेचकर इकट्ठी की गयी और वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है इसका आफिस बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१२) बेउ एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जनवरी सन् १९२१ ई०में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ५० हजार घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेचकर १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस गोकुलदास तेजपाल अस्पतालके सामने कर्नाक रोडपर है।

(१३) डेविड एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ जनवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी वही वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १०७ एस्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फ़िल्म्स लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फ़िल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसको २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफ़िस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) वेन्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फ़िल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफ़िस १३९ बेहराम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोवल काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २१ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफ़िस फ़र्बस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफ़िस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूरोपियन काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफ़िस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफ़िस गुलिस्तान हाउस मेरियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९२२ ई०में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफ़िस ११।१३ पर्वनेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफ़िस युसुफ बिल्डिङ्ग पर्वनेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

ज्वाइंट स्टाक कम्पनियाँ

१६ वीं शताब्दीके आरम्भमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंका यहां कहीं नामोनिशान भी न था परन्तु १० वर्ष बादसे इतिहास मिलता है कि यहां ऐसी कम्पनियां खोलनेकी व्यवस्था की गयी थी। सन् १८५० ई०में प्रथम बारही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंको रजिस्ट्री करानेकी व्यवस्थाका प्रयोग आरम्भ हुआ। सन् १८५०ई०में XLIII Act बना और उसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिष्ट्री करनेका अधिकार बम्बई, कलकत्ता, और मद्रासके 'सुप्रीम कोर्ट'. नामक प्रधान विचारालयको दिया गया। इस नये कानूनके अनुसार उक्त स्थानोंके सुप्रीमकोर्टोंको रजिष्ट्री करानेवालोंके आवेदन पत्र लेनेका अधिकार होगया। आवेदनपत्रमें निम्नलिखित बातोंका रहना आवश्यक माना गया।

(१) रजिष्ट्री कराई जानेवाली कम्पनीके हिस्सेदारोंका नाम और उनकी संख्या।

(२) कम्पनीका भावी नाम।

(३) प्रान्तके उन मुख्य २ व्यवसायी केन्द्रोंका नाम जिनसे व्यवसाय सम्बन्ध रहनेवाला हो।

(४) पूंजीका परिमाण, उसके आकार प्रकारका विवरण और प्रबन्धके लिये यदि कोई पूंजी अतिरिक्त रक्खी गयी हो तो उसका परिमाण।

(५) कितने हिस्सोंमें पूंजी विभक्त है या होगी।

उपरोक्त बातोंका स्पष्टीकरण करनेवाले आवेदन पत्रपर सुप्रीमकोर्ट रजिष्ट्री करनेकी स्वीकृति देती थी।

सन् १८५७ ई०में उपरोक्त कानूनमें संशोधन हुआ और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीके हिस्सेदारोंका दायित्वभार निश्चित रूपसे सीमाबद्ध कर दिया गया। सन् १८६० ई० में कानूनमें पुनः संशोधन हुआ और एक नवीन कानून Act VII पास किया गया। इस नवीन कानूनमें भी सीमाबद्ध दायित्व के सिद्धान्तको ही प्राधान्य दिया गया और ज्वाइन्ट-स्टाक बैंकिंग कम्पनी स्थापित की गयी। सन् १८६६ ई०में पुनः कानून संशोधनकारी X Act पास हुआ। सन् १८८२ ई० में VI Act बना और अधिक समयतक यही व्यवहारमें प्रचलित रहा। सन् १९१३में पुनः संशोधन हुआ और आजतक यही काममें आ रहा है।

सन् १९१३ के इण्डियन कम्पनीज़ ऐक्ट ७ के अनुसार रजिस्ट्री द्वारा लिमिटेड कीगयी कुछ कम्पनियां:—

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसको २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) येंग्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ वेद्राम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोवस काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २६ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्वस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगेण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुजिस्तान हाऊस नेपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ सितम्बर सन् १९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

ज्वाइंट स्टाक कम्पनियाँ

१६ वीं शताब्दीके आरम्भमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंका यहां कहीं नामोनिशान भी न था परन्तु १० वर्ष बादसे इतिहास मिलता है कि यहां ऐसी कम्पनियां खोलनेकी व्यवस्था की गयी थी। सन् १८५० ई०में प्रथम बारही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिस्ट्री करानेकी व्यवस्थाका प्रयोग आरम्भ हुआ। सन् १८५०ई०में XLIII Act बना और उसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिस्ट्री करनेका अधिकार बम्बई, कलकत्ता, और मद्रासके 'सुप्रीमकोर्ट', नामक प्रधान विचारालयको दिया गया। इस नये कानूनके अनुसार उक्त स्थानोंके सुप्रीमकोर्टोंको रजिस्ट्री करानेवालोंके आवेदन पत्र लेनेका अधिकार होगया। आवेदनपत्रमें निम्नलिखित बातोंका रहना आवश्यक माना गया।

(१) रजिस्ट्री कराई जानेवाली कम्पनीके हिस्सेदारोंका नाम और उनकी संख्या।

(२) कम्पनीका भावी नाम।

(३) प्रान्तके उन मुख्य २ व्यवसायी केन्द्रोंका नाम जिनसे व्यवसाय सम्बन्ध रहनेवाला हो।

(४) पूंजीका परिमाण, उसके आकार प्रकारका विवरण और प्रबन्धके लिये यदि कोई पूंजी अतिरिक्त रक्खी गयी हो तो उसका परिमाण।

(५) कितने हिस्सोंमें पूंजी विभक्त है या होगी।

उपरोक्त बातोंका स्पष्टीकरण करनेवाले आवेदन पत्रपर सुप्रीमकोर्ट रजिस्ट्री करनेकी स्वीकृति देती थी।

सन् १८५७ ई०में उपरोक्त कानूनमें संशोधन हुआ और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीके हिस्सेदारोंका दायित्वभार निश्चित रूपसे सीमाबद्ध कर दिया गया। सन् १८६० ई० में कानूनमें पुनः संशोधन हुआ और एक नवीन कानून Act VII पास किया गया। इस नवीन कानूनमें भी सीमाबद्ध दायित्व के सिद्धान्तको ही प्राधान्य दिया गया और ज्वाइन्ट-स्टाक बैंकिंग कम्पनी स्थापित की गयी। सन् १८६६ ई०में पुनः कानून संशोधनकारी X Act पास हुआ। सन् १८८२ ई० में VI Act बना और अधिक समयतक यही व्यवहारमें प्रचलित रहा। सन् १९१३में पुनः संशोधन हुआ और आजतक यही काममें आ रहा है।

सन् १९१३ के इण्डियन कम्पनीज् ऐक्ट ७ के अनुसार रजिस्ट्री द्वारा लिमिटेड कीगयी कुछ कम्पनियां:—

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसको २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) वेग्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ वेद्राम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोवल काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २६ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्बस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगेण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२८ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कल-कजायो खूब मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुजिस्तान हाऊस नेपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६सितम्बर सन्१९२२ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ मर्चेन्ट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ जनवरी सन् १९२३ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस युसुफ बिल्डिङ्ग मर्चेन्ट स्ट्रीट फोर्टमें है।

यह बैंक पूर्ण रुपेण भारतीय बैंक है। इसका समस्त कार्य भारतीयों ही के हाथोंमें है। देशके भिन्न भिन्न सेन्ट्रोंमें इसकी कितनी ही शाखाएं हैं। इसका आफिस फ्लोरा फाउन्टेनमें है।

(९) बाम्बे बुलियन एक्सचेंजकी रजिस्ट्री २४ जनवरी सन् १९२३ ई० में हुई थी। इसकी वसूल पूंजी दस लाखकी है। इसकी इमारत मोती बाजारमें है।

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

(१) करीम भाई इब्राहिम एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १४ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेचकर ६३ लाख ७५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीम भाई हाउस आउट्रम रोड फोर्टमें है।

(२) करीम भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ सितम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सी-का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी जो २५ लाख की घोषित की गयी थी उसीको वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीमभाई हाउस आउट्रमरोड फोर्टमें है।

(३) टाटा सन्स लि० की रजिस्ट्री ८ नवम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ २५ लाख की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर १करोड़ १७ लाख ६४ हजार ५०० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाउस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(४) कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २९ सितम्बर सन् १९२० ई० को एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़ दस हजारकी घोषित की गयी थी जो वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठीकर व्यवसायमें लगा दी गयी है। इसका आफिस रेडीमनी बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़की घोषित की गयी थी वह वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस स्प्लेनेड़ रोड फोर्टमें हैं।

(६) मार० डी० टाटा एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९१९ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख १०० रु० की घोषित की गयी थी परन्तु ७५ लाख ६ हजार ३० रु०

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्म्स लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) रंजीत लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ वेदराम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोवल काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २६ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्बेस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूनाइडा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुलिस्तान हाऊस नेपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६सितम्बर सन्१९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

यह बैंक पूर्ण रुपेण भारतीय बैंक है। इसका समस्त कार्य भारतीयों ही के हाथोंमें है। देशके भिन्न भिन्न केन्द्रोंमें इसकी कितनी ही शाखाएं हैं। इसका आफिस फ्लोरा फाउन्टेनमें है।

(९) बाम्बे बुलियन एक्सचेंजकी रजिस्ट्री २४ जनवरी सन् १९२३ई० में हुई थी। इसकी वसूल पूंजी दस लाखकी है। इसकी इमारत मोती बाजारमें है।

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

(१) करीम भाई इब्राहिम एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १४ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर ६३ लाख ७५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीम भाई हाउस आउट्रम रोड फोर्टमें है।

(२) करीम भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ सितम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सी-का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी जो २५ लाख की घोषित की गयी थी उसीको वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीमभाई हाऊस आउट्रमरोड फोर्टमें है।

(३) टाटा सन्स लि० की रजिस्ट्री ८ नवम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ २५ लाख की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर १करोड़ १७ लाख ६४ हजार ५०० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(४) कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २९ सितम्बर सन् १९२० ई० को एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़ दस हजारकी घोषित की गयी थी जो वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठीकर व्यवसायमें लगा दी गयी है। इसका आफिस रेडीमनी बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़की घोषित की गयी थी वह वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस स्प्रेनेड रोड फोर्टमें है।

(६) आर० डी० टाटा एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९१९ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख १०० रु० की घोषित की गयी थी परन्तु ७५लाख १ हजार ३० रु०

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) वेग्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १२९ वेहराम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) ब्रोवस काटन एण्ड कम्पनी लि० को रजिस्ट्री २६ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्वस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रेल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगेण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२८ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुजिस्तान हाऊस नेपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६सितम्बर सन्१९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ परवंगट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२३ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस दुमुख बिल्डिङ्ग परवंगट स्ट्रीट फोर्टमें है।

यह बैंक पूर्ण रूपेण भारतीय बैंक है। इसका समस्त कार्य भारतीयों ही के हाथोंमें है। देशके भिन्न भिन्न केन्द्रोंमें इसकी कितनी ही शाखाएं हैं। इसका आफिस फ्लोरा फाउन्टेनमें है।

(९) बाम्बे बुलियन एक्सचेंजकी रजिस्ट्री २४ जनवरी सन् १९२३ई० में हुई थी। इसकी वसूल पूंजी दस लाखकी है। इसकी इमारत मोती बाजारमें है।

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

(१) करीम भाई इब्राहिम एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १४ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर ६३ लाख ७५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीम भाई हाउस आउट्रम रोड फोर्टमें है।

(२) करीम भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ सितम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी जो २५ लाख की घोषित की गयी थी उसीको वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीमभाई हाऊस आउट्रमरोड फोर्टमें है।

(३) टाटा सन्स लि० की रजिस्ट्री ८ नवम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ २५ लाख की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर १करोड़ १७ लाख ६४ हजार५०० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(४) कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ सितम्बर सन् १९२० ई० को एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़ दस हजारकी घोषित की गयी थी जो वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठीकर व्यवसायमें लगा दी गयी है। इसका आफिस रेडीमनी बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़की घोषित की गयी थी वह वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस स्प्रेनेड रोड फोर्टमें है।

(६) आर० डी० टाटा एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९१९ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख १०० रु० की घोषित की गयी थी परन्तु ७५ लाख ६ हजार ३० रु०

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसको २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) वेन्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ बेहराम महल कालबादेवी रोडपर है।

रुई

(१) मोबल काटन एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २१ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्बस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रेल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगेण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कता-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुजिस्तान हाऊस नैपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ सितम्बर सन् १९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन काटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१४)आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता०११ मार्च सन् १९२४ ई०में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) बाल्मर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बेलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एच० बैरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई०में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ‡

---

*इसके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियां तथा सभी प्रकारका शीशेके बर्तन (झाड़-फानूस) का सामान मिलता है।

‡ इसके यहांसे रुई विदेश भेजा जाता है।

[illegible] बम्बई

पं० गजाननजी शर्मा वैद्य बम्बई

स्व० पं० हनुमान प्रसादजी वैद्य बम्बई

(१४) आमेराडूस (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता०११ मार्च सन् १९२५ ई०में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग एस्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) वालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० बेरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई०में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ‡

---

*इनके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियों तथा सभी प्रकारका शीशेके बर्तन (ग्लास-वेयर) का सामान मिलता है।

‡ इनके यहांसे हर्रा विदेश भेजा जाता है।

हरिहर फार्मसी

इस औषधालयके मालिक वैद्य हरिशङ्कर लाधाराम हैं। आपने इसकी स्थापना सन् १९१२ में की। यों तो वैद्यजीका खास निवास कठियावाड़ है पर जनतामें आप अहमदाबादवालोंके नामसे विशेष परिचित हैं। आप मुत्राशयके रोगोंके, खास वैद्य हैं। इसके अतिरिक्त पांडुरोग और एनी-मियांके भी आप चिकित्सक हैं। आपको इन रोगोंका ४० वर्षोंका अनुभव हैं। आपको कई देशी रईस और अंग्रेजोंसे प्रशंसा पत्र मिले हैं। इस समय आपके ३ औषधालय चल रहे हैं। (१) हरीहर फार्मसी, हीरामहल कालबादेवीरोड—(२) वैद्य हरीशङ्कर लाधाराम, माणक चौक अहमदाबाद (३) वैद्यहरीशङ्कर लाधाराम चउटाना पुलके बाजूमें सूरत। अहमदाबादका औषधालय सन् १९०३ में स्थापित हुआ था। अभीतक करीब ३ लाख रोगियोंको आराम आपने किया है।

पब्लिक संस्थाएं

ऐनथ्रापालोजिकल सोसाइटी—(स्थापित सन् १८८६ ई०) इस सोसाइटीका कार्यालय स्थानीय टाऊनहालमें है। यह संस्था भारतमें बसनेवाली विभिन्न जातियोंके शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकासकी वास्तिक खोज करनेके काममें लगी हुई है। यह संस्था संसारकी अन्य ऐसी ही संस्थाओंसे पत्र व्यवहार कर विचार विनिमयका कार्य भी करती रहती है। इसकी बैठकें मासिक होती हैं और उनमें उपरोक्त खोज सम्बन्धी निबन्ध पढ़े जाते हैं और तत्सम्बन्धी वाद विवाद भी होता है। इस संस्थाका सदस्य शुल्क १०) रुपया वार्षिक है।

रायल एशियाटिक सोसाइटी (बम्बईवाली शाखा)। यह संस्था सन् १८०४ ई० में बाम्बे लिटरेरी सोसाइटीके नामसे स्थापित हुई थी। परन्तु ब्रिटेनकी रायल एशियाटिक सोसाइटीसे सम्बन्ध हो जानेके कारण यह उक्त सोसाइटोकी शाखाके रूपमें बदल गयी। इसका सदस्य शुल्क ५०) वार्षिक है।

बाम्बे नेचरल हिस्ट्री सोसाइटी फोर्ट—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८८३ ई० में भूगर्भ विद्याकी व्यवहारिक खोजमें सदस्योंके अनुभवपर विचार करने और पशुओंके सम्बन्धमें ऐतिहासिक खोज करनेके लिये हुई थी। इस संस्थाके पास एक बहुमूल्य पुस्तकालय प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकोंका है और कितने ही प्रकारके मृत पक्षियों, कीडे मकोड़ों, सापों और अण्डोंका भी प्रशंस-नीय संग्रह है।

सासुन मेकैनिक इन्स्टीट्यूट फोर्ट—इसकी स्थापना सन् १८४७ ई० में हुई थी पर इसका वर्तमान नाम संस्कार सन् १८७० ई० में हुआ। यह संस्था वैज्ञानिक विषयोंकी अध्ययन सम्बन्धी सुविधाओंके लिये स्थापित की गयी थी। इसके पास वैज्ञानिक विषयकी पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। यहां विदेशी पत्रोंका भी अच्छा संग्रह है।

(१४)आमेगड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १६२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता०११ मार्च सन् १६२५ ई०में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग स्ट्रेनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) वालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १६२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० बैरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १६२० ई०में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १६२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ÷

*इसके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियों तथा सभी प्रकारका शीशेके वर्तन (झाड़-फानूस) का सामान मिलता है।

÷ इसके यहांसे रुई विदेश भेजा जाता है।

इस संस्थाकी ओरसे चलते फिरते पुस्तकालयोंका अच्छा प्रबन्ध है। इस समय संस्थाकी ओरसे १०५ पुस्तकालयके लगभग चल रहे हैं और निर्धनी समाजको उनसे लाभ पहुंचाया जाता है श्रमजीवी वर्गके लिये इसकी ओरसे रात्रिपाठशालाओं का प्रबन्ध है। सामाजिक प्रश्नोंको लेकर सिनेमा द्वारा व्याख्यानोंका प्रबन्ध करना, होली दिवालीपर गाली बकने और जुआ खेलनेकी प्रथाको हटानेके लिये भी यह संस्था सतर्क रहती है इस संस्थाकी ओरसे स्पेशल सर्विस क्वार्टरली नामका त्रैमासिक पत्र भी निकलता है।

आर्यन एज्यूकेशनल सोसाइटी—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८९७ ई० में नौ तरुण ग्रेजुएटों द्वारा की गयी थी। आरम्भमें इस संस्थाका नाम मराठा एज्यूकेशनल सोसाइटी था। इसका उद्देश्य यह था कि शिक्षाके साथ धर्म तत्वका समावेश कराया जाय और साथ ही भारतीयोंके हाथमें पूर्ण रूपेण सम्पूर्ण व्यवस्था भार दे अल्प व्यय साध्य शिक्षाको घर घर पहुंचाया जाय। इस संस्थाने स्थानीय गिरगांवमें एक हाई स्कूल स्थापित कर अपना कार्य आरम्भ किया। आज इस संस्थाकी ओरसे कितनेही स्कूल कई मुहल्लोंमें चल रहे हैं। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार एक ऐसे बोर्डके हाथमें है कि जिसके सदस्य आजीवन सदस्यके नामसे सम्बोधित होनेवाले तरुण ग्रेजुएट्स हैं। और इनकी सहायता स्थायी शिक्षक करते हैं। आजीवन सदस्य और स्थायी शिक्षक वेही लोग हो सकते हैं जो स्वल्प वेतन ले (२० और २५ क्रमशः) संस्थाकी सेवा करनेके लिये प्रतिज्ञा पत्र लिख देते हैं। इस समय ६ आजीवन सदस्य और १३ स्थायी सदस्य इस संस्थाका कार्य प्रबन्ध चला रहे हैं। सन् १९२४ ई० में जो व्यवस्था समिति ५ वर्षों के लिये निर्वाचित की गयी थी उसमें निम्नलिखित सज्जन पदाधिकारी हैं।

(१) श्रीयुत मुकुन्दराव रामराव जयकर एम० ए० एल० एल० बी० बार-एटला०, एम० एल, ए० ये दोनों ट्रस्टी हैं।
(२) पद्मनाथ भास्कर शिङ्गने बी० ए० एल० एल बी०
(३) गोपाल कृष्ण देवधर एम० ए० (प्रमुख)
(४) नारायण लक्ष्मण वालगुर्दे बी० ए० एल० एल० बी० (मंत्री)

बाम्बे स्टुडेन्टस ब्रदरहुडः—सन् १८८९ ई० में प्रो० एन० जी० वेलिङ्कर एम० ए० ने इस संस्थाकी स्थापना की थी। इसका प्रधान उद्देश्य संस्थाके सदस्योंकी नैतिक एवं मानसिक उन्नति कर उन्हें आदर्श नागरिक बनानेकी चेष्टा करना है। इतना होनेपर भी इ प्रवर्तककी यह कभी भी इच्छा न थी कि यह संस्था किसी विशेष प्रकारका धार्मिक या राजनैतिक आन्दोलनको उत्तेजन दे। इसके वर्तमान पदाधिकारी इस प्रकार हैं।

(१) एन० आर० जयकर एम० ए० एल० एल० बी० (प्रमुख)
(२) बी० एन० मोतीवाला बी० ए० एल० एल० बी० (उप-प्रमुख)

(१४) आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में मेनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १६ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ११ मार्च सन् १९२४ ई० में मेनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग एस्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) बाल्मर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में मेनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रोट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० पेरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई० में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२१ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ≠

---

*इसके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियों तथा सभी प्रकारके शीशेके सामान (ग्लास-वेयर) का सामान मिलता है।

≠ इसके यहांसे रुई विदेश भेजा जाता है।

इसकी देख रेखमें लण्डनके सिटी एण्ड गिल्डस आफ लण्डन इन्स्टीट्यूट की भी परीक्षायें ली जाती हैं। इसके प्रिन्सिपल श्रीयुत ए० जे० टर्नर० जे० पी० वी० एस० सी० हैं।

(१) अन-जुमान-इस्लाम बम्बई (स्थापित सन् १८७५ ई०।) इसका कार्यालय बोरी बन्दर स्टेशनके सामने है। इसकी नगरमें तीन शाखाएं हैं जहां इस्लामी सभ्यता और संस्कारको सुदृढ़ करनेवाले सिद्धान्तोंका प्रचार प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा किया जाता है। इसकी ओरसे बोरी बन्दर वाले निजके विशाल भवनमें मेट्रिक तककी शिक्षा देनेके लिये एक स्कूल है। दूसरा स्कूल स्थानीय सैण्डहर्स्ट रोडपर उमरखाड़ी पोस्ट आफिसके सामने है। औरतोंका नागपाड़ेमें मिडिल स्कूल है। इस संस्थाकी ओरसे पुस्तकालय भी हैं जहां इस्लामी साहित्यका अच्छा संग्रह किया गया है। इनमें एम० एच० मकबा लायब्रेरी और करीमिया लायब्रेरी प्रधान हैं। इस संस्थाको सर आगाखांसे पूरी सहायता मिल रही है।

कालेज आफ इन्टरनेशनल लैंग्वेजेस (स्था० १६०९)—इस कालेजमें फ्रेंच, जर्मन आदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषाएं सिखायी जाती हैं। यहांकी शिक्षा पद्धति रोसेन्थालके ढंगकी है और वह लैंग्वेजो-फोन द्वारा दी जाती है। इसका कार्यालय प्रार्थना समाज गिरगामके पास है। इसके प्रिन्सिपल मि० एल० ए० मिन्टो हैं।

बाम्बे एजूकेशनल सोसायटी भाई खाला (स्था० १८१५ ई०)—यह संस्था इंग्लैंडकी चर्चके सिद्धान्तानुसार ईसाई सभ्यताकी शिक्षा दीक्षा योरोपियन बच्चोंको देती है। इसके साथ ही उन्हें कला-कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिससे वे अपनी आजीविकाके प्रश्नको हल कर समाजके लिये भार स्वरूप प्रतीत न हों। इसके प्रधान सहायक बम्बईके गवर्नर माने जाते हैं।

दावर कालेज आफ कामर्स, लॉ, एकनामिक्स एण्ड बैंकिंग—इसकी स्थापना सन् १८६० ई० में हुई थी। इसका कार्यालय फ्लोराफाउन्टेनके पास किलेमें है। यह कालेज अपने ढंगका भारतमें निराला ही है। भारतीय नरेशोंमें महाराज गायकवाड़, महाराज मैसूर, महाराज ग्वालियर, महाराज पटियाला तथा महाराज इन्दौरकी ओरसे इस कालेजमें विशेष प्रकारकी छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। कई देशी राज्य अपनी ओरसे यहां छात्र भेजते हैं जो प्रमाण पत्र प्राप्त कर वहां लौट जाते हैं और आधुनिक परिपाटीपर राज्यका अर्थविभाग चलाते हैं। इस कालेजमें व्यवसाय, कानून, सरकारी अर्थविभागकी नौकरी, बैंक व्यवस्था, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंके सेक्रेटरी और अकाउण्टेण्टशी परीक्षाओंके लिये छात्र तैयार किये जाते हैं। इनमेंसे कितनीही परीक्षायें भारतमें और शेष इंग्लैंडकी शिक्षा समितियोंकी ओरसे बम्बईमें ली जाती हैं। जो परीक्षायें यूरोपमें ही दी जा सकती हैं उनके लिये कालेजमें पाठ्यक्रम पूरा कराके कालेज अपनी देख रेखमें परीक्षार्थीको विदेश भेजता है।

इसके प्रिन्सिपल श्री एस० आर० दावर हैं आप भारतमें इस विषयके जाननेवाले अद्वितीय पुरुष माने जाते हैं। इस कालेजने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

(१४) आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में इन्डेन्ट एजेएटके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ११ मार्च सन् १९१५ ई० में इन्डेन्ट एजेएटके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी मूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस वार्टी हैं विल्डिङ्ग स्ट्रेंनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) वालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में इन्डेन्ट एजेएटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स विल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेंटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चैम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एच० बैरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई० में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी विल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी मूल पूंजी व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ✣

---

*इसके यहां गैस और विजलीकी बत्तियां तथा सभी प्रकारका शीशेके बर्तन (ग्लास-वेयर) सामान मिलता है।

✣ इसके यहांसे हर्रा विदेश भेजा जाता है।

पद्धतिके अनुसार औषधियां तैयार करनेकी खोजका कार्य होता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिसे बड़े महत्त्वके विषयका ऊहापोह कर तात्विक खोजमें लगा है।

बाम्बे वेटेरिनरी कालेज, परेल—यह संस्था भी बम्बई सरकारकी ओरसे चल रही है। इसमें विद्यार्थियोंको पशुपालन और पशु चिकित्साकी शिक्षा दी जाती है। पशुओंकी चिकित्साके लिए बाई सकाबाई दीनशा पेटिट हास्पिटल है। इसीकी देखरेखमें यहांके परीक्षार्थियोंको पशु पालन तथा पशुचिकित्सक विषयोंकी व्यवहारिक शिक्षामें विशेष ज्ञान प्रदान करनेका प्रशंसनीय प्रबन्ध भी किया गया है। यहीं पर सरकार और देशी राज्यों तथा नगर संस्थाओंमें कार्य करनेवाले दायित्व पूर्ण कर्मचारियोंके पदकी भी शिक्षा दी जाती है।

बाम्बे इन्स्टीट्यूट फार डेफ एण्ड म्यूट—यह संस्था बहिरे और गूंगे लोगोंकी शिक्षाकी व्यवस्था करती है। इसका स्कूल नेसबिटरो मझगांवमें है। इसकी स्थापना सन् १८८५ में हुई थी। यहां सभी जाति—और सभी श्रेणीके गूंगे और बहरे स्त्री पुरुष भर्ती किए जाते हैं। पुरुषोंके लिए छात्रनिवास भी है। शिक्षा मुफ्तमें दी जाती है और मुफ्तमें ही खाने पीनेका भी प्रबन्ध होता है।

टिम्बर मरचेंट्स

अब्दुल लतीफ़ हाजी लतीफ ३६ सेकसरियारोड, भायखला
अहमद उस्मान .१०६ लोहारचाल
अहमद सकुर एण्ड को० विक्टोरिया रोड
गणपतराव रुक्मानन्द
दलाल एण्ड को० री रोड
दुर्लभदास एण्ड को० रामचन्द्र बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
देसाई ब्रदर्स ठाकुरद्वार रोड
धरसी आस एण्ड को० री रोड, टैंक बन्दर
बृजमोहन बनवारीलाल री रोड
बाजेस एण्ड को० वालेस स्ट्रीट
भगवानदास बागला रायबहादुर
श्यामलदास पुरुषोत्तमदास १ ग्वाडा नाका कालवा देवी

संगमरमरके व्यापारी

जीजाभाई के० एण्ड सन्स बैंक स्ट्रीट
बम्बई टाईल मार्ट २१ बैंक स्ट्रीट

भोगीलाल सी० एण्ड को० १७ एल्फिंस्टन रोड
वालमेर एण्ड को० ११ स्याम स्ट्रीट
वार्डर एण्ड को० २७ हमाम स्ट्रीट
साजन एण्ड को० टेमरिन्ड लेन फोर्ट
सीताराम लक्ष्मण एण्ड सन्स वारवेव

मोटर एण्ड साईकल डिलर्स

अलबर्ट साईकल वर्क्स ६६ बाजार गेट स्ट्रीट
एशियन मोटरकार एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
एक्सी मैन्युफेक्चरिंग एण्ड को०लि०सैंडहर्स्टरोड
थालवाला एण्ड को० १३२।१३४ कालबा देवी
पटेल एन० डी एन्ड को० ५।६ गामदेवी
पारामाउंट मोटर एण्ड को० हार्नबी रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग कम्पनी ५८ सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग सर्विस प्रिन्सेस स्ट्रीट
बम्बई मोटरकार एण्ड को० अपोलो बन्दर
रसीलाल एण्ड को० गोल बिल्डिंग फ्रेंच ब्रीज
लेमिंगटन साइकल एण्ड मोटर कम्पनी
सफी ओटो मोबाईल्स सैंडहर्स्ट रोड

---

(१४) आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १९२२ ई० में मैनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ११ मार्च सन् १९२५ ई० में मैनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी स्व पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चर्टर्ड विल्डिङ्ग स्ट्रेंनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) वालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में मैनेजिंग एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखकी वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स विल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चेम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० बेरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२० ई० में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी विल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १९२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ⁂

---

* इसके यहां गम और शिजओंकी बनियाँ तथा सभी प्रकारका शीशाके सामान (...) का सामान निकला है।

⁂ इसके यहांसे हर्रे विदेश भेजा जाता है।

पद्धतिके अनुसार औषधियां तैयार करनेकी खोजका कार्य होता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिसे बड़े महत्वके विषयका उहापोह कर तात्विक खोजमें लगा है।

बाम्बे वेटेरिनरी कालेज, परेल—यह संस्था भी बम्बई सरकारकी ओरसे चल रही है। इसमें विद्यार्थियोंको पशुपालन और पशु चिकित्साकी शिक्षा दी जाती है। पशुओंकी चिकित्साके लिए बाई सकरबाई दीनशा पेटिट हास्पिटल हैं। इसीकी देख रेखमें यहांके परीक्षार्थियोंको पशु पालन तथा पशुचिकित्सक विषयोंकी व्यवहारिक शिक्षामें विशेष ज्ञान प्रदान करनेका प्रशंसनीय प्रबन्ध भी किया गया है। यहीं पर सरकारी और देशी राज्यों तथा नगर संस्थाओंमें कार्य करनेवाले दायित्व पूर्ण कर्मचारियोंके पदकी भी शिक्षा दी जाती है।

बाम्बे इन्स्टीट्यूट फार डेफ एण्ड म्यूट—यह संस्था बहिरे और गूंगे लोगोंकी शिक्षाकी व्यवस्था करती है। इसका स्कूल नेसबिटरो मझगांवमें है। इसकी स्थापना सन् १८८१ में हुई थी। यहां सभी जाति—और सभी श्रेणीके गूंगे और बहरे स्त्री पुरुष भर्ती किए जाते हैं। पुरुषोंके लिए छात्रनिवास भी है। शिक्षा मुफ्तमें दी जाती है और मुफ्तमें ही खाने पीनेका भी प्रबन्ध होता है।

टिम्बर मरचेंट्स

अब्दुल लतीफ हाजी लतीफ ३६ सेकसरियारोड, भायखला
अहमद बस्मान १०६ लोहारचाल
अहमद सकुर एण्ड को० विक्टोरिया रोड
गनपतराय रुकमानन्द
दलाल एण्ड को० री रोड
दुर्लभदास एण्ड को० रामचन्द्र बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
देसाई ब्रदर्स ठाकुरद्वार रोड
पारसी भ्रास एण्ड को० री रोड, टैंक बन्दर
बृजमोहन बनवारीलाल री रोड
वालेस एण्ड को० वालेस स्ट्रीट
भगवानदास बागला रायबहादुर
श्यामलदास पुरुषोत्तमदास १ न्यारा नाका कालबा देवी

संगमरमरके व्यापारी

ओझाभाई के० एण्ड सन्स बैंक स्ट्रीट
बम्बई टाइल मार्ट २१ बैंक स्ट्रीट
भोगीलाल सी० एण्ड को० १७ एल्फिंस्टन रोड
वालमेर एण्ड को० ११ स्याम स्ट्रीट
वार्डर एण्ड को० २७ हमाम स्ट्रीट
साजन एण्ड को० टेमरिन्ड लेन फोर्ट
सीताराम लक्ष्मण एण्ड सन्स वासदेव

मोटर एण्ड साईकल डिलर्स

अलबर्ट साईकल वर्क्स ६६ बाजार गेट स्ट्रीट
एरियन मोटरकार एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
एस्सी मैन्युफेक्चरिंग एण्ड को० लि० सैंडहर्स्टरोड
धानवाला एण्ड को० १३२।१३४ कालबा देवी
पटेल एन० डी एन्ड को० २१६ गामदेवी
पारामाउंट मोटर एण्ड को० हार्नबी रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग कम्पनी ६८ सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग सर्विस प्रिन्सेस स्ट्रीट
बम्बई मोटरकार एण्ड को० अपोलो बन्दर
रतीलाल एण्ड को० गोल बिल्डिंग फ्रेंच ब्रीज
लेमिंग्टन साइकल एण्ड मोटर कम्पनी
सबी मोटो मोटर्स सैंडहर्स्ट

शीशेका कारखाना

(१) ओगले ग्लास वर्क्स लि०की रजिस्ट्री ता० २० दिसम्बर सन् १९२२ ई० को खोली गई थी। इसकी वसूल पूंजी ४ लाख ४४ हजार ६३१ रु० की है।

कृषियंत्र

(१) किर्लोस्कर बन्धु लि०—की रजिस्ट्री ता० १२ जनवरी सन् १९२० ई० को करायी गयी थी। इसकी वसूल पूंजी १२ लाख ६२ हजार रुपयों की है।

औषधालय

श्री मारवाड़ी आयुर्वेदीय औषधालय

यह औषधालय संवत् १९७० में स्व० सेठ सोनारामजी पोद्दार (मालिक फर्म चैनरूप जेसराज) और सेठ शिवनारायण सूरजमल नेमानी द्वारा खोला गया। इसमें आयुर्वेदीय और एलो-प्येथिक दोनों विभाग खोले गये, पर रिपोर्टों से ज्ञात हुआ कि जनताने आयुर्वेदिक सेही विशेष लाभ उठाया, फलतः दूसरा विभाग बन्द कर दिया गया। एलोप्येथिक विभागके बन्द करदेनेपर आयुर्वेदिक विभागका खर्च बढ़ा दिया गया। इस औषधालयसे आजतक ८१०००० रोगियोंने लाभ उठाया है। १० हजार कष्टसाध्य रोगियोंने अपने रोग मिटजानेके उपलक्षमें प्रशंसा पत्र दिये हैं। इस औषधालयमें निहायत गरीबोंके लिये पथ्यादिका भी प्रबन्ध है।

इस औषधालयकी विशेष ख्याति और उन्नतिका कारण वैद्यराज पं० हनुमानप्रसादजी जोशी थे। आप सीकर (जयपुर) के निवासी थे। आपका जन्म संवत १९५४ में हुआ। आप आयु-र्वेद मार्तण्ड पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्यके प्रधान शिष्य थे। आप वैद्यकके विशारद, वैद्य-शास्त्री और संस्कृत साहित्याचार्य थे। हिन्दीके आप सिद्ध हस्त लेखक और कवि थे। इसके अतिरिक्त आपने अपनी हिन्दी आयुर्वेदिक ग्रंथ मालासे कई वैद्यक विषयके ग्रंथ निकाले आपने अपने पिताजीके नामसे नंदकिशोर सस्ती पुस्तक माला स्थापित की थी। उपरोक्त ग्रंथमालासे भी कई ग्रन्थ प्रकाशित किये गये थे। आपने अपने छोटेसे जीवनमें हिन्दी भाषा और आयुर्वेद की अच्छी सेवा की थी आपका देहावसान संवत १९८० में हुआ।

वर्तमानमें इस औषधालयका सञ्चालन पं० गजानन शर्मा वैद्य भिषग्वर करते हैं। आपकी अनुपम चिकित्सा पद्धतिके कारण औषधालयमें रोगियोंकी संख्या १५०–२०० तक प्रति दिन रहती है। इस औषधालयमें छुआछूतका विचार नहीं किया जाता।

जनताको शीघ्र फलप्रद, आयुर्वेदोक्त औषधि सु[illegible]।

महोदयने कालबादेवी रोडपर, कल्पतरु फार्मेसी

मथुरादास रौजी काजी सैय्यद स्ट्रीट
मोतीलाल रंगीलादास " "
मोतीलाल हीरालाल " "
लालूभाई हरजीवन " "
हीरालाल गणेश " "

ग्रामो-फोनके व्यापारी

आर्देशीर होरमसजी चर्चगेट स्ट्रीट
पटेल ए० एन्ड को० कालबादेवी रोड
बम्बई फोन एण्ड जनरल एजंसी कालबादेवी रोड
रामचंद्र टी० सी० ब्रदर्स " "
लैमिंगटन साईकल एन्ड ग्रामोफोन चर्चगेट
वर्मा जे० एण्ड को० कालबादेवी रोड
वाटसन एण्ड को० " "

वाच-मरचेंट्स

अब्दुल कादिर अहमद अली एण्ड को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
इस्टर्न वाच एण्ड को० हार्नबी रोड
एशियन वाच एण्ड को० बाजारगेट स्ट्रीट
कॉमर्शियल वाच एण्ड को० मेडो स्ट्रीट
कारोनेशन वॉच एन्ड को० "
जमशेदजी नौरोजजी एन्ड को० अब्दुल रहमान
मेसानिया एफ. एन ब्रदर्स अब्दुल रहमान स्ट्रीट
रोशन वाच एन्ड को० गिरगांव रोड
वर्ग वाच एन्ड को० किंग्ज बिल्डिंग, हार्नबी रोड
वेस्ट एण्ड वाच एण्ड को० ४९ एस्प्लेनेड रोड
शापुरजी रुस्तमजी बाजारगेट
स्टैंडर्डवाच एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
स्वीस वाच वर्क्स ५ लेमिंगटन रोड

कांचके समानके व्यापारी

अब्बास एण्ड को० १८७ अब्दुल रहमान स्ट्रीट
अब्दुल रहीम भाई एण्ड को० " "
अलिमहम्मद वाल एण्ड को० चौक स्ट्रीट
इब्राहिम जेन्सी, एण्डको०;भण्डारी एण्ड चौक स्ट्रीट
इस्माईल इब्राहिम ब्रदर्स ११२ चौक स्ट्रीट
इब्राहिम कासिम एण्ड को० चौक स्ट्रीट
पब्लसी साली महमद एण्ड को० चौक स्ट्रीट
बम्बई ग्लास मेन्युफेक्चरिंग को० नेगामगेडदादर
मुलकर एण्ड सन्स
रशीद ए० एण्ड को० चौक स्ट्रीट
लालजी दिवारजी एण्डको० भण्डारी स्ट्रीट, मांडवी
वेस्टर्न इण्डिया ग्लास वर्क्स लि० अपोलो स्ट्रीट

लोहेके व्यापारी

अलबिअन आयरन वर्क्स १ कारपेंटर स्ट्रीट
ओमिय फाउंडरी एण्ड इञ्जिनियरिंग वर्क्स
एम्प्रेस आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स केनाटरोड
केरावाला सी० डी० एण्ड को० कालाचौकी रोड
जफ़र भाई दादा भाई आयरन फाउंडरी
जागी एण्ड को आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी,
टाटा आयरन एण्ड स्टील को० लि० हार्नबीरोड
ताराचन्द एण्ड मसासी फॉकलैंड रोड
दीनशा आयरन वर्क्स केनाट रोड
धनजीशा एम० दारुखानावाला आरथररोड
नानू ब्रास वर्क्स ठाकुरद्वार रोड गिरगांव
नार्थब्रुक आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी कुम्हारवाड़
प्राविंशियल आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स लैमिंगटन रोड
पाठक एण्ड वालचन्द लि० १५८ फारास रोड
बम्बई कास्ट आयरन प्रेजिंग कम्पनी डी. लिस्ली रोड, चींचपोकली
महमद अली महमद भाई आयरन वर्क्स रिपन रोड

तिजोरियोंके व्यापारी

लाला कालीदास एण्ड सन्स अब्दुल रहमानस्ट्रीट
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० गैसवर्क्स
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
जोशी एण्डको ग्रँटरोड
ज्योतिचन्द्र हीराचन्द तिजोरी वाला भण्डारी स्ट्रीट
पायोनीर लॉक वर्क्स कस्टम हाउस
महमद नूर अहमद चौक स्ट्रीट
महमद याकूब हाजी इस्माईल चौक स्ट्रीट
भोगीवाला लाल्लूभाई दलचन्द मस्जिद बन्दररोड
हीराचन्द मंच्छाराम १३१ गुजारवाड़ी पांजरापोल स्ट्रीट

राजपूताना

RAJPUTANA

सर दिनशा मानेकजी पेटिट जिमनेस्टिक इन्स्टीट्यूट—यह व्यायामशाला भारतीय और योरोपियन विद्यार्थियोंकी शारीरिक उन्नतिके लिये खोली गयी है यहां व्यायाम सम्बन्धी ज्ञान संवर्द्धनके लिये शिक्षा भी दी जाती है और व्यायामके लिये स्वतन्त्र भी प्रबन्ध है इस व्यायामशालाका प्रबन्ध भार भारतीय और योरोपियन शिक्षकोंके योग्य हाथोंमें है।

बाम्बे सेनीटरी ऐसोसियेशन प्रिन्सेस स्ट्रीट—इस संस्थाकी स्थापना, नगरमें फैलनेवाली गन्दगीसे स्वास्थ्य सम्बर्धनकारी उपचारों द्वारा नागरिकोंकी रक्षा करनेके उद्देश्यसे हुई थी। यह संस्था, सिनेमा, भाषण, पुस्तकों, एवं हस्तपत्रों द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी विज्ञानका प्रसार कर लोगोंमें सफाईका अभ्यास डालनेकी चेष्टा करती है। इस संस्थाकी ओरसे ऐसी शिक्षा देनेके लिये रात्रि पाठशालायें भी खुली हैं और नियमित रूपसे परीक्षाएं भी ली जाती हैं तथा प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं। यह भी समाज सेवा कार्य करनेका अनुकरणीय ढंग हैं। इसका कार्यालय अपने निजके भवनमें ही है वहांपर सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी मूल्यवान पुस्तकों और यन्त्रोंका संग्रह है। इसकी ओरसे समाज सेवाका कार्य करनेके लिये दीन और अनाथ स्त्रियोंको बच्चा होनेके समय सहायता दी जाती है। उनके लिये एक रुग्णालय भी है जहां प्रसवके समय जाकर वे लाभ उठा सकती है। वहां उनके लिये सब प्रकारकी सुविधा है। और जबतक वे स्वस्थ नहीं हो जावें तबतक यहां निसंकोच रह सकती हैं।

जमशेदजी नसरवानजी पेटिट इन्स्टीट्यूट हार्नबीरोड—इस पुस्तकालयकी स्थापना सन् १८५६ ई० में दि फोर्ट इम्प्रूवमेन्ट लायब्रेरीके नामसे हुई थी। परन्तु श्री दीनबाई नसरवानजीने २॥ लाखका भवन इसे दे दिया और सन् १८९८ से वर्तमान नाम रखा गया। यहां पुस्तकोंका बहुत बड़ा संग्रह है।

सोशल सर्विस लीग—स्थानीय सर्वेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटीके कार्यालयमें सेण्डहर्स्ट रोड गिरगांवपर इस संस्थाका आफिस है। इसकी स्थापना सन् १९११ ई० में समाज सेवाके उद्देश्यसे हुई थी। समाजके सम्मुख उपस्थित होनेवाले प्रत्येक प्रश्नका तात्विक रीतिसे अध्ययन व मननकर जन साधारणमें उसकी चर्चा चला विचार विनिमय द्वारा किसी विशेष निर्णयपर पहुंच समाजकी सेवामें व्यवहारिक रीतिसे भाग लेना इसका कार्य्य है। इसने वर्तमानमें (१) शिक्षा प्रसार कार्य (२) सफाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य (३) समाजकी दृष्टिसे पतित माने जानेवालों तथा कष्ट प्रपीड़ितोंकी सहायता (४) दीनहीन रोगियोंकी सेवा सुश्रुषा (५) मिल मजदूरोंके पारिवारिक जीवनकी सामाजिक उन्नतिकी और पढ़नेके लिये सहायता देना (६) गरीबोंकेबच्चों—राष्ट्रके भावी नागरिकोंको—स्वच्छ वायु सेवनार्थ आने जानेका प्रबन्ध करना और उनकेखेल और व्यायामकी व्यवस्था करना तथा (७) समाजमें आयी हुई खराबियोंका दूर करना इत्यादि कामोंमें गति की है।

(३) वी० आर० भिन्डे अवैतनिक संयुक्त मन्त्री
(४) एस० पी० कवडी अवैतनिक संयुक्त मन्त्री
(५) वाई० जे० मेहरअली बी० ए०

इसका पता फ्रेञ्च पुल, चौपाटी, गिरगाम है।

बाम्बे यूनिवर्सिटी इन्फरमेशन ब्यूरो—शिक्षा समाप्त करनेकी इच्छासे विदेश जानेवाले विद्यार्थियोंको आवश्यक जानकारी करानेके उद्देश्यसे इस संस्थाकी स्थापना की गयी है। विदेशके विश्वविद्यालयोंकी जानकारीके लिये इसके मंत्रीसे पत्र व्यवहार करना चाहिये। लोगोंको ऐसी संस्थाओंसे अच्छी जानकारी उपलब्ध हो जाती है। इसका कार्यालय यूनिवर्सिटी फोर्ट बाम्बे है।

गोखले एज्यूकेशनल सोसाइटी—यह संस्था, स्व० गोपालकृष्ण गोखलेके समान शिक्षा प्रेमी और देशभक्तकी पवित्र स्मृतिमें सन् १६१८ ई० के फरवरी मासमें स्थापित की गयी थी। इस संस्थाके पास २ लाख ६० हजारसे अधिक की स्थायी सम्पत्ति है। इसके प्रमुख टी० ए० कुलकर्णी और मन्त्री एच० एस० जोगलेकर हैं।

इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ पोलिटिकल एण्ड सोशल साइन्स—समाज शास्त्र और राजनीतिकी व्यवस्थित रूपसे शिक्षा देनेके लिये इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१७ ई० में की गयी थी। इस संस्थाकी विशेषताके सम्बंधमें केवल इतनाही लिखना पर्याप्त होगा कि इसकी लायब्रेरीमें पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रहकीहै और यहांपर प्रायः भारतीय समाज शास्त्र और राजनीतिका विशेष रूपसे अध्यापन, होता है।

इसके प्रमुख हैं श्रीयुत के० नटराजन और मन्त्री हैं डा० बी० आर० आंबेडकर डी० एस० सी० (लंदन) बार० एट ला०

यङ्ग लेडिज हाई स्कूल—इस संस्थाकी स्थापना सन १८८६ ई० में हुई थी। इसमें प्रायः विवाहित स्त्रियां भरती की जाती हैं। यहां आरम्भसे मेट्रिक तककी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन सुखमय बना सरलतया गृहस्थी चलानेके लिये आवश्यक विषयोंकी शिक्षा विशेष रूपसे या मुख्यतया दी जाती है।

इसकी प्रिन्सिपल्स और हेड मिस्ट्रेस क्रमशः (१) कुमारी सोना बाई० डी० दलाल और (२) कुमारी जेटबाई पी० पवरी एम० ए० हैं।

विक्टोरिया जुबिली टेकनिकल इन्स्टीट्यूट.—इसकी स्थापना सन् १८८७ ई० में हुई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध एक ऐसे बोर्डके हाथ में है जिसे सरकार, म्युनिसिपेल्टी और मिल मालिकोंकी सभाकी ओरसे आर्थिक सहायता मिलती है। इसमें मेकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इञ्जिनियरिंगकी पढ़ाईके अतिरिक्त कपड़ा बुनने, रंगाई तथा साबुन बनानेके विषयकी भी शिक्षा होती है।

आर्य्य समाज—भारतवर्षके मुख्य २ केन्द्रोंमें अजमेर भी आर्य्य समाजका एक मुख्य केन्द्र है। इस समाजने भारतवर्षके सामाजिक और राजनैतिक जीवनमें जो जीवन और उन्नति पैदा की है इसके सम्बन्धमें कुछ भी लिखना सूर्य्यको दीपक दिखाना है। यहांपर आर्य्य समाजकी तरफसे एक हाई स्कूल, एक विशाल लायब्रेरी, एक बड़ा प्रेस और एक साप्ताहिक पत्र चल रहा है। आर्य्य समाजके कार्य्य कर्त्ताओंमें रायसाहब हरविलासजी शारदा। श्रीयुत चांदकरणजी शारदा, घीसूलालजी वकील, वैद्य रामचन्द्रजी शर्मा इत्यादि सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी—असहयोगके जमानेमें अजमेरकी कांग्रेस कमेटी बड़े जोर शोरके साथ कार्य कर रही थी, मगर नेताओंके पारस्परिक मतभेदसे इस समय वह मृतकवत् होरही है।

इनके अतिरिक्त और भी कई सार्वजनिक संस्थाएं अजमेरमें चल रही हैं। इन सबका वर्णन यहां होना असम्भव है।

शहरकी बस्ती और म्यूनीसिपल कमेटी

अजमेर शहर बस्तीकी दृष्टिसे बड़े अवैज्ञानिक ढंगसे बसा हुआ है। इसकी इमारतें जितनी सुन्दर और विशाल हैं इसकी बसावट उतनी ही गन्दी और पिचपिच है। छोटी २ बांकी टेढ़ी गलियें अव्यवस्थित मकान और सङ्कीर्ण बसावट स्वास्थ्यकी दृष्टिसे बहुत खराब है। केवल मात्र केसरगंजकी बस्ती साफ, विरली और शुद्ध वायुयुक्त है।

शहरकी सफाईके लिये शहरमें म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्थापित है। इसके मेम्बरोंका चुनाव पब्लिक में से होता है। फिर भी यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं, कि सफाईका प्रबन्ध करनेमें यह विभाग प्रायः असफल रहा है। अजमेरकी गलियां वैसे ही छोटी २ हैं। शुद्ध वायुका आना उनमें वैसे ही दूभर रहता है। फिर उनमें चारों ओर मैला, कूड़ा करकट पड़ा रहनेसे बरहते बड़ी बदबू और गन्दगी फैली हुई रहती है, इनकी सफाईके लिये यहां पर मैला गाड़ियोंकी व्यवस्था है। ये मैला गाड़ियां क्या हैं साक्षात् नरक है। इनके आस पास सौ सौ गज तक बदबूका साम्राज्य छाया रहता है। जिधर होकर ये निकल जाती हैं उधरके लोगोंकी बदबूके मारे नाकमें दम आ जाता है। गर्मी के दिनोंमें जब पानीका अकाल हो जाता है तब और भी दुर्दशा होती है। म्यूनिसिपैल्टीको इन सब बातोंकी ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

फेक्ट्रीज एण्ड इण्डस्ट्रीज

(१)—न्यू एडवर्ड एडवर्ड ट्रेडिङ्ग कं० अजमेर—इस कम्पनीमें देशी सूत पर कपड़ा बुना जाता है। इसमें ३६ आदमी काम्य करते हैं।

सिडेनहम कालेज आफ कामर्स एण्ड एकनामिक्स—यह कालेज सरकारी है और इ भवन बोरी बन्दरके पास हार्नबी रोडपर है। इस कालेजकी स्थापना योरोप और अमेरिकाके उन्नत शिक्षा पद्धतिके अनुसार शिक्षा देनेके लिये की गयी है। दावर कालेजकी भांति ही इसमें विषय क्रम रखा गया है। भारतमें यह एक ही कालेज है जो बी. काम. की परीक्षाके परीक्षार्थी तैयार करता है। यह कालेज बम्बई विश्वविद्यालयसे सम्बद्ध है।

सर जमशेदजी जीजी भाई स्कूल आफ आर्ट—यह स्कूल भी सिडेनहम कालेजके ही हार्नबी रोडपर है। इसकी स्थापना सन् १८५७ ई० में हुई थी। सरकारने इ विशाल भवन बनवाया और अध्यापकोंकी व्यवस्था की, तथा इसके चलानेके लिये सर जमशे जी जीजी भाई प्रथम बैरोनेट एक लाखका दान दिया। इस स्कूलमें चित्रकारीकी शिक्षा जाती है इसकी परीक्षायें विश्वविद्यालयकी ओरसे होती हैं। पाठ्य क्रम ५ वर्षका है विषयोंमें ड्राइंग, पेण्टिंग मोडेलिंग, इमारतें बनाना और डिजाइन तैयार करना आदि मुख्य हैं। इसके साथ ही छोटासा कारखाना है जहां विद्यार्थियोंको कुर्सी मेज अलमारी साड़ी के फेन्सी तैयार करने, लकड़ी और पत्थरकी नकाशी, धातुका काम, कमरा सजाना तथा गलीचा बनाने आदिकी व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। मिट्टीके वर्तन और सभी प्रकारके खिलौने तैयार करने और चित्रकलाका विशेष रूपसे अध्ययन करनेके लिये इसमें विज्ञान विभाग भी है। भारतीय और योरोपीय ललित कलाकी मन मोहक वस्तुओंका संग्रहालय भी इसमें है।

ऐक्वर्थ लेपर असाइलम—माटुंगा—यह संस्था कोढ़ियोंके लिए सन् १८९० ई० में स्थापित की गई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार यहांकी नगरसंस्था म्युनिसिपल कार्पोरेशनके हाथमें है। उसकी आर्थिक सहायतासेही सब कार्य चलता है। म्युनिसिपल कमिश्नर ही इसके प्रमुख रहते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल फार ब्लाइण्ड—इस स्कूलकी स्थापना सन् १९०२ ई० में अन्धोंके लिए की गयी थी। यह स्कूल ताड़देवमें है। यहांपर गुजराती और मराठी भाषाका लिखना पढ़ना सिखाया जाता है। इसके साथ संगीत और अन्य कला कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिनमें कपड़ा सीने कुर्सी आदि बुनने और फीते बिननेका काम विशेष रूपसे सिखाया जाता है। इस स्कूलको सरकारकी ओरसे १५००) रु० और स्थानीय नगर संस्थाकी ओरसे २०००) की आर्थिक सहायता वार्षिक मिलती है।

इसके प्रिंसिपल—डा० नीलकान्त राय दयाभाई एल० एम० एण्ड एस० (स्वयं अन्धे) हैं।

इण्डोनिक फार्मसी—गिरगाम—यह संस्था भी अपने ढंगकी एक ही है। इसके व्यवस्था-प्रबन्धक मि० एम० जे० गज्जर एम० ए० हैं। यहां पर देशी जड़ी बुटियोंसे आधुनिक वैज्ञानिक

सिडेनहम कालेज आफ कामर्स एण्ड एकनामिक्स—यह कालेज चरचगेट और हार्नबी रोडके पास हार्नबी रोडपर है। इस कालेजकी स्थापना योरोप और अमेरिकाके उन्नत शिक्षा पद्धतिके अनुसार शिक्षा देनेके लिये की गयी है। अन्य कालेजकी भांति ही इसमें भी विषय क्रम रखा गया है। भारतमें यह एक ही कालेज है जो बी. काम. की परीक्षाके परीक्षार्थी तैयार करता है। यह कालेज बम्बई विश्वविद्यालयसे सम्बद्ध है।

सर जमशेदजी जीजी भाई स्कूल आफ आर्ट—यह स्कूल भी सिडेनहम कालेजके पास ही हार्नबी रोडपर है। इसकी स्थापना सन् १८५७ ई० में हुई थी। सरकारने इसका विशाल भवन बनवाया और अध्यापकोंकी व्यवस्था की, तथा इसके चलानेके लिये सर जमशेदजी जीजी भाई प्रथम बैरोनेट एक लाखका दान दिया। इस स्कूलमें चित्रकारीकी शिक्षा दी जाती है इसकी परीक्षायें विश्वविद्यालयकी ओरसे होती हैं। पाठ्य क्रम ५ वर्षका है। विषयोंमें ड्राइंग, पेंटिंग मोडेलिंग, इमारतें बनाना और डिजाइन तैयार करना आदि मुख्य हैं। इसके साथ ही छोटासा कारखाना है जहां विद्यार्थियोंको कुर्सी मेज अलमारी सादी और फेन्सी तैयार करने, लकड़ी और पत्थरकी नक्काशी, धातुका काम, कमरा सजाना तथा गलीचा बनाने आदिकी व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। मिट्टीके बर्तन और सभी प्रकारके खिलौने तैयार करने और चित्रकलाका विशेष रूपसे अध्ययन करनेके लिये इसमें विज्ञान विभाग भी है। भारतीय और योरोपीय ललित कलाकी मन मोहक वस्तुओंका संग्रहालय भी इसमें है।

ऐक्वर्थ लेपर असाइलम—माटुंगा—यह संस्था कोढ़ियोंके लिए सन् १८९० ई० में स्थापित की गई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार यहांकी नगरसंस्था म्युनिसिपल कार्पोरेशनके हाथमें है। उसकी आर्थिक सहायतासेही सब कार्य चलता है। म्युनिसिपल कमिश्नर ही इसके प्रमुख रहते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल फार ब्लाइण्ड—इस स्कूलकी स्थापना सन् १९०२ ई० में अन्धोंके लिए की गयी थी। यह स्कूल तारदेवमें है। यहांपर गुजराती और मराठी भाषाका लिखना पढ़ना सिखाया जाता है। इसके साथ संगीत और अन्य कला कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिनमें कपड़ा सीने कुर्सी आदि बुनने और फीते बिननेका काम विशेष रूपसे सिखाया जाता है। इस स्कूलको सरकारकी ओरसे १५००) रु० और स्थानीय नगर संस्थापककी ओरसे २०००) की आर्थिक सहायता वार्षिक मिलती है।

इसके प्रिन्सिपल—डा० नीलकान्त राय दयाभाई एल० एम० एण्ड एस० (स्वयं अन्धे) हैं।

इक्नोनिक फार्मसी—गिरगाम—यह संस्था भी अपने ढंगकी एक ही है। इसके व्यवस्था-प्रबन्धक मि० एम० जे० गज्जर एम० ए० हैं। यहां पर देशी जड़ी बूटियोंसे आधुनिक वैज्ञानिक

मशीनरी-मरचेंट्स

आदम एण्ड यस्तावाला हांग कांग बैंक चर्चगेट
अलफर्ड हारबर्ट लि० अमरचन्द बिल्डिंग
आनन्दराव भाऊ एण्ड को० २५।२६ चर्चगेट
आर्देशिर मादी एंड को १६५ बोहरा बाजार फोर्ट,
आर्देशिर रुस्तमजी एन्ड ब्रदर्स अब्दुल रहमान
एन्डरसन गी० डो० एण्ड को० १३४ मेडो स्ट्रीट
एकमा मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी स्टीटर रोड
एडवर्ड साइ।ल एन्ड को० हादी सेठ हाउस
इण्टर नेशनल प्रोडक्ट्स कारपोरेशन P. B. ६६६
कैरावाला एन्ड को० ५ मुजबन रोड
कुरवा एन्ड कम्पाजी १४२।१४३ अब्दुल स्ट्रीट
ग्रीव्स काटन एन्ड को० फोर्ब्स स्ट्रीट
गुजराती टाईप फाउंडरी गोलवाड़ी गिरगांव
जनरल इन्जिनियरिंग कम्पनी, अपोलो स्ट्रीट
जापान ट्रेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी
डंकन स्ट्रेटन एन्ड को० ५ बैंक स्ट्रीट
दीनशा एन्ड फाहनजी एन्ड ब्रदर्स अपोलो स्ट्रीट
धनजीशा एम० दुरुखनवाला एन्ड को०
नारियलवाला कोपर एन्ड को० ४६ एलफिंस्टन
नौरोसजी वाडिया एन्ड सन्स होम स्ट्रीट
पन्नावर मेन एन्ड को० हार्नबी रोड
फिरोज एच० मोतीभाई एन्ड को०
बाटलीवाला एम० एम० एन्ड को० एज० सरकल
महेन्द्र एन्ड को० कोठारी मेन्शन जी. पी. ओ.
मार्सडेन ब्राइस एन्ड को० लि० नेसवी रोड
एम. एच. दीनशा एन्ड को० ग्रीन स्ट्रीट फोर्ट
रुस्तमजी नौरोजी वापगोला १० फोर्बस्ट्रीट फ्रोर्ट
रिचार्डसन एन्ड क्रडस ६३८-६३६ परेलरोड
विट्ठल पुरुषोत्तम एंड सन्स अपोलो स्ट्रीट
शा०एन्ड को० घाट कूपर
सोराबजी शापुरजी एन्ड को० एशियन बिल—
डिंग ३ फील्ड रोड
सेन्ट्रल कार्मशियल एन्ड को० पारसी बाजार
होरमसजी सोराबजी एन्ड को० हम्माम स्ट्रीट

मिल-जीन स्टोअर सप्लायर्स

आर्देशिर एच० वाडिया एन्ड को० अपोलो ट्रीट
आत्माराम एण्ड को० ८२ नागदेवी क्रास स्टीट
ओकना ट्रेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी
लि० २४ एल्फिंस्टन सर्कल फोर्ट
ईश्वरदास जगमोहनदास एन्ड को० अपोलो स्ट्रीट
कुंवरजी देसाई एन्ड को० १५४ लोहार चाल
जनरल मिल सप्लाई एन्ड को० १६६ फोर्ट स्ट्रीट
जगमोहन श्यामलदास एन्ड सन्स ११ टेमरिन्ड
लेन, फोर्ट
देवजी हीरजी एन्ड को० नाग देवी क्रास लेन
दीनशा मास्टर एन्ड को० नागदेवी स्ट्रीट
दोसाभाई दोराबजी इंजिनियर अपोलो स्ट्रीट
फिरोजशा एंड को० नागदेवी स्ट्रीट
बेली पेटरसन एन्ड को० लि० मैडो स्ट्रीट फोर्ट
मंगलदास अमीन एन्ड को० ३२ अपोलो स्ट्रीट
एम. एच. दीनशा एण्ड को० ग्रीन स्ट्रीट
मायाशंकर बेंकर एन्डको ३ ४६ ए अपोलोस्ट्रीट
लल्लूदास मगनलाल एन्ड को० १०३ मेमनवाला
लुकमानजी कमरुद्दीन डाक्टर स्ट्रीट धमर खेड़ी
शांतिलाल एंड को० २६ फोर्ट स्ट्रीट
सोराबजी पेस्तनजी क्रिगनी फर्नांड रोड
सेठना कंट्राक्टर एन्ड को० ६१ टेमरिंड लेन
हरमुखलाल एन्ड को० ३३ टेमरिंड लेन फोर्ट
हैदर भाई इस्माईलजी एन्ड को० २०८ नागदेवी
हीरालाल गोकुलदास दलाल एन्ड को०

शक्करके व्यापारी

अजीम हाजी गुलाम अहम्मद काजी सैय्यद स्ट्रीट
उत्तमलाल हरगोविन्द " "
हाजी उस्मान हाजी अहमदगनी हाजी अहमद
मेमनवाड़ारोड
जकरिया हाजी जान महमद नागदेवी स्ट्रीट
दुलभराम नानचन्द काजी सैय्यद स्ट्रीट
दामजी देवसिंह " "
देवशंकर दयाशंकर " "

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह*

[लोढा परिवारका परिचय]

भारतवर्षकी प्रसिद्ध व्यापारिक ओसवाल जातिमें यह बहुत बड़ा घराना है। इसका निकास चौहान राजपूत वंशसे है। इस घरानेका सरकार, देशी राज्यों तथा प्रजामें बराबर सम्मान है। इस घरानेके प्रमुख पूर्वज सेठ भवानीसिंहजी अलवर राज्यमें रहते थे। इनके पांच पुत्रोंमेंसे एक सेठ कमलनयनजी कुछ समय किशनगढ़ राजमें रहकर संवत् १८६० के पूर्व अजमेरमें आये और यहांपर "कमलनयन हमीरसिंह" के नामसे दुकान खोली। आप अपनी कार्य-कुशलता तथा सत्य प्रियतासे धन्धेको भलीभांति बढ़ाया। आपहीने जयपुर और किशनगढ़में भी "कमलनयन हमीरसिंह" के नामसे और जोधपुरमें "दौलतराम सूरतराम" के नामसे दूकानें खोलीं। इनके पुत्र सेठ हमीरसिंहजीने फर्रुखाबाद, टोंक व सीतामऊमें दूकानें जारी कीं और जयपुर, जोधपुरके महाराजाओं-से लेनदेन प्रारंभ किया और इस घरानेकी प्रतिष्ठा बढ़ायी। इनके चार पुत्र हुए, सेठ करणमलजी, सेठ सुजानमलजी, रायबहादुर सेठ समीरमलजी और दीवानबहादुर सेठ उम्मेदमलजी। प्रथम पुत्र सेठ करणमलजीका तो बाल्यावस्थामें ही स्वर्गवास हो गया। दूसरे पुत्र सेठ सुजानमलजीने सन् ५७ के विद्रोहके समय अंगरेज सरकार को बहुत सहायता दी। इन्होंने रियासत शाहपुरामें राय बहादुर सेठ मूलचंदजी सोनीके साझेमें दूकान खोली और वहांके राज्यसे लेनदेन किया। इनके समय साम्भरकी हुकूमत इनके घरानेमें आई, और वहांका कार्य यह अपने प्रतिनिधियों द्वारा करते रहे। इनके स्वर्गवासके पश्चात् इस घरानेकी बागडोर तीसरे पुत्र रायबहादुर सेठ समीरमलजीके हाथमें आई। अजमेर नगरकी म्यूनिसिपल कमेटीके आप बहुत वर्षोंतक मेम्बर रहे और बहुत समय तक आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे थे। कमेटीके ३१ वर्षतक यह वाइस चेयरमैन बने रहे इस पदपर और मजिस्ट्रेटीपर ये मृत्युदिवस तक आरूढ़ रहे थे। इनको वाइस चेयरमैनीमें

---

* आपका परिचय हमें उस समयमें मिला जिस समय सारी पुस्तक छपकर बिलकुल तैय्यार हो गई थी। अतएव आपका परिचय अलग छपवाकर इसमें जोड़ा जा रहा है। —प्रकाशक

सेठ अभयमलजी, सेठ विरधमलजी तथा सेठ गाढ़मलजी । इनमेंसे सेठ सिरहमलजी आजीवन म्यूनिसिपल कमेटीके मेम्बर रहे परन्तु इनकी आयु बलवान नहीं हुई और वह २८ वर्षकी अवस्थामें ही स्वर्गवासी होगये। जोधपुर राज्यने इनको भी सोना तथा ताजीम प्रदानकी थी। सेठ गाढ़मलजी इस कुलकी (Joint Hindu Family) रीतिके अनुसार इनके गोद हैं। रायबहादुर सेठ समीरमलजीके दूसरे पुत्र अभयमलजी भी मृत्यु तक आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे थे। ये बड़े लोकप्रिय तथा कार्यदक्ष थे परन्तु खेदकी बात है कि इनका अल्पायुमें ही स्वर्गवास होगया। इनके पुत्र सेठ सौभागमलजी हैं जो अभी पढ़ते हैं।

इन दिनोंमें इस घरानेका सब कार्यभार रायबहादुर सेठ विरधमलजीके हाथमें है जो राय बहादुर सेठ समीरमलजीके तीसरे पुत्र हैं। इनकी अध्यक्षतामें इनके छोटे भ्राता सेठ गाढ़मलजी तथा भतीजे सेठ फतनमलजी सब कार्य बड़े प्रेम और मनोयोगसे करते हैं। सेठ गाढ़मलजी कुछ समयतक म्यूनिसिपल कमेटीके मेम्बर रहे तथा इस समय एडवर्ड मिल ब्यावरके चेयरमैन हैं। इनके पांच पुत्र हैं, जिनमेंसे बड़े कुंवर उमरावमलजी तो दूकानके काममें सहायता देते हैं और शेष चार अभी बाल्यावस्थामें हैं।

रायबहादुर सेठ विरधमलजीका जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आप अपने ज्येष्ठ भ्राता सेठ अभयमलजीकी अल्पायुमें ही मृत्यु होजानेके पश्चात् अत्युत्तम रीतिसे सब कामको चला रहे हैं जनता तथा ब्रिटिश सरकार इनके कामसे सदा सन्तुष्ट रहती है। आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। सरकारने सन् १९२६में इनको रायबहादुरकी पदवीसे सुशोभित किया। आपने नये विक्टो-रिया अस्पतालमें एक्सरेजकी कल कई हजार रुपया देकर मंगाई है जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्यके अन्दरके रोगका निदान होजाता है। इनके पिता रायबहादुर सेठ समीरमलजी तथा दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजीने जो प्रतिष्ठा हैदराबाद, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर कोटा अलवर, टोंक, किशनगढ़ आदिके नरेशोंसे प्राप्त की थी उसको आपने और भी आगे बढ़ाया है। राजपूतानेके श्रीमान् एजण्ट टू दी गवर्नर जनरल बहादुर तथा अजमेर मेरवाड़ाके चीफ कमिश्नर (जो इस प्रान्तकी लोकल गवर्नमेंट है) आपके मकानातके ऊपरवाली कोठीमें (जो Residency के नामसे प्रसिद्ध है) विराजते हैं। इनके काका दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजीको तथा इनको श्रीमती सम्राज्ञी राजराजेश्वरी मेरी महोदयाके, जब वह अजमेर पधारी थीं, विशेष रूपसे दर्शन तथा संभा-षण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपकी दूकानें बम्बई, कलकत्ता आदि स्थानोंमें है यहां व्यापारका धंधा व सोना चांदी, शाल, रोकड़, जवाहरात, बैंकिंग, कपड़े आदिका व्यापार होता है, रतनपुरा (कलकत्ता) में आपका सराफका बड़ाभारी व्यापार है।

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीर सिंह*

इस फर्मके मालिक राजपूतानेके प्रसिद्ध लोढ़ा वंशके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत पुरानी है। इसका इतिहास भी बड़ा पुराना है। इसके वर्तमान संचालकोंमें श्रीयुत राय बहादुर सिद्धकरणजी लोढ़ा श्रीयुत गाढ़मलजी लोढ़ा और अन्य लोढ़ा बन्धु हैं। राजपूतानेके अन्दर इस फर्मकी बड़ी नामवरी है। कई देशी राजाओंकी यह फर्म ट्रेझरर है। कुछ अंग्रेजी गवर्नमेंट ट्रेझरीका काम भी यह फर्म करती है। इस फर्म की शाखाओंका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है:—

अजमेर (हे० आ०)—मेसर्स कमलनयन हमीर सिंह—इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है। यह फर्म रेलवे कंट्राक्टर भी है।

बम्बई—मेसर्स गाढ़मल गुमानमल मुम्बादेवी - यहां बैङ्किग व हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चन्दनमल सिरेमल १७८ हरिसन रोड—यहां बैङ्किगका काम होता है।

इसके अतिरिक्त जयपुर, जोधपुर, ब्यावर, देवली, कोटा, उदयपुर आदि कई स्थानोंमें इसकी शाखाएं खुली हुई हैं। मतलब यह है कि राजपूतानेकी अत्यन्त प्रतिष्ठित और पुरानी फर्मोंमेंसे यह फर्म भी एक है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक ब्यावरके निवासी हैं। वहां यह फर्म बहुत [illegible] प्रसिद्ध है। इसका हेड आफिस भी वहीं है। इस फर्मकी और भी कई शाखाएं हैं जिनका पूरा विवरण चित्रों सहित ब्यावरके विभागमें दिया गया है।

---

* हमें खेदके साथ लिखना पड़ता है कि इस फर्मके संचालकोंसे इसका परिचय एवं चित्र प्राप्त करनेके लिये हम कईबार गये, कईबार हमने अपने एजंटोंको भेजा, कई दिन तक केवल इसीके लिये अजमेर ठहरे और अन्तमें पत्रों द्वारा परिचय एवं चित्र भेजनेके लिये लिखा गया, इतनी कोशिशें करने पर भी हमें आपकी ओरसे परिचय प्राप्त न हो सका। अतएव जितना हम लोग जानते थे, उतना ही यहां प्रकाशित किया गया है।

श्री० स्व० सेठ मूलचन्दजी सोनी अजमेर

स्व० सेठ नेमिचन्दजी सोनी अजमेर

रा० ब० सेठ टीकमचन्दजी सोनी अजमेर

कुंवर भागचन्दजी सोनी अजमेर

(२) बी० बी० एण्ड सी० आई० लोको वर्कशाप अजमेर—यह बी० बी० सी० आई० रेलवेके मीटर गेज सेक्शनका बहुत बड़ा वर्कशाप है। इसमें ६०५१ मनुष्य काम करते हैं।

(३) बी० बी० सी० आई० रेलवे केरिज एण्ड वेगनवर्क शाप—इस वृहत् कारखानेमें ५१६५ व्यक्ति कार्य्य करते हैं।

(४) बी० बी० सी० आई० रेलवे पावर हाउस अजमेर—इस पावर हाउसके द्वारा रेलवे स्टेशन, आडिट आफिस इत्यादि रेलवेसे सम्बन्ध रखनेवाले सब स्थानोंपर लाइट तथा ट्रेन पहुंचाये जाते हैं। इसमें २७० व्यक्ति कार्य्य करते हैं।

(५) बी० बी० सी० आई० टिकिट प्रिंटिंग वर्क्स—इसमें रेलवे टिकिट प्रिन्ट होते हैं। इसमें ५२ आदमी काम करते हैं।

इसके अतिरिक्त अजमेरमें गोटेकी इण्डस्ट्रीज बहुत है। इनमें सभी प्रकारका गोटा तैयार होता है। चांदीके वरक भी यहां बहुत और अच्छे बनते हैं। इसके अतिरिक्त यहां को विक्टोर फेक्टरी और नूर सोप फेक्टरीमें साबुन भी बहुत अच्छा तैयार होता है।

१६२२ में बनाया यह अजमेर नगरको एक दर्शनीय वस्तुओंमेंसे है। इसे प्रतिवर्ष हजारों यात्री,बड़े बड़े अंग्रेज,राजे महाराजे आदि देखनेको आते हैं। इसमें सब काम सुवर्णका है। सेठ मूलचन्दजीको सन् १८८२ में गवर्नमेंटने रायबहादुरके पदसे विभूषित किया। आप लोक प्रियताके कारण जीवन पर्यन्त स्थानीय म्यूनिसिपेलिटीके कमिश्नर व आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपने ही व्यापार रुचिसे प्रेरित हो कलकत्ता, बम्बई, आगरा, गवालियर, जयपुर भरतपुर आदि आदि प्रधान नगरोंमें कोठियां खोलीं।

आपके सच्चे व्यवहारसे गवर्नमेंटने नीमचछावनी, ग्वालियर, जैपुर व ईस्टर्न राजपूताना स्टेट्स (भरतपुर धौल्पुर करौली रियासतों) के खजाने आपके सुपुर्द किये।

आपका देहान्त विक्रम सम्वत् १९५८ को असाढ़ शुक्ला २ को हुआ-उस समय जिन २ ने यह दुखदायी समाचार सुना-हार्दिक खेद प्रगट किया। आपकी उत्तरख्वाहीके लिये महाराजा सर प्रतापसिंह साहब ईडर नरेश आदि व बड़े २ यूरोपियन और हिन्दुस्तानी अफसर पधारे थे।

श्री सेठ नेमीचन्दजी साहबने भी स्वर्गवासी पिताजीकी ख्यातिको बहुत बढ़ाया। आप सन् १९०७ में रायबहादुरकी पदवीसे विभूषित हुए तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे। आपकी मृत्यु सम्वत् १९७४ के भादवासुदी ८ को हुई। आपकी मिलनसारी व प्रतिष्ठासे आपके लिये स्थानीय कोर्ट, रेलवे दफ्तर, स्कूल आदि शोक प्रगटनार्थ बंद किये गये थे।

आपके पुत्र तो कई हुए और कन्याएं भी हुईं लेकिन उनमेंसे केवल श्री टीकमचंदजी साहब व दोकन्याएं विद्यमान हैं।

श्री सेठ टीकमचंदजीका जन्म प्रथम श्रावण शुक्ला ४ विक्रम सम्वत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय इस फर्मके अधिष्ठाता हैं आप सन् १९१९ में रायबहादुरके पदसे अलंकृत किये गये। आपको श्री स्वर्गीय जैपुर नरेश व इडर नरेशने स्वर्णकटक तथा श्री जोधपुर नरेशने ताजीम दी है जोकि राजपूतानेमें बड़ी प्रतिष्ठासे देखी जाती है। आप भी आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिसपल कमिश्नर हैं आपने अपने पूज्य पिताजीके चिरस्मरणार्थ एक बृहत धर्मशाला इस्पीरियल रोडपर करीब दो लाख रुपया लगाकर निर्माण करवाई है,जिससे अजमेरकी एक बड़ी कमी पूरी हुई है। आप बड़े धर्म प्रेमी हैं। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने आपके धर्म प्रेमसे मुग्ध हो आपको "धर्मवीर" की उपाधि प्रदानकी है।

आपके दो पुत्र श्रीयुत कुंवर भागचन्दजी तथा श्रीयुत कुंवर दुलीचंदजी हुए। खेद है कि श्रीयुत कुंवर दुलीचंदजीका देहान्त केवल १९ वर्षकी अल्पायुमें ही हो गया। आप बड़े सरल स्वभावी और होनहार नवयुवक थे?

श्री० सेठ कानमलजी लोढ़ा (चंदनमल कानमल)

बिल्डिंग (कानमलजी लोढ़ा) अजमेर

स्व० कुंवर दुलीचन्दजी सोनी

जैन मन्दिर (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

[illegible] (सेठ मूलचन्दजी सोनी) अजमेर

ा० ब० सेठ विरदमलजी लोढ़ा, अजमेर

रेसिडेन्सी बिल्डिंग (लोढ़ा परिवार) अजमेर

गेस्ट हाउस (लोढ़ा परिवार) अजमेर
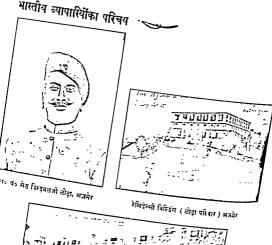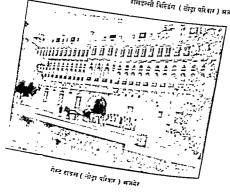
अजमेरमें सुप्रसिद्ध जल "फ़ईसागर" बना जिससे आज सारे नगर और रेलवेको पानी पहुंचाया जाता है। इनके समयमें कलकत्ता, बम्बई, कोटा, अजमेर, टोंक, पडाना, सिरोंज, छबड़ा और निम्बाहेड़ामें नयी दूकानें खुलीं। ये अलवर कोटा और जोधपुरकी रेजीडेन्सीके कोषाध्यक्ष नियत हुये। देवली और ऐरनपुरकी पल्टनोंके भी कोषाध्यक्षका कार्य इनको मिला। रायबहादुर सेठ समीरमलजीको सार्वजनिक कार्यों में बड़ी प्रसन्नता होती थी। संवत् ५८ के कालमें अजमेरमें आपने एक धानकी दूकानखोली। इस दुकानसे गरीब मनुष्योंको सस्ते भावसे उदर पूर्तिके हित अनाज मिलता था। इस दूकानका घाटा सब आपने दान किया। इनके समयमें यह घराना भारतवर्षभरमें विख्यात हो गया तथा देशी रजवाड़ोंसे इन्होंने घनिष्ठ मित्रता स्थापित की। उदयपुर, जयपुर, जोधपुरसे इनको सोना और ताज़ीम थी। बृटिश गवर्नमेन्टमें भी इनका मान बहुत बड़ा। इनमें यह योग्यता थी कि जिन अफसरोंसे यह एकबार मिल लेते थे वह सदा इनको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। इनके कार्य्योंसे प्रसन्न होकर सरकारने इनको सन् १८७७ में रायसाहबकी पदवी और तत्पश्चात् सन् १८९० में रायबहादुरकी पदवी दी। इनकी मृत्युके पश्चात सेठ हमीरसिंहजीके चौथे पुत्र दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजीने इस घरानेके कार्यको संचालित किया। ये व्यापारमें बड़े कार्यदक्ष थे। इनके Entreprise से घरानेकी सम्पत्ति बहुत बढ़ी। सरकारने इनको सन् १९०१ में रायबहादुरकी और सन् १९१५ में दीवान बहादुरकी पदवी दी। ये भी मृत्यु दिवस तक नगरके प्रसिद्ध आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे थे। रियासतोंसे इनको भी सोना और ताज़ीम थी। इन्होंने उद्यमहीनोंको उद्यममें लगानेके हेतु ब्यावरमें एडवर्ड मिल खोली जिसमें बहुत अच्छा कपड़ा बनता है और जो इस समय भारतवर्षकी विख्यात मिलोंमेंसे एक है। इन्होंने बी० बी० सी० आई० रेल्वेके मीटर गेज भागके धन कोषोंका तथा कुल वेतन बांटनेका ठेका लिया और इसका काम भी उत्तमतासे चलाया। सेठ उम्मेदमलजीके पुत्र सन्तान नहीं हुई। इनके सेठ समीरमलजीके दूसरे पुत्र अभयमलजी गोद बैठे। सेठ हमीरसिंहजीके चारों पुत्रोंमेंसे बड़े पुत्र सेठ चन्दनमलजी तो अल्पायुमें ही स्वर्गवासी हो चुके थे जैसा ऊपर वर्णन हो चुका है। शेष तीनों भ्राताओंके पुत्र तथा पुत्रियां हुईं। सेठ सुजानमलजीके दो पुत्र थे; सेठ राजमलजी तथा सेठ चन्दनमलजी। इन दोनोंका स्वर्गवास दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजीको मौजूदगीमें हो हो गया। सेठ राजमलजीके एक पुत्र सेठ गुमानमलजी हुये जो मृत्युपर्यंत अजमेर म्यूनीसिपल कमेटीके मेम्बर और एडवर्ड मिल ब्यावरके चेयरमैन रहे यहां रहे जहां इन्होंने कई अच्छे अच्छे कार्य किये। इनके पुत्र सेठ जीतमलजी थे। ये भी चन्द वर्षतक मेम्बर म्यूनीसिपल कमेटी रहे परन्तु इनका अल्पायुमें ही स्वर्गवास हो गया। सेठ चन्दनमलजीके पुत्र सेठ कानमलजी तथा पौत्र पानमलजी हैं। सेठ हमीरसिंहजीके तीसरे पुत्र राय बहादुर सेठ समीरमलजी के चार पुत्र हुए; सेठ सिरहमलजी,

अजमेर आकर रहने लगे। आप मध्यम स्थितिके पुरुष थे। मगर थे बड़े चतुर, साहसी तथा व्यापार दक्ष। सबसे पहिले आपने उमरावतीमें आकर राजाबहादुर शिवलाल मोतीलालके यहां मुनीमात की। अपनी चतुराई तथा योग्यताके बलसे आपने शीघ्रही १४ दुकानोंके ऊपर प्रधान मुनीमोका पद प्राप्त कर लिया। कुछ समय पश्चात् आप बम्बई आये। इस समय बम्बईमें राजा शिवलाल मोतीलालका कार्य दूसरेके साझेमें चलता था। आपने अपनेही हाथोंसे राजा साहबकी स्वतंत्र दुकान स्थापित की। यहांपर कई वर्षोंतक आप प्रधान मुनीम रहे, वृद्धावस्थातक आप यही काम करते रहे। पश्चात् शेष आयु व्यतीत करनेके लिये अजमेर चले गये। आपके गुलाबचंदजी नामक पुत्रका असमय हीमें देहावसान होगया था। इसलिये आप सीकरके समीपवर्ती गांवसे श्री दिलसुखरायजीको गोदी लाये। सेठ दिलसुखरायजीने अपने हाथोंसे संवत १९५७ में बम्बईकी वर्तमान दुकानको स्थापित किया। तथा उसे विशेष तरक्की दी। आपने पुष्करमें ८५ हजारकी लागत से एक धर्मशाला बनवाई वहां अभी भी सदावर्तजारी है। तथा अपनी जन्मभूमिमें ८ हजारकी लागतसे एक धर्मशाला बनवाई। आपके कोई सन्तान नहीं थी। इसलिये आपने अपने भतीजे श्री रामरिछपालजी श्रीयाको गोद लिया। वर्तमानमें आपही दुकानके कार्यको सम्हालते हैं। आप बड़े उत्साहसे जातिसेवा तथा समाज सेवामें भागलेते है। अजमेरके दानी विद्यालयका संचालन भी आपही करते हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अजमेर—मेसर्स तिलोकचन्द दिलसुखराय यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैंकिग व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स तिलोकचद दिलसुखराय, कालबादेवी—यहां गल्ला, रुई, बैङ्किग तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हमीरमल नौरतनमल

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रीयां (मारवाड़) है उस स्थानपर इस खानदानके पुरुषोंका इतना प्रभाव था कि आजतक भी वह गांव सेठोंकी रीयां नामसे प्रख्यात है। करीब १७५ वर्ष पूर्व यह खानदान यहां आया। इस घरानेके पूर्व पुरुष सेठ जीवनदासजी व गोवर्द्धन दासजीको जोधपुर दरबारसे ताजीम मिलती रही। एवं समय २ पर दरबारकी ओरसे सिरोपाव भेटकर उनका सम्मान किया जाता था। उनके पश्चात रामदासजी, रुगनाथदासजी हमीरमलजी एव चांदमलजी हुए। सेठ चांदमलजीको जोधपुर एव उदयपुर दरबारसे ताजीम मिलती रही एवं समय २ पर सिरोपाव भी मिले। आपको गवर्नमेंटने "रायसाहब"की पदवीसे सुशोभित किया था मतलब यह कि हमेशासे यह घराना बहुत आलीशान एवं प्रतिष्ठित रहा है। सेठ चांदमलजी अजमेरके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे थे। आपकी धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रुचि थी

भारतवर्षमें आपकी निम्न लिखित २० दुकानें हैं।

१ कलकत्ता—मेसर्स चन्दनमल सिरहमल १८८ हरिसनरोड
२ बम्बई—मेसर्स गाढ़मल गुमानमल मम्बादेवी पोस्ट नं० २
३ जेपुर—मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
४ किशनगढ़—मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
५ अजमेर—मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
६ अजमेर—मेसर्स हमीरसिंह समीरमल
७ मड़ार—मेसर्स हमीरसिंह समीरमल
८ जोधपुर—मेसर्स समीरमल उम्मेदमल
९ ब्यावर—मेसर्स चन्दनमल लोढ़ा
१० ब्यावर—मेसर्स अभयमल मोतीलाल
११ कोटा—सेठ समीरमल लोढ़ा
१२ टोंक—मेसर्स समीरमल राजमल
१३ नींबाहेड़ा—मेसर्स समीरमल राजमल
१४ सिरोंज—मेसर्स समीरमल राजमल
१५ देवली—मेसर्स दौलतमल चन्दनमल
१६ जोधपुर—मेसर्स दौलतराम सुरतराम
१७ जोधपुर—मेसर्स समीरमल उम्मेदमल (रेसीडेन्सी खजानची)
१८ रामकृष्णापुर—मेसर्स चन्दनमल अभयमल
१९ सांभर—मेसर्स करणमल सालगराम
२० शाहपुरा—मेसर्स सुजानमल मूलचन्द

चांदी-सोनेके व्यापारी

मेसर्स रामलाल लूणिया

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान फलोदी (मारवाड़) है। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ कस्तूरचन्दजी और केशरीचन्दजी यहां आये। उस समय इस फर्मपर केशरीचन्द दीपचन्दके नामसे ऊनी कपड़ा तथा अफीमके ठेकेका व्यवसाय होता था। वर्तमान दूकान सेठ रामलालजीने करीब २० वर्षों पूर्व स्थापित की तथा सोने चांदीके काममें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपकी फर्मके मार्फत रेशमी अरण्डियां, रेशमी धोतियां रेशमी कोटिंग थान जो अजमेरके प्रधान सुंदर वस्त्र समझे जाते हैं, बनवाये जाते हैं, और अच्छी तादादमें बाहर गांव भेजे जाते हैं। यह माल बाहर बहुत प्रतिष्ठाके साथ बिकता है। इसकी सुंदरताको ग्राहक विशेष पसंद करते हैं। यहां चांदी सोनेके व्यापारियोंमें यह दुकान बहुत बड़ी समझी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—रामलाल लूणियां, नया बाजार—यहां चांदी सोने और अरंडियोंका व्यवसाय होता है।

इस फर्मकी कई स्थानोंपर एजंसियां हैं—

गोटेके व्यापारी

मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चन्द्रसिंहजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपका निवास स्थान अजमेर है। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। यहां इस फर्मके संस्थापक सेठ हमीरमलजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की भी हुई। आपके पश्चात् आपके छोटे पुत्र सेठ छगनसिंहजी एवम् मगनसिंहजीने इस फर्मकी और भी उन्नति की। वर्तमानमें आपके पुत्र इस फर्मके मालिक हैं। करीब ६ साल हुए सेठ चन्द्रसिंहजीने एक ब्रांच बम्बईमें खोली है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यहांका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप—यहां बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स चन्दनमल कानमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अजमेर ही में है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ कानमलजी लोढ़ा हैं। आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ में अजमेर ही में हुआ था। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत चन्दनमलजी था। अजमेरमें जितनी प्रतिष्ठित फर्में हैं उनमें आपकी फर्मका स्थान बहुत आगे है। केवल अजमेर ही में नहीं प्रत्युत सारे ओसवाल समाजमें लोढ़ा परिवारका नाम बहुत अग्रगण्य और सम्माननीय माना जाता है। श्रीयुत कानमलजी बड़े ही सज्जन एवं योग्य पुरुष हैं। आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर मानमलजी हैं। आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार हैं।

अजमेर—मेसर्स चन्दनमल कानमल इस दूकानपर जमीदारी लेन-देन बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

कलकत्ता मेसर्स चन्दनमल कानमल १७८ हरिसनरोड—इस दूकानपर जूट बेलर्स एण्ड शेयर्स का काम होता है। इस दूकानमें वर्किंग पार्टनर श्रीयुत मूलचन्दजी सेठिया और खूबचन्दजी सेठिया सुजानगढ़ निवासी हैं।

मेसर्स जवाहरलाल गम्भीरमल सोनी

इस प्रसिद्ध फर्मके संचालक खंडेलवाल श्रावक दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना अजमेरमें विक्रम सम्वत् १८९०में हुई। इसके संस्थापक स्वर्गवासी सेठ जवाहिरमलजी थे, उन्हींके समयसे इस फर्मकी श्रीवृद्धि शुरू हुई। आपके तीन पुत्र थे, सबसे बड़े सेठ गंभीरमलजी दूसरे सेठ मूलचंदजी और तीसरे सुगनचदजी। सेठ जवाहिरमलजी बड़े धर्मज्ञ व्यापारदक्ष व्यक्ति थे। आपहीके धर्मप्रेमने श्री दिगम्बर जैन चैत्यालयका निर्माण सम्वत् १९१९में किया, जो एक दर्शनीय मंदिर है। सेठ गंभीरमलजीका देहान्त बाल्यावस्थामें ही होगया, सेठ सुगनचंदजी साहब भी विवाहके कुछ समय बादही स्वर्गवासी होगये।

श्री सेठ मूलचन्दजी बाल्यावस्थासे ही विद्याके धर्मके और व्यापारके बड़े प्रेमी एवम् मर्मज्ञ थे। जब सम्वत् १९१४में भारतवर्षमें गदर हुवा उस समय आपने गवर्नमेंटको बहुत कम सूदपर रुपया कर्ज दिया था आपकी इस सेवासे गवर्नमेण्ट बहुत संतुष्ट हुई।

सेठ मूलचन्दजी बड़े प्रतापी हुए और अपनी व्यापार कुशलतासे आपने अजमेर हीमें नहीं, वरन् राजपूताने व भारतके मुख्य २ नगरोंमें भी ख्याति प्राप्तकी। यह वंश आपहीके नामसे प्रसिद्ध है। आपने शहरके बाहर करौलीके पाषाणका अद्वितीय श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट चैत्यालय सम्वत्

सेठ कानमलजी लूणिया (डायमण्ड जु० प्रेस) अजमेर

सेठ रामलालजी लूणिया अजमेर

[illegible] अजमेर

लखमीचंदके यहां मुनीमी करते थे। इस दूकानको सेठ रामनाथजी तथा इनके पुत्र रामनारायणजी
विशेष उत्तेजन दिया।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स रामनाथ रामनारायण, नयाबाजार—यहां पक्के गोटे किनारीका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रताप गोपीकिशन

इस फर्मके मालिक मूंडवा मारवाड़के निवासी हैं। आपकी जाति माहेश्वरी है। वर्तमानमें
इस फर्मके मालिक सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी हैं। आपका पूरा विवरण मारवाड़ मूंडवाके
पोर्शनमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स शिवप्रताप गोपीकिशन—यहां पक्के गोटेका थोक व्यापार होता है।
अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नयाबाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।
अजमेर—रामनाथ शिवप्रताप नयाबाजार—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रंगीन कपड़ा एवम् कमीशन
एजंसीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द घेवरचन्द चोपड़ा

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ घेवरचंदजी चोपड़ा हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।
इस फर्मको स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक आप ही हैं। आपकी प्रथमावस्था
बहुत मामूली थी। यहांतक कि आप सिर्फ ५) मासिकपर नौकरी करते थे। धीरे २ आपने अपनी
सज्जनतासे अपनी स्वतंत्र दुकान स्थापित की और उसमें आशातीत सफलता प्राप्त की। आपने
अपनी ही कमाईसे अजमेरकी प्रसिद्ध हवेलियोंमेंसे एक ममैयोंकी हवेली खरीद की है। आपके
२ पुत्र हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स अगरचन्द घेवरचन्द चोपड़ा—यहां सब प्रकारके फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।
राजपूतानेके बहुतसे रजवाड़े आपके यहांसे कपड़ा खरीद करते हैं।
अजमेर—मेसर्स रामचन्द्र घेवरचन्द, नयाबाजार—यहां भी कपड़ेका व्यवसाय होता है। इस
दुकानमें सेठ रामचन्द्रजीका साझा है।

श्रीयुत कुँवर भागचन्दजी बड़े योग्य, साहित्य प्रेमी और सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। आपका एक प्राइवेट पुस्तकालय भी है।

इस कुटुम्बकी धार्मिक कार्योंकी ओर बड़ी रुचि है अजमेरमें आपकी निम्नाङ्कित सार्वजनिक संस्थाएं हैं।

शहरका श्री दिगम्बर जैन मंदिर, व शहरके बाहरकी श्री जैन नासियां जो बहुत सुंदर व दर्शनीय है, और गहरी लागतके बने हुए हैं जिनकी शिल्प पटुवा व स्वर्ण खचित काम देखने ही बनता है।

श्री रा० ब० सेठ नेमीचन्दजी स्मारक दिगम्बर जैन धर्मशाला

भाग्य मातेश्वरी श्री दिगम्बर जैन कन्या पाठशाला व महावीर दिगम्बर जैन महाविद्यालय इत्यादि

व्यापारिक परिचय—

हेड ऑफिस अजमेर—सेठ जवाहरमल गम्भीरमल अजमेर (T. A. "Pearl") इस कोठीपर बेंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

ब्रांचेस

बम्बई—सेठ जवाहरमल मूलचंद कालबादेवी रोड बम्बई (T. A. Juhar") इस फर्म पर भी बेंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है इसके अतिरिक्त जीरेका आढ़त भी आपके यहां है मेसर्स मूलचन्द नेमीचंदके नामसे यहांपर पीस गुड्सका इम्पोर्ट भी होता है।

कलकत्ता—सेठ जवाहरमल गंभीरमल नं ३०।२ क्लाइवस्ट्रीट (T. A. Metallique) इस फर्मपर बेंकिग बिजिनेसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी, कारोगोटोट शोट्स, पीसगुड्स और जावागुगरका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आगरा, जैपुर, जोधपुर, उदयपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, नसीराबाद केकड़ी, मंदसोर, खंडवा, शाहपुरा, कोटा, ग्वालियर मुरैना आदि २ व्यापारिक स्थानोंमें आपकी दुकानें हैं। सब मिलाकर आपकी दुकानोंकी संख्या करीब २० के है। इन सभी स्थानोंमें आप प्रथम श्रेणीके बेंकरोंमें माने जाते हैं। धौलपुर, भरतपुर, करौली आदि रियासतोंमें आप स्टेट ट्रेजरर भी हैं मंदसोर तथा खंडवामें आपके एक एक जिनिंग फेक्टरी और एक एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

श्री० रा० ब० सेठ टीकमचन्दजी भागचन्दके नामसे बी० बी० एण्ड सी आई रेलवे आर० एम० व जोधपुर रेल्वेकी ट्रेजरशी भी आपके पास है।

मेसर्स तिलोकचन्द दिलसुखराय

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रामरिछपालजी श्रीया हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके खानदानका मूल निवास मेड़ता जोधपुरमें है। आपके दादा श्री तिलोकचन्दजी पहिले पहिल मेड़ते

वैद्य एण्ड डाक्टर्स

वैद्य रामदयालुशर्मा आयुर्वेदिक औषधालय

इस औषधालयके स्थापक वैद्यराज पं० रामदयालुजी शर्मा हैं। आपने साधारण स्थितिसे निकलकर, अपनी योग्यता, और अपने अनुभवसे बहुत उन्नति की। आपने अपनी सज्जनता मृदुभाषिता और अपने सफल हाथके बलसे इस औषधालयको राजपूतानेके अत्यन्त प्रसिद्ध औषधालयोंमेंसे एक बना दिया। राजपूतानेके कई बड़े २ जागीरदारों, रईसों और राजाओंमें आप इलाज करनेके लिये जाया करते हैं। आपके औषधालयको देखकर कई बड़े बड़े रईसों, विद्वानों और मालवीयजी जैसे नेताओंने अच्छे २ प्रशंसा पत्र दिये हैं।

इस समय वैद्यराजजी वृद्धावस्था हो जानेके कारण प्रायः आराम करते हैं। आपके कार्य्यको आपके सुयोग्य पुत्र डाक्टर कन्हैयालालजीने भली प्रकार सम्हाल लिया है। डाक्टर साहब बड़े मिलनसार, मृदुभाषी भावुक और सज्जन व्यक्ति हैं। रोगीका आधारोग तो आपकी मीठी २ बातोंसे ही आराम हो जाता है। आप भी राजपूताना और सेण्ट्रल इण्डियाके कई अच्छे अच्छे घरानोंमें चिकित्सा करनेके लिये जाते हैं। कई भयंकर रोगोंसे ग्रसित रोगी आपके हाथोंसे आराम हुए हैं। मतलब यह कि डा० साहब भी बहुत सफल वैद्य हैं। सार्वजनिक कार्य्योंमें भी आप एक्टिव पार्ट लेते हैं।

इस औषधालयके साथ एक फार्मेसी भी है, जिसमें सब प्रकारकी औषधियाँ शुद्ध और बढ़िया मिलती हैं।

श्री राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय

इस औषधालयके मालिक पं० रामचन्द्रजी शर्मा वैद्य हैं। आप व्यास माधौरामजीके पुत्र हैं। आप एक कुशल एवं चतुर वैद्य हैं। राजस्थानके सुप्रसिद्ध वैद्य पंडित रामदयालुजी शर्माके पास बचपनहीसे आप रहे, स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर आपने वैद्यराजजीकी सुविख्यात फार्मेसीमें लगभग २० वर्षतक सहकारी चिकित्सक एवं प्रबन्ध-कर्त्ताके स्थानपर वैद्यक विषयकी अद्भुत प्रतिभा प्राप्त की। आपने अपनी सज्जनता, सहृदयता एवं चिकित्सा निपुणतासे जनताके हृदयमें आदरणीय स्थान पाया। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ने आपको "वैद्य-सुधाकर" पदवी

स्व०सेठ घनश्यामदासजी मुणोत (हमीरमल नौरतनमल) अजमेर

श्री० सेठ नौरतनमलजी (ह० नौ०) अजमेर

स्व०सेठ दलसुखरामजी श्रीया (तिलोकचन्द दलसुखराय) अजमेर

श्रीयुत रामरिछपालजी श्रीया (ति० द०) अजमेर

श्रीयुत कल्याणमलजी के पुत्र हैं। आप तीन भाई हैं। सबसे बड़े श्रीयुत जवाहरमलजी जोधपुर स्टेट की तरफसे वकील हैं। आप म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर भी हैं। दूसरे श्रीयुत छगनमलजी हैं। आप दोनों ही बड़े सज्जन, योग्य, नम्र, और देशभक्त हैं। सामाजिक कार्य्योंमें भी आप बड़े अग्रगण्य रहते हैं।

आपके जुबिली प्रेसमें सब प्रकारकी हिन्दी अंग्रेजी छपाईका काम होता है।

मेसर्स के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स

इस फर्मको स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इसके स्थापक मेहता पुरुषोत्तमदासजी थे। वर्तमानमें इसका संचालन मेहता जेठामलजी भैरवलालजी, और माणिकलालजी करते हैं। आपका राजपूतानेके कई रईसोंके साथ लेनदेन होता है। आपकी एक दूकान बड़वानीमें भी थी, पर वह उठा दी गई। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स—यहां सब प्रकारके फेन्सी सामानका जनरल मरचेंट्स के रूपमें व्यवसाय होता है। अजमेरमें यह दुकान अपने बिजिनेसमें अच्छी समझी जाती है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (अजमेर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह लोढ़ा नयाबाजार
„ चन्दनमल फानमल लोढ़ा
„ चम्पालाल रामस्वरूप
„ जौहारमल गंभीरमल
„ किशोरचन्द गुलाबचंद संचेती लाखन कोठरी
„ हमीरमल नौरतनमल मोती कटला
„ हमुखराय अमोलकचन्द

गोटेके व्यापारी

मेसर्स कल्यानमल केशरमल नयाबाजार
„ किशनलाल लढ़ा „
„ लासूलाल मोहनलाल „

(बैंकर्स — क्रमशः)

मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह नयाबाजार
„ धनरूपमल आनन्दमल „
„ नेमीचन्दजी सेठी „
„ पन्नालाल हरकचन्द „
„ फतेमल चांदकरण „
„ पन्नालाल प्रेमसुखदास „
„ बलभद्र पोखरलाल „
„ मदनचन्द पूनमचन्द „
„ राजमल सोभागमल „
„ राधाकिशन बद्रीनारायण „
„ रामनाथ रामनारायण „
„ सुखलाल लासूलाल „
„ सुगनचन्द लक्ष्मीचन्द „
„ शिवप्रताप गोपीकिशन „
„ हरनारायण पुरुषोत्तम „

आपके परिश्रमसे ही नयाबाजारकी प्याउ, जिसके उठानेके लिये कमिश्नर साहबका
था कायम रही। आपहीके परिश्रमसे पावूगढ़ पर हिंदू समाजका कब्जा रहा। १६, १
यहां जो श्वेताम्बर जैन कांफ्रेंस हुई थी उसकी सफलतामें आपने दत्तचित्त होकर परिश्र
सेठ चांदमलजीके चार पुत्रोंमें सबसे बड़े घनश्यामदासजी थे। सेठ चांदमलजीके देहावस
आपकी वय ३० वर्षकी थी। श्वेताम्बर जैन कांफ्रेंसके समय आपने भी अपने पिताज
बहुत दिलचस्पीसे कार्य किया था। आपका देहावसान संवत १९७१ में हुआ। आपके
श्री नौरतनमलजी तथा श्री रिखबदासजी। श्री रिखबदासजीका देहावसान संवत १९८४ के
मासमें पूनामें हुआ। इस समय इस दूकानका संचालन सेठ नौरतनमलजी करते हैं।
पिताजीके देहावसानके समय आपकी वय सिर्फ १८ वर्षकी थी, उस समयसे आप अपने व्य
का संचालन कर रहे हैं। जोधपुर तथा उदयपुर दरबारोंसे आपको ताजीम मिलना बीचमें बन्द
गयी थी, उसे आपने फिर चालू करायी। आपका विवाह छोटी सादड़ीके मशहूर सेठ नाथूलालज
यहां हुआ है। आपके छोटे भाईके विवाहके समय कोटा दरबारने आपको अच्छी ताजीम
लवाजमेसे सम्मानित किया था। सेठ नौरतनमलजी सुधरे हुए विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आपकी
फिलहाल नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें चलरही हैं।

अजमेर – मेसर्स हमीरमल नौरतनमल – इस दूकानपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं आढ़तका काम हो
है। यहां आपका हेड आफिस है

बम्बई – राय सेठ चांदमल घनश्यामदास कालबा देवी रोड—इस दूकानपर भी बैंकिंग हुंडी
आढ़तका काम होता है।

पूना—राय सेठ चांदमल घनश्यामदास रविवार पेठ – इस दूकानपर पेशवाओंके समयसे आ
काम होता है।

मोटराड़ा (उदयपुर)—सेठ घनश्यामदास रिखबदास इस दूकानपर रुईकी खरीद फरोख्त एवं क
का काम होता है। यहां भी आपकी जायदाद है।

सांभर लेक-मेसर्स हमीरमल रिखबदास —यहां नमककी आढ़तका काम होता है तथा नमककी गवर्न
ट्रेजरी आपहीके सिपुर्द है। आप सांभर तथा पचभद्राकी नमककी खानोंके गवर्नमेंन्ट
खजानेके ट्रेजरर भी हैं।

भाबनगढ़ (यू० पी०) हमीरमल नौरतनमल —यहां शक्करकी आढ़तका काम होता है तथा यहां आप
जमींदारीके गांव है इनकी मालगुजारीका भी काम होता है।

धनाड़ा (इन्दौर) ओ० पी० राय सेठ चांदमल—यह गांव सारा आपकी जागीरीका है। यहां इनकी
जमींदारी वसूल करनेका काम होता है।

श्रीयुत कानमलजी के पुत्र हैं। आप तीन भाई हैं। सबसे बड़े श्रीयुत जवाहरमलजी जोधपुर स्टेटकी तरफसे वकील हैं। आप म्युनिसिपैल्टीके मेम्बर भी हैं। दूसरे श्रीयुत ऊमरावमलजी हैं। आप तीनों ही बड़े सज्जन, योग्य, नम्र, और देशभक्त हैं। सामाजिक कार्य्योंमें भी आप बड़े अग्रगण्य रहते हैं।

आपके जुबिली प्रेसमें सब प्रकारकी हिन्दी अंग्रेजी छपाईका काम होता है।

मेसर्स के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स

इस फर्मको स्थापित हुए करीब २७ वर्ष हुए। इसके स्थापक मेहता पुरुषोत्तमदासजी थे। वर्तमानमें इसका संचालन मेहता जेठालालजी केशवलालजी, और माणिकलालजी करते हैं। आपका राजपूतानेके कई रईसोंके साथ लेनदेन होता है। आपकी एक दूकान बड़वानीमें भी थी, पर वह उठा दी गई। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स —के० जे० मेहता एण्ड ब्रदर्स—यहां सब प्रकारके फेन्सी सामानका जनरल मरचेंट्स के रूपमें व्यवसाय होता है। अजमेरमें यह दुकान अपने बिजिनेसमें अच्छी समझी जाती है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (अजमेर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह लोढ़ा नयाबाजार
,, चन्दनमल कानमल लोढ़ा
,, चम्पालाल रामस्वरूप
,, जौहारमल गंभीरमल
,, बिरदीचन्द गुलाबचंद संचेती लाखन कोठरी
,, हमीरमल नौरतनमल मोती कटला
,, हनुतराय अमोलकचन्द

गोटेके व्यापारी

मेसर्स कल्यानमल केशरमल नयाबाजार
,, किशनलाल लढ़ा ,,
,, सागूलाल मोहनलाल ,,

मेसर्स चन्द्रसिंह उगनसिंह नयाबाजार
,, धनरूपमल आनन्दमल ,,
,, नेमीचन्दजी सेठी ,,
,, पन्नालाल हरकचन्द ,,
,, फतेमल चांदकरण ,,
,, पन्नालाल प्रेमसुखदास ,,
,, बलभद्र पोखरलाल ,,
,, मदनचन्द पूनमचन्द ,,
,, राजमल सोभागमल ,,
,, राधाकिशन बद्रीनारायण ,,
,, रामनाथ रामनारायण ,,
,, सुखलाल सागूलाल ,,
,, सुगनचन्द लखीचन्द ,,
,, शिवनाथ गोपीकिशन ,,
,, हरनारायन पुरुषोत्तम ,,

अजमेर—मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह नया बाजार,—यहां गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स चन्द्रसिंह छगनसिंह, बदामका झाड़ कालबादेवी रोड—यहां हुण्डी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स फतेमल चांदकरण

इस फर्मके मालिक दो व्यक्ति हैं। सेठ फतेमलजी एवम् श्रीयुत रामविलासजी। आप दोनोंका इसमें साझा है, फतेमलजी ओसवाल जातिके और रामविलासजी माहेश्वरी जातिके हैं। कुंवर चांदकरणजीआपके पुत्र हैं। सेठ रामविलासने अपने पुत्रहीके नामसे इस दुकानमें साझा डाला है। आपके चांदकरणजीके अतिरिक्त ३ पुत्र और हैं। आप चारों पुत्र शिक्षित सज्जन हैं। कुंवर चांदकरणजीका नाम जनता भलीभांति जानती है। आपका महात्मा गांधीजी द्वारा चलाए हुए असहयोग आन्दोलनमें बहुत भाग रहा है। आर्य समाजके भी आप नेता हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजमेर—मेसर्स फतेमल चांदकरण, नया बाजार - यहां पक्के गोटे किनारीका थोक व्यापार होता है। आपकी दुकान यहां मशहूर गोटेके व्यापारियोंमें समझी जाती है।

मेसर्स पन्नालाल प्रेमसुख लोढ़ा

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पन्नालालजी हैं। आपहीने इस फर्मका स्थापन किया। पहले आपकी स्थिति बहुत मामूली थी। नौकरी करते २ आपने अपनी बुद्धिमानीसे बाजारमें प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। आप सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। आपके विचार बड़े गंभीर मननीय होते हैं। व्यापारिक विषयके आप बहुत अच्छे जानकार हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर – मेसर्स पन्नालाल प्रेमसुख लोढ़ा नयाबाजार—आपके यहां पक्का गोटा किनारीका थोक व फुटकर व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ रामनारायण

आपका खानदान आदि निवासी मेड़ता (मारवाड़) का है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यह दुकान संवत् १९५८ में सेठ रामनाथजीने स्थापित की। आप इसके पहिले सेठ कस्तूरचंद

गुड़ शक्कर घीके व्यापारी

फूलचन्द भैरवलाल नयाबाजार
बिहारीलाल रामचन्द्र घी मंडी
मगनीराम फूलचन्द नयाबाजार
लक्ष्मीनारायण जुगुलकिशोर „
हजारीलाल लक्ष्मणदास „

वर्तनके व्यापारी

कस्तूरचन्द मोतनजी फड़काचौक
जगन्नाथ सिंह अमर सिंह „
जिन्दालाल सुल्तानमल „
मन्नालाल लखमीचन्द „
मिश्रीमल हरकचन्द „
रिद्धराम लक्ष्मीचन्द „

ट्रंकके व्यापारी

शेख हाजी अल्लाबख्श मदारगेट
शेख हाजी इलाहीबख्श मदारगेट

लोहाके व्यापारी

अकबरअली अब्दुलअली नयाबाजार
जवाहरमल सोहनलाल नयाबाजार
लादूराम ओंकारमल „

जनरल मर्चेण्ट्स

इब्राहिम एंड संस फरनीचर मार्ट कैसरगंज
अब्दुला एण्ड संस फरनीचर मार्ट आउट-
फीटर्स एण्ड जनरल मर्चेन्ट कैसरगंज
के० जे० मेहता मदारगेट
के० एल० वरमा मदारगेट
बी० एम० एण्ड संस मदारगेट
खूबचन्द जैन फरनीचर मर्चेन्ट
नौरामल सरदारमल सांड
फ्लेक्स बूट शॉप मदारगेट
एम० किफायतुल्ला एण्ड सन्स रेलवे कंट्राक्टर
बी० आर एण्ड सन्स स्पोर्टस मरचेण्ट मदारगेट
विनसेण्ट एण्ड को० बूटमेकर कंट्राक्टर
डी० एच ब्रदर्स, इङ्गलिश वाइन सप्लायर
ड्रापसी एण्ड मिलनरी मार्ट कैसरगंज
मानमल सरदारमल सांड
राजपूताना इलेक्ट्रिक सिण्डीकेट कैसरगंज
रामविलास सूरजमल एण्ड सन्स
रहीमुद्दीन गफुरुद्दीन मदार गेट
शिमला बूट शॉप मदारगेट
सुगनचन्द पन्नालाल मदारगेट
साल्गराम जगन्नाथ „
साजन एण्ड सन्स
हाफिज महम्मद हुसेन एण्ड संस
हीरालाल एण्ड ब्रदर्स

आर्म्स मरचेंट्स

सुल्तान खान करीमखान कैसरगंज

होटल

किंग एडवर्ड मेमोरियल कैसरगञ्ज

सोप फेक्टरी

नूर सोप फेक्टरी
विप्र सोप फेक्टरी

मेसर्स हंसराज अमरचंद शारदा

इस फर्मको करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ हंसराजजीने स्थापित की। इसके पूर्व इस परिवारका व्यापार रामरतन हंसराजके नामसे होता था। सेठ हंसराजजीने इस दुकानको स्थापितकर बहुत उन्नतिपर पहुँचाया। इस दुकानपर खासकर राजपूतानेके बड़े २ रईस एवं जागीरदारोंसे व्यवहार होता था। सेठ हंसराजजी का देहावसान संवत् १९६६ में हुआ। आपके बाद इस फर्मका संचालन आपके पुत्र सेठ अमरचन्दजी शारदा करते हैं। आप अपने पिताजीके जमाये व्यवसाय को भली प्रकारसे संचालन कर रहे हैं। तथा पहलेकी तरह ही आज भी इस दुकानपर राजपूतानेके रईस एवं जागीरदारोंसे लेनदेन होता है। आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

अजमेर—हंसराज अमरचन्द शारदा नयाबाजार—इस दुकानपर सब प्रकारके कपड़े व सलमा सितारेका व्यवसाय होता है।

अजमेर—राजमल अमरचन्द मदारगेट—इस दुकानके मार्फत पक्का गोटा तैयार कराकर विलायत भेजनेका काम होता है।

अजमेर—अमरचन्द चांदमल नयाबाजार—इस दुकानपर भी सब प्रकारके कपड़ेका व्यवसाय होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स शिवनारायण श्रीकृष्ण

यह फर्म संवत् १९३१ में स्थापित हुई। इसके स्थापनकर्ता सेठ शिवनारायणजी हैं। पहले इस फर्मपर शिवनारायण गंगारामके नामसे व्यापार होता था। गंगारामजीकी मृत्युके पश्चात् इसका वर्तमान नाम पड़ा। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ शिवनारायणजी तथा इनके पुत्र श्रीकृष्णजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अजमेर—मेसर्स शिवनारायण श्रीकृष्ण धानमंडी—इस दुकानपर गल्ले तथा किरानेका थोक व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

सरकारने रायसाहबकी पदवी एवं सन १९२७ में रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। सेठ कुन्दनमलजी वर्तमानमें स्थानीय ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। यहांकी महालक्ष्मी मिल आपहीके द्वारा स्थापित हुई है। उसमें करीब आधा हिस्सा आपका है। शेषमें दूसरे हिस्से हैं। आपने अपने शेअर्समेंसे १ लाख २२ हजार ८०० रुपयोंके शेअरोंका मुनाफा शुभ कार्योंमें लगानेका संकल्प कर रक्खा है। इसके अतिरिक्त आपने कई बड़ी २ रकमें धार्मिक कार्योंमें लगाई हैं आपने अपनी मिलमें चर्बीका व्यवहार कतई बंद कर दिया है इसके लिये आपको अनेक प्रतिष्ठित जगहोंसे बधाई पत्र मिले हैं। आपने देशी मिलोंको नोटिस द्वारा सूचित किया है, कि वे भी अपनी २ मिलोंमें चर्बीका व्यवहार बन्द करें

जयाजीराव कॉटन मिलकी ओरसे आपके यहां चर्बीकी जगह केमिकल ऑइलसे कमा लेनेकी प्रथा सीखनेके लिये एक वीविंग मास्टर आये थे। एवं उन्हें इस कार्यको सीखकर बहुत प्रसन्नता हुई। इसके लिये आपको वहांसे प्रमाण पत्र मिला है। उनका खयाल है कि चर्बीकी जगह आपकी मिलमें बनाये हुए केमिकल ऑइलसे बहुत अच्छा काम चल सकता है तथा कपड़ेकी पालिश एवं क्वालिटीमें भी कोई फरक नहीं आता।

पहिले यहांके व्यापारी, ऊनके केवल बफला बंधाकर बम्बई और वहांसे पक्कीगांठ द्वारा विलायत भेजते थे। सर्वप्रथम आपने ऊनका क्लीनिंग (साफ कराना) वर्क यहां स्थापित कर यहीं गांठें बंधानेकी प्रथा प्रचलित की। कहनेका तात्पर्य यह कि ब्यावरमें ऊनके व्यवसायके आप सबसे आगेवान एवं व्यवसाय कुशल व्यापारी माने जारहे हैं। आपने इस व्यवसायमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की है इस समय आपकी फर्मपर खास व्यापार ऊनका होता है। सेठ कुंदनमलजी महालक्ष्मी मिलके मैनेजिंग एजंट्स सेक्रेटरी ट्रेझरर हैं आपके पुत्र कुंवर लालचन्दजी महालक्ष्मी मिलके डायरेक्टर तथा म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आपके लिये कई समाचार पत्रोंमें बड़े अच्छे प्रशंसा सूचक कोटेशन प्रकाशित हुए हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स कुंदनमल लालचन्द कोठारी—इसफर्मपर हुंडी चिट्ठी बैङ्किग तथा ऊनका व्यवसाय होता है। इस फर्मके द्वारा ऊन डायरेक्ट विलायत भेजी जाती है इसके अतिरिक्त यह फर्म महालक्ष्मी मिलकी सेक्रेटरी ट्रेझरर और एजन्ट है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बुरजा (यू० पी०) है। इस फर्मको यहां आये करीब ५० वर्ष हुए। पहिले इसफर्मपर—हरसुखराय कनीरामचंदके नामसे रुई व गल्लेका व्यापार होता

शाह उदयमलजी (कुंदनमल उदयमल) ब्यावर

सेठ हीराचन्दजी कांकरिया (ओटामल चतुर्भुज) ब्या

प्रदान की है। आपके औषधालयमें वैसे तो सभी रोगोंकी चिकित्सा उत्तमतासे होती है। परन्तु खासकर संग्रहणी, मन्दाग्नि, क्षय, खांसीके लिये आपका औषधालय विशेष प्रख्यात है। आपके सहयोगी चिकित्सक पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा A. M. A. C. आयुर्वेदभूषण द्वारा एक आयुर्वेदाश्रम स्थापित हुआ है, जिसमें विद्यार्थियोंको लक्ष लक्षण पुरस्सरका अध्ययन कराया जाता है। आपके औषधालयमें शास्त्रोक्त विधिसे दवाइयां तैयार की जाती है।

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी अजमेरके एक डाक्टर हैं। आपने कुछ समय सरकारी नौकरीकी। पश्चात् आपने सन् १९१८ में अजमेरमें धरू दवाखाना खोला। आपकी रुचि सार्वजनिक कार्योंकी ओर प्रारम्भसे ही रही है। आपकी सार्वजनिक सेवाओंके प्रतिफल में थोड़ेही समयमें आप कई संस्थाओंके उच्चपदपर चुने गये। स्थानीय कांग्रेस कमेटीके आप उपसभापति नियुक्त हुए, एवं स्थानीय नेशनल वालान्टियर कोरके सभापति चुने गये। सन् १९२२ में जनताकी ओरसे आप म्युनिसिपल कमेटीके मेम्बर भी निर्वाचित हुए थे। आपके कार्योंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया और तत्पश्चात् आप मजिस्ट्रेटोंकी बेंच "बी" के वाइस चेयरमैन भी बनाये गये। आप दिगम्बरजैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आप संवत् १९८० में बंगाल आसाम प्रान्तिक दिगम्बर जैन खंडेलवाल महासभाके सभापति भी बनाये गये थे। और उस समय आपको जातिभूषण की पदवी प्राप्त हुई थी आप खण्डेलवाल जैन हितेच्छु नामक साप्ताहिक पत्रके सन् १९२५ से २७ तक सम्पादक रहे। आपका दी पाटनी मेडिकल हॉलके अलावा श्रीपाटनी प्रिंटिंग प्रेस नामक एक छापाखाना भी है।

गर्ग मेडिकल हाल

इस मेडिकल हालके संचालक श्रीयुत डा० गोपीलालजी गर्ग हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके मेडिकल हालमें दांत और चश्मे बनाये जाते हैं। चश्मे और दांत सम्बन्धी फुटकर सामान भी आपके यहां मिलता है। पत्थरकी आंखें भी आपके यहां तैयार मिलती हैं। आपको उपरोक्त कामकी अच्छाईके लिये कई डाक्टरों और स्टेटोंकी ओरसे सार्टिफिकेट प्राप्त हुये हैं।

डायमण्ड जुबिली प्रेस

इस प्रेसके वर्तमान संचालक श्रीयुत हमीरमलजी लूणिया हैं। आप प्रसिद्ध लूणिया वंशके वंशज हैं। लूणिया वंश अजमेरके ओसवाल समाजमें काफी प्रसिद्ध है। श्रीयुत हमीरमलजी

ब्यावर—शाह कुन्दनमल उदयमल—यहां बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी, जमींदारी एवम् आढ़तका काम होता है। प्रसिद्ध योरोपियन कम्पनी फारवस फारवस केम्बिल एण्ड कोके आप आढ़तिया हैं।

केकड़ी—शाह उदयमल कल्याणमल—यहां आढ़त व हुंडी चिट्ठीका काम होता है। यहां भी प्रसिद्ध युरोपियन कम्पनी, फारबस और रायलीकी एजंसी है।

मेसर्स धूलचन्द कालूराम कांकरिया

इस फर्मके मालिक बिराठिया (जोधपुर) के रहनेवाले हैं। यहां आये आपको करीब ६० वर्ष हुए। जिस समय इसके स्थापक यहां आये थे उनकी साधारण स्थिति थी। सेठ धूलचन्दजीने वायदेके व्यवसायमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आपहीने इस फर्मको जन्म दिया। आप बड़े सीधे सादे व्यक्ति हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्रीयुत कालूरामजी हैं। आप विद्या-प्रेमी युवक हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

आपकी ओरसे स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनी हुई है। तथा आपने स्थानीय शांतिनाथ जैन पाठशालाको एक मकान मुफ्तमें दिया है। इसी प्रकारके और भी दान धर्म आपकी ओरसे हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स धूलचन्द कालूराम कांकरिया—यहां सराफी तथा वायदेका काम होता है।

फाजिल्का—(पंजाब) मेसर्स गणेशदास धूलचन्द—यहां विशेषकर ऊन और गल्लेका व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स गम्भीरमल लालचंद

इस फर्मके संचालक खास निवासी ब्यावरके हैं। इस फर्मको सेठ गम्भीरमलजीने ही स्थापित किया था। इस दूकानको स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इसके पहिले हिन्दूमल गम्भीरमलके नामसे इस दूकानपर व्यापार होता था। वर्तमानमें इस दूकानका खास व्यापार रुईका है। पहिले यहां ऊनका व्यापार होता था। सेठ गम्भीरमलजीका देहान्त संवत् १९७६ के फाल्गुन वदी ५ को हुआ। इस दूकानके मालिक इस समय सेठ गम्भीरमलजीके लड़के श्रीयुत लालचन्दजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फिलहाल नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

प्रदान की है। आपके औषधालयमें वैसे तो सभी रोगोंकी चिकित्सा उत्तमतासे होती है। परन्तु खासकर संग्रहणी, मन्दाग्नि, क्षय, खांसीके लिये आपका औषधालय विशेष प्रख्यात है। आपके सह-योगी चिकित्सक पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा A. M. A. C. आयुर्वेदभूषण द्वारा एक आयुर्वेदाश्रम स्थापित हुआ है, जिसमें विद्यार्थियोंको लक्ष लक्षण पुरस्सरका अध्ययन कराया जाता है। आपके औषधालयमें शास्त्रोक्त विधिसे दवाइयां तैयार की जाती है।

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी

डाक्टर गुलाबचन्दजी पाटनी अजमेरके एक डाक्टर है। आपने कुछ समय सरक
नौकरीकी। पश्चात आपने सन् १९१८ में अजमेरमें घरू दवाखाना खोला। आपकी
रुचि सार्वजनिक कार्योंकी ओर प्रारम्भसे ही रही है। आपकी सार्वजनिक सेवाओंके प्रति
फल में थोड़ेही समयमें आप कई संस्थाओंके उच्चपदपर चुने गये। स्थानीय कांग्रेस कमेटीके
आप उपसभापति नियुक्त हुए, एवं स्थानीय नेशनल वालान्टियर कोरके सभापति चुने गये।
सन् १९२२ में जनताकी ओरसे आप म्युनिसिपल कमेटीके मेम्बर भी निर्वाचित हुए थे।
आपके कार्योंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया और तत्पश्चात्
आप मजिस्ट्रेटोंकी बेंच "बी" के वाइस चेयरमैन भी बनाये गये। आप दिगम्बरजैन धर्मावलम्बी
ज्जन हैं। आप संवत् १९८० में बंगाल आसाम प्रान्तिक दिगम्बर जैन खंडेलवाल
ासभाके सभापति भी बनाये गये थे। और उस समय आपको जातिभूषण की पदवी
हुई थी आप खण्डेलवाल जैन हितेच्छु नामक साप्ताहिक पत्रके सन् १९२५ से २७ तक
दक रहे। आपका श्री पाटनी मेडिकल हॉलके अलावा श्रीपाटनी प्रिंटिंग प्रेस नामक
छापाखाना भी है।

गर्ग मेडिकल हाल

इस मेडिकल हालके संचालक श्रीयुत डा० गोपीलालजी गर्ग हैं। आप अग्रवाल जातिके
डिकल हालमें दांत और चश्मे बनाये जाते हैं। चश्मे और दांत सम्बन्धी फुटकर साम
के यहां मिलता है। पत्थरकी आंखें भी आपके यहां तैयार मिलती है। आपको उपरोक्त
ोंके लिये कई डाक्टरों और स्टेटोंकी ओरसे सार्टिफिकेट प्राप्त हुये हैं।

डायमण्ड जुबिली प्रेस

सके वर्तमान संचालक श्रीयुत हमीरमलजी लूणिया हैं। आप प्रसिद्ध लूणिया वंशके
णिया वंश अजमेरके ओसवाल समाजमें काफी प्रसिद्ध है। श्रीयुत हमीरमलजी

सेठ चांदमलजी (जवाहरमल चांदमल) ब्यावर

श्री तोनालालजी (श्रीकृष्ण तोनालाल) ब्यावर

मेसर्स हजारीमल जोधराज नयाबाजार
" हीरालाल सुगनचंद "

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द मूलचन्द नयाबाजार
" अमरचन्द चांदमल "
" अमोलकचन्द नौरतनमल "
" कृष्णा मिल क्लाथ शॉप "
" घेवरचन्द चोपड़ा "
" घेवरचन्द रामचन्द्र "
" तनसुख रामजीवन "
" पन्नालाल सोहनलाल "
" विरदीचन्द मोतीलाल "
" पाउकृष्ण गुजराती "
" भारत व्यापार कम्पनी "
" माणिकलाल मोहनलाल "
" मूलचन्द रामनारायण "
" रामलाल लूणिया (रेशमी वस्त्रोंके व्यापारी)
" राजस्थान प्रान्तीय खादी भण्डार पुरानी मंडी
" रामचन्द्र रामविलास
" [illegible] अमरचन्द
" [illegible] हाथ एण्ड ड्रापरी मरचेण्ट केसरगंज

रंगीन कपड़े के व्यापारी

[illegible] नयाबाजार
[illegible] "
[illegible] "
[illegible] "

चांदी सोनेके व्यापारी

किशनलाल वाकलीवाल दरगाबाजार
धानमल बच्छराज पाटनी "
बोधूराम मगनलाल नयाबाजार
मागरमल भूरामल दरगाबाजार
सुवालालजी नयाबाजार
रामलाल लूनिया "
रामनारायण पूसालाल नया बाजार

ज्वैलर्स

महादेवलाल ज्वैलर्स आफ जयपुर, केसरगंज

गल्लेके व्यापारी और कमीशनएजंट

गनेशदास मांगीलाल धानमण्डी
नारायण लोकचन्द "
फूलचन्द छीतरमल "
बिहारीलाल फकीरचन्द "
बद्रीदास मोहनलाल "
मांगीलाल बालमुकुन्द "
रामधन कल्याणमल "
रोड़मल ताराचन्द "
शिवनारायण श्रीकृष्ण "

रंगके व्यापारी

कन्हैयालाल कस्तूरचन्द नयाबाजार
गजानन्द आनन्दीलाल "
मुहम्मदबक्स दाउदबक्स "

डूंगरमलजी करते हैं। इस फर्मके मार्फत यहांकी मिलोंका बना हुआ कपड़ा तथा दूसरा माल अच्छी तादादमें बाहर जाता है। इस समय इस फर्मकी ओरसे नीचे लिखे स्थानोंपर व्यवसाय होता है।

ब्यावर---मेसर्स मोतीलाल डूंगरमल-इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म मिलके कपड़ेका कन्ट्राक्ट भी लेती है।

ब्यावर—डूंगरमल चांदमल--इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। इस फर्ममें आपका हिस्सा है।

मेसर्स शिवकिशन तोतालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सलेमबाद (रियासत-किशनगढ़) है। इस फर्मको यहां सेठ शिवकिशनदासजीने करीब ६० वर्ष पूर्व स्थापित किया यह फर्म यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें बहुत पुरानी है। सेठ शिवकिशनजीके पश्चात सेठ तोतारामजीने इस दूकानके कारोबारको सम्हाला। आपकी फर्मपर प्रारम्भसेही कपड़ेका व्यवसाय होता चला आया है। इस फर्मके मार्फत यहांकी मिलोंका बना हुआ कपड़ा तथा बाहरका माल बड़ी तादादमें बाहर जाता है श्रीतोतालालजीका देहावसान संवत १९१८ में होगया है आपके बाद इस फर्मका संचालन श्रीलक्ष्मीलालजी तथा श्रीरामपालजी करते हैं। आपकी फर्मपर नीचे लिखा व्यवसाय होता है।

ब्यावर—मेसर्स शिवकिशन तोतालाल—इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यवसाय, मिलोंके कपड़ेके कंट्राक्टका काम तथा कमीशनएजंसीका काम होता है।

ब्यावर—लक्ष्मीनारायण रामपाल--शकर गुड़ व ऊनका व्यवसाय तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

ऊनके व्यापारी

मेसर्स चतुरभुज छोगालाल मालपाणी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान मकरेड़ा (अजमेर प्रांत) में है। करीब ६० वर्ष पूर्व इस फर्मको यहां सेठ चतुरभुजजी तथा छोगालालजीने स्थापित किया। इस दुकान पर प्रारम्भसे ही आड़तका काम होता है। सेठ छोगालालजीका देहान्त हो गया है। इस समय इस दुकानके मालिक श्रीयुत गणेशीलालजी तथा जगन्नाथजी हैं। इस दूकानपर ऊनकी आड़त तथा सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इस दूकान पर खास व्यवसाय ऊनका है। इस दुकानसे विलायत भी ऊन जाती है।

न्यू स्वदेशी मिल—यह भी यहांकी एक मिल है। इस मिलमें विशेषकर आंढियां तैयार होती हैं। यहांसे दूर २ तक ये आंढियां जाती हैं।

—o—

जीनिंग फेक्टरीज

पडवई मिल्स कंपनी जीनिंग फेक्टरी
ब्यावर ट्रेडिङ्ग कम्पनी जीन एण्ड फलोअर
ब्यावर कंपनी लिमिटेड जीनिंग फेक्टरी
सौंवराज राठी जीनिङ्ग फेक्टरी
न्यू काटन जीनिंग फेक्टरी
लक्ष्मी काटन जीनिंग फेक्टरी
रतनचन्द सिंघेती जीनिंग फेक्टरी
कृष्णा मिल्स जीनिंग फेक्टरी
महालक्ष्मी मिल्स जीनिंग फेक्टरी

प्रेसिंग फेक्टरीज

न्यू बगर कम्पनी प्रेस लिमिटेड
काटन प्रेस ब्यावर
ब्यावर कंपनी लिमिटेड प्रेसिंग फेक्टरी
सौंवराज राठी प्रेसिंग फेक्टरी
राजपूताना प्रेस कम्पनी
न्यू काटन प्रेसिंग फेक्टरी
वेस्ट्स पेटेण्ट प्रेस कम्पनी
यूनाईटेड काटन प्रेस कम्पनी
हाइड्रोलिक काटन प्रेस
रतनचन्द सिंघेती प्रेसिंग फेक्टरी
कृष्णा मिल्स प्रेसिंग फेक्टरी
महालक्ष्मी मिल्स प्रेसिंग फेक्टरी

———

इन कल-कारखानोंके अतिरिक्त लोहेका व्यापार और रंगाई तथा छपाईका काम भी यहां अच्छा होता है। यहां लोहेके बर्तन बनानेवाले लोहारोंके करीब २०० घर हैं। रंगाई तथा छपाईका काम करनेवालोंके भी इतनेही या इससे कुछ वेशी घर होंगे। यहांसे ये दोनों ही प्रकारकी वस्तुएं बाहर जाती हैं। चमड़ेका एक्सपोर्ट भी यहांसे होता है।

———

मिल आनर्स

मेसर्स कुन्दनमल लालचंद कोठारी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नीमाज (जोधपुर-स्टेट) है। आप ओसवाल जैन [illegible] है। यह फर्म यहां संवत् १९३४ में आई। इस फर्मको रायबहादुर सेठ कुंदनमलजी ने स्थापित किया। आपका जन्म संवत १९२० में हुआ। यह फर्म प्रारम्भमें बहुत छोटे रूपमें थी। सेठ कुन्दनमलजीने इस फर्मको आशातीत [illegible] दिया। वर्तमानमें इस फर्मका खास व्यापार [illegible] है। ब्यावरके सबसे बड़े [illegible] व्यवसायी आपही समझे जाते हैं। आपके द्वारा विलायती कपड़ेके [illegible] इम्पोर्ट व्यवसाय जारी हुआ। सेठ कुन्दनमलजीको सन् १९[illegible]

मेसर्स श्रीरामदास नन्दकिशोर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान ब्यावर है। इस दुकानको सेठ नन्दकिशोरजीने करीब ४० वर्ष पूर्व स्थापित किया। यहांपर वायदेका सौदा तथा आढ़तका काम होता है। प्रारम्भमें इस फर्मका काम मामूली था। सेठ नन्दकिशोरजीने ही इस दूकानके कामकी तरक्की की। आपका देहावसान संवत् १९६६ में हुआ। आपके बाद इस फर्मका संचालन आपके पुत्र श्रीयुत चांदमलजी करते हैं। इस दुकानपर खासकर रुईतथा सब प्रकारके वायदेके सौदे होते हैं। हाजिरका काम भी होता है।

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

मेसर्स कुंदनमल उदयमल शाह
" कुंदनमल लालचन्द रायबहादुर
" चंपालाल रामस्वरूप रायबहादुर
सेठ चन्दनमल जी लोढ़ा
मेसर्स छोगालाल मोतीलाल
" दामोदरदास शीवराज राठी
" देवकरणदास रामकुंवार
" धूलचन्द फालूराम कांकरिया
" बालचन्द लाभचन्द
" ब्यावर कोआपरेटिव्ह बैंक लिमिटेड
" मुकुन्दचन्द सोहनराज
" रामबक्स खेतसीदास
" साहबचंद शेषमल
" हीरालाल जगन्नाथ

ऊनके व्यापारी

मेसर्स कुंदनमल लालचन्द राय बहादुर
" गंभीरमल लालचन्द
" गंभीरमल मोतीलाल
" चतुर्भुज छोगालाल
" छोगालाल रामकरण
" जेसीराम ताराचन्द (विलसन लेथमके एजंट)
" जवानमल शोभाचन्द
" धनराजमल तुलसीदास (डेविड सासुनके-एजंट)
" धनराज फूलचंद कोठारी
" नोंदराम जगन्नाथ
" नरसूमल गोकुलदास
" मायर मिसीम एण्ड को०
" शामजी देवजी (आरवथ नार्थ एण्ड को०)

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स ओटरमल चतुर्भुज
" कल्यानमल वेजराम
" छोटमल विशनलाल
" जवाहरमल चांदमल
" पूनमचन्द प्रेमराज
" फूलचंद मिश्रीमल
" बालूराम योधूराम
" मोतीलाल डूंगरमल

रा० ब० सेठ चम्पालालजी रानीवाला, ब्यावर

रा०ब०सेठ कुंदनमलजी कोठारी (कुंदनमल लालचन्द) ब्या
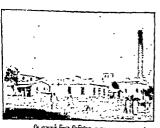
दि एडवर्ड मिल लिमिटेड, ब्यावर

कुंवर लालचन्दजी कोठारी(कुंदनमल लालचन्द) ब्या

श्रीयुत विट्ठलदासजी यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। कृष्णा मिलमें आपके हाथोंसे नई मशीनरीके लग जानेसे मिलका कार्य अच्छा होने लगा है। इस मिलमें ऊंची खादी तथा धोती जोड़े अच्छे निकलते हैं। श्री विट्ठलदासजीके समयमेंही महालक्ष्मी मिलकी स्थापना हुई है। इस समय आप महालक्ष्मी मिलके मैनेजिंग एजेण्ट व कृष्णा मिलके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। इस समय आपकी फर्मपर नीचे लिखे स्थानोंपर व्यवसाय होता है।

(१) ब्यावर—मेसर्स ठाकुरदास खींवराज—इस फर्मपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठीका काम होता है। यह फर्म कृष्णा मिल व महालक्ष्मी मिलकी मैनेजिंग एजेण्ट तथा ट्रेजरर है। इसके अतिरिक्त इस फर्मको यहांपर 'खींवराज राठी' इस नामसे जीनिंग व प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

(२) आकोट (अकोला)—मेसर्स खींवराज दामोदरदास यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा हुंडी चिट्ठी व कॉटनका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी एक दुकान पोकरनमें भी है।

मेसर्स कुन्दनमल उदयमल शाह

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मेड़ता (जोधपुर) के हैं। यहां इस खानदानको बसे करीब सौ वर्ष हुए। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक शाह उदयमलजी, शाह कल्याणमलजी एवम् शाह तेजमलजी हैं। आप तीनों ही सज्जन व्यक्ति हैं। आपका खानदान यहां बहुत प्रसिद्ध है। शाहजी-के नामसे आप यहां मशहूर होते हैं। इस फर्मके स्वर्गीय मालिक सेठ कुन्दनमलजी, ओसवाल समाजमें बहुत सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपके पिता सेठ साहबचन्दजीने इस फर्मको बहुत बढ़ाया। आपके हाथोंकी यहां बहुत सी स्थायी मिलकियत अभी भी वर्तमान है।

शाह उदयमलजी स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट एवम् म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। यहां के पंचायती एवम् ओसवाल जातिमें आपका अच्छा सम्मान है। आपहीके समान आपके बन्धु शाह कल्याणमलजी एवम् तेजमलजी भी योग्य सज्जन हैं।

ब्यावर डिस्ट्रिक्ट, टाडगढ़ तहसील और ब्यावर शहरमें आपकी बहुतसी स्थाई जायदाद है। कहा जाता है कि आप ही यहां सबसे बड़े जमींदार हैं। यहांके सरकारी [illegible] तीन व्यक्तियोंमें एक आप भी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

ब्यावर—शाह कुन्दनमल उदयमल—यहां कॉटनका हाजिर तथा वायदेका सौदा और आढ़तका काम होता है। दूसरा चिट्ठी और बैंकिंग बिजिनेस भी यह फर्म करती है।

मेसर्स दीनदयाल किशनलाल

इस फर्मके मालिक नारनौल (रेवाड़ी) के निवासी हैं। इधर करीब १६।१७ वर्षों से यह फर्म मऊ और नसीराबाद छावनीमें व्यापार कर रही है। इस समय इस फर्मका संचालन श्री दीनदयाल-जीके पुत्र श्री किशनलालजी करते हैं। श्रीकिशनलालजी यहांके आंनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने एक रात्रि पाठशाला स्थापितकी है। आप उदयपुरके पार्श्वनाथ विद्यालयके मेम्बर हैं। आपके ३ भाई और हैं जिनमेंसे श्री किशनलालजी मऊ दूकानपर और पार्श्वदासजी नसीराबाद दूकानपर काम करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नसीराबाद--मेसर्स दीनदयाल किशनलाल--यहां मिलिटरी सप्लाईके कंट्राक्टका काम होता है

नसीराबाद–इच्छाराम एण्डको --इसपर गवर्नमेंट ट्रेन्जरर व मिलटरीका बेङ्किग वर्क होता है। इसमें आपका साझा है।

मऊ केम्प---दीनदयाल किशनलाल---यहां आपका एक बैंक है, इसपर जनरल बेङ्किग वर्क और गवर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स भीमराज छोगालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नसीराबाद राजपूतानेका है। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व हुई थी। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत ताराचन्दजी सेठी हैं। आप सेन्ट्रल कोआपरेटिव बैंकके १५ वर्षोंसे (जबसे बैंक स्थापित हुई) चेअरमेन हैं इसके अतिरिक्त नसीराबाद कैन्टूनमैन्ट बोर्डके आप वाईस चेयरमैन और कन्या पाठशाला के प्रेसिडेण्ट है सन् १९१५ में दि० जैन मालवा प्रान्तिक सभाके नैमित्तिक अधिवेशनके आप प्रेसिडेण्ट भी रहे थे।

आपके खानदान की दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुचि रही है आपके पिताजी श्रीयुत पन्नालालजीने सन् १९०१ में एक बड़ी विशाल और भव्य नशियांका निर्माण करवाया। आपका देहान्त सन् १९०३ में होगया।

श्रीयुत ताराचन्दजी बड़े शिक्षित और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका अंगरेजी ज्ञान भी अच्छा है।

इस फर्मका हेड आफिस नसीराबादमें और ब्रांच आफिस अजमेरमें है। उक्त दोनों स्थानों-पर, हुंडी, चिट्ठी; कमीशन, इत्यादिका व्यापार होता है।

मेसर्स दीनदयाल किशनलाल

इस फर्मके मालिक नारनौल (रेवाड़ी) के निवासी हैं। इधर करीब १८।१७ वर्षोंसे यह फर्म मऊ और नसीराबाद छावनीमें व्यापार कर रही है। इस समय इस फर्मका संचालन श्री दीनदयाल-जीके पुत्र श्री किशनलालजी करते हैं। श्रीकिशनलालजी यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने एक रात्रि पाठशाला स्थापितकी है। आप उदयपुरके पार्श्वनाथ विद्यालयके मेम्बर हैं। आपके २ भाई और हैं जिनमेंसे श्री विशनलालजी मऊ दूकानपर और पार्श्वदासजी नसीराबाद दूकानपर काम करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नसीराबाद--मेसर्स दीनदयाल किशनलाल--यहां मिलिटरी सप्लाईके कंट्राक्टका काम होता है

नसीराबाद–इन्डाराम एण्डको --इसपर गवर्नमेंट ट्रेझरर व मिलटरीका वेङ्किंग वर्क होता है। इसमें आपका साझा है।

मऊ केम्प---दीनदयाल किशनलाल---यहां आपका एक वैंक है, इसपर जनरल वेङ्किंग वर्क और गवर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स भीमराज छोगालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नसीराबाद राजपूतानेका है। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व हुई थी। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत ताराचन्दजी सेठी है। आप सेण्ट्रल कोआपरेटिव वैंकके १५ वर्षोंसे (जबसे वैंक स्थापित हुई) चेअरमेन हैं इसके अतिरिक्त नसीराबाद कैण्टूनमैण्ट वोर्डके आप वाईस चेयरमैन और कन्या पाठशाला के प्रेसिडेण्ट है सन् १६१५ में दि० जैन मालवा प्रान्तिक सभाके नेमिमोक अधिवेशनके आप प्रेसिडेण्ट भी रहे थे।

आपके खानदान की दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुचि रही है आपके पिताजी श्रीयुत पन्नालालजीने सन् १६०० में एक बड़ी विशाल और भव्य नशियांका निर्माण करवाया। आपका देहान्त सन् १६०३ में होगया।

श्रीयुत ताराचन्दजी बड़े शिक्षित और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका अंगरेजी ज्ञान भी अच्छा है।

इस फर्मका हेड आफिस नसीराबादमें और ब्रांच ऑफिस अजमेरमें है। उक्त दोनों स्थानों-पर, हुंडी, चिट्ठी; फर्नीचर, इत्यादिका व्यापार होता है।

उनके पुत्र श्री सेठ सोहनलालजी रावत आफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट जोधपुर रेल्वे, विष्णुदत्तजी रावत व सोभागलालजी रावत एम० ए० एल० एल०बी० वकील हाईकोर्ट व्यावर करते हैं। इस फर्मकी गिनती यहांके थोक व्यवसायियोंमें हैं। इसकी प्रतिष्ठा यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें अच्छी है इस समय इस फर्मपर नीचे लिखा व्यवसाय होता है।

(१) छोटमल बिशनलाल व्यावर—इसफर्मपर कपड़ेका थोक व्यवसाय व हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है इसके अतिरिक्त सूत,रुई, व मिलके कपड़ेके कंट्राक्टका काम भी होता है।

(२) भंवरलाल गनपतलाल रावत व्यावर—इस फर्मपर गुड़,शक्कर,किराना, गल्ला इत्यादि व्यापार होता है।

मेसर्स जवाहरमल चांदमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भुसावर (भरतपुर) है। इस फर्मको सेठ जवाहरमलजीने ३५ वर्ष पूर्व स्थापित किया। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मपर प्रारम्भसे कपड़ा व कमीशन एजन्सीका काम होता है। सेठ जवाहरमलजीके समयसे ही यह फर्म तरक्की करती जारही है तथा इस समय व्यावरके अच्छे २ कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है इस फर्मके मार्फत यहांकी मिलोंका तथा दूसरा सब प्रकारका कपड़ा अच्छी तादादमें बाहर जाता है। सेठ जवाहरमलजीका देहावसान हुए करीब १२ वर्ष हुए। इस समय इस दूकानका सञ्चालन उनके पुत्र श्रीयुत चांदमलजी तथा सुवालालजी करते हैं। इस समय इस फर्मका नीचे लिखे स्थानोंपर व्यापार होता है।

व्यावर जवाहरमल चांदमल-इस दूकानपर कपड़ेका थोक व्यापार व कमीशन एजन्सीका काम होता है।

व्यावर—डूंगरमल चांदमल –इसफर्मपर भी कपड़ेका थोक व्यापार होता है तथा मिलोंके कपड़े का कंट्राक्ट भी होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

मेसर्स मोतीलाल डूंगरमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास चाजोली (मारवाड़) है। इस फर्मको सेठ मोतीलालजीने २५ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आप ओसवाल सांकला गौत्रके सज्जन हैं। इस फर्मपर प्रारम्भसे ही कपड़ेका व्यवसाय होता है। व्यावरके कपड़ेके अच्छे व्यवसायियोंमें इस फर्मकी गिनती है। श्रीयुत सेठ मोतीलालजीका देहावसान संवत १९६५ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन श्रीयुत

जनरल मरचेण्ट्स

किशनलाल एण्ड संस
चौथमल ब्रदर्स
पूनमजी एण्ड संस
बल्देवजी फतेराम
हजारीमल एण्ड संस
हजारीमल लक्ष्मीनारायण
हजारीमल कस्तूरचंद

कपड़ेके व्यापारी

आर० एस० गंगादीन एण्ड ब्रदर्स
गोकुल दास डूंगरसी एण्ड संस
मानमल गट्टानी

कंट्राक्टर्स

दीनदयाल किशनलाल

चांदी सोनेके व्यापारी

चौथमल चांदमल
हजारीमल सुगनचंद

स्पोर्टस कम्पनी

हीरालाल हेमराज

डेरी—फार्म

फ्ब्टून्लेंड डेरीफर्म

फोटो ग्राफर्स

उमरावसिंह फोटोमाफर
एस० एल० श्रीकृष्ण गोयल
रघुनाथसिंह फोटोमाफर
विक्टोरिया फोटो कम्पनी

आइस मर्चेण्ट्स

नाथूराम रामसुख
श्रीफतेराम

अभ्रक, मायका, सूतियाभाटा, घीयाभाटा और किरमिचके व्यापारी

अब्दुल गनी
कन्हैयालाल एण्ड को० (मायका)
किशनलाल लक्ष्मीनारायण
गोवर्द्धनलाल राठी
प्रेमसुख राठी
लक्ष्मीराम मूलचंद

कमीशन एजंट

कनीराम सुखदेव
कल्लूराम रामरिछपाल
गनेशाराम कस्तुरचंद
गंगाराम बलदेव
घीसालाल पोखरमल
चन्दनमल मोहनलाल
चांदमल घीसालाल
मंगलचंद बहादरमल
मंगलचन्द गोगराज
मुकुन्दराम जादुराम

केकड़ीके पास सवाड़ नामक स्थानमें भी २ जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी है। इस स्थानपर भी केकड़ीके प्रतिष्ठित व्यवसायियोंकी फर्में हैं। यहांके दीनशा पेस्तनजी कॉटन प्रेसका मैनेजमेंट मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूपके अधीन है। इस गांवसे भी ऊन तथा जीरा बाहर जाता है।

रूई, ऊन और जीरेके व्यापारी

मेसर्स उदयमल कल्यानमल शाह

इस फर्मके मालिक ब्यावरके निवासी हैं। अतः इस फर्मका पूरा परिचय चित्र सहित वहां दिया गया है। केकड़ीमें इस दुकान पर साहुकारी लेन देन, हुण्डी चिट्ठी, रूई तथा ऊनका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स रायली ब्रदर्सको केकड़ीमें नाणा सप्लाय करनेका काम करती है। इस दुकानके मुनीम श्रीमिश्रीमलजी सिन्धी हैं। आप बड़े उदार और सज्जन व्यक्ति हैं।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप रायबहादुर

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय ब्यावरमें दिया गया है। ब्यावरमें यह फर्म एडवर्ड मिल की मैनेजिंग एजंट है। केकड़ीमें हाड़ोती प्रेसिङ्ग फेक्टरी और और जीनिंग फेक्टरी तथा सवाड़में दीनशा पेस्तनजी प्रेस नामक फेक्टरियां इस फर्मके मेनेजमेंटमें चल रही हैं। इसके अतिरिक्त यह फर्म रूई, कपास ऊन, जीरा, तथा साहुकारी लेनदेनका भी अच्छा व्यवसाय करती है।

श्री छगनलालजी टोंग्या

श्रीयुत छगनलालजी खास निवासी जहाजपुर (मेवाड़) के हैं। आप सन् १९११ में यहां-पर आये। इसके पूर्व आप जयपुर और उदयपुर स्टेटमें कई जागीरदारोंके कामदार पदपर काम करते रहे। केकड़ी आकर आपने जाजं जीनिंग फेक्टरी स्थापित की। करीब ३ वर्षोंतक यहांकी फेक्टरियोंमें कम्पीटीशन चला। पश्चात् सब जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीके संचालकोंने मिलकर कुल जीनिङ्ग फेक्टरियोंके नफेमें अपने २ हिस्से रख लिये। और इस प्रकार सहयोगसे कार्य चलने लगा। आप भी उसके एक साझेदार हैं।

श्रीयुत छगनलालजी, असहयोग आन्दोलनके समय स्थानीय कांग्रेस कमेटीके प्रेसिडेन्ट रह चुके हैं। आपने शराब खोरी और बेगारकी भयंकर कुप्रथाको दूर करनेका अच्छा यत्न किया था। वर्तमानमें आपकी दूकानपर रूई, ऊन, जीरा आदिका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय बूंदीमें दिया गया है। इस फर्मकी यहां केकड़ी, सवाड़ और खाड़ेड़ामें ३ जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी चल रही है। बघेरा जीनिंगका मेनेजमेंट भी यह फर्म करती है। इसके अतिरिक्त यह फर्म साहुकारी लेन देन, हुण्डी, चिट्ठी, रूई, ऊन, जीरा और अनाज गल्लेके साथ लेन देनका व्यवसाय करती है

इस समय आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—चतुर्भुज छोगालाल, रुई ऊन तथा सब प्रकारकी आढ़त व हुंडी चिट्ठीका काम होता है। खासकर ऊनका काम इस दुकानपर विशेष होता है।

मेसर्स धनराज फूलचन्द कोठारी

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान विराठियां (मारवाड़) है। सेठ धनराजजीका देहावसान संवत् १६५७ में हुआ। आपके कोई संतान न होनेसे श्रीयुत फूलचन्दजी संवत् में गोद्दी लाये गये। इस समय इस फर्मका संचालन आप ही करते हैं। फर्मका खास व्यवसाय ऊनका है। आपकी फर्मके द्वारा ऊन डायरेक्ट विलायत जाती है। अतिरिक्त आढ़तका कार्य भी आप करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ब्यावर—मेसर्स धनराज फूलचन्द कोठारी---यहां ऊनका घरू तथा आढ़तका व्यापार होता है।

नरसुमल गोकुलदास

इस फर्मका हेड आफिस शिकारपुर है। इसकी फाजिल्का आदि स्थानोंमें शाखायें हैं। यह फर्म फारबस फारबस केम्पिल एन्ड को० की बम्बई आफिसकी, पाली, ब्यावर, केकड़ी, नसीराबादके लिये ग्यारंटेड ब्रोकर हैं। यहां इस फर्मपर ऊनका व्यापार होता है।

कमीशन एजण्ट

मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक भिवानी (पंजाब) के निवासी हैं। वर्तमान मालिक रामस्वरूपजी, मदनलालजी एवम् प्रहलादरामजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईमें पृष्ठ १२६ में दिया गया है। यहां आपकी फर्मपर आढ़तका काम होता है।

मेसर्स चिरंजीलाल रोड़मल

इस फर्मके मालिक बेरी (रोहतक) के निवासी हैं। इसका हेड आफिस बम्बई है। इसका विशेष परिचय बम्बई वाले पोर्शनमें पृष्ठ १३४ पर दिया गया है। यहां गल्ला तथा आढ़तका व्यापार होता है। इसके वर्तमान मालिक सेठ शिवदयालजी एवम् बख्तावरमलजी हैं।

जयपुर श्रौर जयपुर राज्य

JAIPUR–CITY

&

JAIPUR--STATE

नसीराबाद

यह बी० बी० सी० आई०के अजमेर खंडवा सेक्शनका स्टेशन है। यहां वृटिश छावनी है। आर० एम० आर० लाइनमें मऊ और नीमचके बाद यही तीसरी अंग्रेजी छावनी है। केकड़ी, भराइ तथा देवली नामक व्यवसायिक मण्डियोंमें जानेके लिए यहां मोटर सर्विसका बहुत अच्छा प्रबंध है। इस स्टेशनसे हजारों गांठें प्रतिवर्ष उन व रुईकी बम्बईके लिए रवाना की जाती हैं।

नसीराबादके आसपास निम्न लिखित जातियोंके पत्थर भी पाये जाते हैं।

(१) सूतियाभाटा—यह पत्थर खानसे जुड़ा हुआ ही निकलता है। इसके भीतरके तारोंकी रस्सी बनती है उसे अंग्रेजीमें एस० वेस्ट बोस कहते हैं। यह रस्सी मशीनरीके काममें आती है। यह आगमें नहीं जलती और पानीमें नहीं गलती है।

(२) घीया पत्थर (संग जराफ)—यह एक प्रकारका सफेद और चिकना पत्थर होता है। य भीलवाड़ाके आसपास मगरोंमें निकलता है। जो यहांसे बाहर भेजा जाता है।

(३) मायका—यह भी एक प्रकारका पत्थर है जो यहांसे विशेषकर कलकत्ता अधिक जाता है।

(४) मोडर—मोडर (अभ्रक)के पत्थर भी यहां आसपास पाए जाते हैं।

इस स्थान पर प्रभाकर जीनिंग फेक्टरी तथा हेड्रोली कॉटन प्रेस नामक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जो मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूपके मेनेजमेंटमें चल रही हैं। इस छावनीके व्यवसायियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बेंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरुप

इस फर्मका विस्तृत परिचय ब्यावरमें दिया गया है। यहां इसके मेनेजमेंटमें एक जीनिंग और एक प्रेसिङ्ग फेक्टरी चल रही है।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल

इस फर्मका विशेष परिचय बून्दीमें दिया गया है। यहांकी फर्मपर रुई, उन और अंग्रेजी व्यापार तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

हवामहल, जैपुर

मालूम होती है। गर्मीके दिनोंमें इस स्थानकी बड़ी बहार रहती है। श्रावन मासमें तो यह स्थान जयपुरका काश्मीर हो जाता है। कई नर नारी इसके दृश्यका आनन्द लेने के लिये यहां आते हैं। यहां अम्बागढ़ नामक किला भी है।

हवा महल—यह महल सरकारी है। बड़ी चौपड़के पास यह बना हुआ है। इसे लोग जनाना महलके नामसे कहते हैं। इसका बाहरी दृश्य बहुत ही सुन्दर है। जयपुरकी अद्भुत कारीगरीका यह एक नमूना है।

चन्द्रमहल—यह भी जनाना महल है। इसकी बनावट नये ढंगकी है। इसके चारों ओर कई फर्लांग तक सुन्दर बगीचा लगा हुआ है। इसके ऊपरी मंजिलसे जयपुरका दृश्य बड़ा ही मनोहर मालूम होता है। त्रिपोलिया बाजारमें त्रिपोलिया गेटसे इसका रास्ता जाता है। सरकारकी ओरसे दिखानेके लिये आदमी नियुक्त हैं। इस महलके पास ही श्रावन भादों नामक एक कुञ्ज है। इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। भयंकर गर्मीमें भी आपको वहां जानेसे श्रावन और भादोंका आनन्द आवेगा। आप निर्णय नहीं कर सकते कि श्रावन है या वैशाख। इसी महलके बगीचेमें कुछ दूर जाकर एक तालाब आता है। यहां गनगोरके बैठनेकी जगह है। इसका सीन भी देखने योग्य है। यहांसे नाहरगढ़ और आमेरका दृश्य बड़ा दर्शनीय मालूम होता है। यहांसे एक रास्ता गणेशजीकी छतरी पर भी जाता है। यह छत्री भी पहाड़ोंपर स्थित है। देखने योग्य स्थान है। चन्द्र महलके पूर्वमें कुछ आगे जानेपर आपको बड़े २ चौड़े मैदान मिलेंगे। इन मैदानोंमें हाथियोंकी लड़ाई होती है। सैकड़ों पुरुष देखनेके लिये यहां आते हैं। चन्द्रमहल के इस बगीचेमें खासकर लाइट और फव्वारेका दृश्य बहुत ही सुन्दर है।

रामनिवास बाग—यह पब्लिक पार्क है। इसका रकबा बहुत बड़ा है। राजपूताने भरमें यह बाग सबसे बड़ा और सुन्दर है। इसे स्वर्गीय महाराजा रामसिंहजीने अपने नामसे बनवाया है। इसकी लागतमें करीब ५०००००) लगे हैं। इस बागका सालाना खर्च २६०००) होता है। इस बागमें श्रावन भादों, टेनिस ग्राउंड, फूटबाल ग्राउंड, आदि बने हुए हैं। यह बगीचा इतना सुन्दर है कि देखते ही बनता है ठीक इस बागके मध्यमें एक अजायब घर बना हुआ है। इसको अल्बर्टहाल भी बोलते हैं। इस अजायब घरमें कई अजब २ वस्तुएं हैं। कहा जाता है कि भारतवर्षका यह दूसरे नम्बरका अजायब घर है।

इसी बगीचेमें शेर, नाहर, रीछ, दूध देता हुआ बकरा आदि कई पशु, कई प्रकारके विदेशी और देशी बन्दर और कई प्रकारके पक्षी भी हैं। जहां शेर रखे गये हैं, उनके पास ही एक बिना

स्व० सेठ पन्नालालजी (मे० भीमराज छोगालाल) नसीराबाद

सेठ ताराचन्दजी (भीमराज छोगालाल) नसीराबाद

स्व० लाला प्यारेलालजी जौहरी (मे० रतीलाल चन्नीलाल) नसीराबाद

श्रीयुत छगनलालजी टोंग्या, इन्दौर

मालूम होती है। गर्मीके दिनोंमें इस स्थानकी बड़ी बहार रहती है। श्रावण मासमें तो यह स्थान जयपुरका काश्मीर हो जाता है। कई नर नारी इसके दृश्यका आनन्द लेने के लिये यहां आते हैं। यहां अम्बागढ़ नामक किला भी है।

हवा महल—यह महल सरकारी है। बड़ी चोपड़के पास यह बना हुआ है। इसे लोग जनाना महलके नामसे कहते हैं। इसका बाहरी दृश्य बहुत ही सुन्दर है। जयपुरकी अद्भुत कारीगरीका यह एक नमूना है।

चन्द्रमहल—यह भी जनाना महल है। इसकी बनावट नये ढंगकी है। इसके चारों ओर कई फर्लांग तक सुन्दर बगीचा लगा हुआ है। इसके ऊपरी मंजिलसे जयपुरका दृश्य बड़ा ही मनोहर मालूम होता है। त्रिपोलिया बाजारमें त्रिपोलिया गेटसे इसका रास्ता जाता है। सरकारकी ओरसे दिखानेके लिये आदमी नियुक्त हैं। इस महलके पास ही श्रावण भादों नामक एक कुञ्ज है। इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। भयंकर गर्मीमें भी आपको वहां जानेसे श्रावण और भादोंका आनन्द आवेगा। आप निर्णय नही कर सकते कि श्रावण है या वैशाख। इसी महलके बगीचेमें कुछ दूर जाकर एक तालाब आता है। यहां गनगोरके बैठनेकी जगह है। इसका सीन भी देखने योग्य है। यहांसे नाहरगढ़ और आम्बेरका दृश्य बड़ा दर्शनीय मालूम होता है। यहांसे एक रास्ता गणेशजीकी छतरी पर भी जाता है। यह छत्री भी पहाड़ोंपर स्थित है। देखने योग्य स्थान है। चन्द्र महलके पूर्वमें कुछ आगे जानेपर आपको बड़े २ चौड़े मैदान मिलेंगे। इन मैदानोंमें हाथियोंकी लड़ाई होती है। सैकड़ों पुरुष देखनेके लिये यहां आते हैं। चन्द्रमहल के इस बगीचेमें खासकर लाइट और फव्वारेका दृश्य बहुत ही सुन्दर है।

रामनिवास बाग—यह पब्लिक पार्क है। इसका एरिया बहुत बड़ा है। राजपूताने भरमें यह बाग सबसे बड़ा और सुन्दर है। इसे स्वर्गीय महाराजा रामसिंहजीने अपने नामसे बनवाया है। इसकी लागतमें करीब ४००००० लगे हैं। इस बागका सालाना खर्च २६०००) होता है। इस बागमें श्रावण भादों, टेनिस ग्राउंड, फूटबाल ग्राउंड, आदि बने हुए हैं। यह बगीचा इतना सुन्दर है कि देखते ही बनता है ठीक इस बागके मध्यमें एक अजायब घर बना हुआ है। इसको अलबर्टहाल भी बोलते हैं। इस अजायब घरमें कई अजब २ वस्तुएं हैं। कहा जाता है कि भारतवर्षका यह दूसरे नम्बरका अजायब घर है।

इसी बगीचेमें शेर, नाहर, रीछ, दूध देता हुआ मच्छ आदि कई पशु, कई प्रकारके विदेशी और देशी बन्दर और कई प्रकारके पक्षी भी हैं। जहां शेर रखे गये हैं, उनके पास ही एक बिना

मेसर्स मूलचन्द सुगनचन्द

इस फर्मके व्यवसायका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। यहां हुंडी चिट्ठी तथा कॉटनका व्यवसाय होता है।

जौहरी

मेसर्स रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास देहली है। सर्व प्रथम यहांपर लाला रंगीलालजी आये। आपके बाद क्रमशः लाला चुन्नीलालजी और प्यारेलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक लाला प्यारेलालजीके पुत्र लाला अमर सिंहजी तथा लाला सुल्तानसिंहजी हैं। आप दिगम्बर जैन अग्रवाल सज्जन हैं।

इस फर्मको २४ फरवरी सन् १९१० में कमाण्डर इन चीफ इन इण्डियाके द्वारा सर्टिफिकेट दिया गया है। इस फर्मको ड्यूक ऑफ कनॉट, लेडी हार्डिंग आदि अंग्रेज राजपुरुष और देशी रईसोंसे सार्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। इस फर्मके मार्फत राजपूतानेके कई रईसों व अंग्रेज अफसरोंके सब जवाहरातका व्यवसाय होता है।

गर्मियोंमें इस फर्मकी शाखा हमेशा आबू पहाड़पर जाती है। वहां अजमेरके तमाम बड़े २ ऑफिसर्ससे लेनदेन रहता है। आपकी नसीराबादमें कई स्थाई मिल्कियत भी है। आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

नसीराबाद—मेसर्स रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी—यहां सब प्रकारके जवाहरातका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त भेंटमें देने योग्य चांदीके सुन्दर सामान भी तैयार रखती है और आर्डरसे बनाती है।

बैंकर्स

इन्द्राराम एण्ड को० (गवर्नमेंट ट्रेझरर)
कोआपरेटिव्ह बैंक
चम्पालाल रामस्वरूप रायबहादुर
दौलतराम कुंदनमल
रा० ब० मूलचंद सुगनचंद

जौहरी

रंगीलाल चुन्नीलाल जौहरी

फरनीचर मेन्युफेक्चरर

गंगाराम ढ्याला
चुन्नीलाल चौथमल
भीमराज छोगालाल
हीरालाल राजमल एण्ड संस

केकड़ी

—:०:—

यह आर० एम० आर० के नसीराबाद स्टेशनसे ३६ मीलकी दूरीपर एक छोटीसी रमणीय मंडी है। यह स्थान अजमेर मेरवाड़ा प्रान्तमें है। यहांपर खास पैदावार रुई, ऊन, जीरा और मेथीदाना की है। हजारों रुपयोंका जीरा तथा ऊन प्रति वर्ष बम्बई जाता है। इस मंडीसे करीब ४० हजार बोरी और ४ हजार गांठ ऊनका व्यापार प्रतिवर्ष होता है। करीब २० हजार गांठें प्रतिवर्ष रुई की यहां बंध जाती हैं। फसलके समय, रायली ब्रदर्स, फारबस फारबस कैम्पबेल एण्ड को० के एजंट खरीदके लिये यहां आते हैं। रायलीकी यहांपर सब-एजंसी है। यहांसे कुछ दूरीपर देवली नामक एक मंडी है। उस स्थानपर भी ऊन, जीरा और रुईका अच्छा व्यापार होता है।

व्यापारियोंकी सुविधाके लिये यहां रेलवेकी आउट एजंसी मेसर्स लखमीचंद सेठ नसीराबाद वालोंके कंट्राक्टमें खुली हुई है। जिससे व्यापारियोंको मालकी बुकिंग तथा डिलिवरीकी सुविधा प्राप्त है। इस मंडीमें निम्नलिखित ८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां

दि शम्भुमा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
हाड़ौती प्रेसिंग फेक्टरी
आर० जीनिंग फेक्टरी
जार्ज जीनिंग फेक्टरी
वेस्ट पेटेन्ट जीनिंग एण्ड प्रेसिंग कम्पनी
न्यू मुफस्सिल एण्ड को० प्रेसिंग फेक्टरी

उपरोक्त फेक्टरियोंमें न्यू मुफस्सिल एण्ड को० प्रेसिंग फेक्टरी कई वर्षोंसे बंद है। परंतु यहांकी सब जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियोंमें परस्पर नफेका हिस्सा हो जाता है। इसलिये बंद रहते हुए भी उपरोक्त प्रेसिंग कम्पनीको साझा मिलता है।

मेसर्स वन्सीधर शिवप्रसाद खेतान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेहणसर (शेखावाटी) में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। जयपुरमें इस फर्मको खुले हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इस दूकानकी स्थापना श्रीयुत वन्सीधरजी खेतानने की। इसकी तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। इसके पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। श्रीयुत वन्सीधरजी खेतान बड़े योग्य सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। हिन्दू जातिके प्रति आपके हृदयमें अगाध स्नेह है।

अग्रवाल जातिके अन्दर जितने ऊंचे सुधरे हुए विचारोंके प्रतिष्ठित सज्जन हैं उनमें आपका भी एक स्थान है। करीब चार पांच वर्ष पूर्व जयपुरमें अग्रवाल महासभा हुई थी, उसकी स्वागत-कारिणी सभाके आप सभापति थे।

आपकी तरफसे श्री भूपीकेशमें एक धर्मशाला बनी हुई है उसमें करीब ३० विद्यार्थी रोजाना भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त मेहणसर में भी आपकी तरफसे एक धर्मशाला और कुंवा बना हुआ है। और भी प्रायः प्रत्येक सभा सोसायटीमें आप बड़े उत्साहसे दान देते रहते हैं।

जयपुरकी म्युनिसिपेल्टिी, स्काउट क्लब, गौशाला, अग्रवाल पाठशाला, धन्वन्तरि औषधालय मेवी वीक इत्यादि संस्थाओंके आप मेंबर हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत शिव-प्रसादजी और श्रीयुत गौरीशंकरजी है। श्रीयुत शिवप्रसादजीके भी एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबरायजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) जयपुर (हेडआफिस)—मेसर्स वन्सीधर शिवप्रसाद (T A Star)—इस दूकानपर वैङ्किग हुण्डीचिट्ठी, कमीशन एजेन्सी और सराफीका काम होता है।

(२) जयपुर—शिवप्रसाद गौरीशंकर जौहरी बाजार। इस दूकानपर बर्मा आइल कम्पनीकी एजेन्सी है।

(३) आगरा—वन्सीधर शिवप्रसाद वेलनगंज T. A Star इस दुकानपर वैंकिग हुण्डी चिट्ठी और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

(४) इन्दौर— मेसर्स वन्सीधर खेतान, T. A Star इस दुकानपर वैंकिग, हुण्डी, चिट्ठी और आड़तका काम होता है।

(५) साम्भर—मेसर्स वन्सीधर राधाकिशन T. A Star इस दुकानपर नमकका बड़ा भारी व्यापार होता है।

(६) जाम नगर—मेसर्स गङ्गाबक्स गुलाबराय, T. A Star इस दुकानपर चीनीका थोक व्यापार होता है।

इस फर्मके मुनीम श्रीभंवरलालजी काशलीवाल हैं। आप खण्डेलवाल जैन जातिके हैं। श्रीभंवरलालजी मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल की फर्म पर २५ सालसे सर्विस करते है। आप इस फर्म के मालिकोंके खास भाइयोंमें से ही है। आप केकड़ी दूकानपर १५ वर्षोंसे काम करते हैं। आप के आनेके बाद ही केकड़ी, सरवाड और खादेड़ामें सेठजीकी ३ जीनिंग और १ प्रेसिंग फैक्टरियां स्थापित हुई है। इनके अतिरिक्त सरवाड़, खादेड़ा, गुलाबपुरा, देवली और बघेरा की दुकानें भी आपहीके समयमें स्थापित की गई हैं।

मुनीम भँवरलालजी यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आप स्थानीय जैन बोर्डिंग, जैन पाठशाला, और जैन औषधालयके प्रधान कार्यकर्त्ता हैं।

मेसर्स रिधकरन छीतरमल

इस फर्मके मालिक खास निवासी यहीं के हैं। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सूवालालजी हैं। आपके पिताजीका देहावसान सं० १९७१ में हो गया है। आपकी दुकान सं० १९५० से कमीशनका कामकर रही है। इस दूकानका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

केकड़ी—रिधकरन छीतरमल - इस दूकान पर रुई कपास, ऊन तथा जीरेका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

विजयानगर—रिधकरण छीतरमल—इस दुकानपर भी आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

रुई ऊन और जीरेके व्यापारी

मेसर्स उदयमल कल्याणमल शाह
" किशनलाल कल्याणमल
" गजमल गुलाबचन्द
" गोवर्द्धनदास कल्यानमल
" घासीलाल पोखरलाल
" घासीलाल कल्याणमल
" रा० ब० चम्पालाल रामस्वरूप
" छीतरमल नेमीचन्द
" छगनलालजी टोंग्या
" दौलतराम कुंदनमल
" पन्नालाल रामचन्द्र
" बालाबख्श द्वारकादास
" मगनलाल तिलोकचन्द
" रिधकरण छीतरमल
" सुगनलाल समीरमल

मेसर्स हजारीमल गुलाबचंद

विदेशी एजंसियां

मेसर्स फारबस फारबस केम्बिल एण्ड को०
मेसर्स राली ब्रदर्स

कपड़ेके व्यापारी

कीरतमल लखमीचंद
दौलतराम कीरतमल
फूलचन्द सुजानमल

किरानाके व्यापारी

धन्नालाल छगनलाल
रामभगत रामपाल
रूपचन्द रामसल

स्व०सेठ बिहारीलालजी बेगठो कोड़ीवाले जैपुर
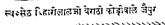
सेठ धौंकलजी लड़ीवाले (नारायणजी महादेव) जैपुर

श्री० [illegible] बिहारीलालजी बेगठो जैपुर

सिल्लीपर राज्यकी मुहर लगादी जाती है। इसी मुहरवाली चांदीसे यहांपर जेवर बनता है।

सांगानेरी माल—यहांपर सांगानेरके बनेहुए दुपट्टे, रुमाल, साफ़े इत्यादिका व्यापार भी बहुत होता है। रङ्गाईका काम भी जयपुरका बहुत मशहूर है। यहांपर रंगाईका काम करनेवाले करीब १००० रंगरेज निवास करते हैं। यहांके लहरिये बहुत मशहूर हैं।

जीरेका व्यापार—इस स्टेटमें जीरा बहुत पैदा होता है। उसमें से बहुतसा माल यहांके द्वारा एक्सपोर्ट होता है। मौसिमके समय यहांपर यह व्यवसाय अच्छा चलता है।

साबुन—साबुन (कपड़ा धोनेका) यहांपर बहुत और अच्छा बनता है। इसकी यहांपर बहुतसी बड़ी २ दुकानें हैं। जिनसे बहुतसा माल बाहर जाता है।

इसके अतिरिक्त गल्ले का व्यवसाय भी बहुत होता है। गलीचेका व्यापार भी यहांका प्रसिद्ध है। जयपूरका आर्ट चित्रकारी भी भारतमें प्रसिद्ध है। यहां दीवालों पर पक्की चित्रकारीका काम बहुत बढ़िया होता है। रुईकी फैक्टरियोंके नामपर यहां केवल स्टेटकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फ़ेक्टरी है।

दर्शनीय-स्थान

गल्ता—यह स्थान जयपुरसे २ मीलकी दूरीपर पहाड़ोंमें स्थित है। यहांके प्राकृतिक दृश्योंमें इसका पहला नम्बर है। इस स्थानपर जानेके लिये साफ़ और सुन्दर रास्ता बना हुआ है। यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान भी समझा जाता है। इसका सीन देखने योग्य है। इसके रास्तेके दोनों ओर कई फीट ऊंची पहाड़ी है। बीचमेंसे यात्रियोंको जाना पड़ता है। यहां एक ओर स्वच्छ जलका एक झरना गोमुखीसे एक कुण्डमें गिरता है, और उस कुण्डका निर्मल जल दूसरेमें दूसरेका तीसरेमें इस प्रकार बहा करता है, दूसरी ओर पहाड़की तलेटीमें कई सुन्दर मन्दिर और मकान अपनी कारीगरी एवम् पुरानी चित्रकारीके दृश्य बतला रहे हैं। यहांका सूर्यनारायणका मन्दिर बहुत अच्छा बना हुआ है।

नया घाट—यह स्थान जयपुरसे उत्तर पश्चिममें करीब २ मीलकी दूरीपर स्थित है। इसका दृश्य भी बड़ा ही सुन्दर है। एक बड़ीसी नदी दो मिट्टीके पहाड़ोंके बीच बहती हुई जा रही है। दोनों ओर कई फीट ऊंचे इसके किनारे बड़े भले मालूम होते हैं। इस नदीके किनारे कई सुन्दर झाड़, अपने फलों और फूलोंसे इसकी शोभाको बढ़ा रहे हैं। इस नदीपर जयपुर आगरा रोडका पुल नीचेसे देखनेमें बड़ा ही अच्छा

भाग लिया था। आपने गुजरात काठियावाड़ और अन्य रेसिडेंसीमें हजारों रुपयेकी खादीका बिना नफा लिए हुये प्रचार किया था। इस समय आपके दो पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत कान्तिलाल भाई और श्रीयुत कृष्णचन्द्र जी हैं। श्रीयुत कान्तिलाल भाई आपको दुकानके काममें मदद देते हैं और श्रीयुत कृष्णचन्द्र अभी विद्याध्ययन करते हैं।

जयपुर—मेसर्स कान्तिलाल छगनलाल जौहरीबाजार—इस दुकानपर हीरा, पन्ना, माणिक, मोतीके जुड़े और अन्य जड़ाऊ जेवरोंका व्यवसाय होता है जवाहरातकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

मोरवी, (जूनागढ़) यहां जौहरी मोनजी अमुलखके नामसे आपका वर्कशाप है।

मेसर्स कपूरचन्द कस्तूरचन्द जौहरी

(तारका पता:—(Meharnivas)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें ही है। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैनजातिके हैं। यह फर्म पुश्तैनी रूपसे यहांपर यही व्यवसाय करती आ रही है। जयपुरकी पुरानी फर्मोंमेंसे यह फर्म भी एक है। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत मेहरचन्दजी हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत कस्तूरचन्दजी था। आप तत्कालीन कर्नाटक नवाबके खास जौहरी थे।

यह दुकान जयपुरकी अच्छी दुकानोंमेंसे एक है। यहां पर जवाहिरातका अच्छा व्यापार होता है। राजपूताना, सेण्ट्रल इण्डियाके बहुतसे राजा और रईसोंमें आपके यहांसे जवाहिरात जाता है। कई राजा रईसोंने इस फर्मके कामसे प्रसन्न होकर अच्छे २ सर्टिफिकेट भी दिए हैं।

श्रीयुत मेहरचंदजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत दौलतचन्दजी हैं। आप बड़े सुयोग्य व्यक्ति हैं। इस समय आप ही दुकानके कारोबारको सम्हालते हैं।

इस फर्मकी लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि सभी विदेशों व हिन्दुस्तानके भी सभी बड़े शहरोंमें आढतें हैं। वहांसे आपके यहां बहुतसा माल जाता आता है।

गुलाबचंद वेद जौहरी

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्रीयुत चम्पालालजी हैं। आपका मूल निवासस्थान जयपुर-ही है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १७५ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री सेठ गुलाबचंद जीके हाथसे हुई थी। आपके पश्चात् क्रमशः श्री पूनमचन्द जी और मिलापचन्द जीने इसके कार्य को सम्हाला।

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। अजमेरका प्रसिद्ध लोढ़ा परिवार इस फर्मका मालिक है। यहां यह फर्म बैङ्किग व्यवसाय करती है। यह फर्म जौहरी बाजारमें है।

मेसर्स राजा गोकुलदास जीवनदास

इस फर्मका हेड आफिस जबलपुरमें है। जबलपुरके राजा गोकुलदासजीके वंशज इस फर्मके मालिक है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ट ११(में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंङ्किग व्यवसाय करती है।

मेसर्स चन्द्रभान वंशीलाल राय बहादुर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। इसके वर्तमान मालिक सर विशेसरदासजी डागा राय बहादुर हैं। आपका सुविस्तृत परिचय चित्रों सहित बीकानेरमें दिया गया है। यह फर्म यहां जौहरी बाजारमें है इसपर बैंकिग व्यवसाय होता है।

मेसर्स जुहारमल सुगनचन्द

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ टीकमचन्दजी सोनी हैं। आप की फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। जयपुरमें इस फर्मपर बैंङ्किग बिजिनेस होता है।

मेसर्स राजा बलदेवदास ब्रजमोहन बिड़ला

इस फर्मका मालिक प्रसिद्ध बिड़ला परिवार है। आपका मूल निवास पिलानी (जयपुर) है। आपका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित पिलानीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैङ्किग व्यवसाय होता है।

जीके चार पुत्र हुए, जिनके नाम श्री काशीनाथजी, श्री मूलचंदजी, श्रीजमनालालजी तथा श्री छोटी लालजी हैं। इस फर्मपर कई पीढ़ियोंसे बहुत बड़े रूपमें जवाहरातका व्यापार होता आ रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री १—मुन्नीलालजी (छोटीलालजीके पुत्र) २—महादेव लालजी ३—चम्पालालजी (जमनालालजीके पुत्र) ४—माणिकचंदजी (मूलचंदजीके पौत्र) तथा ५ - नवरतनमलजी (काशीनाथजीके पौत्र) हैं।

यह फर्म यहांकी स्टेट ज्वेलर है। जयपुर स्टेटका जवाहिरात सम्बन्धी सब कामकाज इसी फर्मके द्वारा होता है। इस फर्मको वायसराय आदि कई उच्च पदस्थ अंग्रेज आफिसरोंसे प्रशंसापत्र मिले हैं। इसके अलावा लंदन, कलकत्ता, तथा जयपुर एग्जीबिशनसे इस फर्मको सार्टीफिकेट तथा मेडिल्स मिले हैं। यह फर्म पेरिस, लंदन, न्यूयार्क वगैरहसे जवाहरातका व्यवसाय करती है। कई भारतीय राजा रईसोंके यहां भी इस फर्मके द्वारा जवाहरात जाता है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी—इस फर्मपर सब प्रकारके जवाहरात और खासकर जड़ाऊ गहने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपुर स्टेटके जागीरदारोंसे नकद लेनदेनका भी यहां व्यापार होता है।

अजमेर—सेठ महादेवलाल जौहरी, कैसरगंज—इस दूकानपर भी सब तरहके जवाहरातका व्यापार होता है।

मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी जैन सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस दुकानको जयपुरमें खुले हुए करीब २० वर्ष हुए। इस दुकानकी स्थापना सेठ दुर्लभजीभाईने अपने हाथोंसे की। आप बड़े ही सज्जन, [illegible] और धार्मिक कार्योंमें उत्साह रखनेवाले सज्जन हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ त्रिभुवनदासभाई जौहरी था। आपके इस समय पांच पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे १-विजयचन्दजी (२) गिरिधरलालजी (३) ईश्वरलालजी (४) शान्तिलालजी और (५) [illegible] हैं। इनमेंसे पहले तीन आपको दुकानके कार्योंमें मदद देते हैं और शेष पढ़ते हैं।

श्रीयुत दुर्लभजी भाई [illegible] स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्सके [illegible] हैं। आपने अपनेही हाथोंसे पहले पहल मोरवीमें इसकी स्थापना की थी। आप कई [illegible] इसके [illegible] भी रहे हैं और इस समय आप इसके ट्रस्टी हैं। कान्फ्रेन्सकी तरफसे जो जैन ट्रेनिंग कालेज चल रहे हैं उनमें भी आप [illegible] आपके [illegible] हमेशा [illegible] करते रहते हैं

श्री० सेठ बन्शीधरजी रतनान, जैपुर

श्री० कुं० शिवप्रसादजी रतनान, जैपुर
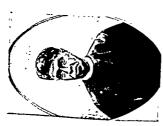
सेठ विहारीलालजी वैराठी कोड़ीवाले

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बैराठ (जिला जयपुर)में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको जयपुरमें स्थापित हुए करीब ३०-३५ वर्ष हुए। श्रीयुत विहारीलालजी ही के हाथोंसे इस फर्मकी स्थापना हुई और आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी खूब उन्नति भी हुई। श्रीयुत विहारीलालजी धार्मिक और उदार विचारोंके सज्जन थे। जयपुरके व्यापारिक समाजमें आपका बहुत अच्छा प्रभाव था। आपका अभी कुछ मास पूर्व देहावसान हो गया है। जयपुरकी अग्रवाल पाठशाला गौशाला, हिन्दू अनाथालय, धन्वन्तरि औषधालय तथा अन्य सभी संस्थाओंमें आपके यहांसे सहायता पहुंचती रहती है।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ विहारीलालजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) जयपुर—मेसर्स विहारीलाल वैराठी, जौहरी बाजार—यहां बैङ्किग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२) जयपुर मेसर्स विहारीलाल लक्ष्मीनारायण, काटन प्रेस—यहां रुईकी सीजनमें कपास और रुईका व्यवसाय तथा इसकी आढ़तका काम होता है।

जौहरी

मेसर्स कान्तिलाल छगनलाल ज्वैलर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़)में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। यहां इस दुकानको खुले हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह फर्म पहले मोरवी अमुकचंदके नामसे व्यवसाय करती थी। लेकिन जब सब भाइयोंका हिस्सा बँटा तब यह दुकान सेठ छगनलाल भाईके हिस्सेमें आगई। तभीसे इस दुकानपर मेसर्स कान्तिलाल छगनलालके नाम से व्यवसाय होता है।

इस समय इस दुकानका सञ्चालन सेठ छगनलाल भाई करते हैं आप बड़े सज्जन, शिक्षित और सुधरे हुए विचारोंके सभ्य पुरुष हैं। स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंसमें आप हमेशा भाग लेते रहते हैं। जिस समय महात्मा गांधीका खादी आन्दोलन चला था उस समय आपने उसमें बड़े उत्साहसे

स्वर्गवास होगया। वर्तमानमें आप इस दुकानका सञ्चालन करते हैं। आप इस समय पांच भाई हैं जिनके नाम श्रीयुत पूनमचन्दजी, श्रीयुत गुलाबचन्दजी, सुल्तानसिंहजी, श्री ताराचन्दजी तथा फतेसिंहजी हैं।

इनमेंसे श्री फतेसिंहजी के श्रीयुत सुगनराजजी और श्रीयुत ताराचन्दजी के श्री सेनराजजी नामक पुत्र हैं। यह खानदान जयपुरके ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित है, तथा व्यापारिक समाजमें भी इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी दुकानें नीचे लिखे अनुसार हैं :—

(१) जयपुर—सेठ पूनमचंद भण्डारी जौहरी बाजार—इस दुकानपर जवाहिरात बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका कारबार होता है।

(२) रंगून—मेसर्स पूनमचन्द फतेसिंह, T A Dipawat इस दुकानपर बैंकिंग हुण्डी, चिट्ठी, जवाहिरात और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) रंगून-मेसर्स पूनमचन्द गुलाबचन्द सुगनब्रो:—इस दुकानपर जवाहिरात, बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका काम होता है। (T. A Bhandaijee)

नं० ३ की रंगूनवाली दुकानकी निम्नाङ्कित स्थानोंमें ब्रान्चेस हैं (१) माण्डले (Bhandarijee) (२) सन्द्वाय (Bhandarijee) (३) मरगुई (Bbandarijee)

मेसर्स फूलचन्द मानिकचंद जौहरी

इस फर्मके सञ्चालकोंका मूल निवास स्थान पटियाला स्टेटके बरई नामक नगरमें है। आप श्रीमाल जैन श्वेताम्बर जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। श्रीयुत फूलचन्दजी के पिता श्रीयुत नानकचन्दजी पटियाला स्टेटमें कानूगो और जमींदार थे। श्रीयुत फूलचन्दजीका जन्म बसईमें ही हुआ। आप जब बारह तेरह वर्षके थे तभी व्यापारके लिये जयपुर आये थे। यहां आकर इस छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातका काम प्रारम्भ किया और बहुतसा धन, पैदा किया। स्वर्गीय महाराज माधोसिंहजीके हाथसे संवत् १९७१ से लेकर उनके स्वर्गवास होने तक जो एक्सचेंज बिजिनेस स्टेट ट्रेजरीमें होता था। वह आपके मार्फत ही होता था।

श्रीयुत फूलचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत मानिकचन्दजी श्रीयुत मेहतावचन्दजी और श्रीयुत मोतीचन्दजी हैं।

इस दुकानपर जवाहिरातका जिसमें खासकर पन्ना का बिजिनेस होता है। लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि बाहरी शहरोंमें आपके द्वारा बहुत जवाहरात एक्सपोर्ट होता है।

सेठ छगनलाल भाई (मे० कान्तिलाल छगनलाल) जैपुर

श्रीयुत कान्तिलाल भाई S/o छगनलाल भाई जै

श्रीयुत चम्पालालजीकी उम्र इस समय २२ वर्षकी है पर आप दुकानका सञ्चालन बहुत अच्छी तरहसे कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर-श्री गुलावचन्द वेद जौहरी, घारहगणगोर—यहां सब प्रकारके जवाहिरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता--श्री गुलावचन्द वेद १७६ क्राम स्ट्रीट—इस फर्मपर सराफी तथा जवाहरातका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा लंदन और पेरिसको बहुतसा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है। यहांपर आपकी दो कोठियां भी बनी हुई हैं।

मेसर्स चुन्नीलालमूलचंद कोठारी

इस दुकानके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें है। आप ओसवाल जातिके हैं। इस दुकानको स्थापित हुए करीब सौ वरसका असी हो गया। सबसे पहले इस दुकानको श्रीयुत हीरालाल जी कोठारीने स्थापित किया। उस समय इस दुकानका नाम मेसर्स "नथमल हीरालाल" लिखा जाता था। श्रीयुत हीरालाल जीके पश्चात् श्रीयुत चुन्नीलालजीने इस दुकानके कार्यको सम्भाला। सन् १९०७में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत मूलचंदजी कोठारी इस दुकानके कामको सम्भाल रहे हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई।

आपकी निम्नांकित स्थानोंपर दुकाने हैं:—

(१) जयपुर—(हेड आफिस) मेसर्स चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी—इस दुकानपर जवाहिरातके दागीनों और खुले जवाहिरातका व्यापार होता है। राजपूताने और सेण्ट्रल इण्डियाके कई राजघरानोंमें भी आपके द्वारा जवाहिरात सप्लाय होते हैं। T. A. Pearl

(२) जयपुर—अपोजिट जयपुर होटल—मेसर्स सी० एम० कोठारी एण्ड संस–इस दुकानपर क्यूरियो और ज्वैलर्स दोनों प्रकारका व्यवसाय होता है।

(३) अजमेर—चुन्नीलाल मूलचन्द लासन कोठरी –इस दुकानपर सट्टमा सिवाय और कपड़ेका व्यवसाय होता है।

—०:०—

मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल (सचेटिया) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इस दुकानकी स्थापना सर्वप्रथम सेठ दयाचंदजीने की सेठ दयाचं

मोतीलालजी था, आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ। उनके पश्चात् श्रीयुत सुगनचन्दजी ने इस फर्मके कामको सम्हाला।

आपकी दुकानपर जवाहिरातका और उसमें भी खास कर पन्नाका व्यवसाय होता है। इस दुकानसे इंगलैंडमें भी बहुतसा जवाहिरात जाता है (T. A. Panna)

मेसर्स भूरामल राजमल सुराना जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहलीमें है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस यहांपर आये करीब खानदानको १५० वर्ष हुए। तभीसे यह फर्म भी यहांपर स्थापित है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री भूरामलजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े ही उद्योगी, कर्मशील और सज्जन पुरुष थे। आपका देहावसान संवत् १९७६ में हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत राजमलजी इस फर्मके कार्य्यका सञ्चालन करते हैं। संवत् १९६४ में आपका जन्म हुआ। इतनी छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातके सामान महत्वपूर्ण व्यवसायमें दक्षता प्राप्त करली है।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरात, हीरा, मोती और जड़े हुए जेवरोंका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांके देशी राजा रईसोंमें आपके द्वारा बहुतसा जवाहिरात सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि बाहरी देशोंमें भी आपके द्वारा बहुत सा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स मथुरादास सुखलाल राठी

इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये। यह फर्म पहले छोटे रूपमें थी। श्रीयुत सुखलालजी राठीके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई। श्रीयुत सुखलालजी श्रीयुत मथुरादासजीके पुत्र हैं। यह फर्म जयपुरके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत सुखलालजी बड़े सज्जन पुरुष हैं। आपके तीन पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत सूरजमलजी, चांदमलजी, और केशरीमलजी हैं। आप तीनों ही दुकानके काममें भाग लेते हैं।

इस फर्मपर जवाहिरात, जड़ाऊ जेवर, और मीनाकारीका हरकिस्मका व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा रईसों तथा और स्थानोंमें भी आपके यहांसे माल सप्लाय होता है।

इस दुकानका हेड आफिस जौहरी बाजारमें है और आफिस जमुनाकी गेट पर है।

श्री० दुर्लभजी भाई जवेरी (मे० दुर्लभजी त्रिभुवनदास) जैपुर

श्री० विनयचन्दजी S/o दुर्लभजी भाई

श्री० निरञ्जनलालजी S/o दुर्लभजी भाई जवेरी, जैपुर

श्री० ईश्वरलालजी S/o दुर्लभजी भाई

इस समय आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) जयपुर—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार T.A Nakada इस दूकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा महाराजोंमें आपके द्वारा बहुतसा जवाहिरात सप्लाय होता है।

(२) मोरवी—मेसर्स मोनशी अमुलक—यहांपर इस फर्मका वर्कशाप है।

(३) रंगून—मेसर्स दुर्लभजी भाई त्रिभुवनदास स्काटमार्केट—यहांपर भी जवाहिरातका काम होता है।

(४) रांची—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवन एण्ड करीमजीवा मेनरोड—यहां पर भी जवाहिरातका व्यापार होता है। इसके अलावा आपका मारवाड़के अन्दर सरदार शहरमें सेंटर है।

मेसर्स नारायणजी महादेव लड़ीवाले जौहरी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब पचास साठ वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने की। उनके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। श्रीयुत नारायणजीके दो पुत्र थे। पहले श्रीयुत महादेवजी और उनसे छोटे श्रीयुत धोंकलजी। संवत् १९६२ श्रीयुत नारायणजीका स्वर्गवास होगया। उनके पश्चात् उनके बड़े पुत्र श्रीयुत महादेवजीने इसके कारबारको सम्हाला। उनके हाथोंसे भी इस दुकानकी तरक्की हुई। उनका स्वर्गवास संवत १९५८में हुआ। आपके पश्चात् आपके छोटे भ्राता श्रीयुत धोंकलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। इस समय श्रीयुत धोंकलजी और श्रीयुत प्रहलादजी (श्रीयुत महादेवजीके पुत्र) दोनों इस दुकानके कार्य्यका संचालन करते हैं। श्रीयुत धोंकलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत बंशीधरजी है। श्रीयुत प्रह्लादजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत मुरलीधरजी और श्रीयुत मनोहरलालजी हैं। श्रीयुत वंशीधरजी और श्रीयुत मुरलीधरजी दुकानके संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मके संचालकोंने जयपुरकी स्थानीय अग्रवाल, पाठशाला और जयपुरकी गोशालाके मकान अपनी ओरसे प्रदान किये हैं। घाट दरवाजेके स्मशानमें और घाटकी सड़कपर दो बगीचियें आपने सर्वसाधारणके आरामके लिए बनवाई हैं।

जयपुरके जौहरी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपकी फर्मपर जरा और उसमें भी खासकर मोतीका अच्छा व्यवसाय होता है।

भण्डारी पूनमचंद जौहरी

इस फर्मका संचालन श्रीयुत पूनमचन्दजी करते हैं। आप ओसवाल जातिके भण्डारी गोत्रके सज्जन हैं। आप श्रीयुत सोभागसिंहजीके पुत्र हैं। संवत् १९४८में श्रीसोभागसिंह

मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री ईश्वरलालजी सोगानी हैं। आप खास निवासी जयपुरके ही हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १९७२ में श्रीयुत ईश्वरलालजीने की। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

श्री ईश्वरलालजी मारवाड़ी समाजके उन सभ्योंसे हैं, जिन्होंने परदा सिस्टमके समान रेचड़ प्रथाको (जिसने मारवाड़ी समाजके नारी समुदायको नष्ट भ्रष्ट और अस्वस्थ बना रक्खा है।) प्रत्यक्षमें तोड़कर समाजके सामने एक नवीन आदर्श उपस्थित कर दिया है। आप अपनी धर्म-पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवीको लेकर विलायत भ्रमण कर आये हैं।

श्रीईश्वरलालजीके पिता श्रीमंसुखलालजी बहुत मामूली परिस्थितिके व्यक्ति थे। श्री ईश्वर-लालजीका प्रथम विवाह छोटी वयमें ही होगया था। जब आपकी प्रथम विवाहकी पत्नीका देहावसान होगया तब आपने अपने अनुकूल विचारोंकी कन्यासे विवाह करनेका निश्चय कर श्री० लक्ष्मी बाई से विवाह किया। और उनको साबरमती आश्रम आदि उच्च स्थानोंमें रखकर शिक्षा दिलाई तथा बादमें परदा प्रणालीको तोड़कर सन् १९१९में आप विलायत यात्राके लिये चले गये। अमेरिकामें श्रीलक्ष्मीबाईके सादीके लिबासपर बहुत लोगोंने हंसी उड़ाई, पर आप अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहीं। फल यह हुआ कि इस्टर नेशनल एक्जीबीशनमें लक्ष्मीदेवी इण्डिया की ओरसे प्रतिनिधि रहीं।

श्रीईश्वरलालजीको पुस्तक पढ़नेसे अच्छा प्रेम है। आपने जयपुरमें सन्मति पुस्तकालयकी स्थापना की। शिक्षाके साथ २ आपका व्यवसायिक चातुर्य भी बढ़ा चढ़ा है। आपने अपने ही हाथोंसे अपने जवाहरातके व्यापारको अच्छा जमा लिया है। आपको सन् १९२६ के अमेरिकाके इस्टर नेशनल एक्जीबीशनमें भारतीय मालकी अपूर्व सफलताके उपलक्षमें १ गोल्ड मेडल और १ ग्रांड प्राइज प्राप्त हुआ था। भारतीयोंके लिये यह पहिली बात थी।

आपने उपवास चिकित्सा और जल चिकित्सा द्वारा रोगियोंको आराम पहुंचानेकी पद्धतिमें भी बहुत सफलता प्राप्त की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—जयपुर—मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स जौहरी बाजार T. A. Ishwar यहां आपका हेड आफिस है। तथा विलायतके लिये जवाहिरातका एक्सपोर्ट होता है।

२—लन्दन—मेसर्स सोगानी एण्ड को० लिमिटेड T.A Laxmi[illegible] हॉल्बर्न इण्डियन मार्ट एण्ड ओरियन्टल स्टोर, इम्पिरियल्स ऑफ इण्डिया (भारतीय कलाकी चीजें और जवाहरातके व्यापारी)

३—न्यूयार्क सोगानी एण्ड को इन्टरनेशनल २०५ T. A Sogani—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

श्री० सेठ धनजीलालजी ठोलिया जैपुर

श्री० कुंवर गोपीचन्दजी ठोलिया जैपुर

श्री० कुंवर हरकचन्दजी ठोलिया जैपुर

श्री० कुंवर सुन्दरलालजी ठोलिया जैपुर

श्री सेठ प्रहलाददासजी (रामचन्द्र मोतीलाल) जेपुर

स्व० सेठ रामकुंवारजी धोचा (रामकुंवार सूरजबख्श) जैपु

सेठ धनजीलालजी ठोलिया उनेदास

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके वैश्य हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ धनजीलालजी ने की। आप उन व्यापारियोंमेंसे हैं। जिन्होंने अपने बाहुबल, अपने पराक्रम और अपनी चतुरतासे लाखों रुपयेकी दौलत पैदा की है, तथा व्यापारिक समाजमें अपनी प्रतिष्ठा कायमकी है। सेठ धनजीलालजीके पहले यह फर्म बहुत ही छोटे रूपमें थी। आपने आजसे करीब पचास पिचपन वर्ष पहले पन्द्रह सोलह बरसकी उमरमें इस फर्मका कार्य्य प्रारम्भ किया और इतने थोड़े समयमें ही इतनी प्रख्याति प्राप्त करली कि आज जयपुरके सारे जौहरी समाजमें यह फर्म पहले नम्बरकी मानी जाती है। आपके यहां तारका पता--Emarald है।

सेठ धनजीलालजीकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है आपकी ओरसे कई संस्थाओंमें दान दिया जाता है।

इस समय सेठ साहबके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे कुंवर गोपीचन्दजी, कुंवर हरकचन्दजी, कुंवर सुन्दरलालजी, कुंवर पूनमचन्दजी और कुंवर ताराचन्दजी हैं। आप पांचोंही बड़े सुयोग्य और सज्जन पुरुष हैं। कुंवर गोपीचन्दजीके एक पुत्र श्रीयुत ऋषभदासजी और कुंवर हरकचन्दके एक पुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी है।

सेठ धनजीलालजीके एक भाई हैं जिनका नाम श्रीयुत जमनालालजी है। इनके एक पुत्र हैं। जिनका नाम अनूपचन्दजी है। इनके अलावा सेठ साहबके दो भाई और थे जो स्वर्गवासी हो चुके हैं। इनमेंसे बड़े भाईका नाम श्रीयुत जौहरीलालजी था, उनके एक पुत्र विद्यमान हैं, जिनका नाम घीसीलालजी हैं। दूसरेका नाम बहादुरलालजी था।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। बम्बईमें खैरातीलाल सुन्दरलाल जौहरीके नामसे मोतीबाजारमें जो दुकान है उसमें आपका हिस्सा है। T. A Manfool

---

मेसर्स बहादुरसिंह भूधरसिंह जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब सौ बरस हुए। श्रीयुत बहादुरसिंहजी और भूधरसिंहजी दोनों हो भाइयोंने इस फर्मको स्थापित किया था।

इस समय श्रीयुत बहादुरसिंहजी और श्रीयुत भूधरसिंहजी के वंशजोंकी फर्म अलग हो २ गई है। श्रीयुत सुगनचन्दजी श्रीयुत भूधरसिंहजीके पौत्र हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत

सेठ प्रह्लाददासजी (गनचन्द मोतीलाल) जैपुर

स्व० सेठ [illegible] (गनकुंवार मूलचन्द) जैपुर

मेसर्स रामकुंवार सूरजबक्स
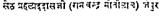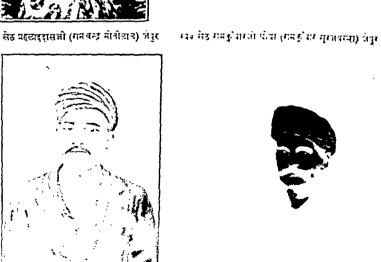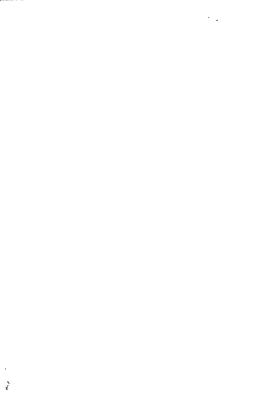
इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चोमू (जयपुर राज्य) में है। आप खंडेलवाल (वैष्णव) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १९५७ में श्रीयुत रामकुंवारजीके हाथोंसे हुई तथा इस फर्मकी विशेष तरक्की रामकुंवारजीके चचेरे भाई मांगीलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीराम-कुंवारजीका स्वर्गवास ७० वर्षकी वयमें संवत १९८२ में हुआ। आप अन्त समयमें महाराज कालेजमें नौबल स्कूलके हेड मास्टर रहे थे। इस समय इस फर्मके संचालक श्रीयुत सूरजबक्सजी हैं। आप सज्जन और शिक्षित हैं।

आपके इस समय चार पुत्र हैं चारो ही स्कूलमें विद्याध्ययन करते हैं। श्री मांगीलालजीके पुत्र रूपनारायणजी भी दुकानके कामोंमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी ओरसे चोमूमें चौमावालोंकी धर्मशालाके नामसे एक धर्मशाला बनी हुई है। जय-पुरकी खंडेलवाल पाठशालाके श्रीसूरज बक्सजी सेक्रेटरी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ जयपुर—हेड आफिस रामकुंवार सूरजबक्स चांदपोल—यहां सब प्रकारकी आढ़त, गल्ला, तथा चांदीका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है। एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनीकी जयपुरके लिये सोल एजंसी है। T. A. Ghiya

२ कलकत्ता—मेसर्स रामकुंवार सूरजबक्स T. A. Jaiparwala—यहां चांदीका थोक व्यापार होता है।

३ मवलगंज मंडी—रामकुंवार सूरजबक्स—यहां आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

४—सवाई माधोपुर—रामकुंवार सूरजबक्स „ „ „

५—श्रीमाधोपुर—रामकुंवार सूरजबक्स „ „ „

६—चौमूका दरवाड़ा—रामकुंवार सूरजबक्स—यहां गुड़ और शक्करका काम होता है।

७—दुर्गापुरा—रामकुंवार सूरजबक्स „ „ „

८—हिन्डौन सिटी—रामकुंवार सूरजबक्स-आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

९—सांभरलेक—विजयलाल रामकुंवार—हुन्डीचिट्ठी, आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स हरबक्श सूरजमल

इस फर्मके मालिक मारोठ (मारवाड़) के निवासी हैं। इसे जयपुरमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस दुकानको सेठ हरबक्सजीने स्थापित किया। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरबक्सजीके पुत्र सेठ सूरजमलजी हैं। आप सरावगी (दिगम्बर-जैन) जातिके हैं। आपके पुत्र श्री मूलचन्दजी तथा मोतीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे मारोठमें बोर्डिंग

ॱ० सेठ भूरामलजी सुराना (भूरामल राजमल) जैपुर

श्री० पूनमचन्दजी भंडारी, जैपुर

श्री० राजमलजी सुराना जौहरी (भूरामल राजमल), जैपुर

श्री० गुलाबचन्दजी चोरड़िया जौहरी, जैपुर

स्व० लाला चिमनलालजी (केशरलाल कस्तूरचन्द) जैपुर

श्रीयुत सेठ केशरलालजी (केशरलाल कस्तूरचन्द) जैपुर

मेसर्स रतनलाल छुट्टनलाल पोपलिया

इस फर्मके मालिक श्रीमाल (जैन) सज्जन हैं। इस खानदानमें जवाहरातका व्यवसाय कई पीढ़ियोंसे चला आया है तथा यहांके जौहरियोंमें यह दुकान पुरानी है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रतनलालजी पोपलिया हैं। आपके पिताजी श्रीगवाहरलालजीके देहावसानके समय आपकी उम्र सिर्फ ८ वर्षकी थी। आपकी छोटी आयुमें दूकानके कारोबारको सम्हालने वाला कोई सुयोग्य व्यक्ति नहीं था इसलिये उस समय इस फर्मका व्यवसाय कुछ धीमी गतिसे चलता था। सेठ रतनलालजीने होशियार होकर दुकानको फिर व्यवस्थित ढंगसे चलाया। आपके १ एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्रीयुत छुट्टनलालजी हैं आपकी दूकानपर जवाहरातके सब प्रकारके गहने तयार रहते हैं तथा बनवाये जाते हैं।

मेसर्स एस० फोरास्टर एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सन् १८८० में हुई। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्री राजमलजी गोलेछा करते हैं। जयपुरके ओसवाल समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्री राजमलजी के पुत्र कुँवर सोहनमलजी गोलेछा भी व्यापारिक कार्योंमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें आपकी कम्पनीमें कार्पेट, ब्रास, ब्रास इनामिल, मेन्युफेक्चरर्स, बेङ्कर्स, मनी एक्सचेंजर्स गार्नेट मर्चेन्ट आदिका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर स्टेण्डर्ड आइल कम्पनीके रँलकी एजंसी और नेशनल एनीलिन एण्ड केमिकल कं० की रंगकी एजंसी है। यह फर्म ऊलनपेन्ट मेन्युफेक्चरर भी है।

मेसर्स सुगनचन्द सोभागचन्द

इस फर्मके मालिक खास निवासी देहलीके हैं। इस फर्मकी स्थापना ६ वर्ष पूर्व श्री सुगनचन्दजीने की। आरम्भमें आपने बहुत छोटे रूपमें व्यापार शुरू किया था। श्रीसुगनचन्दजीके बाद इनके पुत्र सेठ सोभागचन्दजीने इस दूकानके व्यापारको बढ़ाया। आपको कई अंग्रेज आफिसरोंसे इनामिल गोल्डके बाबत सार्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। संवत् १९६६ में आपका देहावसान हुआ।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ सोभागचन्दजीके पुत्र सेठ इन्द्रचन्दजी हैं। सन् १९११ में लार्ड कर्जनके समयमें जो देहली दरबार हुआ था, उसमें देशी मालके लिये आपको सार्टिफिकेट मिला था। वर्तमानमें आपकी फर्म पर इनामिल गोल्ड, ज्वेलरी और प्रेशियस स्टोनका व्यापार होता है।

मेसर्स गोपालजी मुरलीधर जयपुर

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जैन [गोयल] जातिके हैं। इस दूकानको स्थापित हुए करीब १००बरस होगये। इसकी स्थापना श्रीयुत गोपालजीके पुत्र श्रीयुत मुरलीधरजीने की। उन्हींके हाथोंसे इस दूकानकी तरक्की भी हुई। मुरलीधरजीके पुत्र श्रीयुत ईश्वरलालजी जयपुरमें ईसरजी रानाके नामसे मशहूर थे और अब भी यह दूकान इसी नामसे बोली जाती है। आपके हाथोंसे इस दूकानकी खूब तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। ईश्वरलालजीके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे (१) श्रीयुत जौहरीलालजी, (२) श्रीयुत चौथमलजी, (३) श्रीयुत छोटमलजी हैं। श्रीयुत जौहरीलालजी और चौथमलजी अलग अपना व्यवसाय करते हैं।

इस दूकानका सञ्चालन इस समय श्रीयुत छोटमलजी करते हैं। आपकी ओरसे पुराने घाट" पर एक जैन मन्दिर और एक बगीचा बना हुआ है। सेठ छोटमलजीके ३ पुत्रोंमेंसे श्री कपूर-चन्दजी और मोतीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है :-

१ जयपुर--पुरोहितजीका खंदा--मेसर्स गोपालजी मुरलीधर--इस दूकानपर देशी और विलायती दोनों प्रकारके कपड़ेका बड़े प्रमाणमें व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपुरके गोटे किनारीका भी आपके यहां व्यवसायहोता है।

२ जयपुर--मुरलीधर कपूरचन्द-- इस दूकानपर सांगानेरी कपड़े और देशी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

मेसर्स चिमनलाल रखीचन्द गोधा

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७० वर्ष वर्ष होगये। पहले इस दूकानपर जौहरीलाल चिमनलाल नाम पड़ता था। इस दूकानकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ जौहरीलालजी और उनके भाई श्रीयुत चिमनलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीयुत जौहरीलालजीका स्वर्गवास हुए करीब चौबीस पचीस साल होगये। श्रीयुत चिमनलालजी अभी विद्यमान हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान, जैन धर्मके पण्डित और वक्ता हैं। जयपुरमें आप चिमनलालजी वक्ताके नामसे प्रसिद्ध हैं।

इस समय इस दूकानका सञ्चालन श्री चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत रखीचन्दजी और श्रीयुत गप्पूलालजी करते हैं। आप दोनों ही बड़े सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्री सेठ सुखलालजी गटो (मथुरादास सुखलाल) जैपुर

श्री ईश्वरलालजी सोगानी (सपत्नीक) जैपुर

बैंकस

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (जयपुर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
,, गोकुलदास जीवनदास
,, गनेशदास नरसिंहदास
,, चन्द्रभान बंशीलाल
,, जुहारमल सुगनचन्द
,, बलदेवदास बृजमोहन बिड़ला
,, बिहारीलाल बैराठी फोड़ीवाला
,, बंशीधर शिवप्रसादजी खेतान
,, सूरजबख्श निर्भयराम
,, हरबख्श सूरजमल
,, श्रीकृष्णदत्त रामविलास
,, श्रीराम नानकराय

जौहरी

इण्डियन आर्ट एण्ड ज्वेलरी स्टोर्स अजमेरी गेट
कपूरचन्द कस्तूरचंद जौहरी हनुमानका रस्ता
कांतिलाल छगनलाल जौहरी, बाजार
गुलाबचन्द लूणिया अजमेरी गेट
गोकुलदासजी पूङ्गलिया
गोवर्द्धनलाल बद्रीनारायण जौहरी बाजार
गुलाबचन्द वेद पराानियों का रास्ता
चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी जौहरी बाजार
जौहरीमल दयाचन्द, गोपालजीका रास्ता
ज्योरास्टर एण्ड कम्पनी जौहरी बाजार
दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार
दुर्गालाल जौहरी हनुमानका रास्ता
नारायण महादेव लड्डोवाले, पीतलियोंका रास्ता
पी० एम० अलाबख्श अजमेरी गेट
पन्नालाल गनेशीलाल जौहरी बाजार
फतेलाल सुखलाल गोपालजीका रास्ता
पूनमचन्द फतेहचन्द भंडारी चौथमाताका रास्ता
फूलचन्द मानिकचन्द लाल कटलेके पास
बनजीलालजी ठोलिया घी वालोंका रास्ता
भूरामल राजमल सुराना लालकटला
मन्नालाल रामचन्द्र, जौहरी बाजार
रतनलाल पोपलिया हनुमानका रास्ता
शंकरलाल रूपनारायण हनुमानका रास्ता
रामजीमल विट्ठलदास पटनावाले गोपाल मन्दिर
सुगनचन्द सोभागमल जरगड़
सुखलालजी राठी जौहरी बाजार
सुगनचन्द चोरड़िया तेलीपाड़ा
सुन्दरलाल एण्ड सन्स
हाजी इज्जतबख्श मौलाबख्श अजमेरी गेट

कपड़े के व्यापारी

अखिल भारतवर्षीय चरखा संघ खादी भंडार
जौहरी बाजार
केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार
गोपालजी मुरलीधर पुरोहितजीका खंदा
गोपीराम मीनालाल त्रिपोलिया बाजार
गोपीराम दामोदर जौहरी बाजार
गोपीराम देवीलाल जौहरी बाजार
गोपालदास रमणदास जौहरी बाजार
चिमनलाल रखीचन्द पुरोहितजीका खंदा
छोटीलाल नेमीचन्द हवामहल-खंदा
छोटेलाल सुंदरलाल नागावाले, कालेजके नीचे
छोटीलाल चुन्नीलाल जौहरी बाजार
जौहरीलालजी राणा पुरोहितजीका खंदा
बद्रीलाल रामनारायण जौहरी बाजार
बिहारीलाल वासुदेव गोपालजी का रास्ता
मगनलाल फूलचन्द हवा महलका खंदा
मक्खीलाल स्वरूपनारायण जौहरी बाजार
रामचन्द्र मोतीलाल रामगंज बाजार
रामनारायण मालीराम पुलिसका खंदा

४—फिलाडेल्फिया (अमेरिका)—सोगानी एण्ड को० इंकारपोरेशन १५०० टौमसन स्ट्रीट—उपरोक्त व्यापार होता है।

५—क्लीवलैंड—सोगानी एण्ड को० इन्कारपोरेशन—उपरोक्त व्यापार होता है।

मेसर्स सुन्दरलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिक खास निवासी आगराके हैं। इस फर्मको यहांपर खुले हुए २० साल हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीप्रभूलालजीने अपने बड़े भाई सुन्दरलालजीके नामसे की। तथा इसके व्यवसायको आपहीने उन्नतिपर पहुंचाया।

इस फर्मको ब्रिटिश एम्पायर एक्जीबीशन विम्बले (लंदन) से सार्टिफिकेट और मेडिल तथा और भी कई प्रदर्शनियोंसे अच्छे २ सार्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—सुन्दरलाल एंड संस, यहां सब प्रकारका क्युरिओ सिटोका व्यापार होता है।

कमीशन एजेंट

मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैष्णव सम्प्रदायके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुई। तथा इसकी विशेष तरक्की इस दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत मल्हारदासजीके हाथोंसे हुई। आप सेठ मोतीलालजीके पुत्र हैं श्रीयुत मोतीलालजी का स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष होगये। तबसे आप ही इस कामको सम्हालते है

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबचन्दजी है। आप बड़े सज्जन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकाने हैं

१ जयपुर—मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल, रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूतका थोकबन्द व्यापार होता है। T. A. Rama

२ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर जयपुरके रंगे हुए पगड़ी पेचा, लहरिया आदि रंगीन कपड़ोंका थोक और फुटकर व्यापार होता है।

३ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर लट्ठा, धोती आदि देशी कपड़ोंका व्यापार होता है।

४ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल इस दूकानपर Bayer Company की रंगकी एजंसी है।

५ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर बैंकिङ्ग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

४—फिलाडेलफिया (अमेरिका)—सोगानी एण्ड को० इंकारपोरेशन १५०० स्टीमसन स्ट्रीट—
व्यापार होता है।

५—क्लीवलैंड—सोगानी एण्ड को० इन्कारपोरेशन—उपरोक्त व्यापार होता है।

मेसर्स सुन्दरलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिक खास निवासी आगराके हैं। इस फर्मको यहांपर खुले हुए २०
हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीभूलाजीने अपने बड़े भाई सुन्दरलालजीके नामसे की।
इसके व्यवसायको आपहीने उन्नतिपर पहुंचाया।

इस फर्मको बृटिश एम्पायर एक्जीवीशन विम्बले (लंडन) से सार्टिफिकेट और मे
तथा और भी कई प्रदर्शनियोंसे अच्छे २ सार्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। इस फर्मके व्यवसा
परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—सुन्दरलाल एंड संस, यहां सब प्रकारका क्युरिओ सिटीका व्यापार होता है।

कमीशन एजेंट

मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैष्णव सम्प्रदायके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ...
वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुई। तथा इसकी विशेष तरक्की इस दूकानके वर्तमान
मालिक श्रीयुत प्रल्हाददासजीके हाथोंसे हुई। आप सेठ मोतीलालजीके पुत्र हैं श्रीयुत मोतीलालजी
का स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष होगये। तबसे आप ही इस कामको सम्हालते है

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबचन्दजी है। आप बड़े सज्जन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकाने हैं

१ जयपुर—मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल, रामगंज बाजार—इस दूकानपर लूगका थोकबन्द व्यापार
होता है। T. A. Rama

२ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर जयपुरके रंगे हुए पगड़ी पेचा, लहरिया आदि रंगीन
कपड़ोंका थोक और फुटकर व्यापार होता है।

३ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर लट्ठा, धोती आदि देशी कपड़ोंका व्यापार होता है।

४ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल इस दूकानपर Bayer Company की रंगकी एजंसी है।

५ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर बेंकिङ्ग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

पिलानी

जयपुर स्टेट रेलवेके झुंझनू स्टेशनसे ३५ मीलकी दूरीपर यह छोटी सी रमणीक बस्ती बसी हुई है। वैसे तो यह एक छोटा सा गांव है, मगर बिड़ला परिवारके यहां रहनेकी वजहसे बड़ा गुलचमन मालूम होता है। इस गांवमें बिड़ला परिवारकी कई बड़ी २ इमारतें, कई स्कूल और बोर्डिङ्ग हाउस बने हुए हैं, जिनका परिचय तथा फोटो आगे दिये जा रहे हैं। पाठकोंको पता चलेगा कि बिड़ला परिवारकी वजहसे यह छोटी सी बस्ती कितनी रमणीक और आबाद हो गई है।

बिड़ला परिवार

अब हम पाठकोंके सम्मुख एक ऐसे परिवारका परिचय रखना चाहते हैं जिसने अपने दिव्य गुणोंसे इतिहासके अमर पृष्ठोंमें अपना नाम अंकित कर दिया है, जिसने न केवल अपनी व्यापारिक प्रतिभासे करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति ही कमाई है, प्रत्युत व्यापारके महान आदर्शको संसारके सम्मुख प्रत्यक्ष करके दिखला दिया है; जिसने अपने अनुभवोंसे दिखला दिया है कि गरीब मजदूरोंसे कमसे कम मजदूरीमें पशुओंकी तरह बारह २ घण्टे काम लेकर धन इकट्ठा करनेका नाम सफल व्यवसाय नहीं है—प्रत्युत पूर्ण मनुष्यत्वके साथ सबके हकोंपर खयाल रखकर व्यापारिक जगतमें सफल होना ही सफल व्यवसायीके लक्षण हैं।

जो सज्जन भारत प्रसिद्ध बिड़ला परिवारसे कुछ भी परिचित हैं वे भली प्रकार इस बातको समझ सकते हैं कि हमारे उपरोक्त कथनमें अतिशयोक्तिकी तनिक भी मात्रा नहीं है। ऐसे आदर्श परिवारका परिचय इस ग्रन्थके लिये बहुत बड़े गौरवका कारण है। यह जानकर हम बड़ी प्रसन्नताके साथ पाठकोंके सम्मुख इस परिवारका संक्षिप्त परिचय रखते हैं।

व्यापारके अन्दर कुशलता प्राप्त करके धन प्राप्त करना बहुत कठिन है, उसमें भी बिना

पिलानी

जयपुर स्टेट रेलवेके झुंझनू स्टेशनसे ३५ मीलकी दूरीपर यह छोटी सी रमणीक बस्ती बसी हुई है। वैसे तो यह एक छोटा सा गांव है, मगर बिड़ला परिवारके यहां रहनेकी वजहसे बड़ा गुलचमन मालूम होता है। इस मानमें बिड़ला परिवारकी कई बड़ी २ इमारतें, हाई स्कूल और बोर्डिङ्ग हाउस बने हुए हैं, जिनका परिचय तथा फोटो आगे दिये जा रहे हैं। पाठकोंको पता चलेगा कि बिड़ला परिवारकी वजहसे यह छोटी सी बस्ती कितनी रमणीक और आबाद हो गई है।

बिड़ला परिवार

अब हम पाठकोंके सन्मुख एक ऐसे परिवारका परिचय रखना चाहते हैं जिसने अपने दिव्य गुणोंसे इतिहासके अमर पृष्ठोंमें अपना नाम अंकित कर दिया है, जिसने न केवल अपनी व्यापारिक प्रतिभासे करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति ही कमाई है, प्रत्युत व्यापारके महान आदर्शको संसारके सन्मुख प्रत्यक्ष करके दिखला दिया है; जिसने अपने अनुभवोंसे दिखला दिया है कि गरीब मजदूरोंसे कमसे कम मजदूरीमें पशुओंकी तरह बारह २ घण्टे काम लेकर धन इकट्ठा करनेका नाम सफल व्यवसाय नहीं है—प्रत्युत पूर्ण मनुष्यत्वके साथ सबके हकोंपर खयाल रखकर व्यापारिक जगतमें सफल होना ही सफल व्यवसायीके लक्षण हैं।

जो सज्जन भारत प्रसिद्ध बिड़ला परिवारसे कुछ भी परिचित हैं,वे भली प्रकार इस बातको समझ सकते हैं कि हमारे उपरोक्त कथनमें अतिशयोक्ति की तनिक भी मात्रा नहीं है। ऐसे आदर्श परिवारका परिचय इस ग्रन्थके लिये बहुत बड़े गौरवका कारण है। यह जानकर हम बड़ी प्रसन्नताके साथ पाठकोंके सन्मुख इस परिवारका संक्षिप्त परिचय रखते हैं।

व्यापारके अन्दर कुशलता प्राप्त करके धनको प्राप्त करना बहुत कठिन है, उसमें भी बिना

हाउस, जैन पाठशाला और औषधालय बना हुआ है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय प्रकार है।

१ जयपुर—हरबक्स सूरजमल जौहरी बाजार—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।
२ जयपुर—हरबक्स सूरजमल धानमंडी—यहां गल्ले और जीरेका व्यापार होता है।
३ जयपुर—हरबक्स सूरजमल-काटन जीन प्रेस—यहां रुई। कपासका व्यापार होता है।
४ आगरा—हरबक्स सूरजमल बेलनगंज-यहां आढ़त तथा हुण्डीका काम होता है। यह फर्म वर्षोंसे यहां स्थापित है।
५ बम्बई—चैनसुख चन्दनमल भोंडेभर, T. A. Marothawala—यहां आढ़त तथा हुण्डी चि का व्यापार होता है।

कपड़े और गोटेके व्यापारी

मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द कपूर

इस फर्मके मालिक खण्डेलवाल श्रावक जातिके सज्जन (दिगम्बर-धर्मावलम्बी) हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ३२ वर्ष हुए। इसके मूल संस्थापक श्रीयुत लाला चिमनलालजी हैं, जो कि जयपुर रियासतमें महकमा इमारतके अफसर थे। इसकी विशेष तरक्की उन्हींके हाथोंसे हुई। ला० चिम लालजी बड़े योग्य और सज्जन पुरुष थे। जयपुरकी जनतामें तथा राज्यमें आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सन् १९१६ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन ले चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत केशरलालजी करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीयुत कस्तूरचन्दजी इस समय अपने पिताजीके स्थानपर महकमा इमारतके आफिसर हैं।

श्री केशरलालजीको शिक्षा और विद्याभ्याससे बड़ा प्रेम है। यहांपर आपका एक और कोठी बनी हुई है। आपके इस समय पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े श्रीयुत कस्तूर जिनकी उम्र अभी केवल २० वर्षकी है, बी० ए० में पढ़ रहे हैं। शेष चार भी विद्याध्ययन

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूत, कपड़ा तथा ग व्यवसाय होता है।

जयपुर—मेसर्स चिमनलाल रतनलाल गोटा पुरोहितजीका रास्ता—यहाँ जयपुरके बने हु
प्रकारके गोटे तथा पट्टेका अच्छा व्यापार होता है।

खादीभंडार

यह अखिल भारतवर्षीय चरखा-संघका खादी भण्डार है। राजपूतानेका बना हुआ
कच्चा माल यहाँ आता है और यहाँसे भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें अच्छी मात्रामें भेजा जा
विशुद्ध खद्दर की क्वालिटी और सफाईमें इस संघने अच्छी तरक्की की है। यह फर्म जौहरी बा
है। इसके व्यवस्थापक श्री केशरलालजी अजमेरा जैन हैं।

फोटोग्राफर एण्ड आर्टिस्ट

राजपूताना फोटो आर्ट स्टूडियो

इस स्टूडियोकी स्थापना सन् १९०७ में हुई है। इसे जयपुरके एक विद्वान और प्रति
ताजिमी सरदार श्री रामप्रतापजी पुरोहितने आर्टकी उन्नति और अपने शौककी पूर्त्तिके लिए स्थापि
किया है। पुरोहित रामप्रतापजी जयपुर स्टेटके अच्छे जागीरदार और ताजिमी सरदार हैं। आप
फोटोग्राफी और आर्टका बेहद शौक है। इस काममें आपने हजारों रुपये व्यय किये हैं। जब इ
ओरसे आपका शौक हटने लगा तब आपने अपने कार्यको बंद करनेकी अपेक्षा उसे व्यवसायि
रूप देना ठीक समझा। कलाकौशलपूर्ण जयपुर शहरमें इस संस्थाके सञ्चालन करनेवाले योग
कार्यकर्त्ताओंका मिलना कठिन नहीं था। अतएव यह स्टूडियो सन् १९०७ में स्थापित होगया और
तबसे नवीन सजधज और सुधारके साथ अपनी उन्नति कर रहा है।

इस स्टूडियोमें फोटोग्राफी, चित्रकारी और ऑइल पेंटका दर्शनीय काम होता है। यहां
फोटोमें एक खास विशेषता रहती है, जो ग्राहकोंका मन स्वाभाविक ही अपनी ओर आकर्षि
करती है। यह स्टूडियो ३६ फीट लम्बा और २४ फीट चौड़ा है।

विड़ला परिवारका परिचय

(१) श्रीमान् राजा बलदेवदासजी—आप श्री० शिवनारायणजी बिड़लाके सुपुत्र हैं। इस समय इस परिवारमें आपही सबसे बड़े हैं। आप बड़े शांत, उदार, और दयालु स्वभावके सज्जन हैं। धार्मिक कार्योंमें आप बड़ी उदारतासे खर्च करते हैं। इस समय आप तमाम सांसारिक कार्योंका भार अपने योग्य पुत्रोंके हाथमें देकर काशीवास कर रहे हैं। आपके पुत्रोंका परिचय इस प्रकार है।

श्री० जुगलकिशोरजी बिड़ला—आप राजासाहबके जेष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े शांत और सरल स्वभावके उदार तथा दानी सज्जन हैं। आप ही उदारतापर कई अच्छी २ संस्थाओंका जीवन निर्भर है। सामाजिक और राष्ट्रीय कार्योंमें आप अपना बहुतसा समय प्रदान करते हैं।

श्री० रामेश्वरदासजी बिड़ला—आप बड़े गंभीर स्वभावके सरल और उदार सज्जन हैं। आपकी व्यवसाय कुशलता भी बहुत बढ़ी चढ़ी है। बम्बईकी बुलियन मर्चेंट्स एसोसियेशनके आप प्रेसिडेण्ट हैं।

श्री० घनश्यामदासजी बिड़ला—आप राजा साहबके तृतीय पुत्र हैं। आप अत्यन्त सज्जन व्यवहार कुशल और उदार व्यक्ति हैं। आपकी व्यापार संगठन शक्ति मारवाड़ियोंमें अभूतपूर्व है। बिड़ला परिवारकी व्यापार वृद्धिका बहुत बड़ा श्रेय आपकी व्यापार-संगठन शक्तिको है। आपने नवीन पद्धतिपर व्यापार करनेकी कलामें आशातीत सफलता प्राप्त की है। कुछ समय पूर्व आप बंगाल कौंसिलके नामीनेटेड मेम्बर थे। पश्चात् १९२७ में आप लेजिस्लेटिव्ह एसेम्बलीके मेम्बर निर्वाचित किये गये। इसके अतिरिक्त आप इंडियन फिस्कल कमीशनके भी मेम्बर थे। जिनोवामें अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर कान्फ्रेन्स हुई थी उसमें आप भारतीय एम्प्लायर्सकी तरफसे निर्वाचित होकर गये थे। इंडियन मर्चेंट्स चेम्बर आफ कामर्सके स्थापक और प्रथम प्रेसिडेन्ट भी आप ही थे। ग्वालियर स्टेटकी ट्रस्ट कमेटीके ट्रस्टियोंमेंसे आप भी एक हैं।

कलकत्तेमें जिस समय हिन्दू मुसलिम दंगा हुआ था, उस समय आप ही एक ऐसे मारवाड़ी सज्जन थे जो उस भीषण और खतरनाक परिस्थितिमें अपनी जानको जोखिममें डाल अपने भाइयोंकी रक्षाके निमित्त प्रबल उत्साहसे निकले थे। उस भीषण परिस्थितिसे आपने कितनेही लोगोंकी रक्षा की थी। इतने धनाढ्य और युवक होनेपर भी आपने अपनी प्रथम पत्नीके देहावसानके पश्चात् दूसरा विवाह नहीं किया। इससे आपके मानवोपम चरित्रकी निर्मलता और उज्ज्वलताका पता चलता है।

श्री० ब्रजमोहनजी बिड़ला—आप राजासाहबके सबसे छोटे पुत्र हैं। आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धि, गंभीर और व्यवसाय कुशल नवयुवक हैं।

मोटरकार डीलर्स

फ्रेनसेफा एण्ड को० अजमेरी गेट
हरिनारायण मोहरीलाल त्रिपोलिया

प्रिंटिंग प्रेस

प्रेमप्रकाश प्रेस पितलियोंका रास्ता
बालचन्द्र यन्त्रालय अजमेरीगेट
मनोरंजन प्रेस गोपालजीका रास्ता

फोटो ग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

उदयराम बद्रीप्रसाद अजमेरीगेट
गोविंदराम एण्ड संस अजमेरीगेट
जी० एन० भैंवरलाल त्रिपोलिया बाजार
जी० चन्दालाल चांदपोल बाजार
दी राजपूताना फोटो आर्ट स्टूडियो स्टेशनरोड

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

ईश्वरी प्रसाद बुकसेलर त्रिपोलिया
कन्हैयालाल बुकसेलर
स्टूडेण्टस कोआपरेटिव्ह सोसायटी
महाराजा कॉलेज

स्टेशनर

च्ही० एस० सक्सेना त्रिपोलिया बाजार
शिवनारायण रामप्रताप कागजी

अत्तार

गोकुल अत्तार गोपालजीका रास्ता
चुन्नीलाल अत्तार सांगानेरी दरवाजा
झुमनजी अत्तार
वल्लभराम रामनारायण त्रिपोलिया

परफ्यूमर्स

जमनादास श्री नारायण त्रिपोलिया
राधावल्लभ चौड़ा रास्ता

बंदूक कारतूस आदिके व्यापारी

अब्दुलरहीम अब्दुलकरीम जौहरी बाजार
नवरोजजी जमशेदजी जौहरी बाजार

होटल्स एण्ड धर्मशालाज्

किंग एडवर्ड मेमोरियल होटल अजमेरीगेट
जयपुर होटल
न्यू होटल
राज पूताना होटल अजमेरीगेट
धर्मशाला चांदपोलगेट
माजी साहबकी धर्मशाला
पुंगलियोंकी धर्मशाला, (केवल श्वेताम्बर जैनियोंके वास्ते)
मलजी छोगालाल की धर्मशाला
(केवल दिगम्बरियोंके लिये)
इसके अतिरिक्त ६-१० धर्मशाला और

लायब्रेरीज्

दि महाराजा पब्लिक लायब्रेरी त्रिपोलिया
पद्मावती पुस्तकालय जौहरी बाजार
शांति जैन पुस्तकालय बारहगणगोर
सन्मति पुस्तकालय

बिड़ला गेस्ट हाऊस, पिलानी (जेपुर)

बिड़ला बोर्डिं

पिलानी (जैपुर) का दृश्य

बिड़ला हाई स्कूल पिलानी

फतहपुर
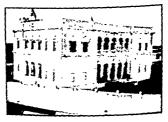
यह सीकर रियासतका सबसे बड़ा शहर है। यह शहर बहुत पुराना है। इसका इतिहास भी प्राचीन है। इसकी बसावट बहुत बड़ी है। चारों ओर बालूके सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ यह शहर बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। जयपुर स्टेट रेलवेके डूंडलोद नामक स्टेशनसे यहांतक मोटर सर्विस रन करती है। रामगढ़ और फतहपुरके बीचमें १४ मीलका अन्तर है। यहांसे लक्ष्मण गढ़तक मोटर जाती है, पर स्थायी रूपसे नहीं चलती। लक्ष्मण गढ़ यहांसे १५ मील है। वहांसे सीकर तक मोटर सर्विस रन करती है। सीकर लक्ष्मण गढ़से १८ मीलके फासलेपर है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ और बाजरा है। यहां भी निकासी बन्द है। इस स्थानपर भी कई बड़े २ श्रीमन्तोंके मकानात आदि बने हुए हैं। उनका व्यापार बाहर होता है। अतएव उनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा। फतेहपुरमें सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवालकी छत्री दर्शनीय वस्तु है। आपकी ओरसे शहरमें नलका भी प्रबंध है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसस कालूराम ब्रजमोहन

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० १२३ में दिया गया है।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपकी ओरसे यहां एक गुरुमुखराय जैन स्कूल स्थापित है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ९६ में दिया गया है।

पिलानी (जैपुर) का दृश्य
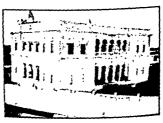
बिड़ला हाई स्कूल पिलानी

रामगढ़

रामगढ़ सीकर रियासतका एक बड़ा कस्बा है। यह बीकानेर स्टेट रेलवेकी देपालसर नाम
स्टेशनसे ५ मीलकी दूरीपर स्थित है। स्टेशनसे शहरतक मोटर सर्विस शुरु है। चारों ओर बालू
होनेसे और पानीकी कमीके कारण यहां सिर्फ एक ही फसल होती है। यहांकी पैदावार मूंग
मोठ और बाजरी है। यहांसे निकासी बंद है। यहां कई व्यापारियोंका निवास स्थान है; जिनका
व्यापार बम्बई कलकत्ता प्रभृति स्थानोंमें जोरोंसे चल रहा है। उनकी आलिशान इमारतें देखने
योग्य हैं। यहां कई सार्वजनिक संस्थाएं भी हैं। यहांके व्यापारियोंमेंसे कुछका परिचय यहां दिया
जाता है। शेष स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गोरखराम गणपतराय

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके है। आपका मूलनिवास स्थान यहींका है। वर्तमान
मालिक श्रीयुत सेठ गणपतरायजी हैं। आपके रामगोपालजी नामक एक पुत्र हैं। विशेष परिचयके
लिये बम्बई विभाग पेज नं० १२५ देखिये।

मेसर्स जौहरीमल रामलाल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। वर्तमानमें
इस फर्मका संचालन श्री सेठ नन्दकिशोरजी,सेठ जुगोलालजी, सेठ किशनलालजी और सेठ गोविन्द
प्रसादजी करते हैं। आपका विशेष विवरण बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० १२५ में दिया गया है।

मेसर्स घुरसामल घनश्यामदास

इस प्रसिद्ध और पुरानी फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी तथा आपके पुत्र श्री राम-
निवासजी और श्री बालकृष्ण लालजी तथा स्व० सेठ राधा कृष्णजीके पुत्र श्री रघुनाथ प्रसादजी,
श्रीजानकी प्रसादजी, श्री लक्ष्मणप्रसादजी और श्री हनुमसादजी हैं। आपकी फर्म पर तेलकी सोल
एजंसीका काम होता है। इस फर्मकी ओरसे यहां कुछ मन्दिर वगैरह बहुत अच्छे बने हैं।
विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ४६ में देखिये।

(२) केशोराम काटन मिल्स लि०—यह मिल ६० लाखके आर्डिनेरी और २० लाखके प्रिफरेन्स शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९१९ में खोली गई। यह बिड़ला ब्रदर्सके हाथमें १९२४ में आई। इसमें १५०० लूम्स और ८८००० स्पेण्डिल्स हैं।

(३) जयाजीराव काटन मिल्स लि०—यह मिल ३५ लाखके आर्डिनेरी शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९२१ में स्थापित हुई। इसमें ७६७ लूम्स और २९८७२ स्पेंडिल्स हैं।

(४) बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०—यह मिल १०लाखकी पूंजीसे सन् १९२० में खोली गई। इसमें ४९३ लूम्स और १७१२० स्पेंडिल्स हैं।

(५) इंडियन शिपिङ्ग कम्पनी कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२८में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई।

(६) नेशनल एअरवेज लि० कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२७ में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई। इसका उद्देश हवाई जहाजकी सर्विसको शुरू करनेका है।

इसी प्रकार और भी कम्पनियोंका विवरण है।

इस फर्मके एजंट प्रायः संसारके सभी देशोंमें रहते हैं। लण्डनमें ईस्ट इंडियन मेटल कम्पनीके नामसे बिड़ला परिवारकी एक फर्म स्थापित है। इस फर्मके सेक्रेटरी एक मारवाड़ी मेम्बर हैं। आपका नाम श्री० कस्तूरमलजी बांठिया है।

मुख्य २ कार्यकर्ता

बिड़ला ब्रदर्स लि०के प्रधान २ कार्यकर्ताओंका परिचय इस प्रकार है।

(१) श्रीयुत गंगाबक्सजी कानोड़िया—प्रधान मुनीम
(२) श्रीयुत भागीरथजी कानोड़िया—प्रधान मैनेजर
(३) श्रीयुत देवीप्रसादजी खेतान—काटन मिल्सके मैनेजर
(४) श्रीयुत मुहारमलजी जालान—जूट सप्लाय एजन्सीके मैनेजर
(५) श्रीयुत गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—जूट एक्सपोर्ट डि० के अ० मैनेजर
(६) श्रीयुत विश्वेश्वरलालजी छावछरिया—पीसगुड्स डि० के० मैनेजर
(७) श्रीयुत मदनलालजी डालमिया—जूट मिलके सेक्रेटरी
(८) श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मंडेलिया—जूट मिलके मैनेजर
(९) श्रीयुत घनश्यामदासजी कैथोलिया—केशोराम काटन मिलके सेक्रेटरी
(१०) श्रीयुत सीतारामजी खेमका—दिल्ली और ग्वालियर मिलके सेक्रेटरी
(११) श्रीयुत हनुमानप्रसादजी बगड़िया—गनी एक्सपोर्ट डि० इंचार्ज
(१२) श्रीयुत विश्वेश्वरलालजी खेतान—प्रोड्यूस डि० के० मैनेजर
(१३) श्रीयुत कस्तूरमलजी बांठिया—लंदन फर्मके सेक्रेटरी

लक्ष्मणगढ़

यह जयपुर राज्यके अन्तर्गत सीकर नरेशके अण्डरमें है। इसके लिये जयपुर-स्टेट रेल्वेके सीकर स्टेशनपर उतरना पड़ता है। यहांसे यह १८ मील दूर है। सवारीके लिए मोटर जारी रहा करती है तथा ऊंटोंसे भी जाया जाता है। यहां व्यापार तो कुछ नहीं है पर कई धनी लोगोंके निवास स्थान यहां होनेसे काफी चहल पहल रहती है। यहांसे फतहपुर १४ मीलकी दूरी पर है। टेम्परेरी रूपमें यहांसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह सीकर राज्यका एक आबाद कस्बा समझा जाता है।

यहां निम्नलिखित व्यापारियोंका निवास स्थान है। समय २ पर पुस्तकके अलग २ भागमें यथा स्थान आपके विस्तृत परिचय दिये जायेंगे।

मेसर्स चेतराम रामविलास
,, प्रेमसुखदास मन्नालाल
सेठ रामलाल जी गनेड़ीवाल
सेठ लक्ष्मीराम जी चूड़ीवाला
मेसर्स फूलचन्द फेदारमल
मेसर्स परमेश्वरराम गोरखराम

नवलगढ़

यह कस्बा जयपुर राज्यके जागीरदारके अंडरमें है। जयपुर-स्टेट रेल्वे जयपुर-झूंझनू लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनके पास यह बसा हुआ है। नवलगढ़ स्टेशनसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह स्थान भी रेतीला है। यहांका प्रधान व्यापार तो कुछ नहीं है, हां, मूंग, मोठ, बाजरी, आदिका व्यापार अच्छा होता है। यहांके बड़े २ व्यापारी लोग बाहर अपना व्यापार करते हैं। इनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड को०

इस फर्मके मालिक सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यहां आपने एक ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित कर रखा है इसमें करीब ६० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। आपकी ओरसे और भी स्थानोंपर स्कूल चल रहे हैं। आपका पूरा परिचय बम्बई विभागके पेज नं० १४ में देखिये।

श्री० राजा बलदेवदासजी बिड़ला

श्री० जुगलकिशोरजी बिड़ला

श्रीयुत ब्रजमोहनजी बिड़ला

जियाजीराव कॉटन मिल्स लिमिटेड, ग्वालि

बिड़ला कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० देहली

मंड़ावा

मंडावा जयपुर राज्यान्तर्गत है। इसके आसपास कई मील तक रेलवे नहीं है। यहां भी अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जाता है। विशेष परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक श्री सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा औषधालय चल रहा है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ४३में दिया गया है।

मेसर्स हरिबक्स दुर्गाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान यहींका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर मोहनलाल हीरानन्दके नामसे व्यापार होता था। करीब १८ वर्षोंसे यह फर्म इस नामसे व्यवसाय कर रही है। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आपके तथा आपके भतीजे सेठ हरिबक्सजीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई।

इस समय इस फर्मके सञ्चालक सेठ हरिबक्सजी तथा आपके पुत्र श्री दुर्गाप्रसादजी, श्री गोवर्धनदासजी और श्री रामनिवासजी हैं। श्री गोवर्धनदासजी मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कॉमर्स कलकत्ताके सेक्रेटरी हैं।

इस फर्मकी ओरसे बद्रीनारायणके रास्तेमें एक धर्मशाला बनी हुई है। यहां सदावर्तका भी प्रबंध है। मंडावामें भी आपकी धर्मशाला तथा मन्दिर बने हुए हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स हरिबक्स दुर्गाप्रसाद—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका मेनचेस्टरसे इम्पोर्ट होता है। जावासे शक्करका भी यहां इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मके द्वारा लंदन, जर्मनी आदि स्थानोंपर जूट, हेसियन, चपड़ा आदि वस्तुओंका एक्सपोर्ट होता है। यहां आपकी स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी है।

नीचे लिखी फर्म्से भी यहींकी हैं। जिनका परिचय दूसरे भागोंमें चित्रों सहित स्थान २ में दिया जायगा।

श्रीयुत देवीसहायजी सराफ़	मेसर्स बन्सीधर सूरजमल
मेसर्स बल्लोराम द्वारकादास	„ शिवदयाल आनंदराम
„ भूधरमल चंडीप्रसाद	सेठ सेवारामजी सराफ़

श्रीयुत गजाननजी बिड़ला—आप श्रीयुत रामेश्वरदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा बहुत अच्छे ढंगसे हुई है। बड़े योग्य नवयुवक हैं। इस समय आफिसमें काम देखते हैं।

श्रीयुत लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला—आप श्रीयुत घनश्यामदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा बहुत अच्छे ढंगसे हुई है।

बिड़ला परिवारमें बालकोंको शिक्षा देनेका बहुत अच्छा प्रबन्ध है। दूसरे धनवान घरानोंकी तरह इस परिवारके नवयुवक आलसी और अकर्मण्य नहीं रहने पाते। उनकी मानसिक शक्तियोंका मनोवैज्ञानिक ढंगसे शुभ विकास किया जाता है।

बिड़ला परिवारके सार्वजनिक कार्य

बिड़ला हाईस्कूल, पिलानी—करीब १०, ११ वर्ष पूर्व यह स्कूल मिडिल स्कूलके रूपमें स्थापित हुआ था। अब चार वर्षोंसे यह हाईस्कूलके रूपमें परिवर्तित हो गया है। प्रायवेट रूपसे एफ० ए० तककी पढ़ाई होती है। इस समय इसमें ४०० विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिसमें आधेसे अधिक विद्यार्थी बाहरके हैं। यहांके प्रिन्सिपल श्री० चन्द्रकुमारजी एम० ए० हैं।

बिड़ला बोर्डिंग हाउस, पिलानी—करीब ३ साल पूर्व यह संस्था स्थापित हुई। इसमें बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंके लिये ठहरने और भोजनकी व्यवस्था है। इसमें करीब १०० विद्यार्थी रहते हैं, जिनमें बहुतसे फ्री भोजन पाते हैं।

बिड़ला संस्कृत पाठशाला—इसे शुरू हुए करीब २०,२५ वर्ष हुए। इसमें ३०,३२ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

बिड़ला अछूत पाठशाला—यह पाठशाला करीब ५ सालसे स्थापित है। इसमें ५० विद्यार्थी करीब शिक्षा पाते हैं।

इनके अतिरिक्त कई सार्वजनिक संस्थाएं आपकी सहायतासे चल रही हैं। और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आपकी ओरसे कुछ न कुछ दिया ही जाता है। आपकी दानशीलता प्रसिद्ध है। मतलब यह कि बिड़ला परिवार न केवल मारवाड़ी जगतहीके लिये प्रत्युत सारे भारतके लिये गौरवकी वस्तु है।

मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत गुलाबचन्द जी काला हैं। आप सरावक जैन खण्डेलवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान सांभर हीमें है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब चालीस-पचास वर्ष हो गये। इसकी स्थापना श्रीयुत गणेशीलालजीके हाथोंसे हुई—तथा इसको विशेष उन्नति भी उन्हींके हाथोंसे हुई। श्रीयुत गणेशदास जीके पुत्र श्रीयुत गुलाबचंद जी हैं। आप बड़े ही योग्य सज्जन और समझदार आदमी हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी खूब तरक्की हुई।

श्रीयुत गुलाबचन्दजीका विद्या-प्रेम भी बहुत बढ़ा चढ़ा है। आपकी ओरसे सांभरमें "सांभर पुस्तकालय" नामक एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुला हुआ है। कुछ दिनों पूर्व आपकी ओरसे एक औषधालय खुला हुआ था। मगर किसी योग्य वैद्यके न मिलनेकी वजहसे वह आजकल बन्द है।

आपकी दुकानें निम्नांकित स्थानोंपर हैं।

(१) हेड आफिस—सांभर—मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल—इस दुकानपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, नमक और बारदानेका व्यवसाय होता है।

(२) सांभर—मेसर्स गुलाबचन्द माणिकचन्द—इस दुकानपर नमक और [illegible] कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

(३) मदनगंज-किशनगढ़—मेसर्स राधामोहन गुलाबचन्द—इस दुकानपर रुई, कपड़ा और गल्लेका काम होता है।

आपके इस समय एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्री माणिकचन्दजी है। वे १७ साल सिद्ध-ध्ययन करते हैं।

—:०—

मेसर्स दीवानचंद एण्ड कम्पनी

इस कम्पनीका हेड आफिस देहलीमें है। इसके मालिक श्रीयुत लाला दीवानचन्दजी हैं। आप बड़े उत्साही, सज्जन और व्यवसायकुशल पुरुष हैं। आप उन व्यवसायियोंमेंसे हैं जिन्होंने अपने निजके परिश्रमसे लाखों रुपयेकी दौलत कमाई है। आपका जन्म [illegible] सभी वंशमें हुआ है। आपके यहां गवर्नमेन्ट व मिलिटरीके ठेकेदारीका बहुत बड़ा कारबार होता [illegible] है। आपकी माइहरमें चूनेकी एक बड़ी फेक्टरी है। जिसमें [illegible] १० [illegible] है। यह फेक्टरी इम्पीरियल स्टोर [illegible] के सबसे मशहूर है।

सन् १९२३में [illegible] सांभरमें इसी साल स्थापित कर दी। [illegible]

मेसस रामचन्द्र खेतसीदास

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। वर्तमान मालिक श्री सेठ खेतसीदासजी हैं। आप वृद्ध और अनुभवी सज्जन हैं। आपके एक पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईके विभागमें दिया गया है।

मेसस हरनन्दराय सूरजमल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल रूंइया सज्जन हैं। वर्तमान मालिक श्री सेठ सूरजमलजी हैं। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० ६० में दिया गया है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुईया

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री सेठ रामनारायणजी रूंइया हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपके बड़े पुत्रका नाम श्रीयुत रामनिवासजी है। यहां आपकी तथा आपके भाई सूरजमलजीकी ओरसे एक औषधालय चल रहा है। आपका विशेष परिचय बंबई-विभाग पेज नं० ६० में दिया गया है।

यहां निम्नलिखित और भी अच्छे २ व्यापारियोंका निवास स्थान है। स्थान २ उनका भी परिचय छापा जायगा-

सेठ केशवरामजी पोद्दार
मेसर्स गुरुदयाल थानूलाल खेमका
" गुरुदयाल गंगाबक्स
" गोकुलचन्द हरिवगस
" जोखीराम केदारनाथ
" जयनारायण रामचन्द्र
सेठ जुगलकिशोरजी रुईया
मेसर्स डालनसीदास शिवप्रसाद पोद्दार
" देवकरण रामविलास
मेसर्स दुर्गादत्त नथमल

सेठ देवीप्रसादजी खेतान
मेसर्स फूलचन्द मोतीलाल सांवलका
मेसर्स महादयालजी कालूराम
" लक्ष्मीनारायण जैदेव
" शिवबक्षराय हरदत्तराय
" हरदत्तराय मोतीलाल प्रह्लादका
" हरसुखराय गोपीराम
" हरनन्दराय घनश्यामदास
" हरनन्दराम बैजनाथ

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलिचन्दजी, सेठ बेणीप्रसादजी, सेठ जुहारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशवदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके डालमियां गोत्रके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें पेज नं० ५६ में दिया गया है।

मेसर्स रामप्रसाद महादेव

आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत महादेवजी सोमाणी और मुरलीधरजी सोमाणी हैं। आपकी तरफसे चिड़ावेमें एक फ्री हाई स्कूल चल रहा है। आपका हेड आफिस कलकत्ता चित्तरञ्जन एवेन्यूमें है। आपका प्रधान बिजिनेस हैसियन, जूट, और चांवल का है। कपड़ेका इम्पोर्ट भी आपके यहां होता है। इसके सिवा शेयर बिजिनेस भी होता है।

—०—

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत सेठ रामकुँवारजी आदि हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान

आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ शिवप्रसादजी और गंगासहायजी हैं। इस फर्मके संस्थापक श्रीयुत सूरजमलजी थासल है। आपने अपने जीवनमें बहुत साधारण स्थितिसे लेकर इतनी ऊँची स्थितिको बनाया है। आपकी दान धर्मकी ओर भी बहुत रुचि रही है। बद्रीनारायणका प्रसिद्ध लक्ष्मण झूला भी आपका बनाया हुआ है। इसके अतिरिक्त गयामें आपकी एक धर्मशाला तथा चिड़ावेमें एक धर्मशाला, एक संस्कृत पाठशाला और एक अंग्रेजी पाठशाला चल रही है। कई कुओंका आपने जीर्णोद्धार करवाया है। कलकत्तेमें भी आपकी धर्मशाला है। चिड़ावेकी गौशालामें भी आपका प्रधान हाथ रहा है।

आपका हेड आफिस बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें है। आपके यहां कपड़ेकी कमीशन एजंसी और दलालीका बहुत बड़ा काम होता है। कलकत्तेके नामी व्यापारियोंमें आपकी गणना है।

आपका परिचय चित्रों सहित इस ग्रंथके दूसरे भागमें दिया जायगा।

—०—

(१) हेड आफिस—कुचामन रोड मगनीराम रामाकिशन—इसदूकानपर इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, इस दूकानपर नमक, बारदाना और हुण्डी चिट्ठीका अच्छा व्यापार होता है।

(३) आकोदिया—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर रुई, हुण्डी चिट्ठी और गल्लेका व्यापार होता है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(४) शुजालपुर—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहां रुई,गल्ला और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(५) बेरछा—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहां पर रुई, हुण्डी, चिट्ठी और मिरचीका व्यापार होता है। क्योंकि बेरछामें मिरचीकी आमद बहुत है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(६) कालापीपल—(उज्जैन) इस दूकानपर रुई और गल्लेका व्यवसाय होता है।

(७) लखीमपुर खेरी—(U.P.) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन—यहांपर गुड़, गल्ला और तिलहनका व्यवसाय होता है।

(८) सीतापुर सिटी—मेसर्स मगनीराम रामकिशन (T A Brajmohan) इस दूकानपर गुड़ और गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांका गुड़ मशहूर है।

(९) नगीना (बिजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर गुड़, शक्कर और चीनी (बनारस) का व्यापार होता है।

(१०) धामपुर—(बिजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन,यहांपर गुड़ शक्कर और चीनीका तथा गल्लेका व्यवसाय होता है।

(११) कांठ—(मुरादाबाद) इस दुकानपर गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यापार होता है।

(१२) कोटद्वारा—(गढ़वाल) यह दूकान बद्रीनाथके पहाड़के किनारेपर है। यहां आड़तका काम होता है और कच्चा सुहागा चावल और कोदू [फलाहारी वस्तु विशेष) का व्यवसाय होता है।

श्रीयुत सूर्यमलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी हैं ये विद्याध्ययन करते हैं।

मेसर्स रामधन जौहरीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामधनजी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। आपका खास निवास स्थान सांभरहीमें है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्रीयुत रामधनजीके पुत्र श्रीयुत बख्तावरलालजीके हाथोंसे हुई।

इस समय इस फर्मकी निम्नांकित स्थानोंपर दूकानें हैं—

ठ हरिरामजी (हरिराम दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा० दुर्गाप्रसादजी सराफ (हरिराम दुर्गाप्रसाद) मंडा

बा० [illegible]जी सराफ (हरिराम दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा० [illegible]रामजी सराफ (हरिराम दुर्गाप्रसाद) मं

पर एक संस्कृत विद्यालय और बोर्डिंग हाउस बना हुआ है। जिसमें बाहरके २५ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं और भोजन वस्त्र भी यहां पाते हैं।

आपकी दुकानें नीचे स्थानोंपर हैं—

(१) हेड आफिस—कुचामन रोड—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—(T. A. Dhut) यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप, इस दुकानपर नमक और बारदानेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(३) देहली—नया बाजार, मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, गल्ला, कपड़ा और किरानेकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(४) अबोर (फिरोजपुर) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग और गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(५) बड़ोद—(मेरठ) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप-इस दुकानपर गुड़, शक्कर और चीनीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। क्योंकि यहांका गुड़ बहुत अच्छा होता है।

(६) शोहरतगञ्ज—(बस्ती) जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर चांवलका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांका चांवल बहुत मशहूर है।

(७) नौगढ़—(बस्ती) इस दुकानपर भी चांवलका व्यापार होता है।

(८) बरनी—(बस्ती) इस दुकानपर चांवल और सरसोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांसे बंगाल और कलकत्तेमें बहुत सरसों जाती हैं।

(९) खाराघोड़ा—(वीरमगाम) इस दूकानपर नमकका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(१०) भिण्ड—(रियासत गवालियर) T. A. Dhut यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी और एक तेलका मिल है और रुईका व्यापार होता है। इस मिलका तेल झरिया, लखनऊ आदि स्थानोंमें ।।) मन ज्यादा रेटपर बिकता है। गल्लेका व्यापार भी यहां होता है। यहां श्रीयुत मुनीम जगनाथजी काम करते हैं। आप बहुत सज्जन हैं आप पर मालिकोंका बड़ा विश्वास है। आप मालिकोंकी हमेशा खेर ख्वाही चाहते हैं। आपका स्वभाव भला और मिलनसार है।

इसके अतिरिक्त खेवड़ा (पञ्जाब) बारछा (पंजाब) पच भद्रा (जोधपुर) और डीडवाना आदि स्थानोंके नमकका भी आप यहांसे डायरेक्ट व्यापार करते हैं।

मतलब यह कि यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित, इज्जतदार और आदरणीय समझी जाती है।

श्रीयुत सीतारामजीके राधामोहनजी नामक भाई हैं। आप भी सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आपके श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी नामक एक पुत्र हैं आप भी दुकानके कार्य्योंमें भाग लेते हैं।

इन दोनों दुकानोंपर नमकका घरू और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हमीरमल रिखबदास

इस फर्मका हेड आफिस अजमेरमें है। अतः इसके व्यवसायका विस्तृत परिचय अजमेरमें दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ नौरतनमलजी रीयां वाले हैं। आपकी फर्म यहां बैंकर्स और गवर्नमेंट ट्रेजरर है। नमकके रवन्ने सब इसी फर्मके मार्फत भरे जाते हैं।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल तोतला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान साम्भर हीमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। साम्भरमें यह फर्म बहुत पुरानी है।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत रामविलासजी, श्रीयुत हेमराजजी, श्रीयुत गोपीकिशनजी और श्रीयुत श्रीनारायण जी हैं। आप सब सज्जन हैं। श्रीयुत रामविलासजीके बड़े भ्राता श्रीयुत रामवल्लभजी थे। आपका देहावसान सन् १९२७ में हो गया।

इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। मथुरामें जमना किनारे आपकी ओरसे बनाई हुई एक धर्मशाला है। तथा वहांसे पासहीमें देवयानी नामक तीर्थ-स्थानमें आपका बनाया हुआ एक मंदिर है।

इस समय इस फर्मकी तरफसे नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें और फेक्टरियां हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर बेंकिङ्ग, हुण्डी, चिट्ठी और नमकका बड़ा व्यापार होता है।

(२) आगरा—मेसर्स हिरालाल चुन्नीलाल यहांपर आपकी रामवल्लभ रामविलासके नामसे जीनकी मण्डीमें एक तेलका मिल है।

(३) नरेना (जयपुर)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस स्थानपर शक्कर, गुड़, गल्ला और घीका व्यवसाय होता है।

(४) सतना-(रीवां) मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक, चीनी, और सुपारीका व्यवसाय होता है।

स्व० सेठ गणेशलालजी काला (ननमुखलाल गणेशीलाल)
सांभर

श्री गुलाबचन्दजी काला (ननमुखलाल गणे
सांभर

मन्दिर श्रीरामलक्ष्मणजी का (मगनीराम रामकिशन) कुचामन

सेठ आनन्दराजी मूंदड़ा (हरनन्दराय रामानन्द) हुवामनरोड

सेठ मोतीलालजी धूत (मगनीराम रामकिशन) ...

... हुबलीरोड

आनन्दचन्दजी पारीक ...

१९२५में लालाजीने श्रीयुत विश्वनाथजीको जिनके यहाँ तीन पुश्तसे यह काम होता था इसमें सम्मिलित किया। तभीसे इस ब्रांचके कारोबारकी तरक्की जोरोंके साथ बढ़ती गई और आज इस फर्मके हाथमें साम्भरकी निकासीका दो तिहाई काम आगया है।

इस फर्मका सञ्चालन यहांपर श्रीयुत विश्वनाथजी कानोडिया करते हैं। आप बड़े उत्साही, परिश्रमी और मेधावी नवयुवक हैं। केवल २८ वर्षकी उम्रमें ही आपने अच्छी व्यापारदक्षता प्राप्त कर ली है। यहांके सफल व्यापारियोंमें आपकी गणना है। आप अग्रवाल कानोडिया वंशके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कानपुरमें है। आपके खानदानको यहांपर आये करीब१०० वर्ष हो गये। तबसे आपके यहां नमकका ही व्यवसाय होता है। इस कम्पनीके पहले भी आपकी यहांपर फर्म थी जिसपर नमकका व्यवसाय होता था। (T. A. Diwan)

मेसर्स वंशीधर राधाकिशन

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वंशीधरजी हैं। आपकी फर्मपर यहां बैङ्किंग आढ़त तथा नमकका व्यवसाय होता है।

मेसर्स भागचन्द दुलीचन्द

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। साम्भरमें इस फर्मपर बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मगनीराम रामाकिशन धूत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नावांमें है। इस फर्मको इस नामसे स्थापित हुए करीब पचास साठ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बलदेवजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामाकिशनजीके हाथोंसे हुई। इस समय सेठ रामाकिशनजीके पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी और श्रीयुत सूर्यमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आप बड़े सज्जन पुरुष हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत प्रवृत्ति रही है। आपकी ओरसे कुचामन रोडमें करीब पचास हजारकी लागतका राम लक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त और कार्योंमें भी आपकी ओरसे बहुतसा दान धर्म होता रहता है। कुचामनके एक मन्दिरके जीर्णोद्धारमें भी आपने सहायता की है।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दुकानें हैं।

इस फर्मकी निम्नाङ्कित स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड, मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द—इस स्थानपर इस फर्मका हेड आफिस है और यहांपर नमकका व्यापार होता है ।

(२) साम्भर—मेसर्स हरनन्दराय रामानंद, इस दुकानमें नमकका व्यापार होता है। यह दुकान साम्भरकी प्राचीन दूकानोंमेंसे है।

(३) डीडवाना—मेसर्स जयगोपाल हरनन्दराय—इस दुकानपर नमकका व्यापार होता है।

(४) देहली नयाबाजार -मेसर्स हरनंदराय रामानंद, इस दूकानपर बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और सब तरहकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त खाराघोड़ामें भी आपके द्वारा बहुत सा नमकका व्यवसाय होता है।

नावा (कुचामन रोड)

मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल पाटोदी चौधरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कुचामनरोड हीमें है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। आप श्रावक-जैन खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत सेठ मांगीलाल जीने की। इसकी विशेष तरक्की भी उन्हींके हाथसे हुई। मांगीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७५में हुआ। उनके पश्चात् उनके भाई श्रीयुत चम्पालालजी इस समय दूकानका संचालन करते हैं। श्रीयुत मांगीलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत सुगनचन्द जी है। चम्पालाल जीके भी एक पुत्र हैं जिनका नाम चिरंजीलाल जी हैं। श्रीयुत सुगनचंदजी दुकानका कारोबार करते हैं और श्रीयुत चिरञ्जीलाल पढ़ते हैं। यह खानदान यहांपर बहुत पुराना है। बादशाही जमानेसे इस खानदानको चौधरीकी उपाधि चली आती है।

आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड -मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल चौधरी—इस दुकानपर जमींदारी, लेनदेन, बैङ्किग, किराया और जायदादका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहांपर नमकका व्यापार होता है।

(२ कुचामनरोड—मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल, इस दुकानपर गुड़, शक्कर, गल्ले वगैरहका धन्धा और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३)बड़ौत –(मेरठ) मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल—इस दुकानमें सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है। चांवल बिनौला रुई सरसोंकी, मूंग, मक्का, जुवार आदि माल आढ़तियोंका आपके यहां बिकनेके लिए आता है और गुड़ शक्कर देशी और बनारस आदि कमीशनपर बाहर भेजी जाती है।

१६२५में लालाजीने श्रीयुत विश्वनाथजीको जिनके यहां तीन पुश्तसे यह काम होता था इसमें सम्मिलित किया। तभीसे इस ब्रांचके कारोबारकी तरक्की जोरोंके साथ बढ़ती गई और आज इस फर्मके हाथमें साम्भरकी निकासीका दो तिहाई काम आगया है।

इस फर्मका सञ्चालन यहांपर श्रीयुत विश्वनाथजी कानोडिया करते हैं। आप बड़े उत्साही, परिश्रमी और मेधावी नवयुवक हैं। केवल २८ वर्षकी उम्रमें ही आपने अच्छी व्यापारदक्षता प्राप्त कर ली है। यहांके सफल व्यापारियोंमें आपकी गणना है। आप अग्रवाल कानोडिया वंशके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान फानपुरमें है। आपके खानदानको यहांपर आये करीब१०० वर्ष हो गये। तबसे आपके यहां नमकका ही व्यवसाय होता है। इस कम्पनीके पहले भी आपकी यहांपर फर्म थी जिसपर नमकका व्यवसाय होता था। (T. A. Diwan)

मेसर्स वंशीधर राधाकिशन

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वंशीधरजी हैं। आपकी फर्मपर यहां बैङ्किंग आढ़त तथा नमकका व्यवसाय होता है।

मेसर्स भागचन्द दुलीचन्द

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। साम्भरमें इस फर्मपर बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मगनीराम रामाकिशन धूत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नावांमें है। इस फर्मको इस नामसे स्थापित हुए करीब पचास साठ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बलदेवजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामाकिशनजीके हाथोंसे हुई। इस समय सेठ रामाकिशनजीके पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी और श्रीयुत सूर्य्यमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आप बड़े सज्जन पुरुष हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत प्रवृत्ति रही है। आपकी ओरसे कुचामन रोडमें करीब पचास हजारकी लागतका राम लक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त और कार्योंमें भी आपकी ओरसे बहुतसा दान धर्म होता रहता है। कुचामनके [illegible] मन्दिरके जीर्णोद्धारमें भी आपने सहायता की है।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दुकानें हैं।

बीकानेर और बीकानेर राज्य

BIKANER

&

BIKANER-STATE

श्रीरामधनजी (रामधन जोहरीमल) सांभर

श्री दखनावल्लाजजी (रामधन जोहरीमल) सांभर

(१) हेड आफिस—साभर, मेसर्स रामधन जौहरीलाल—इस दुकानपर आवकारीका ठेका है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नमकको बड़ी तिजारत होती है।

(२) सांभर—मेसर्स जगन्नाथ वख्तावरमल, इस दूकानपर नमककी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) फुलेरा—मेसर्स हमीरसिंह जगन्नाथ, इस दुकानपर आवकारीका ठेका है, और सदर लोगोंसे लेन देनका काम होता है।

(४) जयपुर—अजमेरी गेट—यहांपर भी आपका ठेका है।

सेठ रामधनजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम हमीरसिंहजी, जगन्नाथजी और बख्तावरमलजी हैं।

मेसर्स विजयलाल रामकुंवार

इस फर्मपर जयपुरमें रामकुंवार सूरजबख्शके नामसे व्यापार होता है। इसका परिचय जयपुरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबखस

इस फर्मका विशेष परिचय भवानीगञ्ज मंडीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम गोवर्द्धनदास गट्टानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सीतारामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना यहांपर बहुत पुरानी है। पहले इस फर्मपर समीरमल राधामोहनका नाम पड़ता था। करीब तीन चार बरसोंसे यह दो भागोंमें विभक्त हो गई है। पहलीका नाम समीरमल सीताराम, और दूसरीका नाम सीताराम गोवर्द्धनदास पड़ता है।

इस फर्मको विशेष तरक्की श्रीयुत सीतारामजीके हाथोंसे हुई। आप योग्य और परिश्रमी सज्जन हैं।

इस खानदानकी दान धर्मकी ओर भी रुचि रही है। देवयानीके तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे बनाया हुआ श्रीरघुनाथजीका एक सुन्दर मन्दिर है। इसके अतिरिक्त और भी सार्व-जनिक कार्योंमें आप भाग लेते रहते हैं। आपके मकानका नाम जनकपुर है, महल्लेका नाम भी यही है।

आपके पश्चात् रा० ब० सेठ अबीरचंदजीके पुत्र श्री दीवान बहादुर सर कस्तूरचंदजी डागा, कैसरे हिन्द, के० सी० आई० ई० ने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपने इस फर्मके व्यापारको इतना बढ़ाया, कि सी० पी० में आपकी फर्म अत्यन्त प्रतिष्ठित मानी जाने लगी। व्यवसायिक कुशलताके साथ २ अपने सामाजिक एवं राजकीय कार्योंमें भी ऊँचे दर्जेका सम्मान प्राप्त किया था। गवर्नमेंटसे आपको के० सी० एस० आई० के समान उच्च पदवी जो—अभीतक किसी मारवाड़ी समाजके व्यक्तिको नहीं प्राप्त हुई थी, मिली। आपको बीकानेर स्टेटने फर्स्ट क्लास ताजिम देकर सम्मान किया। आप बहुत अधिक समय तक सी०पी०कौंसिलके मेम्बर रहते थे। आपका देहावसान संवत् १९७३ में हुआ।

वर्तमानमें सर कस्तूरचंदजी डागाके चार पुत्र हैं जिनके नाम श्री रायबहादुर सर विश्वेसरदासजी डागा,के०टी०,श्री सेठ नरसिंहदासजी,श्री सेठ बद्रीदासजी और श्री सेठ रामनाथजी हैं इन महानुभावोंमें से सर कस्तूरचंदजी डागा के० सी० आई० ई० के पश्चात् वर्तमानमें इस फर्मका सारा कारबार रा० ब० सर विश्वेसरदासजी डागा के० टी० संचालित करते हैं। आप नागपुर इलेक्ट्रिक एण्ड पॉवर कम्पनीके चेयरमैन, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डियाके डायरेक्टर, तथा मॉडल मिल नागपुर और बरार मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी बड़नेराके एजंट और डायरेक्टर हैं। सी० पी० रेड क्रास सोसाइटीके आप वाइस प्रेसिडेंट हैं। इसके अतिरिक्त आप और भी कई मिलोंके डायरेक्टर हैं।

सर विश्वेसरदासजी डागा के० टी० ने अपने पिताश्री की यादगारमें सर कस्तूरचंद मेमोरियल हॉस्पिटल नामक एक अस्पताल स्त्रियोंके लिये करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आप बहुत उदारता पूर्वक दान देते रहते हैं। सर विश्वेसरदासजी डागा बीकानेर असेम्बलीके मेम्बर हैं। आपको स्टेटसे सेकंड क्लास ताजमी प्राप्त है।

भारतके बैङ्किंग व्यवसायके इतिहाससे इस फर्मका बहुत सम्बन्ध है। भारतका प्रसिद्ध २ प्रतिभा सम्पन्न धनिक मारवाड़ी फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊँचा है। माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न और अग्रगण्य है। इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

(१) नागपुर—कामठी—मेसर्स बंसीलाल अबीरचंद राय बहादुर (T, A, Lucky)—इस फर्म पर बैङ्किंग और हुण्डी चिट्ठीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांपर आपकी ४ बड़ी बड़ी कोयलेकी खदानें हैं जिनके नाम बल्लारपुरा, रास्ता, पिसगांव, राजुरा और घुग्गुस हैं। इनके अतिरिक्त आपकी यहां मेंगेनीज़ बगराकी खदानें भी हैं। इस फर्मके ताल्लुक आपकी करीब ३० कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

२) हिंगन घाट—मेसर्स बंसीलाल अबीरचंद रायबहादुर—T, A. Bansilal—यहांपर आपकी

स्व० सेठ अगरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भेरोंदान) बीकानेर

सेठ भेरोंदानजी सेठिया (अ० भे० सेठिया) बीकानेर

[illegible] सेठिया (अगरचन्द भेरोंदान सेठिया) बीकानेर.

कुंवर पानमलजी सेठिया (अगरचन्द भेरोंदान) बीकानेर

(५) पीलीभीत—मेसर्स रामवल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, चीनी, गुड़ और नमकका घरू व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(६) सीतापुर—मेसर्स रामवल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, नमक, गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यवसाय होता है।

(७) बारां (कोटा)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक और गल्लेका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त गोविन्दगढ़ (पंजाब) में एक जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरीमें आपका साझा है।

मेसर्स हीरालाल रामकुंवार

यह फर्म पहले हीरालाल चुन्नीलालके शामिल ही में थी। संवत् १९७४में यह फर्म अलग हुई इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनलालजी हैं। आप श्रीयुत रामकुंवारजीके पुत्र हैं। आप सज्जन पुरुष हैं।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार—इस दुकानपर बैंकिङ्ग हुंडी, चिट्ठी और नमक व्यापार होता है।

(२) मोरेना (गवालियर-स्टेट)—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार, इस दुकानपर नमक और गल्ले घरू तथा कमीशनपर काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द मून्दड़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान डीडवाना में है। इस स्थानपर आपके खानदान आये करीब ८० वर्ष हुए। तभीसे यह दुकान यहांपर इस नामसे स्थापित है। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ हरनन्दरायजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामानन्दजीके पुत्र श्रीयुत लालचन्दजीके हाथोंसे हुई। आपही इस समय इस दुकानके मालिक हैं। आप सज्जन और समझदार पुरुष हैं कुचामनरोडमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्रीयुत लालचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत श्रीकिशनजी है। आप दुकानके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी रुचि रही है। आपने कुचामन रोडमें बांकेबिहारी जीके मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया है। उसमें करीब दस हजार रुपया व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त यहांके अति प्राचीन गंगा मन्दिरमें भी आपने सहायता दी है।

किया करते थे। इस प्रकार सात वर्षके कठिन परिश्रमके पश्चात् आपने तीन हजार रुपयोंकी सम्पत्ति एकत्रित की। एवं उसे लेकर कलकत्ते गये और वहां संवत् १६४५ में हनुमानराम भैरोंदानके नामसे रंग और मनिहारीकी दूकान की। धीरे २ बेलजियम, स्वीट्जरलैंड और आस्ट्रियाके रंग तथा मनिहारीके प्रसिद्ध कारखानोंकी सोल एजेंसियां भी आपने लेलीं। आपका व्यवसाय खूब चल निकला। विलायतसे जितना माल आपके यहां आता था उसपर आपहीका ट्रेडमार्क रहता था। कुछ समय बाद आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री अगरचंदजी भी आपके साथ व्यवसायमें सम्मिलित हो गये और ए० सी० बी० सेठिया एण्ड को० के नामसे व्यवसाय चलने लगा।

बेलजियमके एक रंगके व्यवसायीके कपट पूर्ण व्यवहारके कारण आपकी उससे अनबन हो गई। उसी समय आपने दी सेठिया केमिकल वर्कस् लिमिटेड नामका एक रंगका कारखाना खोला जो भारतमें रंगका पहिला ही कारखाना था। यह कारखाना अब भी चल रहा है। इस कार्य पर अंग्रेज मैनेजर करीब २१ वर्षों तक रहा। इसके पश्चात् आपका व्यापार वायुवेगसे उन्नति पाने लगा। आपने बम्बई, मद्रास, कानपुर; देहली, अमृतसर, करांची और अहमदाबादमें नई दूकाने स्थापितकीं। तदनंतर जापानमें भी एक आफिस स्थापित किया और उक्त स्थानपर एक यूरोपियन, एक बंगाली और एक खत्रीको यहांसे भेजा। संवत् १९५८ में श्री प्रतापमलजी तथा १९६० में श्री हजारीमलजीका देहावसान हो गया।

संवत् १९७२ में आप भयंकर रोगग्रस्त हो गये। कलकत्तेके प्रसिद्ध २ डाक्टरोंकी एलोपैथिक चिकित्सा द्वारा भी आपको कोई लाभ नहीं हुआ। तब आपने होमियोपैथिक डाक्टर प्रतापचन्द मजूमदारसे चिकित्सा प्रारम्भ की और उसके द्वारा आपको स्वास्थ्य लाभ हुआ। तबसे आपका होमियोपैथिक औषधि पर विश्वास जमा और आपने उसमें विशेष योग्यता प्राप्त की। आप अब भी होमियोपैथिक औषधि वितरणकर सैकड़ों रोगियोंको आरोग्य करते हैं। इस बीमारीसे आपके मन पर संसार की क्षणभंगुरताका अत्यधिक असर पड़ा और आपने कलकत्ता तथा जापानके सिवा बाकी सब कार्य्यको समेट लिया।

संवत १९७० में आपने बीकानेरमें सर्व प्रथम एक स्कूल खोला। यहींसे आपका धार्मिक जीवन प्रारम्भ होता है। आपके भाई अगरचन्दजीका देहावसान संवत १९७८ में हुआ, आप बड़े धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्य परायण व्यक्ति थे आपने अपनी बीमारीके समय तार द्वारा कलकत्ते से श्री भैरोंदानजीको बुलाकर यह सम्मति दी थी, कि पाठशालाका काम साझेमें रक्खा जाय। एक कन्या पाठशाला और खोली जाय, तथा जैन शास्त्र भंडार जो छोटे रूपमें है उसे वृहद् कर दिया जाय, आदि। आपके पुत्र उदयचन्दजीका देहावसान संवत १९७६में हुआ। उनकी बीमारीके समय आपने धार्मिक बोल थोकड़ा आदि संग्रह कर पुस्तक प्रकाशनका कार्य आरम्भ किया।

(४) सोनीपत—(रोहतक) मेसर्स सुगनचंद चिरंजीलाल—इस दुकानपर वहोतहोको ... धन ...
है। यहांसे लाल मिरच भी कसरतसे जाती है।

(५) गुजरानवाला—मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल लोहा बाजार (T. A. Sugan) इस दुकान... चावल लोहेकी तिजोरियां और सरसोंका तैल तथा गल्ला बाहर जाता है। इस खानदान... सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रहती है। यहांकी दिगम्बर-जैनपाठशाला कन्या पाठशाला, और औषधालयमें आप दान देते रहते हैं।

बैंकर्स

सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया बम्बई (सांभरब्रांच)
पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड (ब्रांच सांभर)
मेसर्स भागचन्द दुलीचन्द
" हमीरमल रिखबदास (गवर्नमेंट ट्रेझरर)

नमकके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स चांदमल झूमरलाल
" चांदमल शिवबल्लभ
" चुन्नीलाल रामनारायण
" जमनादास शिवप्रताप
" तेजकरण चांदकरण
" तनसुखराय गनेशीलाल
" दिवानचन्द एण्ड को०
" बंशीधर राधाकिशन
" विजयलाल रामकुंवार
" भागचन्द दुलीचन्द
" मन्नालाल केशरीमल
" मगनीराम रामकिशन
" रामप्रसाद गोविन्द राम
" रामधन जौहरीमल
" रामगोपाल बद्रीनारायण
" रामचन्द्रजी सोनी
" रामप्रताप हरबगस
" समीरमल धीताराम
" सीताराम गोरधनदास
" शिवनारायण रामदेव
" हीरालाल चुन्नीलाल
" हीरालाल रामकुंवार
" हरनन्दनराय रामानन्द
" हमीरमल रिखबदास
" श्रीनारायण हरविलास

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स बद्रीचन्द शिवप्रसाद
" रामकुंवार हजारीमल

किरानाके व्यापारी

मेसर्स ओंकारजी मोतीलाल
" जयनारायण मोतीलाल
" बल्देव शिवनारायण

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स गंगाप्रसाद रामजीवन
" समीरमल हरनारायण

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द माणकचन्द
" गोविन्दराम चुन्नीलाल

धर्मशाला

नमकके व्यापारियोंकी धर्मशाला स्टेशन

सेठ साहबके २ पुत्र श्रीपानमलजी एवं लहरचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। श्री लहरचन्दजीने भी एक प्रिंटिंग प्रेस संस्थाओंको दान किया है। इसके अतिरिक्त जुगराजजी एवं ज्ञानपालजी अभी शिक्षा लाभ करते हैं। इनका कारोबार श्री जेठमलजी देखते हैं।

आपकी दूकानें फिलहाल निम्न लिखित स्थानोंपर है।

(१) कलकत्ता – मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया ओल्ड चायना बाजार नं० १८ T. A. Seethiya—इस फर्मपर जापानसे रंगका व्यवसाय होता है।

(२) मेसर्स अगरचन्द भैरोदान सेठिया २ अर्मेनियनस्ट्रीट T. A. Sethiya—यहां आपकी रंगकी दुकान है।

(३) दि सेठिया कलर एण्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड १२७ कदमतुल्ला-नरसिंहदत्त रोड हबड़ा—इस कारखानेमें रंग तैयार किया जाता है। भारतमें यह सबसे पहिला रंगका कारखाना है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ साहबने पहलेही अपने पुत्रोंका सब हिस्सा अलग २ करके अत्यन्त बुद्धिमानीका परिचय दिया है। अब आपके सब पुत्र अपना अलग २ व्यवसाय करते हैं उसका विवरण इस प्रकार है।

श्रीयुत जेठमलजी

कलकत्ता—मेसर्स अगरचन्द जेठमल सेठिया, क्लाइव स्ट्रीट १७—इस फर्मपर हाउस प्रापर्टीका काम होता है।

बीकानेर—मेसर्स अगरचन्द जेठमल —इस दूकानपर बेंकिंग बिजिनेस होता है।

श्रीयुत पानमलजी सेठिया

बीकानेर—मेसर्स पी० सेठिया एण्ड सन्स,—इस दुकानपर मिलिटिरियन्स मर्चेंटाइस सब प्रकारके फेन्सी मालका व्यापार होता है। बीकानेरके सब प्रतिष्ठित रईस तथा कुंवरसाहब इसी दूकानका सामान खरीदते हैं। इसके अतिरिक्त बीकानेर गवर्नमेन्ट की लाइसेंसकी एजन्सीभी इसी दुकानपर है।

श्रीयुत लहरचन्दजी सेठिया

कलकत्ता—लहरचन्द खेमराज सेठिया १०८ ओल्ड चायना बाजार स्ट्रीट, इस दुकानपर मनिहारी सामानकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है।

श्रीयुत जुगराजजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स रूपचन्द जुगराज,२९ आर्मेनियन स्ट्रीट, इस दुकानपर कपड़े की कमीशन एजन्सी, और जूटकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है। इसमें सरदार शहरके छितरजी रामलूणचन्दका साझा है।

हो जाती हैं। इस शहरकी बसावटमें एक बड़ी विशेषता यह है कि यहांपर प्रत्येक जातिके नामसे अलग २ चौक और सेरियां बनी हुई हैं। जैसे डागोंका चौक, मोहतोंका चौक, बागड़ियोंका चौक इत्यादि। बस जिस जातिके व्यक्तिसे आपको मिलना है उसी जातिके नामवाले चौकमें आप चले जाइए, आपको पता लग जायगा। सफ़ाईकी दृष्टिसे इस शहरकी स्थिति विशेष अभिनन्दनीय नहीं है। पर ऐसा सुननेमें आता है कि अब यहांकी म्युनिसिपेलिटी इसमें सुधार करनेवाली है।

समाजिक जीवन

यहाकी सामाजिक व्यवस्था बिलकुल मारवाड़ी है। बालविवाह, वृद्धविवाह, बेमेल विवाह इत्यादि कुप्रथाओंका यहांपर काफी जोर है। ऐसा सुननेमें आता है कि हालहीमें राज्यकी ओरसे बालविवाह प्रतिबन्धक कानून बननेकी घोषणा प्रकाशित हुई है। यह सन्तोषकी बात है।

कस्टम डिपार्टमेंट

बीकानेर राज्यके अन्तर्गत यदि कोई आश्चर्य योग्य बात है तो वह यहांका कस्टम डिपार्टमेंट है। इस रियासतमें तथा जोधपुर रियासतमें हमने जितनी कस्टम की सख्ती देखी उतनी शायद ही भारत वर्षके किसी दूसरे स्थानमें हो। कस्टमके कर्मचारी मुसाफ़िरोंके सामानका एक २ कपड़ा खोल डालते हैं, उन्हें बेहद तंग करते हैं, इतनी सख्ती किसी भी राज्यके लिए अभिनन्दनीय नहीं कही जा सकती। राज्यको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

मिल ऑनर्स

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस प्रसिद्ध फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी (डागा) जातिके सज्जन हैं। बीकानेरमें यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी स्थापना श्री सेठ बंशीलालजीने की। आपके ३ पुत्र थे, जिनके नाम क्रमसे रायबहादुर सेठ अबीरचंदजी, सेठ रामचन्द्रजी तथा रायबहादुर सेठ रामरतनदासजी। आप तीनों ही बड़े प्रतापी और प्रतिभाशाली पुरुष थे। इनमेंसे सर्व प्रथम सेठ अबीरचंदजी नागपुर गये। वहांपर आपने अपने व्यवसायको खूब फैलाया, और कीर्तिसंपादित की। इधर सेठ रामरतनदासजी लाहौर गये, और आपने अपने व्यवसायको उन्नत बढ़ाया। आपने सन् १८५७ के गदरके समय बृटिश सरकारको अच्छी सहायता दी। इसके उपलक्षमें सरकारने आपको राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया, और कई सम्माननीय वस्तुएं दी। सेठ अबीरचंदजीका देहावसान संवत् १९३५ में और सेठ रामरतनदासजीका देहावसान संवत् १९५० में हुआ।

...गंगाबिशनजी नत्थानी (उम्मेदमल गंगाबिशन)

स्व० सेठ बलदेवदासजी डागा (आनंदरूप नैनसुखदास)

मेसर्स गुनचन्द मंगलचन्द ढड्ढा

इस कुटुम्बके मालिक ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। बीकानेरके प्रतिष्ठित खानदानोंमें यह कुटुम्ब भी एक है। सर्व प्रथम सेठ तिलोकसीजीके समयमें इस फर्मके व्यापारको उत्साह मिला। आपके चार पुत्र थे। जिनमेंसे सेठ पदमसीजीका कुटुम्ब अजमेरमें, सेठ धरमसीजीका कुटुम्ब जयपुरमें और अमरसीजी तथा टीकमसीजीके पुत्र बीकानेरमें निवास कर रहे हैं। सेठ चांदमलजी सी० आई० ई० ढड्ढा सेठ अमरसीजीके कुटुम्बमें हैं।

इस फर्मके मालिक सेठ टीकमसीजीके प्रपौत्र सेठ मंगलचंदजी हैं। आपकी ओरसे फलोदीमें एक बहुत बड़ा देवल बना हुआ है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर एक धर्मशाला भी है। आपके छोटे भाई श्रीआनंदमलजीके पुत्र श्री प्रतापचंदजी आपके यहां गोदी लाये गये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बीकानेर—मेसर्स गुणचन्द मंगलचन्द ढड्ढा—यहां हुंडी चिट्ठी तथा सराफी व्यवसाय होता है

(२) कलकत्ता—मंगलचन्द आनंदमल, ५० क्लाइव स्ट्रीट—इस दुकानपर इटलीसे मूंगा आता है। इटलीके ऑफिसके आप एजंट हैं। इसके अतिरिक्त हुंडी चिट्ठी और आड़तका काम होता है।

मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता

इस फर्मके मालिक मोहता खानदानके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ लक्ष्मीचन्द जी मोहताके बड़े भ्राता सेठ जगन्नाथजी मोहताने की। आप बड़े सज्जन पुरुष थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३में हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्री मदनगोपालजी, श्री राधाकृष्णजी, श्रीरामकृष्णजी, श्री भागीरथजी और श्री श्रीगोपालजी हैं। आप सब सज्जन बड़े सम्माननीय उन्नतिशील युगके सदस्य एवं शिक्षित पुरुष हैं। करीब ३ वर्ष पूर्व सेठ मदनगोपालजी को गवर्नमेंटने राय-बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है।

माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी सामाजिक एवं धार्मिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। श्रीरामकृष्णजी माहेश्वरी महासभाके इन्दौर अधिवेशनके सभापति रहे थे। कलकत्तेमें जो माहेश्वरी भवन बना है उसमें आर्थिक सहायताके अतिरिक्त और बहुतसा परिश्रम आपने किया है। एक तरहसे आपहीने उसमें अग्रगण्यरूपसे भाग लिया था। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

अब हम पाठकोंके सम्मुख एक ऐसे दिव्य व्यक्तिका चरित्र उपस्थित करते हैं, जिसने अपने जीवनके द्वारा व्यापारी समाजके सम्मुख सफलता और सद्व्ययका एक बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित कर दिया है। जिसने व्यापारिक जगतमें अपने पैरोंपर खड़े होकर लाखों रुपयेकी सम्पत्ति उपार्जन किया, व्यापारिक जगत्में चहल पहल मचा दी, और अन्तमें अब उन सब झगड़ोंसे निवृत्त होकर उस सम्पत्तिका सदुपयोग कर रहा है।

श्रीभैंरूदानजीका जन्म संवत् १९२३ की आश्विन सुदी अष्टमीको हुआ। जब आप केवल दो वर्षके थे तभी आपके पिताजी आपको छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे। आप संवत् १९३२ में कलकत्ते चले गये। वहां एक वर्ष रहकर फिर बीकानेरके पास शिवबाड़ी नामक ग्राममें ३ वर्ष तक व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। संवत १९३६ में आप बम्बई गये और वहां ४ वर्ष तक साहूकारी जमा खर्च की शिक्षा प्राप्त की, एवं प्राइवेट अध्यापकों द्वारा बही खाता सम्बन्धी और गुजराती एवं अंग्रेजीका भी ज्ञान प्राप्त किया।

आपका विवाह संवत् १९४० में हुआ। आपके २ बड़े एवं १ छोटे भाई थे जिनके नाम क्रमशः श्री प्रतापमलजी श्री अगरचंदजी और हजारीलालजी था। संवत् १९४१ में जब आपकी वय सिर्फ ८ वर्षकी थी, आपके भाई श्री प्रतापमलजीने आपको जुदा कर दिया। यहांपर यह बतला देना आवश्यकीय है, कि आपको अपनी पैतृक सम्पत्ति नहींके बराबर मिली थी, जितनी भी सम्पत्ति आपको अपने हिस्सेमें मिली थी, उतना ही आप पर कर्ज भी था।

ऐसी कठिन अवस्थामें आप फिर संवत् १९४१ में सकुटुम्ब बम्बई गये, और आपके भांजे साकेंकी जगन्नाथजी मोहता नामकी फर्मपर सिर्फ ५००) साल पर करीब ७ वर्ष तक नौकरी की। आप इतने होशियार एवं कार्य दक्ष थे कि आपके द्वारा शिक्षा पाये हुए कई व्यक्तियोंको ८ हजार रु० वार्षिक पानेकी योग्यता हो गई। आपकी अत्यधिक योग्यता होते हुए भी कभी आपने वेतन वृद्धिके लिये प्रार्थना नहीं की। जिस मकानमें आप रहते थे उसके भाड़ेका बट्टाक भी आप

(२) बम्बई—मेसर्स नारायणदास मोहता—शेखमेमनस्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस तथा रुई अलसी गेहूं व शेयर्स के हाजर व वायदेका काम होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स नारायणदास गोविन्ददास ४०१ अपरचितपुर रोड: इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचंद खजांची ज्वेलर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत प्रेमचन्दजी खजाञ्ची हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब २५ वरस हुए। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके पिता श्रीयुत तेजकरणजी का स्वर्गवास संवत् १९६३ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत प्रेमचन्दजी ने इस दुकानका काम सम्हाला। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे माणिकचन्दजी, मोतीचन्दजी और हीराचन्दजी हैं।

इस फर्मकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) बीकानेर—मेसर्स तेजकरण प्रेमचन्द जौहरी, इस दुकानपर सभी प्रकारके खुले और यन्द जवाहिरातके जेवरोंका व्यवसाय होता है।

(२) कलकत्ता ५२ गणेश भगतका कटला सूतापट्टी—मेसर्स अजितमल माणिकचन्दजी—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यवसाय और कमीशन एजन्सीका काम होता है। इसमें श्रीयुत अजितमलजीका साझा है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचन्द ४०१-१० बड़तल्ला स्ट्रीट—इस दुकानपर जवाहिरातका व्यवसाय होता है।

मेसर्स प्राग दास जमुनादास

आपके यहां सर्राफी और धातुके आयात और निर्यातका काम होता है। लगभग एक सौ वर्ष पुरानी बात है, जब आप अपने मूल निवास स्थान राजपूतानेके बीकानेर स्थानसे व्यापारोद्देश्य से युक्त प्रान्तके मिर्जापुर नगरमें आकर बसे थे। यहां आपने अल्प पूंजीसे पीतल, तांबा, कांसा आदि धातुओंका व्यापार प्रयागदास मथुरादासके नामसे करना शुरू किया था। थोड़ेही दिनोंमें आपका व्यापार यथेष्ट उन्नत हो गया और आप वहांके प्रतिष्ठित श्रीमन्तोंमें गिने जाने लगे। मिर्जापुरके बाद आजसे कोई ५४ वर्ष पूर्व आपने अपनी एक शाखा कलकत्तेमें स्थापित की, यहां भी उक्त धातुओंके क्रय-विक्रय हीका व्यापार आरम्भ किया गया।

संवत् १९७६ में आपने सेठ अगरचन्दजीसे साझा अलग कर लिया। इस समय आपके ५ पुत्र हैं। जिनके नाम कुंवर जेठमलजी, कुंवर पानमलजी, कुंवर लहरचन्दजी, कुंवर जुगराजजी तथा कुंवर ज्ञानपालजी हैं। आपने अपने सब पुत्रोंको संवत् १९७६ से ही अलग कर उनका हिस्सा बांट दिया है। संवत् १९७९ से ही आप अपना पूरा समय धर्मध्यान एवं पारमार्थिक संस्थाओंके संचालनमें देने लगे हैं।

आपने कलकत्तेके चीना बाजारकी नं० १६०।१६१ की दुकानें स्कूलके लिये दे दी हैं तथा इनके भाइयोंकी ओरसे बीकानेरकी एक बिल्डिंग-स्कूल, कन्या पाठशाला, बोर्डिंग तथा व्यवसायों आदिके लिये दी है। तथा दूसरी बिल्डिंग सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक कार्योंके लिये दी है। कलकत्तेकी क्रास स्ट्रीटके नं० ३, ४, ७, ९, १६, और मनोहरदास स्ट्रीटके १२३, १२४ नं० के मकान भी परमार्थिक संस्थाओंको दान दे दिये हैं तथा उक्त सब मकानोंकी रजिस्ट्री भी करवा दी है।

आपकी धर्मपत्नीने भी १०००० धार्मिक संस्थाओंको दान दिया है। फिलहाल आपकी ओरसे निम्नलिखित संस्थाएं चल रही हैं इन संस्थाओंका आप स्वयं संचालन करते हैं।

१ - सेठिया जैन स्कूल २-सेठिया जैन श्राविका पाठशाला ३—सेठिया जैन संस्कृत प्राकृत विद्यालय ४—सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस ५—सेठिया जैन शास्त्र भण्डार ६—सेठिया जैन विद्यालय ७—सेठिया जैन श्राविकाश्रम ८—सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस।

श्रीमान् भैरोंदानजी श्रीसप्तम अ० भा० व० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स बंबई के सभापति थे। एवं जैन श्वे० स्थानकवासीके ट्रेनिंग कालिजके भी आप सभापति हैं। इसके अलावा श्वेताम्बरसाधुमार्गी जैन हितकारिणी सभाके भी आप प्रेसिडेण्ट हैं स्थानिक म्युनिसिपल बोर्डके भी आप मेम्बर हैं।

श्रीयुत जेठमलजी स्थानीय साधुमार्गी हितकारिणी सभाके सेक्रेटरी तथा जैन ट्रेनिंग कालेजके सेक्रेटरी हैं।

सेठ साहबके ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी अपने योग्य पिताकी योग्य संतान हैं। आप भी अपने पिताजीकी तरह द्रव्य एवं समय द्वारा समाज एवं धर्मकी सेवा करनेवाले दृढ़ श्रद्धालु एवं उत्साही युवक हैं। आप सेठजी की स्थापित की हुई उपरोक्त संस्थाओंका भली प्रकार संचालन करते हैं। आप स्वयं उनके ट्रस्टी भी हैं। इतना ही नहीं आपने अपने साझेकी रकममेंसे तीस हजार रुपये तथा केनिंग स्ट्रीट मुर्गीहट्टा कलकत्ता का नं० १११, ११५ मकान और अंधरान लेन नं० ६ के मकान भी पारमार्थिक संस्थाओं को दान कर दिये हैं उक्त सब मकानोंके किरायेकी एवं रकमोंके ब्याजकी आमदनी करीब २१ हजार रुपया सालाना सब पारमार्थिक कार्योंमें आपके द्वारा व्ययी होती है।

स्व० सेठ नारायणदासजी मोहता बीकानेर

स्व० सेठ गोविंददासजी बिन्नाणी बीकानेर

सेठ पुरुषोत्तमदासजी बिन्नाणी बीकानेर

श्रीयुत [illegible]

...वर लहरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भैरांदान) बीकानेर

श्री मिलापचन्दजी वेद (भीखनचंद रानचंद) बंबन

...ी सेठिया (अगरचन्द भैरांदान) बीकानेर

मिर्जापुर (हेड-आफिस) मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास, इस फर्मपर सोना चांदी तथा लोहा इन तीन धातुओंको छोड़कर सब प्रकारकी धातुओंका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास, ४३ स्ट्रांडरोड—इस फर्मपर धातुके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका अच्छा व्यवसाय और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर गवर्नमेंटके तथा रेलवेके बड़े २ आर्डर सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त आप उनका पुराना माल भी खरीदते हैं।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ राधाकिशनजी दम्माणी और सेठ देवकिशनजी दम्माणी हैं। आप खास निवासी बीकानेरके हैं। आप माहेश्वरी समाजके दम्माणी सज्जन हैं।

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित बम्बईमें पेज २०० में दिया गया है। यह फर्म बम्बईमें बहुत अच्छा चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस करती है।

मेसर्स भीखमचन्द रामचन्द्र वैद

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मिलापचन्दजी वैद है। आप ओसवाल स्थानक वासी सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। आपकी फर्मका हेड आफिस झांसी है। वहां इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत रघुनाथदासजीने की थी। आपके पश्चात् क्रमशः श्रीयुत भीखमचन्दजी, रामचन्द्रजी, विरदीचन्दजी और श्रीयुत गुलाबचन्दजी हुए। आप लोगोंके हाथोंसे भी फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। वर्तमानमें सेठ मिलापचन्दजी इस फर्मका संचालन करते हैं। आप एक विद्याप्रेमी सज्जन हैं। सार्वजनिक कार्योंमें आप अच्छा पार्ट लेते हैं। गत वर्ष बीकानेरमें होनेवाली स्थानकवासी कान्फ्रेन्सका सारा खर्च आपने दिया था। झांसीमें आप आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। पहले आप स्टेटमें आ० रिटिप्पूंग आफिसर थे। युरोपीय महाभारतके समय आपने आपने व्ययसे ६२ सैनिकोंको रणस्थलमें भेजा था।

झांसीमें आपकी फर्मपर जमीदारी और बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। वहां इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ

श्रीयुत ज्ञानपालजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया, २ नम्बर आर्मेनियन स्ट्रीट, इस फर्मपर निजके कारखानेके रंगकी बिक्री और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कटूमनुल्ला इयड़में जो दी सेठिया केमिकल वर्क्स लिमिटेड नामक कारखाना है इसके सोल मेनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत जुगराजजी और ज्ञानपालजी सेठिया हैं।

मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास डागा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर में है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए सौवर्ष से ऊपर हो गये। इस दुकानकी विशेष तरक्की सेठ नैनसुखदास जीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास हुए पचास वर्षसे ऊपर हो गए। उनके पश्चात् उनके पुत्र सेठ बलदेवदास जीने इस फर्मके कामको सम्भाला। आप बीकानेरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। बीकानेरमें आपने अच्छा नाम कमाया। सेठ बलदेवदासजी का स्वर्गवास संवत् १९६६में हुआ। इस समय श्रीयुत बलदेवदासजीके पुत्र श्रीयुत जयनारायणजी इस फर्मके कामको सम्हालते हैं आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीसूर्यनारायणजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) बीकानेर—मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास—यहांपर इस फर्मका हेड ऑफिस है। यहां हुंडी चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स नैनसुखदास जयनारायण बेहरापट्टी ६ नम्बर (T. A. Belachampi) इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सराफी और कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(३) बम्बई—नैनसुखदास शिवनारायण, कालबादेवीरोड (T. A. Nainsukh) यहां हुंडी चिट्ठी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।।

(४) मद्रास—मेसर्स नैनसुखदास बलदेवदास साहुकारपेठ,यहां हुंडी,चिट्ठी और बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स उम्मेदमल गंगाबिशनजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गंगाबिशन जी हैं। आप श्रीयुत उम्मेदमलजीके यहां दत्तक गये हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत उम्मेदमलजीने की, और इसको विशेष तरक्की श्रीयुत गंगाबिशनजीने दी। आप बड़े सज्जन और मिलनसार पुरुष हैं। आपकी इस समय नाम्पेट (बरार) में दुकान है। जिस पर बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, गल्ला और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

स्वर्गीय सेठ लक्ष्मीचंदजी मोहता बीकानेर

श्रीयुत सेठ रामगोपालजी मोहता बीकानेर

श्रीयुत मथुरादासजी मोहता (मोहनचंद रेवचंद) हिंगनघाट

(पृ० नं० ...)

श्री सेठ रामकृष्णजी मोहता बीकानेर

दिल्ली—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल न्यू क्लाथ मार्केट (T. A. Labh)—इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त शादड़ामें आपकी मोहता फ्रेल्ट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी हैं। इसमें टोपियोंका काम होता है।

अमृतसर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, आलू कटरा—यहांपर बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

फजूर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Mohata) इस फर्मपर कॉटन कमीशन एजंसी एवम बैंकिंग वर्क होता है।

रायविंड—(N.W.R.)-मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज इस स्थानपर आपकी एक जीनिंग फक्टरी है।

सेठ शालिगराम नत्थाणी

इस फर्मके संचालक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका हेड आफिस रायपुर (सी० पी०) में है। वहां इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष होगये। पहले यह फर्म शालिगराम गोपीकिशनके नामसे व्यवसाय करती थी। मगर सेठ गोपीकिशनजीके अलग होजानेसे उपरोक्त नामसे व्यवसाय होता है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ बालकिशनजी तथा सेठ रामकिशनजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप सज्जन और शिक्षित व्यक्ति हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं।

रायपुर—(सी० पी०)मेसर्स शालिगराम नत्थानी (Natthani)—इस फर्मपर हुण्डी-चिट्ठी, और बैंकिंगका वर्क होता है। गल्ला तथा कपड़ेकी आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

रायपुर—मेसर्स रामबक्ष शंकरदास—इस फर्मपर चांदी सोना सूत और व्याजका व्यापार होता है।

भाटापाड़ा (सी० पी०) -शालिगराम नत्थानी (T. A. Natthani) यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठी का बिज़िनेस होता है।

नेवराबाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थानी—इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

बालोदा बाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थानी—यहांपर भी बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठीका बिज़िनेस होता है।

---

(१) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल, २८ स्ट्रांडरोड-T. A. Lal Kapra इस दुकान पर रंगीन कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मोहता ब्रदर्स २८स्ट्राण्डरोड T. A. Mohata यहां एक्सपार्ट और इंपोर्ट का व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—आर० के० मोहता एण्ड कम्पनी, इस फर्मपर गनी ब्रोकर्स और डोल्सका काम होता है।

(४) आसूगंज—मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल—यहांपर आपकी जमीदारी है। इस फर्मकी ओरसे ब्राह्मण बड़िया (बङ्गाल)में एक औषधालय चल रहा है।

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इस फर्मके मालिकोंका पूरा परिचय कई चित्रों सहित खण्डवेमें दिया गया है। आपका खास निवास बीकानेर है। एवं यहां खण्डवे वाले बाहितीजीके नामसे बोले जाते हैं। सर्व प्रथम सेठ जसरूप जी और हसरूपजी यहांसे व्यापारके निमित्त मालवेकी ओर गये थे।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका विस्तृत परिचय भी कई सुन्दर चित्रों सहित खण्डवेमें दिया गया है। वहां यह फर्म बहुत बड़ी मात्रामें रूई और कपासका व्यापार करती है। आपका भी खास निवास बीकानेर है। खण्डवेमें आपकी और जसरूप बैजनाथकी मिलाकर करीब ३५-४० जीनिंग प्रेसिंग फ़ेक्टरियां हैं। यह फर्म सेठ हसरूपजीके वंशजों की है।

मेसर्स नारायणदासजी मोहता

इस फर्मके मालिक खास निवासी बीकानेरके हैं। बम्बई में इस दुकानको २५ वर्ष पूर्व सेठ नारायणदासजीने तथा इनके पुत्र सेठ गिरधारीदासजीने स्थापित किया था। तथा इस दुकानके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ गिरधारीदासजीके हाथोंसे मिली। आपका देहावसान ५ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस दूकानके सञ्चालक सेठ नारायणदासजीके शेष ३ पुत्र सेठ गोविन्ददासजी, श्रीरिखबदासजी एवं श्रीगोपालदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

(१) बीकानेर—सेठ नारायणदासजी मोहता—यहां आपका हेड आफिस है।

सेठ सदासुखजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

श्री॰सेठ रामचन्द्रजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

सेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

बाबू [illegible] कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

श्री प्रेमचन्दजी खंजाची जौहरी, बीकानेर

श्री माणिकचन्दजी S/o प्रेमचन्दजी जौहरी, बीक

सेठ सदासुखजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

श्री०सेठ रामचन्द्रजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

सेठ [illegible]चन्दजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

बाबू दाउदयालजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)
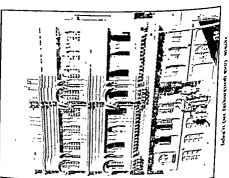
श्रीयुत प्रागदासजी बिन्नानी के, जो इस फर्मके मूल संस्थापक थे, श्रीमथुरादासजी, श्रीगोविन्दासजी और श्री पुरुषोत्तमदासजी इस प्रकार तीन पुत्र थे। इन्होंने योग्य होनेपर अपने पिताके उक्त व्यापारको बहुत व्यापक बनाया। सम्वत् १९६८ तक उक्त तीनों भ्राता सम्मिलित रूपमें ही अपने व्यापारका संचालन करते रहे। इसके बाद संवत् १९६९ में श्री गोविन्ददासजी बिन्नानीने कलकत्ता, बनारस और मिर्जापुरमें अपनी दुकानें स्थापित कीं। कलकत्तेमें धातु बिक्रीके अलावा सर्राफीके कामका भी आरम्भ किया गया। श्रीयुक्त गोविन्ददासजी परम बेन्कर पुरुष तथा एक कुशल व्यापारी थे, सर्राफीके काममें आप बहुत प्रतिष्ठित व्यापारी गिने जाते थे। इसके बाद आपने गवर्नमेण्टके रेलवे बोर्डकी (धातु) मिण्टल सेलिङ्गका काम बड़े जोर से किया, जो कि इस समय खूब उन्नत है। आपके दो पुत्र थे, बड़े श्रीजमुनादासजी बिन्नानी और श्रीजानकीदासजी बिन्नानी। जमुनादास निःसंतान थे और श्रीजानकीदासजीके श्रीमोहनदासजी और ग्वालदासजी बिन्नानी दो पुत्र हैं। श्रीजमुनादासजी और जानकी दासजी स्वर्गस्थ हो चुके हैं। इनके पिता गोविन्ददासजीका भी गत सम्वत् १९८२ की चैत्र शुद्ध कृष्णा १० को स्वर्गवास हो गया। अब कलकत्ता, मिर्जापुर तथा बनारसकी तीनों फर्मोंके स्वत्वाधिकारी श्रीमोहनदासजी बिन्नानी और श्रीग्वालदासजी बिन्नानी ही हैं। आपकी फर्म इस समय कलकत्तेके मारवाड़ी व्यापारियोंमें बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्रीग्वालदासजी बिन्नानी अपने पितामहके समान ही सारी फर्मोंका संचालन करते आ रहे हैं। आपने अपने कार्यमें बहुत शीघ्र तरक्की कर ली है। भारतवर्षीय डीडू माहेश्वरी महापंचायतके आप संयुक्त महामन्त्री हैं, तथा हिन्दू साहित्य प्रचारिणी समिति संरक्षक हैं। श्री डीडू माहेश्वरी सेवा समितिके भी आप उप प्रधान हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और गुजरातीके आप ज्ञाता हैं। हिन्दीमें कई ग्रंथ भी आपने लिखे हैं। आपकी फर्मोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स प्रयागदास जमुनादास बिन्नानी—४२ बड़ाबाजार स्ट्रीट

(२) बनारस—मेसर्स प्रयागदास गोविन्ददास—सुड़िया मोहल्ला।

मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास बिन्नानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इसके संचालक सेठ पुरुषोत्तमदासजी तथा आपके पुत्र बाबू नरसिंहदासजी बिन्नानी हैं। [illegible] इस फर्मके व्यापारका [illegible] मिला है। आपका कुटुम्ब बीकानेरके [illegible] बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। [illegible] करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। आपने कलकत्तेके माहेश्वरी भवनमें ५००००) का दान दिया है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर भैरोंबक्स जी है। आप बड़े होनहार नवयुवक हैं।

वर्तमानमें आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द क्रास स्ट्रीट (T. A Sadasukh jam) इस फर्म पर सोना, चांदी, लोहा कपड़ा बैङ्किग और हुंडी चिट्ठीका बड़ा व्यापार होता है। कलकत्तेमें यह फर्म बहुत आदरणीय और प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

(२) बम्बई—मेसर्स सदासुख गंभीरचंद कालबादेवी—यहांपर बैङ्किग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है। T. A Gambhir

(३) मद्रास—मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द साहुकार पेठ—यहां भी बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) दिल्ली—मेसर्स कस्तुरचन्द दाऊदयाल T. A. Dayal—यहां पर बैङ्किग और सोने चांदीका व्यवसाय होता है।

—:::—

मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता

इस फर्मके मालिक बीकानेरके प्रसिद्ध मोहता परिवारके वंशज हैं। इस फर्मके संस्थापक राव बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ० बी० ई० हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ मोतीलालजी मोहता था। सेठ गोवर्द्धनदासजीके ३ बड़े भाई सेठ शिवदासजी, सेठ जगन्नाथजी, और सेठ लक्ष्मीचंदजी थे। इनमेंसे सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्रोंकी फर्म जगन्नाथ मदनगोपालके नामसे और लक्ष्मीचंदजीके ७ पुत्रोंकी फर्म मोतीलाल लक्ष्मीचन्दके नामसे व्यवसाय करती है। यह सारा कुटुम्ब शिक्षित है और माहेश्वरी-समाज-सुधारमें बहुत अग्रगण्य रूपसे भाग लेता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक रायबहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ० बी० ई०के पुत्र श्री० सेठ रामगोपालजी मोहता और रायबहादुर सेठ शिवरतनजी मोहता हैं। श्री मोहता रामगोपालजीसे हिन्दी संसार भलीप्रकार परिचित है। आप उन्नत विचारोंके दानवीर महानुभाव हैं। आपके हाथोंसे समाजकी जो दिव्य सेवाएं हुई हैं वे भारतवर्षमें प्रख्यात हैं।

आपने अपने छोटे भ्राता मूलचंदजीके नामसे मोहता मूलचन्द विद्यालय नामक एक विद्यालय और बोर्डिंग हाउस स्थापित कर रक्खा है। आपने अभी कुछही समय पूर्व श्री बिड़लाजी-के सहयोगसे इङ्गलैण्डमें १ मकान अच्छी लागतसे खरीदा है। जिसमें भारतीय लोगोंके ठहरनेके प्रबंधके साथ साथ आपकी उसमें एक शिव-मंदिर बनवानेकी भी स्कीम है।

मोहता मोतीलालजीके परिवारके कुछ सम्मिलित सार्वजनिक कार्योंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

श्री० सेठ बहादुरमलजी रामपुरिया, बीकानेर

स्व० सेठ जसकरणजी रामपुरिया, बीकानेर

जगन्नाथजीके हाथोंसे हुई। इस समय इस फर्मका संचालन श्रीयुत आशारामजी साहानो करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हरकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

कलकत्ता—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सूतापट्टी नं० १५ T. A. Harku—इस फर्मपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता - मेसर्स मूलचन्द आशाराम, मनोहरदासका कटला—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता इस फर्मके जिम्मे गया जिला की तया स्थानीय बहुतसी जमींदारीका काम भी

अलीगढ़—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ, मदार दरवाजा T. A. sadani-यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। कपास तथा आढ़तका काम भी इस फर्मपर है।

कलकत्ता—पाटी प्रेस-यहां आपका एक प्रिंटिंग प्रेस भी है।

मेसर्स मोतीलाल लखमीचन्द मोहता

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म पुरानी है। इसके स्थापक सेठ लखमीचंदजी थे। आपके द्वारा इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपके आठ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० कन्हैयालालजी, श्री० मोहनलालजी, श्री० सोहनलालजी श्री० मेघराजजी, श्री० रामचन्द्रजी (स्वर्गस्थ) श्री अगरचंदजी, श्री० गोकुलदासजी और श्री० विट्ठलदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, १६ पगिया पट्टी T. A. Durgamai-यह फर्म अंगरेज कम्पनियोंकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता

बम्बई—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, कालबादेवी रोड T. A. Mohata-इस फर्मपर हुण्डी-चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है।

करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, Overland यह फर्म रायजी मार्केटकी पील गु ब्रोकर है। यहींपर ओव्हरलेंड मोटर कम्पनीकी सिंध, बलूची स्थान और राजपू लिये सोल एजंसी है।

करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Durgamai) इस फर्मपर काटन कमीशन एजं काम होता है।

करांची—मेसर्स सोहनलाल गणेशीलाल -इस दुकानपर कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

यहां ८) मासिक पर गुमास्ता-गिरी की। ७वर्षके पश्चात् आप अपनी कार्य कुशलतासे इस फर्मके मुनीम होगये। सन् १८८३में आपने अपने भाइयोंको उपरोक्त नामसे कपड़े की दूकान करवाई एक सालके पश्चात् आप भी नौकरी छोड़कर इस फर्ममें शरीक होगये। धीरे २ इस दूकानकी उन्नति होती गई और संचालकोंकी बुद्धिमानी और कार्य-कुशलतासे यह फर्म दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करने लगी। यहांतक कि यह खानदान आजकल बीकानेरके धनकुबेरोंमें गिना जाता है। कलकत्तेके कपड़े के इम्पोर्टरोंमें भी इस फर्मका बहुत उंचा नम्बर है।

इस प्रकार इस फर्मका इतिहास एक स्वावलम्बनका इतिहास है। जिसमें संचालकोंकी बुद्धिमानी, कार्य-कुशलता और व्यापार निपुणताका पूरा २ परिचय मिलता है।

इस फर्मकी उन्नतिमें श्रीयुत जसकरणजीका सबसे बड़ा हाथ रहा है। उन्होंने इस फर्मकी लन्दन और मेनचेस्टरमें शाखाएं खोली थीं। इन शाखाओंपर आपने हिन्दुस्थानी कार्यकर्त्ता रक्खे थे। इन शाखाओंकी वजहसे इस फर्म की खूब तरक्की हुई। श्रीयुत जसकरणजीका देहावसान सन् १६२० में हो गया। चूंकि यही इन शाखाओंकी देखरेख रखते थे इसलिये इनके एक वर्ष पश्चात् ही ये शाखाएं टूट गई।

इस समय आपके पुत्र श्रीयुत भंवरलालजी हैं। आपका जन्म सं० १६६५ में हुआ। आप सज्जन, और उदार प्रकृतिके नवयुवक हैं।

श्रीयुत सेठ बहादुरमलजी तीव्र मेधावी सज्जन थे। आपकी ज्ञानशक्ति, बुद्धिमत्ता और निपुणताको देखकर कई अंग्रेज आश्चर्य चकित होगये। आपके विषयमें बंगाल, बिहार और उड़ीसाके इनसाईक्लो पिडियामें लिखा है। He is one of the fine products of the business world having imbibed sound business instinsts compled with courtesy to strangers and religious faith in jainism.

श्रीयुत बहादुरमलजीकी दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुची थी। आप विशेषकर गुप्त-दान किया करते थे। आपकी ओरसे बीकानेरमें अस्पतालके सामने एक धर्मशाला बनी हुई है। इसमें रोगियोंके ठहरनेका अच्छा इन्तिज़ाम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया १४८ क्रॉस स्ट्रीट—तारका पता Hazina
इस फर्मपर धोती जोड़े और शटिंग विलायत और जापानसे इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त आसाममें भी आपकी एक शाखा है। वहां जूट तथा हैसियनका काम होता है।

मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ गोपीकिशनजी हैं। आप सेठ शालिगरामजीके पुत्र हैं। आपका संक्षिप्त परिचय ऊपर दिया जाचुका है।

आपका व्यापारिक परिचय निम्न लिखित है।

रायपुर (सी० पी०) मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन--इस दुकानपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

भाटापाड़ा (सी० पी०)—मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

बालोदा बाजार—मेसर्स शालिगराम--यहां गोपीकिशन जमींदारी तथा सराफीका काम होता है।

—

मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें सर्व-प्रथम संवत् १८९५में सेठ सदासुख जी आए। आप यहां आरंभमें मूंगा, मोती तथा चांदीका व्यवसाय करते थे। इस व्यवसायमें सेठ सदासुखजीने बहुत अधिक सम्पत्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपने अपनी मौजूदगीमें ही सेठ रामचन्द्र जी तथा सेठ कस्तूरचन्द को गोद लिया। सेठ सदासुखजीकी व्यवसाइक चातुर्य्यके साथ २ धार्मिक कार्योंकी ओर भी अधिक रुचि थी। आपने संवत् १९३१में बीकानेरमें एक सुन्दर ठाकुरजीका मंदिर बनवाया। कलकत्ते आपने बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति एकत्र की। कलकत्तेका मशहूर सदासुखका कटरा नामक इमारत जिसमें करीबको ४००-५०० दुकानें लगती हैं। आपही ने संवत् १९२८में बनवाया। आपने अपने आश्रममें तीर्थ-यात्राएं इत्यादि भी खूब की। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका देहावसान संवत् १९५९में हुआ। आपके बड़े दत्तक पुत्र सेठ रामचन्द्रजी का भी [illegible] चुका है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीसेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी एवं श्रीसेठ रामचन्द्रजीके पुत्र [illegible] हैं। सेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न [illegible] [illegible] [illegible] के पक्के अनुयायी हैं। आपका कुटुम्ब हमेशा से और [illegible] [illegible] रहा है। [illegible] [illegible] जूट मिल आदि कई कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। [illegible] [illegible] [illegible] भी बहुत है। कलकत्ता और [illegible] आपकी करीब ५० बिल्डिंग्स और जमीन है। [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible] एक धर्मशाला तथा [illegible] [illegible] [illegible]

गंगा शहर

मेसर्स भैरुदान ईसरचन्द चौपड़ा

इस फर्मके मालिक गंगाशहर (बीकानेर) के निवासी हैं। कलकत्तेकी मशहूर फर्म मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द (मुर्शिदाबाद निवासी) जिसको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए, उसमें आपका करीब २२ वर्षसे साझा है। इस फर्मकी विशेष उन्नति श्री० सेठ भैरुदानजीके हाथसे हुई। आप योग्य और व्यापार दक्ष पुरुष हैं।

आपने हालहीमें बनारसके हिन्दू विश्व विद्यालयको १००००) प्रदान किया है। सी० आर० दासके स्मारक फंडमें भी आपने महात्मा गांधीजीको १००००) दिये हैं। इसी प्रकार और भी दानधर्म आपकी ओरसे होता रहता है।

श्री० भैरुदानजी उन व्यक्तियोंमेंसे है जिन्होंने अपने ही हाथोंसे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जन की है। केवल २२ वर्षमें ही आपने आशातीत उन्नति की है। आप तेरापंथी ओसवाल सज्जन हैं। आप छः भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० सेठ भैरुदानजी, सेठ ईसरचन्दजी, सेठ तेजमलजी, सेठ पूनमचन्दजी, सेठ हेमराजजी और सेठ चुन्नीलालजी हैं।

श्री० सेठ भैरुदानजीके ४ पुत्र, सेठ ईसरचन्दजीके १ पुत्र, सेठ तेजमलजीके ५ पुत्र, सेठ पूनमचन्दजीके २ पुत्र, सेठ हेमराजजीके १ पुत्र और सेठ चुन्नीलालजीके २ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द नं० १ पोर्तगीज़ चर्च स्ट्रीट T. A. Singhi—इस फर्मपर जूट बेल्सका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है। इस फर्ममें आपका साझा है। इस फर्मकी सिराजगञ्ज, सिरसाबाड़ी, अजीमगञ्ज, फारबसगञ्ज, कस्बा आदि स्थानोंपर शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स आसकरण लूणकरण नं० १९ सोनागोगा स्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी बैंकिंग तथा जूटकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

शिवपोल (भागलपुर)—मेसर्स आसकरण लूणकरण—इस फर्मपर जूटकी खरीदी तथा कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ गोपीकिशनजी हैं। आप सेठ शालिगरामजीके
हैं। आपका सक्षिप्त परिचय ऊपर दिया जाचुका है।

आपका व्यापारिक परिचय निम्न लिखित है ।

रायपुर (सी० पी०) मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन--इस दुकानपर बैंकिंग, हुंडी चिठ्ठी तथा कमी- शन एजन्सीका काम होता हैं।

भाटापाड़ा (सी० पी०)—मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिठ्ठीका काम होता है ।

बालोदा बाजार—मेसर्स शालिगराम--यहां गोपीकिशन जमींदारी तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें सर्व-प्रथम संवत् १८६५में सेठ सदासुख जी आए। आप यहां आरंभमें मूंगा, सोना तथा चांदीका व्यवसाय करते थे। इस व्यवसायमें सेठ सदासुखजीने बहुत अधिक सम्पत्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपने अपनी मौजूदगीमें ही सेठ रामचन्द्र जी तथा सेठ कस्तूरचन्दजी को गोद लिया। सेठ सदासुखजीकी व्यवसाइक चातुर्य्यके साथ २ धार्मिक कार्योंकी ओर भी बहुत अधिक रुचि थी। आपने संवत् १९३१में बीकानेरमें एक सुन्दर दाऊजीका मंदिर बनवाया। कलकत्तेमें आपने बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति एकत्र की। कलकत्तेका मशहूर सदासुखका कटरा नामक इमारत जिसमें कपड़ेकी ४००-५०० दूकानें लगती हैं। आपही ने संवत १९५८में बनवाया। आपने चौथे आश्रममें तीर्थ-यात्राएं इत्यादि भी खूब की। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका देहावसान संवत् १९६९में हुआ। आपके बड़े दत्तक पुत्र सेठ रामचन्द्रजी का भी देहावसान हो चुका है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीसेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी एवं श्रीसेठ रामचन्द्रजीके पुत्र श्री दाऊदयाल जी हैं। सेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप वल्लभ सम्प्रदायके पक्के अनुयायी हैं। आपका कुटुम्ब हमेशा गो और ब्राह्मणोंका पूजक रहा है। आप हुकुमचन्द जूट मिल आदि कई कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। कलकत्तेमें आपकी स्थायी सम्पत्ति भी बहुत है। कलकत्ता और हवड़ामें आपकी करीब ५० बिल्डिंगस और जमीन हैं। आपकी ओरसे बीकानेरमें एक दाऊदयाल औषधालय हरिद्वारमें एक धर्मशाला तथा अन्न क्षेत्र और कुंआ

श्रीयुत कनीरामजी बांठिया (मोजीराम पन्नालाल) भिनासर

श्रीयुत बहादुरमलजी बांठिया (हेमराज हजारीमल) भिनासर

सोहनलालजी बांठिया (मोजीराम पन्नालाल) भिनासर

बांठिया बिल्डिंग भिनासर

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारीमलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हुआ। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत् १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ रिखबदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दूकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिञ्जरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chatta stick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
" अनंदरूप नेनसुखदास डागा
" उदयमल चांदमल ढट्टा
" गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
" गुनचंद मंगलचन्द डड्ढा
" जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
" जगन्नाथ मूलचन्द सादानी
" नारायणदास जी मोहता

मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
" प्रयागदास जमनादास बिन्नाणी
" बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
" बालकिशनदास श्रीकृष्णदास [illegible]
" बालकिशनदास रामकिशनदास [illegible]
" भीखमचंद रतनचंद मोहता
" रामकिशनदास रामरतनदास [illegible]
" राधावल्लभदासजी [illegible]
" रामरतन बृजरतन [illegible]

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ [illegible] हैं। [illegible] व्यापारियोंकी यहां फर्में भी नहीं हैं। केवल उनकी भव्य हवेलियां यहां बनी हैं। [illegible] प्रसिद्ध व्यवसायीके नाते उनके पते यहां दिए गये हैं।

(१) रेल्वे स्टेशनपर इस परिवारकी ओरसे एक रमणीय विशाल धर्मशाला बनी है। बीकानेर जैसे शहरमें जहां पानी विकता मोल की कहावत है। कोई अजनबी आदमी इस इफरातमें निवास करनेवाला यहां आवे तो उसे इस धर्मशालामें अपना घर छोड़ा हुआ नहीं दिखाई देगा। इसके अन्दर एक औषधालय और आयुर्वेदिक पाटशाला भी है। स्टेशनपर भी आपकी ओरसे प्याऊका प्रबंध है।

(२) बीकानेर शहरमें आपका एक औषधालय स्थापित है। जिसमें आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दोनोंप्रकारकी चिकित्साएं होती हैं।

(३) बीकानेरसे एक मीलकी दूरीपर संशोलाव तालाबपर एक विशाल मकान पक्षियोंके लिए बना हुआ है।

(४) आपकी ओरसे एक अनाथालय खुला हुआ है। जिसमें बहुतसे अनाथोंको मदद सहायता दी जाती है।

(५) श्री कोलायतजी नामक तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे श्री गंगामाईका मंदिर और धर्मशाला बनी हुई है।

इसीप्रकारके अनेक धार्मिक कार्योंमें इस कुटुम्बने बहुत उदारतापूर्वक दान दिये हैं।

व्यापारिक दृष्टिसे यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। करांचीमें गोवर्द्धनदास मार्केट नामक आपका एक सबसे बड़ा कपड़ेका मार्केट बना हुआ है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) करांची—मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता T. A. marketwala—इस फर्मपर कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। करांचीमें आपकी बहुतसी जमींदारी है। यहां आपका एक लोहेका कारखाना भी है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल मोहता २८ स्ट्रांडरोड T. A. mohta—यहां आपके भाइयोंके साझेमें कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(३) देहली—गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता—यहां भी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त झरियामें आपकी कोयलेकी खान भी है।

मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत हीरालालजी, श्रीयुत शिखरचंदजी, नथमलजी तथा श्रीयुत भंवरलालजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ जोरावरमलजी बहुतही साधारण स्थितिके पुरुष थे। आपके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी केवल १३ वर्षकी अवस्थामें कलकत्ता गये और वहां पेनठप कम्पनीके

स० सेठ भेवरचन्दजी चोपड़ा, सुजानगढ़

श्री सेठ बालचन्दजी बेगांणी (छोगमल बालचन्द) सुजानगढ़

दानचंदजी चोपड़ा (भेवरचन्द दानचंद) सुजानगढ़

श्रीसेठ रामचंद्रजी मालानी (रामचंद्र सुजानमल) सुजानगढ़

(२) ग्वालंदो (फरीदपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द—इस फर्मपर भी जूट (कुष्टा) का घरू और आढ़तसे व्यवसाय होता है।

(३) सैदपुर-(रंगपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी और जूटका घरू और आढ़तका कारबार होता है।

(४) बोगड़ा (बंगाल) गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी तथा जूटकी आढ़तियोंके लिये और घरू खरीदीका काम होता है।

सेठ दानचन्दजी थली धड़ेके ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप बड़े मिलनसार हैं। डीडवानामें भी आपके मकान वगैरा बने हुए हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। आपकी फर्मको यहाँ आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्वप्रथम सेठ आलमचन्दजी यहाँ आये थे। आप बीकानेरमें राज्यकार्य करते थे। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम बरदीचन्दजी, गणेशदासजी चुन्नीलालजी और चौथमलजी था। चारों भाइयोंने मिलकर संवत १९१२ में कलकत्तेमें चुन्नीलाल चौथमलके नामसे व्यापार आरंभ किया, इन चारों भाइयोंमें सेठ चुन्नीलालजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छी तरक्की मिली। आप बहुत कर्मशील पुरुष थे। आपका देहावसान सं० १९५० में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हजारीमलजी वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको संभाल रहे हैं। आपके समयसे ही इस फर्मपर चुन्नीलाल हजारीमलके नामसे व्यापार होता है। आपके छोटे भाई श्री हमीरमलजीका देहावसान संवत १९५७ में हो गया है।

सेठ हजारीमलजी यहांकी म्युनिसिपैल्टीके मेम्बर हैं। आप यहाँके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। सुजानगढ़में आपने कई अच्छे सुन्दर मकानात बनवाये है। बीकानेरमें भी आपकी हवेली बनी हुई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल १६ पगियापट्टी—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी और सराफी लेनदेनका काम होता है। आपकी रिवरह्ला स्ट्रीटमें एक इमारत बनी हुई है।

(४७) सुजानगढ़—चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया—यहां हुण्डी चिट्टीका काम होता है। तथा आपका खास निवास है।

मेसर्स हंसराज बालमुकुन्द

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। इस फर्मको सेठ हंसराजजीने स्थापित किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ बालमुकुन्दजीके हाथोंसे इसकी विशेष तरक्की हुई। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ गोवर्धनदासजी एवं सेठ जानकीदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर—मेसर्स हंसराज बालमुकुन्द—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मद्रास—मेसर्स बालमुकुन्द जानकीदास, साहूकार पेठके पास—श्री नाई क्रोन स्ट्रीट नं० १४—यहां सराफी तथा हुंडी चिट्ठी और ब्याजका काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्णदास बालकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मदनगोपालजी दम्माणी हैं। आप माहेश्वरी जातिके दम्माणी सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस बीकानेरमें है। यहां हुंडी चिट्ठी और सट्टेका काम होता है। इस फर्मका पूरा परिचय बम्बई-विभागके पृष्ठ २०० में दिया गया है। बीकानेरका तारका पता—Dammani है।

मेसर्स श्रीराम प्रयागदास

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप पुष्करना ब्राह्मण जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ श्रीरामजी तथा प्रयागदासजी हैं। आपके पश्चात् सेठ मदनगोपालजी हुए। आपने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीयुत कृष्णगोपालजी, चम्पालालजी, शिवकिशनदासजी इस फर्मका संचालन करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर मेसर्स श्रीराम प्रयागदास—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी, चांदी सोना तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सेठ मदनगोपाल आचार्य नं० ८५ मनोहरदास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े तथा चांदी सोनेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स प्रयागदास मदनगोपाल, नं० ८५ मनोहरदास स्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। T. A. Pokharpotha. इस फर्मकी ओरसे यहां "श्रीराम विद्यालय" नामक एक विद्यालय स्थापित है।

---

(२) ग्वालंदो (फरीदपुर) मेसर्स मेघराज दानचन्द—इस फर्मपर भी जूट (कुष्टा) का घरू और आड़तसे व्यवसाय होता है।

(३) सैदपुर-(रंगपुर) मेसर्स मेघराज दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और जूटका घरू और आढ़तका कारबार होता है।

(४) बोगड़ा (बंगाल) मेघराज दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी तथा जूटकी आड़तियोंके लिये और घरू खरीदीका काम होता है।

सेठ दानचन्दजी धली धड़ेके ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप बड़े मिलनसार हैं। डीडवानामें भी आपके मकान वगैरा बने हुए हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। आपकी फर्मको यहाँ आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्वप्रथम सेठ आलमचन्दजी यहाँ आये थे। आप बीकानेरमें राज्यकार्य करते थे। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम बरदीचन्दजी, गणेशदासजी चुन्नीलालजी और चौथमलजी था। चारों भाइयोंने मिलकर संवत १९१२ में कलकत्तेमें चुन्नीलाल चौथमलके नामसे व्यापार आरंभ किया, इन चारों भाइयोंमें सेठ चुन्नीलालजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छी तरक्की मिली। आप बहुत कर्मशील पुरुष थे। आपका देहावसान सं० १९५० में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हजारीमलजी वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको संभाल रहे हैं। आपके समयसे ही इस फर्मपर चुन्नीलाल हजारीमलके नामसे व्यापार होता है। आपके छोटे भाई श्री हमीरमलजीका देहावसान संवत १९५७ में हो गया है।

सेठ हजारीमलजी यहांकी म्युनिसिपैल्टीके मेम्बर हैं। आप यहाँके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। सुजानगढ़में आपने कई अच्छे सुन्दर मकानात बनवाये है। बीकानेरमें भी आपकी हवेली बनी हुई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल १६ पगियापट्टी—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी और सराफी लेनदेनका काम होता है। आपकी शिवठाकुर स्ट्रीटमें एक इमारत बनी हुई है।

(४२) सुजानगढ़—चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। तथा आपका खास निवास है।

स्व० सेठ भैरूंदानजी चोपड़ा, गंगाशहर

श्रीरूपचन्दजी नाथटा (हुकुमचन्द गोविन्दराम) छापर

कुकरन (पूर्णिया)—इस फर्मपर कपड़ा, जूट तथा गल्लेका व्यापार होता है।

रंगून (पूर्णिया)—मेसर्स दीपचन्द धनराज—यहां कपड़ा, पाट और घृतका व्यापार होता है।

भडंगामारी (रंगपुर)—मेसर्स भैंरुदान ईसरचन्द चोपड़ा—इस स्थानपर जूटका व्यापार होता है।

भिनासर

मेसर्स मौजीराम पन्नालाल बांठिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिनासर (बीकानेर) में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी जैन सम्प्रदायके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ मौजीरामजीने की। आपका स्वर्गवास संवत १९४१ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पौत्र श्री हमीरमलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आप बड़े बुद्धिमान, और व्यापार दक्ष पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९१६ में हुआ।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत कनीरामजी, श्रीयुत सोहनलालजी, और श्रीयुत चम्पालालजी हैं। इनमेंसे श्रीयुत कनीरामजी श्रीयुत हमीरमलजीके बड़े भाई श्रीयुत सालमचन्दजीको दत्तक दिये गये हैं, आप तीनों ही भाई बड़े उदार सज्जन और विशाल चित्तके पुरुष हैं। बीकानेरमें आपकी उदारता बड़ी प्रसिद्ध है।

आपने साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें ११११) का दान दिया है। इसके अतिरिक्त मौजीराम पन्नालाल और प्रेमराज हजारीमल इन दोनों फर्मोंकी तरफसे व्यवहारिक स्कूलको बिल्डिङ्ग प्रदान की गई है। इन्हीं दोनों फर्मोंकी विशेष सहायतासे श्रीगंगाशहरसे भिनासर तक पक्की सड़क बनी हुई है। इसके अतिरिक्त भिनासर पींजरापोलमें भी आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गई है।

कलकत्ता—मेसर्स मौजीराम पन्नालाल, ४१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Rathayatra— इस फर्मपर छत्रियोंकी एक फेक्टरी है। तथा विलायतसे भी छत्रियोंका इम्पोर्ट होता है इसके अतिरिक्त बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी और भी कई स्थानोंपर ब्रान्चेस हैं।

—०:०—

रतनगढ़

बीकानेर स्टेट रेल्वेकी रतनगढ़ जंकशनके पास बसी हुई यह बस्ती है। चारोंओर दुर्गसे घिरी हुई यह सुन्दर एवं साफ बस्ती है। इसकी मनुष्य संख्या करीब १३-१४ हजारके हैं। एक शताब्दी पूर्व यहांपर कोलसर नामक एक छोटासा ग्राम था। बीकानेरके महाराज रतनसिंहजीने इसे अपने नामसे बसाया। इसकी बसावट बहुत अच्छे ढङ्गसे की गई है। यहांके कई धनिकोंकी भारतके विभिन्न स्थानोंमें दूकाने हैं। यहांके धनिक समाजकी दानधर्म एवं शिक्षा प्रचारकी ओर विशेष रुचि है। इसनेसे छोटे स्थानमें कई पाठशालाएं, एवं कई प्रकारकी पारमार्थिक संस्थाएं चल रही हैं। यहांकी हवेलियें बीकानेरसे कुछ विशेष प्रकारकी हैं। बीकानेरमें हवेलियोंके अग्रभागमें पत्थरपर खुदाईका काम अनुपम रहता है और यहांकी हवेलियोंकी दीवालोंपर चारों ओर चित्रकारी और रंगाईकी विशेषता रहती है। जितना रुपया बिल्डिंग बनवानेमें लगता है, उसका एक अच्छा अंश उसको रंगवानेमें लगता है।

यहां पैदा होनेवाली वस्तुओंमें मूंग, बाजरा, मोठ, ज्वार और मूंज खास हैं। शेष सब वस्तुएं यहां बाहरसे आती हैं। बीकानेरकी अपेक्षा यहांके कुए कम गहरे होते हैं।

व्यवसायके नामपर यहां कुछ भी नहीं है। यहांके सभी निवासी अधिकतर बाहरकी आमदनी पर ही निर्भर रहते हैं। व्यापारियोंकी यहां बड़ी २ हवेलियां बनी हैं जिनमें सालमें कुछ मासके लिये वायु सेवनके लिये सब लोग आते हैं।

यहांपर हनुमान पुस्तकालय नामक हिन्दीका एक अच्छा पुस्तकालय बना हुआ है। श्रीयुत सूरजमलजी जालानने इसकी एक सुन्दर इमारत भी बनवा दी है। इस पुस्तकालयमें भिन्न २ विषयोंकी ८५०० पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त ६४ पत्र पत्रिकाएं भी यहांपर आती हैं। यहांका प्रबन्ध अच्छा है। इसकी इमारतका चित्र इस ग्रंथमें दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद मेघराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सूरजमलजी वैद हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह दुकान पहिले माणिकचन्द ताराचंद नामक फर्ममें सम्मिलित थी। इस नामसे इसे व्यवसाय करते हुए करीब ३० वर्ष हुए।

ुमचन्दजी वेद (बीजराज हुकुमचन्द) रतनगढ़

स्व० सेठ ताराचन्दजी वेद (माणकचन्द ताराचन्द) रतनगढ़

सेठ [illegible] वेद ([illegible]) रतनगढ़

सेठ मंगतूरामजी तापड़िया (हणूतराम गोपीराम) रतनगढ़

सुजानगढ़

यह शहर बीकानेर स्टेटकी एक रमणीक बस्ती है। यहां कई श्रीमंतोंकी दर्शनीय हवेलियां [illegible] बीकानेर स्टेट रेलवेके सुजानगढ़ स्टेशनसे करीब आधा मीलकी दूरीपर यह शहर बसा है। यहां [illegible] बीकानेरसे कम गहरे होते हैं। यहां चारों ओर निरा बालू ही बालूका मैदान दृष्टिगोचर [illegible] सुजानगढ़ डिस्ट्रिक्टकी बड़ी २ कोर्टें वगैरह यहां होनेसे यहां लोगोंकी आमद रफ्त [illegible] यहांकी पैदावारीमें मोठ, बाजरी प्रधान है । दूसरा गल्ला तथा सभी प्रकारके आवश्यक [illegible] बाहरसे आते हैं। यहां ऊनका व्यापार भी साधारणतया ठीक होता है। यहां करीब १० [illegible] ऊन आ जाती है। यह ऊन बड़ी मुलायम और बढ़िया होती है।

सुजानगढ़ स्टेशनपर गाड़ोदियोंकी परम रमणीक धर्मशाला बनी हुई है। यहां [illegible] सब प्रकारकी अच्छी सुविधाएं हैं। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गेवरचंद दानचंद चोपड़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास डीडवाणा है। आपको यहां आये करीब ८ [illegible] इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दानचन्दजी चोपड़ा हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ [illegible] पिता सेठ गेवरचन्दजीने की। सर्व प्रथम आप संवत १९३५ में ग्वालपाड़ेमें [illegible] करते थे। आपको सट्टे आदिसे सख्त घृणा थी। संवत १९६३ में आपने कलकत्तेमें [illegible] की। तथा जूटके व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति मान और प्रतिष्ठा पैदा की। आपका [illegible] संवत १९८१ में हुआ है। वर्तमानमें सेठ दानचन्दजी ही सारे कारबारको सम्हालते हैं। [illegible] पुत्र हैं जिनके नाम श्रीविजयसिंहजी और श्रीफतेचन्दजी हैं। सुजानगढ़में करीब ॥। [illegible] लागतकी आपकी एक नई शानदार इमारत बनी है। सेठ दानचन्दजी ओसवाल समाजमें [illegible] प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा, नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीट - [illegible] इसमें चिट्ठी तथा जूटका पक्का और आढ़तका व्यापार होता है। T. A. [illegible]

(४) माथाभांगा (कूच बिहार) मेसर्स धराकरण मालचन्द, यहांपर जूट, तमाखू और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है। इस स्थानपर आपकी जमींदारी भी है।

(५) मानगाला (जलपाई गोड़ी) मेसर्स धराकरण मालचन्द—यहां भी बैङ्किग और जमींदारीका काम होता है।

——

मेसर्स माणिकचन्द ताराचंद

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है इस फर्मको इस नामसे कलकत्तेमें व्यवसाय करते हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसे सेठ ताराचन्दजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की भी आपहीके द्वारा मिली। आपका देहावसान संवत् १९७१ में हुआ। आपके एक पुत्र सेठ जयचन्दलालजीका देहावसान संवत् १९६२ में और दूसरे सेठ मेघराजजीका देहावसान १९८२ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयचन्दलालजीके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी, रिखबचन्दजी, दौलतरामजी और सांचियालालजी हैं। आपकी ओरसे यहां एक गणित पाठशाला चल रही है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स माणिकचन्द ताराचन्द नं० १६ केनिंगस्ट्रीट—यहां हुंडी, चिट्ठी और कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

—:०:—

मेसर्स रामविलास सागरमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास रतनगढ़ है। इस फर्मकी स्थापना सेठ बल्देवदासजी और रामविलासजी दोनों भाइयोंने की। पहिले इस फर्मपर बल्देवदास रामविलासके नामसे व्यवसाय होता था। इन्हीं दोनों भाइयोंके हाथोंसे इस दुकानके व्यापारकी तरक्की भी हुई। संवत् १९४४में सेठ बल्देवदासजीका देहावसान होगया। तबसे इस दूकानका कार्य सेठ रामविलासजी ही सम्हालते हैं। आपके इस समय श्री सागरमलजी श्री नंदलालजी श्री बैजनाथजी और श्री बजरङ्गलालजी नामक ४ पुत्र हैं। आप चारों शिक्षित हैं। इस समय यहां आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। यहां आपका एक पक्का कुआं भी बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामविलास सागरमल १७८ हरिसनरोड, इस दूकानपर कपड़ेका व्यवसाय होता है।

हणुतरामजी और गोपीरामजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। सेठ गोपीरामजीके ६ भाई और थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री रामविलासजी, श्री बद्रीनारायणजी, श्री मंगतूलालजी, श्री गजानन्दजी, और श्री गोकुलचन्दजी हैं। आपका परिवार रतनगढ़में बहुत सम्माननीय और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी दान, धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर हमेशासे अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे रतनगढ़में ३ धर्मशालाएं, २ पक्के कुए, एक श्री सीतारामजीका मंदिर और एक छत्री बनी हुई है। इसके अतिरिक्त रतनगढ़में तापड़िया पाठशालाके नामसे आपकी दो संस्कृत पाठशालाएं चल रही हैं, इनमें विद्यार्थियोंके लिए भोजन और वस्त्रका भी प्रबंध आपकी ओरसे है। रतनगढ़के आसपास भी आपने २ तालाब और २-३ कुए बनवाये हैं।

श्रीयुत मंगतूलालजी तापड़िया माहेश्वरी सज्जनमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। बिड़ला परिवारसे आपका निकट सम्बन्ध है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स गोपीराम गोविंदराम, ११२ मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स हरदेवदास रामविलास, मनोहरदासका कटला—इस दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स बालाबक्स बद्रीनारायण, मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) रंगून—मेसर्स गोपीराम शिवबक्स, मार्चेन स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स हणुतराम सर्वसुखदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सेनका सज्जन हैं। कलकत्तेमें इसे सेठ नाथूरामजी और उनके भतीजे सेठ रामकिशनजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की नाथूरामजीके पुत्र जवाहरमलजीने दी थी। सेठ जवाहरमलजी बीकानेर स्टेटकी कौंसिलके ८ वर्षतक मेम्बर रहे। वहांके सरकारी औषधालयकी बिल्डिंग आपने अपने खर्चसे तैयार कराई थी। सेठ जवाहरमलजीने कलकत्तेके अमहर्स्ट स्ट्रीट औषधालयमें ५१०००) तथा इसी नामके विद्यालयमें ४१०००) दान दिया था। इसी प्रकार हरिद्वार (कनखल), बनारस आदिमें धार्मिक कार्योंमें आपने बहुत अच्छी २ रकमें दान की थीं। कनखलमें आपकी धर्मशाला है वहां सज्जनोंके लिए अन्न-वस्त्र और शिक्षाका भी प्रबंध है।

राजगढ़

बीकानेर स्टेटकी यह बड़ी मंडी है। यह बीकानेर स्टेट रेल्वेकी सुजानगढ़-हिसार लाईन के सादुलपुर नामक स्टेशनके पास बसी हुई है। सादुलपुर स्टेशनसे पिलानी, बगड़, चिड़ावा आदि जयपुर स्टेटके गांवोंमें रास्ता जाता है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ, बाजरी, गवार आदि हैं। ये ही वस्तुएं यहांसे एक्सपोर्ट होती हैं। बाहरसे किराना, गल्ला कपड़ा आदि यहां आता है और यहांसे आसपासके देहातोंको सप्लाय होता है। यह स्थान जिलेका प्रधान स्थान है। यहां बड़ी २ कोर्टें भी हैं। महाराजा साहबका विचार इसके पास ही अपने राजकुमार श्री० सार्दुलसिंहजीके नामपर मण्डी बसानेका है। इसी ध्येयको लेकर राजगढ़के स्टेशनका नाम भी सार्दुलपुर ही रक्खा है। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गोपीराम बजरंगदास टीकमाणी

इस फर्मके संचालक सेठ बजरंगदासजी तथा सेठ गोपीरामजीके पुत्र श्री सेठ फूलचन्दजी हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। आपकी तथा आपके भाईकी ओरसे यहां स्कूल, पग्डाघर धर्मशाला आदि बने हुए हैं। आपकी फर्मपर यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैंकिंगका काम होता है। आपका पूरा परिचय बम्बई विभागमें पेज नं० ४४ में दिया गया है।

मेसर्स गणपतराय तनसुखराय राजगढ़िया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ तनसुखरायजी, सेठ नागरमलजी, सेठ इन्द्रचन्दजी एवम् सेठ बाबूलालजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यों तो बहुत पुरानी है पर उपरोक्त नामसे इसे तनसुखरायजीके पिता सेठ गणपतरायजीने स्थापित की। आप बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। शुरू २ में आपने तेल और कपड़ेका व्यापार किया। आपका देहावसान हो चुका है। वर्तमानमें इस फर्मपर अभ्रकका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे दान धर्म सम्बंधी भी कई कार्य हुए। आपकी ओरसे सादिलपुर (राजगढ़) नामक स्टेशनपर एक धर्मशाला तथा कुआ बनाया हुआ है। यहां एक मन्दिर तथा धर्मशाला और

थालागांव (आसाम)—मेसर्स कुन्दनमल दुलासचन्द पो० कोकड़ा झाड़—यहां कपड़ा, जूट और गल्लेका व्यापार होता है।

छापरमें आपकी स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स हुकुमचंद गोविन्दराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहीं पर है। यह फर्म यहां बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्मके संचालक तेरापंथी ओसवाल सज्जन हैं। यह फर्म ७० वर्ष पहले सेठ हुकुमचन्दजीने स्थापितकी थी। आपके हाथोंसे इस फर्मको अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ गोविन्दरामजी हुए। आप ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं। आपके भाई श्रीयुत सेठ तिलोकचन्दजी हैं। आप दोनोंही सज्जन मिलनसार व्यक्ति हैं। श्रीयुत तिलोकचन्दजीके सुपुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी नाहटा हैं। आप शिक्षित और व्यापार कुशल एक सज्जन हैं। बीकानेर दरबारमें आपकी बहुत प्रतिष्ठा है। आप कई संस्थाओंके मेम्बर भी हैं।

इस फर्मकी ओरसे यहां एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जोधपुर ओसवाल हाईस्कूल तथा गोशालामें आपकी ओरसे अच्छी सहायता प्रदानकी गई थी। इसी साल आपके यहां मुनिराज श्री कालूरामजी महाराजका चतुर्मास करवानेमें आपने करीब ५० हजार रुपया व्यय किया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

ग्वालपाड़ा (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द गोविन्दराम—यहां कपड़ा तथा प्रकारकी सब वस्तुओंका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हुकुमचन्द दुलासचन्द, ४ दही हट्टा—T. A. Enout--यहां हुंडी, चिट्ठी, कमीशन तथा जूटका व्यापार होता है। कमीशन एजंसीका काम भी इस फर्म पर होता है।

बिलासी पाड़ा (आसाम) मेसर्स तिलोकचन्द शोभाचन्द—यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

धूब्री (आसाम) मेसर्स मोहनलाल भोमसिंह--यहां भी सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

चापड़ (आसाम) मेसर्स सूरजमल रूपचन्द—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

साल्गुजा (आसाम) मेसर्स गोविन्दराम तिलोकचन्द--यहां आढ़तका काम होता है।

साड्यमाम (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द दुलासचन्द--यहां जूट और सूतकी खरीदी बिक्रीका काम होता है।

छापर (बीकानेर) यहां आपका निवास स्थान है। इस गांवमें आपकी कई भव्य इमारतें बनी हुई हैं।

मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहींका है। आप ओसवाल तेरापंथी सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष बड़े बहादुर व्यक्ति हो गये हैं। इनमेंसे जीवनदास जीका नाम विशेष उल्लेखनीय है। लोग कहा करते हैं कि उन्होंने अपना सिर कट जानेके पश्चात् भी बहुत समयतक तलवार चलाई थी। जिसके लिये यहांकी औरतें अभीतक अपने गीतोंमें उनका नाम गाया करती हैं। इन्हीं जीवनदासजीके तीन पुत्रोंमेंसे सुलतानजीने नागोरसे यहां आकर वास किया। आपके भी तीन पुत्र थे जिनमेंसे वर्तमान फर्म सेठ बालचंदजीके वंशजोंकी है। आपके भी तीन ही पुत्र हुए। पहले श्रीयुत रुकमानन्दजी दूसरे श्रीयुत तेजपालजी और तीसरे श्रीयुत विरदीचन्दजी थे।

सेठ रुकमानन्दजीने संवत् १८९१ में कलकत्ते जाकर कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। उस समय आपकी फर्मपर रुकमानन्द विरदीचन्द नाम पड़ता था। संवत् १९१२ में सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हो गये। इस समय उनका व्यवसाय दूसरे नामसे होता है। जबसे सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हुए तभीसे इस फर्मपर तेजपाल विरदीचन्द नाम पड़ता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ तोलारामजी सेठ रायचन्दजी, सेठ श्रीचन्दजी, श्री० सोहनलालजी एवम् श्री शुभकरणजी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

सेठ रुकमानन्दजी—आप बड़े होशियार व्यापार कुशल व्यक्ति थे। इस फर्मकी विशेष तरक्कीका श्रेय आपहीको है। आपके समयमें एकबार जगातका झगड़ा चला था। उसमें आप नाराज होकर बीकानेर स्टेटको छोड़कर जयपुर स्टेटमें चले गये थे, फिर महाराजा सरदारसिंह जीने आपको अपने खास व्यक्ति मेहता मानमलजी रावतमलजी कोचरके साथ जगात महसूलकी माफीका परवाना भेजकर सन्मान सहित वापस बुलवाया था। आपका देहावसान संवत १९४२ में हुआ।

सेठ तेजपालजी और विरदीचन्दजी—आप दोनों सज्जनोंने भी इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। आपका राजदरबारमें अच्छा सन्मान था। आपकी रुचि धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रही है। आपका देहावसान क्रमशः संवत् १९२४ और संवत् १९५६ में हो गया।

सेठ तोलामलजी—वर्तमानमें आप फर्मके मालिकोंको मेंसे हैं। आप शिक्षित एवं उदार सज्जन हैं। आपका ध्यान पुरातत्व सम्बन्धी खोजोंकी ओर विशेष है। आपने यहां एक सुराना पुस्तकालय स्थापित कर रखा है। इसमें करीब २५०० प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ मौजूद हैं। आपका दरबारमें भी अच्छा सन्मान है। आप बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिलके मेम्बर हैं। म्युनिसिपेलिटीके भी आप सदस्य हैं।

श्रीयुत सूरजमलजी बड़े योग्य और शिक्षित व्यक्ति हैं। आपके पिता सेठ मेघराजजीका देहावसान संवत १९८२ में होगया है। इस कुटुम्बमें श्रीयुत सूरजमलजीके दादा सेठ सोनचंदजी (आपका दूसरा नाम ताराचन्दजी था) बड़े प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप राजपूतानेके ओसवाल समाजमें अच्छी प्रतिष्ठाकी निगाहोंसे देखे जाते थे।

सेठ सूरजमलजी अपने पिताजीकी यादगारमें एक परमार्थिक संस्था स्थापित करनेका विचार कर रहे हैं। आपकी दूकान कलकत्तेमें अफीम चौरास्तेपर है। इसपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स बीजराज हुकुमचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ जसकरणजी और सेठ मोहनलालजी बेद हैं। ओसवाल जातिके सज्जन हैं आपकी फर्म इस नामसे कलकत्तेमें करीब ५० वर्षोंसे व्यापार करती है।

इस फर्मकी स्थापना सेठ हुकुमचंदजीने की और आपहीके हाथोंसे इसके व्यापारकी उन्नति भी हुई। आप बड़े योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपका देहावसान संवत १९१८ की भादवा सुदी ८ को हुआ। आपके बड़े पुत्र सेठ जसकरणजी बेद हैं, आपके दूसरे पुत्र सेठ मालचन्दजीका देहावसान संवत १९७९ में हो गया है। वर्तमानमें सेठ मालचन्दजीके पुत्र सेठ मोहनलालजी हैं।

श्री जसकरणजी शिक्षित एवं जैनधर्मके ज्ञाता हैं। आपने २ पुस्तकें भी लिखी हैं। सरदारगढ़में आपकी ओरसे बीजराज हुकुमचन्द वणिक पाठशाला और बालसभा नामक संस्था चल रहा है। आपके ५ पुत्र हैं, जिनके नाम श्री डूंगरमलजी, श्री मोतीलालजी, श्री गुलाबचन्दजी श्री सोहनलालजी और श्री लाभचन्दजी हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द ३० तुलापट्टी (हेड आफिस) यहां बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। यहां नं० ४४ काटन स्ट्रीटमें आपकी एक बिल्डिङ्ग बनी हुई है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द, सूतापट्टी (गनेशभगतका कटला) यहां थोकबंदी थोक व्यापार होता है।

(३) नाटोर (बंगाल) मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द—यहां बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

श्रीयुत कुंवर सुमतकरणजी सुराना
(तेजपाल विरधीचन्द) चूरू

कुंवर हरिसिंहजी सुराना
(तेजपाल विरधीचन्द) चूरू

श्रीयुत कुंवर सुगनकरणजी सुराना
(तेजपाल विरदीचन्द) चूरू

भंवर हरिसिंहजी सुराना
(तेजपाल विरदीचन्द) चूरू

(२) कलकत्ता – मेसर्स दौलतराम रावतमल १७८ हरिसनरोड—इस फर्मपर आसाम व इसपर गल्ला, विल्हन, और जूटका व्यापार होता है। इस फर्मकी एक प्रे करनेकी मिल भी है।

मेसर्स रामरतनदास जोधराज धानुका

इस फर्मको सेठ जोधराजजीने ४० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें स्थापित किया था। इ आप बीकानेरके मोहता परिवारके साथ शिवदास जगन्नाथके नामसे व्यापार करते थे। खास निवास रतनगढ़ ही है।

रतनगढ़के ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रममें आपकी ओरसे ४१ ब्रह्मचारियोंको भोज मिलता है। आपने यहांपर एक श्री गोविन्ददेवजीका मंदिर एक बगीचो और एक कुं बनवाया है। आपने रतनगढ़के सहायक समिति नामक औषधालयके लिये जमीन लेकर उस मकान भी बनवा दिया है। आपके पुत्र श्री मुरलीधरजीका देहावसान होगया है। वर्तमानमें मुरलीधरजीके माधौप्रसादजी नामक एक पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। कलकत्ता—मेसर्स रामरतनदास जोधराज नं० १७८ हरिसनरोड, मल्लिककी कोठी—यहां बैंकिंग हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल जालान

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। यह फर्म कलकत्तेमें हनुमान जूट मिलकी मैने एजंट है। इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके (जालान) सज्जन हैं। आपकी शिक्षाके प्र में बहुत अभिरुचि है। आपका खास निवास स्थान रतनगढ़ ही है। रतनगढ़में आपने ए मान पुस्तकालय नामक एक आदर्श पुस्तकालय संचालित कर रक्खा है। आपने उस पुस्तकालय लिए ३० हजारकी लागतसे एक भव्य इमारत भी रतनगढ़में बनवा दी है। तथा सम्वत् १९.. अभीतक आप उसका अधिकांश व्यय उठा रहे हैं। भविष्यमें भी उस वाचनालयकी उन्नति लिए आपके हृदयमें अच्छे विचार हैं। आपका पूरा परिचय कलकत्तेके विभागमें दिया जायगा।

मेसर्स हणुतराम गोपीराम

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास रतनगढ़ है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापना करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ माणिकरामजीने की। आपके बाद क्रमशः श्र रंगविहारीजी, सेठ हणुतरामजी, सेठ गोपीरामजीने इस फर्मके व्यवसायका संचालन किया। ..

श्रीयुत कुंवर शुभकरणजी सुराना
(तेजपाल विरदीचन्द) चूरू

भंवर हरिसिंहजी सुराना
(तेजपाल विरदीचन्द) चूरू

सम्वत् १९८१में नाथूराम रामकिशन फर्मकी ६ शाखाएं होगईं। जिनके नाम नाथूराम हरमल, रामकिशनदास, शिवदयाल, घनश्यामदास ठाकुरसीदास, गंगाधर बजरंगलाल, फं शिवचंदराय और गजानन्द रामकुमार हैं।

इनमेंसे घनश्यामदास ठाकुरसीदासके सञ्चालक श्री ठाकुरसीदासजी हैं। आप क स्टॉक एक्सचेंजमें ठाकुरसीदास खेमकाके नामसे काम काज करते हैं।

यहांके कुछ खास खास व्यापारियोंके नाम जिनकी दुकानें बाहर हैं।

अमरचन्द रामप्रसाद
उमयचन्द चुन्नीलाल
चनीराम बल्देवदास
ताराचन्द मेघराज
नाथूराम हरदेवदास
बीजराज हुकुमचन्द
माणिकचन्द ताराचन्द
रामविलास सागरमल
रामरतनदास जौधराज
सूरजमल नागरमल जालान (मिल मालिक)
सुखदेवदास राम विलास
हणुतराम गोपीराम

गल्लेके व्यापारी

अमरचन्द मालीराम
अमरचन्द जानकीदास
अमरचन्द शिवदत्तराय
चनीराम बल्देवदास
बल्देवदास रामकुंवार
हरिबक्स कसेरा

आइल एजंट

नाहरमल शिवबक्स (स्टेंडर्ड आइल)
बिहारीलाल राजीराम (एशियाटिक पेट्रोलियम)
महादेव मुरारका (सब एजंट वर्मा आइल कम्पनी)

चांदी सोनेके व्यापारी

बलदेवदास रामकुंवार
शिवभगवान रामकुंवार

सार्वजनिक स्कूल और संस्थ

श्रीमारवाड़ी सहायक समिति
श्रीहनुमान पुस्तकालय
श्रीहनुमान भंडार
श्रीहनुमान उपदेश भवन
श्रीहनुमान बालिका विद्यालय
राज्यस्थान ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम
बाल सभा पुस्तकालय
रघुनाथ विद्यालय
श्रीखेमका धर्म सभा
खेमका संस्कृत पाठशाला
खेमका गणित पाठशाला
सापड़िया संस्कृत पाठशाला
चमड़िया संस्कृत पाठशाला
नुहाला संस्कृत पाठशाला
गडेरिया संस्कृत पाठशाला
भरतिया संस्कृत पाठशाला
हजारीमल संस्कृत पाठशाला
मंगलदत्त विद्यालय
बीजराज हुकुमचन्द वणिक पाठशाला
अछूत पाठशाला

पुस्तकालयमें छपे हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त करीब २५०० हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ भी हैं। इसके [illegible] एक श्री तोलारामजी सुराना तथा श्रीशुभकरनजी सुराना हैं। इसमें एक चांदीका एक [illegible] हुआ है, वह दर्शनीय है। इसी प्रकारकी और भी कई वस्तुएं दर्शनीय हैं। इसका [illegible] देखभी करते हैं। आपका मैनेजमेंट बहुत सुन्दर है। इस पुस्तकालयके विषयमें इसके [illegible] कई प्रसिद्ध विद्वानोंकी सम्मतियां संग्रहित हैं। सम्मतियां बड़ी अच्छी हैं। यहांके [illegible] परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् जंवरीमलजी वैद हैं। आपका [illegible] स्थान यहींका है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म [illegible] हैं। इसके स्थापक सेठ पन्नालालजी हैं। आपने संवत् १९२४ में कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी उन्नति हुई। आपके दो पुत्र हुए—सेठ सागरमलजी और सेठ जंवरीमलजी। इस समय सेठ सागरमलजी अपना अलाहदा व्यवसाय करते हैं।

सेठ जंवरीमलजी बड़े सादे एवम् मिलनसार व्यक्ति हैं। आपकी ओरसे यहां एक [illegible] बनी हुई है।

इस समय सेठ जंवरीमलजीके चार पुत्र हैं जिनके नाम श्रीगणेशमलजी, श्रीरतनमलजी, श्रीमोहनलालजी, तथा श्रीरायचन्दजी हैं। इनमेंसे श्रीयुत गणेशमलजी दुकानके कामकाज [illegible] करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां विलायती कपड़े [illegible] जूटका व्यापार होता है। यहांपर डायरेक्ट विलायतसे कपड़ा आता है। [illegible] जूटका एक्सपोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जवरीमल गनेशमल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां जूटका व्यापार होता है। [illegible] आपकी स्थायी सम्पत्ति भी बनी हुई है।

मेसर्स गणपतराय रुकमानंद बागला

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ रुकमानन्दजी बागला और सेठ [illegible] हैं। आप अगरवाल जातिके सज्जन हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है। यहां आपका मूल निवास स्थान है।

नामसे व्यवसाय करती थी। पर भाइयोंमें बटवारा होजानेसे आप इस समय उपरोक्त नामसे व्यवसाय करते हैं। इस नामसे फर्मको स्थापित हुए करीब १६ वर्ष होगये। आपको बीकानेर दरबारने खानदानी सोना, तथा खास रुक्के बख्शा हैं। आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला बनी हुई है। आपका यहां अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स पन्नालाल सागरमल, ११३ क्रासस्ट्रीट—यहां विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट होता है। नं० १० कैनिंगस्ट्रीटमें आपकी गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स धनराज हनुतमल, ११२ क्रासस्ट्रीट—यहां खुला माल थोक बिकता है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स जेतरुप भगवानदास रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनगोपालजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे धर्मशाला, मन्दिर और कुए आदि बने हुए हैं। संस्कृत पाठशाला तथा अन्नक्षेत्र भी आपकी ओर चल रहा है। यहां हुंडी-चिट्ठीका काम होता है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल सुराना गोत्रके सज्जन हैं। इसफर्म को स्थापित हुए करीब ५० हुए। इसके स्थापक सेठ मन्नालालजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। श्री शोभाचन्दजी आपके भाई थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मन्नालालजी तथा शोभाचन्दजीके पुत्र सेठ तिलोकचन्द जी हैं। आजकल आपही दुकानका संचालन करते हैं। आपके इस समय चारपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बछराजजी तथा हंसराजजी हैं। इनमेंसे प्रथम दो दुकानके काममें सहयोग देते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।:—

कलकत्ता—मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द १५६ हरिसन रोड—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है। यहां आपकी निजी कोठी है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदिबने हैं।

स्व॰सेठ॰सरदारमलजी कोठारी (नं॰ हजारीमल सरदारमल)

सेठ मूलचन्दजी कोठारी (नं॰ हजारीमल सरदारमल)

सेठ मदनचन्दजी कोठारी (नं॰ हजारीमल सरदारमल)

कुं॰ [illegible] कोठारी (नं॰ हजारीमल सरदारमल)

सेठ रिधकरणजी—इस वंशमें आप बड़े प्रतापी हुए हैं। आपका [illegible] मारवाड़ी समाजमें बहुत अग्रगण्य है। आपने ही अखिल भारतीय वर्षीय श्री जैन सभा स्थापित की तथा इसके आप आजीवन सभापति रहे। ट्रवङ्गके आप आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आप कलकत्तेकी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके भी आनरेरी रहे। आपका देहावसान संवत् १९७५ में हुआ।

सेठ रायचन्दजी—आपभी इस फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आपका स्वभाव [illegible] आपकी धार्मिक रुची अधिक है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्तेमें जैन श्वेताम्बर तेरापंथी [illegible] की स्थापना हुई। आप उसकी कार्यकारिणी समितिके सभापति भी रहे।

कुँवर शुभकरणजी - आप शिक्षित युवक हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। [illegible] सुपना पुस्तकालयका संचालन आपही करते हैं। आपने इस पुस्तकालयको और भी [illegible] है। इस पुस्तकालयकी बिल्डिंग बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसका चित्र इस ग्रन्थमें [illegible] गया है। आपका यहांके समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम हरीसिंहजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स - तेजपाल विरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Surana—[illegible] बैंकिंग हुंडी, चिट्ठी तथा विलायती कपड़े का इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मपर [illegible] जापान, जर्मनी आदि देशोंसे छाताका सामान, छड़ियें तथा फेन्सी [illegible] आता है।

कलकत्ता मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट यहां छाताकी बिक्री होती है। [illegible] नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छाताका कारखाना है। यह कारखाना बहुत [illegible] यहां मौसिममें करीब ३०० दर्जन छाते रोजाना तैयार होते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द सोहनलाल नं० २ रघुनन्दनलेन—इस स्थानपर आपका एक और [illegible] कारखाना है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द १२८ [illegible] स्ट्रीट—यहां कपड़े का [illegible] व्यापार होता है। खासकर नैनसुखकी बिक्री बहुत होती है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस समय इस फर्मके संचालक सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ [illegible] सेठ [illegible] हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। आपका निवास स्थान [illegible] आपको फर्मको स्थापित हुए बहुत समय हो गया। पहले यह [illegible]

सेठ रिधकरणजी—इस वंशमें आप बड़े प्रतापी हुए हैं। आपका [illegible] मारवाड़ी समाजमें बहुत अग्रगण्य है। आपने ही अखिल भारतीय [illegible] सभा स्थापित की तथा इसके आप आजीवन सभापति रहे। [illegible] मजिस्ट्रेट रहे। आप कलकत्तेकी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके भी [illegible] रहे। आपका देहावसान संवत् १९७१ में हुआ।

सेठ रायचन्दजी—आपभी इस फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आपका स्वभाव [illegible] आपकी धार्मिक रुची अधिक है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्तेमें जैन श्वेताम्बर तेरापंथी [illegible] की स्थापना हुई। आप उसकी कार्यकारिणी समितिके सभापति भी रहे।

कुँवर शुभकरणजी—आप शिक्षित युवक हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। [illegible] सुराना पुस्तकालयका संचालन आपही करते हैं। आपने इस पुस्तकालयको और भी [illegible] है। इस पुस्तकालयकी बिल्डिंग बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसका चित्र इस ग्रन्थमें [illegible] गया है। आपका यहांके समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम हरीसिंहजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Surana—[illegible] बेंकिंग हुंडी, चिट्ठी तथा विलायती कपड़े का इम्पोर्ट होता है। इसी [illegible] जापान, जर्मनी आदि देशोंसे छाताका सामान, छड़ियें तथा फेन्सी [illegible] आता है।

कलकत्ता मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट यहां छाताकी बिक्री होती है। [illegible] नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छाताका कारखाना है। यह कारखाना बहुत [illegible] यहां मौसिममें करीब ३०० दर्जन छाते रोजाना तैयार होते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द सोहनलाल नं० २ [illegible]—इस स्थानपर आपका [illegible] कारखाना है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द १२८ [illegible] स्ट्रीट—यहां [illegible] खासकर नैनसुखकी बिक्री बहुत होती है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस समय इस फर्मके संचालक सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ [illegible] सेठ [illegible] हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। आपका निवास स्थान [illegible] इस फर्मको स्थापित हुए बहुत समय हो गया। [illegible]

[illegible]—[illegible] नं० [illegible]—यहां [illegible] हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
चूरू—यहां आपकी [illegible] इमारतें बनी हुई हैं।

—•—

मेसर्स हजारीमल सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ [illegible]चन्दजी हैं। आप ओसवाल कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी थे। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी स्थापना हुई। आपका व्यापार कपड़ेका और गल्लेका था। आपके तीन पुत्र हुए सेठ गुरुमुखरायजी, सेठ सागरमलजी एवं सेठ [illegible]जी। इस समय आप तीनोंकी फर्में अलग २ चल रही हैं। उपरोक्त फर्म सेठ सागरमलजीके वंशजोंकी है। आपकी ओरसे यहां एक औषधालय स्थापित है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल सागरमल, ६ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां हुंडी चिट्ठी, सराफी, चांदी सोना और [illegible]का व्यापार होता है। T. A. Jineshwar

चूरू—यहां आपकी कई पक्की २ इमारतें बनी हुई हैं।

मेसर्स हजारीमल गुरुमुखराय

यह फर्म भी उपरोक्त वर्णित फर्मसे सम्बन्ध रखती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ गुरुमुखरायजीके पुत्र [illegible]रामजी हैं। आपका धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष ध्यान रहता है। आपके पांच पुत्र हैं। सब सज्जन हैं। आपके यहां जमींदारीका काम होता है। बैंकिंग और हुंडी-चिट्ठीका काम भी यह फर्म करती है।

कपड़ेके व्यापारी

खेतसीदास लूनकरन
गणेशदास जुगलकिशोर
दामोदर दुर्गादास
भगवान पन्नालाल
धनलाल गंगाराम
बालचन्द भानीराम
भानीराम घासीराम
मगराज जोखीराम
शिवनारायण सूरजमल
हनुतराम नौरंगराय

गल्ले तथा किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम कुन्दनलाल
दामोदरदास दुर्गादास

चांदी-सोनाके व्यापारी

गोविन्दराम गंगाधर
गोविन्दराम कुंजलाल
शिवदत्तराय लक्ष्मीचन्द

सेठ शिवकरणजी—इस वंशमें आप बड़े प्रतापी हुए हैं। आपका नाम कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें बहुत अग्रगण्य है। आपने ही अखिल भारतीय वर्षिय श्री जैन तेरापंथी सभा स्थापित की तथा इसके आप आजीवन सभापति रहे। हवड़ाके आप आजीवन ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आप कलकत्तेकी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके भी आजीवन सभापति रहे। आपका देहावसान संवत् १६७५ में हुआ।

सेठ रायचन्दजी—आपभी इस फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आपका स्वभाव मिलनसार है। आपकी धार्मिक रुची अधिक है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्तेमें जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय की स्थापना हुई। आप उसकी कार्यकारिणी समितिके सभापति भी रहे।

कुँवर शुभकरणजी - आप शिक्षित युवक हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। आजकल सुराना पुस्तकालयका संचालन आपही करते हैं। आपने इस पुस्तकालयकी और भी उन्नति की है। इस पुस्तकालयकी बिल्डिंग बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसका चित्र इस ग्रन्थमें दिया गया है। आपका यहांके समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम भंवर हरीसिंहजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स - तेजपाल विरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Surana—इस फर्मपर बैंकिंग हुंडी, चिट्ठी तथा विलायती कपड़े का इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मपर इंगलैण्ड, जापान, जर्मनी आदि देशोंसे छाताका सामान, छड़ियें तथा फेन्सी ऊनी माल भी आता है।

मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट यहां छाताकी बिक्री होती है। नं० नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छाताका कारखाना है। यह कारखाना बहुत बड़ा है। यहां मौसिममें करीब ३०० दर्जन छाते रोजाना तैयार होते हैं।

–, सोहनलाल नं० २ रघुनन्दनलेन—इस स्थानपर आपका एक और छातेका

।

विरदीचन्द १२८ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ेका खुदरा व्यापार होता है। की बिक्री बहुत होती है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस फर्मके संचालन सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ धनराजजी और हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। आपका निवास स्थान यहांका है। स्थापित हुए बहुत समय हो गया। पहले यह फर्म उदयचन्द पन्नालालके

बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवं व्यापार कुशल थे। आपहीकी वजहसे इस फर्मकी तरक्की हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी हुए। आपने भी अपने व्यवसायको उन्नतिपर पहुंचाया। वर्तमानमें आपके दो पुत्र इस फर्मका सञ्चालन कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स गुलाबचन्द चुन्नीलाल ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट T.A.Mahajan—इस फर्मपर बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

सिराजगंज—टीकमचन्द दानसिंह—इस स्थानपर आपकी जमींदारीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त भडुंगामारी (रंगपुर), मीरगंज (रंगपुर), सोना टोला, (बोगड़ा), जवाहर वाड़ी (रंगपुर) आदि स्थानोंपर भी आपकी शाखाएं हैं। सरदार शहरमें भी आपकी स्थाई सम्पत्ति बनी हुई है।

मेसर्स पूसराज रुघलाल आंचलिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पूसराजजीके पुत्र श्री सेठ रुघलालजी, सेठ सुजानमलजी, सेठ हजारीमलजी और सेठ मिलापचन्दजी हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। विशेष तरक्की सेठ पूसराजजीके हाथोंसे हुई। वर्तमानमें आपके चारों पुत्र ही दुकानका सञ्चालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स चोथमल गुलाबचन्द, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े का तथा हुंडी चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है। इस फर्मपर डायरेक्ट माल विलायतसे आता है।

सरदार शहर—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स बींजराज तनसुखदास दूगड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बींजराजजीके पुत्र सेठ तनसुखरायजी और सेठ पूसराजजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन आपके पिता सेठ बींजराजजीने किया। सेठ बींजराजजी बड़े होशियार और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्म की तरक्की हुई। बीकानेर दरबारने आपको खास रुक्का तथा छड़ी इनायतकी हैं। आपका देहावसान हो चुका है। कहते हैं आपके मोसरमें सारे सरदार शहर और आसपासके गांववाले निमंत्रित किये गये थे। सेठ पूसराजजी बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके ६सालसे मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज तनसुखदास, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ा तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। सरदार शहरमें आपकी अच्छी इमारतें बनी हुई हैं।

सेठ सागरमलजी वेद (पन्नालाल सागरमल) चूरू

श्री धनराजजी वेद (पन्नालाल सागरमल) चूरू

सेठ [illegible]रामजी झंवर (हणुतराम नागचन्द) डूंगरगढ़

सेठ आत्मारामजी झंवर (हणुतराम नागचन्द) डूं

मेसर्स हजारीमल सरदारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास यहींका है। आप ओसवाल कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी हैं। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे लाखों रुपैया पैदा किया आपके तीन पुत्र हुए। जिनकी अलग २ फर्मे चल रही हैं। वर्तमान फर्म सेठ सरदारमलजीके वंशजोंकी है। सेठ सरदारमलजी भी बड़े नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपने स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनवाई। वर्तमानमें आपके २ पुत्र हैं। श्रीयुत सेठ मूलचन्दजी तथा श्री० सेठ मदन चन्दजी। आप दोनों ही सज्जन व्यक्ति हैं। आपने अपने पिताजीके स्मारक स्वरूप यहां एक सरदार विद्यालय स्थापित कर रखा है। बीकानेर दरबारसे आपको छड़ी, चपरास व साथ हक्के बख्शे हुए हैं। यहां आपकी फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ मूलचन्दजीके पुत्र चम्पालालजी हैं। सेठ मदन चंदजीके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः धनपतसिंहजी, गुनचन्दलालजी, और भंवरलालजी हैं। इनमेंसे चम्पालालजी, धनपतसिंहजी तथा गुनचन्दलालजी दुकानके काममें भागलेते हैं। आप सब सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

कलकत्ता---मेसर्स हजारीमल सरदारमल, १३ नारमल लोहिया लेन, T. A. Hasir--यहां बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है। यहां थोक कपड़ा गांठकी गांठ बिकता है। गल्लेकी आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता---मेसर्स चम्पालाल कोठारी, १३ नारमल लोहिया लेन--यहां जूटका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा डायरेक्ट जूट विलायत एक्सपोर्ट होता है।

मेमनसिंह---चम्पालाल कोठारी, जूट आफिस, तारका पता (Kothari) यहां जूटकी खरीदी एवम् गल्लेकी बिक्रीका काम होता है।

बेगुनबाड़ी (मेमनसिंह)-- चम्पालाल कोठारी, तारका पता Kothari--यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

बोगरा (बंगाल)---चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदी काम होता है।

सुल्तानपोकर (बोगड़ा)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

बिलासी पाड़ा (आसाम)--चम्पालाल कोठारी--यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

कसबा (पूर्णिया)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

सिरसा (पंजाब) गुनचन्दलाल कोठारी---यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका काम होता है।

श्रीगंगानगर (बीकानेर)--गुनचन्दलाल कोठारी--यहां भी गल्लेकी खरीदी-बिक्री और आढ़तका काम होता है।

कोटा, बून्दी और झालरापाटन

KOTAH BUNDI

&

JHALRAPATAN

कोटा, बून्दी और झालरापाटन

KOTAH BUNDI

&

JHALRAPATAN

०सेठ मालचन्दजी कोठारी (हजारीमल सागरमल)

श्री०सेठ फतेचन्दजी कोठारी (हजारीमल सागर

कमरा (श्रीयुत मालचन्दजी) चूरू

कोटा

-:0:-

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवेके ब्राडगेज सेक्शनमें रतलाम और मथुराके बीच कोटा जंक्शनका सुन्दर और रमणीक स्टेशन बना हुआ है। इस स्टेशनसे पांच मील दूरीपर कोटा शहर बसा हुआ है। यहांके वर्तमान महाराजा श्रीमान उम्मेदसिंहजी सुप्रसिद्ध हाड़ा वंशके वंशज हैं। जिस प्रकार हाड़ा वंशका प्राचीन इतिहास उज्वल और गौरवपूर्ण है, उसीप्रकार महाराज उम्मेदसिंहजीका वर्तमान जीवन भी अत्यन्त उज्वल और गौरवपूर्ण है। आप उन चुने हुए देशी राजाओंमें हैं, जिन्होंने अपनी प्रजाके लिये, अपने किसानोंके लिए, राज्यमें सब प्रकार की सुविधाएं कर रक्खी हैं। तथा जिन्होंने समाजसुधारके पवित्र क्षेत्रमें बहुत अग्रगण्य और उत्साह पूर्वक भाग लिया है। जिन्होंने जनताकी शिक्षाके लिए भी सब प्रकारके द्वार खोल रक्खे हैं। जो प्रजाकी गाढ़ी कमाईके पैसेको विलासकी नदीमें न बहाकर उसका सदुपयोग कर रहे हैं और जिन्होंने बेगारके समान भयङ्कर प्रथाको अपने राज्यमें बन्द कर दिया है। इन सब दृष्टियोंसे महाराजा कोटाने जो व्यवहारिक कार्य्य कर दिखलाये हैं, वे प्रत्येक देशी राज्यके लिए अनुकरणीय है।

किसानोंकी सुविधाके लिए कोटा राज्यकी ओरसे कई स्थानोंपर कोआपरेटिङ्ग बैंक खुले हुए हैं, जहांसे किसानोंको उत्तम और पुष्ट बीज सप्लाय किया जाता है तथा कम व्याजपर रुपया कर्ज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस राज्यने कृषिके लिए आबपाशीका भी बहुत अच्छा प्रबंध कर रक्खा है और भी सब प्रकारके सुभीते कोटा-स्टेटके किसानोंको प्राप्त हैं। हाड़ौतीका प्रान्त वैसेही बहुत उपजाऊ प्रान्त है। उसपर कोटा नरेशके समान उदार नरेशोंकी छत्रछाया होनेके कारण तो वह बिलकुल हरा भरा, और सुजला, सुफला होरहा है।

व्यापारिक स्थिति

जिन दिनों अफीमका मार्केट खुला हुआ था उन दिनों कोटा भी अफीमके व्यापारिक केन्द्रोंमें एक प्रधान था। अफीमका यहांपर बहुत अच्छा व्यापार होता था, यद्यपि अब भी इस व्यापारके बचे खुचे खण्डहर यहांपर नजर आते हैं, मगर अब उसकी प्रधानता नहीं है। इस समय कोटेमें

हाथोंसे बहुतों पैसा पैदा किया। आपका धर्मपर बड़ा स्नेह है। आप जैन-श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। कलकत्तेमें नं० ३६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपकी गद्दी है। आपके भाई कपड़ेका व्यवसाय करते हैं। सरदार शहरमें आपकी इमारतें अच्छी बनी हुई हैं।

मेसर्स जेठमल श्रीचन्द गधेया

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके ही निवासी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए ८६ वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ जेठमल जीने की। आपके पश्चात् इस फर्मके कामको आपके पुत्र श्री० सेठ श्रीचन्दजीने सञ्चालित किया। आपने अपने हाथोंसे कपड़ेके व्यवसायमें लाखों रुपया पैदा किया। इस समय सेठ श्रीचन्दजी अपना जीवन धार्मिकतामें व्यतीत करते हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं। इस समय आपके दो पुत्र हैं। पहले श्रीगणेशदासजी और दूसरे श्रीविरदीचन्दजी। गणेशदास जीका जन्म संवत् १९३६ में और विरदीचन्द जीका जन्म संवत् १९३०में हुआ। आप दोनों ही सज्जन पुरुष हैं।

श्री गणेशदास जी स्थानीय म्युनिसिपेलिटीके मेम्बर हैं। आप बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह-कौंसिलके मेम्बर भी रह चुके हैं। कलकत्तेमें बंगाल गवर्नमेंटकी ओरसे आपको दरबारमें आसन प्राप्त है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द गणेशदास, मनोहरदासका कटरा ११३ क्रासस्ट्रीट यहां बैंकिंग तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास उदयचन्द, ९८ क्रासस्ट्रीट-इस फर्मपर कपड़ेका तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

सरदार शहर—मेसर्स जेठमल श्रीचन्द—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। यहां आपकी स्थाई सम्पत्ति भी बहुत है।

मेसर्स जीवनदास चुन्नीलाल दूगड़

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको स्थापित हुए ८० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ टीकमचंद जीके पुत्र सेठ मूलचन्द जी सेठ जीवनदास जी, सेठ शिवजी रामजी तथा सेठ दानसिंह जीने मिलकर स्थापित की सेठ दानसिंहजी

कोटा

-:0:-

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवेके ब्राडगेज सेक्शनमें रतलाम और मथुराके बीच कोटा जंक्शनका सुन्दर और रमणीक स्टेशन बना हुआ है। इस स्टेशनसे पांच मील दूरीपर कोटा शहर बसा हुआ है। यहांके वर्तमान महाराजा श्रीमान् उम्मेदसिंहजी सुप्रसिद्ध हाड़ा वंशके वंशज हैं। जिस प्रकार हाड़ा वंशका प्राचीन इतिहास उज्वल और गौरवपूर्ण है, उसीप्रकार महाराज उम्मेदसिंहजीका वर्तमान जीवन भी अत्यन्त उज्वल और गौरवपूर्ण है। आप उन चुने हुए देशी राजाओंमें हैं, जिन्होंने अपनी प्रजाके लिये, अपने किसानोंके लिए, राज्यमें सब प्रकार की सुविधाएं कर रक्खी हैं। तथा जिन्होंने समाजसुधारके पवित्र क्षेत्रमें बहुत अग्रगण्य और उत्साह पूर्वक भाग लिया है। जिन्होंने जनताकी शिक्षाके लिए भी सब प्रकारके द्वार खोल रक्खे हैं। जो प्रजाकी गाढ़ी कमाईके पैसेको विलासकी नदीमें न बहाकर उसका सदुपयोग कर रहे हैं और जिन्होंने बेगारके समान भयङ्कर प्रथाको अपने राज्यमें बन्द कर दिया है। इन सब दृष्टियोंसे महाराजा कोटाने जो व्यवहारिक कार्य्य कर दिखलाये हैं, वे प्रत्येक देशी राज्यके लिए अनुकरणीय है।

किसानोंकी सुविधाके लिए कोटा राज्यकी ओरसे कई स्थानोंपर कोआपरेटिङ्ग बैंक खुले हुए हैं, जहांसे किसानोंको उत्तम और पुष्ट बीज सप्लाय किया जाता है तथा कम व्याजपर रुपया कर्ज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस राज्यने कृषिके लिए आबपाशीका भी बहुत अच्छा प्रबंध कर रक्खा है और भी सब प्रकारके सुभीते कोटा-स्टेटके किसानोंको प्राप्त हैं। हाड़ौतीका प्रान्त वैसेही बहुत उपजाऊ प्रान्त है। उसपर कोटा नरेशके समान उदार नरेशोंकी छत्रछाया होनेके कारण तो वह बिल्कुल हरा भरा, और सुजलां, सुफलां होरहा है।

व्यापारिक स्थिति

जिन दिनों अफीमका मार्केट खुला हुआ था उन दिनों कोटा भी अफीमके व्यापारिक केन्द्रोंमें एक प्रधान था। अफीमका यहांपर बहुत अच्छा व्यापार होता था, यद्यपि अब भी इस व्यापारके बचे खुचे खण्डहर यहांपर नजर आते हैं, मगर अब उसकी प्रधानता नहीं है। इस समय कोटेमें

सामाजिक जीवन

कोटेका सामाजिक जीवन दूसरे देशी राज्योंकी अपेक्षा आगे बढ़ा हुआ है। इसका कारण यह है कि कोटा राज्य स्वयं इन बातोंमें दिलचस्पी रखता है। इस राज्यमें बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि सब प्रकारकी कुरीतियोंको दूर करनेवाले बहुत सुन्दर और बढ़िया कानून बने हुए हैं, इस क्षेत्रमें राजपूताने और सेंट्रल इण्डियाकी तमाम रियासतोंमें शायद यही राज्य पहला है। जिसने इतना कदम बढ़ा लिया है।

यहां एक वैश्य सुधारक मण्डल भी स्थित है। यह मण्डल भी समाज सुधारके कार्य्योंमें विशेष रूपसे भाग लेता है। इसकी वजहसे कोटामें कई समाज सुधारके कार्य्य हुए हैं। इस मण्डलने केवल कोटेहीमें नहीं प्रत्युत सारे राजपूतानेकी सार्वजनिक संस्थाओंमें अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। इसके मुख्य कार्य्यकर्ता श्रीयुत मोतीलालजी पहाड़िया हैं। आप बड़े उत्साही और व्यवहारिक कार्य्यकर्ता हैं।

शिक्षाके सम्बन्धमें भी यहां राज्यकी ओरसे अच्छा प्रबन्ध है यहांपर एक बहुत बड़ी कन्याओंकी पाठशाला बनी हुई है। इसके अतिरिक्त हर्बर्ट कालेज, नार्मलस्कूल, नोबेल्सस्कूल इत्यादि और भी बहुतसी शिक्षा-संस्थाएं चल रही हैं।

मण्डियां

कोटा स्टेटमें बारां, रामगंज, मनोहरथाना और मण्डाना ये मण्डियां बहुत अच्छी हैं। बारां जी० आई० पी० के कोटा बीना सेक्शनके बीचमें बसी हुई है। इस मण्डीमें गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांपर लाखों मन गल्ला आमदरफ्त होता है। गल्लेके अच्छे २ व्यापारी यहांपर निवास करते हैं। दूसरी रामगञ्ज मंडी बी० बी० सी० आई०के नागदा सेक्शनके सुकेतरोड नामक स्टेशनपर बसी हुई हैं। यहांपर गल्ले और रुईका अच्छा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहांपर पत्थरकी खदानें होनेसे पत्थरका व्यवसाय भी यहां खूब होता है। यहांसे पत्थर निकास भी बहुत होता है। इसके अतिरिक्त, चेचट, मण्डाना, पचवाड़ मनोहरथाना आदि स्थानोंपर भी गल्लेका तथा कपास और अलसीका बहुत व्यापार होता है *।

---

* इन सब मण्डियोंके व्यापारियोंका परिचय हमें प्राप्त न हो सका इसका हमें अत्यन्त खेद है हो सका तो अगले संस्करणमें सब सम्मिलित कर दिया जायगा।

मेसर्स बींजराज भैरुंदान

इस फर्मके मालिक सेठ भैरुंदानजीके पुत्र सेठ भानुरामजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। सेठ भैरुंदानजी सेठ बींजराजजीके तीन पुत्रोंमेंसे बड़े पुत्र थे। दो छोटे पुत्रोंकी फर्मका परिचय पिछे दिया जा चुका है। सेठ भानुरामजी बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर रामलालजी हैं। आप शिक्षित और विद्या-प्रेमी नवयुवक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज भैरुंदान मनोहरदास कटला ११३ कास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े का थोक तथा फुटकर व्यापार होता है। आपके यहां डायरेक्ट विलायतसे माल आता है।

बैंकर्स

डेढ़राज गौरीदत्त
मक्खनराम रामलाल
शिवनारायण डूंगरमल
हरद्वारीमल डेढ़राज

कपकड़ेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण
जेठमल पूनराज
तनसुखदास कालूराम
नेमचन्द भंवरीलाल

गल्लेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण
गोविन्दराम रावतमल

चांदी-सोनेके व्यवसायी

मेघराज रतनलाल

ऊनके व्यापारी

कासम दीना बोपारी

श्री डूंगरगढ़

मेसर्स हनुतराम ताराचन्द सदाराम झंवर

इस फर्मका हेड आफिस महिमागंज (रंगपुर) में है। इसको स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ आशारामजी झंवर हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ ताराचन्दजीने की। ताराचन्दजीके दो पुत्र हैं, पहले सेठ आशारामजी और दूसरे सेठ रुपचन्दजी हैं। आप दोनोंही सज्जन व्यक्ति हैं। सन् १९२५में सेठ आशारामजीको रायसाहबकी पदवी प्राप्त हुई है। आपके चचा श्री० सेठ सदारामजी अभी विद्यमान हैं।

इस खानदानकी ओरसे कई कुएं, धर्मशाला, तालाब, मन्दिर आदि, भिन्न २ स्थानोंपर बने हुए हैं। सार्वजनिक कार्योंमें भी आप उदारतापूर्वक दान देते हैं। माहेश्वरी पंचायतमें यह खानदान बहुत उत्साहसे भाग लेता है। इस खानदानकी ओरसे यहां एक स्कूल और गौरक्षा तथा महिमागंजमें एक मिडिल स्कूल चल रहा है।

आपका हेड आफिस महिमा गंज में है इसके अतिरिक्त गुनारपाड़ा, नलडांगा, [illegible] और [illegible] नगरी (बंगाल) में शाखाएं हैं। जिनपर, जूट, गल्ला और बैंकिंग व्यापार होता है।

सेठ हमीरमलजीके समयमें इस फर्मकी कीर्ति और व्यापारमें बहुत वृद्धि हुई। सम्वत १९२० में आपके पुत्र श्री कुंवर राजमलजीका जन्म हुआ। कुंवर राजमलजीके सम्वत १९५४ में ३४ वर्षकी अवस्थामें देहावसान होजानेसे सेठ दानमलजीके चित्तको भारी धक्का पहुंचा। कुंवर राजमलजीके देहावसानके समय १ पुत्र और ४ पुत्रियां मौजूद थीं।

वर्तमानमें इस प्रतापी फर्मके मालिक श्री राजमलजीके पुत्र दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी हैं। आपके काका साहब, रतलामके प्रसिद्ध सेठ भीचांदमलजी वापनाके कोई सन्तान न होनेसे उन्होंने अपनी सारी सम्पत्तिका मालिक आपको बना दिया।

सेठ केशरीसिंहजीको गवर्नमेन्टने सन १९११ई० में रायसाहबकी सन १९१९ ई०में "राय-बहादुर"की और सन १९२५ई०में दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आपको, जैसलमेर, कोटा, और बून्दीके दरबारोंने पुश्त दर पुश्तके लिये पैरोंमें सोना बख्शा है तथा जोधपुर, बूंदी, कोटा और रतलामके दरबारोंसे आपको ताजिम भी प्राप्त है। हालहीमें टोंककी बेगम साहिबाने सेठ-केशरीसिंहजीके घरमें स्त्रियोंको पैरमें जवाहरात और जोधपुर महारानी साहिबाने ताजीम बख्शी है।

दीवानबहादुर सेठ केशरी सिंहजीका देशी राज्योंमें बहुत सम्मान है। आपके यहां होने वाले शुभ कार्योंमें समय समयपर महाराजा उदयपुर, महाराज जोधपुर, महारावजीकोटा, महाराजा रतलाम, नवाब साहिब टोंक नवाब साहिब जावरा, रीवां दरबार आदि नरेशोंने पधारकर आपकी शोभा बढ़ाई थी अभी ४ वर्ष पूर्व राजपूतानेके एजंट सर० आर० ई० हालेंड के० सी० एस० आई आपके यहां आपके भानजेके विवाहके समय पधारे थे एवं २ घन्टे ठहरकर मजलिसमें सम्मिलित होकर भोजन किया था।

आपकी फर्म राजपूताने और सेंट्रलइन्डियामें प्रसिद्ध बेंकर और गव्हर्नमेन्ट ट्रेझरर है। देशी रियासतमें रहते हुए भी गव्हर्नमेन्टने खास तौरपर इस फर्मको ब्रिटिश प्रजा मानी है। आप देशी रियासतोंकी कोर्टोंमें जानेसे मुस्तसना हैं। हरेक मामलेमें मुनीमके नामसे केवल कमिशन भेज दीजाती है। कई रियासतोंमें आपके बही खाते भी मुस्तसना हैं। यदि किसी आवश्यकता विशेषपर आपके बहीखाते देखना पड़े तो जजको आपकी फर्मपर आना पड़ता है उसके लिये उन्हें किसी प्रकारकी फीस नहीं दीजाती। इसफर्मके तीन चार मुनीमोंको टोंक स्टेटने नव मनुष्योंके पैरोंमें सोना बख्शा है।

इस कुटुम्बकी ओरसे स्थान २ पर करीब १२ मन्दिर बने हुए हैं पालीताणामें १०० वर्षोंसे आपका एक अन्नक्षेत्र चलरहा है। आपने कई जैन मन्दिरों और धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाया है। रतलाममें आपकी एक जिनदत्त सूरिजैन पाठशाला चल रही है अभी हालहीमें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके फन्डमें एक जैन मन्दिर और जैन होस्टल बनानेके लिये आपने नकद-वीसहजारको ५१०००) दिये हैं।

(१५) न्यारवा—(नीचर महत्पुर) – चांदमल केसरीसिंह—यहां सुपरिन्टेन्डेसीके खजाञ्ची हैं
(१६) टोंक—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह—यहां पर टोंक स्टेटका खजाना है ।
(१७) छबड़ा—(टोंक)—पूनमचन्द दीपचन्द—यहां निजामतका खजाना है तथा मनोतीका काम होता है ।

(१८) सिरोंज (टोंक)—भभूतसिंह पूनमचन्द—यहां निजामतका खजाना है। तथा आसामी लेन देन होता है ।

(१९) पड़ावा (टोंक)—मेसर्स चांदमल केसरीसिंह—यहां निजामतका खजाना है। आपकी यहां एक जीन फेक्टरी है, तथा हुंडी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है ।

(२०) झालरा पाटन—मेसर्स हमीरमल केसरीसिंह—हुण्डी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है ।

(२१) बूंदी—मेसर्स गनेशदास दानमल—यहां रायमल नामक एक जागीरीका गांव है। इसके अतिरिक्त स्टेटसे नकद लेन देन और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है ।
(२२) सांगोद—(कोटा स्टेट) मनोतीका काम होता है।
(२३) बारां (कोटा स्टेट) हमीरमल राजमल—आड़त और मनोतीका काम होता है।
(२४) केसोराय पाटन (बूंदी) गनेशदास दानमल—मनोतीका काम होता है।

राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला

इस फर्मके वर्तमान मालिक रा० ब० सेठ पूनमचन्दजी हैं। आपका मूल निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। परन्तु बहुत समयसे कोटेमें रहनेके कारण आप कोटेवालेके नामसे मशहूर हैं। आप श्री श्रीमाल जैन जातिके सज्जन हैं।

आपके पिता श्री सेठ करमचन्दजी बड़े धार्मिक एवं उदार व्यक्ति थे। आपने ७ संघ निकाले, एवं कोटेमें अष्टान्हिका महोत्सव, अञ्जनशलाका वगैरः कामोंमें करीब २ लाख रुपया व्यय किया। तथा आपने श्री शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका एक भव्य मन्दिर बनवाया उसमें भी करीब ४० हजार खर्च हुआ ।

सेठ पूनमचन्दजी साहबने भी अपने पिताश्रीकी तरह धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में लाखों रुपया दान किया। आप अभी तक करीब ५ लाखसे अधिकका दान कर चुके हैं जिसकी खास खास दो चार बड़ी २ रकमोंका विवरण नीचे दिया जाता है।

१ – पाटनमें श्री स्तम्भन पार्श्वनाथ स्वामीकी धर्मशाला व उसके समारम्भमें ५० हजार रुपया।
२—पालीतानाकी धर्मशाला तथा उसके समारम्भमें करीब ४५ हजार रुपया ।
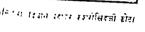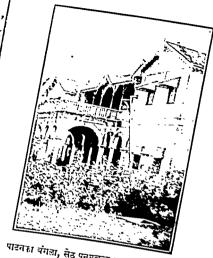
आपने अपने पिताजीकी स्मृतिमें सारे पाटनशहरको भोज दिया था, इसमें करीब एक लाख आदमी सम्मिलित हुए थे। इस अवसरपर आपने धार्मिक कार्योंके लिये भी करीब बीस हजार रुपये दान दिये थे। इस स्मृतिके उपलक्षमें जेठ बदी ११ को पाटनशहरमें अब भी अल्ता पाली जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—हेड आफिस—मेसर्स पानाचन्द उत्तमचन्द—इस फर्मपर बैंकिंग ओपियम अनाज वगैरहका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला, पुरुषोत्तम बिल्डिंग न्यू क्वीन्स रोड। यहां शायर्स, काटन, और बैंकिंगका वर्क होता है।

बैंकर्स

कोटा स्टेट कोआपरेटिव्ह बैंक
मेसर्स गनेशदास हमीरमल
" गुहारमल गंभीरमल
" पानाचन्द उत्तमचंद
" मगनमल पत्थराज
" मंगलजी छोटेलाल
" रामरूप रामकिशनदास
" लूनकरण शंकरलाल
" रा० ब० समीरमलजी लोढ़ा ट्रेझरर
" सर्वसुखदास मोतीलाल
" हरलाल गंगाविशन

कपड़े के व्यापारी

गोवर्द्धन भंवरलाल
गोविंदराम भूरामल
चुन्नीलाल मोतीलाल झालनियां
महावीर ट्रेडिंग कम्पनी
मथुरालाल भूरालाल

चांदी सोनेके व्यापारी

गजानन्द नारायण
नंदराम किशोरीदास

गल्लेके व्यापारी

जमनादास दामोदरदास
फतेहराज गजराज
शांतिलाल साकलचन्द
सर्वसुख राजमल

जनरल मर्चेण्ट्स

बोहरा कमरुद्दीन रामपुरा
बिसाती करीमबख्श

किरानेके व्यापारी

कालूराम रामनारायण
जीवनराम पन्नालाल
गफूर अब्दुल्ला
हेवू जी पन्नालाल
लक्ष्मीचंद लक्ष्मणलाल

…िय व्यापारियोंका परिचय

…का व्यापार प्रधान है। उसमें भी खासकर गेहूं और अलसीका व्यापार यहां बहुत होता है। …तीके उपजाऊ प्रान्तका लाखों मन गल्ला यहांके बाजारोंमें आता है और बिकता है। जिन दिनों …टसे गल्लेकी निकासी खुली रहती है उन दिनों यहांसे बहुतसा गल्ला एक्सपोर्ट होता है।

गल्लेके सिवाय यहांपर हाथकी बनी हुई खादीका व्यवसाय भी अच्छा होता है। यहांके आसपासके देहातोंमें कई प्रकारकी बढ़िया नमूनोंकी खादियां तैय्यार होती हैं। ये सब कोटेमें आकर बिकती है और यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होती हैं। यहांकी पगड़ियां, डोरिया मजलिस चोखाने, पेचे आदि मशहूर हैं। पेचे यहांसे एक्सपोर्ट भी होते हैं।

दर्शनीय स्थान

यादगार—यह यहांका सबसे बड़ा बगीचा है। इसकी बनावट बड़ी सुन्दर है। इसमें महाराजाके महल, आदि दर्शनीय हैं। छत्रियां भी बहुत सुन्दर बनी हुई हैं। इसी बागमें टेनिस ग्राउण्ड, फुटबाल ग्राउण्ड आदि बने हैं। कोटा नरेश यहां टेनिस खेलनेके लिए आते हैं।

जल महल—यह कोटा शहरके पासही एक तालावके मध्यमें बना हुआ है। तालाबके किनारेकी छत्रियां बहुत सुन्दर बनी हुई हैं। इन छत्रियोंसे इस महलका दृश्य बहुत सुन्दर मालूम होता है। दर्शनीय वस्तु है।

महाराजाका गढ़—यहां महलको गढ़ कहते हैं। यह महाराजाके निवासका महल है। प्रा… चम्बल नदीके किनारे बना हुआ है। नदीसे इसका दृश्य बहुतही सुन्दर मालूम होता है। कभी २ बरसातमें नदीका पानी इस महलकी खिड़कीके किनारे तक पहुंच जाता है। उस समयका दृश्य अपूर्व होजाता है।

अधर शिला—यह पहाड़ी स्थान है। यहां एक पत्थर ऐसा आगया है मानों अभी गिरनेवाला है। पर नहीं गिरता, कई बरसोंसे वेसाही अधर रूपमें पड़ा है। यह स्थान भी चम्बलके किनारे है। यहांसे चम्बलका टेढ़ा मेढ़ापन बहुत सुन्दर मालूम होता है।

गेपरनाथ—यह भी एक पहाड़ी स्थान है। यह कोटासे करीब पांच छः मीलकी दूरीपर बना हुआ है। यहांका सीन अपूर्व है। यहां प्रकृतिकी कृपासे एक चौरस कुण्ड बना हुआ है। इसमें सर्वत्र २ हाथ पानी रहता है। इसमें तेरनेवाली रंगबिरंगी मछलियां बड़ी भली मालूम होती हैं। वाटरफाल का सीन मनको मोह लेता है। स्थान दर्शनीय है।

इनके अतिरिक्त गोपालमन्दिर, मथुराधीशका मन्दिर, गर्ल्स स्कूल, कर्जन मेमोरियल आदि स्थान भी देखनेयोग्य हैं। मथुराधीशका मन्दिर यहां तीर्थ समझा जाता है। बाह… यात्रियोंकी भी यहां काफी भीड़ रहती है।

सेठ बालचन्दजी बड़े धर्मात्मा और सचाईके साथ रोजगार करने वाले व्यक्ति थे। इसीसे उनकी साख दूर २ तक जम गई थी। संवत् १९३९ में अफीमका भाव अधिक गिर जानेसे आपके कारोबारको बहुत धक्का पहुंचा। और कुछ लोगोंने इस नाजुक स्थितिसे नाजायज लाभ उठाना चाहा, लेकिन ऐसे नाजुक अवसर पर इन्दौरके तत्कालीन महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) ने आपकी बहुत सहायता पहुंचाई, जिससे आपकी साख कायम रह गई।

संवत् १९५६ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके देहान्तके पश्चात् आपकी धर्मात्मा धर्मपत्नी श्रीमती पांची बाईने बड़े धीरजके साथ अपना वैधव्य जीवन बिताया। आपने अपने पतिदेवके पश्चात् मुनीम लूणकरनजी की सहायतासे दुकानके कारबारको भली प्रकार चलाया, और बालकोंकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध कर दिया। श्रीमतीजीने एक लाख रुपया लगाकर अपने पतिदेवका औसर किया। संवत् १९८० में आप एक लाख रुपयेका दानकर स्वर्गस्थ हो गईं। इस दानकी व्यवस्थाके लिए विचार किया जा रहा है।

सेठ बालचन्दजीके चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत दीपचन्दजी, श्रीयुत माणिकचंदजी, श्रीयुत लालचन्दजी और श्रीयुत नेमिचन्दजी हैं।

श्री० दीपचन्दजी—आप बड़े धर्मात्मा, सरल प्रकृति और सादगी प्रिय व्यक्ति थे। आपने अपना सारा जीवन अत्यन्त सादगीसे बिताया। साधुसेवाका आपको बेहद शौक था। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत भंवरलालजी है।

श्री० माणिकचन्दजी—श्रीयुत माणिकचन्दजी बड़े विद्या प्रेमी और सामाजिक कार्योंमें उत्साह रखने वाले व्यक्ति हैं। आप खण्डेलवाल जैनजातिमें सबसे पहले विलायत यात्री हैं। विलायतमें आपके लिए भोजन सामग्री यहींसे जाती थी। आपको गवर्नमेन्टसे राय बहादुरका खिताब है। आप ग्वालियर नरेशके ए० डी० सी० हैं और वहांसे आपको ताजी रत्नुद्दौला खिताब प्राप्त है। झालावाड़ नरेशने भी आपको पांवमें सोना, वाणिज्य भूषणका खिताब और ताजीम बख्शी है। आप एजीलिंग क्लब ग्वालियर, वेलिंगडन बम्बई, बाम्बे रेडियो क्लब बम्बई, राजेन्द्र इन्स्टीट्यूट झालावाड़, लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिल ग्वालियर, एकानमिक डेव्हलेप मेंट बोर्ड ग्वालियर, मजलिसे आम ग्वालियर इत्यादि कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। श्री गोपाल विद्यालय मुरैना तथा संस्थापक धर्मशालाके आप ट्रस्टी हैं। लन्दनकी रॉयल एशियाटिक सोसायटीके भी आप मेम्बर हैं।

श्रीयुत लालचन्दजी सेठी—श्रीयुत लालचन्दजी बड़े विद्याव्यसनी और पुस्तक प्रेमी सज्जन हैं। आप कई सभा सोसायटियोंके मेम्बर हैं। जबसे आप स्थानीय म्युनिसिपल कमेटीके प्रथम प्रेसिडेन्ट चुने गये हैं तबसे नगरमें बहुत सुधार हुए हैं। आपको भी झालावाड़ सरकारसे ताजीम, वाणिज्य भूषणका खिताब और पांवमें सोना बख्शा हुआ है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुं० विनोद-

इस फर्मकी अजमेर, कोटा, बूंदी जेसलमेर, बम्बई, रतलाम आदि स्थानोंपर कई बिल्डिंगे बनी हुई हैं। जेसलमेरकी आपकी बिल्डिंग बड़ी भव्य है। इस फर्मकी बूंदी और टोंक रियासतमें १० हजार रुपयोंकी जागीर है। जब दि० बा० सेठ केशरीसिंहजी बूंदी जाते हैं तो आपको ३ मीलतक पेशवाई होती है। सेठ साहबके १ पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर सुदसेनजी हैं। इनका जन्म संवत् १९७७ में हुआ।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—मेसर्स गनेशदास हमीरमल (T. A. Bahadur) यह इस फर्मका हेड आफिस है। यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी, अफीम और आढ़तका व्यापार होता है।

(२) जेसलमेर—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह यहां अफीमका काम होता है तथा आपकी कई अच्छी हवेलियां बनी हुई हैं।

(३) रतलाम—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह-हुण्डी, चिट्ठी बैंकिंग तथा आढ़तका काम होता है। यह फर्म रतलाम इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी की मैनेजिंग एजंट है।

(४) बम्बई—मेसर्स गनेशदास सोभागमल, बम्बादेवी-T. A. Babana यहां इस बैंकिंग तथा चीन जापान और जर्मनीसे कपड़े और उनका एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है। यह फर्म बम्बईकी कई जैन संस्थाओंकी ट्रस्ट है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स गनेशदास दीवानबहादुर केशरीसिंह नं १४२ कॉटन स्ट्रीट T. A. Modesty यहां हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

(६) इन्दौर—सेठ चांदमलजीकी कोठी—यहां ओपियम सप्लाईका काम होता है।

(७) उदयपुर—दि० ब० केशरीसिंहजी खजांची—रेसिडेन्सी ट्रेझरर

(८) हैदराबाद (दक्षिण) दि० ब० केशरीसिंहजी खजांची- यहां निजामस्टेटको अफीम सप्लाईका काम और बैंकिंग व्यवहार होता है।

(९) आबू—दीवान बहादुर केशरीसिंहजी खजांची—एजेन्सी ट्रेझरर

(१०) नीमच—पूनमचंद दीपचन्द—यहां गवर्नमेंट तथा देशी राज्योंको अफीम सप्लाई और बैंकिंग काम होता है। बांसवाड़ा और प्रतापगढ़की एजंसीका खजाना भी इस फर्मके ताल्लुक है।

(११) निम्बाहेड़ा—पूनमचन्द दीपचन्द, टोंक स्टेटकी निजामतका खजाना इसके जिम्मे है।

(१२) जावरा—मेसर्स पूनमचन्द दीपचन्द—हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(१३) मन्दसोर—मेसर्स पूनमचंद दीपचंद " "

(१४) नांद्रेल—(ग्वालियर स्टेट) मेसर्स गनेशदास लखमीचन्द—किसानी, लेन देन होता है।

श्री० सेठ नेमीचन्दजी सेठी, झालरापाटन

श्री० सेठ भंवरलालजी सेठी (अपने पुत्रों सहित) झालरापाट

स्व० सेठ करमचन्दजी कोटावाला

रायबहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटावाला

कॉटन, शेयर्स और कमीशन एजन्सीका काम होता है। यहांपर आपकी माणिकभवन नामक एक भव्य कोठी बनी हुई है। इसका फोटो इन्दौर पोर्शनमें दिया गया है।

बम्बई—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द कुम्बादेवी— T. A Binod यहांपर बैंकिंग और कॉटन कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म यहां साठ वर्षोंसे स्थापित है।

उज्जैन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Manik—इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहां आपके तीन बड़े २ नोहरे बने हुए हैं। गवालियर रियासतके मालवा प्रान्तका सदर खजाना भी इस फर्मके जिम्मे है।

अनावद - मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A. Binod—यहांपर काटन कमीशन एजन्सी और बैंकिंगका व्यापार होता है। इस प्रान्तमें आप रुईके सबसे बड़े व्यापारी माने जाते हैं। यहांपर आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है। इसी फर्मके अण्डरमें विमलचन्द कैलाशचन्द नामक एक फर्म और यहांपर है।

खरगोन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Binod—यहांपर बैंकिङ्ग और रुईका व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त निमाड़खेड़ी, आगर, गवालियर, कोटा, भवानीगंज, ऊमरी (निजाम हैदराबाद) मोहणा इत्यादि स्थानोंमें भी आपकी दुकानें तथा काटन फैक्टरियां बनी हुई हैं। कुल मिलाकर आपकी १९ दुकानें और १५ जीन-प्रेस फैक्टरीयां हैं। गवालियरमें माणिक विलासके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी बनी हुई है।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके मालिक रा०ब० सेठ कस्तूरचंदजी कासलीवाल हैं। आपका पूरा परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है।

—०:—

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बारां (कोटा-राज्य)में है। इस फर्मकी स्थापना संवत् १९२५ में सेठ छप्पनजीने की। शुरू २ में आपकी दूकान पर जरदा तमाखूका व्यापार होता था। सेठ छप्पनजी तथा उनके भाई रोड़जीने इसके कारबारको बढ़ाया। सेठ छप्पनजीका देहावसान संवत् १९५५ में और सेठ रोड़जीका संवत् १९५८ में हुआ। इस समय इस दुकानका संचालन

३—१९५६ के भयंकर दुष्काळमें अन्न गृह खोलकर अपंग मनुष्योंकी सहायतामें २५ हजार दिया।

४—१९६२ में पाटनकी श्वेतांबर जैन कान्फरेन्समें स्वागत कारिणी समितिके सभापति थे उसमें आपने करीब २० हजार रू० खर्च किया था।

५—संवत १९६७ में पाटनमें अन्न गृह खोलकर तथा डाक्टर कोठारीको नियत कर अपंग लोगोंको बहुत लाभ पहुंचाया, तथा कई तरहका शुभ दान दिया, उसमें करीब बीस हजार रुपया।

६—बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें श्रीमदनमोहन मालवीयजीको १५००१)
जिसमें श्वेतांबर जैन बोर्डिंग हाऊसके लिये ५०००)
" " लॉजिंग ५०००)
" " स्थाई फंडमें ५००१)

७—हालहीमें कोटेमें आपने धर्मशाला व उपाश्रयका मकान तैयार करवाया जिसमें जैन साधु साधियोंके ठहरनेका अच्छा प्रबन्ध है। उसमें १००००)व्यय हुआ।

इसी प्रकार और भी कई धार्मिक कार्यों में जिन सबका वर्णन देना यहां असम्भव है। आपने मुक्त हस्तसे दान दिया है।

यह तो हुई आपके धार्मिक जीवनकी बात। आपका सार्वजनिकजीवन भी बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

आपको श्री पाटन वीशा श्रीमाली न्यात, श्री पाटन हेमचन्द्राचार्य जैन सभा, पाटनके (श जीमणके समय) तमाम शहर निवासियोंकी ओरसे, आदि कई स्थानोंसे मानपत्र प्राप्त हुए हैं। इ अतिरिक्त कड़ी प्रान्तकी रैयतके सभासदके नातेसे आप बड़ोदेकी पहिली धारा सभामें नियुक्त थे। उस समय पाटनके समस्त महाजनोंकी तरफसे आपको मानपत्र दिया गया था। कड़ी प्रा महाजन सभाके आप प्रेसिडेंट भी थे।

आपकी प्रतिष्ठाका सबसे बड़ा प्रमाण पत्र यह है कि संवत् १९७३ में शामला पार्श्वनाथजी के प्राचीन तीर्थमें जैनियों और स्मार्तोंमें महादेवजीके लिये झगड़ा हुआ था उसमें आप दोनों पार्टि योंकी ओरसे झगड़ा निपटानेके लिये प्रतिनिधि चुने गये थे उस झगड़े को आपने बड़ी चतुराईसे निप टाया इस खुशीके उपलक्षमें बड़ोदेके दीवान मनू भाईने आपको अपने हाथोंसे मानपत्र दिया था।

धार्मिक व सामाजिक जीवनके अतिरिक्त आपका राजघरानोंमें भी सम्मान है। बड़ोदेके महाराज सयाजी राव गायकवाड़ स्वयं आपके यहां पधारे थे। कोटेके महाराजने आपको अपने भायातोंकी बैठकमें खास स्थान प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त राधनपुर, पालनपुर, भावनगर, कच्छ मोरवी, गोंडल, धरमपुर, बीकानेर, झालरापाटन, आदि कई राजाओंके साथ आपका अच्छा सम्बन्ध है।

कॉटन, शेयर्स और कमीशन एजन्सीका काम होता है। यहांपर आपकी माणिकभवन नामक एक भव्य कोठी बनी हुई है। इसका फोटो इन्दौर पोर्शनमें दिया गया है।

बम्बई—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द मुम्बादेवी— T. A Binod यहांपर बैंकिग और कॉटन कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म यहां साठ वर्षोंसे स्थापित है।

उज्जैन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Manik—इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहां आपके तीन बड़े २ नोहरे बने हुए हैं। गवालियर रियासतके मालवा प्रान्तका सदर खजाना भी इस फर्मके जिम्मे है।

खनादद - मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A. Binod—यहांपर काटन कमीशन एजन्सी और बैंकिंगका व्यापार होता है। इस प्रान्तमें आप रुईके सबसे बड़े व्यापारी माने जाते हैं। यहांपर आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है। इसी फर्मके अण्डरमें विमलचन्द कैलाशचन्द नामक एक फर्म और यहांपर है।

खरगोन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Binod—यहांपर बैंकिङ्ग और रुईका व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त निमाड़खेड़ी, आगर, गवालियर, कोटा, भवानीगंज, ऊमरी (निजाम हैदराबाद) मोहना इत्यादि स्थानोंमें भी आपकी दुकानें तथा काटन फेक्टरियां बनी हुई हैं। कुल मिलकर आपकी १९ दुकानें और १५ जीन-प्रेस फैक्टरीयां हैं। गवालियरमें माणिक विलासके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी बनी हुई है।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके मालिक रा०ब० सेठ कस्तूरचंदजी कासलीवाल हैं। आपका पूरा परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है।

—:—

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बारां (कोटा-राज्य)में है। इस फर्मकी स्थापना संवत् १९२५ में सेठ छप्पनजीने की। शुरु २ में आपकी दूकान पर जरदा तमाखूका व्यापार होता था। सेठ छप्पनजी तथा उनके भाई रोड़जीने इसके कारबारको बढ़ाया। सेठ छप्पनजीका देहावसान संवत् १९५५ में और सेठ रोड़जीका संवत् १९५८ में हुआ। इस समय इस दुकानका संचालन

जैन मन्दिर पाटन धर्मशाला

पालीताना धर्मशाला (पूनमचन्द करमचन्द, कोटा)

मेसर्स लक्ष्मणलाल कस्तूरचंद

इस फर्मकी स्थापना करीब २० वर्ष पूर्व सेठ लक्ष्मणलालजीने की थी। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका देहावसान संवत् १९७४ में हो गया। आपके बाद आपके पुत्र कस्तूरचंदजीने इस फर्मके काम को सम्हाला। आप ही इस समय इसके मालिक हैं। आपकी ओरसे पाटनमें लक्ष्मण धर्मशाला नामक एक धर्मशाला बनी हुई है। आपकी दुकानें झालरापाटन, मण्डी रामगंज और मण्डी भवानीगंजमें हैं। इन सब दुकानोंपर हुंडी, चिट्ठी और गल्ले, कपासकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स हमीरमल केशरीसिंह

इस फर्मका हेड आफिस कोटामें है। इसके मालिक दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित कोटा विभागमें दिया गया है।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद
" छप्पनजी रोड़जी
" नाथूराम जोरजी
" विनोदीराम बालचंद
" बिहारीदास हेमराज
" लक्ष्मणलाल कस्तूरचन्द
" हंसराज हमीरमल
" हमीरमल केशरीसिंह

चांदी सोनेकी व्यापारी

मन्नाजी मोतीजी
मीणाजी वरदाजी
सीताराम रामदयाल

कपड़े के व्यापारी

कुन्दनमल मुकुन्दमल
दुलीचंद पन्नालाल
देवीलाल अमरलाल
रामलाल सूरजमल
रंगलाल सादामल

बरतनोंके व्यापारी

पन्नालाल नन्दलाल
बालमुकुन्द मोतीलाल

जनरल मरचेंट्स

अब्दुलजी कादरजी
खानअली अब्दुलजी
फजलअली कादरजी

किरानेके व्यापारी

इब्राहिम लुकमान
चम्पालाल पूनमचन्द
जगदीशराम रामचन्द्र

पब्लिक संस्थाएं

राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा
बालचन्द हास्पिटल
लक्ष्मण गर्ल्स स्कूल

गुलकन्दके व्यापारी

मोतीलाल अगरवाल
रामनारायण मांगीलाल

झालरापाटन

पी० बी० सी० आई० आई० माडगेज सेक्शनके श्रीछत्रपुर स्टेशनसे १९ मीलकी दूरी पर यह शहर स्थित है। इसके वर्तमान महाराजा हिज हाईनेस महाराज राना सर भवानीसिंहजी बहादुर हैं। आप सुप्रसिद्ध झालावंशके वंशज हैं। आप बड़े विद्वान, विद्या-व्यसनी, उन्नत विचारोंके नरेश हैं। आपने अपनी रियासतमें शिक्षा देनेकी बहुत अच्छी व्यवस्था कर रक्खी है। इस रियासतमें ४१ शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएं हैं। जिनमें मुफ्त शिक्षा दी जाती है। झालरापाटनमें एक हाईस्कूल भी है जिसका सम्बन्ध प्रयाग विश्वविद्यालयसे है। स्त्री शिक्षाका भी यहांपर बहुत अच्छा प्रबन्ध है। कहा जाता है कि राजपूतानेमें सबसे अधिक पढ़ी लिखी स्त्रियोंकी औसत यहीं पर है। झालरापाटन शहरमें आपने कुछ संस्थाएं ऐसी खोल रक्खी हैं जहां आप विद्वानोंके साथ धर्म विषयोंका वार्तालाप कर आनन्द अनुभव करते हैं।

इस शहरमें कई तालाब बड़े रमणीक और दर्शनीय बने हुए हैं। ठण्डी भरी नामक स्थान भी यहां पर देखने योग्य है। कार्तिक और वैशाख मासमें यहां पर दो बहुत बड़े मेले लगते हैं। जिनमें हजारों पशु बिकनेके लिए आते हैं।

मिल ओनर्स

मेसर्स विनोदीराम बालचन्द

इस फर्मके मूल संस्थापक श्रीमान् सेठ विनोदीरामजी हैं। आपका खानदान पहले पाली था। संवत् १८८१ में आप सबसे पहले नागौरसे झालरापाटन आये। संवत् १ आपके पुत्र श्रीमान् सेठ बालचन्दजीका जन्म हुआ। और संवत् १९२० में आपने वि बालचन्दके नामसे दुकान स्थापित की। उस समय झालरापाटनमें १०० थी २ दुकानें थ लेनदेन करती थीं। श्री सेठ विनोदीरामजी भी यही काम करते रहे। संवत् १९२१ में आप व्यापारमें पूरा लाभ हुआ और इन्दौर आदि स्थानोंमें इस दुकानकी शाखाएं खोली गईं।

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मका चित्र व परिचय पाटनमें दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ला आदि सब प्रकारकी कमीशनका व्यापार करती है। तथा कमीशनका काम करनेवाले व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स नेमीचन्द भंवरलाल

यह फर्म मालवेके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स विनोदीराम बालचन्दके मालिकोंकी है। इस फर्मका मुकम्मिल परिचय मय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैङ्किग, गल्ला कमीशन एवं आढ़तका व्यवसाय करती है।

मेसर्स रंगलाल वृजमोहन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास लक्ष्मणगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म संवत् १९६६ में सेठ रंगलालजीके द्वारा स्थापित हुई। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्रीरंगलालजी और श्रीवृजमोहनजी करते हैं। सेठ रंगलालजी भवानीगञ्ज मंडी का और वृजमोहनजी आलोट दूकानका कार्य्य संभालन करते हैं। श्रीरंगलालजीके पुत्र चिरंजीलालजी भी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भवानीगंज—यहां रुई, सरसों, चिट्ठी और आढ़तका अच्छा काम होता है तथा बर्मा आइल कम्पनीकी एजंसी है।

आलोट—यहां आपकी एक महालक्ष्मी काटन जीनिंग फैक्टरी है तथा हुंडी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुंवार सूरजबख्श

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठीका आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबख्स

इस फर्मके संचालक खास निवासी सांभरके हैं। यहां यह फर्म सम्वत् १९७८ में स्थापित हुई। इसका हेड आफिस सांभर है। मंडी भवानीगंजमें इस दूकानको सेठ सुगनचन्दजीने स्थापित किया। आपका देहावसान १९८३ में हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीदामोदरदासजी एवं रूपचन्दजी इसके मालिक हैं। आप माहेश्वरी जातिके (मानधना) सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) सांभर—रामप्रताप हरबख्स—इस दूकान पर नमकका थोक और आढ़तका व्यापार होता है।

चन्द्रजी हैं। आपने हाल हीमें मेट्रिककी परीक्षा पास की है। आपको भी झालावाड़ राज्यसे पांवमें सोना और दरीखानेमें बैठक दी हुई है। सेठ लालचन्दजीका "सर भवानीसिंह पुस्तकालय" नामक एक पुस्तकालय है इसमें सब भाषाओंकी करीब दस हजार पुस्तकें हैं।

श्रीयुत नेमीचन्दजी सेठी—श्रीयुत नेमीचन्दजी भी योग्य और सज्जन व्यक्ति हैं। आपको भी झालावाड़ दरबारसे पांवमें सोना बक्षा हुआ है। आपके भी कैलास पुस्तकालय नामक एक निजी पुस्तकालय है।

श्रीयुत भंवरलालजी सेठी—आप श्रीयुत दीपचन्दजी साहबके पुत्र हैं। आप बड़े योग्य, और स्पष्टवक्ता सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनकी शिक्षा बहुत अच्छे ढङ्गसे हो रही है। आपको भी पठन, पाठन और पुस्तकोंसे बहुत प्रेम है। आपके पुस्तकालयमें बहुतसी हिन्दी पुस्तकोंका संग्रह है।

इस फर्मकी ११ दुकानें भारतके भिन्न २ शहरोंमें हैं। हेड ऑफिस झालरापाटन शहरमें है। सब दुकानों पर प्रधान मुनीम वाणिज्य रत्न लूणकरणजी पांडिया हैं। आप संवत् १९४९ से इस दुकान पर मुनीमीका काम करते हैं। सेठ बालचन्दजी अपनी मृत्युके समय सारा कारबार आपहीके जिम्मे कर गये थे, आपने उस कारबारको खूब उन्नति प्रदानकी। आप झालावाड़ केबिनेटके कामर्शियल मेम्बर हैं। आपको भी पांवमें सोनेका कड़ा बख्शा हुआ है।

इस फर्मकी उज्जैनमें बिनोद मिल्स लिमिटेड नामक एक कपड़ेकी मिल बनी हुई है। यह मिल सन् १९१२-१३ में स्थापित हुई और सन् १९१४ में चालू हुई। इस मिलका केपिटल २१ लाख रुपया है। इसमें ७५० लूम्स और २३००० स्पेण्डिल्स हैं। तथा १५०० मनुष्य काम करते हैं। इस मिलमें एक बहुत बड़ा अस्पताल भी खुला हुआ है। इस औषधालयके द्वारा मिल मजदूरों और सर्व साधारणको औषधि दी जाती है। यहांके डाक्टर मिल मजदूरों और मिलके दूसरे कार्य्य कर्त्ताओंके घर रोगियोंको देखनेके लिये बिना फीस जाते हैं।

आपकी तरफसे श्री छत्रपुर स्टेशनके पास पन्द्रह हजारकी लागतसे अच्छी धर्मशाला बनाई गई है। इसके अतिरिक्त राजगृही, आबू, सोनागिरि, सिद्धवरका कूट, पांवापुर इत्यादि तीर्थस्थानोंमें भी आपकी ओरसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

झालरापाटन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द, T. A. Binod—इस फर्म पर पहले अफीम का बहुत बड़ा व्यापार होता था। इस समय इस दुकानपर बैंकिग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इन्दौर—मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द बड़ा सराफा T. A Binod—इस फर्मपर बैंकिंग, और

जौहरी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

चांदी-सोनेके व्यापारी

[illegible] सराफ
[illegible] ,,
[illegible] ,,
[illegible] ,,
[illegible] ,,
[illegible] ,,
[illegible] ,,
[illegible] ,,

किरानेके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द चूड़ीबाजार
चतुर्भुज कालूराम गुदरीडिया
प्रतापचन्द भागचन्द कटला
लछमनदास अमरनाथ चूड़ीबाजार
लछमनदास हनुमानदास कटलाबाजार
[illegible] पोद्दार गुदरडिया
सुखदेव रामकिशन घासमंडी

टोपियोंके व्यापारी

मलक मियां कादरबक्स कटला
अमरचंदान हनुमानदास ,,
गंगाराम शिवनाथ ,,
रामनारायन शंकरलाल ,,

केरोसिन तेल

शिवजीराम देवकिशन
हरलाल रामजीराम

जनरल मरचेंट्स

मलक मियां कादरबक्स कटला
मकुलजी नौरोजी सोजतियागेट
गणेशलाल एण्ड संस ,,
पुरी ब्रदर्स ,,
यूनियन ट्रेडिंग कम्पनी ,,
दी इंडियन स्पोर्ट्स कम्पनी ,,
सोनी ब्रदर्स ,,

पेट्रोल एण्ड मोटरकार डीलस

पुरी ब्रदर्स सोजतिया गेट
सोनी ब्रदर्स

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

गांधी गणेश कटला
गोकुलचन्द पूनमचन्द राती हवेली
चतुर्भुज कालूराम राती हवेली
गांधी जमनादास अचलनाथ मन्दिर
जगन्नाथ रामनाथ कटला
रामनाथ मांगीलाल कटला
रामगोपाल रामराज राती हवेली
गांधी रामबक्श मिरचा बाजार

रंगके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द राती हवेली
चतुर्भुज कालूराम ,,
भजनदास काशीराम खांडाफलसा
माणकलाल रामनाथ घासमंडी
रामजीवन रामदयाल कटला
लछमनदास जयरामदास घासमंडी

तमाखूके व्यापारी

नथमल नारायणदास घासमंडी
मिरदीचन्द राधाकिशन बनातू बाजार

आपके बाद आपके पुत्र सेठ प्रतापमलजीने इसफर्मके कार्यका संचालन किया। सेठ प्रतापमलजीके २ पुत्र थे; सेठ मगनमलजी और सेठ छगनमलजी। सेठ मगनमलजीका देहावसान होचुका है। तथा सेठ छगनमलजीने करीब ३० वर्षकी आयुसे ब्रह्मचर्य्य व्रत धारणकर रक्खा है। आपके २ पुत्र सेठ सोहनलालजी और सेठ नेमीचन्दजी हुए। इनमें सोहनलालजीका देहावसान होचुका है। सेठ नेमीचन्दजी थेर, सेठ मगनमलजीके यहां दत्तक गये हैं। इस समय सेठ नेमीचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री मंगलालजी हैं। सेठ नेमीचंद समझदार सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स शम्भूराम प्रतापमल, ७ बाबूलाल लेन—यहां व्याज, हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर सट्टा कतई नहीं होता।

(२) बोगरा—मेसर्स प्रतापमल मगनीराम-यहां हुण्डी चिट्ठी व्याज तथा जूट खरीदीका काम होता है।

(३) गायबन्दा (रंगपुर) मेसर्स छगनमल नेमचन्द-यहांपर गल्ले और किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स मालमचन्द सूरजमल बोरड़

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें सेठ मालमचन्दजीने करीब संवत् १९६९ में की। वर्तमानमें सेठ मालमचन्दजी तथा सूरजमलजी इस फर्मके मालिक हैं। सेठ मालमचन्दजी लाडनूंमें ही रहते हैं। और आपके पुत्र श्री सूरजमलजी व्यापारके कामका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल, सूरज-निवास, २५१ अपरचितपुररोड T. A. malam surju यहां हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

ग्वालन्दो—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यवसाय होता है।

नलबाड़ी (आसाम) मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

पांचूड़िया (ग्वालन्दो) यहां जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल चान्दमल

इसफर्मके मालिक ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ मालचन्दजी तथा सेठ चांदमलजी हैं। इसफर्मके स्थापक आप दोनों भाई हैं। आपके पिता हीरालालजीका देहा-

सेठ छप्पनजीके पुत्र श्रीयुत गोरीलालजी और श्रीयुत रोड़मीके पुत्र श्रीयुत चांदमलजी करते हैं। आपकी झालरापाटन, भवानीगंज और सुकेतरोड में दुकानें हैं। सब जगह बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और विशेषकर कमीशन एजन्सीका काम होता है।

—:o:—

मेसर्स तनसुख मनसुख

इस फर्मके स्थापन कर्त्ता सेठ तनसुखजी संवत् १६४२ में नागौरसे यहां आये। तथा सन् १९५५ में आपने अपना घरू व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपका देहान्त संवत् १९७२ में हुआ। इस समय इस फर्मके मालिक आपके तीन पुत्र श्रीयुत मनसुखजी, जीतमलजी और मुकुन्दमलजी हैं। आपकी दुकानें झालरापाटन, श्रीछत्रपुर, रामगंज, ऊखली, कोटा जंक्शन इत्यादि स्थानोंपर हैं। इन सब दुकानोंपर गल्ला और रुईका व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। पाटनमें आपका एक ट्रंकों और थालटियोंका कारखाना भी है।

मेसर्स नाथूराम जोरजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत कस्तूरचन्दजी हैं आप सरावगी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हो गये। इसकी विशेष तरक्की स्व० सेठ कल्याणमलजीके हाथोंसे हुई। इस वंशमें आप बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपने झालरापाटनमें बहुत कीर्ति और नाम कमाया। श्रीयुत कस्तूरचंदजी श्रीयुत कल्याणमलजीके यहां गूढ़ा (मारवाड़) से दत्तक लाये गये। इस खानदानकी तरफसे मण्डी रामगंजमें एक मन्दिर बना हुआ है। जिसमें कुल मिलाकर करीब ७०००) व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त झालरापाटनमें भी आपकी ओरसे एक पार्श्वनाथजीका मन्दिर बनाया हुआ है। इसकी लागतमें तथा इसकी बिम्ब प्रतिष्ठामें एक लाखसे ऊपर रुपया खर्च हुआ है। खेराबाद मन्दिरके स्थायी प्रबन्धके लिए इस फर्मने १२ दुकानें तथा ४ गोदाम बनवादिये हैं। इसी प्रकार झालरापाटनके मन्दिरको भी चार मकान प्रदान कर दिये हैं।

श्री सेठ कल्याणमलजी साहिबकी धर्मपत्नीके पैरोंमें बून्दी राज्यने सोना बख्शा है।

इस समय इस फर्मकी झालरापाटन, मण्डी रामगंज, खेराबाद इत्यादि स्थानोंपर दुकानें चल रही हैं। इन सब दुकानोंपर हुण्डी, चिट्ठी, रुई, गल्ला और मनोतीका व्यापार होता है।

भवानीगंज मंडी

यह मंडी बी० बी० सी० आई० के नागदा मथुरा सेक्शनमें भवानी मण्डी नामक स्टेशनसे ठोक लगी हुई बसी है। झालावाड़ महाराज भवानीसिंहजीने संवत् १९६६ में इसे बसाया था। इस मंडीमें किराना गल्ला तथा रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है। रुई, आढ़त, तथा किरानेका व्यापार करनेवाले कई अच्छे २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। दिसावरोंमें इस मंडीका अच्छी साख है। हजारों रुपयोंकी हुंडियाँ यहां आसानीसे ली बेंची जा सकती हैं। यहांकी व्यापारिक वस्तुओंमें रुई, जीरा, गेहूं, चना, कपासिया, तिल, धना, किराना, शक्कर, गुड़, तेल व हार्डवेयर का सामान प्रधान हैं। सब प्रकारके मालका व्यापारियोंके पास अच्छा स्टाक रहता है। इस मंडीमें देशी व्यवसायियोंकी अपेक्षा गुजराती व्यापारियोंकी अधिकता है।

इस मंडीकी खास उन्नतिका कारण यहांकी जलकी विपुलता है। यहांकी आबहवा स्वास्थ्य प्रद है। इतनोंसी छोटी बस्तीमें यहां कई बगीचे हैं। इस मंडीके चारोंओर इन्दौर, सिंधिया, कोटा, बूंदी, टोंक, उदयपुरकी स्टेटें आ गई हैं, इसलिये उनसब जगहोंका माल यहां आता है। इस मंडीमें आनेवाले और जानेवाले मालपर किसी प्रकारका टेक्स नहीं है। इस मंडीमें १ काटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। जिसकी मालिक मेसर्स अनन्तीलाल पोद्दार नामकफर्म है। इस फर्मके कारण मंडीको तरक्कीमें अच्छी मदद मिली है। अहमदाबाद, बम्बईके व्यापारियोंकी रुईकी खरीदी यहां हमेशा रहा करती है।

इस मंडीसे लगी हुई ग्वालियर स्टेटकी भैंसोदा मंडीमें भी एक काटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है

रुईके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स अनंदीलाल पोद्दार

इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। अतएव इस फर्मके व्यापारका पूरा परिचय चित्र सहित बम्बईमें पृष्ठ ६४ में दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अनन्तीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। मंडी भवानीगंजमें आपकी एक काटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है, जो अच्छी सफलताके साथ चल रही है। आपकी ओरसे [illegible] यहां एक अनन्तीलाल पोद्दार विद्यालय स्थापित हो रहा है।

इस फर्मका हेड आफिस डीडवानामें है। यहां आपकी ओरसे डीडवाना इंडस्ट्रियल नामक एक बैंक खुला हुआ है। इस फर्मकी कलकत्ता और डीडवानामें बहुत स्थाई सम्पत्ति है। आपकी कलकत्तेकी बिल्डिंगका लाखों रुपया प्रतिवर्ष किराया आता है।

इस समय सेठ मगनीरामजीके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीनारायणदासजी, श्रीगोविंदलालजी और श्री गोकुलचंदजी हैं। आप सब बड़े शांत स्वभावके सज्जन हैं। श्रीगोकुलचंदजी, सेठ रामकुंवारजीके यहां दत्तक गये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

डीडवाना—मेसर्स शालिगराम शिवकरन—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। इस फर्मका यहां डीडवाना इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांसतल्ला स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और शेयरसंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी केनिल प्रेस नामक जूट प्रेसिंग फक्टरी भी है।

नरवाणा (पटियाला)—इस स्थानपर आपकी एक कॉटन जिनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौरमें है। अत: इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें पृष्ठ ३०में दिया गया है। इन्दौरमें यह फर्म हुंडी, चिट्ठी बैंकिंग, रुई और शेयर्सका अच्छा व्यवसाय करती है। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। इसके मालिकोंका खास निवास डीडवाना है। इसके प्रधान संचालक श्री दाऊलालजी शिक्षित एवं समझदार नवयुवक हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मके मालिक भी डीडवानेके ही निवासी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें ३१में दिया गया है। यह फर्म इन्दौर सराफेमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। मेसर्स शिवजी राम हरनाथ और यह फर्म एक ही कुटुम्बकी है।

—०—

इसके अतिरिक्त यहांकी मेसर्स रामरतन टीकमदास और सेठ रामगोपाल मुंदाल नामक फर्मस् इन्दौरमें कपड़ा चांदी सोना और आढ़तका अच्छा व्यापार करती है। यह दोनों फर्म इन्दौर क्लाथ मार्केटमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। इनका परिचय इन्दौरके पृष्ठ ४२-४३ में चित्रों सहित दिया गया है।

इस फर्मका हेड आफिस डीडवानामें है। यहां आपकी ओरसे डीडवाना इंडस्ट्रियल नामक एक बैंक खुला हुआ है। इस फर्मकी कलकत्ता और डीडवानामें बहुत स्थाई सम्पत्ति है। आपकी [illegible] [illegible]का खर्चा इनका अतिरिक्त किया जाता है।

इस समय सेठ मगनीरामजीके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीनारायणदासजी, श्रीगोविंदलालजी और श्री गोकुलचंदजी हैं। आप सब बड़े शांत स्वभावके सज्जन हैं। श्रीगोकुलचंदजी, सेठ रामकुमारजीके यहां दत्तक गये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

डीडवाना—मेसर्स [illegible] शिवकरन—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। इस फर्मका यहां डीडवाना इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम रामकुमार बांसतल्ला स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और शेयर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी केनिंग प्रेस नामक जूट प्रेसिंग फक्टरी भी है।

नरवाना (पटियाला)—इस स्थानपर आपकी एक कॉटन जिनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मका हेड आफिस इन्दौरमें है। अतः इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें पृष्ठ ३०में दिया गया है। इन्दौरमें यह फर्म हुंडी, चिट्ठी बैंकिंग, रुई और शेयर्सका अच्छा व्यवसाय करती है। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। इसके मालिकोंका खास निवास डीडवाना है। इसके प्रधान संचालक श्री दाऊलालजी शिक्षित एवं समझदार नवयुवक हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मके मालिक भी डीडवानाके ही निवासी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें ३१में दिया गया है। यह फर्म इन्दौर सराफेमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। मेसर्स शिवजी राम हरनाथ और यह फर्म एक ही कुटुम्बकी है।

—०—

इसके अतिरिक्त यहांकी मेसर्स रामरतन टीकमदास और सेठ रामगोपाल मुंडाल नामक फर्मस इन्दौरमें कपड़ा चांदी सोना और आढ़तका अच्छा व्यापार करती है। यह दोनों फर्म इन्दौर क्लाथ मार्केटमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। इनका परिचय इन्दौरके पृष्ठ ४४-४५ में चित्रों सहित दिया गया है।

स्व० सेठ जीवनमलजी बेगाणी लाडनूं

सेठ चंदनमलजी बेगाणी लाडनूं

सेठ हाथीमलजी बेगाणी लाडनूं

स्व० सेठ मोतीलालजी बेगाणी लाडनूं

इस फर्मका हेड ऑफिस डीडवाणामें है। यहां आपकी ओरसे डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है। इस फर्मकी कलकत्ता और डीडवाणामें बहुत स्थाई सम्पत्ति है। कलकत्तेकी बिल्डिंगका लाखों रुपया प्रतिवर्ष किराया आता है।

इस समय सेठ मगनीरामजीके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीनारायणदासजी, श्रीगोविंदरामजी और श्री गोकुलचंदजी हैं। आप सब बड़े शांत स्वभावके सज्जन हैं। श्रीगोकुलचंदजी, सेठ राम-कुंवारजीके यहां दत्तक गये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

डीडवाणा—मेसर्स शालिगराम शिवकरण—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। इस फर्मद्वारा यहां डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांसतल्ला स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और शेयर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी [illegible] प्रेस नामक जूट प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

नरवाणा (पटियाला)—इस स्थानपर आपकी एक कॉटन जिनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौरमें है। अतः इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें पृष्ठ ३०में दिया गया है। इन्दौरमें यह फर्म हुंडी, चिट्ठी बेंकिंग, रुई और शेयर्सका मुख्य व्यवसाय करती है। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। इसके मालिकोंका मूल निवास डीडवाना है। इसके प्रधान संचालक श्री दाऊलालजी शिक्षित एवं समझदार सज्जन हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मके मालिक भी डीडवानेके ही निवासी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें ३१में दिया गया है। यह फर्म इन्दौर सराफेमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। मेसर्स शिवजी राम हरनाथ और यह फर्म एक ही कुटुम्बकी है।

—०—

इसके अतिरिक्त यहांकी मेसर्स रामरतन टीकमदास और सेठ [illegible] [illegible] की फर्मसे इन्दौरमें कपड़ा चांदी सोना और जवाहरातका अच्छा व्यापार करती है। यह फर्म इन्दौर क्लाथ मार्केटमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका परिचय इन्दौरके पृष्ठ [illegible] में चित्रों सहित दिया गया है।

——

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जीवनमलजीके चार पुत्र सेठ चन्दनमलजी, सेठ [illegible] सेठ हाथीमलजी और सेठ सूरजमलजी हैं। सेठ हाथीमलजीके छोटेभाई सेठ मोतीलालजीका देहावसान होगया है। आप चारों व्यक्ति बड़े सज्जन हैं। थोड़े वर्ष पूर्व वर्तमान जोधपुर नरेश श्री उम्मेदसिंहजी जब कलकत्ता पधारे थे उस समय उन्होंने सेठ जीवनमलजीका आतिथ्य स्वीकार किया था और उसके उपलक्षमें महाराजा साहिबाने आपके कुटुम्बकी स्त्रियोंको पैरोंमें सोना बख्शा था।

यह कुटुम्ब ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित मानाजाता है। आपने लाडनूंमें श्री दरबार जीवन मिडिल स्कूलके लिये बिल्डिंग दी है। तथा पूर्ण तौरसे उस स्कूलको सरकारके अधीन कर दिया है।

इसफर्मकी कलकत्ता और लाडनूंमें बहुतसी स्थाई सम्पत्ति है लाडनूंमें आपने अभी एक बहुत सुन्दर नयी बिल्डिंग बनवाई है। इसके अतिरिक्त आपकी एक विशाल हवेली और है।

कलकत्तेमें मोतीबजार और संजीवन जूट बजार नामक दो जूटके बजार आपहीके हैं। इन बाजारोंमें जूटका बहुत बड़ा खरीद फरोख्त होता है। इसके अतिरिक्त पारख स्ट्रीट बिल्डिंग्ज [illegible] में आपकी प्रिंस मैनशन और जीवन मेंशन नामक २ सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स जीवनमल चन्दनमल बेंगानी ; गंडफड़ीरोड यहां शेयर्स, बैङ्किग व्यवसाय और बिल्डिंगस्, जुटप्रेस और जूट मार्केटके किरायेका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल आसकरण ; गंडफड़ी रोड-यहां जूट और बेल्संका काम होता है।

(३) कलकत्ता—चन्दनमल चम्पालाल ; गंडफड़ी रोड-यहां जूट विक्रीका काम होता है।

(४) कलकत्ता—काशीपुर, विक्टोरिया जूटप्रेस—यहां आपका जूटप्रेस है।

(५) कलकत्ता गंडफड़ीरोड—सूरज जूट प्रेस—यहां भी आपका जूट प्रेस है।

(६) कृष्णगंज (पूर्णिया) छगनमल मोतीलाल—जूटका व्यापार होता है।

(७) बारसोइ घाट—जौहरीमल सुरजमल-यहां भी जूटका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त जूट सीजनमें बंगालमें बहुतसे स्थानोंमें आपकी जूटकी खरीदी होती [illegible]

इस फर्ममें बाबू फुलचन्दजी निगोतिया जयपुरवाले सेठ जीवनमलजीके समयसे ही प्रधान मेनेजरीका काम करते हैं। आपका सूरजमल आसकरण नामक फर्ममें साझा भी है।

मगनमल नेमचन्द

इसफर्मकेमालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनू ही है। आप ओसवाल श्वेताम्बर मार्गी जैन सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें करीब ६० [illegible] सेठ [illegible] स्थापित किया

मेसर्स जवाहरमल रामकरण

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ जवाहरमलजी तथा रामकरणजी हैं। आप माहेश्वरी चंडक जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए कुछ ही वर्ष हुए। सेठ जवाहरमलजी व्यापारिक अनुभवी सज्जन हैं। सेठ रामकरणजी भी योग्य व्यक्ति हैं। आप दोनोंका इस फर्ममें साझा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स जवाहरमल रामकरण कालबादेवी रोड T. A. Gangalahari इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बारसी—(सोलापुर)—जवाहरमल रामकरण—यहां रुई, गल्ला, और हुण्डी-चिट्ठीका काम होता है।

लातूर—(निजाम-स्टेट)—मेसर्स राधाकिशन रामचन्द्र—इस फर्मपर रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

मूण्डवा—(मारवाड़)—रामनाथ राधाकिशन—यहां हेड आफिस है।

मेसर्स नन्दराम मूलचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके मोदानी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए हैं। इसके स्थापक सेठ मायारामजी तथा मूलचन्दजी थे। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपके पश्चात् क्रमशः सेठ चतुर्भुजजी सेठ शालिगरामजी ने इस फर्मका संचालन किया। सेठ चतुर्भुजजीके रघुनाथदासजी और सेठ शालिगरामजीके रामनाथजी तथा जेठमलजी नामक पुत्र हुए। आप तीनों ही दुकानका संचालन करते थे। विशेष भाग सेठ रामनाथजीका रहा है। आपकी ओरसे यहां सांवलियाजीका मन्दिर तथा तालावके किनारे एक सुन्दर बगीचे सहित शिवालय (गुमटी) बना हुआ है। इस समय सेठ रघुनाथदासजीके वंशज अपना अलहदा व्यवसाय करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ रामनाथजीके पुत्र सेठ रामरतनजी तथा रामनिवासजी और सेठ जेठमलजी हैं। सेठ रामरतनजी शिक्षित युवक हैं। आपने सारे गांववालोंकी प्रतिद्वन्द्वता होते हुए भी एक कन्या पाठशाला स्थापित की है। यह ७ सालसे चल रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मरनूर—(मद्रास) स्टे० धरमाबाद—मेसर्स मायाराम मूलचन्द—यहां सराफी तथा गल्लेका व्यवसाय होता है। यहां आपके द्वारा खेती भी होती है।

श्रीयुत श्रीचन्दजी बैद (आसकरण मुल्तानमल) लाडनूं

श्रीयुत मालचन्दजी काठोदिया, लाड

श्रीयुत चान्दमलजी काठोदिया, लाडनू

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मूरतगढ़—मारवाड़—मेसर्स रामवगस जेठीलाल मण्डी—यह फर्म गुड़, अनाज, किरानाका हाजिर व्यापार करती है। यहां आढ़तका काम भी होता है।

बैंकर्स

किशनलाल रामचन्द्र
दौलतराम शिवराज
जवाहरमल रामदान
रामरतन रामवगस
रामनाथ जयनारायण

गल्लेके व्यापारी

जयनारायण भागीरथ
रामनाथ चतुर्भुज
रामवगस जेठीलाल
रामनाथ नथमल

कपड़ेके व्यापारी

घोथमल मूलचन्द
पन्नालाल मोहनलाल
बद्रीनाथ मूलचन्द
रामरतन रूपनाथ
लक्ष्मीनारायण बालाराम

किरानेके व्यापारो

मसारीराम सीताराम
हीरालाल चतुर्भुज

पाली

पाली जोधपुर राज्यका एक अच्छा और आबाद कस्बा है। यह जे० आर० की पाली नामक स्टेशनसे करीब आधे मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर सुन्दर तालाब अपनी शोभा बढ़ा रहा है। यह स्थान मुगल जमानेमें व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्रस्थल था। उस समय उत्तरीय हिन्दुस्थान काबुल वगैरह और दक्षिणी हिन्दुस्तानके व्यापारियोंके व्यापार करनेका यही एक मार्ग था, यहींसे होकर माल जाता था। अतएव कहना न होगा, कि मुगल-साम्राज्यके समय इसका व्यापार अच्छी दशामें था।

पाली बहुत प्राचीन नगर है। पहले यह पंवारोंके हाथमें था। इन्होंने इसे पल्लीवाल ब्राह्मणों-को दान कर दिया। पश्चात् इसपर मुसल्मानोंका अधिकार रहा। मंडोरके पड़िहारोंने फिर मुसल्मानोंसे इसे जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। और फिर इसे पल्लीवालोंको ही दानमें दे दिया। संवत १३०६ में यह शहर राव सिहाजीके हाथ आया। बहुत समयतक यह नगर जागीरी-

वसान संवत १९५८ में होगया। पहले यह फर्म हीरालाल बींजराजके नामसे व्यापार करती थी। उस समय इसमें सेठ हीरालालजी, सेठ बींजराजजी तथा सेठ पूसामलजी तीन साझेदार थे। संवत १९६४ से हीरालालजीका साझा अलग होगया और अब आप इस नामसे कार्य करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय—

कलकत्ता--मेसर्स हीरालाल चांदमल, २ राजाऊडमंड स्ट्रीट—इस फर्मपर व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

डीडवाना

जोधपुर स्टेट रेलवेकी डीडवाना नामक स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर यह एक बहुत सुन्दर बड़ा कसबा बसा हुआ है इस स्थानपर भी नमक तैयार किया जाता है। सांभरकी तरह इस स्थानसे भी बहुतसा नमक बाहर जाता है। नमककी ही खास पैदावार यहां है। इसके अतिरिक्त मूंग, मोठ, बाजर, गवार आदि भी पैदा होते हैं।

इस स्थानपर माहेश्वरी श्रीमन्तोंका विशेष निवास है। कलकत्ता इन्दौर, उज्जैन प्रभृति स्थानोंमें यहांके व्यापारियोंकी फर्में हैं। यहांके प्रतिष्ठित धनिक मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांगड़की ओरसे स्टेशनसे डीडवाना स्थानतक पक्की सड़क बनी हुई है। इनकी ओरसे यहां डीडवाना इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक भी खुला हुआ है। इस स्थानके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स शालिगराम शिवकरण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान डीडवानाही है। आप माहेश्वरी समाजके बांगड़ गौत्रीय सज्जन हैं।

मेसर्स शालिगराम शिवकरणके नामसे यह फर्म यहां बहुत समयसे व्यवसाय कर रही है। वर्तमानमें इस फर्मपर मगनीराम रामकुंवार बांगड़के नामसे कलकत्तेमें बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान प्रधान संचालक सेठ मगनीरामजी बांगड़ हैं। इस फर्मके व्यवसायको विशेष तरक्की सेठ मगनीरामजी और सेठ रामकुमारजीके हाथोंसे मिली। इस कुटुम्बकी धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे डीडवानामें संस्कृत पाठशाला चल रही है। इस पाठशालामें शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्र भोजन एवं वस्त्र भी यहीं पर पाते हैं। पुष्कर नामक तीर्थमें दिव्य देव श्री रमावैकुंठ नामक एक मंदिर भी आपकी ओरसे बना हुआ है। डीडवाना स्टेशनसे शहरतक आपकी ओरसे मगनीराम रामकुंवार रोड नामक एक पक्की सड़क बनी हुई है। [illegible] सांगाठुआं नामक स्थानमें आपकी ओरसे एक अच्छा [illegible] है। इसके [illegible] एक औषधालय भी स्थापित है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मूण्डारा—मारवाड़—मेसर्स रामचन्द्र जेगोपाल भट्टड़—यह फर्म गुड़, अनाज, किरानाका हाजिर व्यवसाय करती है। यहां आड़तका काम भी होता है।

बैंकर्स

किशनलाल रामचन्द्र
छोटूराम शिवराज
जवाहरमल रामकरन
रामरतन रामचन्द्र
रामनाथ जयनारायण

कपड़े के व्यापारी

चोथमल मूलचन्द
चुन्नीलाल मोहनलाल
बद्रीनाथ मूलचन्द
रामरतन रूपनाथ
लक्ष्मीनारायण बालाराम

गल्लेके व्यापारी

जयनारायण भागीरथ
रामनाथ चतुर्भुज
रामचन्द्र जेगोपाल
रामनाथ नथमल

किरानेके व्यापारी

प्रसादीराम सीताराम
हीरालाल चतुर्भुज

फालना

पाली जोधपुर राज्यका एक अच्छा और आबाद कस्बा है। यह जे० आर० की पाली नामक स्टेशनसे करीब आधे मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। इसके चारों ओर सुन्दर बगीचे अपनी शोभा बढ़ा रहे है। यह स्थान मुगल जमानेमें व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्रस्थल था। उस समय उत्तरीय हिन्दुस्थान काबुल वगैरह और दक्षिणी हिन्दुस्तानके व्यापारियोंके व्यापार करनेका यही एक मार्ग था, यहींसे होकर माल आता था। अतएव कहना न होगा, कि मुगल साम्राज्यके समय इसका व्यापार अच्छी दशामें था।

पाली बहुत प्राचीन नगर है। पहले यह ब्राह्मणोंके हाथमें था। उन्होंने इसे पल्लीवाल ब्राह्मणों-को दान कर दिया। पश्चात् इसपर मुसलमानोंका अधिकार रहा। मंडोरके पड़िहारोंने फिर मुसलमानोंसे इसे छीनकर अपने राज्यमें मिला लिया। और फिर इसे पल्लीवालोंको ही दानमें दे दिया। संवत् १३०८ में यह शहर राव सिहाजीके हाथ आया। बहुत समयतक यह नगर व्यापारी-

श्रीयुत सेठ मगनीरामजी बांगड़

श्रीयुत सेठ रामकुमारजी बांगड़

श्रीयुत नारायणदासजी बांगड़

सेठ चैनसुखजी पांड्या (चैनसुख गंभीरमल)

सेठ गंभीरमलजी पांड्या (चैनसुख गंभीरमल)

श्रीयुत टीकमचन्दजी बड़जात्या

श्रीयुत दुलीचन्दजी बड़जात्या

श्रीयुत सेठ मगनीरामजी बांगड़

श्रीयुत सेठ रामकुमारजी बां

श्रीयुत नारायणदासजी बांगड़

श्रीयुत सेठ मगनीरामजी बांगड़

श्रीयुत सेठ रामकुमारजी बांगड़

इस पुस्तक सीरिज़में जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है, उसके लेखक बाबू मोहन लालजी यहांके निवासी ही हैं। आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं।

मकराणा

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इस स्थान पर संगमरमर पत्थरकी खानें हैं। लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है। यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है। इस पत्थरकी कई जातियां होती हैं जैसे सफेद, शाही, गुलाबी मिक्सचर, नीला मिक्सचर आदि। खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग खरीद कर उसकी क्वालिटीके मुताबिक अपनी दुकानोंमें जमा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े फर्शके काममें आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है। शेष पत्थर फर्श पर जड़नेके लिये खरीद लिया जाता है।

साधारण तथा यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है। दूसरे पत्थर ६) मन फुट बिकते हैं। मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है। जोधपुर स्टेट यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ।।≈) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टेक्स लेती है। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे मुल्कलिक महसूल हैं।

जे० बी० आर० की मकराणा स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई दुकानें हैं। इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार रहता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं। आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसका हेड आफिस आगरा है। इस फर्मके आगरेका पता बी० एल० वैश्य

बैंकर्स

डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक
मेसर्स गंगाधर रामकुंवार
„ जयकिशनदास कन्हैयालाल गट्टानी
„ नैनसुखदासराधाकिशनदास
„ शालिग राम शिवकरण

नमकके व्यापारी

मेसर्स रामभगत रामचन्द्र
„ शिवजीराम सदासुख

क्लाथ मरचेंट

रामानन्द लालचन्द

किरानेके व्यापारी

वृन्दावन चुन्नीलाल

चांदी-सोनेके व्यापारी

रामप्रताप शिवनाथ

लायब्रेरी

डीडवाणा हिन्दी पुस्तकालय

मूण्डवा मारवाड़

यह कस्वा जोधपुर राज्यके नागोर परगनेमें है। यह जे० आर० लाईन पर अपनेही नामके स्टेशन से करीब ३ फलांगकी दूरीपर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंगकी है। यह स्थान प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। कई वर्ष पूर्व जब कि नागोरके व्यापारका सितारा जोरोंसे चमक रहा था तब यहांका व्यापार भी उन्नतिपर था। पर ज्यों २ नागोरके व्यापारकी अवनत दशा होती गई त्यों २ यहांका व्यापार भी मरता गया और आज यह दशा हो गई कि व्यापारके नामसे यहां कुछ भी नहीं है। यहांके कतिपय व्यापारी भी जो यहांके अच्छे व्यवसायी हैं, बाहरी शहरोंमें व्यापार करते हैं। उनका परिचय आगे दिया जायगा।

आजकल यहांके व्यापारमें यहांकी पैदावार मूंग, मोठ, जौ, बाजरी, तिल्लन और ज्वार है। येही वस्तुएं कभी २ बाहर एक्सपोर्ट होती हैं। यहां मिगसर मासमें गिरधारीलालजीका मेला भरता है। इसमें करीब ३०-४० हजार मनुष्य आते हैं। इसमें पशुओंका व्यापार विशेष होता है। चूना यहां बहुत होता है। यहांसे आगरा, बम्बई, करांची आदि स्थानोंमें बंगलेकी बेगन जाती है। १०) में २०२ मनकी बेगन मिलती है

० सेठ केशरीचन्दजी (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर स्व० सेठ श्रीपालजी चतुर (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर

श्री० नगर सेठ नन्दलालजी उदयपुर

सेठ मगनलालजी चतुर (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर

बम्बई—मेसर्स नन्दराम मूलचन्द कालबा देवी—इस स्थानपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।
बम्बई—मेसर्स बद्रीनाथ रामरतन, दाना बन्दर—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है
हैद्राबाद—(दक्षिण)—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ जयनारायण

इस फर्मके मालिक मूल निवासी यहींके हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७०-८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामनाथजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पांच पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः जयनारायणजी, शिवप्रतापजी, रामकिशनजी, रामचन्द्रजी, और रामसुखजी हैं। इनमेंसे सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी विद्यमान हैं। आप दोनों ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मूण्डावा—मारवाड़—मेसर्स रामनाथ जयनारायण—यहां हुण्डी-चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—मेसर्स रामनाथ शिवप्रताप, नया बाजार—यहां हुंडी-चिट्ठी, सराफी, रंगीन कपड़े और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—शिवप्रताप गोपी किशन, नया बाजार—इस स्थानपर गोटेका व्यापार होता है। यहां गोटेका निजका कारखाना है। इस फर्मको अजमेर मेरवाड़ा एक्सीबिशन में फर्स्ट क्लास प्राईज मिला था।

अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नया बाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स रामचन्द्र रामसुख, कालबादेवी T. A. King moto—यहां सब तरहकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

सिकन्दराबाद—(दक्षिण) मेसर्स रामचन्द्र रामसुख—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामबगस जैगोपाल भट्टड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जैगोपालजी हैं। आप माहेश्वरी भट्टड़ जातिके हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब [illegible] हुए। इसके स्थापक सेठ राम-[illegible] बगसजीके पिता बद्रीनाथजी थे। जैगोपालजी सेठ [illegible] हैं। आपके हाथोंसे इस फर्म-की बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके स्थायी [illegible] सम्पन्न [illegible] सेठ [illegible]जीके [illegible] नाम श्री [illegible] [illegible] दुकानका कार्य

वर्तमानमें इस फर्मपर वेङ्किग, हुंडी चिट्ठी तथा जागीरदारोंके साथ लेनदेनका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स किशनजी केशरीचंद

इस फर्मके मालिक श्री पन्नालाल जी हैं। आप पोरवाड़ (पुआवत) जातिके हैं। इस नामसे यह फर्म ७५ वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसके पूर्व लालजी, जवेर जी और किशनजी तीन भाइयोंके साझेमें कारवार होता था। इस दूकानको किशनजी के पुत्र केशरीचन्द जीने स्थापित किया। आपके बाद आपके पुत्र पन्नालाल जी इस दुकानके मालिक हैं। यह दूकान उदयपुरमें हुण्डीवाली दूकानके नामसे प्रसिद्ध है। इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी, बैङ्किग तथा सराफीका व्यापार होता है। आपकी एक दूसरी दुकान और है, उसपर गोटेका व्यापार होता है।

दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कोटेमें दिया गया है। यहां यह फर्म रेसिडेंसी ट्रेझरर है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स प्रेमचंद चम्पालाल बापना "नगर सेठ"

इस फर्मके मालिकोंका पुरतैनी निवास उदयपुर ही है। आप ओसवाल जातिके बापना गोत्रीय स्थानक वासी जैन सज्जन हैं। इस कुटुम्बमें श्री प्रेमचंदजी बड़े विख्यात और नामी व्यक्ति हुए। आपको संवत् १९०८में तत्कालीन महाराणा श्री सरूपसिंह जीने नगरसेठ का सम्मानीय खिताब दिया था। उस समय नगर सेठका जब तिलक किया गया था, तब पगके स्थानपर मोती चढ़ाये गये थे; इतना बड़ा सम्मान रियासतमें केवल दीवान को ही मिलता है। साथ ही आपको हाथी और छवाजमा भी बख्शा गया था।

श्री प्रेमचन्द जीका देहावसान माघ सुदी ४ संवत् १९१८में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र चम्पालाल जी हुए। आपने भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। एकबार किसी संवत् १९२०में यहांकी प्रजा रेसिडेंटकी कोठीपर गोगुन्दामें आपके साथ पुकार करनेके लिए गई, और वहांमें ठहरी थी। उस समय महाराणा श्री ने गोकुलचंद जी मेहता और अपने दीवान पं० लक्ष्मनदासजी को उसको बुलानेके लिये भेजा। और स्वयं महाराणा जीने उन लोगोंसे सहेलियोंकी बाड़ीमें भेंट की। तब शहरकी हड़ताल बंद हुई। आपके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र कन्हैयालाल जीने कारोबार सम्हाला। चम्पालालजी का देहावसान माह वदी ६ संवत् १९४०में और कन्हैयालालजी का देहा० जेठ [illegible]-१ संवत् १९६१में हुआ।

बम्बई—मेसर्स नन्दराम मूलचन्द कालबा देवी—इस स्थानपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बम्बई—मेसर्स बद्रीनाथ रामरतन, दाना बन्दर—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है

हैदराबाद—(दक्षिण)—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ जयनारायण

इस फर्मके मालिक मूल निवासी यहींके हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७०-८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामनाथजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पांच पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः जयनारायणजी, शिवप्रतापजी, रामकिशनजी, रामचन्द्रजी, और रामसुखजी हैं। इनमेंसे सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी विद्यमान हैं। आप दोनों ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मूण्डवा—मारवाड़—मेसर्स रामनाथ जयनारायण—यहां हुण्डी-चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—मेसर्स रामनाथ शिवप्रताप, नया बाजार—यहां हुंडी-चिट्ठी, सराफी, रंगीन कपड़े और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—शिवप्रताप गोपी किशन, नया बाजार—इस स्थानपर गोटेका व्यापार होता है। यहां गोटेका निजका कारखाना है। इस फर्मको अजमेर मेरवाड़ा एक्सीबिशन में फर्स्ट क्लास प्राईज मिला था।

अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नया बाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स रामचन्द्र रामसुख, कालबादेवी T. A. King moto—यहां सब तरहकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

सिकन्दराबाद—(दक्षिण) मेसर्स रामचन्द्र रामसुख—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामबगस जैगोपाल भट्टड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जैगोपालजी हैं। आप माहेश्वरी भट्टड़ जातिके हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामबगसजीके पिता बद्रीनाथजी थे। जैगोपालजी सेठ रामबगसजीके पुत्र हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मको बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके स्थायी व्यवसाईयोंमें अच्छी प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है। सेठ जैगोपालजीके २ पुत्र हैं। जिनके नाम श्री रामनिवासजी तथा श्री रामकिशनजी हैं। आप दोनों भी दुकानका कार्य करते हैं।

श्री० भंवरलालजी लावजीव (अग्रवाल ग्रादमे) इंदौर

मेसर्स चैनसुख गंभीरमल

इस फर्मके मालिक श्री सेठ चैनसुखजी और श्री सेठ गंभीरमलजी यहांके मूल निवासी हैं। आप सरावगी खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी तरकी आप दोनोंहीसज्जनके हाथोंसे हुई और आप दोनों ही इसके स्थापक हैं। आपका हेड आफिस कलकत्ता है।

आपकी ओरसे संवत १९६० से यहां एक जैन पाठशाला तथा बोर्डिंग हाउस चल रहा है। इसके अतिरिक्त एक पाठशाला और एक और औषधालय भी आपकी ओरसे यहां है। पाठशालाके मकानके लिये आपने २० हजार रुपया प्रदान किया है। आपकी ओरसे पांवागढ़में एक मन्दिर बनवाया जारहा है। कलकत्तेमें भी एक जैन मन्दिरके बनवानेमें आपने अच्छी सहायता दी है।

सेठ गम्भीरमलजी सन् १९२७ में अखिल भारतवर्षिय दि० जैन महासभाके सभापति रह चुके हैं। इस समय आपके दो पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीनेमीचन्दजी और महावीर प्रसादजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स चैनसुख गंभीरमल, ४६ स्ट्रेंड रोड T. A. Tripendiam—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट और देशी कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गम्भीरमल महावीर प्रसाद २०३, हरिसन रोड—यहां गंजी, फराक तथा हौजरी का थोक व्यापार होता है।

अहमदावाद—मेसर्स चैनसुख गंभीरमल, साखर बाजार T. A. Gambhir—इस दुकान पर यहांकी मिलोंके कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

कुचामन—मेसर्स चैनसुख गम्भीर मल—इस फर्म पर कलकत्तेसे कपड़ेकी गांठे आतीं, और बिक्री होती हैं।

मेसर्स मोहनलाल टीकमचन्द बड़जात्या

आपका निवास स्थान कुचामन है। आप दिगम्बर जैन खंडेलवाल जातिके सज्जन हैं। आपके पिता मुंशी गोविन्दरामजी योग्य और धर्मात्मा सज्जन थे। आप कुचामन ठाकुर साहबके प्रायव्हेट सेक्रेटरीका कार्य करते थे। आपका वहां अच्छा सम्मान था। आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० मोहनलालजी, श्री० टीकमचन्दजी, और श्री दुलिचन्दजी हैं। श्रीयुत मोहनलालजी और टीकमचन्दजी व्यापारमें निपुण और इम्पोर्ट व्यवसायमें सिद्धस्त हैं। मेसर्स चैनसुख गंभीरमलजी फर्मके इम्पोर्ट बिजिनेस का कार्य आप दोनों ही देखते हैं। श्री० दुलीचन्दजी भी मिलनसार तथा व्यापार-कुशल हैं।

मेसर्स अब्दुलअली ताजखानजी

इस दूकानकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हुए। सेठ ताजखानजी इस फर्मके बहुत मशहूर पुरुष हुए। उन्होंने इस दूकानको बहुत तरक्की दी। इस दूकानका लेनदेन राज-दरबार भाई बेटों एवं जमींदारोंसे हमेशासे रहा है। राज दरबार एवं बाजारमें भी इस दूकानकी अच्छी प्रतिष्ठा है। ताजखानजीके बाद उनके पुत्र अब्दुलअलीजीने इसके कारोबारको सम्हाला। अब्दुलअलीजीके ३ पुत्र हैं। जिनका नाम गुलामअलीजी, वलीमहम्मदजी, और फिदाहुसेनजी। ये तीनोंही इस समय दूकानका काम सम्हालते हैं।

इस दूकानपर जरी, सलमा, सितारका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नीचे लिखी कम्पनियोंकी भी एजंसियां हैं।

(१) ए० हाइलैंड लिमिटेड बम्बई (मोटरकार)

(२) ओव्हरलैंड और विलीजनाइट मोटरकी एजंसी हैं।

करीब २० वर्षोंसे इस दूकानकी एक ब्रांच दिल्ली-घंटा घरके पास इसी नामसे खुली है। इस दूकानपर जनरल मर्चेन्ट्स व कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त गोटा, पगड़ी, दुशाले, दुपट्टे और जवाहरातका भी व्यापार होता है।

राज घरानेका दिल्लीके मुतल्लिक जितना काम होता है वह सब इसी फर्मके मार्फत होता है। सन् १९२७ के नवम्बरमें जब बड़े मुल्लांजी साहब यहां पधारे थे तब उन्होंने सेठ गुलाम अलीजीको "शेख" का खिताब दिया था।

बैंकर्स, गोल्ड एण्ड सिलवर मरचेंट्स

मेसर्स अनोपचन्द गंभीरमल
" उम्मेदमल धरमचन्द
" किशनजी केशरीचन्द
" धा० केशरी सिंहजी (रतिडेंसी ट्रेकारर)
" गोरधनदास विट्ठलदास
" जवरजी नाथूलाल
" नेतचन्द प्यारचन्द
" पन्नालाल दुल्लेचन्द
" बदीचन्द नथमल
मेसर्स भीमराज भारमचन्द
" मूलचन्द सुगनचन्द
" मथुरादास चतुर्भुजदास
" मोतीचन्द टोडरमल
" विट्ठलदास किशनदास

कपड़ेके व्यापारी

कुतुबअली अकबरअली वड़्ज़ बाज़ार
इस्माइलजी इब्राहिमजी घंटाघर
अब्दुलअली अकबरअली बड़्ज़ बाज़ार
अकबरजी नाथजी

अग्रवाल ब्रदर्स एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्रीयुत भवरलालजी अग्रवाल हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मपर जनरल मर्चेण्टका व्यापार होता है। श्रीयुत भँवरलालजी तालीम [illegible] शिक्षित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका चित्र भी [illegible] आया था लेकिन उसके खोजानेसे हम न छाप सके इसका हमें दुःख है।

किशनगढ़

बी० बी० सी० आई० रो० अजमेर जयपुर ब्रांचके मध्यमें किशनगढ़ स्टेशनसे ४ मीलकी दूरीपर यह शहर बसा है। अन्य स्थान यहांसे दूर दूर होनेसे इस शहरकी व्यवसायिक हालत बड़ी शोचनीय है। यह शहर महाराजा किशनगढ़की राजधानी है। यह स्थान चारोंओर पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है। शहरके किनारे एक बड़ा तालाब है। इस शहरकी आबादी करीब १० हजारके है।

मदनगंज-इस मंडीको किशनगढ़ नरेश महाराज मदनसिंहजीने अपने नामसे संवत् १९५९में बसाया था। इसके स्थापित होनेके पूर्व यहांसे पूर्वीय राज्यमें हरमादेड़ा नामक स्थानपर १ मंडी थी, पर इस मंडीके आबाद होनेसे उसका व्यापार बिल्कुल नष्ट प्राय होगया है। इस मंडीका खास व्यापार जीरा घी, सूत और रुईका है। यहांसे दस पन्द्रह हजार बोरी जीरा प्रतिवर्ष बाहर जाता है। घी की भी यह अच्छी मण्डी है कभी २ अच्छी मौसिममें पांच पांच सौ कनस्टर घीके प्रतिदिन यहां आ जाते हैं।

इस स्थानपर गुड़, शक्कर किराना आदि बाहरसे आता है। जीरा घी, सूत और रुईके अतिरिक्त यहांकी पैदावारमें जो, गेहूं चना, जुवार मक्का आदि हैं। इस मंडीमें आनेवाले और जानेवाले मालपर किसी प्रकारका टेक्स नहीं लिया जाता है। यहां यदि कोई रुईकी कची गांठ बाहर लेजाना चाहे तो उसे ॥) मन महसूल देना पड़ता है।

इसस्थानपर सूत कातनेकी एक लिमिटेड मिल और एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फ़ेक्टरी है। जिनके नाम इसप्रकार हैं।

दि महाराज सोमयाग मिल ट्रान्स पोर्ट क० लि०
दि महाराज सोमयाग मिल्स क० लि० जीनिंग फेक्टरी
दि काटन प्रेस कम्पनी (सरकारी)
उपरोक्त कारखानोंमें हिज हाईनेस किशनगढ़के भी बड़े हिस्से हैं।

मेसर्स कल्यानजी दामोदर कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बम्बई है। यह कम्पनी दि महाराज सोमियाग मिल्स-कम्पनी ट्रांसपोर्ट लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है। यह मिल पौने सात लाखके केपिटलसे सन् १९८० में स्थापित हुई। इस मिलमें केवल सूत तैयार होता है। इसमें १६००० स्पिंडल्स हैं। इस मिलका सूत बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, यू०पी० और ईस्ट आफ्रिका तक जाता है। इस मिलमें एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

अग्रवाल ब्रदर्स एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान मैनेजर श्रीयुत भँवरलालजी तायलीय हैं। आप अग्रवाल जाति[illegible] सज्जन हैं। इस फर्मपर जनरल मरचेंट्सका व्यवसाय होता है। श्रीयुत भँवरलालजी तायल[illegible] शिक्षित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका विशेष परिचय आया था लेकिन उसके खोजानेसे ह[illegible] न छाप सके इसका हमें दुःख है।

किशनगढ़

बी० बी० सी० आई की अजमेर जयपुर ब्रांचके मध्यमें किशनगढ़ स्टेशनसे ४ मीलको दूरीपर यह शहर बसा है। अस्त व्यस्त चहार दीवारीसे घिरे हुए इस शहरकी व्यवसायिक हालत बड़ी शोचनीय है। यह शहर महाराजा किशनगढ़की राजधानी है। यह स्थान चारोंओर पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है। शहरके किनारे एक बड़ा तालाब है। इस शहरकी आबादी करीब १० हजारके है।

मदनगंज-इस मंडीको किशनगढ़ नरेश महाराज मदनसिंहजीने अपने नामसे संवत् १९५६में बसाया था। इसके स्थापित होनेके पूर्व पासही बृटिश राज्यमें हरमाड़ेका नामक स्थानपर १ मंडी थी, पर इस मंडीके आबाद होनेसे उसका व्यापार बिल्कुल नष्ट प्राय होगया है। इस मंडीका खास व्यापार जीरा घी, सूत और रुईका है। यहांसे दस पन्द्रह हजार बोरी जीरा प्रतिवर्ष बाहर जाता है। घी की भी यह अच्छी मण्डी है कभी २ अच्छी मौसिममें पांच पांच सौ कनस्टर घीके मौसिन यहां आ जाते हैं।

इस स्थानपर गुड़, शक्कर किराना आदि बाहरसे आता है। जीरा घी, सूत और रुईके अति-रिक्त यहांकी पैदावारमें जौ, गेहूं चना, जवार मक्कई आदि हैं। इस मंडीमें आनेवाले और जानेवाले माळपर किसी प्रकारका टेक्स नहीं लिया जाता है। यहां यदि कोई रुईकी गांठ बाहर लेजाना चाहे तो उसे ।।) मन महसूल देना पड़ता है।

इसस्थानपर सूत कातनेकी एक लिमिटेड मिल और एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। जिनके नाम इसप्रकार हैं।

दि महाराज सोनयांग मिल्स ट्रान्स पोर्ट क० लि०
दि महाराज सोनयांग मिल्स क० लि० जीनिंग फेक्टरी
दि कॉटन प्रेस कम्पनी (सरकारी)

उपरोक्त कारखानोंमें हिज हाईनेस किशनगढ़के भी बड़े हिस्से हैं।

मेसर्स कल्यानजी दामोदर कम्पनी

इस फर्मके मालिक[illegible] मूल निवास बम्बई है। यह कम्पनी दि [illegible] कम्पनी ट्रांसपोर्ट लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है। यह मिल [illegible] में स्थापित हुई। इस मिलमें केवल सूत तैयार होता है। [illegible] ११००० [illegible] है। इस [illegible] सूत बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, [illegible] और [illegible] है। इस मिलमें [illegible] [illegible]निंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

बैंकर्स

मेसर्स उम्मेदमल धर्मचंद "चतुर"

इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके सांमर गोत्रीय सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर) है। संवत् १२०० के करीब आपके पूर्वज संघ निकालकर पालीताणा गये, उसमय इनके कार्योंसे प्रसन्न होकर वहांके सारे श्वेताम्बर संघने इस कुटुम्बको "चतुर" का खिताब दिया था। उस समयसे आपके आगे चतुर शब्द लिखा जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दीमें मेड़ता बस्ती पर तत्कालीन नरेशका कोप हो गया, जिससे बहुतसे निवासी मेड़ता खाली करके बाहर चले गये, उसी सिलसिलेमें सम्वत् १८७६में सेठ उम्मेदमलजी चतुर तत्कालीन उदयपुर महाराणा श्रीभीमसिंहजीके विश्वास दिलाने पर यहां आकर बस गये। यहां आकर आपने जागीरदारोंके साथ सूदपर रुपया देनेका व्यवसाय आरंभ किया, जो अभी तक भली प्रकार चल रहा है। उदयपुरके वर्तमान और स्वर्गस्थ सभी महाराणाओंकी इस फर्मके मालिकों पर अच्छी कृपा रही है।

श्री सेठ उम्मेदमलजीके श्री सेठ धर्मचन्दजी, श्री सेठ छोगमलजी और श्री सेठ चन्दनमलजी नामक ३ पुत्र थे इनमेंसे श्री छोगमलजीने और श्री चन्दनमलजीने उदयपुरमें अच्छी ख्याति प्राप्तकी। श्रीचन्दनमलजीको उदयपुर दरबारमें सम्माननीय कुरसी मिली थी, तथा आप श्री केशरियाजीकी प्रबन्ध कारिणी कमेटीके मेम्बर थे।

श्री धर्मचन्दजीके श्री श्रीपालजी, श्री छोगमलजीके श्री केशरीचन्दजी और श्री चन्दनमलजी के लक्ष्मीलालजी नामक पुत्र हुए। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीलालजी, श्री केशरीचंदजी के पुत्र सेठ रोशनलालजी और श्री श्रीपालजीके पौत्र फतेलालजी हैं। इस कुटुम्बमें एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी विरोधके पांच पीढ़ियोंसे शामिल व्यवसाय कर रहा है। इस कुटुम्बकी उदयपुरमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

सेठ रोशनलालजी यहांके म्युनिसिपल बोर्डके व्हाइस प्रेसिडेंट और आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। इसके अतिरिक्त करेड़ा तीर्थ, जैन श्वेतांबर बोर्डिंगहाउस, जैन धर्मशाला, तथा विजयधर्म लाइब्रेरीके प्रबन्धक भी आपही हैं। आप श्वेताम्बर समाज और उदयपुरशहरमें बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं आपके ३ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े फर्स्ट ईयरमें पढ़ते हैं।

मध्य-भारत

CENTRAL-INDIA

इन्दौर

इन्दौरका ऐतिहासिक परिचय
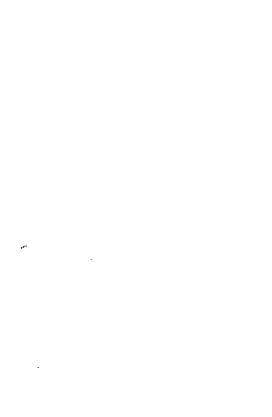
जिस स्थानपर आज इन्दौरकी सुन्दर, रमणीक और ललित बस्ती बसी हुई है, कुछ समय पूर्व, अर्थात् अठारहवीं शताब्दीके अन्ततक यह स्थान उजड़े हुए जङ्गल और छोटी २ बस्तियोंके रूपमें दिखलाई देता था। जो स्थान इस समय जूनी इन्दौरके नामसे प्रसिद्ध है वही हिस्सा उस समय पूरी इन्दौर कहलाता था। मगर कुछही दिनों पश्चात् सन् १८१८ में इस स्थानका भाग्य चमका, और इसके भौगोलिक महत्वको समझकर प्रसिद्ध होलकर वंशने यहांपर अपनी राजधानी स्थापितकी। देवी अहिल्याबाईके पूर्व जो इन्दौर एक छोटेसे गांवके रूपमें दिखलाई देता था वही देवी अहिल्याबाईके समयमें शहरके रूपमें परिवर्तित होगया, उसदिनसे आजतक यह शहर बराबर अपनी उन्नति करता चला जारहा है। इन्दौर शहरका इतिहास देवी अहिल्याबाईके जीवनकी शान्त और दीप्तिमान किरणोंसे परिप्लावित है। जिनका नाम संसारके इतिहासमें ध्रुवनक्षत्रकी तरह स्थिर और दे-दीप्यमान है। इसशहर उन्नतिमें जहां और भी कई अच्छे २ कारण हैं वहां इसकी भौगोलिक परिस्थिति इस भी इसकी उन्नतिका एक महत्व पूर्ण और प्रधान कारण है। यह शहर मालवेकी सुन्दर और सुजला, सुफला भूमि पर बसा हुआ है। नर्मदा, चम्बल, आदि बड़ी २ नदियां, और विन्ध्याचलका रमणीक पहाड़ इसके आसपास छाया हुआ है। इसके आसपासकी भूमि बड़ी सरस और उपजाऊ है। इस भूमिमें सभी प्रकारकी फसलें अच्छी उत्पन्न होती हैं यहांके विषयमें यह कहावत प्रसिद्ध है—"मालव धरती गहर गम्भीर, पग पग रोटी पगपग नीर"। इसके अतिरिक्त बम्बई, अहमदाबाद, मद्रास इत्यादि व्यापार के प्रधान २ केन्द्र यहांसे बहुत समीप पड़ते है। इन्हीं सब भौगोलिक परिस्थितियों तथा होलकर नरेशोंकी राजकीय उदारता, इत्यादि कई कारणोंने मिलकर इस शहरकी व्यापारिक उन्नतिमें बहुत सहायता दी है।

इस समय श्री कन्हैयालाल जीके पुत्र श्री नंदलाल जी बापना, "नगर सेठ" इस फर्मके काम को सम्भाल रहे हैं। आपका जन्म संवत् १९३०के आषाढ़ मासमें हुआ। उदयपुरकी पंचायतमें आपका पहिला स्थान है। महाराणा जीकी ओरसे आपको पूर्ववत् सम्मान प्राप्त है। आपको शिक्षा से बड़ा प्रेम है। वर्तमानके आपके ६ पुत्र हैं, जिनमें सबसे बड़े कुंवर गनेशीलाल जी बी० ए० एल० एल० बी० हैं। आप होशियार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इस समय आप उदयपुर स्टेटके सहाड़ा (गंगापुरके पास) जिलेके हाकिम हैं। इनके अतिरिक्त दूसरे कुंवर मनोहरलाल जी एफ० ए० में और छोटे बसंतीलाल जी मेट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

इस समय आपकी दूकानपर जमींदारी, गहनावट और जागीरदारोंसे लेन देनका काम होता है।

मेसर्स मूलचन्द सुगनचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। उदयपुरमें इस फर्मपर बैङ्किग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

क्लाथमरचेण्ट्स

मेसर्स इस्माइलजी इब्राहिमजी उदयपुर

इस दूकानके मालिकोंका खास वतन यहींपर है। यह दूकान यहांपर सैकड़ों वर्षों की पुरानी है। इस खानदानके अंदर इस्माइलजी मालजी बहुत मशहूर पुरुष थे। वे मालजी कुरवालाके नामसे राज दरबार एवं देश विदेशोंमें मशहूर थे। इस खानदानको उदयपुर राज्यसे हमेशासे सम्मान मिलता रहा है। यहांके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) इस्माइल जी इब्राहिम जी उदयपुर-इस दूकानपर बम्बईकी आढ़तका काम होता है और स्टेटकी वर्दियोंके कंट्राक्टका काम भी यहींसे होता है।

(२) इस्माइलजी इब्राहिम जी घण्टाघर उदयपुर-इस दूकानपर सब प्रकारके कपड़ेका व्यापार होता है

(३) इस्माइल जी इब्राहिम जी सुवार बाज़ार अरोवाला बिल्डिंग-इस दूकानपर स्पोर्ट्स तथा पीस गुड्स (हेस्टीनर्स एण्ड को० की कंपनीकी) की एजंसी है। तथा आढ़तका काम होता है। इस दूकानको स्थापित हुए ४० वर्ष हुए।

इस दूकानके वर्तमान मालिक सेठ अलीमहम्मद जी हैं। आप उदयपुरके मशहूर इस्माइल जी मालजी कुरवालाके पुत्र हैं।

(८) कसेरा बाजार – यहां पीतलके बर्तन बनते हैं तथा बिकते हैं ।

(९) पीपली माता रोड—यहां इन्दौरके बड़े २ और प्रसिद्ध श्रीमंतोंकी भव्य और विशाल दुका बनी हुई हैं । जिनपर बैंकिंग काटन, शेअर्स आदिका व्यापार होता है ।

(१० मल्हार गंज—यह अनाज, घी, तथा तिलहनकी बहुत बड़ी मंडी है । यहांसे लाखों रुपयोंक माल बाहर जाता है ।

इन्दौरके दर्शनीय स्थान

इस शहरमें तथा इसके आसपास कई स्थान बड़े भव्य और दर्शनीय बने हुए हैं जिनका परिचय इस प्रकार है—

(१) महलवाड़ा—(सरकारी महल) यह भव्य महल इन्दौरके ठीक मध्य भागमें बना हुआ है । इसकी गगनचुम्बी इमारत, भीतरके बड़े विशाल और कारीगरीयुक्त कमरे देखने योग्य है । इसके सामने एक अच्छा और चौड़ा मैदान बना हुआ है ।

(२) शीशमहल (सर सेठ हुकुमचंद)—यह भव्य और रमणीक महल इतवारिया बाजारमें बना हुआ है । इसकी भव्य और विशाल इमारत तथा इसका सुन्दर डिजाइन केवल इन्दौरमें ही नहीं प्रत्युत सारे भारतमें दर्शनीय वस्तु हैं । इसके भीतर संगमरमर और पच्चीकारीका बड़ा सुन्दर कार्य्य किया हुआ है ।

(३) सर हुकुमचंद जैन मंदिर—उपरोक्त शीशमहलके साथ ही यह मन्दिर बना हुआ है । इस मन्दिरमें कांचकी जड़ाईका काम बहुत बढ़िया किया हुआ है । रातके समय बिजलीके प्रकाशमें मन्दिरके अन्दर जाते ही एक विचित्र प्रकारकी चकाचौंध आंखोंमें उत्पन्न हो जाती है ।

(४) लालबाग पैलेस – ऐसा सुननेमें आता है कि एक्स महाराजा तुकोजी रावने इसे बड़े शौक और चावसे बनाया था । कहा जाता है इस पैलेसमें लाखों रुपयोंका दर्शनीय फिक्चरसे मंगाकर सजाया गया है ।

(५) लाल कोठी – शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई सरकारी कोठी है । बड़ी सुन्दर और दर्शनीय है ।

(६) इन्द्र भुवन—(सेठ हुकुमचंद) शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई बड़ी रमणीक कोठी है । इसका सुन्दर डिजाइन और इसकी कारीगरी देखने योग्य है ।

इसी प्रकार एडवर्ड हाल, मोतीबंगला, कृष्णनिवास, हवाबंगला, सर सेठ कल्याणमल हुकुमचंदका जंवरी बाग, इत्यादि इमारतें भी देखने योग्य हैं ।

अब्दुलअली ताजखानजी
इब्राहिमजी दाऊजी
कादरजी अलीजी
महम्मदअली बागरूजी
मुल्ला अमर हस्तुल्ला

कमीशन एजंट

इस्माइलजी इब्राहिमजी मोती चोहट्टा
अब्दुलअली ताजखानजी मोती चोहट्टा
कोठारीवाला पारखजी
गुलाबचन्द हरीराम
चतुर्भुज कपूरचन्द
रामचन्द्र चम्पालाल

गल्ले के व्यापारी

गुलाबचन्द अमोलख मंडी
मोतमल भट्टामण्डी
भवानमल पूनमचन्द मण्डी
मानकचन्द भीमराज मण्डी

जनरल मरचेण्ट

अमरलाल भारमं एण्ड को० सूरजपोल (हार्डवेर-डिपार
अब्दुलअली ताजखानजी (आयरलैंड मोटर एजंसी)
अब्दुलहुसैन हस्न भाइजी (सिगरेट, छड़ी, मोजा)
एच० एस० टेलरसंस, हाथीपोल (टिकट घेरा)
करमजी सेख हैदरजी (फोर्ड मोटर एजंसी)
चतुर्भुज हरिकिशनदास (स्टेशनरी)

जर्मन स्नीविंग मशीन कं० (स
मेवाड़ साइकल कम्पनी
दी हैदरी स्टोर कम्पनी हाथीपो

वैद्य

वैद्य भवानीशंकर आयुर्वेद भूषण

होटल्स

नेशनल होटल घंटाघर
स्टेट होटल उदयपुर

आर्टिस्ट

नवलराम फोटोग्राफर एंड आर्टिस्ट
पन्नालाल चित्रकार
लीलाधर गोवर्द्धनलाल

शिल्पी

रघुनाथ मिस्त्री कोटा

लायब्रेरीज

सज्जन लायब्रेरी सूरजपोल
पदलिंगदासजी यतीका पुस्तकालय
प्रताप पुस्तकालय, प्रताप सभा
विजय धर्म ज्ञान श्वेताम्बर पुस्तकालय हाथीपो
मेहता जीवनसिंहजीका पुस्तकालय

बोर्डिंग हाउस

गौतम ब्रह्मचर्याश्रम देलवाड़ा
दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस
श्वेताम्बर जैन बोर्डिंग हाउस

अब्दुलअली ताजखानजी

इब्राहिमजी धाऊजी

फादरजी अलीजी

महम्मदअली बागरुजी

मुल्ला अमर हपतुल्ला

कमीशन एजंट

इस्माइलजी इब्राहिमजी मोती चोहट्टा

अब्दुलअली ताजखानजी मोती चोहट्टा

कोठावाला पारखजी

गुलाबचन्द हरीराम

चतुर्भुज कपूरचन्द

रामचन्द्र चम्पालाल

गल्ले के व्यापारी

गुलाबचन्द लक्ष्मीलाल मंडी

जीतमल भट्टामण्डी

जवानमल पूनमचन्द मण्डी

थावरचन्द भीमराज मण्डी

जनरल मरचेण्ट

अग्रवाल ब्रादर्स एण्ड को० सूरजपोल (हार्डवेर-टिम्बर

अब्दुलअली ताजखानजी (आयरलैंड मोटर एजंसी)

अब्दुलहुसेन शेख दाऊजी (मिशनरी, लकड़ी, आइल)

आई० एस० मोहास्सन, हाथीपोल (टिम्बर लोहा)

कादरजी शेख हैदरजी (फोर्ड मोटर एजंसी)

चतुर्भुज हरकिशनदास (स्टेशनर)

जर्मन स्वीविंग मशीन कं० (साइकल और मशीन)

मेवाड़ साइकल कम्पनी

दी हैदरी स्टोर कम्पनी हाथीपोल

वैद्य

वैद्य भवानीशंकर आयुर्वेद भूषण घंटाघर

होटल्स

नेशनल होटल घंटाघर

स्टेट होटल उदयपुर

आर्टिस्ट

नवलराम फोटोग्राफर एंड आर्टिस्ट

पन्नालाल चित्रकार

लीलाधर गोवर्द्धनलाल

शिल्पी

रघुनाथ मिस्त्री कांटा

लायब्रेरीज

अग्रवाल लायब्रेरी सूरजपोल

एकलिंगदासजी यतीका पुस्तकालय

प्रताप पुस्तकालय, प्रताप सभा

विजय धर्म हाल श्वेतांबर पुस्तकालय हाथीपोल

मेहता जीवनसिंहजीका पुस्तकालय

बोर्डिंग हाउस

गौतम ब्रह्मचर्याश्रम देहली दरवाजा

दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस

श्वेताम्बर जैन बोर्डिंग हाउस

शहरकी सफाई और सुव्यवस्थाके लिए यहांपर म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्थापित है। इसके मेम्बर हर तीसरे वर्ष पब्लिकमें से चुने जाते हैं। यह कार्पोरेशन शहरकी सफाई और लोगोंकी स्वास्थ्यरक्षाके लिए व्यवस्था करता है। फिर भी इन्दौरके समान शहरको जितना साफ होना चाहिए उतना साफ वह नहीं दिखलाई देता है। इस शहरकी बसावट बहुत सङ्कीर्ण और घिचपिच है। जिससे साधारण श्रेणीके लोगोंको शुद्ध और साफ हवा नसीब नहीं होती। यहांकी बहुतसी गलियां गन्दी और दूषित वायु युक्त रहती हैं। नगरकी सदर सड़कें भी जितनी साफ होना चाहिए उतनी साफ नहीं हैं। किसी मोटरके पाससे होकर गुजरते ही, उससे उड़नेवाली धूलसे रास्ता चलनेवालोंको परेशानी हो जाती है। जब कि जयपुर इत्यादि शहरोंमें, सड़कोंके सुधारकी ओर इतना ध्यान दिया जा रहा है, वैसी हालतमें इन्दौरके समान बड़े हुए शहरमें इस प्रकारका सुधार न होना आश्चर्य जनक बात है। इन्दौरकी गवर्नमेण्ट, और म्युनिसिपल कार्पोरेशनको शहरकी सफाई और सड़कोंके सुधारकी ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। गर्मीके दिनोंमें इस शहरमें पानीकी भी बड़ी खींच हो जाती है। जिससे कई दफे साधारण वर्गको बड़ी तकलीफ होती है। राज्यकी ओरसे इस कष्टको दूर करनेका प्रयत्न हो रहा है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

हम ऊपर लिख आये हैं कि अफीमके व्यवसायके बन्द होते ही, इन्दौरमें रुईका व्यवसाय चमका, जिससे यहांकी फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीजमें बहुत अधिक तरक्की हुई। इन्दौरकी गवर्नमेण्टने भी यहांके औद्योगिक कार्य्यमें काफी सहायता की। उसने मिल, जीन, प्रेस तथा दूसरी फैक्टरियोंके सम्बन्धमें उदार नीतिसे काम लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्दौर शहर फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीजकी दृष्टिसे आज सारे मध्य भारतमें प्रथम श्रेणीका है। यहांकी फैक्टरीजका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मिल्स

(१) दी स्टेट मिल्स लिमिटेड—यह सेण्ट्रल इण्डियामें सबसे प्रथम स्थापित होनेवाली मिल है। इसे इन्दौरकी गवर्नमेण्टने खोला था। इस समय यह मिल यहांके सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ठेकेमें है।

(२) दी मालवा युनाइटेड मिल्स लिमिटेड—यह मिल यहांके सर सेठ हुकुमचंदजीकी प्रेरणासे सन् १९०९ में पन्द्रह लाख रुपयेकी पूंजीसे आरम्भ किया गया। इसके मैनेजिंग एजण्ट बम्बईके ... मिल मालिक सर करीमभाई इब्राहीम हैं। इस मिलके वर्तमान मैनेजर मी० नूरमहम्मद हैं।

इस समय इस कम्पनीके संचालक सेठ कल्यानजी दामोदरके पौत्र सेठ चरणदास विट्ठलदास हैं। आपकी फर्म इस मिलकी सेक्रेटरी, ट्रेझरर और मैनेजिंग एजंट हैं। इस मिलके मैनेजर मि० देवचन्द पुरुषोत्तम सराफ बड़े योग्य व्यक्ति हैं।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके व्यवसायका पूरा परिचय ब्यावरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर रुई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स सिद्धकरण जसकरण

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास किशनगढ़ है। आप ओसवाल कोठारी जातिके हैं। यह दुकान यहां बहुत वर्षोंसे सराफीका धंधा करती आ रही है। इस फर्मपर पहिले दीपकरन सिद्धकरण नाम पड़ता था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सिद्धकरण जी और आपके पुत्र जसकरणजी हैं आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री जसकरणजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

किशनगढ़—मेसर्स सिद्धकरण जसकरण-यहां चांदी, सोना, जवाहरात तथा रहनका काम होता है।

किशनगढ़—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार और आसामी लेन देनका काम होता है।

मदनगंज—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

मदनगंज—पेमराज जसकरण-यहां गोटा किनारीका व्यापार होता है।

रूई और जीरेके व्यापारी तथा कमीशन एजण्ट

कस्तूरमल गुलाबचन्द
गनेशलाल घीसालाल
गुलराज पूनमचंद
गोपीलाल कस्तूरमल
चम्पालाल रामस्वरूप
छोगालाल मोतीलाल
नारायण मोतीलाल
बरदीचन्द मेघराज
बालूराम मुरलीधर
बुधसिंह उदयसिंह
रामधन केशरमल
रतनचंद जतनचन्द
राधामोहन गुलाबचन्द
रूपचन्दलाल
सूरजमल कनकमल

हुकुमचन्द मिल्स नं० १ लिमिटेड इन्दौर

हुकुमचन्द मिल्स नं० २ लिमिटेड इन्दौर

राजकुमार मिल्स लिमिटेड इन्दौर

उपरोक्त मिलोंके अतिरिक्त यहां पर करीब दस, ग्यारह जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां भी चलती हैं। कुछ दिनों पूर्व यहां पर एक मरा फैक्टरी भी चलती थी। बीचमें वह बन्द हो गई थी, अब सुननेमें आता है कि वह फिरसे चलनेवाली है।

इन फैक्टरियोंके अतिरिक्त शहरके दूसरे उद्योग धन्धे भी अच्छी उन्नतिपर हैं। इन उद्योग धन्धोंमेंसे सरकारी मिस्त्रीखाना, रेशमका कारखाना, आयर्न एएड ब्रास फैक्टरी, ब्रिक फ़ैक्टरी (ईंटोंका कारखाना); मोजेकी फैक्टरी (महाजन ब्रदर्स) इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस शहरमें लकड़ीकी खुदाईका काम, तथा सोने और चांदीके पालिसदार, सादे और नक्काशीदार बर्तनोंके बनानेका काम अच्छा होता है। यहांकी सेण्ट्रल जेलकी दरियां भी बहुत मजबूत और टिकाउ बनती हैं। यहांपर जोली क्लब नामक एक औद्योगिक संस्था स्थापित है। इस संस्थामें बेंत तथा सुनारी सम्बन्धी काम बहुत अच्छे होते हैं। यहांपर काम सीखनेवाले विद्यार्थियोंको सब प्रकारकी औद्यगिक शिक्षा दी जाती है। इन्दौरके पास ही महेश्वर नामक स्थान है। यहांकी साड़ियां भारत प्रसिद्ध हैं। पहलेके जमानेमें यहांकी साड़ियां प्रायः सारे दक्षिण प्रान्तमें जाती थीं, अब भी बम्बई आदि स्थानोंमें यहांसे बहुत काफी साड़ियां जाती हैं।

कृषि विभाग

राज्यकी कृषि और किसानोंकी उन्नतिके लिए यहांकी गवर्नमेन्टने यहांपर एक संस्था खोल रक्खी है। यह संस्था प्रसिद्ध कृषिविद्या विशारद मि० हार्वर्डकी अध्यक्षतामें कृषि सम्बन्धी कई नये २ अनुभव प्राप्त करनेकी चेष्टा कर रही है। इसके द्वारा स्टेटके किसानोंकी उन्नतिके लिये उपयोगी साहित्य भी प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। हालहीमें इस संस्थाकी ओरसे "किसान" नामक एक छोटे परन्तु सुन्दर और उपयोगी मासिक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है।

ऑनर्स, क्लॉथ मर्चेण्ट्स, इत्यादिमें बहुत बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियोंका है। मारवाड़ियोंके पश्चात् कच्छी और बोहरा समाजका नम्बर है। इनमें अधिकांश जनरल मर्चेण्ट्स, डिप्टे व्यापारी, लोहका सामान बेचनेवाले इत्यादि हैं।

इन्दौरके व्यापारिक स्थान

(१) काटन-मार्केट—यहां रूईका बहुत बड़ा जत्था है। यहां मौसिमके समय सैकड़ों कपास गाड़ियां बिकनेके लिये आती हैं। मिलोंकी खरीदी होनेकी वजहसे बाहरके व्यापा भी अपना माल यहां विक्रयार्थ भेजते हैं।

(२) सियागंज—इन्दौर स्टेशनके समीप ही यह बाजार महाराजा शिवाजीरावके नामसे बसाया हुआ है। इस बाजारसे बाहर जानेवाले तथा यहांपर बाहरसे आनेवाले मालपर स्टेटकी तरफसे किसी प्रकारका कस्टम-महसूल नहीं लिया जाता। इस मंडीमें किराना,लोहा, चद्दर, तबा, एल्यूमिनियम तथा जनरल सामानका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां लाखों रुपयोंका माल बाहरसे आता, तथा यहांसे बाहर जाता है।

(३) जूना तोपखाना—इस बाजारमें जनरल मरचेंट्स, स्टोअर्स, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट तथा देन्ती क्लाथ मरचेंट्सकी बड़ी सुन्दर तथा सजी हुई दुकानें हैं।

(४) बड़ा सराफा यह बाजार इन्दौर नगरके मध्यमें है यहांपर रूईके वायदेका बहुत बड़ा सौदा होता है। वायदेके सौदेमें सेंट्रल इण्डियाके सब बाजारोंमें इसका स्थान प्रथम है। यहां दिन भर बड़ी चहल पहल तथा व्यापारिक गतिविधि होती रहती है। यहां बड़े २ धनिकोंकी दुकाने हैं, तथा बैंकिङ्ग बिजिनेस भी होता है।

(५) छोटा सराफा—यह सोना, चान्दी, और जवाहरातका छोटासा तथा सुन्दर बाजार है। पहले यहांके बनाए हुए जेवरोंमें मिलावटका बहुत अधिक अंश रहता था, लेकिन कुछ समय हुआ इन्दौर सरकारने इस पद्धतिमें बहुत कुछ सुधार करनेका कानून बना दिया है। सोनेचांदीके व्यापारके अतिरिक्त यहांपर शेअरोंका सौदा भी होता है।

(६) न्यू क्लाथ मार्केट – कपड़ेका यह सुन्दर बाजार बड़ी ही व्यवस्थामय पद्धतिपर महाराजा तुकोजी रावके नामसे बनाया गया है। इस मार्केटमें इन्दौरके प्रायः सभी मिलोंकी तथा और भी कपड़ेके बड़े २ व्यापारियोंकी दुकाने हैं। इस मार्केटमें कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। लाखों रुपयोंका कपड़ा यहांपर बाहरसे आता जाता है।

(७) बजाज खाना—यह कपड़ेका पुराना बाजार है। न्यू क्लाथ मार्केटके स्थापित होनेके पहले कपड़ेके प्रायः सभी बड़े २ व्यापारियोंकी दुकानें यहांपर थीं। अब यद्यपि बहुतसी दुकानें इस मार्केटमें चली गई हैं, तोभी यहां पर कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

मिल ऑनर्स

मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर राज्यभूषण सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी० हैं। आप उन प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमेंसे हैं, जो अपने समय और अपने क्षेत्रके इतिहासमें अपना नाम अमर छोड़ जाते हैं। आपके जीवनका इतिहास एक अत्यन्त सफल व्यवसायिक इतिहास है जो इस लाइन प्रवेश करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके लिए उत्साह वर्द्धक है।

सर सेठ हुकुमचन्दजीका जन्म विक्रम संवत् १९२१ के आषाढ़ मासमें हुआ था। आपके पितामहका नाम सेठ माणिकचंदजी था। आप उस समयकी प्रसिद्ध फर्म माणिकचन्द मगनीरामके स्वामी थे। आपके पांच पुत्र हुए थे, जिनमेंसे दो बाल्यावस्थाहीमें स्वर्गवासी होगये थे, बाकी तीन पुत्रोंमें सबसे बड़े स्वरूपचन्दजी, मझोले ओंकारजी और छोटे तिलोकचन्दजी थे। संवत् १९५८ में आप तीनों भाई अलग २ हुए।

अफीमका व्यवसाय—

सेठ हुकुमचंदजीने पन्द्रह वर्षकी वयसेही व्यापारके कार्य्योंमें भागलेना प्रारम्भ किया। आपको अपने पिताजीसे केवल आठ लाख रुपयेकी सम्पत्ति प्राप्त हुई थी, मगर आपने अपनी प्रखर बुद्धि और तीव्र मेधाशक्तिसे अपनी सम्पत्तिको बढ़ाना प्रारंभ किया। उससमय आपकी दुकानपर अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय होता था। उस व्यापारमें आपने अपने साहसके बलपर बहुत सम्पत्ति उपार्ज्जन की। सन् १९०९-१० में भारत सरकारने अपनी अफीम सम्बन्धी नीतिमें परिवर्तन किया। उस समय सेठजीके व्यापारिक साहसने अपना जौहर दिखाया, आपने भावी लाभकी आशासे, निःशंक होकर छः सात हजार अफीमकी पेटियोंके करीब चालीस लाख रुपये सन्नेके गवर्नमेंटमें भर दिये। कुछ ही दिनों पश्चात् गवर्नमेंटने सन्नेकी हुण्डी लेना बन्द कर दिया, और सन्नेका भाव बाजारमें बढ़ताही गया। इधर सेठजीने मालवेमें जगह २ अफीम खरीदना प्रारम्भ कर दिया और उसकी पेटियां बना २ कर चीन और शंघाई भेज दीं। आगे जाकर दो २-२॥ हजार लागतकी वही पेटियां दस २ हजार तक बिकी जिसमें सेठजीको करोड़ों रुपयोंका एक साथ लाभ हुआ।

पातल पानी—यहांसे दो स्टेशनों की दूरीपर विन्ध्याचलके अञ्चलमें यह बड़ा सुन्दर स्थान है। यहांका प्राकृतिक दृश्य बहुत ही रमणीक है। बरसातके दिनोंमें यहांका दृश्य बड़ा ही अपूर्व और दर्शनीय हो जाता है। यहांपर चोरल नदीका झरना बहुत ऊंचाईसे गिरता है।

कालाकुण्ड—यह स्थानभी पातल पानीके पास ही है। यहां काले पत्थरोंसे घिरा हुआ निर्मल नीरका एक सुन्दर कुण्ड बना हुआ है।

महेश्वर—नर्मदा नदीके तीरपर बसा हुआ एक सुन्दर कस्बा है। यहांपर नर्मदाके किनारे प्रातः स्मरणीय देवी अहिल्या बाईके बनाए हुए घाट बहुत ही दर्शनीय हैं। नर्मदा नदीके अञ्चलमें सहस्र धारा नामक एक बड़ा ही सुन्दर स्थान है जहांकी प्राकृतिक छवि बहुत सुन्दर है। महेश्वरकी साड़ियां बहुत प्रसिद्ध है। यहांसे बम्बई इत्यादि दूर २ के स्थानोंपर साड़ियां जाती हैं।

राऊ—इन्दौरके पास ही एक छोटासा गांव है। इस गांवके पास बड़ा ही विशाल मैदान है यहांकी आबहवा बहुत साफ़ और अच्छी है। यहां क्षय रोगियोंके लिए एक सीनाटोरियम भी बना हुआ है। कुछ समयसे यहांपर मालव विद्यापीठ अर्वाचीन गुरुकुल नामक एक ब्रह्मचर्याश्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

केदारनाथ—इन्दौर राज्यके रामपुरा नामक ग्रामसे पांच मील दूरीपर एक बहुत सुन्दर प्राकृतिक स्थान बना हुआ है। यह स्थान बड़े ऊंचे २ रमणीक पहाड़ोंके बीचमें है। यहांपर पहाड़ोंसे जल झरता रहता है। यहां पहुंचते ही प्रत्येक मनुष्यकी तबीयतका प्रफुल्लित और पुलकित होना अनिवार्य्य है।

तक्षकेश्वर—इन्दौर राज्यान्तर्गत भानपुरा ग्रामसे करीब सात माईलकी दूरीपर यह स्थान बना हुआ है। बड़े २ ऊंचे पहाड़ोंके बीचमें निर्मल जलका एक विशाल कुण्ड है। जिसमें स्फटिक मणिकी तरह पहाड़ोंके झरावका शुद्ध जल झरता रहता है। इस कुण्डसे तक्षकी नामक एक नदी निकलती है। इस स्थानपर औषधि सम्बन्धी जड़ी बूटियां बहुत अधिक पैदा होती हैं। ऐसी किम्बदन्ती हैं कि आयुर्वेदके पिता महात्मा धन्वन्तरि जड़ी बूटियोंकी खोजमें अक्सर यहां आया करते थे। एकबार इसी स्थानपर तक्षक सर्पने उनको काटा, जिससे यहीं उनकी मृत्यु हुई, तभीसे यह स्थान तक्षकेश्वरके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

धर्मराजेश्वर—इन्दौर राज्यमें चंदवासा नामक ग्रामसे तीन मीलकी दूरीपर पहाड़ोंके बीचमें यह सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। इसकी कारीगरी बड़ी अपूर्व और दर्शनीय है। यह विशाल मन्दिर एक ही पत्थरको कोरकर बनाया गया है।

इस व्यवसायमें भी हाथ डाला। केवल हाथ ही नहीं डाला, प्रत्युत इस व्यवसायमें अपना कमाल दिखला दिया। जिन दिनों आप वेगवती गतिसे सट्टा करते थे उन दिनों बम्बई और कलकत्तेके बाजारोंमें आपके नामकी एक जबर्दस्त धाक पैदा होगई थी। बम्बईका टाइम्स आफ इण्डिया आपको "मार्केट्स प्रिन्स आफ् मालवा" लिखता था। आपने इस व्यवसायमें अपना व्यवसाय कुशल बुद्धिसे कई व्यापारियों और कम्पनियोंको शिकस्त दी। आपका उस समय मार्केट पर इतना प्रभाव होगया था कि कभी २ तो आपकी हलचल पर सैकड़ों व्यापारी खरीदी बेचवाली करने लगते थे। आपकी खरीदी बेचवालीसे कभी २ बाजार दस २ बीस २ टका तक ऊपर नीचे होजाया करता था। बम्बईके, गुजराती पत्र कभी कभी २ बाजारकी घटा बढ़ीपर नोट लिखते हुए लिखते थे "आज बजार अमुक भाव खुल्यो हतो पण इन्दौर ना जाणीता खिलाड़ी नीकलवाली थी पांच टका वधीगयो।" मतलब यह कि सट्टे इस व्यवसायमें लोगोंको आपके व्यापारिक साहसका बड़ा जबर्दस्त अनुभव हुआ। आपके विषयमें कहा जाता था कि पन्द्रह बीस लाख रुपयेका नफा नुकसान तो आप सिरहाने रखकर सोते हैं।

सट्टेको तिलाञ्जलि

यद्यपि सर सेठ हुकुमचन्दने लाखों करोड़ों रुपयोंका सट्टा किया और एक दिलचस्प आदमीकी तरह इसमें लगे रहे, मगर इस व्यवसायके अन्तिम परिणामसे आप भली प्रकार वाकिफ थे। इसकी बुराइयां आपको भली प्रकार ज्ञात थीं आप हमेशा कहा करते थे, कि यद्यपि मुझे इस व्यापारमें सफलता मिल रही है और दैव मेरे अनुकूल है फिर भी मैं जानता हूं कि यह व्यापार कितना क्षण-स्थायी है। मेरे देखते २ हजारों लखपति और करोड़पति इसमें बरबाद होगये। मतलब यह कि इस प्रकार सट्टेके विरुद्ध विचार पद्धति आपके हृदयमें बराबर बढ़ती रही और अन्तमें सन् १९२५ में आपने सट्टेको एकदम तिलाञ्जलि दे दी। यहांतक कि आपने भाव पूछना तक छोड़ दिया। इस घटनासे लोगोंको बड़ा भारी आश्चर्य हुआ। अब इस समय आपकी दुकानोंपर हाजिर व्यवसाय और मिलोंका कारोबार होता है और सेठ साहब भी सट्टेके अशान्तिमय जीवनसे निकलकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

व्यापारिक साहस

सेठ हुकुमचन्दजीका जीवन वास्तवमें व्यापारियोंके लिए अध्ययन करनेकी सामग्री है। आप की इतनी बड़ी व्यापारिक सफलताके रहस्यपर विचार करनेसे पता चलता है कि इस अन्तर्गत सफलताका मूल कारण सेठजीका बढ़ा हुआ व्यापारिक साहस है। एक व्यापार विशारदका कथन है कि "नफा सम्पत्तिमें नहीं है, नफा व्यापारमें नहीं है, नफा केवल मात्र जोखिममें है। इस

आप बड़े योग्य और कुशल मैनेजर हैं। इस मिलने अपने जीवनकालमें बहुत अच्छी उन्नति की। इसके शेअरका भाव एक समय सात सौ और आठ सौ तक पहुंचा गया था। इसी मिलके मुनाफेसे इसके अण्डरमें एक मुनाफा मिल और खोल दीगई है।

(३) दी हुकुमचंदमिल्स लिमिटेड—यह मिल सन् १९१४ ई०में पन्द्रह लाखकी पूंजीसे स्थापित हुआ। यह पूंजी सौ २ रुपयेके पन्द्रहहजार शेअरोंमें विभक्त की गई थी। जिस समय इस मिलकी मशीनरीके आर्डर विलायत गये थे उस समय यूरोपके राजनैतिक गगन मण्डलमें युद्धके बादल उमड़ते हुये दिखलाई देने लग गये थे। जिससे मिल मशीनरीके भावमें बहुत कुछ वृद्धि होगई थी। मगर सेठजीने उसकी कुछ चिन्ता न करते हुए मशीनरीका आर्डर दे दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि १९१५ में मिल चलना प्रारम्भ होगई। इधर मिल चलना प्रारम्भ हुआ उधर यूरोपीय महायुद्ध भी प्रारम्भ होगया। फल यह हुआ कि मिलके शेअरोंमें एक दम वृद्धि होने लगी और सौ २ के शेअर सात २ सौ में बिकने लगे। परिणाम स्वरूप इस मिलके नफेसे इसके अण्डरमें एक मुनाफा मिल और खोली गई। इस मिलसे आज तक एक शेअरके पीछे २३ डिवीडेण्डमें कुल मिलाकर ५२३) मुनाफा और १४६) कमीशन मिल चुका है। इस समय इस मिलमें ११५१ लूम्स और ४०५१२ स्पिंडिल्स हैं। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स सरूपचन्द हुकुमचंद हैं।

(४) दी कल्याण मल मिल्स लिमिटेड इस मिलकी स्थापना रा० ब० स्वर्गीय सेठ कस्तूरचंदजीके हाथोंसे हुई। इस मिलके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल हैं।

(५) दी राज कुमार मिल्स लिमिटेड-इस मिलकी स्थापना सन् १९२२ ई० में बाईस लाखकी पूंजीसे हुई। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स स्वरूपचंद हुकुमचंद हैं। इसमें ५२१ लूम्स और [illegible] स्पिंडिल्स हैं।

(६) दी नन्दलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड—यह मिल श्रीयुत नन्दलालजी भण्डारीने ३००००० की पूंजीसे स्थापित किया है। यह पूंजी १०० रुपयेके ३०००० शेअरोंमें विभक्त है। इसके मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी हैं। इसके मैनेजर श्री नन्दलालजी भण्डारीके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी हैं। आप एक सफल मैनेजर सिद्ध हुए हैं। आपकी व्यवस्थापिका शक्ति और बिजनेस माइण्डकी बड़ी प्रशंसा सुननेमें आती है।

(७) दी स्वदेशी मिल्स लिमिटेड—यह मिल पहले कुछ दिनोंतक चलकर बन्द हो गई थी। अब इसके फिरसे चलनेकी तैयारी हो रही है।

इन सब मिलोंका कपड़ा बड़ा टिकाऊ मजबूत और बढ़िया होता है। पंजाबकी तरफ इसका कपड़ा बहुत पहुंचता है। इन मिलोंमें धोती, पुत्र, साड़ी, रंगीन सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

जंवरीबाग धर्मशाला इन्दौर (सर से० हुकुमचन्द)

इन्द्रभवन इन्दौर (सर से० हुकुमन्द)

श्रीमती कंचनबाई मनूनिगर इन्दौर

काटन मिल्स—

अफीमका व्यवसाय बन्द होतेही सेठजीने बड़ी बुद्धिमानीके साथ रुईके व्यापारको पकड़ लिया और इस क्षेत्रमें अपना कमाल दिखाना प्रारम्भ किया। इस व्यापारने आपको भारत भरमें प्रसिद्ध कर दिया। समयकी गतिको पहचानकर तुरन्त आपने काटन मिल्स, इण्डस्ट्रीज इत्यादि सबके व्यवसायकी तरफ ध्यान दिया और सन् १९०९ में आपने मालवा युनाइटेड मिलको पन्द्रह लाखकी पूंजीसे जन्म दिया। तथा उसके मैनेजिङ्ग एजण्ट सर करीमभाई इब्राहीमको बना कर उन्हींको मिलका कुलभार सौंप दिया। आप केवल इसके स्थायी डायरेक्टर रहे। यह मिल आजतक बहुत अच्छे रूपसे चल रही है और अपने शेअर होल्डरोंको शेअरके मूल्यसे कई गुना मुनाफा बांट चुकी है। इसके पश्चात् आपने सन् १९१४ में दी हुकुमचन्द मिल्स और १९२२में श्री राजकुमारमिल्सको प्रारम्भ कर दिया। मिलोंमें होनेवाली आपकी अद्भुत सफलताको देखकर और भी कई लोगोंने आपका अनुकरण करना प्रारम्भ किया, जिसके फलस्वरूप आज इन्दौरमें छः सात मिलें दृष्टिगोचर होरही हैं।

जूटमिल्स—

इन्हीं दिनोंमें जब कि बरार, खानदेश, बम्बई, गुजरातकी तरफ रुईका व्यापार अपनी जोरोंसे उन्नति कर रहा था कलकत्ता और बंगालमें जूटका सितारा चमक रहा था। कलकत्तेमें जूटकी बहुतसी मिलें खुल रही थीं, मगर ये सब मिलें अंग्रेज पूंजीपतियोंकी थीं। लोगोंकी ऐसी भ्रममूलक धारणा हो रही थी कि जूटमिल्समें मारवाड़ियोंको सफलता नहीं मिल सकती और यही कारण था कि कलकत्तेमें अनेक धनकुबेर मारवाड़ियोंके होते हुए भी मारवाड़ियोंकी एक भी मिल न थी। सूक्ष्म दृष्टि सेठ हुकुमचंदजीकी निगाहोंमें यह क्षेत्र भी सूना नहीं था। आपने लोगोंके इस भ्रम-मूलक मिथ्या अपवादको असत्य सिद्ध करनेके लिए अस्सी लाखकी पूंजीसे ही हुकुमचंद जूटमिल्स का प्रारम्भ किया। जिस समय इन्दौरके बाजारमें इस मिलके शेअर बिकने आये थे, उस समय सारे बाजारमें धूम मच गई थी। लोग शेअर लेनेको इतने उतावले हो उठे थे, कि सेठजीकी दुकानपर सुबहसे शामतक भीड़ लगी रहती थी। इसका कारण यह था कि इस सफल व्यवसायीके साथ अपना पैसा लगाकर लोग उसका मीठा फल चख चुके थे। फल यह हुआ कि अस्सी लाखकी जगह करीब तीन चार करोड़के शेअरोंकी दरख्वास्ते आईं। बड़ी मुश्किलसे पांच शेअरकी दरख्वास्तके पीछे एक शेअर लोगोंको मिला। इस मिलनेभी बहुत तरक्की की। ७) वाले शेअरका भाव इस समय २८ है प्रति वर्ष अच्छा डिविडेण्ड भी यह मिल बांटती है।

वायदेका व्यवसाय

इधर तो सेठजी मिल और इण्डस्ट्रीजमें अपने सफल हाथोंको लगा रहे थे। उधर हिन्दुस्थानमें अत्यन्त शीघ्र गतिसे बढ़नेवाला रुईके वायदेका व्यवसाय भी आपकी आंखोंसे बाहर न था। आपने

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स *

यह प्रतिष्ठित खोजा खान्दान कच्छ मांडवीका रईस है। इस फर्मका हेड ऑफिस बम्बई है। भारतके प्रतिष्ठित मिल मालिक एवं कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है। इस फर्मकी स्थापना सर सेठ करीमभाई इब्राहिम प्रथम बेरोनेटके हाथोंसे हुई थी। सेठ करीम भाईने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग-धंधोंको आदर्श प्रोत्साहन दिया। आपने अपने जीवनमें कई मिलें स्थापित कीं। वर्तमानमें आपकी फर्म १३।१४ मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है। वर्तमान मालिक (१) सर फजल भाई करीम भाई (२) सेठ हबीब भाई करीम भाई (३) सेठ इस्माइल भाई करीम भाई (४) सेठ करीम भाई इब्राहिम तीसरे बेरोनेट (५) सेठ अहमद भाई सर फाजल भाई और (६) इब्राहिम भाई गुलामहुसेन भाई हैं।

आपकी इन्दौरमें करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्सके नामसे कपड़ेकी दुकान है। जिनपर आपके मैनेजमेंटमें चलनेवाली मिलोंके कपड़ेका थोक व्यापार होता है। इन्दौरके प्रसिद्ध मालवा युनाइटेड मिलकी मैनेजिङ्ग एजंटकी यह फर्म है। T. A Creson)

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल *

इस प्रतिष्ठित फर्मके संस्थापक श्रीमान् सेठ तिलोकचन्दजी, श्रीसेठ स्वरूपचन्दजीके छोटे भ्राता थे। संवत् १९५८ में ये तीनों फर्म अलग २ हुईं, और तबसे तिलोकचन्दजीके पुत्र श्रीमान् स्वर्गीय सेठ कल्याणमलजीने इस फर्मके कार्य्यको बढ़ाना प्रारम्भ किया। आपने व्यापारमें बहुत अच्छी प्रगति और प्रतिष्ठा प्राप्त की। एवं कल्याणमल मिल्स लि० के नामसे एक मिलकी भी स्थापना की। इस मिलका कपड़ा बड़ा मजबूत, टिकाऊ और सुन्दर निकलता है। श्री सेठ कल्याणमलजीका करीब दो वर्ष पूर्व देहान्त हो गया है। आप बड़े मिलनसार, उदार, और ज्ञानी सज्जन थे। आपकी उदारता सारे इन्दौरमें प्रसिद्ध थी।

आपने सार्वजनिक कार्य्योंमें भी खूब भाग लिया है। अपने पिताजीकी स्मृतिमें करीब ढाई लाख रुपयोंकी लागतसे एक हाईस्कूल खुलवाया है। जो इस समय भी बड़ी सफलताके साथ चल रहा है। इसके अतिरिक्त कल्याण औषधालय, जैन मन्दिर, कल्याण मातेश्वरी कन्या पाठशाला आदि और भी आपकी कई संस्थाएं हैं जिनमें आपने लाखों रुपयोंका दान किया है।

---

* इस फर्मका परिचय विस्तृत रूपसे चित्रों सहित बम्बई विभागमें मिल मालिकोंमें [illegible] दिया गया है।

* इस फर्मका विस्तृत परिचय लगातार चेष्टा करनेपर भी हमें प्राप्त न हो सका। अतएव हम अत्यन्त खेदके साथ अपनी जानकारीके अनुसार थोड़ासा परिचय दे रहे हैं।

व्यक्ति जितनी ही अधिक जोखिममें पड़नेका साहस रक्खेगा वह उतनीही अधिक सफलता सम्पादित करेगा। जो व्यक्ति पूंजी, और व्यापारके रहते हुए भी जोखिममें पड़नेकी ताकत नहीं रखता वह कभी आशातीत सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।" सर सेठ हुकुमचन्दके जीवनमें यही तत्त्व सबसे अधिक काम करता हुआ दिखलाई दे रहा है। आपने व्यापारके प्रारम्भसे ही बड़े २ जोखिम पूर्ण व्यापारिक कामोंमें पड़ना शुरू किया। शुरूमें आपने ४० लाख रुपये अफीमकी पेटियोंके खरीदनेके लिए गवर्नमेण्टमें भरे और फिर भीषण यूरोपीय युद्धके समय आपने विलायत मशीनरीका आर्डर दिया, फिर लोक किम्वदन्तीके विरुद्ध कलकत्तेमें जूट मिलकी स्थापना की और सट्टेमें तो आपने जोखिम उठानेमें हद कर दी, यहांतक कि कभी २ तो करोड़ों रुपयेके नफे नुकसानकी जोखिम पड़ गये। इसी बढ़े हुए व्यापारिक साहसका यह परिणाम है कि आज सर सेठ हुकुमचन्दने सारे भारतके व्यापारिक समाजमें और भविष्यके व्यापारिक इतिहासमें अपना एक खास स्थान प्राप्त कर लिया है

राजकीय सम्मान

केवल व्यापारिक जगत्में ही नहीं इन्दौर गवर्नमेण्ट और भारत गवर्नमेण्टमें भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। भारत गवर्नमेण्टने आपको पहले रायबहादुरके खिताबसे और उसके पश्चात् सरनाइटके सम्माननीय पदसे सम्मानित किया। इन्दौर गवर्नमेण्टने भी आपको "राज्यभूषण" का पद प्रदान किया।

सेठजीके महल

सेठ हुकुमचन्दजीको सुन्दर और नये ढङ्ग मकान बनानेका हमेशासे बड़ा चाव रहा है। इन्दौर, बम्बई, कलकत्ता, उज्जैन आदि स्थानोंमें आपकी बड़ी २ आलीशान इमारतें बनी हुई हैं। खासकर इन्दौर तो आपकी इमारतोंसे जगमगा रहा है। सरकारी इमारतोंके सिवाय इन्दौरमें यदि कोई देखने योग्य वस्तु है तो आपकी इमारतें हैं। कई इमारतोंको तो छोटी २ त्रुटियोंके कारण—आपने गिरवा २ कर दुबारा बनवाई है। इन इमारतोंमें शीशमहल, रंगमहल, इन्द्रभुवन आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनका परिचय पहले दिया जा चुका है।

सार्वजनिक कार्य्य

सेठजीको ज्यों २ व्यापारमें सफलता मिलती गई त्यों २ आपका सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी उत्साह बढ़ता गया। आपने सभी लाइनोंमें अपनी उदार दान प्रवृत्तिका परिचय दिया। मुसाफिरोंके आरामके लिए विशाल धर्मशाला बनवाई, विद्यार्थियोंकी शिक्षाके लिए बोर्डिंग हाउस और जैन महाविद्यालयका निर्माण करवाया। स्त्रियोंकी शिक्षाके लिए श्राविकाश्रमकी योजना की। बीमारोंके लिए सुन्दर औषधालय खुलवाया, स्त्रियोंके प्रसूति कष्टोंको निवारण करनेके लिए प्रसूति

श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी शिक्षित, उद्योगी एवम् गंभीर व्यक्ति हैं। आपही की वजहसे नन्दलाल भण्डारी मिल और स्टेट मिलका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है। आपकी मैनेजिंग-शिपमें भण्डारी मिलने बहुत तरक्की की है।

श्री० सेठ नन्दलालजीने एक मिडिल स्कूल स्थापित कर रक्खा है। वर्तमानमें इसका वार्षिक व्यय ४०००) के करीब होता है। आपका विचार निकट भविष्यमें ही इसे हाइस्कूल करनेका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी—यहां रुई, और कपड़ेका व्यापार होता है। यह फर्म यहांकी स्टेट मिल एवम् भण्डारी मिलकी मैनेजिंग एजन्ट है।

इन्दौर—जानकीलाल सुगनमल तोपखाना—यहां कपड़ेका व्यवसाय होता है। खासकर ऊन और रेशमके कपड़ेका ज्यादा व्यापार होता है। इसमें सेठ जानकीलालजी मैन्याका साझा है।

झिया—यहां आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

हुकुमचन्द जैन बोर्डिङ्ग हाउस इन्दौर

जैन मंदिर शीशमहल इन्दौर (स० सं० हुकुमचन्द)

ओंकार भवन (रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द) इन्दौर

दुकान (रा० ब० ...

कुंवर हीरालालजी
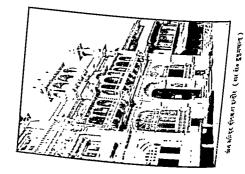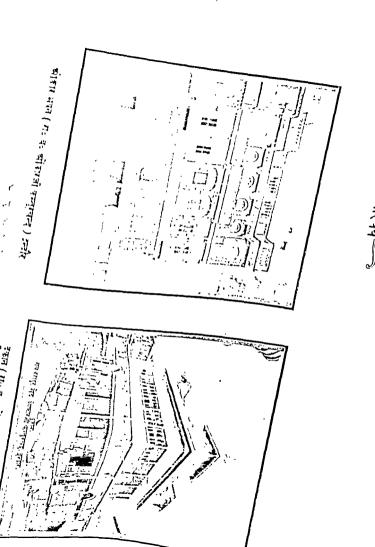
आप सरसेठ हुकुमचन्दजीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप जयपुरसे सेठ साहबके यहां दत्तक आये हैं। आपका स्वभाव बहुत शांत और गम्भीर है। आपकी उदारता और सादगी बहुत बढ़ी चढ़ी है। करोड़पतिकी सन्तान होते हुए भी आपकी हृदयकी निराभिमान वृत्ति और उन्नत स्वभावको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। धनाढ्य पुरुषोंकी सन्तानोंमें आपका स्वभाव एक अपवाद स्वरूप है यह कहना भी अत्युक्ति पूर्ण न होगा। अभीतक आप राजकुमार मिलके मैनेजरके पदपर काम करते थे। आपके व्यवहारसे वहांका सारा स्टॉफ बड़ा सन्तुष्ट रहता था। हाल हीमें आप स्व० रा० ब० सेठ कल्याणमल जीकी गद्दीके उत्तराधिकारी हुए हैं।

आप पोलो खेलनेमें बड़े प्रवीण हैं। यहांतक कि भारतके वैश्य समाजमें शायद ही कोई आपके समान कुशल खिलाड़ी होगा। इस खेलमें आपने कई बार कप्स और मेडल्स भी प्राप्त किये हैं। पोलोहीकी तरह टेटपिगिंग नामक खेलमें भी आपने कईबार यूरोपियनोंसे बाजी जीती है। चांदमारी और तैरनेकी कलामें भी आप बड़े निपुण हैं। मतलब यह कि स्वास्थ्य और स्वभाव दोनों ही दृष्टिसे आप बहुत उन्नत हैं। आपके सामाजिक विचार भी बहुत सुधरे हुए हैं।

कुँवर राजकुमारसिंह

आप सेठजीके औरस पुत्र हैं। इस समय मेयोकॉलेज अजमेरमें शिक्षा लाभ कर रहे हैं। सेठ साहबका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है: —

(१) इन्दौर—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. "Sethaji") इस दुकानपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द ३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A. Kashaliwal) इस दुकानपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी, जूट, और कपड़ेकी एजन्सीका कार्य्य होता है। यहींपर जूट मिलका ऑफिस भी है।

(३) बम्बई—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द (T. A. Season) यहां बैङ्किग बिजिनेस होता है।

(४) उज्जैन—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. Lucky) यहां भी बैङ्किग बिजिनेस होता है।

(५) खामगांव —मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत (T. A. Season) इस दुकानपर रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है। इसमें बम्बईके मशहूर व्यवसायी मामराज रामभगतका साझा है।

इन दुकानोंके अतिरिक्त राजकुमार मिलकी तथा हुकुमचन्द मिलकी इन्दौर, बम्बई और कानपुरमें अलग दुकानें हैं। जिनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।

सेठ कस्तूरचंदजीको पुस्तक पठन और बागायतसे बड़ा प्रेम है आपने अपने तुकोगंजके सुन्दर अनोप भवनमें एक अच्छी लायब्रेरी स्थापित कर रक्खी है। तुकोगंज, लापरिया भैरों और भंवूरीमें आपके अच्छे बगीचे बने हुए हैं।

सेठ कस्तूरचंदजीका प्रथम विवाह सन् १९०० में सेठ विनोदीराम बालचंदके यहां, दूसरा १९१५ में देहलीके सेठ सोहनलाल प्रभुदासके यहां और तृतीय विवाह सन् १९११ में रतनलाल गुलाबचंद सिंघी जयपुरवालोंके यहां हुआ।

सेठ कस्तूरचंदजीने अपने मित्र कर्नल सर जेम्स रावर्ट्सके स्मरणार्थ रेसिडेंसी इन्दौरमें करीब १७ हजार की लागतसे रावर्टनरसिंह होम बनवाया। स्थानीय किंग एडवर्ड मेमोरियल हॉस्पिटलमें १ लाख रुपयोंकी लागतसे एक आउट पेशेन्ट वार्ड (बाहरसे आये बीमारोंके लिये) बनवाया। तथा राऊके सेनेटोरियममें एक स्पेशल यूरोपियन वार्ड बनवाया। महाराजा तुकोजीराव हास्पिटलमें भी आपने अपने तीनों भाइयोंके नामसे करीब २५ हजारकी लागतसे महाजन वोर्ड बनवाया। आपके पिता श्री सेठ ओंकारजीके स्मरणार्थ खेड़ीघाटमें ओंकार बाग नामकी एक भव्य एवं सुन्दर धर्मशाला व जैन मंदिर १ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया। यहां जैनियोंका सिद्धवरकूट और वैष्णवोंका ओंकारेश्वर तीर्थ होनेसे हजारों यात्री प्रति वर्ष यहां आते हैं। इस स्थानसे सेठ साहबको विशेष प्रेम है। प्रति वर्ष आप उक्त धर्मशालामें सम्पत्ति लगाते रहते हैं।

आपने दीतवारिया बाजारमें अपने भाइयोंके साथ डेढ़ लाख रुपयोंकी लागतसे एक दर्शनीय सुन्दर जैन मन्दिर बनवाया है। लार्ड और लेडी रीडिंग जब इन्दौर आये थे, तब इस मंदिरकी सुन्दरता को देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। आपकी ओरसे लेडी ओडवायर कन्या पाठशाला रेसिडेंसीमें एक मेनहाल भी बना हुआ है। गरीब और अनाथ लोगोंको भोजन एवं वस्त्रके लिये आपकी फर्मके धर्मादे खातेसे प्रति वर्ष ७ हजार रुपयोंका प्रबंध है। सन् १९१०,१४ और २७ में आपने अपने बहुतसे ज्ञाति बांधवोंको साथ लेकर तीर्थ यात्रा की और उसमें करीब ५० हजार रुपये व्यय किये। इन्दौरके किङ्गएडवर्ड मेडिकल स्कूलमें मेडिशियंस और मिडवाइफकी परीक्षामें प्रथम श्रेणीमें पास होनेवाले विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्वर्ण पदक दिये जाते हैं।

सन् १९११ में देहली दरबारमें सेंट्रल इण्डियाकी तरफसे सेठ कस्तूरचन्दजी मेहमान होकर गये थे, वहां राजा महाराजाओंके साथ क्वीन्सवे सिटीके अन्दर स्वतंत्र केम्प बनानेके लिये आपको स्थान मिला था। कई हजारकी लागतसे आपने देहलीमें अपना केम्प बनवाया था। वहां उस समय सम्राट जार्ज पंचमने स्वर्गीय एडवर्ड सप्तमके अश्वारोही पुतलेकी स्थापना की थी उसमें भी आपने १०००) दिये थे। सन् १९१२ की प्रथम जनवरीके दिन आपको गवर्नमेंटने राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया।

मेसर्स वगतरामजी वच्छराजी

इस फर्मके संस्थापक श्रीमान् सेठ वगतरामजी हैं। आप नागोर (जोधपुर राज्य) निवासी माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। आपके हाथोंसे करीब १०० वर्ष पहिले इस दुकानकी स्थापना [illegible] हुई थी। पश्चात् आपके पुत्र रामसुखजीने इस दुकानकी तरक्की की। सेठ [illegible] वच्छराजजीने इस फर्मके व्यापारको और भी बढ़ाया और इन्होंने कई स्थानोंपर [illegible] शालाएं स्थापित की। हिज हाइनेस महाराजा तुकोजीराव द्वितीयने इस दुकानके [illegible] बहुत प्रोत्साहन दिया, तथा इस फर्मके लिये स्पेशल रूपसे आधा महसूल कर दिया। [illegible] इस दुकानका बहुत मान होने लगा। दरबारमें भी इस फर्मको ऊंची कुर्सी मिलने लगी। [illegible] ग्यारह पंचोंमें भी आपको स्थान मिला। वच्छराजजीकी मृत्युके पश्चात् [illegible] लाख रुपये दान किये। उनके कोई पुत्र न होनेसे उन्होंने श्रीकिशनलालजीको गोद [illegible] पर वे केवल २५ वर्षकी आयुमें ही स्वर्गवासी हो गये थे। इनके भी कोई पुत्र होनेसे इस [illegible] मांगीलालजी दत्तक लाये गये। सेठ मांगीलालजी श्रीस्वामी सम्प्रदायके अनुयायी हैं। [illegible] एक मंदिर सूरतमें पचास हजारकी लागतका, एक मन्दिर उज्जैनमें [illegible] लागतका, एक मन्दिर पुष्करमें पांच हजार रुपयेकी लागतका बनवाया। [illegible] तरफसे हृषीकेशमें (पचास हजार रुपया) और पद्मावतीपुरी ([illegible] चल रहे हैं। इन अन्नक्षेत्रोंमें साधु सन्त और विद्यार्थी भोजन पाते हैं। [illegible] पुरीमें प्रनामी धर्म प्रबन्ध कमेटी स्थापित हुई है, इसके प्रेसिडेण्ट भी [illegible] २१०००) दान किये हैं।

आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) इन्दौर—सेठ वगतराम वच्छराज—इस दुकानपर रुई और [illegible] होता है।

(२) उज्जैन—श्रीकिशन गोविन्दप्रसाद—यह दुकान उज्जैनमें [illegible] करती है।

(३) इन्दौर केम्प—हीरालाल मांगीलाल—इस दुकानपर [illegible]

(४) खरगोन—किशनलाल मांगीलाल—रुई कपास और [illegible]

(५) शोलापुर—मांगीलाल [illegible]—इस दुकानपर [illegible] है।

स्व० रायबहादुर सेठ कल्याणमलजी इन्दौर

रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी इन्दौर

सन्तोषभवन (रा० ब० [illegible]

इस समय आपकी गद्दीपर श्री कुं० हीरालालजी प्रतिष्ठित हैं। आपके खानदानका संक्षिप्त परिचय पहले दिया जा चुका है।

इस समय इस फर्मकी इन्दौर, बम्बई, उज्जैन और मोरेनामें ब्रांचेस खुली हुई हैं। जिनपर खासकर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नन्दलालजी भण्डारी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। यों तो आपके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान सारड़ो (जोधपुर) का था पर आपको मालवा प्रान्तमें बसे बहुत समय हो गया। आजकल आपका निवास स्थान वनुण (इन्दौर-स्टेट) है।

इस फर्मकी स्थापना श्री० सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ही हाथोंसे हुई। प्रारम्भमें आपने कपड़ेकी दुकान स्थापित की। आपका सरकारी कर्मचारियोंसे अच्छा परिचय था। अतएव आपका माल काफी तादादमें बिक्री होने लगा और आपको अपने व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। कपड़ेके साथ २ आप अफीमका व्यवसाय भी करते थे। उन दिनोंमें इन्दौर का बाजार भारत वर्षमें अफीमके लिये मशहूर था। अतएव कहना न होगा कि आप भी उस समय अफीमके अच्छे व्यापारी हो गये थे। इसके पश्चात् यूरोपीय महाभारतके समय भी आपको कपड़ेमें बहुत अधिक लाभ हुआ।

आपने सन् १६१९ में सेन्ट्रल इंडियामें सर्व प्रथम स्थापित होनेवाले दी स्टेट मिल्स नामक मिलको २० सालके लिये ठेकेपर लिया। उस समय इस मिलमें मोटा कपड़ा निकलता था। आपने इसमें करीब ५ लाख रुपया लगाकर बारीक कपड़े बुननेके संचे लगवाये। इससे स्टेट मिलकी उन्नति हुई और उसमें लोकोपयोगी अच्छा कपड़ा निकलने लगा। इसके पश्चात् आपने ६॥ लाख रुपयेकी पूंजीसे चिप्रा नदीके तटपर चिप्रा नामक ग्राममें एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी बनवाई।

सन् १६२५ ई० में आपने अपने मैनेजमेंटमें ३० लाखकी पूंजीसे "दी नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड" नामक एक मिलकी स्थापनाकी। यह मिल यहांके अच्छे मिलोंमें समझा जाता है।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। प्रथम श्री० कन्हैयालालजी द्वितीय श्री० मोतीलालजी एवम् तृतीय श्री० सुगनमलजी हैं। इनमेंसे श्री० कन्हैयालालजी भंडारी मिलका, श्री० मोतीलालजी कपड़ेकी दुकानका एवम श्रीयुत सुगनमलजी स्टेट मिलके कार्यका संचालन कर रहे हैं।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके प्रधान संस्थापक सेठ रामप्रतापजीने संवत् १९०१ में फतहपुर (जयपुर) से आकर इन्दौरमें निवास किया। सेठ रामप्रतापजी पर महाराज तुकोजीराव होलकर द्वितीयका बड़ा विश्वास था। संवत् १९१९ में आपहीके द्वारा राज्यके खजानेसे हुंडी खातेका लेनदेन साहुकारोंसे शुरू हुआ। आप उस समय अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय करते थे। सेठ रामप्रतापजीके परिश्रम एवं मध्यस्थीसे सरकारी खजानेमें अफीमके द्वारा २५ लाख रुपयोंका लाभ हुआ था। उपरोक्त लाभके उपलक्ष्यमें आपने सरकारसे किसी प्रकारकी उजरत या कमीशन नहीं लिया था। जिस समय होलकर स्टेट रेलवे खोलनेका निश्चय हुआ उस समय ब्रिटिश सरकारको १ करोड़ रुपया देनेके बारेमें आप मध्यस्थ मुकर्रर किये गये थे। सेठ रामप्रतापजी ११ पञ्चोंमें आगेवान थे। सेठसाहबने कई बार महाराजा तुकोजीराव एवं महाराजा शिवाजीरावको अपने घरपर निमंत्रित किया था। आपका देहावसान सन् १९२५ हुआ, उस समय आपके पुत्र हरविलासजीकी उम्र ५१ वर्षकी थी। सेठ रामप्रतापजीको कई बड़े २ आफिसरोंकी ओरसे प्रमाण पत्र मिले हैं। रा० ब० नानकचन्दजी भूतपूर्व मिनिस्टर आपके लिये लिखते हैं कि "मैं अपने ३२ सालके अनुभवसे कह सकता हूं कि मैंने सेठ रामप्रतापजी और उनके पुत्र हरविलासजीको सदैव पूर्ण विश्वासपात्र तथा ईमानदार पाया"। कर्नल सर डेविड बार ५ जून १९२० के पत्रमें आपके लिये लिखते हैं कि "मैं सेठ रामप्रतापजीको सन् १८४० से जानता हूं। सेठ रामप्रताप हरविलासकी फर्म उस समय समस्त मालवा प्रांत तथा बम्बईमें प्रसिद्ध थी। महाराज तुकोजीराव इन्हें बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। ईसवी सन् १८९० की आकस्मिक मंदीकी वजहसे मालवाके कई अफीमके बड़े २ व्यापारियोंको बहुत नुकसान पहुंचा, उनमें सेठ रामप्रतापजी बहुत भी अधिक घाटेमें थे।"

इस समय इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ हरविलासजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आप ११ पञ्चोंके सदस्य हैं एवं आपको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स रामप्रताप हरविलास बड़ा सराफा—यहां बैङ्किंग हुंडी चिट्ठी तथा कॉटन-का व्यवसाय होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मके संस्थापक सेठ हरनाथजी मूल [illegible] (शेखावाटी) निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन थे। संवत् १९११ में सेठ शिवजीरामजीने [illegible] इस, [illegible] कई [illegible]

श्री सेठ नन्दलालजी भण्डारी इन्दौर

श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर

स्व० सेठ जयरामदासजी (शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

स्व० सेठ रामविलासजी (शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

श्रीयुत जयकिसनदासजी पुत्र (मे० शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका जन्म मरुदेशके फालू नामक गांवमें संवत् १८८४ में हुआ था। आपके पिता सेठ हंसराजजी बहुत साधारण परिस्थितके व्यक्ति थे। आपके बड़े भाई चुन्नीलालजी उस समय खेड़ेमें मामूली व्यवहार कर कठिनाईसे कुटुम्बका खर्च चलाते थे। उस समय सेठ कस्तूरचंदजो अपनी नेत्र-विहीना माताकी सेवामें अहर्निशि तत्पर रहते थे, उन्हींके शुभाशीर्वादके परिणामसे आपको एक परम प्रतिष्ठित गद्दीके स्वामी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १८६३ में सेठ कस्तूरचंदजी इन्दौरके ख्याति प्राप्त कुटुम्बमें सेठ ओंकारजीके यहां गोद्री लाये गये। उस समय सेठ स्वरूपचंदजी सेठ ओंकारजी और सेठ तिलोकचंदजी तीनों भाइयोंका व्यवसाय शामिल ही होता था तथा यह कुटुम्ब जनतामें "हावले कावले" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। सन् १६०० में सेठ ओंकारजीका देहावसान हुआ, उस समयसे इस कुटुम्बकी अलग २ तीन फर्में स्थापित हुई। सेठ कस्तूरचंदजीकी वय उस समय केवल १६ वर्ष की थी, इतनी सी छोटी वयमें ही आप पर अपनी फर्मके अफीम और बैंकिंग व्यवसायका भार आ पड़ा। पर आप उसे बड़ी तत्परता और बुद्धिमानीसे संचालन करते रहे। सन् १६०४ सन् १९०६ और १६११ में आपको क्रमशः पांच; चार व तीन लाखका नुकसान देना पड़ा, इसी बीच आपने सन् १९०८ से १६११ तक अफीम और रुवन्नेमें नुकसानसे कई गुनी अधिक रकम पैदा कर ली। उस समय आप अफीम, जवाहरात, रुई तथा अनाजका विशेष व्यवसाय करते थे। सन् १६१३ में बम्बईकी तिलोकचंद हुकुमचंदके नामकी फर्म जो आप तीनों भाइयोंके सामेमें अफीमकी एजंसीका काम करती थी, उठा दी गई।

अफीमका व्यवसाय जब मालवेमें बंद हो गया तो आपने अपनी सम्पत्ति मिल उद्योग एवं रुईके व्यवसायमें लगाई। स्थानीय हुकुमचंद मिल, कल्याणमल मिल, राजकुमार मिल एवं उज्जैनके विनोद मिलमें आपने बड़े बड़े भाग ले रक्खे हैं। आप इन मिलोंके डायरेक्टर भी हैं।

था। धार स्टेट मिलके मेनेजिंग एजण्ट भी रह चुके हैं। सेठ नन्दकिशनदासजी ११ पञ्चोंकी कमेटीमें निर्वाचित किये गये हैं, एवं आप यहां ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। इस परिवारकी ओरसे उज्जैन नारायणमें एक नरसिंह मंदिर बना हुआ है, तथा ओंकारेश्वर मांधातामें ५० वर्षोंसे एक अन्न-क्षेत्र चालू है। इन्दौरमें विश्रामबागके पास आपकी एक संस्कृत पाठशाला एवं छत्रीबागमें एक अन्न क्षेत्र चालू है। भानपुरमें आपने एक लक्ष्मीनारायणजीका मंदिर बनवाया है, इसके अतिरिक्त भृगुक्षेत्र, बीड़वाना, मोरटक्का आदि स्थानोंपर धार्मिक कार्योंमें भी आपने रकम लगाई है।

इस समय आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

१ इन्दौर—मेसर्स शिवजीराम शालिग्राम छोटा सराफा—इस फर्मपर बैङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ सिहोर (भोपाल) शिवजीराम शालिग्राम—यहां आढ़तका काम होता है।

३ सुनेल (होल्कर स्टेट) शिवजीराम शालिग्राम—यहां भी आढ़तका काम होता है।

४ बम्बई—शिवजीराम रामनाथ कसारा चाल—आढ़त और बैङ्किग व्यवसाय होता है।

मेसर्स शोभाराम गंभीरमल

इस फर्मके मालिक सेठ गंभीरमलजीका जन्म सम्वत् १८९९में हाटपीपल्या (इन्दौरके समीप) में शोभारामजीके घर हुआ। जिस कुलमें आपका जन्म हुआ वह व्यापारमें पहिलेसे ही प्रसिद्ध था। आपके सगे भाई और चचेरे भाई और हैं। आपके सगे भाई सेठ चुन्नीलालजीका स्वर्गवास अभी कुछ समय पूर्वही हुआ है। इनका भी कारोबार अच्छा चल रहा है।

सेठ गंभीरमलजीकी शिक्षा ८ वर्षकी अवस्थामें शुरू हुई। हिन्दीका थोड़ासा ज्ञान प्राप्त करके आप अपने व्यापारमें प्रवृत्त हुए।

व्यापारको बढ़ते हुए देखकर आपने सम्वत् १९३६ में गम्भीरमल चुन्नीलालके नामसे इन्दौरमें दूकान की। आपके यहां अफीमका धन्धा बहुत होता था। सम्वत् १९६१ में जब भारत सरकारने चीनमें अफीम भेजनेका ठेका दिया, उस समय आपने लाखों रुपये सट्टामें लगा दिये, जिसके परिणाम स्वरूप आपने अच्छी रकम कमाई। अब अफीमका काम उठ जानेसे आपके यहां लेन देनका रोजगार होता है। आपके लाखों रुपये इन्दौरकी मिलों और व्यापारियोंमें रहते हैं। सम्वत् १९८० में आप सेठ चुन्नीलालजीसे अलग हो गये और शोभाराम गंभीरमलके नामसे कारोबार करने लगे।

आपकी प्रकृति बहुत ही सरल है और आपका रहन सहन बिलकुल सादा है। आपके दो पुत्र और तीन पुत्रियां हैं।

बाह्य दृश्य

श्री दिगम्बर जैन ओंकार बाग (धर्मशाला) मोरटक्का सी पी

मालिक रायबहादुर सेठ ओंकारजी कस्तूरचन्द ब्याकर इन्दौर सेंट

ओंकारबाग धर्मशाला मोरटक्का

ओंकारबाग धर्मशाला (भीतरी दृश्य) मोरटक्का

श्री० सेठ फतेहचन्दजी सेठी (परसराम दुलिचन्द) इन्दौर

श्री०रा० किसनलालजी भंडारी (बगनराम बच्छराज) इन्दौर

...राजमलजी सेठी (परसराम दुलिचन्द) इन्दौर

श्री०सेठ माणीलालजी भंडारी (...) इन्दौर

मेसर्स विनोदीराम बालचंद
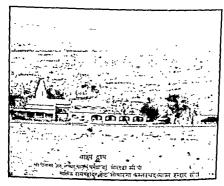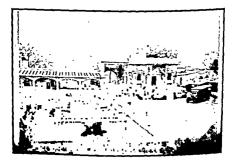
इस फर्मका हेड आफिस झालरा पाटन (झालावाड़) में है। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है। इस फर्मकी इन्दौर ब्रांचपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। वर्तमानमें यह फर्म बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका अच्छा व्यवसाय करती है। निमाड़ प्रांतमें रुईका व्यवसाय करनेवाली यह सबसे बड़ी फर्म है। इसका पता-बड़ा सराफ इन्दौर है। T. A. Binod. इस फर्मका तुकोगञ्जमें मालिक भवन नामक बंगला बना हुआ है।

मेसर्स बलदेव दास गोरखराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जौहरीमलजी हैं। यह फर्म १६२४ में सेठ गोरखरामजीके द्वारा इन्दौर शहरमें स्थापित हुई थी। संवत १६३२ में सेठ गोरखरामजी वापस देश चले गये। पश्चात् इनके भतीजे सेठ जवाहरमलजी लक्ष्मण गढ़से यहां आये। इस फर्मपर इस समय अफीमका व्यवसाय होता था। महाराज तुकोजीराव होलकर (द्वितीय) अफीम आदि व्यापारके सम्बन्धमें जिन साहूकारोंसे सम्मति लिया करते थे, उनमें सेठ जवाहरमलजी भी एक थे। महाराज शिवाजीराव होलकरने इनको ११ पंचोंकी कमेटीमें नियुक्त किया। आपकी ओरसे भूर्यांकेश और हरिद्वार—कल्याणपर धार्मिक संस्थाएं एवं लक्ष्मणगढ़ तथा मुकुंदगढ़में श्री सीतारामके मंदिर बने हैं। सेठ जौहरीमलजीको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपके ३ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीगजानंदजी, श्री विश्वनाथजी एवं श्री० श्रीकृष्णजी हैं।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दूकानें हैं।

(१) इन्दौर—मेसर्स जमनादास मुहारमल बड़ा सराफा—यहां बैङ्किग रुई तथा आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई - मेसर्स रामनारायण बलदेवदास पायधुनी - यहां आढ़त और रुईका व्यापार होता है।

(३) मोराड—मुहारमल केशरदेव—रुई और आढ़तका व्यापार होता है।

(४) धूलिया—रामनारायण बलदेवदास—यहां एक जिनिंग फेक्टरी है।

(५) मंडलेश्वर (इन्दौर—स्टेट)—यहां आपकी विश्वनाथ जिनिंग फेक्टरी है। तथा रुई व्यापार होता है।

(६) बड़वाहा (इन्दौर—ग्वालियर स्टेट)—यहां आपकी एक श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी है। यहां रुई तथा आढ़तका काम होता है।

होगई। इसने यह फर्म शोभाराम चुन्नीलालके नामसे व्यवसाय करती है। श्रीबाऊलालजी बड़े बुद्धिमान, विचारवान एवं सज्जन व्यक्ति हैं। आपकी फर्मपर बैङ्किग तथा साहुकारी लेनदेन बहुत बड़े प्रमाणमें होता है। यह फर्म यहांके धनिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल ⊙

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी बड़जात्या बीजलपुर (इन्दौर) के निवासी सरावगी दिगम्बर जैन जातिके हैं। आपके पिताजी (संवत् १९३६) में स्वर्गवासके (समय केवल २००) छोड़ गये थे। उसमें आप गेहूंमें गल्ले और किराने का व्यापार करते रहे बादमें संवत् १९६२ में आप इन्दौर आये। यहां आनेपर आपने राज्यभूषण सर सेठ हुकुमचंदजीकी रुई और अफीमकी पेटीकी दलालीका काम आरंभ किया,तथा फिर पीछेसे रुई और शेअरोंके वायदेका घरू सौदा भी करने लगे। इसमें आपने बहुत अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की।

आपने मूलचन्द्रीकी यात्रामें १९७५ में १२ हजारका दान किया। संवत १९७६ में कुंडलपुरमें एक कमरा बनवाया, एवं गुनावा सिद्धक्षेत्रमें जमीन खरीदकर दान की सम्मेद शिखरजीमें भी आपने तीन कोठरियां बनवानेकी स्वीकृति दी। संवत १९८२में गिरनारमें फर्श जड़वाई, सीढ़ियां बनवाई आदिमें आपने ३००० रु०का दान दिया। आपके चार पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्री सूरजमलजी है। सेठ गेंदालालजीने एक बिल्डिंग पीपली बाजारमें करीब १ लाख ३५ हजारकी लागतसे बनवाई है। आपने अपनी सन्तानोंके विवाहोंमें हजारों रुपये व्यय किये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-मेसर्स गेंदालाल सूरजमल बड़ासराफा T. A. Barjatia टेलीफोन नं० १३२—इस फर्मपर रुईके वायदेका और शेअरोंका सौदा तथा बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(२) सनावद-मेसर्स गेंदालाल सूरजमल—यहां आपकी कॉटन जीनिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—सूरजमल बाबूलाल तुकोजीराव क्लॉथमार्केट—T. A. Gambhir—यहां कल्याणमल मिल्स इन्दौरके कपड़ेकी सोल एजंसी है तथा हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—सूरजमल बाबूलाल गोविन्द गली मूलजीजेठामार्केट T. A. Cloth shop यहां भी इन्दौरके कल्याणमल मिलकी सोल एजंसी है। व हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

———

⊙ आपका परिचय बहुत देरसे मिला, इसलिये यथा स्थान नहीं छप सके। प्रकाशक—

ज़ुहारमलजी (जमनादास जुहारमल) इन्दौर

सेठ हरविलासजी (रामप्रताप हरविलास) इन्दौर

श्रीयुत नन्दलालजी हालान, इन्दौर

स्व० सेठ अमोलकचन्दजी अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

तीहरी हरकचन्द नोलखा, इन्दौर

[illegible] अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

होगई। उस समय इस फर्मपर प्रधान व्यापार हुंडी, चिट्ठी तथा अफीमका होता था। सेठ हरनाथजीने इस व्यवसायमें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपका देहावसान संवत् १९४९ में ७० वर्षकी वयमें हुआ।

सेठ हरनाथजीके यहां सेठ राधाकृष्णजी संवत् १९३२ में गोद लाये गये। आपने मल्हारगंजमें २० हजारकी लागतसे एक छत्यातो मंदिर बनवाया, तथा इन्दौरके समीप हरदयाला नामक स्थानपर १० हजारकी लागतसे एक गौशाला स्थापितकी जिसमें इस समय १०० से अधिक गाएं पलती हैं। आपकी ओरसे उज्जैनमें २० वर्षोंसे एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। जिसमें १५ आदमी रोज भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने बारह माथामें एक बारह द्वारी एवं राम बागियामें एक धर्मशाला बनवाई है। इस प्रकार आपने करीब ३ लाख रुपयोंका दान किया है। संवत् १९६६ में श्री दाऊलालजी यहां गोद लाये गये। श्री दाऊलालजीके गोद लानेके पश्चात् सेठ राधाकृष्णजीके २ पुत्र और हुए, जो अभी शिक्षा पा रहे हैं। श्री दाऊलालजीने अपने वैङ्किग व्यवसायको उत्तेजन दिया, एवं एक जीनिंग फेक्टरी तथा कपड़े की फर्म और स्थापितकी। आपका ब्याह कलकत्तेके प्रसिद्ध माहेश्वरी श्रीमंत मगनीरामजी बांगड़के यहां हुआ। इस समय आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ इन्दौर- मेसर्स शिवजीराम हरनाथ छोटा सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी शेअर्स तथा रूईका व्यापार होता है।

२ इन्दौर—दाऊलाल मुरलीधर तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका व्यवसाय होता है।

३ कालीसिंध—(गवलियर स्टेट) मुरलीधर काटन जीनिंग फेक्टरी—यहां आपकी जीन है तथा रूई गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्मका संस्थापन सर्व प्रथम सेठ सावलसिंहजीने किया। आप १०० वर्ष पूर्व डीडवानासे इन्दौर आये थे। आपके बाद क्रमशः सेठ लक्ष्मीनारायणजी, धनरूपमलजी, शिवजीरामजी, शालिगरामजी जयरामदासजी एवं रामविलासजीने इस फर्मके कार्यको सम्हाला। इस फर्ममें सेठ शिवजीरामजीके ६ भाइयोंका (सेठ हरनाथजीको छोड़कर) साझा था। वे संवत् १९०२ में अलग हुए। इस फर्मके व्यवसायको सेठ रामप्रसादजी, रामकिशनजी और रामकुंवारजीने विशेष उत्तेजन दिया। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यवसाय होता था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयकिशनदासजी हैं। आप सेठ रामविलासजीके यहां गोदी लाये गये हैं। जिस समय स्टेट मिल व्यापारोत्तेजक कम्पनीके हाथोंमें था, उस समय आपका उसमें आधा हिस्सा

मेसर्स हजारीमल छगनलाल

इस फर्मके मालिक हजारीमलजी हैं। आप फतहनगर (दिल्ली).के मूल निवासी हैं। आप जैन धर्मावलम्बी ओसवाल सज्जन हैं। बा० हजारीमलजीके तीन भाई और हैं। जिनमें इस समय सिर्फ एक भाई जौहरीमलजी वर्तमान हैं। बाकी स्वर्गवासी हो चुके हैं। बा० जौहरीमलजी यहांकी स्टेटमें ... रिकॉर्डका कार्य करते हैं। बा० हजारीमलजी इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ कल्याणमल हुकुमचंदके यहां कार्य करते हैं। आपका यहां अच्छा सम्मान है। आपके २ पुत्र हैं। बा० छगनलालजी तथा नायकलालजी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स हजारीमल छगनलाल, मोरसली गली रोड—यहां रुई, लेन देन तथा बैंकिंग कार्य होता है।

इन्दौर—मेसर्स छगनलाल ..., सियागंज—यहां रुई, कपड़ा, गल्ला, सिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

इन्दौर—जौहरीमल छगनलाल—यहां पत्ती और पत्थरका व्यापार होता है।

सांवेर (इन्दौर)—यहां आपके साझेकी जिनिंग फेक्टरी है। यहां रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

नीमच-कैम्प—दौलतराम गुलजारीलाल—यहां अनाज और सिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स जवरचंद मांगीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक जवरचंदजी तथा मांगीलालजी हैं। आप दोनों इस फर्मके हिस्सेदार हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—जवरचंद मांगीलाल सियागंज—यहां गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर—डालूराम मन्नालाल इमली बाजार—यह इस फर्मकी पुरानी दुकान है। यहां स्टेटके मोदी खानेका काम होता है।
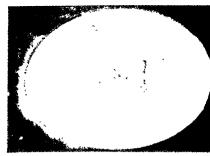
—:—

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत गेंदालालजी अधिकतर हाटपीपल्यामें रहते हैं। आप वहां ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं, आपका वहां और बागली स्टेटमें अच्छा प्रभाव है। आपके तीन पुत्र व एक पौत्र हैं।

आपके कनिष्ट पुत्र श्रीयुत गुलाबचंदजी टोंग्या हैं। इन्दौरका सब काम काज आपही संभालते हैं। आपको हिन्दीसे बड़ा प्रेम है। आपकी लाइब्रेरीमें अनेक पत्र पत्रिकाएं एवम पुस्तकोंका संग्रह है।

यों तो आपकी ओरसे कई तरहका धर्मादा होता रहता है, किन्तु विशेष उल्लेखनीय यह है कि आपके पूज्य पिताजीकी स्मृतिमें हाटपीपल्यामें आप व आपके भ्राताकी ओरसे एक गऊ-शाला बनवा दी गई है और उसके खर्चका भी स्थाई प्रबन्धकर दिया गया है। तीर्थोंपर भी आपकी ओरसे कई जगह निवासस्थान बने हुए हैं। हाट पीपल्याके पास चापड़ा ग्राम सड़कके किनारे भी अभी हालमें एक धर्मशाला सौ० फूलीबाई धर्मपत्नी सेठ गंभीरमलजीके नामपर बनाई गई है।

आपने किसी संस्था निर्माणके उद्देश्यसे ५००००) पचास हजार रुपये अलग निकाल दिये हैं, जिससे शीघ्र ही एक उपयोगी संस्थाकी स्थापना होनेकी आशा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) इन्दौर—मेसर्स शोभाराम गंभीरमल शीतलामाता बाजार—यहां बैङ्किग व सराफी लेनदेनका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

(२) इन्दौर—गुलाबचंद माणकचन्द तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

(३) हाटपीपल्या—शोभाराम गंभीरमल—लेनदेन और साहुकारी व्यापार होता है।

मेसर्स शोभाराम चुन्नीलाल*

इस फर्मका संचालन श्री घाउलालजी टोंग्या करते हैं। आपके पिता श्री सेठ चुन्नीलालजीका देहावसान होगया है। आपका खास निवास स्थान हाटपीपल्या (इन्दौरके पास) है। इस फर्मपर पहिले अफ़ीमका बहुत बड़ा व्यवसाय होता था। अफ़ीमके खत्तेमें इस फर्मने बहुत अधिक सम्पत्ति कमाई थी। संवत्‌१९८० में सेठ चुन्नीलालजी तथा सेठ गंभीरमलजीके कुटुम्बी अलग र

*श्रीयुत घाउलालजीको परिचय भेजनेके लिये कई बार सूचित किया, परन्तु आपका परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ, इसलिये जितना हमें ज्ञात था, उतनाही परिचय छापा जारहा है।
प्रकाशक—

श्री० सेठ लालचन्दजी (रामरतन लालचन्द) इन्दौर

श्री० रतनलालजी मोदी (जवरचन्द मांगीलाल) इन्दौर

श्री० सेठ [illegible] इन्दौर

सेठ गेंदालालजी (गेंदालाल सूरजमल) इन्दौर

श्री॰ सूरजमलजी (गेंदालाल सूरजमल) इन्दौर

बिल्डिङ्ग (गेंदालाल सूरजमल) पिपलीबजार, इन्दौर

आपही इसके मालिक हैं। आपका निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (जयपुर) है। आप [illegible] सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—रामचन्द्र रामेश्वरदास, बड़ा सराफा—यहां रुई और आढ़तका व्यापार होता है।
हरदा—रामेश्वरदास बल्लभदास—यहां आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। आपके यहां रुई और आढ़तका व्यापार होता है।
उज्जैन—रामेश्वरदास बल्लभदास—यहां भी आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा रुई और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स विश्वेसरलाल नन्दलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नंदलालजी जालान हैं। आप श्री विश्वेसरलालजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके (रेवाड़ी निवासी) सज्जन हैं। पहले यह फर्म मथुराकी तरफ बड़ी प्रसिद्ध थी, लेकिन दैवात् फर्मका काम कमजोर हो जानेसे आपको इन्दौर आना पड़ा। यहां आपने अपने मामा सेठ निर्भयमलजी नेवटियाके यहां सर्विस की। उस समय उपरोक्त फर्मकी हांगकांग, शांघाई आदि स्थानोंमें ब्रांचेज़ थी। संवत् १८७२में आप इस फर्मसे अलग होगये। इस समय आप स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

धमनिया (इन्दौर राज्य)—यहां आपकी जिनिङ्ग फेक्टरी है।
उदयगढ़ (झाबुआ)—यहां जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।
अमरगढ़—यहां भी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।
झाबुआ—यहां जिनिंग फेक्टरी है।

उपरोक्त कारखानोंमें मंदसोरके सेठ नारायणदासजीका साझा है।

सेठ समीरमल अजमेरा इन्दौर केम्प

आपका निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर) है। आप सरावगी जातिके वैश्य हैं। आपके कुटुम्बको यहां आये करीब ७५ वर्ष हुए। आपके पिताका नाम सेठ अमोलकचन्दजी था। आपका ८ साल पहले शरीरांत होचुका है। वर्तमानमें आप ही मालिक हैं। आपके २ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-केम्प सेठ समीरमल अजमेरा—यहां काटनका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जानकीलाल सुगनमल

इस फर्मके संस्थापक सेठ जानकीलालजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। आपने अपना बाल्यकाल बहुत दीनतावस्थामें व्यतीत किया। आपका जन्म संवत् १९३७ की कार्तिक सुदी २ को भोपाल राज्यके, [illegible] ग्राममें हुआ। आपके पिताजीके स्वर्गवासके समय आपकी उम्र सिर्फ ३ वर्षकी थी। ६ वर्षकी उम्रमें आप अपनी माताजीके साथ इन्दौर आये तथा भैया गनेशरामजी (मालिक फर्म [illegible] गनेशराम) के आश्रयमें रहने लगे। विद्याध्ययनके साथ आपकी रुचि व्यापारकी ओर अधिक होने लगी। सबसे प्रथम आपने बड़ौदेमें कपड़ेकी दुकान की। बड़ौदेके महाराज तथा महारानी साहिबाकी आपपर विशेष कृपा थी। व्यवसाय धन्धा चल निकला था, परन्तु प्लेग आदि कारणोंसे आपको वहांसे दुकान उठा देनी पड़ी और इन्दौर आकर जानकीलाल लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेकी दुकान स्थापित की। आपके व्यवसाय चातुर्यसे व्यापार खूब चल निकला। कुछ दिनों पश्चात् आप इस दुकानसे अलग होगये। पश्चात् आपने श्री सेठ नंदलालजी भंडारीके साझेमें कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। आपकी व्यवसायिक कुशलताके कारण एक्स महाराजा तुकोजीराव तथा महारानी साहिबा आपसे बहुत प्रसन्न रहा करते थे। एजेण्ट टू दी, गवर्नर जनरल मि० ब्लोफ़ील्ड साहबने वायसराय तथा अन्य कई अङ्गरेज अफसरोंसे आपका व्यापारिक संबन्ध कराया। आपकी व्यापारिक सभ्यतासे प्रसन्न होकर प्रमाणपत्र भी (सार्टिफिकेट) दिये। स्टेटके कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री डिपार्टमेण्टकी की ओरसे सन् १९२४में आपने यहांके हेण्डलूमपर बने लुगड़े, साड़ी वगैरह ब्रिटिश इण्डिया एम्पायर एक्जीबिशन आफ लंडनको भेजा। वहांसे भी आपको सार्टिफिकेट तथा मेडल मिले। सन् १९२३में आपको स्टेटने म्युनिसिपल कमिश्नर बनाया, तथा दूसरे वर्ष जनताकी ओरसे आप मनोनीत किये गये। सन् १९२७ के दिसम्बरमें इन्दौर सरकारकी ओरसे आप आनरेरी मजिस्ट्रेट मुकर्रर किये गये।

यहापर यह बतला देना आवश्यक है कि आपको अपने पूर्वजोंसे वारसाके तौरपर कुछ भी नहीं मिला था। आजकी स्थितिको आपने स्वयं अपने परिश्रम और अध्यवसायसे पैदा किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

इन्दौर—मेसर्स जानकीलाल सुगनमल तोपखाना—यहां माहेश्वरी लुगड़ी, बनारसी साड़ियों, कोनलूप, रबन आदि फेन्सी वस्तुओंका व्यापार होता है। यहांसे विलायत भी माल जाता है। इस दुकानमें श्री० नन्दलालजी भण्डारीका साझा है।

मेसर्स मंगलजी मूलचद

इस फर्मके स्थापक सेठ मंगलजी हैं। आपका मूल निवास श्रीमाधोपुर (जयपुर) का है। आप ो यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। मंगलजीके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ मूलचंद ीने सम्हाला। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६में हो गया।

वर्तमानमें सेठ मूलचंदजीके पुत्र सेठ नन्दलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपके सूरजमल ामक एक पुत्र हैं। आपकी ओरसे एक राधाकृष्णजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

न्दौर—मंगलजी मूलचन्द, मल्हारगंज—यहां गल्ला और आसामी लेन-देनका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

पुनाला (देपालपुर, इन्दौर) मंगलजी मूलचन्द—यहां भी गल्ला तथा आसामी लेनदेनका कामहोता है।

मेसर्स रामरतन लालचंद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गोविन्दगढ़ (जयपुर) के हैं। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामरतनजीने की। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। रामरतनजीके पुत्र सेठ लालचंदजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप पर इन्दौर महाराजाकी विशेष कृपा थी। आपको सरकारसे आधा महसूल माफ था। सेठ लालचंदजीका स्वर्गवास संवत् १९७९ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ सीतारामजी ने काम सम्हाला। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपको चौधरीका पद प्राप्त है। आपके एक पुत्र हैं, इनका नाम मिट्ठूलालजी हैं।

आपकी ओरसे बड़वाहमें एक मन्दिर बना हुआ है। वहां सदाव्रत आदिका भी प्रबंध है। इस फर्मके संचालकोंका स्थानीय ११ पंच भी बड़ा सम्मान करते हैं। भुगतानके रुपये आपकी दुकानपर पहुंचा दिये जाते हैं। यह आपके लिये विशेष रियासत है।

श्रीयुत लालचंदजी चौधरीने मध्यभारत 'अग्रवाल सभाकी स्थापना की थी। आप उसके आजीवन सभापति रहे। वर्तमानमें सेठ सीतारामजी उसके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—रामरतन लालचंद मल्हारगञ्ज—इस फर्मपर गल्ला और रुईका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर-कैम्प—लालचंद सीताराम—यहां रुई, कपास की आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मंगलजी मूलचद

इस फर्मके स्थापक सेठ मंगलजी हैं। आपका मूल निवास श्रीमाधोपुर (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। मंगलजीके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ मूलचंदजीने सम्हाला। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६में हो गया।

वर्तमानमें सेठ मूलचंदजीके पुत्र सेठ नन्दलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपके सूरजमल नामक एक पुत्र हैं। आपकी ओरसे एक राधाकृष्णजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मंगलजी मूलचन्द, मल्हारगंज—यहां गल्ला और आसामी लेन-देनका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

सुनाला (देपालपुर, इन्दौर) मंगलजी मूलचन्द—यहां भी गल्ला तथा आसामी लेनदेनका कामहोता है।

मेसर्स रामरतन लालचंद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गोविन्दगढ़ (जयपुर) के हैं। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामरतनजीने की। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। रामरतनजीके पुत्र सेठ लालचंदजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप पर इन्दौर महाराजाकी विशेष कृपा थी। आपको सरकारसे आधा महसूल माफ था। सेठ लालचंदजीका स्वर्गवास संवत् १९७९ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ सीतारामजीने काम सम्हाला। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपको चौधरीका पद प्राप्त है। आपके एक पुत्र हैं, इनका नाम मिट्ठूलालजी हैं।

आपकी ओरसे बड़वाहमें एक मन्दिर बना हुआ है। वहां सदाव्रत आदिका भी प्रबंध है। इस फर्मके संचालकोंका स्थानीय ११ पंच भी बड़ा सम्मान करते हैं। भुगतानके रुपये आपकी दुकानपर पहुंचा दिये जाते हैं। यह आपके लिये विशेष रियासत है।

श्रीयुत लालचंदजी चौधरीने मध्यभारत 'अग्रवाल सभाकी स्थापना की थी। आप उसके आजीवन सभापति रहे। वर्तमानमें सेठ सीतारामजी उसके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—रामरतन लालचंद मल्लारगञ्ज—इस फर्मपर गल्ला और रुईका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर-केम्प—लालचंद सीताराम—यहां रूई, कपास की आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका आदि निवास डिडवाना (जोधपुर) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। इस फर्मको सेठ रामगोपालजीने ही स्थापित किया। आपहीने इस फर्मकी तरक्की भी की। संवत् १९६८में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मके संचालनका कार्य आपके भाई सेठ लक्ष्मीचंदजी मुंच्छाल और आपके पुत्र सेठ राधाकृष्ण जी करते हैं। सेठ लक्ष्मीचन्दजीने इस फर्मको और तरक्की की है। आपने इसकी और भी शाखाएं स्थापित की। बाजारमें आपकी फर्मका अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल, छोटा सराफा—इस फर्मपर चांदी, सोना तथा जवाहिरातका व्यापार होता है।

इंदौर—मेसर्स लक्ष्मीचंद मुंच्छाल, तुकोजीराव क्लाथमार्केट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

इन्दौर—मेसर्स राधाकिशन बालकिशन, क्लाथमार्केट—यहां रंगीन कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

बम्बई—रामगोपाल मुंच्छाल, परानके झाड़के पास, कालबादेवी रोड (T.A. Kunjbihari)—यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हीरालाल बालकिशन सूतवाले

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी हैं। आप वीसा नीमावाल जातिके वल्लभ संप्रदायी सज्जन हैं। आपका यहांके बड़े २ सेठोंमें अच्छा सम्मान है। सरसेठ हुकुमचन्दजी, रा० ब० कस्तूरचंद जी आदि बड़े २ व्यापारियोंके आप आम मुख्तार हैं। सरकारकी ओरसे आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये हैं। आपके पिता जी गुजरातसे यहां आए थे। आपने यहां आकर कपड़ेकी दुकान स्थापित की और उसमें अच्छा लाभ उठाया। आप सूतका व्यापार भी करते थे।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स हीरालाल बालकिशनदास बजाजखाना—यहां कपड़ा तथा सूतका बड़े परिमाणमें व्यापार होता है।

भुंजजी थे। आपने यहां आकर चतुर्भुज मैयाके नामसे दुकान स्थापित की थी। इस समय राजघराने एवं अफसर लोगोंसे आपका व्यापारिक सम्बंध था। संवत् १९३२ में सेठ चतुर्भुजजी का देहान्त हो गया। आपके पश्चात् आपके कामको सम्हालनेवाला कोई न होनेसे व्यापारमें नुकसान हुआ। इस सब नुकसानको आपकी धर्मपत्नीने चुकाया। कुछ समय पश्चात् सेठ गनेशरामजी बीकानेरसे दत्तक आये। यहां आकर आपने उपरोक्त नामसे कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। आप पीठपर कपड़ा लादकर हाटों व बाजारोंमें फिरकर अपना माल बेचा करते थे। धीरे २ आपने अपने व्यवसायको जमा लिया। कुछ समय पश्चात् आपके भतीजे जानकीलालजी यहां आये। इन्होंने यहां आकर दुकानके काम को ठीक तरहसे संभाला। फिरसे राजघरानों और आफिसरोंके साथ वैसाही व्यापारिक सम्बन्ध हो गया जैसा चतुर्भुज मैयाके साथ पहले था। आपके कोई संतान न होनेसे आपने सेठ लक्ष्मीनारायनजीको दत्तक लिया।

गनेशरामजीने एक दुकान तोपखानेमें जानकीलाल लक्ष्मीनारायणके नामसे खोली। संवत् १९६२ में बजाजखानेमें आग लग जानेके कारण आपको अपनी पहली दुकान भी तोपखानेमें करनी पड़ी। दोनों दुकाने पास २ व्यापार करती रहीं। कुछ समय पश्चात् जानकीलाल लक्ष्मीनारायन वाली दुकान बंद करदी गई। संवत् १९६८ में सेठ जानकीलालजी इस दुकानसे सम्बन्ध छोड़कर अलग हो गये। इन्होंने सेठ नन्दलालजी भंडारीके साझेमें अलाहदा फर्म स्थापित की। संवत् १९७२ में सेठ गनेशरामजी का देहान्त हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ लक्ष्मीनारायणजीने संभाला। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप शिक्षित और मिलनसार सज्जन हैं। आपके विचार सुधरे हुए और उपादेय हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायणजीने एक सुन्दर मकान बनवाया। इसकी लागत करीब ७००००) की है। इसका फोटो इस पुस्तकमें दिया गया है। आपका माल विशेषकर राजा महाराजा और प्रतिष्ठित लोगोंमें बिक्री होता है। आपको इसके लिये कई अच्छे २ सर्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। संवत् १९८० में महाराजा इन्दौरने आपको आनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—चतुर्भुज गनेशराम ;तोपखाना—यहां सब प्रकारके बढ़िया विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

इन्दौर—लक्ष्मीनारायन लक्ष्मीनारायण बजाजखाना—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

—

इन्दौर—उमराव औषधालय, शीतलामाता—यहां सब प्रकारके रोगोंका इलाज किया जाता है।

इन्दौर—आयुर्वेदिक औषधि निर्माणशाला, सियागंज—यहां आयुर्वेदिक औषध तैयार करनेकी व्यवस्था है।

इन्दौर—वैद्य फकरुद्दीन फार्मेसी, मारोठिया बाजार—यहां आपकी बनाई हुई औषधियां बिक्री होती है।

वैद्य चन्द्रशेखरजी पाठक

यह चिकित्सालय सन् १९०६में स्थापित हुआ। इसमें आयुर्वेदिक व एलोपैथी दोनों प्रसिद्ध चिकित्सा पद्धतियोंके द्वारा निदान व चिकित्सा की जाती है। यही कारण है कि इस चिकित्सालयमें दूसरे चिकित्सालयोंसे निराश होकर लौटे हुए कई संग्रहणी, क्षय आदि कष्टसाध्य रोगोंसे पीड़ित रोगी आराम होते हैं। इस औषधालयमें शास्त्रोक्त व शुद्ध बनी हुई औषधियोंका उपयोग किया जाता है। इस चिकित्सालयमें श्री० वैद्य महादेव चन्द्रशेखर पाठक व डाक्टर बालमुकुन्द चन्द्रशेखर पाठक एल० एम० एस० चिकित्सा करते हैं। श्री० वैद्य महादेव चन्द्रशेखर पाठक इन्दौरके कतिपय चुने हुए विद्वान व अनुभवी वैद्योंमें अपना विशेष स्थान रखते हैं। आप आयुर्वेदके विशेषज्ञ हैं। पन्द्रहवें वैद्य सम्मेलनमें इन्दौरके वैद्योंमें से सिर्फ आपहीने अपना विद्वता पूर्ण निबन्ध पढ़ा था। जिसकी तारीफ वैद्य सम्मेलनके सुप्रसिद्ध सभापति वैद्य गणनाथसेन व अन्य विद्वान् वैद्योंने मुक्तकंठसे की थी। आप इस समय चिकित्सा विज्ञानके ऊपर एक मौलिक और गवेषणापूर्ण ग्रन्थ लिख रहे हैं। इस ग्रन्थमें चिकित्सा विज्ञानके मूलभूत सिद्धान्तों पर तथा इस सम्बन्धकी चलनेवाली सभी चिकित्सा पद्धतियोंपर तुलनात्मक विवेचन रहेगा।

आपके छोटे भाई डाक्टर बालमुकुन्द पाठक भी बड़े योग्य नवयुवक हैं। आप आंख सम्बन्धी रोगोंके विशेषज्ञ हैं। आप एल० एम० एस० हैं और इनजेक्शन देनेमें सिद्धहस्त हैं।

आपका सार्वजनिक जीवन भी प्रशंसनीय है। इन्दौरमें हालहीमें प्रारम्भ हुई विद्वत् परिषद नामक संस्थाके आप प्रधान कार्य्यकर्ता हैं आपका दवाखाना सराफ बाजारमें है।

तैय्यबी दवाखाना यूनानी

इस दवाखानेकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इसे मुल्ला मुल्लाभाईने स्थापित किया था। आप पहले मामूली औषधि बेचा करते थे। आपके पश्चात् आपके दो पुत्रों ने इसके कामको बढ़ाया। पहले पुत्र इब्राहिमजीके पश्चात् आपके दूसरे पुत्र हकीम शेख तैय्यब अलीने इसकी बहुत अधिक उन्नति की। आपका इन्दौरके वैद्य और हकीमोंमें अच्छा सम्मान

तोपखाना बिल्डिङ्ग (मे० चतुर्भुज गंगाराम) इन्दौर

तोपखाना बिल्डिङ्ग (मे० जानकीलाल मुगनमल) इन्दौर

मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द ।

फर्मके संस्थापक सेठ जवरचन्दजी हैं। आपका देहावसान संवत् १९७३में ६५ वर्ष
। आपकी दूकानका खास व्यवसाय मनोती तथा कपड़े का था। आपकी दूकान पहिले
रूपमें थी। इस दूकानके कारोबारको सेठ जवरचन्दजीने अपने परिश्रम एवं अध्यवसायसे
था। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ कस्तूरचन्द जी हैं। आप अपने पिताजीके अनारूप
को ठीक तौरसे संचालित कर रहे हैं। इस समय आपकी दूकानें नीचे लिखे जगहोंपर हैं।
ज्जैन—पन्नालाल जवरचन्द—यहां आढ़त तथा रुईका व्यापार होता है।
सोनकच्छ (ग्वालियर स्टेट) जवरचन्द पन्नालाल यहां आपकी जीनिंग फैक्टरी है, तथा
आढ़तका व्यापार होता है ।
) इन्दौर—पन्नालाल जवरचन्द—इस दूकानपर मिलोंके थोक कपड़े का तथा और सब प्रकारके
कपडेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामरतन टीकमदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ रामरतनजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य हैं। आप खास निवासी
डडवाना (जोधपुर स्टेट)के हैं। आपकी फर्मको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सेठ टीकमदासजीने
अपने उद्योग और परिश्रमसे इस फर्मको बढ़ाया। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी, आज इस
फर्मका कपड़े के व्यापारियोंमें बहुत ऊंचा स्थान है। २ वर्षके पहले सेठ टीकमदासजीका देहावसान हो
गया। इस समय इस फर्मके संचालक श्री सेठ लक्ष्मीनारायण जी हैं। आपके समयमें इस फर्म
व्यापारने बहुत तरक्की की। आप बहुत उद्योगी अध्यवसायी एवं परिश्रमी हैं। इस समय आप
दुकानें और भी कई स्थानोंमें चल रही हैं ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) बम्बई—लक्ष्मीनारायण गंगाधर कसेराचाल पोस्ट नं० २ यहां कमीशन एजंसीका काम है
(२) कानपुर—लक्ष्मीनारायण प्रह्लाददास जनरलगंज—इस दूकानपर कपड़ा और कमीशन
होता है। तारका पता—Loyal है।
(३) इन्दौर—प्रह्लाददास मुरलीधर बजाजखाना—इस दूकानपर कपड़े का काम होता है।
(४) इन्दौर—रामरतन टीकमदास तुकोजीराव क्लाथ मार्केट इंदौर—तारका पता—Pansari ।
दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है। यहांके बने हुए मिलोंके कपड़े की यह
बड़ी दुकानदार है।

आपके दो पुत्र हैं। बड़े का नाम प्रह्लाददास जी और छोटेका नाम मुरलीधर जी हैं।

श्री आशारामजी मुंदाल(रामगोपाल मुंदाल)इन्दौर

स्व० सेठ टीकमदासजी (रामरतन टीकमदास) इन्दौर

क्लॉथ मरचेन्ट्स एण्ड कमीशन एजंट

दी कल्याणमल मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजीराव क्लॉथ मार्केट
मेसर्स कोनिलाल रसिकलाल ,, ,,
,, कुन्दकर एण्ड ब्रदर्स तोपखाना
,, गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना
,, गोवर्द्धन लक्ष्मीदास ,,
,, गुलाबचंद्र माणकचंद्र तुकोजीराव क्ला० मा०
,, गोवर्द्धन जगन्नाथ ,,
,, गंगाधर चुन्नीलाल ,,
,, चतुर्भुज गणेशराम तोपखाना
,, छत्रकाय प्रह्लाददास बजाजखाना
,, जानकीलाल सुगनमल तोपखाना
दी जनरल स्टोअर्स तोपखाना
मेसर्स जीतमल किशनचंद्र तुकोजी० क्ला० मार्केट
,, जोखीराम रामनारायण ,,
,, दाऊलाल मुरलीधर ,,
हाजी नूरमहम्मद मूसा बजाजखाना
दी नन्दलाल भंडारी मिल्स क्लॉथ शाप तु० क्ला० मा०
मेसर्स पन्नालाल अमरचन्द तुकोजी० मार्केट
,, फतेहचंद मूलचन्द बजाजखाना
दी विनोद मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० क्ला० मार्केट
,, मालवा मिल्स क्लॉथ शाप ,, ,,
मेसर्स मोहरीलाल मुन्नालाल ,, ,,
दी मालवा स्टोअर्स तोपखाना
दी राजकुमार मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० मार्केट
मेसर्स रामरतन टीकमदास तुकोजी राव क्ला०मा०
,, रामनारायण हरकिशन ,,
,, आर० जी० प्रधान एंड को० तोपखाना
,, लखमीचंद मुंच्छाल तुकोजी० क्ला० मा०
सेठ लक्ष्मीनारायण पसारी ,, ,,
दी शिवाजी वस्त्र भंडार तोपखाना
मेसर्स शिवराम रामबक्ष क्लाथ मार्केट
,, सूरजमल सोभागमल बजाजखाना
,, हीरालाल बालकिशनदास ,,
,, हीरालाल पन्नालाल तुकोजी क्ला० मा०
दी हुकुमचंद मिल्स क्लाथ शाप तुकोजीराव क्लाथ मार्केट
मेसर्स त्रिकमदास अमृतलाल ,, ,,

कटपीस क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स पन्नालाल मुन्नालाल बड़ा सराफा
,, मिश्रीलाल सरावगी ,,
,, रामेश्वरदास प्रह्लाददास ,,

कपड़ेके व्यापारी [इन्दौर-केम्प]

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल
,, छोगालाल रतनलाल
,, सम्पतमल जयकुमार

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स जयनारायण गिरधारीलाल कसेराबाजार
,, जयकिशन लालचन्द ,,
,, जयनारायण गंगाधर ,,

वैद्य और हकीम

वैद्य ख्यालीराम जी द्विवेदी

आपका मूल निवास स्थान डलमऊ (रायबरेली) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। आपके खानदानका पुश्तैनी पेशा वैद्यका है। आपके पिताजी अच्छे वैद्य माने जाते थे। आपका इलाज राजघरानोंमें भी होता था। महाराजा शिवाजीरावने प्रसन्न होकर आपको दस २ हजार रुपया दो बार एवं एक गांव और २०० बीघा जमीन इनाममें दे दी थी। इस इनामका कुछ समयतक उपयोग कर आपने कुछ विशेष कारण से इसे वापस फेर दिया था। इसी प्रकार गायकवाड़ सरकारने भी आपको जागीर इनाममें दी थी। वह भी आपने अपने शिष्यको दे दी। आपका देहावसान संवत् १९६२में हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी हुए। आपने भी वैद्यकमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इंदौरकी जनतामें आपका अच्छा सन्मान है। राजघराने में भी आपका इलाज होता है। आप बम्बई, इटारसी, अकोला आदि बाहर गांवोंमें भी इलाजके लिये जाया करते हैं।

वैद्य पं० ख्यालीरामजीका सार्वजनिक जीवन भी अच्छा रहा है। आपने इन्फ्लुएन्जाके समय इन्दौरकी जनता की अच्छी सेवा की थी। आपका पब्लिक जीवन अग्रगण्य रहा है। आप यहां की प्रायः सभी सभा सोसायटियोंमें भाग लेते हैं। आप स्थानीय हिन्दूसभाके सभापति हैं। आपकी देखरेखमें कल्याणके आयुर्वेदिक ब्रह्मचर्याश्रमका काम बड़ी उत्तमतासे चल रहा है।

आपकी औषध निर्माण शालामें शास्त्रोक्त रीतिसे औषधियां तैय्यार की जाती हैं। इन्दौरकी जनताके हृदयमें आपकी औषधियोंके प्रति बड़ा विश्वास है। आपको सन् १९२०में दिल्लीके आयुर्वेद दशम सम्मेलनके समय स्वर्णपदक और प्रमाण पत्र मिला था। करांचीमें होनेवाली आल इण्डिया वैद्यक, यूनानी एण्ड तिब्बी कान्फ्रेन्ससे भी आपको प्रमाणपत्र और रौप्य पदक प्राप्त हुआ था। सन् १९१८में आलइण्डिया एक्जीबिशन इन्दौरसे भी आपको स्वर्णपदक प्राप्त हुआ है। कहनेका मतलब यह है कि आप एक बहुत सफल वैद्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

किरानेके व्यापारी

मेसर्स अब्दुल अजीज हासन भाई सियागंज
,, उमर वलीमहम्मद ,,
,, हसमत हबीब ,,
,, महम्मद अली ईसाभाई ,,
,, हाजी महम्मद हाजी अब्बा ,,
,, हाजी खान् हाजी वल्ली ,,
,, हसन भाई इब्राहिम ,,

टोपीके व्यापारी

मेसर्स अल्लानस ईसाभाई कृष्णपुरा
,, आत्माराम मन्नालाल ,,
,, इच्छाराम बसन्तजी ,,
,, पुराणिक ब्रदर्स ,,
,, फिदाहुसेन हाजी अल्लाबक्स ,,
,, मोता भाई हरिभाई ,,
,, माणिकचन्द मानमल ,,
,, सूरजमल दौलतराम ,,

दांत बनानेवाले

श्री० गजानन्द राव भागवत् कृष्णपुरा
,, शंकरलाल डेन्टिस्ट खजूरी बजार
,, सोरावजी डो० कामा तोपखाना
,, डा० एस० के० वड़नेरे खजूरी बजार
,, श्रीराम दंत वैद्य शक्कर बजार

म्युजिक स्टोअर्स

गुजरात शान्तिक म्युजिक स्टोअर्स तोपखाना
जयरामदास पुरुषोत्तमदास ,,
सुण्डाराम एण्ड सन्स ,,

प्रिंटिंग प्रेस

गजानन्द प्रिंटिंग प्रेस तोपखाना
जैन बन्धु प्रिंटिङ्ग प्रेस पीपली बाजार
मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति–
प्रिंटिङ्ग प्रेस तोपखाना
लक्ष्मी विलास स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस नन्दलालपुरा
एस० एस० जैन प्रेस कृष्णपुरा
एच० एण्ड पी० प्रिंटिङ्ग प्रेस इन्दौर-केम्प
होल्कर स्टेट (इलेक्ट्रिक) प्रिंटिङ्ग प्रेस।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

डांडेकर ब्रदर्स बोम्बेकेट मार्केट
मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति तुकोगंज
एम० एम० सोजतिया एण्ड को० बड़ा सराफा
राज्य मण्डल बुक पब्लिशिङ्ग हाऊस यशवंतगंज
साहित्य उद्यान कार्यालय सांठा बाजार
साहित्य निकेतन कार्यालय पीपली बजार
सिंहल ब्रदर्स तोपखाना।

न्यूज पेपर एजेंट

दुलीचन्द जैन पिपली बाजार।
वारुणे आणि कम्पनी।

स्टेशनर्स

जमालभाई वजीरभाई बड़ा सराफा
तैय्यबअली मुल्ला महम्मद अली बड़ा सराफा
फिदाहुसेन नाथाभाई बड़ा सराफा
मालवा स्टेशनरी मार्ट तोपखाना
हसनभाई नालूभाई सियागंज।

स्व० हकीम शेख तैय्यब अलीजी, इन्दौर

बिल्डिंग हकीम शेख तैय्यबअली गुलाम आदमजी, इन्दौर

उज्जैन

UJJAIN

और नाम था। आप राजघरानेमें भी इलाज करनेके लिये जाया करते थे। आपकी वहां अच्छी प्रतिष्ठा थी। वोहरोंके बड़े मुल्लाजीने आपको शेखियतकी पदवी प्रदान की थी। यह पदवी इन लोगोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है। आपका सन् १९१३ ई०में देहावसान होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हकीम महमदहुसेन व हकीम गुलामअली हैं। आप दोनों भी अपने पिताजीकी तरह हकीमीमें अच्छी योग्यता रखते हैं। आपने सन् १९२४में इन्दौरके वोहरा बाजारमें एक बढ़िया दवाखाना बनवाया है। इसका फोटो इसी ग्रन्थमें दिया गया है। आपके यहां शुद्ध रीतिसे दवाइयां तैय्यार की जाती हैं। यू०पी,सी०पी, गुजरात आदि बाहरी स्थानोंमें भी यह औषधालय प्रसिद्ध है। यहां औषधियां बड़ी सफाईसे रखी जाती हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—तैय्यबी दवाखाना यूनानी, चौकबाजार—यहां हरप्रकारकी यूनानी दवाइयां मिलती हैं। और इलाज भी किया जाता है। यहांसे बाहर प्रान्तोंमें भी दवाईयोंका थोक निकास होता है।

मेन्युफेक्चरर

मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन

मि० महाजन उन उद्योगी व्यक्तियोंमेंसे हैं,जो बहुत ही छोटे स्केलसे अपने कार्यको प्रारम्भकर अपने व्यवसाय कौशलसे उसे अच्छा रूप दे देते हैं। शुरू २ में आपकी आर्थिक परिस्थिति बहुत कमजोर थी; केवल एक मामूली क्लर्ककी जगह काम करके आप अपनी जीविका निर्वाह करते थे। मगर उस काममें इनकी तबियत नहीं लगती थी। जिसके फल स्वरूप आपने नौकरी छोड़ दी और हिम्मत करके १५०)में एक मौजेकी मशीन मंगवाई। इस मशीनके कार्यमें आपको सफलता मिल गई और धीरे धीरे इनका कारबार तरक्की करने लगा। यहांतक कि सात वर्षके बादही अर्थात् सन् १९१३में आपके यहां ५० पौण्ड सूतके रोजाना मौजे बनने लगे। सन् १९१७में आपने १० नई मशीनें और मंगवालीं। जिससे आपका काम और भी तेजीसे चलने लगा।

मि० महाजनके यहांके बने हुए मौजे अपनी सुन्दरता और मजबूतीमें बहुत बढ़िया होते हैं। इन्दौर शहरके अतिरिक्त बाहरी प्रान्तोंमेंभी इस कम्पनीके मौजोंका बहुत प्रचार है। रियासतकी फौजका आर्डर भी आपही पूरा करते हैं। सन् १९१७में स्त्रियोंके कला कौशलके प्रदर्शनके समय आपको गोल्ड मेडल और सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ था। आप अभी और भी अपने

उज्जैन

ऐतिहासिक महत्व

यह शहर भारतवर्षके उन प्राचीन नगरोंमेंसे एक है, जिनके अखण्ड गौरवका गान भारतीय साहित्यके प्राचीन ग्रन्थोंमें मुक्त कण्ठसे गाया गया है। महाकवि बाणभट्टने अपनी कादम्बरीमें जिस अनिर्वचनीय अलङ्कार मय भाषामें वर्णन किया है, तथा दूसरे ग्रन्थकारोंने मुग्ध विस्मयके साथ जिस अवन्तिका नगरीके गुन गान किये हैं, उज्जैन उसीका नवीन रूपान्तर है। यह शहर प्राचीन कालमें मालव-देशकी राजधानी था। परम प्रतापी सम्राट विक्रमादित्यका राजसिंहासन इसी महिमामयी नगरीमें जगमगाता था। महाकवि कालिदासकी लेखनीसे जन्म पाये हुए शकुंतला रघुवंश, और मेघदूतके समान सुन्दर काव्योंकी दिव्य किरणें भी इसी नगरीसे प्रकाशित होकर संसारमें फैली थी।

आजकल शिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ यह शहर महाराजा सेंधियाकी छत्रछायामें विश्राम पा रहा है। भूतपूर्व महाराजा माधवराव सेंधिया की इस नगरपर पूर्ण कृपा दृष्टि थी। उन्होंने इस नगरकी उन्नति देनेमें कोई बात उठा न रखी थी। लाखों रुपये खर्च करके उन्होंने इस नगर-की सभी प्रकारकी स्थितियोंको सुधारनेकी चेष्टा की और यही कारण है कि आज यह नगर भी अपने पड़ोसी इन्दौर नगरकी टक्कर लेना चाहता है। यदि राज्यकी इस नगरपर पूर्ण दृष्टि रही तो निकट भविष्यमें ही यह नगर बहुत उन्नत रूपमें दिखलाई देगा।

धार्मिक महत्व

ऐतिहासिक महत्वकी तरहही यह नगर धार्मिक महत्वमें भी बहुत बढ़ाचढ़ा है। शिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ होनेकी वजहसे यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है। बारह वर्षमें यहां सिंहस्थका प्रसिद्ध धार्मिक मेला भरता है। जिस समय यह मेला होता है लाखों मनुष्य इस नगरमें आकर अपनी कट्टर धार्मिक भावनाओंका परिचय देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां और कई धार्मिक स्थान हैं। जिनकी वजहसे यह नगर धार्मिक बातोंमें आगे गिना जाता है।

और नाम था। आप राजघरानेमें भी इलाज करनेके लिये जाया करते थे। आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। बोहरोंके बड़े मुल्लाजीने आपको शेखियत की पदवी प्रदान की थी। यह पद लोगोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है। आपका सन् १९१३ ई०में देहावसान होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हकीम महमदहुसेन व हकीम गुलामअली हैं। आप दो अपने पिताजीकी तरह हकीमीमें अच्छी योग्यता रखते हैं। आपने सन् १९२४में इन्दौरके बाजारमें एक बढ़िया दवाखाना बनवाया है। इसका फोटो इसी ग्रन्थमें दिया गया है। यहां शुद्ध रीतिसे दवाइयां तैय्यार की जाती हैं। यू०पी,सी०पी, गुजरात आदि बाहरी स्थानोंमें औषधालय प्रसिद्ध है। यहां औषधियां बड़ी सफाईसे रखी जाती हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—वैद्यकी दवाखाना यूनानी, चौकबाजार—यहां हरप्रकारकी यूनानी दवाइयां मिलती हैं इलाज भी किया जाता है। यहांसे बाहर प्रान्तोंमें भी दवाईयोंका थोक होता है।

मैन्युफैक्चरर

मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन

मि० महाजन उन उद्योगी व्यक्तियोंमेंसे हैं,जो बहुत ही छोटे स्केलसे अपने कार्यको प्रारम्भ अपने व्यवसाय कौशलसे उसे अच्छा रूप दे देते हैं। शुरू २ में आपकी आर्थिक परिस्थिति कमजोर थी; केवल एक मामूली क्लर्ककी जगह काम करके आप अपनी जीविका निर्वाह करते मगर उस काममें इनकी तबियत नहीं लगती थी। जिसके फल स्वरूप आपने नौकरी छोड़ और हिम्मत करके १५०)में एक मौजेकी मशीन मंगवाई। इस मशीनके कार्यमें आपको सफल मिल गई और धीरे धीरे इनका कारबार तरक्की करने लगा। यहांतक कि सात वर्षके बाद अर्थात् सन् १९१३में आपके यहां ५० पौण्ड सूतके रोजाना मौजे बनने लगे। सन् १९१७में आप १० नई मशीनें और मंगवालीं। जिससे आपका काम और भी तेजीसे चलने लगा।

मि० महाजनके यहांके बने हुए मौजे अपनी सुन्दरता और मजबूतीमें बहुत बढ़िया होते इन्दौर शहरके अतिरिक्त बाहरी प्रान्तोंमेंभी इस कम्पनीके मौजोंका बहुत प्रचार है रियासतकी फौजका आर्डर भी आपही पूरा करते हैं। सन् १९१७में स्त्रियोंके कला कौशल प्रदर्शनके समय आपको गोल्ड मेडल और सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ था। आप अभी और भी

श्रीयुत एम॰ पं॰ महाजन, इन्दौर

स्व॰ नागरमलजी (नागरमल किशनलाल) इन्दौर

वकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (इन्दौर ब्रांच) छावनी
इन्दौर बैंक लिमिटेड
मेसर्स ओंकारजी कस्तुरचन्द शीतलामाता रोड
" ओंकारजी चुन्नीलाल बड़ा सराफा
" गेंदालाल सूरजमल "
" घमड़सी जुहारमल छोटा सराफा
" जमनादास जुहारमल बड़ा सराफा
" तिलोकचंद कल्याणमल शीतलामाता रोड
" तेजपाल विरदीचंद बड़ा सराफा
" पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी बजाजखाना
" परसराम दुलीचन्द छोटा सराफा
" पदमसी नेनसी बड़ा सराफा
" बिनोदीराम बालचन्द "
" बगतराम बछराज शीतलामाता रोड
" मिर्जामल मोतीलाल बड़ा सराफा
" रामप्रताप हरबिलास "
" रामचन्द्र रामेश्वर "
" शिवजीराम शालिगराम छोटा सराफा
" शिवजीराम हरनाथ "
" शोभाराम गम्भीरमल शीतलामाता रोड
" शोभाराम चुन्नीलाल " "
" स्वरूपचंद हुकुमचन्द " "
" हुकुमचन्द धनराज शक्कर बाजार

इन्दौर—कैम्प

मेसर्स घासीलाल छोगालाल
" छोटालाल ध्यानलाल

मेसर्स नाथूलाल देवी सहाय
" रामचन्द्र कन्हैयालाल
" मुन्नालाल लच्छीराम
" समीरमल अजमेरा

जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स गेंदालाल गणपतलाल छोटा सराफा
" चम्पालाल भगवानदास "
" जयचन्द चुन्नीलाल "
" जमनालाल कीमती हैदराबादवाला खजूरी बाजार
" टीकमजी मूलचंद शक्करबाजार
" परशुराम दुलीचंद छोटासराफा

चांदी-सोनेके व्यापारी

मेसर्स कुंवरजी रणछोड़दास छोटा सराफा
" गणपतजी गोकुलदास "
" नन्दराम नाथूराम "
" परशुराम दुलीचंद "
" मौजीलाल मूलचंद "
" राजमल लालचंद "
" रामगोपाल मुंच्छाल "
" हरकचंद शांतिदास "

चांदीके बर्तन बनानेवाले

मेसर्स नाशिककर ब्रदर्स बड़ा सराफा
डाक्टर वड़नेरे खजूरी बाजार
मेसर्स लालूजी चोथमल खजूरी बाजार

मेसर्स भोलाराम रामरतन फतेरा बाजार
,, मथुरादास लक्ष्मीनारायण ,,
,, रामकिशन रामानन्द ,,
,, रामरख मथुरादास ,,
,, श्रीकृष्ण रतनलाल ,,

गोटेके व्यापारी

मेसर्स देवीसहाय मथुरालाल बजाजखाना चौक
,, रामनाथ रामकिशोर ,,
,, रामबक्ष सूरजमल ,,

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स जयरचंद मांगीलाल सियागंज
,, मंगलजी मूलचंद मल्हारगंज
,, रामरतन लालचंद ,,
,, शिवबक्ष लादूराम ,,
,, सुन्नालाल मूलचन्द ,,
,, सुन्नालाल पन्नालाल ,,
,, हरदेव जवरचन्द ,,

फुटकर कमीशन एजंट

मेसर्स जयकिशनदास राधाकिशनदास मल्हारगंज
,, मगनलाल किशनलाल दिवगारिया
,, लक्ष्मीचन्द चुन्नीलाल मल्हारगंज
,, हीरालाल पांसीलाल मल्हारगंज

लोहेके व्यापारी

इयुसुफअली मुल्ला महम्मद अली सियागंज
कमरूद्दीन अब्दुल अली सियागंज
मालूभाई कमरूद्दीन सियागंज
सुलेमान इसुफअली सियागंज

वाच मरचेंट्स

दी ग्रेट इस्टर्न वाच कम्पनी बड़ा सराफा
नानालाल बुलाखीदास बड़ा सराफा
मीखाजी एण्ड को० बड़ा सराफा
दी राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा

जनरल मरचेंट्स

अलीभाई मूलाभाई सियागंज
अब्दुल हुसेन तैय्यबअली सियागंज
ईस्माइल आदम तोपखाना
इलेक्ट्रिक इम्पोरियम तोपखाना
कृष्णराव गोपाल शोचे कृष्णपुरा
कादर भाई अल्लाबक्ष एण्ड सन्स तोपखाना
गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागंज
नानालाल बुलाखीदास बड़ा सराफा
मेगनी ए० हुसेन एण्ड को० महारानी रोड
मालवा स्टेशनरी मार्ट तोपखाना
राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा
सूरज एण्ड को० छावनी (स्पोर्ट्स)

फुटकर कम्पनियां

रेमिंगटन टाईप राईटर कम्पनी तोपखाना
सिंगर मेशीन कम्पनी तोपखाना
जनरल इंशुरेन्स कम्पनी तोपखाना

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर

दीनानाथ आर्टिस्ट इन्दौर
फोटो आर्ट स्टुडियो योफ्राकेट मार्केट
रामचन्द्र राव एण्ड प्रतापराव तोपखाना।

होटल्स एण्ड रिस्टोरेंट्स

इन्दौर होटल तुकोगंज
मालवा होटल तुकोगंज
लक्ष्मी विलास होटल तोपखाना
सरदार गृह बच्ची गली

धर्मशाला

सर सेठ स्वरूपचन्द हुकुमचंदकी नसियां स्टेशनके पास
टीकमजी मूलचन्दकी धर्मशाला "

लायब्रेरीज़

अग्रवाल पुस्तकालय दिव्वारिया
जनरल लायब्रेरी कृष्णपुरा
मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति
श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी मोरसली गली

चायके व्यापारी

मेसर्स केशवलाल एण्ड को० सियागंज

मिल जिन स्टोअर सप्लायर्स

सेठ बेडजी जिवराज अनरेरीवाला सियागंज
सेठ रतनजी पुरुषदजी सियागंज

आर० बी० ईश्वरदास एण्ड को० महारानी रोड
सी० जवेरलाल एण्ड कम्पनी सियागंज

मोटरकार एण्ड साईकल डीलर्स

गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागंज
जवेरी मोटर स्टोअर्स सियागंज
एन० सी० अंकलेसरिया एण्ड को० सियागंज
नोशेरवान एण्ड कम्पनी महारानी रोड
ब्रिटिश इण्डिया मोटरकार कम्पनी महारानी रोड

संगमरमरके व्यापारी

ए० साजन कम्पनी महारानी रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

आयुर्वेदीय औषधि निर्माणशाला छियानी
श्रीकृष्ण फार्मेसी तोपखाना
किशनलाल गोपाल शौचे योफ्राकेट मार्केट
तैय्यबी दवाखाना यूनानी
पापुलर मेडिकल हाल योफ्राकेट मार्केट

रंगके व्यापारी

मेसर्स रामलाल एण्ड को० महारानी रोड
" अहमद अली अब्दुल करीम सियागंज

ट्रंक मरचंट्स

अब्दुल्ला अल्लाबक्ष अजमेरवाला सियागंज
अब्दुल गनी अब्दुल अजीज सियागंज
तैय्यब अली हुसैन कादर भाई सियागंज

नाम	आनेवाले माल		
	वजन		मूल्य
चावल	३००२६ मन	...	...
गुड़	१८८६१,,	...	...
शक्कर	१३६६०२,,	...	...
तेल-मिट्टी	७८७६३ पीपे	...	...
इमारती लकड़ी	६०८३४	...	...
लोहा	...	...	२५१०६२)
तांबा–पीतल	...	...	७४७२२)
कपड़ा	...	...	१२६५२७२)
सूतआदि	२३३८ मन	...	...
इन्दौरी कपड़ा	...	...	४२०५=)
बर्मासू	३३१४ मन	...	...
व्यापारिक सामान	...	...	१३२०१३)
माचीस	...	...	२७८१५)
मोटर साईकल	...	...	४२१४४)
पेट्रोल	...	...	३१०४१)
चिड़ियां	...	...	३३४०८)
साबन	...	...	१२८१४०)
तेल विदेशी	...	...	३१२६७)
कागज	२०१८ मन	...	...

उपरोक्त संख्या सन् १९०५ की है। इसके पश्चात् इस समय इनमेंसे बहुत सी वस्तुएं ज्यादा आने तथा जाने लग गई हैं।

———